सुल्तानुल हिन्द अताए रसूल ख़्वाजा-ए-ख़्वाजग़ान
हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन संजरी चिश्ती
रदिअल्लाहु तआला अन्हो की मुकम्मल सवानेह हयात
सीरते ख़्वाजा
ग़रीब नवाज़
लेखक
साहिरुल बयान हज़रत अल्लामा
अब्दुर्रहीम साहब क़ादरी
प्रकाशक
रज़वी किताब घर दिल्ली - 6

هو الله
لا اله الا الله محمد رسول الله
الذی لا اله
الا هو
الرحمن
الرحیم الملک
ولله الاسماء الحسنیٰ فادعوه بها
القدوس السلام
المؤمن المهیمن
الله
العزیز الجبار
المتکبر الخالق البارئ المصور
الغفار القهار الوهاب الرزاق الفتاح العلیم القابض
الباسط الخافض الرافع المعز المذل السمیع البصیر
الحکم العدل اللطیف الخبیر الحلیم العظیم الغفور
الشکور العلی الکبیر الحفیظ المقیت الحسیب الجلیل
الکریم الرقیب المجیب الواسع الحکیم الودود المجید
الوکیل القوی المتین الباعث الشهید الحق الولی
الحمید المحصی المبدئ المعید المحیی الممیت الحی
القیوم الواجد الماجد الواحد الاحد الصمد القادر
المقتدر المقدم المؤخر الاول الآخر الظاهر الباطن
الوالی المتعالی البر التواب المنتقم العفو الرؤف
مالک الملک ذوالجلال والاکرام المقسط الجامع الغنی المغنی المعطی
المانع الضار النافع النور الهادی البدیع الباقی
لا اله الا الله محمد رسول الله
اللہ تعالیٰ کے سوا کوئی
عبادت کے لائق نہیں
اور حضرت محمد (صلی اللہ علیہ وسلم)
اللہ کے رسول ہیں۔
ولله الاسماء الحسنیٰ فادعوه بها
اشهد ان لا اله الا الله وحده لا شریک له واشهد ان محمدا عبده ورسوله
رضوی کتاب گھر دہلی

सुल्तानुल हिन्द अताए रसूल ख़्वाजा-ए-ख़्वाजगान
हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन संजरी चिश्ती
रज़िअल्लाहु तआला अन्हो की मुकम्मल सवानेहे हयात

सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

लेखक

साहिरुल बयान हज़रत अल्लामा
अब्दुर्रहीम साहब क़ादरी

Daud Ibrahim

प्रकाशक

रज़वी किताब घर
423, मटिया महल जामा मस्जिद दिल्ली-6
Ph. 011-23264524,9350505879

न्यू एडीशन-सन् २०१२ ई०

ISBN 81-89201-34-7

नाम किताब	सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़
लेखक	साहिरुल बयान अब्दुर्रहीम साहब क़ादरी
बाएहतेमाम	हाफिज़ मुहम्मद कमरुद्दीन रज़वी
नाशिर	रज़वी किताब घर
कम्पोज़िंग	रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट
मुद्रक	रज़वी प्रेस एजंसी
तादाद	1100
सफ्हात्	544
कीमत	

मिलने के पते

मकतबा रहीमिया - 97/97, तलाक़ महल, कानपुर 208001- 9839272793
मकतबा इमामे आज़म - 425, मटिया महल जामा मस्जिद दिल्ली-6 - 9958423551
रज़वी किताब घर - ग़ैबी नगर, भिवंडी, ज़िला थाना महाराष्ट्र - 02522-220609
न्यू रज़वी किताब घर - वफ़ा कॉम्पलेक्स, ग़ैबी नगर, भिवंडी, थाना महाराष्ट्र
न्यू सिलवर बुक एजन्सी - भिन्डी बाज़ार, मुम्बई-3
इक़रा बुक डिपो - नूर मन्ज़िल, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई-3
अर्शी किताब घर - पत्थर गट्टी, मण्डी मीर आलम रोड, हैदराबाद
कलीम बुक डिपो - ख़ास बाज़ार, अहमदाबाद

RAZAVI KITAB GHAR 423, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6 Ph.: 011-23264524

मुख़्लिसीने अहले सुन्नत

उन मुख़ैयराने दीनो मिल्लत के अस्माए गिरामी जिन के तआवुन के बग़ैर इस किताब की तबाअतो इशाअत नामुम्किन थी।

जनाब हाजी फतह मुहम्मद साहब क़ादरी
जनाब हाजी मुहम्मद ऐयूब साहब अनसारी
जनाब हाजी मुहम्मद सलीम साहब क़ादरी क्लाथ मर्चेन्ट
जनाब हाजी नसीरुददीन साहब एडोकेट
जनाब हाजी मुहम्मद सलीम साहब क़ादरी रेडीमेड मर्चेन्ट
जनाब हाजी अली अहमद साहब क़ादरी
जनाब हाजी मुहम्मद रफीक़ साहब
जनाब हाजी मुनव्वर रज़ा साहब नूरी
जनाब हाजी लतीफुर्रहमान साहब
जनाब हाजी अस्रारुलहक साहब (पप्पू)
जनाब हाजी शरीफ अहमद बेग साहब
जनाब हाजी मुहम्मद आरिफ ख़ाँ साहब
जनाब हाजी अब्दुल अज़ीज़ ख़ाँ साहब
जनाब जमाल अहमद बेग साहब क़ादरी
जनाब सैयद राशिद अली साहब
जनाब शैख़ मुहम्मद उमर साहब क़ादरी
जनाब ज़हीर अहमद ख़ाँ साहब
जनाब लईक़ अहमद साहब परेल मुम्बई
और एक अहले खैर

मौला तआला बतुफ़ैले नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम व सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु इन हज़रात के कारोबार में तरक्क़ियाँ अता फरमाए और इन के वालेदैन नीज़ इन के ख़ानदानके जुम्ला मरहूमीन और साथ साथ मेरे वालेदैने करीमैन व अहलिया ए मरहूमा और ख़ानदान के जुम्ला मरहूमीन की मग्फ़िरत फरमाकर जन्नतुल फ़िर्दौस में आला मक़ाम अता फरमाए। आमीन बिजाहे सैयिदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम।

दुआ गो

अब्दुर्रहीम क़ादरी

फिहरिस्ते मुन्दरजात

अख़लाक़ो आदात 275

इज़दवाजी ज़िन्दगी 302

इल्मी तस्नीफात 305

हैरत अंगेज़ करामात 312

बादे विसाल तसर्रुफाते रूहानी 323

पीरभाई, ख़ुलफा और ख़ुद्दाम 329

मुक़द्दस ताअलीमात 422

मक्तूबाते गिरामी 484

तारीख़ी इमारतें और आसारे मुबारका 500

कुछ यादगार चिल्ले 521

इन्तेसाब

आलमे इस्लामो सुन्नियत की मुमताज़ो मुक़द्दस तरीन शख़्सियत, इल्मे शरीअतो तरीक़त के संगम, अह्ले सुन्नत व जमाअत के अज़ीम पेशवा, मुर्शिदी व मौलाई ताजदारे इल्मो माअरिफत शहज़ादए आअला हज़रत, शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन

हुज़ूर मुफ़्तिए आअज़मे हिन्द

अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान

जिन की निस्बते गुलामी पर

अकाबिर उलमा व मशाइख़ फख़्रो नाज़ करते हैं। जिन की अज़मतों का परचम सुबहे क़ेयामत तक लहराता रहेगा। जिन के तक़्वा व तहारत का चर्चा रहती दुन्या तक बाक़ी रहेगा। जिन की गुलामी अपने हक़ में सआदते दारैन समझता हूँ और अपनी इस हक़ीर काविश को आप की बाबरकत ज़ाते गिरामी की तरफ मनसूब करते हुए फख़्रो सआदत महसूस करता हूँ।

शाहाँ चे अजब गर बनवाज़न्द गदा रा

उन का अदना गुलाम

अब्दुर्रहीम क़ादरी उतरौलवी

मनक़बत

दर शाने सुलतानुल हिन्द अताए रसूल सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहुल अज़ीज़

अर्ज़– उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ साहब बरेलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह

ख़्वाजए हिन्द वो दरबार है आअला तेरा
कभी महरूम नहीं माँगने वाला तेरा
मए सरजोश दरआग़ोश है शीशा तेरा
बेख़ुदी छाए न क्यूँ पी के पियाला तेरा
ख़ुफ़्तगाने शबे ग़फ़लत को जगा देता है
सालहा साल वो रातों का न सोना तेरा
है तेरी ज़ात अजब बहरे हक़ीक़त प्यारे
किसी तैराक ने पाया न किनारा तेरा
जौरे पामालिये आलम से उसे क्या मतलब
ख़ाक में मिल नहीं सकता कभी ज़र्रा तेरा
किस क़दर जोशे तहैय्युर के अयाँ हैं आसार
नज़र आया मगर आईने को तल्वा तेरा
गुलशने हिन्द है शादाब, कलेजे ठंडे
वाह ऐ अब्रे करम रोज़ बरसना तेरा
क्या महक है कि मुअत्तर है दमाग़े आलम
तख़्तए गुलशने फ़िरदौस है रौज़ा तेरा
तेरे ज़र्रे पे मआसी की घटा छाई है
इस तरफ भी कभी ऐ मेहर हो जल्वा तेरा

तुझ में हैं तरबियते ख़िज़्र के पैदा आसार
बहरो बर में हमें मिलता है सहारा तेरा
फिर मुझे अपना दरे पाक दिखा दे प्यारे
आँखें पुरनूर हों फिर देख के जल्वा तेरा
कुर्सी डाली तेरी तख़्ते शहे जीलाँ के हुज़ूर
कितना ऊचा किया अल्लाह ने पाया तेरा
बशर अफ़ज़ल है मलक से तेरी यूँ मद्ह करूँ
न मलक ख़ास बशर करते हैं मुजरा तेरा
जब से तू ने क़दमे ग़ौस लिया है सर पर
औलिया सर पे क़दम लेते हैं शाहा तेरा
मुह्ये दीं ग़ौस हैं और ख़्वाजा मुईनुद्दीं हैं
ऐ हसन क्यूँ न हो महफ़ूज़ अक़ीदा तेरा

तकमीले आर्ज़ू

मुसन्निफ के क़लम से

यह बताना मैं ज़रूरी नहीं समझता हूँ कि सुलतानुल हिन्द अताए रसूल ख़्वाजए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन हसन चिश्ती सन्जरी रदियल्लाहु तआला अन्हु से मुझे कितनी अक़ीदत व मुहब्बत है बल्कि इस हक़ीक़त का एअतिराफ मैं अपने लिए सआदतमन्दी व फीरोज़बख़्ती तसव्वुर करता हूँ कि पाक परवरदिगार और उस के महबूबे नामदार आक़ाए दोआलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में मुझ हक़ीर फक़ीर से चन्द ऐसे काम लेलिए जिन्हें मैं अपने लिए तोशए आख़िरत समझता हूँ और जिन पर मुझे फख़्रो नाज़ है। उन्हीं कामों में से एक काम ज़ेरे मुतालआ किताब „ सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ „ की तालीफो तरतीब है। मैं ने „सीरते ग़ौसे आज़म „ के ज़मानए तरतीब में ही यह इरादा कर लिया था कि इस के बाद „ सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ „ ज़रूर तरतीब दूँगा मगर उस के बाद कारहाए दुन्या ने इस तरह घेरा कि इस की तरफ कोई तवज्जोह ही न होसकी। जब „सीरते ग़ौसे आज़म „ मन्ज़रे आम पर आई और ख़ासो आम हर तब्क़े में मक़्बूलियत के बामे उरूज पर पहुँची तो कुछ अहबाबो मुख़्लिसीन ने अपनी दिली ख़्वाहिश का इज़्हार करते हुए मुतालबा किया कि „ सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ „ जल्द अज़ जल्द मन्ज़रे आम पर लाने की कोशिश करूँ। फिर भी मैं मस्रूफियतों के जाल से बाहर नहीं निकल सका। अचानक कुछ ऐसा हुआ जैसे किसी ने मेरा रुख़ दीगर कामों से हटाकर इस तरफ मोड़ दिया और मैं इस की तैय्यारी में मसरूफ होगया

जिस से मैं ने यह महसूस किया कि खुद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के फैज़े रूहानी ने मुझे महमीज़ किया और मेरे नातवाँ क़लम को इस संगलाख़ और नाहमवार सरज़मीन पर रवाँ दवाँ करदिया या बक़ौले आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेलवी कुद्दि स सिर्रुहू यही कहा जासकता है कि। :

ऐ रज़ा हर काम का एक वक़्त है

और शायद इस काम केलिए यही वक़्त मुतऐय्यन था इसी लिए इस मुश्किल तरीन काम में हर तरफ से आसानियाँ ही आसानियाँ पैदा होती चली गईं। जिस तरफ कदम बढ़ाए बग़ैर किसी रुकावट के आगे बढ़ते ही चले गए। इस काम केलिए मैं ने मुतअद्दिद मक़ामात के सफर भी किए अजमेर शरीफ पहुँचकर आस्तानए पाक पर भी हाज़री दी और वहाँ के ख़ुद्दाम से भी राबता क़ाइम किया कुछ क़ीमती मालूमात उन हज़रात के ज़रीआ भी फराहम हुईं जिस केलिए मैं उन मुक़द्दस शहज़ादों का भी शुक्रगुज़ार हूँ। इस सिलसिले में मैं अदीबे अस्र फाज़िले जलील हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद मीकाईल साहब ज़ियाई का तज़्किरा न करूँ तो हक़नाशनासी और एहसान फरामोशी होगी कि इतनी जल्दी इस किताब की तैय्यारी उन के बग़ैर नामुम्किन और दुश्वार ही नहीं बल्कि मुहाल थी, कुल जमाकरदा मवाद पर मौलाना ने नज़रे सानी फरमाई और तरतीबो तहज़ीब की मन्ज़िलों से गुज़ारने में मेरा हाथ बटाया और अज़ अव्वल ता आख़िर मेरा साथ दिया और मज़ीद बरआँ एक तवीलो बसीत मुक़द्दमा लिखकर शामिले किताब किया जो निहायत इल्मी व तहक़ीक़ी मवाद पर मुश्तमल है और अपनी जगह खुद एक किताब की हैसियत रखता है जिस से इस किताब की अहम्मियतो इफादियत में क़ाबिले क़दर इज़ाफा होगया है मौला तआला मौलाना के क़लम में और ज़ियादा क़ुव्वतो सुर्अत अता फरमाए।(आमीन) साथ ही मैं उन तमाम मुख़्लिसीन का भी शुक्रगुज़ार हूँ जिन्हों ने इस सिलसिले में मेरी किसी भी तरह से मददो मुआवनत की है या मुफीद मश्वरों से नवाज़ा है।

इस मौक़े पर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की सीरतो सवानेह पर मुश्तमल बहुत सी किताबों का मुतालआ

करने का शरफ हासिल हुआ। उर्दू ज़बान में तो चन्द ही किताबें सामने आईं या फारसी किताबों के तर्जुमे। और इस मौज़ूअ पर किताबें ज़ियादातर फारसी ज़बान में ही देखने में आईं मगर उन किताबों की इशाअत भी अब न होने की वजह से वह आम दस्तरस से बाहर हैं और उर्दू ज़बान में जो किताबें हैं उन में दो एक के अलावा मुकम्मल और तफसीली सवानेहे हयात न होकर एक इजमाली सवानेही ख़ाका से ज़ियादा हैसियत नहीं रखतीं। मैं ने कोशिश की है कि उर्दू ज़बान में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हालाते ज़िन्दगी पर यह किताब इम्तियाज़ी और इन्फिरादी हैसियत की हामिल हो जो क़ारी के ज़ौक़े मुतालआ की तसकीन का सामान फराहम कर सके, और सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से मुन्सलिक अक़ीदतमन्दों के जज़्बात और इश्क़ो महब्बत की बेचैनियों को मज़ीद शोअला बदामाँ करसके। मैं इस जिद्दो जहद में कामयाबी की किस मन्ज़िल पर हूँ इस का सहीह अन्दाज़ा इस के क़ारेईन और मुबस्सिरीन ही लगा सकते हैं मैं तो इतना जानता हूँ कि बारगाहे ग़रीब नवाज़ मे। अगर यह किताब मक़्बूलियत का शरफ हासिल करले तो फिर किसी सनद की मज़ीद कोई हाजत नहीं और आसारो क़राइन से उस बारगाह में इस की क़ुबूलियत का मुझे यक़ीन होचुका है। फल्हम्दुलिल्लाहि व लिरसूलिही अला ज़ालिक।

ख़ाके पाए सरकारे ख़्वाजा

अब्दुर्रहीम क़ादरी

कानपुर

मुक़द्दमा

मौलाना मुहम्मद मीकाईल ज़ियाई

क़दीम हिन्दुस्तान (जिस में मौजूदा हिन्दुस्तान के अलावा श्रीलंका, बंगलादेश, पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान का मोअतदबेह हिस्सा शामिल था) में इसलाम और मुसल्मानों का वुजूद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सैय्यिद मुईनुद्दीन हसन चिश्ती सन्जरी रदियल्लाहु तआला अन्हु के दमक़दम से है। अगरचे अव्वलुलअंबिया अबुलबशर हज़रत सैय्यिदुना आदम अलैहिस्सलाम का नुज़ूल हिन्दुस्तान में ही हुआ और इसी सरज़मीन पर अल्लाह वहदहू लाशरीक का नाम लेने वाले इनसान की तख़्लीक़ और नश्वोनुमा का आग़ाज़ हुआ नीज़ अल्लाह तआला की वहदत, अज़्मत और किब्रियाई का डंका बजाने वाले इसी मुल्क से दुन्या के मुख़्तलिफ हिस्सों और गोशों में फैले और आबाद हुए मगर हज़रत आदम अला नबिय्येना व अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम के बाद से नबिय्ये आख़िरुज़्ज़माँ ख़ातमे पैग़म्बराँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तक का अर्सा हज़ारों साल पर तवील होने के सबब और बन्दगाने ख़ुदा को राहे रास्त पर क़ाइम रखने और उन की हिदायतो रहनुमाई केलिए दीगर अंबिया व रुसुल का वुरूदे मस्ऊद इस मुल्क में न होने की वजह से तौहीदो ख़ुदा परस्ती के उजाले कुफ़्रो बुतपरस्ती के अन्धेरों में तबदील होगए थे नतीजे के तौर पर पूरा मुल्क कुफ़्रो शिर्क की आमाजगाह बन गया था।

फिर नबिय्ये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की विलादते बासआदत और एअलाने नुबुव्वत के बाद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की इस मुल्क में तशरीफआवरी से क़ब्ल अल्लाह के बहुत से मुख़्लिस बन्दे उलमा, फ़ुज़ला, सूफ़िया, मुजाहिदीन, फातिहीन और मुबल्लिग़ीन अल्लाह की वहदानियत, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की

रिसालत और इस्लाम की हक़्क़ानियतो सदाक़त का पैग़ाम आमो ताम करने केलिए हिन्दुस्तान आए। गोया अरब में इस्लाम का सुरज तुलूअ होने के साथ साथ हिन्दुस्तान में भी उस की रौशनी फैली। मगर सैय्यिदुलअंबिया फख़्रे कौनो मकाँ सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हुक्म से जब हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ यहाँ तशरीफ लाए तो कुफ्रिस्तान का नक़्शा ही बदल गया। याअनी मुल्क के गोशे गोशे और चप्पे चप्पे में आप की तब्लीग़, तालीम और तरबियत के उजाले फैल गए, कुफ़्रो शिर्क की तारीकियाँ छट गईं और इस्लामो ईमान की क़न्दीलें रौशन हो गईं। इसी लिए इस मुल्क को हज़रत आदम का हिन्दुस्तान होने के साथ साथ „ ख़्वाजा का हिन्दुस्तान „ होने का शरफ भी हासिल है बल्कि इस्तेदादे ज़माना के सबब आम हिन्दुस्तानी इसे ख़्वाजा का हिन्दुस्तान ही कहता, मानता और तस्लीम करता है।

तारीख़ के मुतालअे से पता चलता है कि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के बेपनाह एहसानात से ग़ैरमुन्क़सिम हिन्दुस्तानी मुसल्मानों की गरदनें बोझल हैं। हम जिस क़दर भी अल्लाह तआला, उस के रसूल, सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और उन के मुक़द्दस ख़ुलफाए किराम केलिए एहसानमन्दी और तशक्कुर का इज़्हार करें कम है।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से पहले हिन्दुस्तान में इस्लाम की तब्लीग़ो इशाअत के काम बहुत से मुस्लिम मुजाहिदीन, इस्लामी हुक्मराँ, उलमा, सूफिया और बुज़ुर्गाने दीन ने बहुस्नो ख़ूबी अन्जाम दिए, मुस्लिम मुजाहिदीन और इस्लामी हुक्मरानों में मुहम्मद बिन क़ासिम, अमीरे सुबुक्तगीन, महमूद ग़ज़नवी और उन के बेटे सुल्तान मस्ऊद ग़ज़नवी के नाम आज भी तारीख़ की पेशानी के झूमर हैं। इस की तफसील केलिए तारीख़ की किताबों का मुतालआ काफी है यहाँ न इस का मौक़ा है न गुन्जाइश।

हिन्दुस्तान में ग़ज़नवी ख़ान्दान की हुकूमत कमोबेश दो सौ साल रही और शिमाल मग़्रिबी हिनदुस्तान के अकसर अलाक़े उस के ज़ेरे नगीं रहे जिस के नतीजे में उन अलाक़ों में बिल्ख़ुसूस और हिन्दुस्तान के दीगर अलाक़ों में बिल्उमूम जल्द ही इस्लामी मुआशरे

की तशकील होगई और उसे काफी तक़्वियत हासिल हुई। जगह जगह सैकड़ों मसाजिदो मदारिस तामीर हुए, अरबी व फारसी ज़बानों की नशरो इशाअत हुई और लाहौर जल्द ही एक इस्लामी शहर बन गया। मुहम्मद औफी ने अपने तज़्किरे „ लुबाबुल अल्बाब „ में एक ख़ास बाब „फुज़लाए ग़ज़नी व लाहौर „ के उन्वान से बाँधा है जिस में वहाँ के शोअरा, उलमा और सूफिया का ज़िक्र करते हुए लिखा है। :

„ उन शोअरा में अबुलफरह रोइनी (मु0 484 हि0) और मस्ऊद सअ्द सुलैमान (मु0 491 हि0) मशहूर हैं। „

और आख़िरुज़्ज़िक्र ने तो अरबी व फारसी के अलावा एक हिन्दी दीवान भी यादगार छोड़ा है जिस का मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी (मु0 1004 हि0) ने अपनी किताब „मुन्तख़बुत्तवारीख़ „ में इस तरह ज़िक्र किया है कि गोया उन के ज़माने में वह दीवान मौजूद था। उसी ज़माने में लाहौर में शैख़ हुसैन ज़न्जानी, हज़रत दाता गंज बख़्श हिज्वैरी साहिबे „ कश्फुल महजूब „ शैख़ इस्माईल मुहद्दिस, मौलाना मस्ऊद लाहौरी, मुलतान में शाह यूसुफ गुर्देज़ी (मु0 547 हि0) ओच में सफीयुद्दीन गाज़रूनी (मु0 398 हि0) शाहकोट में सुल्तान सख़ी सरवर (मु0 577 हि0) अजमेर में हज़रत मीराँ सैय्यिद हुसैन मशहदी, सैय्यिद सालार मस्ऊदे ग़ाज़ी और हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह मुल्हम शहीद वग़ैरहुम इस्लाम के मुबल्लिग़ीन और मुजाहिदीन गुज़रे हैं जिन्हों ने तज़्कीरो तब्लीग़ के फराइज़ अन्जाम देकर अपने अपने अलाक़ों में इस्लाम का बोल बाला किया। उन्हीं हज़रात की कोशिशों और क़ौलो अमल की यक्सानियत से क़ौमें और क़बीले मुशर्रफ ब इस्लाम हुए।

पहली सदी हिजरी से छटी सदी हिजरी तक के

अहम उलमा, मुबल्लिग़ीन और मुजाहिदीन

मुतज़क्किरए बाला बुज़ुर्गाने दीन में से बाज़ के अहवाल और तज़केरे ज़ैल में दर्ज किए जाते हैं बक़िया हज़रात के हालात दस्तयाब न होसके इस लिए सिर्फ उन के अस्माए गिरामी के ज़िक्र पर इक्तिफा किया जाता है।

मौलाना अबू हफ्स रबीअ मुहद्दिस बस्री

मुहम्मद बिन क़ासिम के दौर में साहिबे तज़्किरा मौलाना अबूहफ्स रबीअ मुहद्दिस बस्री बिन सबीह अस्सईदी अल्बस्री ने इस दयार में क़दमरन्जा फरमाया। आप तब्अे ताबेईन और कामिल मुहद्दिसीन में से हैं। हज़रत हसन बस्री और हज़रत अता रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से आप ने हदीसें रिवायत की हैं और आप के रावी हज़रत सुफ्यान सौरी और हज़रत वकीअ बिन मेहदी रदियल्लाहु तआला अन्हुमा हैं आप बड़े आबिदो ज़ाहिद और मुजाहिद थे आप के बारे में यह भी कहा जाता है कि आप मिल्लते इस्लामिया के सब से पहले मुसन्निफ हैं 160 हि० में मुल्के सिन्ध में रिहलत फरमाई और वहीं आप का मज़ारे पुरअन्वार है। (तज़्किरए उलमाए हिन्द)

शैख़ मुहम्मद इस्माईल मुहद्दिस लाहौरी

हज़रत शैख़ मुहम्मद इस्माईल मुहद्दिस लाहौरी रहमतुल्लाहि

तआला अलैह अज़ीम मुहद्दिस, मुफस्सिर और बुख़ारा के सादाते किराम में से हैं। सुल्तान महमूद ग़ज़नवी के अहदे हुकूमत याअनी 395 हि० के अवाख़िर में लाहौर तशरीफ लाकर मुतवत्तिन हुए उलूमे तफ्सीरो हदीसो फिक़्ह के माहिर और ज़ाहिरो बातिन के जामेअ थे। आप की शख़्सियत वह है जो इल्मे तफ्सीरो हदीस लेकर लाहौर में पहलेपहल आई और बहैसियत वाइज़ भी लाहौर में आप की पहली ज़ात थी जो यहाँ वाअज़ो नसीहत और इस्लाम की तब्लीग़ो इशाअत केलिए लबकुशा हुई। आप की ज़बान में इतनी तासीर थी कि आप की मज्लिसे वाअज़ में हज़ारों अफराद मुशर्रफ ब इस्लाम होते थे। 448 हि० में आप की वफात हुई और शहर लाहौर में मदफून हुए।

मीराँ सैय्यिद हुसैन मशहदी

हज़रत मीराँ सैय्यिद हुसैन मशहदी उर्फ ख़िंगि सवार रहमतुल्लाहि तआला अलैह जिन का मज़ार अजमेर शरीफ के क़िलअए तारा गढ़ पर मर्जअे अवामो ख़वास है। 391 हि० में सुल्तान महमूद ग़ज़नवी की हुकूमत दर ग़ज़नी के दौर में मुजाहिदीने इस्लाम की एक जमाअत के साथ इस्लाम की तरवीजो इशाअत केलिए हिन्दुस्तान आए। आप के वालिदे माजिद का नाम सैय्यिद मुहम्मद इब्राहीम मुहद्दिस मशहदी और वालिदए माजिदा का नाम बीबी हाजिरा बिन्ते सैय्यिद मुहम्मद हामिद मक्की है और चन्द वास्तों से आप का सिलसिलए नसबे पिदरी व मादरी हज़रत अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुलकरीम तक पहुँचता है। आप के आबा व अजदाद मदीनए मुनव्वरा से आकर मशहदे मुक़द्दस में आबाद होगए थे। आप सख़ावतो शुजाअत, फसाहतो बलाग़त और इल्मो फज़्लो कमालो करामत के जामेअ और ख़ुश ख़ुल्क़ो ख़ुश जमाल गोया हमा सिफत मौसूफ थे। आप के साथ हिन्दुस्तान आने वालों में साहिबे कश्फो करामत बुज़ुर्ग हज़रत रौशन अली दुर्वेश के अलावा हज़रत अबूतय्यिब मुहद्दिस, सैय्यिद शहाबुद्दीन, सैय्यिद तक़ीयुद्दीन और सैय्यिद नक़ीयुद्दीन वग़ैरहुम के अस्माए गिरामी क़ाबिले ज़िक्र हैं।

हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह मुल्हम शहीद

हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह मुल्हम शहीद रहमतुल्लाहि तआला अलैह सैय्यिद सालार साहू के अहद में अजमेर शरीफ में मुक़ीम थे। साहिबे इल्मो फ़ज़्ल और हामिले ज़ुहदो तक़्वा होने के साथ साथ मुजाहिद फी सबीलिल्लाह भी थे। हज़रत सैय्यिद सालार मस्ऊदे ग़ाज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के इब्तिदाई उस्ताज़ थे। आप थोड़ी सी फौज लेकर अजमेर शरीफ से रवाना हुए और बदायूँ पहुँचकर वहाँ राजा बदायूँ की कसीर और ताक़तवर फौज से मुक़ाब्ला किया और बहादुरी से जंग करते हुए 439 हि० में शहीद होगए। आप का मज़ारे पाक बदायूँ शरीफ में है।

हज़रत सैय्यिद सालार मस्ऊदे ग़ाज़ी

शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने लिखा है कि आप सुल्तान महमूद ग़ज़नवी के लश्कर के ग़ाज़ियों और सरदारों में से हैं। अवाइले इस्लाम में हिन्दुस्तान में बहुत सी फुतूहात कीं आपने बहराइच में दर्जए शहादत हासिल किया। ख़वारिक़ो करामात शहादत के बाद ज़ाहिर हुईं।

बाज़ क़ौल के मुताबिक़ सुल्तान महमूद ग़ज़नवी ने अजमेर फतह करने के बाद आप के वालिदे गिरामी सैय्यिद सालार साहू को अजमेर का हाकिम मुक़र्रर किया चुनाँचे अजमेर ही में 21 रजब या 21 शाबान 405 हि० में सैय्यिद सालार मस्ऊदे ग़ाज़ी की विलादत हुई आप अल्वी सादात में से हैं आप का सिलसिलए नसब तेरह वास्तों से हज़रत अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुलकरीम तक पहुँचता है। आप की वालिदए माजिदा का नाम सत्रे मुअल्ला था। आप सुल्तान महमूद ग़ज़नवी के ख़्वाहरज़ादे भी हैं। सोलह साल की उम्र में आप अमीरे लश्कर बनाए गए। आप ने महमूद ग़ज़नवी के हमराह मुल्तान फतह करने के बाद देहली और सतरुख को फतह किया फिर बहराइच आकर शहीद हुए। (सौलते अफग़ानी स० 97 व ग़ज़नानामा स० 43, 64)

अजमेर शरीफ में जहाँ आप की विलादत हुई थी आज भी वह जगह सैय्यिद सालार मस्ऊदे ग़ाज़ी के चिल्ले के नाम से मशहूर है। आप का मज़ारे मुबारक बहराइच शरीफ में फैज़ बख़्शे आम है। (सफीनतुल औलिया)

हज़रत मीर अमादुद्दीन ख़िल्जी

हज़रत सैय्यिद सालार मस्ऊदे ग़ाज़ी की फौज में बहुत से मुजाहिदीन और औलियाए कामिलीन शरीक थे उन्हीं में से मीर अमादुद्दीन ख़िल्जी भी थे जो जाइस की जंग में सिपहसालार बनाए गए थे। जनाब क़ाज़ी अब्दुर्रहीम अन्सारी जाइसी ने अपनी किताब „ जुग़राफिया व तवारीख़े जाइस „ में लिखा है कि। :

> „ सैय्यिद सालार मस्ऊदे ग़ाज़ी जब फुतूहात करते हुए अवध पहुँचे तो सतरुख से अत्राफो जवानिब में फौजें रवाना कीं। „

हाशिये में उन मक़ामात में से कुछ के नाम भी दर्ज किए हैं मसलन। :

> „ बनारस, ग़ाज़ीपूर, मुबारकपूर, हमीरपूर, टाँडा, मऊ, क़ाज़ी तय्यिब, इलाहाबाद, फतेहपूर, हसवा, फैज़ाबाद, अयोध्या, बहराइच, महोबा, गोपामऊ, कड़ामानिकपूर, डलमऊ, रुदौली, और उदयानगर (जाइस) वग़ैरह। „

हज़रत दाता गंज बख़्श लाहौरी

हज़रत शैख़ अली हिजवेरी अलमारूफ़ ब दाता गंज बख़्श लाहौरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह शैख़ अबुलफ़ज़्ल बिन हसन अलख़तली रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मुरीद हैं वह शैख़ हज़रमी के मुरीद और वह हज़रत शैख़ शिबली रहमतुल्लाहि अलैहिम के मुरीद हैं। आप ने शैख़ अबुलक़ासिम गुर्गानी, शैख़ अबूसईद अबुलख़ैर और शैख़ अबुलक़ासिम क़ुशैरी रहमतुल्लाहि अलैहिम वग़ैरह बहुत से मशाइख़ को देखा है। आप मज़हबन हनफी थे, ग़ज़नी के रहने वाले थे जुलाब और हिजवेर शहर ग़ज़नी के दो मुहल्लों के नाम हैं एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले में आप मुन्तक़िल होगए थे। आप की वालिदा की क़ब्र ग़ज़नी ही में

वाक़ेअ है। एक मस्जिद की तामीर आप ने खुद कराई थी जिस की मेहराब दूसरी मसाजिद की बनिस्बत जुनूब की तरफ झुकी हुई है। रिवायत है कि उस ज़माने के उलमा ने उस मेहराब के टेढ़ा होने से मुतअल्लिक़ एअतेराज़ किया था एक दिन आप ने सब को जमा किया, इमामत फरमाई और बादे नमाज़ सब को मुख़ातब करके इरशाद फरमाया „ देखो काअबा किस तरफ है „ तमाम हिजाबात दरमियान से उठे हुए थे और काअबा सामने नज़र आरहा था। आप की क़ब्र उसी मस्जिद की मुवाफ़िक़ सम्त में है। आप का पूरा ख़ानदान ज़ुहदो तक़्वा केलिए मशहूर था। आप की तसानीफ बेशुमार हैं „ कश्फुल महजूब „ ज़ियादा मशहूरो मक़बूल है। किसी को इस किताब पर कोई कलाम नहीं। यह किताब तालिबाने हक़ केलिए कामिल रहनुमा और कुतुबे तसव्वुफ में एक मुर्शिदे कामिल की हैसियत रखती है।

आप के ख़वारिक़ो करामात बेशुमार हैं। बारहा आप ने तजरीदो तवक्कुल के साथ सफर किया है। काफी सैरो सियाहत के बाद उस ज़माने के दारुस्सल्तनत लाहौर में आकर सुकूनत इख़्तियार फरमा ली। 454 या 456 हि० और तज़्किरए उलमाए हिन्द के मुताबिक़ 465 हि० में आप का विसाल हुआ क़ब्रे मुबारक लाहौर के मग़्रिबी क़िले में वाक़ेअ है। (तज़्किरए उलमाए हिन्द, सफ़ीनतुल औलिया)

हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाहि तआला अलैह के आस्ताने पर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अक़ीदत मन्दाना हाज़री दी और इक्तेसाबे फैज़ किया है वहाँ एक मक़ाम हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के चिल्ले के नाम से आज भी मुतआरफो मशहूर है, आस्तानए पाक पर एक शेर आज भी कन्दा है जो ज़बाँज़दे ख़ासो आम है जिस के बारे में मशहूर है कि यह शेर हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने वहाँ से रुख़्सत होते वक़्त कहा था वह शेर यह है। :

गंज बख़्शे फैज़े आलम मज़्हरे नूरे ख़ुदा
नाक़िसाँ रा पीरे कामिल कामिलाँ रा रहनुमा

मौलाना मस्ऊद लाहौरी

हज़रत मौलाना लाहौरी बिन साअद बिन सुलैमान लाहौरी का अस्ल वतन हमदान है। आप के वालिद साअद बिन सुलैमान हमदान से सल्तनते ग़ज़नवीया के अहद में लाहौर तशरीफ लाए और वहीं सुकूनत इख़्तियार करके सुल्तान इब्राहीम के मुलाज़िम होगए। रफ्ता रफ्ता तरक़्क़ी करते हुए आली मन्सब पर फाइज़ हुए। आप के साहबज़ादे मौलाना मसऊद उस ज़माने के बड़े उलमा से इक्तिसाबे उलूम करके लाइक़ो फाइक़ होगए। तब्अे मौज़ूँ के सबब बड़े ख़ूबसूरत अश्आर भी कहते थे। सैफुद्दीन महमूद बिन इब्राहीम के हमनशीं थे। 515 हि० तक बक़ैदे हयात रहे। अरबी, फारसी और हिन्दी के साहिबे दीवान शाइर थे फारसी के दीवान हिन्दुस्तानो ईरान में दस्तयाब हैं मगर अरबी और हिन्दी के दीवान नायाब हैं।

हिन्दुस्तानियों के मसीहाए आज़म

यह सच है कि इस कुफ्रिस्ताने हिन्द में इस्लाम का चराग़ हज़रत सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहुल अज़ीज़ की तशरीफ आवरी से पहले ही जल चुका था जिस की क़दरे तफसील गुज़श्ता सफ्हात में गुज़र चुकी है मगर नाइबुन्नबी सुल्तानुल हिन्द, अताए रसूल, ख़्वाजए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती सन्जरी रदियल्लाहु तआला अन्हु इस बर्रे सग़ीर के मुहसिने अकबर और मसीहाए आज़म हैं कि यहाँ इस्लाम की दिलकश बहारें आप ही की दाअवतो तब्लीग़ और रुश्दो हिदायत का नतीजा हैं।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ छटी सदी हिजरी (586 या 588 हि०) में रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हुक्म से हिन्दुस्तान तशरीफ लाए और अपनी करामतआसार तब्लीग़ और कीमिया असर निगाह से इस कुफ्रिस्तान को इस्लाम के नूर से रौशनो मुनव्वर करदिया।

आप की हिन्दुस्तान में आमद से पहले बहुत से मुजाहिदीने इस्लाम और उलमा व सूफ़ियाए किराम इशाअते इस्लाम की ख़ातिर हिन्दुस्तान आए और अपने अपने हल्क़ए असर में उन्हों ने इस्लाम का बोल बाला भी किया मगर उन की जिद्दो जहद के असरात उन के ही अलाक़ों तक महदूद रहे बिल्ख़ुसूस हिन्दुस्तान के शिमाल मग़रिबी ख़ित्तों सिन्ध, लाहौर, काबुल, ठ्ठा और बलूचिस्तान वग़ैरह शहरों और क़स्बात में उस के गहरे असरात मुरत्तब हुए जिस के ज़ेरे असर आज भी उन अलाक़ों में मुसलमानों की अकसरियत है।

सरकारे ग़रीब नवाज़ की इन्फ़ेरादियत

जिस तरह नबिय्ये अकरम ख़ातमे पैग़म्बराँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की आमद से क़ब्ल दुन्या में बेशुमार अंबियाए किराम व रसूलाने उज़्ज़ाम तशरीफ लाए मगर उन के हल्क़े और अलाक़े महदूद थे इस लिए उन की तब्लीग़ और रुश्दो हिदायत के असरात भी महदूद रहे। लेकिन जब ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की जल्वा गरी हुई तो आप ने अल्लाह तआला की पैग़ाम रसानी का एक आलमी निज़ाम क़ाइम फरमाया जिस के असरात पूरी दुन्या में मुरत्तब हुए और वह क़ेयामे क़ेयामत तक बाक़ी रहेंगे। बिला तश्बीह सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु से क़ब्ल हिन्दुस्तान में बेशुमार मुबल्लिग़ीने इस्लाम की आमद हुई और सभों ने अपनी अपनी हैसियत और बिसात के मुताबिक़ तब्लीग़ी कारनामे अन्जाम दिए। सियासी, इल्मी, अमली और रूहानी हर मुम्किन तरीक़ए कार को अपनाकर यहाँतक कि अपनी जानें गंवाकर अपनी ज़िम्मेदारियों से उहदाबरा हाने की जिद्दो जहद की और उस में वह काफी हद तक कामयाब भी रहे मगर जब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के क़दमे मुबारक इस धरती पर आए तो आप के तब्लीग़ी मसाई के असरात हिन्दुस्तान के हर ख़ित्ते और गोशे तक पहुँचे। आप के ख़ुलफ़ा व मुतवस्सिलीन मुल्क के जिस हिस्से में पहुँच गए वहाँ

इस्लाम का बोल बाला होगया। कुफ्र की तारीकियाँ काफूर हुईं और इस्लाम के उजालों का समन्दर मौज ज़न होगया। आप से पहले मुतअद्दिद मुसल्मान फातेहीन ने मुल्क के मुख़्तलिफ अलाक़ों पर क़ब्ज़ा व इक़्तेदार हासिल किया मगर आप की दुआओं की बरकत से पहली बार आप के अहदे मुबारक में देहली और अजमेर के ऐवानों में मुसल्मानों की बाज़ाबता मुकम्मल हुकूमत का परचम लहराया। अबुल फज़्ल आप के मुतअल्लिक़ लिखता है। :

„ उज़्लतगज़ीं बअजमेर शुद व फरावाँ चराग़ बरअफरोख़्त व बज़ दमे कुबराए ऊ गरोहा गरोह बहरा बरगिरफ्तन्द। „(आईनए अक्बरी स0 270)

तरजमा :– आप ने अजमेर में गोशा नशीनी इख़्तियार की, इस्लाम के चराग़ खूब जलाए और आप के दमक़दम से गरोह दर गरोह लोगों ने इक्तिसाबे फैज़ किया।

„ सैरुल औलिया „ के मुसन्निफ अमीर खुर्द किरमानी (मु0 770 हि0)रक़मतराज़ हैं। :

„ व करामते दीगर आँकि मम्लुकते हिन्दुस्तान ता हद्दे बरआमदने आफताब हमा दयारे कुफ्रो काफिरी व बुतपरस्ती बूद व मुतमर्रिदाने हिन्द हरयके दाअवए „अना रब्बुकुमुल आअला „ मी करदन्द व ख़ुदाए रा अज़्ज़वजल्ल शरीक मी गुफ्तन्द व संगो कुलूख़ व दारो दरख़्त व सुतूरे गाव व सरगीं ईशाँ रा सज्दा मी करदन्द व बज़ुल्मते कुफ्र कुफ्ले दिले ईशाँ मुज़्लमो मुहकम बूद..........बवसूले क़दमे मुबारके आँ आफताबे अहले यक़ीं कि बहक़ीक़त मुईनुद्दीन बूद ज़ुल्मतईं दयार ब नूरे इस्लाम रौशनो मुनव्वर गश्त। „ (सैरुल औलिया स0 47)

तरजमा :– दूसरी करामत यह है कि उस आफताब के तुलूअ होने (ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की हिन्दुस्तान में आमद) से क़ब्ल पूरे हन्दुस्तान में कुफ्रो बुतपरस्ती का रिवाज आम था और हिन्द का हर सरकश „ अना रब्बुकुमुल आअला „ (मैं तुम्हारा सब से बड़ा रब हूँ) का दाअवा करता था और अपने आप को अल्लाह तआला का शरीक कहता था वह पत्थर, ढेले, घर, दरख़्त, चौपायों, गाय और उन के गोबर को सज्दा करते थे और कुफ्र की तारीकी से

यक़ीन के इस आफताब के मुबारक क़दमों की बरकत से जो दर हक़ीक़त मुईनुद्दीन (दीन के मुईनो मददगार) थे इस मुल्क की तारीकी इस्लाम के नूर से जगमगा उठी।

आप की निगाहे विलायत जिस पर पड़जाती उस के दिल की दुन्या बदल जाती रहज़न आता रहबर बन जाता, क़ातिल आता मुहाफिज़ बन जाता, सरकश आता ग़ुलाम बन जाता, काफिर आता मुसल्मान बन जाता, फासिक़ आता मुत्तक़ी बन जाता, दुश्मन आता हाशियाबरदार बन जाता और जादूगर आता तो ताइब होकर आमिले क़ुरआन बन जाता।

सब से बड़े इन्क़ेलाब के बानी

हिन्दुस्तान के सब से बड़े समाजी इन्क़ेलाब का यह बानी एक छोटी सी झोंपड़ी में एक फटे पुराने तहबन्द में लिप्टा बैठा रहता था। पाँच मिस्क़ाल से ज़ियादा की रोटी कभी मयस्सर न आती लेकिन सोज़े दुरूँ की असरअंगेज़ी और निगाह की तिलिस्माती तासीर का यह आलम था कि एक नज़र जिस पर डाल देते उस की ज़िन्दगी से गुनाहों के जरासीम दम तोड़ कर फना होजाते और माआसियत के सोते हमेशा केलिए ख़ुश्क होजाते। रिसाला „ अहवाले पीराने चिश्त „ के यह जुमले आज भी उन की इस करामत का एअलान कररहे हैं। :

„ नज़रे शैख़ मुईनुद्दीन बर फासिक़े कि उफ्तादे दर ज़माँ ताइब शुदे व बाज़ माआसियत न करदे। „

तरजमा :– हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की निगाह जिस फासिक़ पर पड़जाती वह उसी वक़्त तौबा करलेता और फिर कभी गुनाह के क़रीब नहीं फटकता।

आप के क़ुदूमे मैमनत लुज़ूम की बरकत से यह कुफ्रिस्ताने हिन्द तक्बीरो रिसालत की दिलनवाज़ सदाओं से गूंज उठा। उस मरदे दुर्वेश की छोटी सी मज्लिस रुश्दो हिदायत की आफाक़ी और हमागीर तहरीक बन गई। कुफ्रो शिर्क की दलदल में फंसे हुए

हज़ारों बाशिन्दगाने हिन्द इस्लाम के उस चश्मए शीरीं की जानिब दौड़ने लगे और कुफ्र के मुजस्समे जामे हिदायत पीकर इस्लाम की सरमस्तियों से सरशार होने लगे।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की फैज़बार मज्लिस और उन की इन्क़ेलाब आफरीं इस्लामी तहरीक पर रौशनी डालते हुए „ ख़ज़ीनतुल अस्फिया „ के मुसन्निफ ग़ुलाम सरवर लाहौरी लिखते हैं। :

„ हज़ार दर हज़ार सेग़ारो किबार बख़िदमते आँ महबूबे किरदिगार हाज़िर शुदा मुशर्रफ ब शरफे इस्लाम व इरादते आँ हज़रत शुदन्द बहद्दे कि चराग़े इस्लाम दर हिन्द बतुफ़ैले ईं ख़ानदाने आलीशान रौशन गश्त। „(ख़ज़ीनतुल अस्फिया जिल्द अव्वल स0 259)

तरजमा : – हज़ारों हज़ार छोटे बड़े अफराद उस ख़ुदा के महबूब (सुलतानुल हिन्द) की बारगाह में आते और मुशर्रफ ब इस्लाम और उन के मुरीदो मोअतक़िद होजाते यहाँतक कि इस्लाम का चराग़ हिन्दुस्तान में उसी बलन्द पाया ख़ानदान की बरकत से रौशन हुआ।

हज़रत सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हिन्दुस्तान में बिलाशुबह कुफ्रशिकन तहरीक बरपा की थी। जो काम हज़ारों तल्वारें और फौजो सिपाह नहीं कर सकीं वह एक आरिफ़ बिल्लाह की ख़ामोश और अख़लाक़ी तहरीक ने कर दिखाया। एक फारसी शाइर ने इस की बड़ी अच्छी तस्वीरकशी की है। :

अज़ फैज़े ऊ बजाए कलीसा व बुतकदा
दर दारे कुफ्र मस्जिदो मेहराबो मिम्बरस्त
आँजा कि बूद नाअरए फरयादे मुश्रिकाँ
अकनूँ ख़रोशे नग़्मए अल्लाहु अकबरस्त

सरकारे ख़्वाजा की मक़्बूलियत और तब्लीग़ी असरात

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की मक़्बूलियत और

उन के तब्लीग़ी असरात पर तब्सेरा करते हुए टी, डब्ल्यू, आर्नल्ड लिखता है :

„ रफ़्ता रफ़्ता बहुत से लोग ख़्वाजा साहब के मोअतक़िद होगए और उन्हों ने बुतपरस्ती छोड़कर इस्लाम क़ुबूल करलिया अब ख़्वाजा साहब की शुहरत हर तरफ़ होगई और आख़िर में हिन्दुओं के गरोह के गरोह उन की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान होगए। मशहूर है कि जिस वक़्त ख़्वाजा देहली से अजमेर जारहे थे तो रास्ते में सात सौ हिन्दुओं को उन्हों ने मुसलमान किया। „ (तारीख़े मुसलमानाने पाकिस्तान व भारत जिल्द अव्वल स0 232)

शैख़ अबुल फ़ज़्ल अल्लामी ने लिखा है कि :

„ ख़्वाजए बुज़ुर्ग के अजमेर में क़ेयाम करने की वजह से गरोह के गरोह मुसलमान हुए। „ (आईने अकबरी जिल्द दोम स0 207)

ख़्वाजा मुबारक अलअलवी लिखते हैं कि :

„ हज़रत ख़्वाजा के मुबारक क़दम की बरकत से यह अलाक़ा इस्लाम के नूर से मुनव्वर होगया। „ (सैरुल औलिया स0 47, सफ़ीनतुल औलिया अज़ दारा शकोह क़ादरी स0 128)

मीर अब्दुल वाहिद बिल्गिरामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह „ सब्ओ सनाबिल „ में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की बाफ़ैज़ निगाह की तासीर बयान फ़रमाते हुए लिखते हैं कि :

„ और शैख़ की नज़र जिस पर पड़जाती वलियुल्लाह होजाता। „ (सब्ओ सनाबिल स0 435)

हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैह से किसी ने सुवाल किया कि जो मक़्बूलियत हज़रत सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को हासिल है वह किसी और को हासिल नहीं। जो उन के मज़ार पर जाता है उन पर फ़रेफ़्ता और दीवाना होजाता है इस की क्या वजह है?। हज़रत शाह साहब ने क़दरे तवक़्क़ुफ़ के बाद यह हक़ीक़तअफ़रोज़ जवाब इनायत फ़रमाया। :

ई सआदत बज़ोरे बाज़ू नेस्त
ता न बख़्शद ख़ुदाए बख़्शिन्दा

सुल्तानुल हिन्द सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू बिलाशुबह इश्क़ो इर्फ़ान के आअला मक़ाम पर फ़ाइज़ थे हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस देहलवी के वालिदे गिरामी हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के फ़ैज़ाने रूहानी (जो ख़ुद उन पर हुआ) को बयान फ़रमाते हैं। :

„ हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन को मैं ने ख़्वाब में देखा कि घर में बैठे हुए हैं और एक चराग़ रौशन है लेकिन उस चराग़ की बत्ती हरकत की मुहताज थी ताकि ताज़ा होकर रौशनी फ़ैलासके मुझे उन्हों ने इस ख़िदमत पर मामूर फ़रमाया चुनाँचे मैं ने ऐसा ही किया उस के बाद अपनी ख़ास निस्बत मुझे इनायत फ़रमाई और इस वाक़ेअे की ताबीर भी इजाज़ते तरीक़ा थी। „ (अन्फ़ासुल आरिफ़ीन स0 108)

हज़रत सैय्यिदुना अबुल हुसैन अहमदे नूरी

ख़ातमुल अकाबिर हज़रत अल्लामा सैय्यिद शाह अबुल हुसैन अहमदे नूरी क़ादरी बरकाती मारहरवी क़ुद्दि स सिर्रुहुल अज़ीज़ फ़रमाते हैं। :

„ ग़ौसे आज़म का इरशाद है „ क़दमी हाज़िही अला रक़बति कुल्लि वलिय्यिल्लाह „ मेरा क़दम अल्लाह के हर वली की गरदन पर है। यह कलिमाते हक़ हज़रत ने अल्लाह के हुक्म से बहालते होश इरशाद फ़रमाए। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु का यह मक़ूला जुम्हूर औलियाअल्लाह की तसानीफ़ के ज़रीआ हम तक पहुँचा है ख़ुसूसन ख़्वाजए बुज़ुर्ग सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती सन्जरी रदियल्लाहु तआला अन्हु जो बिल इत्तेफ़ाक़ सारे औलियाए हिन्द से ज़ियादा शरफ़ो बुज़ुर्गी रखते हैं और फ़ज़ीलत में सबसे मुम्ताज़ हैं उन्हों ने जब हुज़ूर ग़ौसे आज़म का यह मक़ूला सुना तो उसी वक़्त ख़्वाजए बुज़ुर्ग पर कैफ़ियत तारी हुई और उसी हाल में इरशाद फ़रमाया „ वह नूर का क़दम मेरे सर आँखों पर।

„(सिराजुल अवारिफ स0 39–41)

इस वाक़ेअे से जहाँ हज़रत ग़ौसे आज़म की अज़मत का पता चलता है वहीं हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के बलन्दपाया मक़ामे विलायतो रूहानियत का नाक़ाबिले शिकस्त सुबूत भी फराहम होता है। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ उन दिनों नौजवान थे और खुरासान की किसी पहाड़ी के ग़ार में रियाज़तो मुजाहदा फरमा रहे थे। „ (अ॰शैख़ अब्दुल क़ादिर ब हवालाए सिराजुल अवारिफ स0 42)

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अपनी रूहानी क़ुव्वतों, दाअवतो तब्लीग़ की मुसलसल कोशिशों और अपने बाकमाल खुलफा की मुख़्लिसाना जिगरकावियों से हिन्दुस्तान के चप्पे चप्पे को नूरे इस्लाम से रौशनो मुनव्वर करदिया। आप बर्रे सग़ीर में सिलसिलए चिश्तिया की ख़िश्ते अव्वल और मुरब्बिये आअला हैं आप ही के दमक़दम से बर्रे सग़ीर में चिश्तिया सिलसिले की खुश्बू फूटी और उस का गोशा गोशा मुअत्तरो मुअंबर होगया। हिन्दुस्तान में इशाअते इस्लाम की तारीख़ के मुतालअे से पता चलता है कि सरज़मीने हिन्द पर इशाअते इस्लाम का अहम फरीज़ा अन्जाम देने वाले सिलसिलए चिश्तिया के सूफिया व मशाइख़ हैं और उन असातीने चिश्त के शहन्शाहो ताजदार सुल्तानुल हिन्द सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हैं।

सिलसिलए चिश्तिया और इस के बानी

बर्रे सग़ीर में सिलसिलए चिश्तिया के बानी की हैसियत से सुल्तानुल हिन्द सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन हसन चिश्ती सन्जरी मुतआरफ़ हैं इस में कोई शुबह नहीं कि सिलसिलए चिश्तिया की तरवीजो इशाअत सबसे ज़ियादा आप ही के वुजूदे मस्ऊद से हुई लेकिन इस सिलसिले के हक़ीक़ी बानी हज़रत शैखुल मशाइख़ शैख़ अबू इसहाक़ शामी चिश्ती (मु0 329, या 340 हि0)हैं।

चिश्त खुरासान के एक मशहूर शहर का नाम है वहाँ कुछ

अहले दिल और अरबाबे तरीक़त ने रुश्दो हिदायत और इसलाहो तरबियत का मरकज़ क़ाइम किया वह निज़ामे तरबियतो हिदायत उस मक़ाम की निस्बत से सिलसिलए चिश्तिया कहलाने लगा उस निज़ाम के सरख़ैलो मुक़्तदा शैख़ अबू इसहाक़ शामी थे और उन्हों ने ही सबसे पहले अपने नाम के साथ उस निज़ामे तरबियत की निस्बत से लफ़्ज़ „चिश्ती„ लिखना शुरूअ किया। बाज़ रिवायात के मुताबिक़ आप का मौलदो मस्कन भी शहरे चिश्त था मुम्किन है कि अपने वतने मालूफ़ की निस्बत से आप ने चिश्ती लिखने की इब्तिदा की हो। मौलाना रहीम बख़्श अपनी तसनीफ „शजरतुल अन्वार„ में लिखते हैं। :

„ व आँ दो मक़ाम अन्द यके शहरेस्त दरमियाने
विलायते खुरासान क़रीबे हिरात व चिश्ते दोम दहेस्त दर
विलाते हिन्दुस्तान दरमियाने औच व मुल्तान व ख़्वाजए
ख़्वाजगाने चिश्त दर चिश्ते खुरासान बूदा अन्द। „

तरजमा :– चिश्त नाम के दो मक़ाम हैं एक शहर है जो हिरात के क़रीब खुरासान में है और दूसरा हिन्दुस्तान में औच और मुल्तान के दरमियान एक गाँव है (जो अब पाकिस्तान में है) ख़्वाजगाने चिश्त खुरासान वाले चिश्त के थे।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी ने मन्क़बते ग़ौसे आज़म अब्दुल क़ादिर जीलानी में उसी खुरासान वाले चिश्त का ज़िक्र किया है आप फरमाते हैं। :

मज़्रअे चिश्तो बुख़ारा व इराक़ो अजमेर
कौन सी किश्त पे बरसा नहीं झाला तेरा

हज़रत शैख़ अबू इसहाक़ चिश्ती शामी

हज़रत शैख़ अबू इसहाक़ शामी चिश्ती मशाइख़े किबार में से गुज़रे हैं आप का लक़ब शरीफुद्दीन था आप की विलादत मुल्के शाम में और तालीमो तरबियत चिश्त में हुई मज़ारे मुबारक भी शहर अक्का में है जो मम्लुकते शाम में ही वाक़ेअ है। (नफ़्हातुल उन्स स0 558)

रिवायत है कि आप मुरीद होने के इरादे से मुल्के शाम से शैख़ुल मशाइख़ हज़रत ख़्वाजा मुमशाद अलू दीनौरी कुद्दि स सिर्रुहू की बारगाह में बग़दाद पहुँचे! हज़रत ख़्वाजा ने दरयाफ्त फ़रमाया „तुम्हारा क्या नाम है?।„ आप ने जवाब दिया „मुझे अबू इसहाक़ शामी कहते हैं„ फिर हज़रत ने फ़रमाया :

„ आज से लोग तुम्हें अबू इसहाक़ चिश्ती कहेंगे चिश्त और उस अलाक़े के लोग तुम से रहनुमाई पाएंगे और जो तेरे सिलसिलए इरादत में दाख़िल होगा उस को भी क़ेयामत तक लोग चिश्ती कहेंगे। „ (मिर्आतुल असरार स0 371)

हल्क़ए इरादत में दाख़िल फ़रमाकर तरबियत के बाद हज़रत शैख़ अलू दीनौरी ने आप को चिश्त भेज दिया आप ने वहाँ जाकर एक मरकज़े तरबियत क़ाइम फ़रमाया जहाँ से सलिसिलए चिश्तिया का आग़ाज़ और उस का फ़रोग़ हुआ। „नफ़्हातुल उन्स„ में है कि :

„ शैख़ अबू इसहाक़ शामी चिश्त तशरीफ लेगए और वहाँ हज़रत ख़्वाजा अहमद अबदाल को जो चिश्त के मशाइख़े किबार में से हैं अपनी सुहबत और तरबियत से मुसतफ़ीज़ फ़रमाया और यह सिलसिला आप की हयाते तैय्यिबा तक जारी व सारी रहा। „ (नफ़्हातुल उन्स)

साहिबे „मिर्आतुल असरार„ आप की एक ख़ुसूसियत का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं। :

„हज़रत ख़्वाजा अबू इसहाक़ शामी चिश्ती मुकाशफ़ात के पोशीदा रखने में बेहद कोशिश फ़रमाते थे इस लिए आप ने सूरते सहव इख़्तियार कर रखी थी ताकि अवाम आप के कमालात से मुततला न हों और सूफ़ियाए किराम के नज़दीक यह मक़ाम बहुत बलन्द है। „ (मिर्आतुल असरार बहवालए सैरुल औलिया स0 374)

हिन्दुस्तान में सिलसिलए चिश्तिया

हिन्दुस्तान में सिलसिलए चिश्तिया की आमद सरकारे ख़्वाजा

ग़रीब नवाज़ की ज़ाते पाक से मुन्सलिक है और आप के वुरूदे मस्ऊद से ही इस सिलसिले का फ़ैज़ान यहाँ जारी हुआ। आप ने अपनी हिकमते अमली, जाँगुसल जिद्दो जहद, ख़ुदादाद ताक़तो क़ुव्वत, कश्फ़ो करामात और तसर्रुफ़ो ताईदे ग़ैबी के ज़रीआ इस्लाम का नूर फैलाया और इसलाहे हाल व तज़्किए नफ्स का हैरत अंगेज़ कारनामा भी अन्जाम दिया। आप के किरदारो अमल की ख़ुशबू से पूरा मुल्क मुअत्तर होगया और आप के गिर्द जाँनिसारों का हुजूम रहने लगा आप ने अपने ख़ुलफ़ा और मुरीदीन की एक ऐसी जमाअत तैय्यार की जिस के अफ़राद मुल्क के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में जाकर अपने मुर्शिद की नियाबत के फ़राइज़ अन्जाम देने लगे जिस के नतीजे में पूरे मुल्क में इस्लाम की इशाअत और सिलसिलए चिश्तिया का फ़रोग़ निहायत तेज़रफ्तारी से होने लगा यही वजह है कि आज चिश्तियत और हिन्दुस्तान एक दूसरे केलिए लाज़िमो मलज़ूम की हैसियत से मशहूरो मुतआरफ हैं अगरचे आप के अहद में आप के पीरभाई और मुरीदीनो ख़ुलफ़ा के अलावा हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ अलाक़ों में बड़े बड़े उलमा व मशाइख़ मौजूद थे और अपने अपने अन्दाज़ में दीन की इशाअत के फ़राइज़ अन्जाम देरहे थे मगर उन के मसाई उन के आस पास के अलाक़ों तक महदूद थे लेकिन उन बुज़ुर्गों की ख़िदमात भी लाइक़े सताइश हैं। ज़ैल में हम उन मआसिर बुज़ुर्गों में से चन्द के असमाए गिरामी दर्ज कर रहे हैं।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के अहद के

उलमा, मशाइख़ और मुजाहिदीन

(1):– हज़रत शैख़ मुबारक उर्फ मास्को शहीद 598 हि० में ज़न्जान (ईरान) से हिन्दुस्तान आमद और जाजमऊ कानपूर में शहादत।

(2):– हज़रत क़ाज़ी सिराजुद्दीन उर्फ दादामियाँ 599 हि० में ज़न्जान से हिन्दुसतान आमद और जाजमऊ कानपूर में इन्तेक़ाल (वहीं आप का मज़ारे अक़दस मरजअे ख़लाइक़ है)

(3):– सैय्यिद सदरुद्दीन क़न्नौजी 604 हि० में क़न्नौज में मुक़ीम होकर इल्मी व दीनी ख़िदमात की अन्जामदही में मसरूफ थे। (तज़्किरए उलमाए हिन्द)

(4):– शैख़ अबुल अब्बास नहावन्दी नहावन्द से हिन्दुस्तान आमद 643 हि० में इन्तेक़ाल मज़ारे मुबारक देहली में हज़रत कुतुब साहब के क़दमों में है। (सफ़ीनतुल औलिया)

(5):– ख़्वाजा अमादुद्दीन बिल्गिरामी 614 हि० से क़ब्ल राजा बिल्गिराम को अपनी रूहानी ताक़त से शिकस्त देकर इस्लाम का बोल बाला किया।

(6):– हज़रत सैय्यिद मुहम्मद सुग़रा 614 हि० में बिल्गिराम के राजा से मुक़ाबला आराई करके उस पर फतह पाई 645 हि० में विसाल फरमाया और वहीं मज़ारे मुक़द्दस है। (यादे हसन स० 76)

(7):– मौलाना हसन सेग़ानी लाहौरी लाहौर में 577 हि० में विलादत हुई 615 हि० में बग़दाद जाकर मुक़ीम हुए 650 हि० में विसाल फरमाया और मक्कए मुअज़्ज़मा में मदफून हुए।

(8):– मौलाना याअक़ूब शाफई सन्जरी सन्जर से नहरवाला (गुजरात) में अल्फ ख़ाँ सन्जर के साथ आकर मुक़ीम हुए आप की निगरानी में सुल्तान सन्जर ने एक मस्जिद तामीर करवाई जिस की तकमील 655 हि० में हुई।

(9):– हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करीया मुल्तानी आप का ज़िक्र सलासिले तरीक़त के ज़िम्न में आइन्दा सफ्हात में मुलाहज़ा फरमाएं।

(10):– हज़रत मख़्दूम शाहे आअला जाजमवी आप की विलादत 570हि० में ज़न्जान (अलाक़ए ईरान) में हुई। 599 हि० के आग़ाज़ में देहली पहुँचे फिर वहाँ से जाजमऊ कानपूर पहुँचकर राजा जाज से जंग करके फतह हासिल की। 659 हि० में विसाल हुआ और वहीं आप का आस्ताना फैज़ बख़्शे आम है।

(11):– सूफी हमीदुद्दीन नागौरी आप का विसाल 673 हि० में हुआ मज़ारे मुबारक शहर नागौर (राजस्थान) में है। (तज़्किरए उलमाए हिन्द)

(12):– सैय्यिद क़ुतुबुद्दीन मुहम्मद हसनी कड़ावी 581 हि० में ग़ज़नी में पैदा हुए सुल्तान क़ुतुबुद्दीन अल्तमश के अहदे सल्तनत में देहली तशरीफ लाए 677 हि० में कड़ा (मानिकपूर) में आप का विसाल हुआ और वहीं मज़ारे मुबारक है।

(13):– हज़रत मख़्दूम अली महाइमी आप के आबा व अजदाद मदीनए तैय्यिबा से हिजरत करके हिन्दुस्तान के साहिले समन्दर पर आकर मुक़ीम होगए थे आप का विसाल 835 हि० में हुआ माहिम बम्बई में आप का आस्ताना फैज़बख़्शे आम है।

(14):– मौलाना अमादुद्दीन ग़ौरी आप के बाज़ असलाफ शहाबुद्दीन ग़ौरी के साथ हिन्दुस्तान पहुँचे। इल्मी व दीनी बेशबहा ख़िदमात अन्जाम दीं।

सबसे ऊँचा ताज उन्हीं का

गुज़श्ता सफ्हात में इब्तेदाए इस्लाम से सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के अहद और उस से मुत्तसिल बाद के अहद तक के उलमा व मशाइख़ का तज़्किरा किया गया जिन में एक से बढ़कर एक साहिबाने इल्मो फज़्ल, ज़ुहदो तक़वा, विलायतो करामत, सख़ावतो शुजाअत और ख़ुलूसो लिल्लाहियत के अदीमुल मिसाल पैकर थे और अपने अपने दाइरए अमल में सख़्त से सख़्त मुश्किलात और अज़िय्यतों का सामना करके बलिक बाज़ सूरतों में अपनी जानें निसार करके इस्लाम की तरवीजो इशाअत का अहम फरीज़ा अन्जाम दिया जिस के असरात आज भी उन के मख़सूस अलाक़ों में महसूस किए जासकते हैं मगर उन सब की सरदारी व शहन्शाही क़ुदरत की तरफ से हज़रत सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के नाम मुक़द्दर थी इस लिए मुल्की सतह पर ही नहीं बल्कि आलमी पैमाने पर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के तब्लीग़ी मिशन की कामयाबी की धूम है और हर ख़ुशअक़ीदा मुसलमान के दिल में बग़ैर किसी रद्दोक़दह के सरकारे ग़रीब नवाज़ की अक़ीदत हज़ार जलवासामानियों के साथ रासिख़ है जो क़ेयामत तक इसी तरह क़ाइमो दाइम रहेगी और तमाम उलमा व मशाइख़ और औलियाए किराम व सूफियाए उज़्ज़ाम की गरदनें अजमेर शरीफ़ के शोहरा आफाक़ और आसमाँसिफत आस्ताने की तरफ हमेशा ख़म रहेंगी।

सिलसिलए चिश्तिया की मक़बूलियत

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अपने जलालो जमाल के इम्तेज़ाज के साथ अजमेर की तारीख़ साज़ धरती पर हिन्दुस्तानी

लोगों के दिलों की सफाई सुथराई में मस्रूफ थे तो दूसरी तरफ मुल्क के मुख़्तलिफ हिस्सों में आप के हमअस्र उलमा व मशाइख़ और सूफियाए किराम (जिन में आप के पीरभाई, और ख़ुलफा भी शामिल हैं) अपने अपने तरीक़ए कार से इस्लाम की इशाअतो तरवीज की कोशिशों में हमातन मुन्हमिक थे। सिलसिलए चिश्तिया के अलावा दीगर सलासिले तरीक़त के बुज़ुर्गाने दीन भी अपने मुर्शिदाने किराम के अहकामो इरशाद की तामीलो तकमील में अपनी इल्मी, इर्फानी और रूहानी क़ुव्वतें सर्फ कर रहे थे मगर हिन्दुस्तान में आने वाले तमाम सलासिले तसव्वुफ (जिन का तज़्किरा आगे आएगा) में जो शोहरतो मक़बूलियत सिलसिलए चिश्तिया को हासिल हुई वह किसी और को मयस्सर न होसकी अलबत्ता इम्तेदादे ज़माना के सबब इस का ज़ोर कम होने के बाद इस मुल्क में सिलसिलए क़ादिरीया को उरूज हासिल हुआ बाक़ी तमाम सिलसिले ज़िमनी और ज़ैली हैसियत से अपनी ज़िन्दगी का सुबूत पेश कर रहे हैं।

सिलसिलए चिश्तिया की मक़बूलियत के दो बड़े असबाब बताए जाते हैं। एक तो यह कि चिश्ती बुज़ुर्गों ने हाकिमाने वक़्त से अपने रवाबित नहीं रखे बलिक अवाम के पसमाँदा तबक़ों से गहरा तअल्लुक़ क़ाइम किया। सलातीने तुग़लक़ के ज़माने तक सोहरवर्दी सिलसिले के बुज़ुर्गों को क़स्रे सुल्तानी में इतना असरो रुसूख़ हासिल था कि वह न सिर्फ हाजतमन्दों की अर्ज़ियाँ लेकर बादशाह को पेश कर देते थे बलिक हज़रत रुक्नुद्दीन मुलतानी ने अपना रुसूख़ इस्तेअमाल करके मुहम्मद तुग़लक़ के हाथों मुलतान को क़तले आम से बचा लिया था। मगर चिश्तिया सिलसिले के बुज़ुर्ग उस के बरअक्स उन परीशानहाल, दरमाँदा और हाजतमन्दों केलिए दुआ और तावीज़ ही पर क़नाअत करते थे इस की नौबत तक़रीबन नहीं आती थी कि वह किसी केलिए बादशाहे वक़्त से सिफारिश भी करें। इस तरह इब्तेदा में इस ख़ानवादे के बुज़ुर्गों ने तसनीफो तालीफ से भी एहतेराज़ किया। चुनाँचे अगर हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया क़ुद्दि स सिर्रुहुल अज़ीज़ ने फरमाया कि :

„ हमारे मशाइख़ में से किसी ने कोई किताब नहीं लिखी। „

तो इस का मतलब यह भी होसकता है कि चिश्ती बुज़ुर्गों ने तसव्वुफ के नज़रयाती मबाहिस पर ऐसी कोई तसनीफ नहीं छोड़ी जैसी मिर्सादुल इबाद, कुव्वतुल कुलूब, कश्फुल महजूब, अत्तअर्रुफ, अवारिफुल मआरिफ या आदाबुल मुरीदीन वग़ैरह हैं और इस का सबब यह है कि चिश्ती बुज़ुर्गों ने तसव्वुफ को सरासर „हाल„ समझा और उस में „काल„ को दख़्ल नही दिया वह यह अक़ीदा रखते थे कि तसव्वुफ तमामतर अमल है उस का फलसफे की तरह शर्हो बयाँ में आना मुश्किल है और जो कुछ क़ैदे अलफाज़ में आएगा वह तसव्वुफ नहीं होगा।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का

आफाकी निज़ामे तब्लीग़

जैसा कि बयान किया जाचुका है कि हिन्दुस्तान में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से क़ब्ल भी बहुत से बुज़ुर्ग तशरीफ लाए जिन्हों ने तब्लीग़ो इशाअते दीन की क़ाबिले क़द्र ख़िदमात अन्जाम दीं लेकिन उन की जिद्दो जहद के असरात ज़ियादातर सिन्धो पंजाब तक महदूद रहे जहाँ मुसलमानों की हुकूमत क़ाइम हो चुकी थी। वह कोई मुल्कगीर निज़ामे तब्लीग़ क़ाइम न करसके और न तालीमो तरबियत याफ्तगान की कोई ऐसी जमाअत तैय्यार करसके जो उन के बाद इस दाअवत को आगे बढ़ाती। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमात को उन पर कई वुजूह से फज़ीलत हासिल है।

पहली वजहः— सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सिलसिलए चिश्तया के बुज़ुर्ग थे। आप के यहाँ शरीअत की पाबन्दी पर सब से ज़ियादा ज़ोर दिया जाता था। शरीअत की पाबन्दी के बग़ैर किसी साहिबे कमाल का कमाल मक़बूलो महमूद नहीं ख़्वाह वह हवा में उड़े, पानी पर चले, आग में कूद पड़े और दामन को आँच न आने दे। सरकारे ख़्वाजा के नज़दीक किसी बुज़ुर्ग की सबसे बड़ी करामत यह है कि उस की कोई बात शरीअत के ख़िलाफ न

हो।

आप की तालीमात में ज़िक्रे इलाही, तिलावते कलामे पाक, इश्के रसूल, इत्तेबाअे सुन्नत, क़ेयामे सलात, कसरते सौम, ज़ियारते ख़ानए काअबा(हज), ख़िदमते वालिदैन, ताज़ीमो महब्बते बुज़ुर्गाने दीन व उलमाए किराम और ख़िदमते मुर्शिद को ख़ास और बुन्यादी अहम्मियत हासिल है। आप ने अहले दुन्या को तर्के दुन्या की तालीम नहीं दी बल्कि दुन्या में अहकामे इलाही के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का सलीक़ा सिखाया।

दूसरी वजहः— आप के लिए रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तब्लीग़ी व इसलाही कोशिशों के लिए मरकज़ के तौर पर एक ऐसे मक़ाम का इन्तेख़ाब फरमाया जो एक हिन्दू राजा की राजधानी था। जहाँ उस वक़्त तक इस्लाम की रौशनी की कोई शोआअ पहुँची थी न उस वक़्त तक वहाँ इस्लामी हुकूमत के क़दम जमे थे इस वजह से जो मसाइबो मुश्किलात पेश आईं उन का आप ने निहायत साबितक़दमी से मुक़ाबला किया और आप ही के मसाई से इस्लाम की रौशनी मुसलमानों के हुदूदे मम्लुकत याअनी सिन्ध, पंजाब और देहली वग़ैरह से निकलकर हिन्दुस्तान के गोशे गोशे में पहुँच गई और इस तरह इस्लाम का दाइरा वसीअ से वसीअ तर होता चलागया।

तीसरी वजहः— आप का तरीक़ए तब्लीग़ो हिदायत भी हिन्दुस्तान की मख़सूस फज़ा के मुताबिक़ था। हिन्दुस्तानी समाज में ज़ात पात की तक़्सीम थी, पेशे इज़्ज़तो ज़िल्लत की बुन्याद थे। सरकारे ख़्वाजा ने इस्लामी तालीमात का जो रुख़ उन के सामने सबसे पहले पेश किया वह यह था कि तमामा मख़लूक़ ख़ुदा का कुंबा है, मख़लूक़े ख़ुदा की ख़िदमत करना ख़ुदा के नज़दीक बलन्द दर्जे का काम है। इज़्ज़तो ज़िल्लत का मेअयार पेशा या हमारी क़ाइम की हुई समाजी हदबन्दियाँ नहीं बल्कि इज़्ज़त और बड़ाई का मेअयार नेकी और शराफत है। अल्लाह तआला के नज़दीक इज़्ज़तदार वह है जो लोगों में सबसे ज़ियादा नेक हो। किसी शख़्स को महज़ ज़ात या रंग रूप या किसी ख़ास पेशे की वजह से दूसरे पर फज़ीलत हासिल नहीं। मुसलमान भाई भाई हैं

इन्सानियत का एहतेराम और हर मज़हबो मिल्लत के बुज़ुर्गों की इज़्ज़त करना आअला दर्जे का अख़लाक़ है। आप ने बताया कि मज़हब किसी ख़ास तब्के की जागीर नहीं। मज़हब इन्सानियत की सलाहो फलाह का ज़रीआ है और हर शख़्स को हक़ हासिल है कि उस की तालीमात को सीखे और उस पर अमल करे जिस तरह खुदा की नेअमतें आम हैं, ज़मीन की वुस्अतों में सब केलिए गुन्जाइश है, सूरज सब को रौशनी देता है, हवा सब को पहुँचती है, चाँद सितारे सब केलिए हैं उसी तरह अल्लाह की महब्बत तमाम मख़लूक़ केलिए है पस जो उस से महब्बत करता है खुदा उस से महब्बत करता है जो उस के आगे सर झुकाता है खुदा उसे दुन्या में इज़्ज़त देता और उस का सर बलन्द करता है।

सरकारे ख़्वाजा सबसे पहले लागों को इन आलमगीर सच्चाइयों की तरफ माइल करते थे, इन्सानियत की ख़िदमत, मख़लूके खुदा से महब्बत और अफ्वो दरगुज़र, लोगों के हुकूक़ का एहतेराम और उन की पासदारी और ज़ुल्मो फसाद से गुरेज़ वग़ैरह इस के साथ वह इस्लामी तालीमात में से तौहीदो रिसालत, उख़ुव्वते इस्लामी और मुसावात वग़ैरह की ख़ुसूसियात उन के ज़ेहन नशीं कराए। यही तालीम लोगों के इस्लाम कुबूल करने का सबब बन जाती थी उस के बाद अहकामे इस्लामी की तालीम और उन पर अमल करने की तलक़ीन फरमाते और साथ ही साथ इसलाहो तरबियत का सिलसिला जारी रहता।

यह तरीक़ए तब्लीग़ ऐसा फितरी था कि जब एक मरतबा कोई शख़्स अक़ीदत के साथ उन की तरफ मुतवज्जेह होजाता तो उस का क़दम पीछे नही हटता था और नामुम्किन था कि वह इस्लाम की सदाक़तो हक़्क़ानियत पर ईमान न लेआए चेनाँचे आप की कोशिशों से हज़ारहा ग़ैरमुस्लिम मुशर्रफ ब इस्लाम हुए जिन की क़िस्मत में कुफ्र लिखा था, जिन के दिलों पर मोहरें लगी हुई थीं उन के लिए तो इस्लाम कुबूल करना मुम्किन न था लेकिन वह भी आप की तालीमात और आप के अख़लाक़ो सीरत से मुतअस्सिर हुए बग़ैर न रहते थे यही वजह है कि आप के विसाल को तक़रीबन आठ सौ बरस गुज़र चुके हैं लेकिन मुख़्तलिफ मज़हबों

और मिल्लतों के लोग आप से यकसाँ अक़ीदत रखते हैं और आप का मज़ार बिला तफरीक़े मज़हबो मिल्लत अवामो ख़वास हिन्दुओं और मुसलमानों का मरजअे अक़ीदत है।

चौथी वजह:— आप ने अपनी तालीमो तरबियत से एक ऐसी जमाअत तफय्यार करदी जिस ने तब्लीग़ो इशाअते इस्लाम और इसलाहे उम्मत की दाअवत को हमेशा ज़िन्दा रखा और हिन्दुस्तान का चप्पा चप्पा इस्लाम की रौशनी से मुनव्वर होगया। आप ने कमो बेश पछत्तर ख़ुलफा को अपनी नियाबत केलिए तैय्यार किया जिन में से सिर्फ़ अजमेर शरीफ में 26, देहली में 15, मुलतान और क़न्धार में दो दो और नागौर, बनारस, क़न्नौज, अहमदाबाद, हिरात और ग़ज़नी में आप का एक एक नाइब व ख़लीफा आप की नियाबत केलिए मौजूद था उस के अलावा और भी मुख़्तलिफ मक़ामात पर आप ने अपने ख़ुलफा मुतऐय्यन फरमाए ताकि मुल्कगीर सतह पर तब्लीग़ का निज़ाम क़ाइम होसके।

पाँचवीं वजह:— सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को सुलतानुल हिन्द की हैसियत से हिन्दुस्तान भेजा गया था ज़ाहिर है कि वह अपनी कोशिशों को किसी एक ख़ित्ते और मुल्क के किसी एक गोशे में महदूद नहीं रख सकते थे आप के सामने तो पूरा कुफ्रज़ारे हिन्द था। चुनाँचे आप ने हिन्दुस्तान में तब्लीग़ो इशाअते इस्लाम केलिए एक मुसतक़िल निज़ाम क़ाइम कर दिया उस निज़ाम में मरकज़ी हैसियत दारुलख़ैर अजमेर शरीफ को हासिल थी उस के तहत दूसरे मराकिज़ सरगर्मे अमल थे।

शिमाली हिनद में देहली और बनारस दो बड़े मरकज़ थे। देहली में आप के चहीते ख़लीफा हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी क़ुद्दि स सिर्रुहू और बनारस में आप के ख़लीफा शैख़ क़ादिर सईद रहमतुल्लाहि तआला अलैह रुश्दो हिदायत के कामों में मसरूफ थे, वस्ती हिन्द में नागौर अहम मरकज़ था जहाँ आप के मशहूर ख़लीफा सूफी हमीदुद्दीन नागौरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह मन्सबे रुश्दो हिदायत पर फाइज़ थे। मग़्रिबी हिन्द में लाहौर और मुलतान बड़े मरकज़ थे। लाहौर में हज़रत बाबा फरीदुद्दीन गंजे शकर मख़लूक़े खुदा की ख़िदमतो हिदायत केलिए

कोशाँ थे। हज़रत गंजे शकर अगरचे आप के ख़लीफ़ा हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से बैअत और उन के ख़लीफ़ा थे लेकिन उन्हों ने सरकारे ख़्वाजा से भी फ़ैज़ हासिल किया था, मुलतान में हज़रत शैख़ वजीहुद्दीन आप के ख़लीफ़ा तब्लीग़ो इशाअते दीन में मसरूफ़ थे। जुनूबी हिन्द में अहमदाबाद और शिमाली हिन्द में क़न्नौज भी अहम मक़ामात थे, अहमदाबाद में हज़रत शैख़ शमसुद्दीन लूक़ानी और क़न्नौज में शैख़ फ़क़ीर मुहम्मद जमरूदी और शैख़ अहमद ख़ाँ ग़िल्ज़नी आप के ख़लीफ़ा व मुजाज़ थे। बंगाल में शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी रुश्दो हिदायत और तब्लीग़ो इशाअते इस्लाम में मसरूफ़ थे। हज़रत शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी पहले शैख़ अबू सईद तबरेज़ी से बैअत थे फिर हज़रत ख़्वाजा उसमान हारवनी की सोहबत से फ़ैज़ उठाया इस तअल्लुक़ की बिना पर उन्हें हज़रत ख़्वाजा साहब से दिली इरादत थी वह हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए तो मुलतान होते हुए देहली पहुँचे और देहली से बंगाल का रुख़ किया। बंगाल का अलाक़ा उस वक़्त तक सरकारे ख़्वाजा ने किसी को तफ़्वीज़ नहीं किया था इस लिए उन का वहाँ जाना उसी निज़ामे रुश्दो हिदायत की पाबन्दी थी जो सरकारे ख़्वाजा ने हिन्दुस्तान के लिए तरतीब दिया था। राजपुताना में बयाना (भरत पूर) का अलाक़ा सैय्यिद मुईनुद्दीन को तफ़्वीज़ किया, अजमेर में ख़ुद सरकारे ख़्वाजा अपने दरजनों ख़ुलफ़ा और सैकड़ों मुरीदीन के साथ मौजूद थे। आप के गिर्द हमेशा बड़े बड़े औलिया व मशाइख़ का मजमा रहता और यह अलाक़ा अनवारो तजल्लियाते इलाही से हमेशा जगमगाता रहता था।

यहाँ हर मरकज़ से सिर्फ़ एक ख़लीफ़ा का नाम लिया गया है जबकि एक एक मरकज़ में बयक वक़्त आप के कई कई बलन्द मर्तबा ख़ुलफ़ा मौजूद थे और उन्हों ने इस सिलसिले को पूरे हिनदुस्तान में फैला दिया था। और सरकारे ख़्वाजा का यह निज़ाम आप के बाद तक़रीबन दो सदियों तक पूरे शबाब पर रहा और इस से पूरे मुल्क के गोशे गोशे में इस्लाम की तब्लीग़ो इशाअत और सिलसिलए चिश्तिया का फ़रोग़ होतारहा। मुल्क के

मुख़्तलिफ़ हिस्सों (शहरों, क़सबों और दिहातों) में चिश्ती बुज़ुर्गों की मशहूरो माअरूफ़ ख़ानक़ाहें और उन के बाफ़ैज़ आसताने इस बात की शहादत केलिए काफ़ी हैं। चुनाँचे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के फ़ुयूज़ो बरकात का सिलसिला आज भी जारी है और बर्रे सग़ीरे हिन्दो पाक के हर अलाक़े में सिलसिलए चिश्त अहले बहिश्त का कोई न कोई बुज़ुर्ग हमेशा हर ज़माने में मौजूद रहा है और यह निज़ाम हिन्दुस्तान व पाकिस्तान ही तक महदूद नहीं ग़ज़नी में ख़्वाजा मुहम्मद यादगार ख़ुर्रम, हिरात में शैख़ वजीहुद्दीन ख़ुरासानी और कन्धार में ख़्वाजा सब्ज़ यादगारी आप के ख़ुलफ़ा व मुजाज़ थे उन बुज़ुर्गों का सिलसिला आज तक तमाम आलमे इस्लाम में फैला हुआ है।
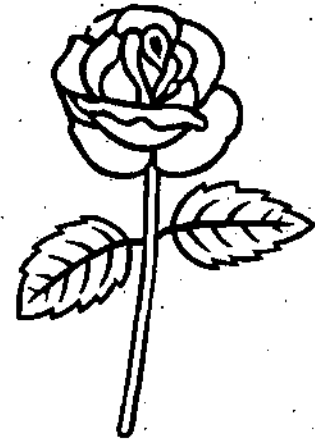
दीगर सलासिले तरीक़त

हिन्दुस्तान में तसव्वुफ़ के दो ख़नवादों ने सब से पहले नुफ़ूज़ किया, सोहरवर्दी सिलसिला मुल्क के मग़रिबी अलाक़ों में ख़ासा मक़बूल होचुका था और उस के मुबल्लिग़ीन शिमाली हिन्दुस्तान की तरफ़ भी बढ़ते आ रहे थे लेकिन चिश्तिया सिलसिले का फ़रोग़ सरकारे ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन सन्जरी क़ुद्दि स सिर्रुहू के क़ुदूमे मैमनत लुज़ूम के साथ हुआ और आप ने मग़रिबी सरहदों से आगे बढ़कर हिन्दुस्तान के क़ल्ब में अपने मिशन की तब्लीग़ की और अजमेर को हमेशा केलिए रूहानियों का क़िबलओ काअबा बना दिया। सोहरवर्दी सिलसिले के बानी हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन उमर सोहरवर्दी से चिश्ती सिलसिले के बुज़ुर्गों ने भी फ़ैज़ हासिल किया था और उन की बलन्दपाया तसनीफ़ „अवारिफ़ुल मआरिफ़„ तो कहना चाहिए अहले तसव्वुफ़ की रहनुमा किताब थी और यह उन चन्द किताबों में से एक है जिन में एक तो क़ुरआनो सुन्नत की रौशनी में यह साबित किया गया है कि तसव्वुफ़ महज़ अजमी और ग़ैर इस्लामी चीज़ नहीं है बल्कि यह दीन की रूह का नाम है, दूसरे उस के तमाम नज़री मबाहिस पर पूरी वज़ाहत से लिखा गया है। उलमाए ज़ाहिर ने अहले तसव्वुफ़ के ख़िलाफ़ जो महाज़ तैय्यार किया था उसे „अवारिफ़ुल मआरिफ़„ और „कश्फ़ुल महजूब„ जैसी किताबों ने बैते अनकबूत से ज़ियादा कमज़ोर बना दिया और लेदे के सिर्फ़ एक समाअ का मस्अला ऐसा रह गया था जिस पर वह महज़र तैय्यार कर सकते थे। सोहरवर्दी बुज़ुर्गों ने तसव्वुफ़ के नज़री मवाहिस पर ख़ूब ख़ूब लिखा और यह सिलसिला बाद में कई सदियों तक जारी रहा।

सिलसिलए सोहरवर्दिया व दीगर सलासिले तरीक़त मसलन सिलसिलए क़लन्दरिया, सिलसिलए क़ादिरीया, सिलसिलए

नक़्शबन्दिया, सिलसिलए तैफ़ूरिया और सिलसिलए फ़िर्दौसिया की हिन्दुस्तान में आमद, उन सलासिल के अहम मशाइख़ और बानी व मुनतहा की क़दरे तफ़सील मुलाहज़ा कीजिए।

सिलसिलए सोहरवर्दिया

जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि सिलसिलए सोहरवर्दिया छटी सदी हिजरी में हिन्दुस्तान में आया। इस के लाने वाले हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करीया मुलतानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह हैं। हज़रत सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की हिन्दुस्तान तशरीफ़ आवरी से कुछ पहले हज़रत ज़करीया मुलतानी हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी से बैअतो ख़िलाफ़त का शरफ़ हासिल करके मुलतान तशरीफ़ लाए जो हिन्दुस्तान में इस सिलसिले के बानी हैं।

सोहरवर्द

„सीन„ और पहली „रा„ के ज़म्मा (पेश) के साथ „सोहरवर्द„ एक शहर का नाम है चुनाँचे „बहजतुल अस्रार„ और „हाशियए मवाहिब„ वग़ैरह में यही है और „तारीख़े इब्ने ख़लकान„ वग़ैरह में „रा„ के फ़त्हा(ज़बर) के साथ „सोह र वर्द„ लिखा है। इराक़े अजम के ज़न्जान के नज़दीक एक शहर इस नाम का आबाद है। हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी उसी शहर के रहने वाले थे उसी निस्बत से आप सोहरवर्दी कहे जाते थे। आप के सोहरवर्दी होने के सबब यह सिलसिला भी सोहरवर्दिया के नाम से मशहूरो मुतआरफ़ होगया।

शैख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी

सिलसिलए सोहरवर्दिया के बानी हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन उमर सोहरवर्दी हैं। आप का नाम उमर इब्ने मुहम्मद अल बकरी, लक़ब शैखुश्शुयूख़ और कुन्नियत अबू हफ़्स है। आप के वालिद का नाम शैख़ मुहम्मद क़ुरैशी सोहरवर्दी है। आप का सिलसिलए नसब हज़रत सैय्यिदुना अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु तक

पहुँचता है। कुतबे ज़माँ, ग़ौसे जहाँ,आलिमे आमिल, फ़ाज़िले कामिल और पेशवाए शरीअतो तरीक़त थे। मज़हब शाफई रखते थे मुतअख़्ख़िरीने बग़दाद में आप बहुत मशहूर हुए। अरबाबे तरीक़त दूरो नज़दीक से तरीक़त के मसाइलो मआमलात में आप से रुजूअ करते थे। अपने चचा हज़रत ज़ियाउद्दीन अबुन्नजीब सोहरवर्दी के मुरीदो ख़लीफा थे और हुजूर ग़ौसे आज़म सैय्यिदुना शैख़ मुहीयुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी रदियल्लाहु तआला अन्हु की सोहबतो इजाज़त से भी मुशर्रफ होकर बड़े फवाइद हासिल किए थे। हज़रत ग़ौसे आअज़म ने आप को मुख़ातब करके इरशाद फरमाया था „या उमरु अन्ता आख़िरुल मशहूरीना फिल इराक़,, ऐ उमर! तुम इराक़ के मुतअख़्ख़िरीन में सब से ज़ियादा मशहूर होगे। (इन्तेसाह अन ज़िक्रे अहलिस्सलाह)

हज़रत शैखुश्शुयूख़ खुद फरमाते हैं कि :

„अय्यामे जवानी में मैं इल्मे कलाम में मशग़ूल था और उस की चन्द किताबें मैं ने याद कर रखी थीं मेरे अम्मे मुहतरम उस से मना फरमाते थे। एक दिन अम्मे मुहतरम मुझे हुज़ूर ग़ौसे आअज़म की ख़िदमते बाबरकत में लेगए और मुझ से फरमाया कि ऐसे शख़्स की बारगाह में हाज़िर होरहे हो जिस का दिल ख़ुदाए पाक की ख़बर देता है तो उन के दीदार की बरकतों के मुन्तज़िर रहो।

जब मैं हाज़िरे बारगाह होकर बैठ गया तो शैख़ अबुन्नजीब ने कहा हुज़ूर! यह मेरा भतीजा (बिरादर ज़ादा) इल्मे कलाम में मशग़ूल है हरचन्द मेरे मना करने के बावुजूद उस से बाज़ नहीं आता। हुज़ूर ग़ौसुस्सक़लैन ने फरमाया। तू ने कौन कौन सी किताबें याद कर रखी है? मैं ने कहा फुलाँ फुलाँ किताब। आप ने अपना दस्ते मुबारक मेरे सीने पर रखा। ख़ुदा की क़सम उन किताबों का एक लफ्ज़ भी मेरी याददाश्त में महफ़ूज़ न रहा अल्लाह तआला ने उस के तमाम मसाइल मेरे दिलो दमाग़ से फरामोश करके मुझे इल्मे लदुन्नी से माअमूर फरमा दिया। हज़रत शैखुश्शुयूख़ फरमाते हैं कि मुझे जो कुछ हासिल हुआ है वह शैख़ अबदुल क़ादिर जीलानी की बरकत है।,,

आप के मशाहीर खुलफा में हज़रत नूरुद्दीन मुबारक ग़ज़नवी

हज़रत बहाउद्दीन ज़करीया मुलतानी, शैख़ नजीबुद्दीन मरअशी शीराज़ी, शैख़ हमीदुद्दीन नागौरी और मशहूर तरीन मुरीदों में हज़रत शैख़ मुस्लिहुद्दीन सांअदी शीराज़ी (रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन) हैं।

आप की विलादत रजब 539 हि0 में हुई और वफात 632 हि0 में। आप का मज़ारे मुबारक बग़दाद शरीफ में है। आप की तसानीफ में „अवारिफुल मआरिफ,, बहुत मशहूरो मक़बूल है।(इन्तेसाह)

शैख़ बहाउद्दीन ज़करीया मुलतानी

हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करीया मुलतानी कुद्दि स सिर्रुहू हज़रत शैखुश्शुयूख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी कुद्दि स सिर्रुहू के कामिल तरीन ख़लीफा और मुरीद हैं। आप हिन्दुस्तान में सिलसिलए सोहरवर्दिया के पहले बुज़ुर्ग हैं जिन की ज़ात से इस मुल्क में सिलसिलए सोहरवर्दिया को काफी फरोग़ हासिल हुआ।

आप का नामे नामी ज़करीया, कुन्नियत अबू मुहम्मद और लक़ब बहाउद्दीन है। आप के वालिदे माजिद हज़रत वजीहुद्दीन इब्ने कमालुद्दीन अली शाह अलक़रशी अलअसदी सुम्मल मुलतानी हैं। आप मुलतान के क़दीमी बाशिन्दे थे उलूमे ज़ाहिरो बातिन, फिक़्हो हदीस और उसूलो फुरूअ में कामिलो मुकम्मल और अपने अहद के क़ुतबो ग़ौस और अकाबिरे औलियाए हिन्द में से थे। आप हनफीयुल मज़हब थे। उलूमे ज़ाहिरी की तहसीलो तकमील के बाद पन्दरह साल तक दर्सो तदरीस के ज़रीआ लोगों को उलूम से बहरावर किया हर रोज़ आप से सत्तर तलबा इस्तिफादा करते थे आप साहिबे कश्फो करामात और बड़े दरजात के हामिल थे। हज्जो ज़ियारते हरमैने तैय्यिबैन से वापसी पर बग़दाद शरीफ हाज़िर हुए और हज़रत शैखुश्शुयूख़ से मुरीद होगए और उसी

मौके पर आप के पीरो मुर्शिद ने आप को इजाज़तो ख़िलाफत से भी नवाज़ा। फिर आप शैखुश्शुयूख़ से रुख़्सतो इजाज़त लेकर मुलतान में आकर मुक़ीम होगए।

रिवायत है कि हज़रत बहाउद्दीन ज़करीया मुलतानी का हज़रत शैख़ फरीदुद्दीन गंजे शकर से बड़ा गहरा लगाव और तअल्लुक़ था यह भी क़ौल है कि दोनों ख़ालाज़ाद भाई थे। (सफीनतुल औलिया,इन्तेसाह)

आप की विलादते बासआदत रमज़ानुल मुबारक की शबे क़द्र शबे जुमा 566 हि० में और बाज़ कौल के मुताबिक़ 578 हि० में क़िला कोट में हुई और वफात 7 सफर बरोज़ पंजशंबा (जुमेरात) बादे नमाज़े ज़ुहर और बाज़ क़ौल में 17 सफर 666 हि० को एक सौ साल की उम्र में हुई। मुलतान में आप का मज़ारे मुबारक मशहूरो माअरूफ़ और मरजअे ख़लाइक़ है। (सफीनतुल औलिया, इन्तेसाह, तज़्किरए उलमाए हिन्द)

क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी

आप का नाम मुहम्मद इब्ने अता है क़ाज़ी हमीदुद्दीन के नाम से मशहूरो मुतआरफ हैं आप शमसुद्दीन अलतमश के दौरे हुकूमत में थे। हज़रत शैखुश्शुयूख़ शहाबुद्दीन उमर सोहरवर्दी कुद्दि स सिर्रुहू के मुरीदो ख़लीफा थे। लेकिन उन पर वज्दो समाअ का मशरब ग़ालिब था। हिन्दुस्तान के मुतक़द्दिमीने मशाइख़ में से थे उलूमे ज़ाहिरो बातिन के जामेअ थे। गोया सिलसिलए सोहरवर्दिया की दूसरी शाख़ हिन्दुस्तान में आप के ज़रीआ आई। आप की बहुत सी तसानीफ हैं इश्क़ो वलवला की ज़बान में बात करते थे उन में से एक „तवालेअे शुमूस„ है जो असमाए हुस्ना के फज़ाइल पर मुश्तमल है। 605 हि० में आप का विसाल हुआ मज़ारे मुबारक देहली में वाक़ेअ है। (तज़्किरए उलमाए हिन्द)

सिलसिलए क़लन्दरिया

शैख़ अब्दुल अज़ीज़ मक्की

इस सिलसिले के बानी और अस्ल हज़रत शैख़ अब्दुल अज़ीज़ मक्की अलमाअरूफ़ ब अब्दुल्लाह अलमबर्दार क़लन्दर कुद्दि स सिर्रुहू हैं और आप ही से मन्सुब सिलसिले को सिलसिलए क़लन्दरिया कहा जाता है। आप असहाबे सुफ्फा में से एक सहाबिये रसूल और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के नबाइर में से हैं। आप सरकार की तशरीफ आवरी से क़ब्ल ही ज़ुहूरे नबवी के मुन्तज़िर थे। आप को सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से बिला वास्ता शरफे बैअत हासिल है और हज़रत सिद्दीक़े अकबर और हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से भी इजाज़तो ख़िलाफत की फज़ीलत हासिल है। आप की उम्र शरीफ बाअज़ क़ौल के मुताबिक़ एक हज़ार साल और बाअज़ क़ौल के मुताबिक़ छः सौ साल है। (इन्तेसाह अन ज़िक्रिस्सलाह)

सैय्यिद नजमुद्दीन ग़ौसुद्दहर

सिलसिलए क़लन्दरिया की एक शाख़ आप के ज़रीआ हिन्दुस्तान आई। आप की विलादत 637 हि० में हुई आप के दादा सैय्यिद मुबारक ग़ज़नवी कुद्दि स सिर्रुहुल अज़ीज़ शैखुश्शुयूख़ शहाबुद्दीन उमर सोहरवर्दी कुद्दि स सिर्रुहू के ख़लीफा थे जिन को शैख़ ने हिदायतो इरशाद केलिए ग़ज़नी भेजा था और फिर वहाँ से हिन्दुस्तान तशरीफ ले आए थे।

सैय्यिद नजमुद्दीन ग़ौसुद्दहर कुद्दि स सिर्रुहू सनदुल मजज़ूबीन हज़रत सैय्यिद ख़िज़र रूमी कुद्दि स सिर्रुहू के मुरीदो ख़लीफा थे जिन को हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही कुद्दि स सिर्रुहू ने हज़रत सैय्यिद ख़िज़र रूमी के पास भेजा था कि तुम्हारा हिस्सा

उन के पास है चुनाँचे आप रूम पहुँचे और वहाँ उन से इक्तेसाबे फ़ैज़ किया काफ़ी अर्से तक आप अपने मुर्शिद के साथ सैरो सियाहत में रहे।

आप का विसाल 837 हि0 में हुआ तक़रीबन दोसौ साल की उम्र पाई आप का मज़ारे मुबारक चन्दला हौज़ के पास कोहे माँडो में है। „उसूलुल मक़सूद„ के मुताबिक़ आप की क़ब्र रियासते मालवा में नौनहरा घाटी से मुत्तसिल गढ़ माँडो और मौज़ा मालचा के क़रीब है जहाँ सुलतान शहाबुद्दीन ग़ौरी का महल और एक बड़ा हौज़ है उसी की मग़रिबी सम्त में आप का मज़ारे मुबारक है और मश्रिक़ी सम्त में सुलतान का महल है। उस हौज़ को चन्दला तालाब भी कहते हैं और बाअज़ के बक़ौल वह तालाब बी बी बाँदी के नाम से भी जाना जाता है।

हज़रत बू अली शाह क़लन्दर

हिन्दुस्तान में सिलसिलए क़लन्दरिया की दूसरी शाख़ के मुनतहा हज़रत शैख़ शर्फुद्दीन बू अली शाह क़लन्दर कुद्दि स सिर्रुहू हैं। आप हज़रत सैय्यिद ख़िज़र रूमी के मुरीद, ख़लीफ़ा व जानशीन सैय्यिद बहरी क़लन्दर कुद्दि स सिर्रुहू के मुरीदो ख़लीफ़ा हैं। बाअज़ क़ौल के मुताबिक़ हज़रत बू अली शाह क़लन्दर हज़रत मौलाना शमसुद्दीन तब्रेज़ी और मौलाना जलालुद्दीन रूमी कुद्दि स सिर्रुहुमा के भी फ़ैज़ याफ़्ता हैं। आप ख़ुद एक मक्तूब में फ़रमाते हैं कि :

> „ दर रूम मौलाना शमसुद्दीन तब्रेज़ी व मौलाना जलालुद्दीन रूमी रसीदा अम व अज़ ईशाँ नवाज़िश याफ़्ता व पानीपत आमदा मुक़ीम गश्तम।„

आप का मज़ारे मुबारक पानीपत (हरियाना) में है।

हज़रत सैय्यिद ख़िज़र रूमी क़लन्दर

हिन्दुस्तान में सिलसिलए क़लन्दरिया के मुहर्रिक व मुनतहाए अव्वल हज़रत सैय्यिद ख़िज़र रूमी क़लन्दर कुद्दि स सिर्रुहू हज़रत शाह अबदुल अज़ीज़ मक्की क़लन्दर के ख़लीफ़ा थे। आप हिन्दुस्तान के शहर देहली में तशरीफ़ लाए तो हज़रत ख़्वाजा

कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी कुद्दि स सिर्रुहू ने आप को अपना ख़िर्क़ा पेश किया जबकि हज़रत सैय्यिद ख़िज़र रूमी उम्र में ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी से तक़रीबन एक सौ साल से भी ज़ियादा बड़े थे इस लिए हज़रत सैय्यिद ख़िज़र रूमी ने फ़रमाया कि ऐ लोगो! देखो यह बच्चा मुझ से खेल कर रहा है। हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन ने फ़रमाया कि यह मैं अपनी तरफ़ से नही कर रहा हूँ बल्कि मुझे जो हुक्म दिया गया है उस की ताअमील कर रहा हूँ। फिर आप ने हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन साहब से सिलसिलए चिश्तिया की इजाज़तो ख़िलाफ़त, ख़िर्क़ा और कुलाह वग़ैरह कुबूल किए।

आप की उम्र बाअज़ के क़ौल के मुताबिक़ छः सौ साल है लेकिन सैय्यिद शाह बासित अली क़लन्दर रहमतुललाहि तआला अलैह के बक़ौल हज़रत सैय्यिद ख़िज़र रूमी की विलादत पाँचवीं सदी के आग़ाज़ में और विसाल 13 रजब 750 हि0 में हुआ जिस से आप की उम्र क़रीब साढ़े तीन सौ साल साबित होती है आप का मज़ार हिनदुस्तान के उस शहर में बताया जाता है जहाँ सुलतान शमसुद्दीन अलतमश के भानजे गाँची शहीद का मज़ार है लेकिन „मनाक़िबुल अस्फ़िया„ के मुताबिक़ आप का मज़ार रूम में है।

सिलसिलए क़ादिरिया

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी

सिलसिलए क़ादिरिया के बानी और उस की अस्ल सैय्यिदुल अफ़राद ताजदारे बग़दाद सैय्यिदुना शैख़ मुहीयुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी ग़ौसे आअज़म बग़दादी कुद्दि स सिर्रुहू की ज़ाते बाबरकात है। पूरी दुन्या का कौन सा मुसलमान है जो आप की शख़्सियत, फ़ज़ाइलो कमालात और मरातिबो मनासिब से वाक़िफ़ नहीं। आप

की विलादते बासआदत 470 हि0 या 471 हि0 में और विसाल 561 या 562 हि0 में हुआ। आप का मज़ारे पुर अनवार शहरे बग़दाद के बाबुश्शैख़ में फ़ैज़ बख़्शे ख़ासो आम है। आप ही के नामे नामी से मनसूब सिलसिला क़ादिरिया कहलाता है और इसी नाम से दुन्या में मशहूरो माअरूफ़ है हिन्दुस्तान में सिलसिलए क़ादिरिया की मुतअद्दिद शाख़ें आईं जिन से यहाँ इस सिलसिले को काफ़ी फ़रोग़ हासिल हुआ। सिलसिलए चिश्तिया के बाद हिन्दुस्तान में सब से बड़ा दूसरा सिलसिला सिलसिलए क़ादिरिया ही है .इस की मुतअद्दिद शाख़ों और उन के बानियों का ज़िक्र ज़ैल में मुलाहज़ा कीजिए।

क़ाज़ी सिराजुद्दीन ज़न्जानवी

सिराजुल औलिया हज़रत क़ाज़ी सिराजुद्दीन ज़न्जानवी कुद्दि स सिर्रुहू हज़रत ज़ियाउद्दीन अबुन्नजीब सोहरवर्दी से बैअतो ख़िलाफ़त का शरफ़ रखने के साथ साथ हज़रत ग़ौसे आअज़म सैय्यिदुना शैख़ मुहीयुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी कुद्दि स सिर्रुहू से भी ख़िलाफ़तो इजाज़त के हामिल थे। 599 हि0 में हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए मगर यहाँ आकर जाजमऊ (कानपूर) के राजा जाज से जंगो जिहाद में मशग़ूल होगए और थोड़े ही दिनों में आप का विसाल होगया इस लिए सिलसिले के फ़रोग़ का मौक़ा आप को मयस्सर न आसका। जाजमऊ कानपूर में ही आप का आस्तानए हज़रत दादा मियाँ के नाम से आप का आस्ताना मरजए ख़लाइक़ है।

सैय्यिद नूरुद्दीन मुबारक ग़ज़नवी

हिन्दुस्तान में सिलसिलए क़ादिरिया की इशाअत का काम अनजाम देने वाले पहले बुज़ुर्ग हज़रत सैय्यिद नूरुद्दीन मुबारक ग़ज़नवी कुद्दि स सिर्रुहू हैं। आप मुरीदो ख़लीफ़ा हैं हज़रत शैख़ुश्शुयूख़ शहाबुद्दीन उमर सोहरवर्दी कुद्दि स सिर्रुहू के और हज़रत शैख़ुश्शुयूख़ सिलसिलए क़ादिरिया के बिला वास्ता मुजाज़ हैं हुज़ूर ग़ौसे आअज़म अब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी के।

हज़रत शैख़ुश्शुयूख़ के ज़रीआ जहाँ एक तरफ़ सिलसिलए सोहरवर्दिया को फ़रोग़ हासिल हुआ वहीं दूसरी तरफ़ सिलसिलए क़ादिरिया ने भी आप की ज़ात के तवस्सुत से काफ़ी फ़रोग़ पाया।

हज़रत सैय्यिद नूरुद्दीन मुबारक ग़ज़नवी का सने विसाल 632 या 647 हि0 है। मज़ारे मुबारक देहली में हौज़े शमसी के नज़दीक जानिबे शर्क़ में वाक़ेअ है। आप शैख़ुश्शुयूख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी के ख़्वाहरज़ादा (भान्जे) भी हैं। शैख़ुश्शुयूख़ ने हिदायतो तरबियत के बाद आप को ख़िलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ कर हिदायतो इरशाद केलिए बग़दाद से ग़ज़नी भेज दिया फिर आप देहली तशरीफ़ लेआए यहाँ सुलतान शमसुद्दीन अलतमश ने देहली का शैख़ुल इस्लाम मुक़र्रर करदिया चुनाँचे आप मीरे देहली के नाम से मशहूर हुए।

हज़रत शैख़ मुहम्मद ग़ौस जीलानी

हिन्दुस्तान में तसव्वुफ़ और रूहानियत के ज़रीआ इस्लामी इन्क़ेलाब पैदा करने केलिए क़ादरी बुज़ुर्गों में हज़रत शैख़ मुहम्मद ग़ौस जीलानी भी थे। जिन्हों ने मसनदे रुश्दो हिदायत पर जलवा अफ़रोज़ होकर लोगों को कुफ़्रो शिर्क और फ़िसक़ो फ़ुजूर के अंधेरों से निकाल कर सुन्नतो शरीअत और तरीक़तो रूहानियत के उजालों में पहुँचा दिया। आप हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करीया मुलतानी कुद्दि स सिर्रुहू के हमअस्र थे आप का क़ेयाम औच में रहा और वहीं आप का मज़ारे मुबारक भी है। हिन्दुस्तान में सिलसिलए क़ादिरिया की दूसरी शाख़ आप के ज़रीआ आई।

हज़रत शैख़ बहाउद्दीन क़ादरी अनसारी

सिलसिलए क़ादिरिया की तीसरी शाख़ हज़रत शैख़ बहाउद्दीन अनसारी शत्तारी क़ादरी कुद्दि स सिर्रुहू के ज़रीआ हिन्दुस्तान में आई। किताब ,,वफ़ियातुल औलिया,, में लिखा है कि शैख़ बहाउद्दीन इब्ने इब्राहीम इब्ने अताउल्लाह अनसारी क़ादरी हुसैनी शत्तारी साहिबे हालातो जामेअे करामातो बरकात थे। आप का वतने असली ,,जन्द,, मुज़ाफ़ाते सरहिन्द था किसी बादशाह की

इस्तिदआ पर आप सुलतान ग़यासुद्दीन इब्ने सुलतान महमूद ख़िलजी के अहद में देहली आकर मुक़ीम हुए फिर वहाँ से दयारे दकन का रुख़ करके शहर बीदर में सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई। आप क़ादरी थे और मशरब शत्तारी रखते थे। आप ने एक रिसाला लिखा है जिस में सिलसिलए क़ादिरिया की तरफ़ अपनी निस्बत का तफ़सीली ज़िक्र किया है। अमीरुल मूमिनीन हज़रत अलीये मुर्तज़ा करफ़मल्लाहु वजहहू से हज़रत ग़ौसे आअज़म शैख़ मुहीयुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रदियल्लाहु तआला अन्हु तक का ज़िक्र करके फ़रमाते हैं। „व लक़्क़नानी लिइब्निहिस्सईदि अब्दिर्रज़्ज़ाक़िल बग़दादी व लक़्क़नशैख़ु अब्दुर्रज़्ज़ाक़ि शैख़म बाअदा शैख़िन इला शैख़ी व मुर्शिदिस्सैय्यिदि अहमदल जीलीय्यिल क़ादिरीय्यिश्शाफ़ईय्यि फ़शैख़ी लक़्क़ननी व अरशदनी कलिमतत्तौहीदि व जमीअल अज़्कारि व अल्बसनिल ख़िर्क़तल क़ादिरीय्यति फ़िल हरमिश्शरीफ़ि तहाहु बाबल काअबति व अजाज़नी इजाज़तम मुतलक़तम बिअन उजी ज़ मैंय्यस्तजीज़ुनी व उलक़्क़िन व उल्बि स मैंय्यस्तलक़िनु मिन्नी।„

(हज़रत सैय्यिदुना ग़ौसे आअज़म ने) अपने सआदत मन्द बेटे हज़रत सैय्यिद अब्दुर्रज़्ज़ाक़ बग़दादी को तलक़ीन की और शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने एक शैख़ के बाद एक शैख़ को मेरे शैख़ो मुर्शिद हज़रत सैय्यिद अहमद जीलानी शाफ़ई तक फिर मेरे शैख़ ने मुझ को तलक़ीन की और कलिमए तौहीद व जुम्ला अज़्कार की ताअलीम दी और हरम शरीफ़ में ख़ानए काअबा के दरवाज़े के सामने मुझ को ख़िर्क़ए क़ादिरिया पहनाया और मुझे ऐसी मुतलक़ इजाज़त अता फ़रमाई कि मैं उसे इजाज़त दूँ जो मुझ से इजाज़त चाहे और उसे तलक़ीन करूँ और ख़िर्क़ा पहनाऊँ जो मुझ से तलक़ीन और ख़िर्क़ा पहन्ना चाहे।

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने भी „अख़बारुल अख़्यार„ में आप का ज़िक्र इसी तरह किया है इस से माअलूम हुआ कि हज़रत शैख़ बहाउद्दीन अनसारी क़ादरी शत्तारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह को बैअत, इजाज़त, ख़िलाफ़त और तरबियत का शरफ़ हज़रत सैय्यिद अहमद जीलानी बग़दादी

रहमतुल्लाहि तआला अलैह से हासिल था जिन का मज़ारे मुबारक बग़दादे मुअल्ला में है।

„कश्फ़ुल मुतवारी„ में है कि हज़रत शैख़ बहाउद्दीन कुद्दि स सिर्रुहू के मुरीदो ख़लीफ़ा बहुत थे।उन में से एक शैख़ मुहम्मद इबने शैख़ इब्राहीम मुलतानी जो आप की वफ़ात के बाद शहर बीदर में अपने पीर के सज्जादा नशीन हुए और एक हज़रत सैय्यिद इब्राहीम एरजी रहमतुल्लाहि तआला अलैह हैं जो सैय्यिदुना ग़ौसे आअज़म के नबाइर में से हैं और जिन का मज़ारे पाक देहली में हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के आस्ताने के अहाते में हज़रत अमीर ख़ुस्रो रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मज़ार के क़रीब अलग एक कमरे में है। फ़ी ज़माना जो सिलसिलए क़ादिरिया बरकातिया रज़विया का फ़रोग़ बहुत तेज़ी से हुआ और होरहा है जो सिर्फ़ हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि दुन्या के हर उस ख़ित्ते में जहाँ भी मुसलमान आबाद हैं इस सिलसिले से बैअतो इरादत और अक़ीदतो महब्बत रखने वाले कसीर ताअदाद में मौजूद हैं वह सिलसिलए क़ादिरिया की इसी शाख़ का फ़ैज़ान है।

हज़रत शैख़ बहाउद्दीन कुद्दि स सिर्रुहू को ख़ुशबू सूंघने पर ऐसी कैफ़ियत तारी हो जाती थी कि हलाकत के क़रीब पहुँच जाते थे इस लिए आप के विसाल का सबब भी ख़ुशबू ही बनी। आप काफ़ी कमज़ोर होगए थे और उसी हालते नक़ाहत में क़िसी ने ख़ुशबूदार चीज़ों का मुरक्कब „ग़ालिया„ लाकर आप के सामने रख दिया उस की ख़ुशबू मिलते ही आप पर कैफ़ियत तारी हुई और उसी आलम में 11 ज़िलहिज्जा 921 हि0 को आप की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई। मज़ारे पाक दकन के एक क़सबा दौलताबाद में है (जो अब सुबए महाराष्ट्र में है) जहाँ आप शैख़ बहाउद्दीन लंगोट बन्द अनसारी के नाम से भी मशहूर हैं।

हिन्दुस्तान में सिलसिलए क़ादिरिया को सब से ज़ियादा फ़रोग़ आप की ज़ाते बाबरकात से हुआ। (उम्दतुस्सहाइफ़ फ़ी अहलिल, कश्फ़ि वलमआरिफ़ अज़ मौलवी मुहम्मद अब्दुल करीम हनफ़ी क़ादरी)

हज़रत शैख़ मुहम्मद ग़ौस ग्वाल्यारी

सिलसिलए क़ादिरिया की चौथी शाख़ हिनदुस्तान में हज़रत शैख़ मुहम्मद ग़ौस ग्वाल्यारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के ज़रीआ पहुँची। आप सिलसिलए क़ादिरिया शत्तारिया में हज़रत हाजी हमीद रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मुरीदो ख़लीफ़ा हैं। इब्तेदाई ज़माने में आप बारह साल तक कोहे चुनार (विलायते हलब) के दामन में सख़्त तरीन रियाज़तें करते रहे पहाड़ों के दामन में रहाइश इख़्तियार करके दरख़्तों के पत्ते खाते रहे। हुमायूँ बादशाह आप से बड़ी अक़ीदत रखता था उन की हुकूमत के ज़वाल के बाद शेरशाह सूरी दरपए आज़ार होगए तो शैख़ ने दकन का रुख़ किया जहाँ के सलातीन आप के हलक़ए एअतेक़ाद में आगए। हज़रत शैख़ वजीहुद्दीन गुजराती भी आप के मुतीओ मुनक़ाद होगए। 966 हि० में शैख़ ग्वाल्यारी गुजरात से आगरा आगए और अकबर बादशाह को अपनी अक़ीदत के धागे में पिरो लिया मगर जल्द ही यह बादशाह भी साज़िशों का शिकार होकर मुन्हरिफ़ होगया। उन की सोहबत बैरम ख़ाँ और शैख़ गुदड़ी को रास नहीं आई। रन्जीदा होकर शैख़ ग्वाल्यार तशरीफ़ लेआए जहाँ एक ख़ानक़ाह ताअमीर करवाई। आप बड़े मुतवाज़ेअ और मुन्कसिरुल मिज़ाज थे हर मुलाक़ाती का खड़े होकर इस्तिक़्बाल करते थे। अपनी ज़बान पर कभी लफ्ज़े „मन„ (मैं) नहीं लाए। अपने को हमेशा फ़क़ीर ही कहते थे यहाँतक कि ग़ल्ला तक़सीम करते वक़्त फ़रमाते कि इतने मीम नून (मन) ग़ल्ला फ़ुलाँ को देदो। अस्सी साल की उम्र पाकर 970 हि० में रेहलत फ़रमाई। ग्वाल्यार में ही आप का आस्ताना मशहूरो माअरूफ़ है। (तज़्किरए उलमाए हिन्द)

सिलसिलए नक़्शबन्दिया

हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन मुहम्मद

सलासिले तरीक़त में सिलसिलए नक़्शबन्दिया भी काफ़ी अहम्मियत रखता है इस सिलसिले के बुज़ुर्गों ने भी हिन्दुस्तान में सलाहो फलाह और रुश्दो हिदायत के अहम और नुमायाँ कारनामे अनजाम दिए हैं। इस सिलसिले के बानी हज़रत शैख़ ख़्वाजा बहाउद्दीन मुहम्मद इब्ने मुहम्मद बुख़ारी अलमअरूफ़ ब नक़्शबन्द रहमतुल्लाहि तआला अलैह हैं।

„रिसालए बहाइया„ जो हज़रत शैख़ के मक़ालात पर मुश्तमल है उस में तहरीर है। हज़रत शैख़ फ़रमाते हैं कि „मैं और मेरे वालिद कम्ख़्वाब बाफ़ी और नक़्शबन्दी के शग़्ल में मशगूल थे यही हमारा मशग़ला और पेशा था इसी सबब से लोग मुझे नक़्शबन्द कहते हैं। „सफ़ीनतुल औलिया„ और „अल इन्तेबाह„ वग़ैरह में भी इसी तरह लिखा है अलबत्ता „लताइफ़े अशरफ़ी„ में नक़्शबन्दी की वज्हे तस्मिया बयान करते हुए आप को „बुज़ुर्गी की सूरतगरी नक़्शगरी करने वाला„ कहा गया है। कि यह मक़ाम उन को हासिल था या माअलूमो माअहूद का तसव्वुर करना जो कैफ़ियत उस से हासिल होती है।

आप की विलादते बासआदत मुहर्रम 718 हि० और बाअज़ क़ौल के मुताबिक़ 728 हि० में हज़रत ख़्वाजा अली रामेतनी के अहद में हुई बचपन ही से विलायत, हिदायत और करामत के अनवारो आसार आप के रूए अनवर से साफ़ ज़ाहिर थे। आदाबे तरीक़त की ताअलीम हज़रत अमीर कलाल रहमतुल्लाहि तआला

अलैह से हासिल हुई, दादापीर हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद बाबा समासी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से भी इक्तेसाबे फैज़ किया और रूहानी तरबियत हज़रत ख़्वाजा अब्दुल ख़ालिक़ ग़ज्दवानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से पाई। आप का विसाल 3 रबीउल अव्वल शबे दोशंबा 791 हि0 में हूआ मज़ारे मुबारक क़सबा आरिफ़ाँ में है जो शहरे बुख़ारा से एक फरसंग की दूरी पर वाक़ेअ है। (इन्तेसाह)

हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह

हिनदुस्तान में सिलसिलए नक़्शबन्दिया के मरकज़ो मुन्तहा हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह कुद्दि सं सिर्रुहू हैं। „तब्क़ात,, में है कि आप का आबाई वतन समरक़न्द है, आप की विलादत काबुल में हुई आप उवैसी थे हज़रत ख़्वाजा एहरार की रूहानियत से आप ने तरबियत पाई रियरज़ातो मुजाहदात और हुसूले कमालात के बाद हज़रत ख़्वाजा एहरार के रूहानी इशारे के मुताबिक़ मौलाना ख़्वाजा अमकनकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के सिलसिलए इरादत से मुन्सलिक होगए। बैअत के बाद तीन दिन दौलतो नेअमत हासिल करके वहाँ से रुख़्सत होगए और अमकनक (मुज़ाफाते समरक़न्द) से रवाना होकर आप देहली तशरीफ़ लेआए।

आप का विसाल 25 जुमादस्सानी 1012 हि0 में हुआ मरक़दे मुबारक मुहल्ला कन्जश्कगीराँ निज़दे क़दमे रसूल देहली में वाक़ेअ है आप को उम्र कुल चालीस साल मिली मगर इतने ही अर्से में आप ने हिन्दुस्तान में बेशुमार लागों की हिदायतो रहनुमाई फरमाई और बहुत से लोगों को इजाज़तो ख़िलाफत से नवाज़ा जिस के नतीजे में पूरे मुल्क में सिलसिलए नक़्शबन्दिया के बेशुमार बुज़ुर्गाने दीन के आस्ताने मरजअे ख़लाइक़ हैं और आज भी इस सिलसिले से मुल्सलिक अफ्राद बड़ी ताअदाद में हिन्दुस्तान में पाए जाते हैं। हज़रत शैख़ अहमद सरहिन्दी मुजद्दिदे अलफे सानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह आप के मशहूर तरीन ख़लीफा हैं।

सिलसिलए तैफ़ूरिया

हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी

हिन्दुस्तान में इस्लाम की तरवीजो इशाअत की ख़िदमात अनजाम देने वाले बुज़ुर्गाने दीन में सिलसिलए तैफ़ूरिया से मुन्सलिक शख़सीयात भी शामिल हैं इस सिलसिले को निसबत हासिल है हज़रत तैफ़ूर शामी अलमाअरूफ़ ब ख़्वाजा बायज़ीद बुसतामी की ज़ाते वालासिफात से। „तारीख़े इब्ने ख़लक़ान,, में है कि आप का नाम तैफ़ूर बिन ईसा बिन आदम बिन ईसा बिन अली अलबुसतामी कुद्दि स सिर्रुहुस्सामी है। „साहिबे अल मुअज्जमुल बुल्दान,, कहते हैं कि बुसताम एक बड़ा दिहात है जिस की निसबत से आप बुसतामी कहलाते हैं। आप का लक़ब सुललतानुल आरिफीन और नाम तैफ़ूर बिन ईसा है। आप के दादा आतिश परस्त थे जो इस्लाम के शरफ से मुशर्रफ होगए थे। आप का अस्ल वतन बुसताम है। साहिबे „तज़्किरतुल औलिया,, लिखते हैं कि „आप ने एक सौ तेरह पीरों की ख़िदमत की है उन्हीं में से हज़रत सैय्यिदुना इमाम जाअफर सादिक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु भी हैं। हज़रत जुनैद बग़दादी फ़रमाते हैं कि बायज़ीद हमारे दरमियान ऐसे थे जैसे मलाइका में हज़रत जिबरईले अमीन। सलिसिलए तैफ़ूरिया आप ही से मन्सूब है। इस तरीक़ए सुलूक की बुन्याद सुक्रो ग़लबा पर है। आप का विसाल 15 शाअबान 261 हि0 में हुआ मज़ारे मुबारक बुसताम में है। आप की उम्र एक सौ पचीस साल हुई। वाज़ेह हो कि यही सिलसिला आगे बढ़कर दो हिस्सों में मुन्क़सिम होगया जिस की एक शाख़ सिलसिलए नक़्शबन्दिया और दूसरी सिलसिलए मदारिया के नाम से जानी जाती है। सिलसिलए तैफ़ूरिया एक तरीक़े से हज़रत अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला

वजहहू तक पहुँचता है और एक तरीक़े से हज़रत सैय्यिदुना अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु तक जाता है। (इन्तेसाह)

सिलसिलए तैफ़ूरिया की नक़्शबन्दी शाख़ हज़रत सैय्यिद ख़िज़्र रूमी रहमतुल्लाहि अलैह के ज़रीआ हिन्दुस्तान में आई जिन का तज़्किरा सिलसिलए क़लन्दरिया के तहत गुज़शता सफ़्हात में किया जाचुका है और सिलसिलए मदारिया हज़रत शैख़ बदीउद्दीन क़ुतबुल मदार रहमतुल्लाहि तआला अलैह के ज़रीआ आई।

शाह बदीउद्दीन क़ुतबुल मदार

हज़रत क़ुतबुल मदार की विलादत 300 हि0 और बक़ौले बाअज़ 250 हि0 में हुई आप की जाए पैदाइश दरयाए नील से तीन मन्ज़िल के फ़ासले पर एक मौज़ा है। बाअज़ क़ौल के मुताबिक़ आप के वालिद का नाम अली हलबी था जैसा कि शाह हबीबुल्लाह क़न्नौजी अपनी किताब „मनाक़िबुल औलिया„ में लिखते हैं कि „आप के वालिद अली हलबी और वालिदा ख़ास मलक थीं। शाह मौसूफ़ ने बचपन ही में हलब छोड़कर फ़ुक़रा की सोहबत इख़्तियार करली और तरह तरह की रियाज़तों में मुनहमिक होगए थे। फिर हज़रत तैफ़ूर शामी बायज़ीद बुसतामी क़ुद्दि स सिर्रुहू की ख़िदमत से इस्तिफ़ादा किया। किताब „क़ैय्यूमी„ से मन्क़ूल है कि „हज़रत शाह मदार के वालिद का नाम बन्दगी शाह अली और वालिदा का नाम बी बी ख़ास मलक और लक़ब बी बी हाज़िरा था। हज़रत शाह मदार क़ुरैश ख़ानदान से तअल्लुक़ रखते थे। आप की विलादत मौज़ा चुनार में हुई जो विलायते हलब में वाक़ेअ है।

आप ने अपने वतन अलाक़ए हलब (शाम) से मक्कए मुअज़्ज़मा और फिर मदीनए मुनव्वरा पहुँचकर सरकार के रौज़ए पाक की ज़ियारत की यहाँतक कि ख़ुद सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बकमाले रहमत आप का हाथ पकड़कर हक़ीक़ी इस्लाम की तलक़ीन फ़रमाई और हज़रत अलीये मुर्तज़ा की रूहानियत के सुपुर्द फ़रमाया. फिर हज़रत शाह मदार सरकार के हुक्म के मुताबिक़ नजफ़े अशरफ़ केलिए रवाना हुए और वहाँ काम पूरा होने के बाद फिर मक्का आगए। फिर चन्द दिनों के बाद ग़ैबी

हुक्म से हिन्दुस्तान की तरफ़ मुतवज्जेह होगए। अलग़रज़ हज़रत शाह मदार अजमेर के रास्ते (सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के आस्तानए पाक पर अक़ीदतमन्दाना हाज़री देते और इक्तिसाबे फ़ैज़ करते हुए) अतराफ़ो जवानिब की सैर करते हुए शहर कालपी पहुँचे और दरया के किनारे वाक़ेअ एक मस्जिद में क़ेयाम फ़रमाया। वहाँ के हाकिम की बेतवज्जोही के सबब जौनपूर का सफ़र इख़्तियार किया और फ़रमाया कि क़ादिर ख़ाँ वालिये कालपी (वलद सुल्तान महमूद नबीरए सुल्तान फ़ीरोज़ शाह देहली) अपनी फ़िक्र करे।

हज़रत शाह मदार ने मुख़्तलिफ़ मुलकों की सैर करने के बाद हिन्दुस्तान को अपना मसकन बनाया और यहाँ भी मुतअद्दिद शहरों का दौरा किया कालपी शरीफ़ से जौनपूर और लखनऊ वग़ैरह और दीगर शहरों के दौरों का पता चलता है आख़िर में आप ने अपना वतन मकन   पूर (कानपूर और क़न्नौज के दरमियान एक क़स्बे)को बनाया जहाँ आप की ख़ानक़ाह और आख़री आरामगाह आज भी मरजओ ख़लाइक़ है।

साहिबे „इन्तेसाह„ के बक़ौल आप की विलादत 615 हि0 में विलायते शाम में हुई और विसाल 18 जुमादल ऊला 840 हि0 में सुल्तान इब्राहीम शरक़ी के अहदे सल्तनत में हिन्दुस्तान में हुई आप की उम्र दो सौ पचीस साल हुई है बाज़ क़ौल के मुताबिक़ आप की विलादत शहरे हलब मुलके शाम में यकुम शव्वाल दोशंबा के दिन सुब्हे सादिक़ के वक़्त 442 हि0 में हुई।

सिलसिलए फ़िर्दौसिया

शैख़ अबुन्नजीब फ़िर्दौसी

यह सिलसिला हज़रत शैख़ अबुन्नजीब फ़िर्दौसी से मनसूब है और आप ही इस सिलसिले के बानी व मरकज़ हैं। फ़िर्दौसी फ़िर्दौस से मनसूब है जो हलब से मुत्तसिल दमिश्क़ के नज़दीक एक मौज़ा है वही आप का वतने असली भी है। इसी वतनी निसबत से आप अपने नाम के साथ फ़िर्दौसी लिखने लगे और

फिर यह निस्बत आप के नाम का जुज़ बन गई। आप से तरीक़त का एक सिलसिला जारी हुआ जो सिलसिलए फ़िर्दौसिया के नाम से मुतआरफ़ हुआ हिन्दुस्तान में यह सिलसिला हज़रत बदरुद्दीन समरक़न्दी और आप के मुरीदो ख़लीफ़ा हज़रत शैख़ रुकनुद्दीन फ़िर्दौसी के ज़रीआ दाख़िल होकर परवान चढ़ा ज़ैल में इख़्तिसार के साथ दोनों बुज़ुर्गों के हालात पेश किए जारहे हैं।

शैख़ बदरुद्दीन समरक़न्दी

हज़रत शैख़ शरफ़ुद्दीन यहया मनेरी (मख़दूम बिहारी) रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मलफ़ूज़ात से माअलूम होता है कि आप हज़रत नजमुद्दीन कुबरा रहमतुल्लाहि तआला अलैह के ख़लीफ़ा थे और „सैरुल औलिया„ में है कि „आप हज़रत शैख़ सैफ़ुद्दीन बाख़िर्ज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के ख़लीफ़ा थे और शैख़ नजमुद्दीन कुबरा रहमतुल्लाहि तआला अलैह से भी आप की मुलाक़ात थी। „सैरुल औलिया„ ही में है कि आप हज़रत शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया की मज्लिसे समाअ में हाज़िर रहकर समाअ सुनते थे। निहायत ही ख़ूबसूरत और नेकसीरत थे जब हज़रत शैख़ बदरुद्दीन समरक़न्दी रहमतुल्लाहि अलैह का विसाल हुआ तो आप को लोगों ने संगूला (देहली) में दफ़्न करदिया। „ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया„ में है कि जब आप समरक़न्द से हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए तो हज़रत शैख़ ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि अलैह की बाबरकत सोहबत से भी मुस्तफ़ीज़ो मुस्तफ़ीद हुए यहाँतक कि आप ही के ख़ुलफ़ा में शुमार होने लगे। आप की वफ़ात 716 हि० में हुई तवील उम्र पाई और देहली ही में सुकूनत पज़ीर रहे। (इन्तेसाह)

शैख़ रुकनुद्दीन फ़िर्दौसी

हज़रत शैख़ रुकनुद्दीन फ़िर्दौसी रहमतुल्लाहि तआला अलैह हज़रत शैख़ बदरुद्दीन फ़िर्दौसी समरक़न्दी रहमतुल्लाहि अलैह के मुरीदो ख़लीफ़ा थे। अपने पीरो मुर्शिद के विसाल के बाद सज्जादए मशैख़त पर जल्वा अफ़्रोज़ हुए। हिन्दुस्तान में सिलसिलए

फ़िर्दौसिया आप ही के ज़रीआ फैला जो भी अपने आप को सिलसिलए फ़िर्दौसिया से मुन्सलिक समझता है वह आप ही से मनसूब है। देहली में क़ेयाम था। सुलतान मुइज़्ज़ुद्दीन कैक़बाद ने किलोखरी में एक शहर आबाद किया था आप इस शहर से निकलकर दरया के किनारे एक झोंपड़ी बनाकर क़ेयाम पज़ीर होगए। आप का विसाल 724 हि० में हुआ मज़ारे मुबारक देहली में है। हज़रत शैख़ नजीबुद्दीन फ़िर्दौसी (मज़ार देहली) मख़दूम बिहारी हज़रत शैख़ शरफ़ुद्दीन यहया मनेरी (मज़ार मनेर शरीफ़ बिहार) हज़रत शैख़ मुज़फ़्फ़र बिन शमस बलख़ी (मज़ार दर अदन) हज़रत शैख़ हुसैन बिन मुइज़्ज़ शमस बलख़ी (मज़ार दर बिहार) वग़ैरह अजिल्लए औलियाए किराम इसी सिलसिले से मुनसलिक हैं।
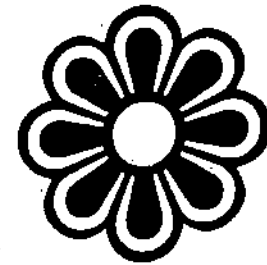
सिलसिलए चिश्तिया की इन्फ़ेरादियत

गुज़श्ता सफ़्हात में हिन्दुस्तान में सरगर्म अमल मुतअद्दिद सलासिले तरीक़त की आमद और उन से मुनसलिक अहम शख़सियात का तज़्किरा किया गया जिस से यह अनदाज़ा लगाना आसान होगया कि सिलसिलए क़ादिरिया की दो शाख़ों और सिलसिलए नक़्शबन्दिया की के अलावा तमाम सलासिले तरीक़त सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के अहद में या आप के अहद से मुत्तसिलन बाद के अहद में ही हिन्दुस्तान में दाख़िल हुए खुसूसन सोहरवर्दी सिलसिला तो आप के साए की तरह हिन्दुस्तान में तक़रीबन आप के साथ साथ आया मगर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू सिलसिलए चिश्तिया का ऐसा रौशन चराग़ बनकर तशरीफ लाए कि उस आफताबे चिश्तियत के सामने तमाम सलासिल सितारों की तरह अपनी रौशनी बिखेरने में नाकाम रहे नतीजे के तौर पर तमाम सलासिल अपने हामिल बुज़ुर्गों के आस पास के अलाक़ों तक सिमटकर रहगए और पूरे मुल्क में सिर्फ चितश्तया सिलसिले का ही तसल्लुतो इक़्तिदार क़ाइम होगया इस की वजह यह थी कि चिश्ती सिलसिले के बुज़ुर्गों ने तसव्वुफ की नज़री सूरत को छोड़कर उस की अमली शक्ल पर अपनी तवज्जोह मरकूज़ रखी और उन्हें अपना पैग़ाम आम करने में जो कामयाबी मिली उस का राज़ यही था।

„फवाइदुल फवाद„ में है कि एक दिन एक नौजवान अपने एक हिन्दू दोस्त को लेकर हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि अलैह की ख़ानक़ाह में आया और उस का तआरुफ कराते हुए कहा „ईं बिरादरे मन अस्त„ हज़रत ने उस नौजवान से पूछा कि

„तुम्हारे इस भाई को इस्लाम की तरफ भी कुछ रग़बत है या नहीं?।„

उस ने कहा कि „मैं इसे मख़दूम की ख़िदमत में लेकर इसी लिए हाज़िर हुआ हूँ कि आप की निगाह की बरकत से यह मुसलमान होजाए।„

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की आँखें नम हो गईं और फरमाया :

„ ईं क़ौम रा चन्दाँ बगुफ्ता कसे दिल नगरदद अम्मा
अगर सोहबते सालेह ययाबद उम्मीद बाशद कि बबरकते
सोहबते ऊ मुसलमान शवद„

(इस क़ौम पर किसी के कहने सुन्ने का कोई असर नही होता हाँ अगर किसी सालेह की सोहबत नसीब होजाए तो उम्मीद होती है कि उस की बरकत से मुसलमान होजाए)

यह वाक़ेआ „फवाइदुल फवाद„ में 4 रमज़ान 717 हि० की मजिलस के बयान में ज़िमनन आगया है लेकिन यह चिश्ती सूफिया के मिशन को समझने केलिए निहायत अहम और क़ाबिले ग़ौर नुकता है। खुद हज़रत का यह सुवाल करना कि „ईं बिरादरे तू हेच मेल ब मुसलमानी दारद„ दाअवते हक़ से गहरे क़ल्बी तअल्लुक़ को ज़ाहिर करता है और जब उस लड़के ने दुआ की दरख़्वास्त की तो आप का चश्मे पुरआब होजाना क़ुरआन के उस फरमान की निहायत गहरी और असली अमली तरजुमानी है कि „वल्तकुम्मिन्कुम उम्मतुंय्यदऊ न इललख़ैरि व याअमुरू न बिलमाअरूफि व यन्हौ न अनिल्मुन्करि व उलाइ क हुमुल मुफ्लिहून (पा० 3 आ० 34)

(तुम में से एक जमाअत ऐसी हो जो लोगों को भलाई की दाअवत दे और अच्छे कामों का हुकम दे और बुरे कामों से रोके और यही लोग बामुराद हैं)

इस से यह भी ज़ाहिर होता है कि दाअवते इस्लाम की रूह को उन बुज़ुर्गों ने किस तरह समझा था। हदीस शरीफ में है कि „अद्दीनु नसीहतुन„ दीन ख़ैरख़्वाही का नाम है और यही वह सच्ची ख़ैरख़्वाही है जो हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया को इस मौक़े पर नमदीदा कर देती है। आप ने तब्लीग़े दीन का उसूल भी बतादिया

कि जिस ख़ैर की तरफ तुम किसी को बुला रहे हो उस का नमूना खुद बनकर दिखाओ तब दाअवत इललख़ैर का हक़ अदा होगा। क़ुरूने वुस्ता में उलमाए सू का किरदार जो कुछ भी रहा हो लेकिन जो साहिबे किरदार उलमाए शरअ थे उन्हों ने भी खूब समझ लिया था कि हिन्दुस्तान में दाअवते दीन केलिए तसव्वुफ ही की ज़रूरत है बहसो मुनाज़रे की नहीं।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के एक हमअस्र आलिमे दीन हज़रत मौलाना रज़ियुद्दीन हसन सेग़ानी रहमतुल्लाहि अलैह साहिबे „मशारिक़ुल अनवार„ (जिन का तज़्किरा गुज़श्ता सफ्हात में किया जाचुका है) बहुत मशहूरो मुमताज़ मुहद्दिस और आलिम दीन थे उन के मआसिर उलमा में कोई भी इल्मे हदीसो फ़िक़्ह में उन का हमपाया न था वह उन माअदूदे चन्द उलमा में से थे जिन्हों ने उस ज़माने में बग़दाद और हिजाज़ पहुँचकर हदीस की समाअत की थी। हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने „फ़वाइदुल फ़वाद„ में उन की ताअरीफ में बहुत कुछ फरमाया है। उन की तालीफ „मशारिक़ुल अनवार„ आज भी मदारिस में पढ़ाई जाती है और हदीस की मुस्तनद किताबों में शुमार होती है। अल्लामा सेग़ानी की एक और तालीफ „मिस्बाहुद्दुजा„ भी थी चुनाँचे मौलाना जब नागौर पहुँचे तो उन्हों ने एक महफिल में एक ही नशिस्त में पूरी „मिस्बाहुद्दुजा„ की क़िराअत करडाली। समाअत करने वालों का बड़ा भारी मजमा था जिस में क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी और क़ाज़ी कमालुद्दीन जैसे फ़ुज़ला भी इस्तिफादे केलिए मौजूद थे।

तरबियते तसव्वुफ

मौलाना सेग़ानी खूब बड़ा सा अम्मामा बाँधते थे जिस की छोर आगे की तरफ लटकी होती थी। बहुत लम्बी चौड़ी आस्तीनों का कुर्ता होता था। यह उस ज़माने के उलमा की हैअत थी। यहीं नागौर के एक साहब ने मौलाना से बहुत इसरार किया कि मैं आप से कुछ „इल्मे तसव्वुफ„ सीखना चाहता हूँ। मौलाना ने कहा कि यहाँ तो मुझे बिलकुल फुरसत नहीं है लोग हदीस की समाअत केलिए जमा होते हैं और इतना वक़्त नहीं बचता कि तुम्हें इल्मे

तसव्वुफ सिखाऊँ अलबत्ता अगर तुम्हें ऐसी ही ख़्वाहिश है तो मेरे साथ चलो जब हम ग़रीब मुसलमानों के अलाक़े में पहुँचेंगे जहाँ इल्मे हदीसो फ़िक़्ह के तलबगारों का इतना हुजूम नहीं होगा मैं तुम्हें इतमीनान से इल्मे तसव्वुफ सिखाऊँगा चुनाँचे मौलाना और इल्मे तसव्वुफ के तालिबे इल्म नागौर से निकलकर जालौर की तरफ चल पड़े। गुजरात की सरहदों के शुरूअ होते ही मौलाना ने अपनी लम्बी आस्तीनों वाला कुर्ता और बड़ा अम्मामा लपेटकर एक बुक़्चे में रखा और कोताह आस्तीनों का दुर्वेशों वाला लिबास ज़ेबे तन किया सर पर केलाह पांव में जूते की जगह खड़ांव आगई एक मिट्टी का आबख़ोरा पानी पीने केलिए लेलिया और नमाज़े नवाफिल पढ़ते हुए सफ़र की मन्ज़िलें तय करने लगे। जब इस तरह कई दिन गुज़र गए तो उस तालिबे इल्मे तसव्वुफ ने कहा कि „मौलाना आप ने फरमाया था कि मुझे कुछ इल्मे तसव्वुफ सिखाएंगे इसी उम्मीद पर मैं घरबार छोड़कर आप के साथ लग गया हूँ मगर आज इतने दिन होगए आप ने एक बात भी नहीं सिखाई।„ मौलाना फरमाने लगे „मियाँ इल्मे तसव्वुफ „क़ाल„ नहीं „हाल„ है जैसे मैं इबादत कर रहा हूँ और आम लोगों से बरताव कर रहा हूँ बस वैसे ही तुम भी किए जाओ यही „इल्मे तसव्वुफ„ कहलाता है।

इस्लाम की अस्ल ताअलीम

मौलाना अपने ज़माने के बहुत बड़े आलिम और मुहद्दिस गुज़रे हैं उस दौर के जैय्यिद उलमा उन की सोहबत से इस्तिफादा करते थे लेकिन वह भी यह नुक्ता अच्छी तरह समझे हुए थे कि यह माअक़ूली और मन्क़ूली बहसें, यह मुनाज़रे और मुक़ाबरे, यह फल्सफा और मन्तिक़, यह मस्अले और तावीलें सिर्फ इस्लाम के ज़ाहिर को पेश कर सकती हैं उस की रूह को और भी ख़फ़ी और बे असर बना देती हैं, इस्लाम की अस्ल ताअलीम वही है जिसे सूफिया अपने अमल से पेश कर रहे हैं उसी ने हिन्दुस्तान में इस्लाम को फरोग़ दिया और दिलों को जोड़ने का काम किया है। चुनाँचे मौलाना सेग़ानी भी जब ग़ैरमुस्लिम अक्सरियती अलाक़ों में जाते हैं तो सूफ़िया का लिबास ज़ेबे तन करलेते हैं और अपना

चोग़ा तह करके रख देते हैं।

तसव्वुफ की सोहरवर्दी और चिश्ती तशरीह

सोहरवर्दी सिलसिले के बुज़ुर्गों ने तसव्वुफ की नज़री सतह पर तशरीह की और उस के इल्मी व फल्सफियाना पहलुओं पर किताबें तसनीफ कीं जिन से दूसरे सिलसिले वालों ने भी फाइदा उठाया मगर अपने ख़ानक़ाही निज़ामे अमल में उन्हों ने दीन और दुन्या के ज़ामो सिन्दाँ को एक तवाज़ुन के साथ यकजा रखना चाहा और हाकिमाने वक़्त पर भी असरअनदाज़ होने की कोशिश की इस लिए उन की ख़ानक़ाहें ज़मानो मकान के एअतेबार से महदूद होकर रह गईं जबकि चितश्तियों की ख़ानक़ाहें छोटे छोटे दिहातो क़स्बात तक में पहुँच गईऔर अवाम के दिलों में उन केलिए घर बन गए। इस दीनों दुन्या की आमेज़िश से पैदा होने वाले तज़ाद को इब्तेदा ही में महसूस करके चिश्ती सूफिया ने „तर्क„ के फल्सफे पर ज़ोर दिया और अपने मुरीदों को इस की तरबियत देने केलिए „चहार तर्की„ कुलाह पहनानी शुरूअ करदी। उन का कहना था कि :

„मर्द आली न शवद ता तर्के दुन्या न गीरद„

और उस तर्क का फल यह था कि जब देहली के शैख़ुल इस्लाम हज़रत कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की मक़बूलियत और हर दिल अज़ीज़ी से हसद होने लगा और उन की शिकायत पर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फरमाया कि :

„कुतबुद्दीन तुम मेरे साथ अजमेर चलो मैं नहीं चाहता कि मेरे किसी जानशीन की वजह से किसी को तकलीफ पहुँचे।„

और हज़रत बख़्तियार काकी अपने मुर्शिद के हुक्म की ताअमील में देहली को ख़ैरबाद कहकर जाने लगे तो आप को रुख़्सत करने केलिए हज़ारहा मर्द औरतें बूढ़े और बच्चे गिर्या व ज़ारी करते हुए आप के पीछे पीछे शहरपनाह से बाहर तक निकल आए। उस हुजूम में बूढ़ा बादशाह अलतमश भी मौजूद था सब की यह हालत देख कर हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग ने कुतुब साहब को अपने साथ

अजमेर लेजाने का इरादा फस्ख़ करदिया।

मुल्कगीरी के ज़रीआ इस्लाम की इशाअत

हिन्दुस्तान में जहाँ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की आमद और आप के क़ाइम करदा जामेअ निज़ामे तब्लीग़ से यहाँ इस्लाम का बोल बाला हुआ वहीं मुस्लिम फातेहीन के जज़्बए जेहाद और ज़बर्दस्त इस्लामी अफवाज की जंगी हिक्मते अमली से भी हिन्दुस्तान में इस्लाम की जड़ें मज़बूत हुई हैं चुनाँचे इस सिलसिले में कुफ्रिस्ताने हिन्द बिलख़ुसूस अजमेर में आप ने ज़बर्दस्त नबर्द आज़माई की और जहाँतक रूहानी ताक़त से उन्हें ज़ेर करना मुनासिब समझा आप ने उन बातिनी और ग़ैबी कुव्वतों का मुज़ाहरा फरमाया लेकिन जब देखा कि प्रिथवीराज अपनी सल्तनत, हुकूमत, शौकतो सतवत, लावलश्कर और फौजी व अफरादी कुव्वतों के ज़ोअम में अख़लाक़ी व समाजी हदें पार करने की कोशिशों में मसरूफ है तो सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अपनी रूहानी कुव्वत का सहारा लेकर इरशाद फरमाया „प्रिथवीराज रा ज़िन्दा गिरफतार करदा ब लश्करे इस्लाम दादेम„ प्रिथवीराज को ज़िन्दा गिरफतार करके इस्लामी लश्कर के हवाले करदिया। और उधर शहाबुद्दीन ग़ौरी (जो इस से क़ब्ल एक जंग में शिकस्त खाकर वापस जाचुके थे।) ने आलमे ख़्वाब में देखा कि कोई बुज़ुर्ग उन्हें हुक्म दे रहे हैं कि तुम हिन्दुस्तान पर हमला करो फतह तुम्हारा इन्तेज़ार कर रही है।

चुनाँचे सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी ने हिन्दुस्तान आकर तरावड़ी के मैदान में प्रिथवीराज से ज़बर्दस्त जंग करके उसे शिकस्ते फाश दी और इस्लामी हुकूमत की बुन्याद डाली जो हिन्दुस्तान में इस्लाम की इशाअत में मददगार साबित हुई 3 शाअबान 602 हि० 1206 ई० को उस खुदा तर्स, आदिल और फैय्याज़ बादशाह को एक बातिनी ने ग़ज़नी जाते हुए शहीद करदिया। उन के बाद कुतबुद्दीन एबक ने यहाँ की हुकूमत संभाली। सुल्तान कुतबुद्दीन एबक का ज़ियादा वक़्त मुल्की फुतूहात और जंगी मुहिम्मात में

गुज़रा इस वजह से उस के अहद में इल्मी सरगर्मियाँ महदूद पैमाने पर रहीं फिर भी बहाउद्दीन अवशी (मु0 607 हि0) जमालुद्दीन मुहम्मद और हमीदुद्दीन वग़ैरह फुज़ला और शुअरा उस के दामने दौलत से वाबंसता रहे और उन के अहद का नामवर मुवर्रिख़ हसन निज़ामी नीशापूरी साहबे ,,ताजुल मआसिर,, हिन्दुसतान का पहला मुवर्रिख़ है। क़ुतबुद्दीन के दौर का एक दूसरा नामवर मुसन्निफ़ मुबारक शाह माअरूफ़ ब फ़ख़्र मुदब्बिर है जिस ने ,,बहरुल अनसाब,, के नाम से एक ज़ख़ीम किताब लिख कर क़ुतबुद्दीन एबक के हुज़ूर पेश की। 607 हि0 में क़ुतबुद्दीन एबक इस दुन्या से रुख़सत होकर आलमे जावेदानी की तरफ़ रवाना होगए।

सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश

कुतबुद्दीन एबक के बाद उस का सहीह जानशीन सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश हुआ जो उस से क़ब्ल बदायूँ का सूबेदार रह चुका था। बदायूँ शिमाली हिन्द का एक मशहूर शहर है जिसे क़ुतबुद्दीन एबक ने 591 हि0 में फ़तह किया उस के सूबेदारों में शमसुद्दीन अलतमश के अलावा रुकनुद्दीन भी रहे जो बाद को तख़्ते देहली पर भी मुतमक्किन हुए फ़त्हे बदायूँ के बाद वह शहर मुसलमानों का मरकज़ बन गया जहाँ उस ज़माने में एक मदरसा मुइज़्ज़िया, एक अज़ीमुश्शान जामेअ मस्जिद और ईदगाह वग़ैरह ताअमीर हुई आख़िरुज़्ज़िक्र दोनों इमारतें आज भी मुसलमानों की गुज़श्ता अज़मतो इक़्तेदार की नौहा ख़्वाँ हैं। ग़रज़ उस ज़माने में बैरूने हिन्द से बहुत से उलमा व सुलहा बदायूँ आकर सुकूनत पज़ीर हुए जिन के सबब वह शहर आज मदीनतुल औलिया कहलाता है। उन में ख़्वाजा अरब बुख़ारी (शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया के नाना) ख़्वाजा हसन रसनताब (मुरीद क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी) ख़्वाजा बदरुद्दीन मूए ताब (बिरादरे ख़्वाजा हसन रसनताब) शैख़ हुसामुद्दीन मुलतानी(ख़लीफ़ा सदरुद्दीन आरिफ़ मुलतानी) ख़्वाजा अलाउद्दीन उसूली (उस्ताज़े शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया) जैसे अकाबिर सूफ़िया और मौलाना रज़ियुद्दीन हसन सग़ानी साहिबे

,,मशारिक़ुल अनवार,, (मु0 650 हि0) शहाबुद्दीन महमरा (मशहूर शाइर) और ख़्वाजा ज़ैनुद्दीन दानिशमन्द जैसे उलमा ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र हैं।

सुलतान अलतमश की दीनदारी और इल्म नवाज़ी

अलतमश ने 26 साल हुकूमत की सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के विसाल के साल (633 हि0 में) इन्तेक़ाल किया। यह बादशाह बड़ा दीनदार, आबिद, ज़ाहिद और दुर्वेशदोस्त था नमाज़ मस्जिद में बाजमाअत अदा करता था। हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी (मु0 633 हि0) की ख़िदमत में अकसर हाज़िर रहता था। अलतमश के ज़माने में देहली में उलमा, फुज़ला, सूफ़िया और मशाइख़ की ताअदाद में ख़ासा इज़ाफ़ा हुआ और बड़ी ताअदाद में लोग तुर्किस्तान, ईरान और मावराउन्नहर से तर्के वतन करके हिन्दुस्तान पहुँचे, क्यूँकि उस ज़माने में कुफ़्फ़ार मग़ोल ने तबाही मचा रखी थी उन अलाक़ों में लोगों के जानो माल बिलकुल महफ़ूज़ न थे और उन केलिए हिन्दुस्तान ही सब से बड़ी पनाहगाह थी और फिर शमसुद्दीन अलतमश उन पनाहगुज़ीनों की बड़ी मदद और क़द्रदानी करता था और यह लोग भी देहली की सक़ाफ़ती व इल्मी ज़िन्दगी को ख़ूब ख़ूब रौनक़ और आरास्तगी बख़्शते थे।

अलतमश की फ़ैय्याज़ी व क़द्रदानी ने देहली को उलमा, फुज़ला, सूफ़िया व मशाइख़ का मरकज़ बनादिया, ताजुद्दीन संग्रेज़ा, अमीरे रूहानी, नासिरी और बहाउद्दीन अली जैसे शुअरा, क़ाज़ी हमीदुद्दीन (मु0 641 हि0) हाजी मजदुद्दीन, फ़ख़्रुलमुल्क अताई, क़ाज़ी मिनहाज सिराज, मौलाना जमालुद्दीन बुस्तामी, नुरुद्दीन मुबारक ग़ज़नवी जैसे उलमा व फुज़ला मौजूद थे और ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी, शैख़ जलालुद्दीन तब्रेज़ी, शैख़ बदरुद्दीन ग़ज़नवी और क़ाज़ी क़ुतबुद्दीन काशानी जैसे सूफ़िया और मशाइख़ रुश्दो हिदायत के हंगामे बरपा किए हुए थे। उलमा और फुज़ला

के केयाम की वजह से हिन्दुस्तान के बाज़ मरकज़ी शहर जैसे औच, देहली, बदायूँ और लखनौती वग़ैरह में मरकज़ी मदारिस क़ाइम होगए थे जहाँ उलमा तदरीस के फराइज़ बड़ी ज़िम्मेदारी से अनजाम देते थे उन मदारिस के क़ेयाम में सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश नीज़ दूसरे उमरा की सरपरस्ती और मआरिफ परवरी शामिल थी। सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश के दौर में बदायूँ और मन्डावर (ज़िला बिजनौर) में आलीशान मस्जिदें, ईदगाहें और हौज़ ताअमीर हुए जो आजतक उस की दीनदारी और इस्लामदोस्ती की गवाही देरहे हैं।

सुल्तान रुकनुद्दीन

सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश के बाद उन का मंझला बेटा रुकनुद्दीन तख़्त नशीं हुआ अगरचे उस की हुकूमत चन्द माह से ज़ियादा न रही मगर उस की मआरिफ परवरी और शुअरा नवाज़ी ने उस को बक़ाए दवाम बख़्श दिया। ताजुद्दीन संग्रेज़ा और शहाबुद्दीन महमरा उस के दामने दौलत से वाबस्ता रहकर इन्आमो इक्राम से मुस्तफीज़ हुए उस के बाद उस ख़ानदान में नासिरुद्दीन महमूद (मु0 664 हि0) और ग़यासुद्दीन बलबन (मु0 686 हि0) क़ाबिले ज़िक्र हुक्मराँ गुज़रे हैं अव्वलुज़्ज़िक्र निहयत दीनदार, मुत्तक़ी, ज़ाहिद, आबिद, सख़ी, अदलपरवर, शब बेदार और बुर्दबार हुक्मराँ था। दुर्वेशाना ज़िन्दगी बसर करता था यहाँतक कि अपने ज़ाती मसारिफ क़ुर्आने करीम की की किताबत के ज़रीआ पूरे करता था। सूफिया और मशइख़ का अक़ीदत मन्द और उलमा का क़द्रदाँ था। क़ाज़ी मिनहाज सिराज ने अपनी मशहूर किताब ,,तब्क़ाते नासिरी,, उसी सुल्तान के नाम मुअनवन की है।.....ग़यासुद्दीन बलबन बड़ी शानो शौकत और जाहो जलाल का मालिक था लेकिन सूफिया का मोअतक़िद और उलमा का क़द्रदाँ था उस के अहद में बुरहानुद्दीन महमूद (मु0 687 हि0) नजमुद्दीन अब्दुल अज़ीज़, शैख़ सिराजुद्दीन अबूबक्र, शरफुद्दीन दलवालजी, बुरहानुद्दीन बज़्ज़ाज़, क़ाज़ी रुकनुद्दीन सामानवी, अल्लामा कमालुद्दीन ज़ाहिद, शमसुद्दीन ख़्वार्ज़मी और फख़रुद्दीन नाक़ेला

वग़ैरह वह उलमाए किराम थे जिन के नाम तारीख़ में बक़ाए दवाम का दर्जा रखते हैं। 689 हि0 मुताबिक़ 1290 ई0 में देहली का यह पहला हुक्मराँ ख़ानदान ख़तम होगया।

सियासी और रूहानी ताक़तों का इज्तेमाअ

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की दुआओं की बरकतों से हिन्दुस्तान में मुस्तक़िल मुस्लिम हुकूमत की तश्कील ने इस मुल्क की काया ही पलट दी। हर शोअबए ज़िन्दगी में ज़बर्दस्त इन्क़ेलाब आया और मुल्क को सियासी इस्तेहकाम हासिल होने के साथ साथ मज़हबी व इस्लामी अवामिल को भी दवामो इस्तिक़लाल नसीब हुआ मुसलमानों की बहुत सी नवआबादियाँ क़ाइम हुईं। सन्अतो हिर्फत के मैदान में नुमायाँ तरक़्क़ी हुई, ख़ानक़ाहें, मक़बरे, सराएं, नहरें, कुएं और पुल वग़ैरह ताअमीर हुए, देहली में क़ुतुब मीनार, क़ुतुल इस्लाम और अलाई दरवाज़ा जैसी आलीशान इमारतें वुजूद में आकर मुसलमानों के वुजूद की अलामतें बनीं।

यह तो सियासी असरो इक़्तेदार के नताइज थे इस के अलावा सूफिया और रूहानी तसर्रुफात के हामिल बुज़ुर्गों की मुक़द्दस जमाअत ने हिन्दुस्तान में जो इस्लाहो तब्लीग़ के अज़ीम कारनामे अन्जाम दिए वह आज भी तारीख़ के औराक़ की ज़ीनत बने हुए हैं। उन अकाबिर सूफिया में हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी, क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी, शैख़ हमीदुद्दीन सूफी सुवाली, शैख़ जलालुद्दीन तब्रेज़ी, बाबा फरीदुद्दीन गंजे शकर, हज़रत बहाउद्दीन ज़करीया मुलतानी, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, हज़रत बूअली शाह क़लन्दर, शैख़ सदरुद्दीन मुल्तानी और शैख़ रुकनुद्दीन अबुल फत्ह वग़ैरह ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र हैं और उन सब के क़ाइदो सरख़ैल सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु हैं।

गोया सियासी और रूहानी दोनों ताक़तें जब मुजतमा होकर एक दूसरे की मुआविनो मददगार होगईं तो हिन्दुस्तान में इस्लाम को इन्तेहाई सुर्अत के साथ फरोग़ हासिल होने लगा और देखते ही देखते पूरे मुल्क में मुसलमानों की ताअदाद बेशुमार हो गई और

मुल्क के हर गोशे में इस्लाम के परचम लहराने लगे। आज का ग़ैरमुन्क़सिम हिन्दुस्तान गुज़श्ता मुबल्लिग़ीनो मुजाहिदीन बतौरे ख़ास सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की बेमिसाल जिद्दो जहद और अज़ीम क़ुर्बानियों का जीता जागता सुबूत है।

तमाम औलियाए हिन्द के सरदार

जिस तरह ग़ौसे आअज़म सैय्यिदुना शैख़ मुहीयुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी कुद्दि स सिर्रुहू ने „क़दमी हाज़िही अला रक़बति कुल्लि वलिय्यिल्लाह„ फरमाकर पूरी दुन्या के तमाम औलियाए किराम पर मिन जानिबिल्लाह अपनी फ़ौक़ियतो बरतरी का इज़हार फरमाया और उस ज़माने के तमाम औलियाए किराम ने अपनी गरदनें ख़म करके हुज़ूर ग़ौसे पाक को अपना आक़ा व मौला तसलीम किया उसी तरह हिन्दुस्तान में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का मनसबो मरतबा तमाम औलियाए हिन्द से आअला व बाला है। ख़ुद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इस बलन्दी व बरतरी का इज़हार फरमाया हो या न फरमाया हो मगर हिन्दुस्तान के तमाम उलमा व सूफ़िया इस बात के मोअतरिफ़ हैं कि ख़्वाह वह किसी सिलसिलए तरीक़त से मुन्सलिक हों सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अवामो ख़वास और सियासी नुमाइन्दों केलिए तो शहनशाह का दर्जा रखते ही हैं तमाम औलियाए किराम व उलमाए दीन केलिए भी आप क़ाइदो रहनुमा और सरख़ैलो सरदार की हैसियत रखते हैं। हिन्दुस्तान की मशहूर क़ादरी ख़ानक़ाह, ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा शरीफ के साबिक़ सज्जादा नशीन और मोअतबर आलिमे दीनो अदीबो मुफक्किर सैय्यिदुल उलमा हज़रत अल्लामा अलहाज सैय्यिद शाह आले मुसतफा मियाँ क़ादरी बरकाती ने सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की बारगाह में अपनी बेपनाह अक़ीदत और मुंह बोलती हक़ीक़त का इज़्हारो एअतेराफ करते हुए क्या ख़ूब फरमाया है। :

तेरे पाए का न हम ने कहीं पाया ख़्वाजा
हिन्द के सारे वली तेरी रिआया ख़्वाजा

सीरतो सवानेहे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सैय्यिद मुईनुद्दीन हसन चिश्ती सन्जरी रदियल्लाहु तआला अन्हु की जितनी अज़ीमो जलील शख़्सियत है उतने अज़ीमो जलील पैमाने पर आप की सीरतो सवानेह पर मुश्तमल कोई तफसीली और मुस्तनद किताब आज की मुरव्वजा उर्दू ज़बान में मनज़रे आम पर नहीं है। चिश्ती सिलसिले के मुमताज़ बुज़ुर्गों में हज़रत बाबा फरीदुद्दीन गंजे शकर और हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया कुद्दि स सिर्रुहूमा के कुछ हालातो वाक़ेआत हमें मिल जाते हैं जिन से चिश्ती ख़ानक़ाहों के निज़ाम और बुज़ुर्गों की ताअलीमात का अनदाज़ा होजाता है। लेकिन सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के बारे में तारीख़ और तज़्किरे हमे बहुत ही कम माअलूमात फराहम करते हैं और बाद के ज़माने में कुछ रिवायात के इज़ाफ़ों ने उस थोड़े से तारीख़ी मवाद को भी मुबहम बना दिया है।

सैरुल औलिया

प्रोफेसर मुहम्मद हबीब साहब ने अपने एक मज़मून में यह ख़याल ज़ाहिर कया-है कि „ख़्वाजा साहब के हालात में क़दीमतरीन किताब „सैरुल औलिया„ है जो फारसी ज़बान में हज़रत ख़्वाजा अजमेरी के विसाल के तक़रीबन सवासौ बरस बाद मुरत्तब हुई है उस में जो माअलूमात दर्ज हैं उन पर कुछ इज़ाफ़ा शैख़ जमाली देहलवी मुअल्लिफ „सैरुल आरिफ़ीन„ ने किया है जो सोहरवर्दी सिलसिले के बुज़ुर्ग थे और अहदे हुमायूँ बादशाह में सैरो सियाहत की ग़रज़ से भी निकले थे और ख़्वाजा बुज़ुर्ग के वतने असली „सीस्तान„ भी पहुँचे थे उन्हों ने हज़रत ख़्वाजा और आप

के ख़ानदान वग़ैरह के बारे में कुछ मवाद वहाँ की मक़ामी रिवायतों से भी फ़राहम किया होगा।

तब्क़ाते नासिरी

अहदे वुस्ता के बाज़ मुवर्रिख़ों की राय में आप का तज़्किरा सब से पहले „तब्क़ाते नासिरी„ में पाया जाता है जो 658 हि० मुताबिक़ 1220 ई० की तसनीफ़ है उस के मुसन्निफ़ क़ाज़ी मिनहाज सिराज जूरजानी हैं जो 589 हि० में पैदा हुए थे और अजमेर, सवालक, हाँसी, सिर्सी वग़ैरह अलाक़े रायं पिथौरा की शिकस्त के बाद 588 हि० में फ़तह हुए थे उस से अगले साल 589 हि० में कुतबुद्दीन एबक ने पहले मेरठ फिर देहली को फ़तह किया था 621 हि० में वह एक सफ़ारत लेकर क़ुहिस्तान गए थे और वहाँ से वापस आने के बाद 624 हि० में मदरसा फ़ीरोज़ी औछ के निग्राँ मंदर्रिस बना दिए गए वह 625 हि० में अलतमश के लश्कर के साथ देहली आगए थे इस लिए अगर सरकारे ख़्वाजा से उन की मुलाक़ात हूई तो उस का ज़माना 625 से 633 हि० के दरमियान आठ साल का अर्सा होसकता है जब वह लश्करे शाही में शामिल होकर हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ अलाक़ों में घूम रहे थे मगर उन्हों ने सरकारे ख़्वाजा से अपनी मुलाक़ात का हाल वाज़ेह और रास्त अन्दाज़ में कहीं नहीं लिखा है।

सैरुल औलिया का अहदे तालीफ़

„सैरुल औलिया„ की तालीफ़ फ़ीरोज़ तुग़लक़ के ज़माने में हुई है और उस के आख़िर में जो एक तारीख़ दर्ज है उस से फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ की तारीख़े वफ़ात 789 हि० बरआमद होती है उस से यह अन्दाज़ा करना दुश्वार नहीं है कि अमीर ख़ुर्द उस वक़्त तक बाहयात थे और इन्हों ने किताब की तालीफ़ से फ़ारिग़ होने के बाद भी 25–30 बरस तक उस पर नज़रे सानी और इज़ाफ़े का क़ाम जारी रखा।

सुरूरुस्सुदूर

एक तहक़ीक़ के मुताबिक़ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

मुईनुद्दीन चिश्ती रदियल्लाहु तआला अन्हु के हालातो मलफ़ूज़ात में सब से क़दीम और अहम माअख़ज़ „सुरूरुस्सुदूर„ है जो आज तक शाएअ नहीं होसकी है और जिस के क़लमी नुस्ख़े भी अब नायाब होने की हद तक कमयाब हैं। „सुरूरुस्सुदूर„ में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मशहूरो माअरूफ़ ख़लीफ़ा हज़रत शैख़ हमीदुद्दीन नागौरी अलैहिर्रहमह के बारे में उन के फ़रज़न्द शैख़ अज़ीज़ुद्दीन की रिवायात भी हैं और ख़ुद शैख़ फ़रीदुद्दीन ने भी अपने मुशाहदातो माअलूमात दर्ज किए हैं उस से माअलूम होता है कि हज़रत शैख़ हमीदुद्दीन सुवाली ने हज भी किया था और सरकारे ख़्वाजा मुईनुद्दीन ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की ख़ानक़ाह में इमामत के शरफ़ से भी मुशर्रफ़ थे ख़ुद सरकारे ख़्वाजा भी उन की इक़्तेदा में नमाज़ अदा फ़रमाते थे कभी ऐसा भी होता था कि कोई शख़्स कुछ पूछने या वज़ाहत तलब करने आजाता तो सरकारे ख़्वाजा उसे हमीदुद्दीन नागौरी की तरफ़ भेज देते।

क़दीमतरीन माअख़ज़

ग़रज़ यह किताब (सुरूरुस्सुदूर) सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और उन के एक जलीलुल क़द्र ख़लीफ़ा हज़रत शैख़ हमीदुद्दीन नागौरी के हालातो मलफ़ूज़ात का सब से अहम और क़ाबिले एअतेबार माअख़ज़ है उस में एक किताब „शरफ़ुल अनवार„ का भी हवाला मिलता है जिस से यह अनदाज़ा होता है कि यह भी शैख़ नागौरी के मलफ़ूज़ात पर मुश्तमल थी और फ़स्ल और नौअ के उन्वान से मुख़्तलिफ़ फ़ुसूलो अबवाब में तक़सीम करे लिखी गई थी अब नापैद होचुकी है अगर कहीं उस का नुस्ख़ा दस्तयाब होजाए तो उस में भी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अजमेरी के बारे में क़ीमती माअलूमात फ़राहम होसकती हैं और यह हज़रत के हालात में „सुरूरुस्सुदूर„ से भी क़दीम तरीन माअख़ज़ होगी।

सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की सीरतो

सवानेह पर मुश्तमल मज़कूरा क़दीम व क़दीम तरीन फ़ारसी व उर्दू किताबों को मरकज़ो माअख़ज़ बनाकर मुल्क के मशहूरो माअरूफ़ आलिमे दीन और मुक़र्रिरो मुसन्निफ़ साहिरुल बयान हज़रत अल्लामा अब्दुर्रहीम साहब क़ादरी ने „सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़„ के नाम से एक मेअयारी और ज़ख़ीम किताब मुरत्तब की है जो इस मौज़ूअ पर उर्दू ज़बान में मौजूद किताबों में यक़ीनन फ़ौक़ियत और एअतेबार का दर्जा हासिल करेगी।

इस मौज़ूअ पर क़दीम माअख़ज़ जो क़दीम ज़ख़ाइरे कुतुब में कहीं कहीं आँखों को नूरो सुरूर बख़्शने केलिए दस्तयाब होजाते हैं पहली बात तो यह कि उन में से ज़ियादातर फ़ारसी ज़बान में होने की वजह से सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के आम अक़ीदत मन्दों को तसकीने क़ल्बो नज़र का सामान फ़ाहम नहीं कर सकते और उर्दू ज़बान में सरकारे ख़्वाजा की सीरत के नाम पर जो किताबें आम तौर पर दस्तयाब हैं वह या तो मुख़्तसर, इजमाली और नामुकम्मल हैं या जिन किताबों को इतमीनान बख़्श कहा जाता है वह आम दस्तरस से बाहर हैं उन्हीं अस्बाबो इलल और मुहर्रिकात ने साहिरुल बयान हज़रत अल्लामा अब्दुर्रहीम साहब क़ादरी रज़वी को इस बात पर उकसाया और कुछ मुख़्लिस उलमा व अहबाब ने भी अकसरो बेशतर इस ख़्वाहिश का इज़्हार किया कि „सीरते ग़ौसे आअज़म„ की तर्ज़ पर „सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़„ की तरतीबो तदवीन का कारनामा अगर आप अन्जाम देदें तो पूरी जमाअते अहले सुन्नत इस बारे क़र्ज़ से सुबुकदोश हो जाएगी।

वाज़ेह हो कि सैय्यिदुल अफ़राद, ताजदारे बग़दाद, मरजउल औलिया, ग़ौसे आअज़म सैय्यिदुना शैख़ मुहीयुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी रदियल्लाहु तआला अन्हु की सीरतो सवानेह पर मुश्तमल „सीरते ग़ौसे आअज़म„ माम्लाना मौसूफ़ की मक़बूलो मशहूर तरीन तस्नीफ़ है जो एक अर्सए दराज़ से लोगों के दिलो निगाह की तमानियतो तसकीन का ज़रीआ बनी हुई है।

क़ादरी सिलसिला और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

यूँ तो हिन्दुस्तान के जितने औलियाए किराम हैं ख़्वाह वह

किसी भी सिलसिलए तरीक़त से मुनसलिक हों सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू को अपना मरजओं मरकज़े अक़ीदत तस्लीम करते आए हैं और आप की बारगाह में ग़ुलामाना हाज़िरी देकर इक्तिसाबे फ़ुयूज़ो बरकात करते रहे हैं और यह सिलसिला आज भी हस्बे दस्तूर जारी व सारी है बलिक क़ादरी सिलसिले के मशाइख़ और बुज़ुर्गों ने हमेशा आप के सामने अपनी गरदनें ख़म रखी हैं यह अलग बात है ख़ुद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रदियल्लाहु तआला अन्हु को हुज़ूर ग़ौसे पाक से बेपनाह अक़ीदतो महब्बत थी और आप से शरफ़े मुलाक़ात हासिल करके आप ने इस्तिफ़ादा व इस्तिफ़ाज़ा भी किया है बल्कि हुज़ूर ग़ौसे पाक से अपनी गहरी अक़ीदतो वाबस्तगी का इज़्हार अपने अश्आर के ज़रीआ आप ने यूँ किया है। :-

या ग़ौसे मुअज़्ज़म नूरे हुदा मुख़्तारे नबी मुख़्तारे ख़ुदा
सुल्ताने दोआलम क़ुतबे उला हैराँ ज़े जलालत अर्ज़ो समा
गर दाद मसीह ब मुर्दा रवाँ दादी तु ब दीने मुहम्मद जाँ
हमा ख़ल्क़ मुहियुद्दीं गोया बर हुस्नो जमालत गश्ता फ़िदा

तरजमा :— ऐ अज़्मत वाले ग़ौस, ऐ हिदायत की रौशनी, ऐ नबी के मुख़्तार और ख़ुदा के मुख़्तार, ऐ दोनों आलम के सुल्तान, बलन्द मर्तबा क़ुतब! आप की जलालतो बुज़ुर्गी से ज़मीनो आसमान हैरतज़दा हैं। अगर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने इनसान के मुर्दा जिस्म में जान डाली है तो आप ने दीने मुहम्मदी को ज़िन्दा व ताबिन्दा किया है। पूरी दुन्या आप को मुहीयुद्दीन कहती है और आप के हुस्नो जमाल पर वाला व शैदा है।

और दूसरी जगह सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं :

गोयम ज़े कमाले तु चे ग़ौसुस्सक़लैना
महबूबे ख़ुदा इब्ने हसन आले हुसैना
सर दर क़दमत जुम्ला नहादन्द व गुफ़्तन्द
तल्लाहि लक़द आसरकल्लाहु अलैना

इस के अलावा तारीख़ शाहिद है कि हुज़ूर ग़ौसे आअज़म के फ़रमान „*क़दमी हाज़िही अला रक़बति कुल्लि वलिय्यिल्लाह*„ सुनकर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अपनी गरदने अक़ीदत ख़म करके

जवाबन इरशाद फ़रमाया था „बल अला ऐनी व राअसी„ ऐ ग़ौसे पाक! आप के क़दम मेरी गरदन ही पर नहीं बल्कि मेरे सर और आँखों पर हैं। जिस से यह अन्दाज़ा लगाना मुश्किल नहीं कि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को सरकारे ग़ौसे आअज़म से किस क़दर अक़ीदत व महब्बत थी क्यूँकि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ जानते थे कि पूरी दुन्या में माअरिफ़तो विलायत के अपने ज़माने के सब से बड़े ख़ज़ाने के मालिको मुख़्तार हुज़ूर ग़ौसे आअज़म ही हैं वह जिसे चाहें विलायत का आअला से आअला मन्सब अता फ़रमा दें और जिसे चाहें उस मन्सब से उतार कर क़ैदे माअज़ूली में डाल दें। लेकिन हिन्दुस्तान के तमाम बुज़ुर्गों बिलख़ुसूस क़ादरी सिलसिले के मशाइख़ ने सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को मरकज़े अक़ीदत ही माना है बलिक हिन्दुस्तान में दीनी व दुन्यावी तमाम नेअमतों के तक़सीमकार की हैसियत से आप को नाइबे रसूल और नाइबे ग़ौसे आअज़म तस्लीम किया है इस वजह से भी क़ादरियों के दिलों में आप की ज़ाते बाबरकात से गहरी अक़ीदतो वाबस्तगी होना लाज़िमी अम्र है। चुनाँचे क़ादरियों को इस बात का ज़ियादा हक़ पहुँचता है कि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से इज़्हारे अक़ीदतो महबबत करें और उन के गुन गाएं।

क़ादरी मेहमाने चिश्ती

यह बात अपनी जगह मुसल्लम है कि हिन्दुस्तान सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और यहाँ के चिश्ती बुज़ुर्गों का है इस लिए कि इस कुफ़्रज़ारे हिन्द में इस्लाम का चराग़ रौशन करके इसे वतन का दर्जा देने का कारनामा सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और आप के ख़ुलफ़ा व मुरीदीन ने ही अन्जाम दिया है इस लिए इस मुल्क को चिश्तियों का ही वतन होने का शरफ़ हासिल है और दीगर सलासिल के इस मुल्क में बाद में आने की वजह से उन सलासिल के बुज़ुर्गों को चिश्ती बुज़ुर्गों का मेहमान होने का फ़ख़्र हासिल है। उस वक़्त चूँकि ग़ैरमुन्क़सिम हिन्दुस्तान ही नहीं बैरूनी ममालिक में भी चिश्ती सिलसिले के अलावा क़ादरी सिलसिला ही

उरूज पर है और बड़े बड़े उलमा, मशाइख़ और बुज़ुर्गाने दीन के अलावा आम मुसलमानों की कसीर ताअदाद इन्हीं दोनों सिलसिलों से वाबस्ता है इस लिए यह कहना ज़ियादा मौज़ूँ और मुनासिब होगा कि हिन्दुस्तान में क़ादरी हज़रात चिश्ती हज़रात के मेहमान हैं और मेहमान से मेज़बान की इज़्ज़तो शराफ़त भी जुड़ी होती है और हुक्मे शरअ भी यही है कि मेहमान को ख़ुश रखो उस की इज़्ज़त करो कि वह तुम्हारे लिए रहमतो बरकात का ज़रीआ हैं। लिहाज़ा दोनों को एक दूसरे से बरकातो हसनात के हुसूल की कोशिश करनी चाहिए न कि उन के ज़ाइल करने की। आपस में मेल महब्बत के साथ शीरो शकर होकर ही दीनो सुन्नियत और शरीअतो तरीक़त के मसाइल हल किए जासकते हैं। चुनाँचे एक क़ादरी आलिमे दीन ने सरकारे ग़रीब नवाज़ की मोअतबर, मुस्तनद, मुअक्क़र और ज़ख़ीम सवानेहे हयात लिख कर इस फ़ारमूले पर अमल करने की पहल की है। सैय्यिदुना आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी क़ुद्दि स सिर्रुहू ने हज़रत ख़ातमुल अकाबिर सैय्यिदुना अबुलहुसैन अहमदे नूरी मारहरवी क़ुद्दि स सिर्रुहू के मनाक़िब में क्या ही ख़ूब फ़रमाया है। :

क़ादरीयत है चिश्तियत से बहम
नग दोपल्का है अहमदे नूरी

इस शेर में दोनों सिलसिलों के इत्तेहाद और उस इत्तेहाद से एक दूसरे की क़द्रो क़ीमत में चार चाँद लगने की तरफ़ कितना हसीन इशारा है।

एक एअतेराज़ और उस का जवाब

आज के बाज़ मुतअसिसब चिश्ती आम क़ादरीयों और बिलख़ुसूस इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत आअला हज़रत सैय्यिदुना शाह अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरकाती फ़ाज़िले बरेलवी क़ुद्दि स सिर्रुहू पर ताअनो तशनीअ की ज़बान दराज़ करते हैं और यह लायाअनी एअतेराज़ करते हैं कि „क़ादरी लोग ग़ौसे आअज़म और आअला हज़रत की ही ताअरीफ़ो तौसीफ़ करते हैं

किसी और को ख़ास तौर पर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को कुछ नहीं समझते इन का तज़्किरा नहीं करते,,

बल्कि यहाँतक कहते हैं कि ,,खुद आअला हज़रत ने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से अपनी अक़ीदतो महब्बत का इज़हार नहीं कया है न तो कभी अजमेर शरीफ में हाज़री दी और न ही पूरी ,,हदाइक़े बख़्शिश,, में कहीं एक शेर भी ख़्वाजए ख़्वाजगाँ की मदहोसना में मौजूद है तो उन के मुअतक़िदीन अगर उन्हीं के नक़्शे क़दम पर चलकर ऐसा करते हैं तो इस में क्या तअज्जुब है।?,,

इस क़िस्म की बातें करने वाले यक़ीनन या तो असबीयतो हसद के शिकार हैं या ज़ेहनो फ़िक्र की वुस्अत और शऊरो आगही की बेशबहा दौलत से महरूम हैं। आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा तो उस अज़ीम ज़ातो शख़्सियत का नाम है जिस ने हिन्दुस्तान में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के लाए हुए मिशन को सकरातो नज़्अ के आलम से निकाल कर सेहतो तवानाई की दौलत से नवाज़ा है। यह आअला हज़रत ही का एहसानो करम है कि आज हिन्दो बैरूने हिन्द औलियाए किराम और बुज़ुर्गाने दीन के आस्ताने, ख़ानक़ाहें और मज़ारात न सिर्फ सहीहो सलामत हैं बल्कि रौशनो ताबनाक और उन के मुतअल्लिक़ीन शादो आबाद हैं। इसी किताब ,,सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़,, में आप को इस बात का भी सुबूत मिलेगा कि आअला हज़रत फाज़िले बरेलवी ने अपनी बेपनाह इल्मी व दीनी मसरूफ़ियात के बावुजूद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की आस्ताँबोसी केलिए दो बार अजमेर शरीफ में हाज़री दी है वहाँ आज भी मौजूद ,,ख़ानक़ाहे रज़वीया,, इस बात की शहादत केलिए काफी है। उस ख़ानक़ाह के बानी और आस्तानए ग़रीब नवाज़ के ख़ादिम सैय्यिद हुसैन अली साहब अलैहिर्रहमह वकीले जावरा आअला हज़रत के मुरीदो ख़लीफा थे आप के साहबज़ादे मौलवी सैय्यिद अहमद अली साहब रज़वी हुज़ूर मुफ्तिए आअज़मे हिन्द अलैहिर्रहमह के ख़लीफा थे तमाम अकाबिर उलमाए अहले सुन्नत का क़ेयाम ज़ियादातर आप ही के मेहमानख़ाने में हुआ करता था।

अब रही यह बात कि आअला हज़रत ने सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की शान में कोई मनक़बत नहीं कही तो इस से यह नतीजा निकालना कि आअला हज़रत को सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से अक़ीदत नहीं थी। यह भी वुस्अते क़ल्बी के फ़ुक़्दान को ज़ाहिर

करता है। अगर इसे बुन्याद बना लिया जाए कि जिन की शान में क़सीदा या मनक़बत के अश्आर नहीं कहे गए उन सब से आअला हज़रत को अक़ीदत नहीं थी तो पूरी ,,हदाइक़े बख़्शिश,, का मुतालआ कर लीजिए आप को पता चल जाएगा कि उस में कितने हज़रात की शान में मदहीया अश्आर हैं। अल्लाह तबारक व तआला की बारगाह में हमदो मुनाजात और नबिये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नाअतें इश्क़ो महब्बत में डूबकर कही हैं और चूँकि आप सिलसिलए क़ादिरिया में बैअत थे इस लिए हुज़ूर ग़ौसे आअज़म की अक़ीदतो महब्बत में ऐसे मुस्तग़रक़ हुए कि किसी और की शान में कुछ कहने और लिखने का यारा ही न रहा। हाँ ज़रा उस से बाहर आए तो अपने पीरो मुर्शिद सैय्यिदुना शाह आले रसूले अहमदी क़ादरी बरकाती मारहरवी, मुर्शिदे तरबियत हज़रत सैय्यिदुना शाह अबुल हुसैन अहमदे नूरी क़ादरी बरकाती मारहरवी और उस बारगाह तक पहुँचाने वाले मुहसिन हज़रत ताजुल फुहूल अल्लामा अब्दुल क़ादिर बदायूनी अलैहिमुर्रहमतु वर्रिज़वान की शान में कुछ मनक़बतें कहीं गोया आअला हज़रत को इन चन्द हज़रात के अलावा इस्लाम की जितनी अज़ीमो जलील शख़्सियतें हैं जिन में अंबियाए किराम, सहाबा, ताबेईन, मुजतहेदीन, शुहदा, अइम्मा, मुहद्दिसीन और बेशुमार अकाबिर औलियाए किराम शामिल हैं किसी से अक़ीदतो महब्बत नहीं थी।? बात यह नहीं है बल्कि सैय्यिदुना आअला हज़रत, सैय्यिदुना ग़ौसे आअज़म और अपने मुर्शिदाने इज़ाम के तसव्वुर में ऐसे गुम हुए कि किसी और की तरफ देखने और तवज्जुह देने की फ़ुर्सत ही नहीं मिली। इस केलिए आप ने अपने बिरादरे अज़ीज़ उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ बरेलवी क़ुद्दि स सिर्रुहू को तैय्यार करदिया और कहा ऐ हसन! मैं तो इश्क़े रसूल और महब्बते ग़ौसे आअज़म में ऐसा महवो मुसतग़रक़ हूँ कि किसी और की तरफ देखने की मुझे फ़ुर्सत ही नहीं है सुलतानुल हिन्द ख़्वाजए ख़्वाजगान की बारगाह में नज़्रे अक़ीदत पेश करने केलिए तुम मनक़बत लिखो। चुनाँचे उन्हों ने ऐसी मनक़बत लिखी जो बारगाहे ग़रीब नवाज़ में यक़ीनन मक़बूल होगई। जिस का मतलअ ह :

ख़्वाजए हिनद वो दरबार है आअला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

आस्तानए ग़रीब नवाज़ पर मकतूबो मन्कूश है और उर्से पाक के मौक़े पर थोड़ी थोड़ी देर में पूरे अजमेर मुक़द्दस में ही नहीं बल्कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के तवस्सुत से पूरी दुन्या में गूंजता है नीज़ शैदायानो फिदायाने ख़्वाजा की ज़बान पर यह शेर और इस मनक़बत के दूसरे अश्आर अकसरो बेशतर जारी रहते हैं। उस्ताज़े ज़मन हज़रत अल्लाम हसन रज़ा ख़ाँ बरेलवी अलैहिर्रहमह की यह मक़बूले आम मनक़बत भी ज़ेरे तज़्किरा किताब „सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़„ के इब्तेदाई सफहात में मौजूद है।

आअला हज़रत और

अज़्मते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

यह एक अलमीया है कि हिन्दुस्तान की अकसर ख़ानक़ाहों के मौजूदा पीर साहिबान को आअला हज़रत और बरेली शरीफ की शुहरतो मक़बूलियत एक आँख नहीं भा रही है हालाँकि आअला हज़रत का उन सब को एहसानमन्द होना चाहिए कि आप ही की इल्मी व फिक्री काविशों और जिद्दो जहद के नतीजे में आज तमाम ख़ानक़ाहों के गुंबदो मीनार सलामत हैं और वहाँ उर्स, फातिहा और नज़्रो नियाज़ की हमाहमी और अक़ीदतमन्दों और ज़ाइरीन का वहाँ मेला सा लगा रहता है जिस के सहारे मुज़विवरीनो ख़ुद्दाम ऐशो फराख़दस्ती की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं जब्कि जान्ने वाले जानते हैं कि उन के पास दाअवए „पेदरम सुलतान बूद„ के सिवा कुछ भी नहीं है। बेपढ़े लिखे और तसव्वुफ के झूटे दाअवेदार, लोगों में अपनी बड़ाई साबित करने केलिए आअला हज़रत जैसी शख़्सियत पर उलटे सीधे इल्ज़ामात जड़ देते हैं जिन का कोई सर पैर ही नही होता।

यह दुरुसत है कि सैय्यिदुना आअला हज़रत कुद्दि स सिर्रुहू ने सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की मदह में अश्आर नहीं कहे लेकिन आप की तसनीफात का मुतालआ करने वालों को माअलूम है कि सैय्यिदुना आअला हज़रत ने जहाँ कहीं देखा कि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ या दुसरे बुज़ुर्गों की शाने अज़्मत पर कीचड़ उछालने की कोशिश की जारही है तो आअला हज़रत ने

उन का भरपूर देफाअ करके मज़बूत और रौशन दलीलों के सहारे उन की अज़्मतो अहम्मियत और शानो वक़ार की सियानतो हिफाज़त की पूरी ज़िम्मेदारी निभाई है। ज़ैल में आअला हज़रत कुद्दि स सिर्रुहू की तसनीफात से कुछ इक़्तेबासात पेश किए जारहे हैं जिन से सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से आप की अक़ीदत फूट फूट कर ज़ाहिर होरही है।

„फतावा रज़वीया„ जिल्द शशुम स0 187 पर दर्ज एक सवाल और उस का जवाब बिलफिज़्ही नक़्ल है मुलाहज़ा कीजिए जिस के लफ्ज़ लफ्ज़ से अज़्मतो शाने सरकारे ख़्वाजा टपक रही है।

„**मस्अला** :– अज़ सरकारे अजमेरे मुक़द्दस लंगर गली मस्ऊला हकीम ग़ुलाम अली साहब 6 शव्वाल 1339 हि0..............„अगर कोई मौलवी अपने मदरसे के दरवाज़े पर, ख़िलाफत के बोर्ड पर, ख़िलाफत की टोपी पर और ख़िलाफत की रसीद पर फक़त अजमेर लिखे तो क्या अजमेर के साथ लफ्ज़े शरीफ न लिखना और अस्ली नाम ग़ुलाम मुईनुद्दीन पर ग़ुलाम न लिखना ख़िलाफे अक़ीदए अहले सुन्नत है या नहीं।?„

अलजवाब :– अजमेर शरीफ के नामे पाक के साथ लफ्ज़ शरीफ न लिखना और उन तमाम मवाक़ेअ में इस का इल्तेज़ाम करना अगर इस बिना पर है कि हुज़ूर सैय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ल्वा अफरोज़ी, हयाते ज़ाहिरी व मज़ारे पुरअनवार को (जिन के सबब मुसलमान अजमेर शरीफ कहते हैं) वज्हे शराफत नहीं जानता तो गुमराह बल्कि अदुव्वुल्लाह (अल्लाह का दुशमन) है। सहीह बुख़ारी शरीफ में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि अल्लाह तआला फरमाता है „मन आदा ली वलिय्यन फक़द आज़न्तुहू बिल्हर्ब„ और अगर यह नापाक इल्तेज़ाम बर बिनाए कस्लो कोतह क़लमी है तो सख़्त बेबरकता और फज़्ले अज़ीम व ख़ैरे जसीम से महरूम है। कमा अफादहू इमामुल मुहक़्क़िक़ मुहीयुद्दीन अबू ज़करीया कुद्दि स सिर्रुहू फित्तरज़्ज़ी„ और अगर इस का मबना वहाबियत है तो वहाबियत कुफ्र है उस के बाद ऐसी बातों की क्या शिकायत ?

मा अलैय्या मिस्तुहू बादल ख़ता
अपने नाम से लफ़्ज़ ग़ुलाम का हज़्फ़ अगर इस बिना पर है कि हुज़ूर ख़्वाजए ख़्वाजगान रदियल्लाहु तआला अन्हु व अन्हुम का ग़ुलाम बनने से इन्कारो इस्तिक्बार रखता है तो बदस्तूर गुमराह और बहुक्मे हदीसे मज़कूर अदुव्वुल्लाह है और उस का ठिकाना जहन्नम। *का ल तआला ,,लै स फी जहन्न म मसवल्लिल मुतकब्बिरीन,,* और अगर बर बिनाए वहाबियत है कि ग़ुलामे औलिया बन्ने वालों को मुश्रिक और ग़ुलाम मुहीयुद्दीन व ग़ुलाम मुईनुद्दीन नाम रखने को शिर्क जानता है तो वहाबिया ख़ुद ज़िन्दीक़ बेदीन कुफ्फारो मुर्तदीन हैवलिल काफिरी न अज़ाबुम्मुहीन,, वल्लाहु तआला आअलम।

मुजद्दिदे आअज़म आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेलवी कुद्दि स सिर्रुहू से सवाल किया गया कि हज़रत ग़ौसे पाक कुद्दि स सिर्रुहू को दस्तगीर और हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन सन्जरी कुद्दि स सिर्रुहू को ग़रीब नवाज़ के लक़ब से पुकारना जाइज़ है या नहीं।?,,

इस के जवाब में आअला हज़रत के इरशाद का इक़्तेबास मुलाहज़ा कीजिए। :

,,हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे आअज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ज़रूर दस्तगीर हैं और सुल्तानुल हिन्द मुईनुल हक़्क़ि वद्दीन ज़रूर ग़रीब नवाज़..................हज़रत शैख़ अहमद सरहिन्दी मुजद्दिदे अल्फे सानी कुद्दि स सिर्रुहू अपने मक्तूबात में फरमाते हैं ,,बाद अज़ रिहलते इशाँ रोज़े ईद बज़ियारते मज़ारे ईशाँ रफ्ता व दर असनाए तवज्जुह बमज़ार इल्तेफाते तमाम रूहानियते मुक़द्दसए ईशाँ ज़ाहिर गश्त ज़ि कमाले ग़रीब नवाज़ी निस्बते ख़ास्सए ख़ुद रा बहज़रते ख़्वाजा एहरार मनसूब बूद मरहमत फरमूदन्द।,, वल्लाहु तआला आअलम (,,फतावए रज़वीया,, जिल्द याज़दहुम स0 43–44)

आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा अपनी मुअक्क़र तस्नीफ ,,हयातुल मवात फी बयाने समाइल अम्वात,, में फरमाते हैं।

,,मुतअस्सिबाने ताइफा हज़रत ख़्वाजा अजमेरी रदियल्लाहु तआला अन्हु की निसबत ग़रीब नवाज़ कहने से चिढ़ते हैं।,, (हयातुल मवात स0 158)

आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कुद्दि स सिर्रुहू ने एक मक़ाम पर हज़रत शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैह के हवाले से हज़रत अमीर अबुल उला अक़बराबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के यह दिल आवेज़ तअस्सुरात भी नक़्ल फरमाए हैं। :

,,ब मज़ारे फाइज़ुल अनवारे हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती कुद्दि स सिर्रुहू मुतवज्जेह बूदन्द व अज़ाँजा दिलरुबाईहा याफ्तन्द व फ़ैज़हा गिरफ्तन्द।,, (फतावए रज़वीया)

याअनी हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मज़ारे पुरअनवार पर हाज़िर हुए और उस से दिलों की तस्कीन और फ़ुयूज़ हासिल किए।

आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेलवी कुद्दि स सिर्रुहू के वालिदे गिरामी हज़रत अल्लामा नक़ी अली ख़ाँ साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने आदाबे दुआ पर मुश्तमल एक रिसाला लिखा है जिस का नाम ,,अहसनुल विआअ लिआदाबिद्दुआ,, है जिसे ,,फज़ाइले दुआ,, के नाम से ,,रज़ा इस्लामिक मिशन,, बरेली शरीफ ने शाएअ किया है। जिस में दुआ के आदाबो तुरुक़ और उस की क़ुबूलियत केलिए मख़सूस औक़ात और मुक़द्दस मक़ामात का बित्तफसील ज़िक्र किया है उस पर आअला हज़रत ने ,,ज़ैलुद्दुआ लिअहसनिल विआअ,, के नाम से कुछ तशरीहात और इज़ाफे किए हैं। हज़रत अल्लामा नक़ी अली ख़ाँ कुद्दि स सिर्रुहू ने स0 29 से 33 तक दुआ की क़ुबूलियत के 23 मुतबर्रक मक़ामात का ज़िक्र किया है आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ने उन पर इक्कीस मक़ामात का इज़ाफ़ा किया है। गोया कुल चव्वालीस मक़ामाते मुक़द्दसा हैं जहाँ यक़ीनी तौर पर अल्लाह तआला की बारगाह में ख़ुलूसे निय्यत के साथ देआ करने से मूमिनों की दुआ क़ुबूल होती है। उन चव्वालीस मक़ामात का ज़िक्र करते हुए आअला हज़रत ने 39वें नम्बर पर मज़ारे पाके हज़रत मुईनुल हक़्क़ि वद्दीन ग़रीब नवाज़ अजमेरी रदियल्लाहु तआला अन्हु का ज़िक्र किया है जहाँ हर नेक व जाइज़ दुआ मक़बूले बारगाहे इलाही होती है।

यह तो आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कुद्दि स सिर्रुहू के वह इरशादाते आलिया हैं जो आप की तसनीफात के सरसरी मुतालअे से सामने आए गहराई व गीराई के साथ मुतालआ करने पर अन्दाज़ा होसकता है कि आप की किताबों में और भी न जाने कैसे कैसे क़ीमती इरशादात हैं जिन से सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से आप की गहरी वाबस्तगी और क़ल्बी लगाव का इज़हार होता है।

रही आम क़ादरी उलमा व अवाम की बात तो ज़ेरे तज़्किरा किताब में इस मौज़ूअ पर भरपूर रौशनी डाली गई है और बहुत से क़ादरी मशाइख़ व उलमा की बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में ग़ुलामाना हाज़री और इज़हारे अक़ीदत के वाक़ेआत दर्ज किए गए हैं उस के अलावा आज भी अहले सुन्नत व जमाअत की वह कौन सी दीनी व इल्मी महफिल, मजिलस, जल्सा या कानफ्रन्स है जहाँ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का नस्रो नज़्म में तज़्किरा नहीं होता। हज़रत साहिरुल बयान अल्लामा अब्दुर्रहीम साहब क़ादरी ने इस किताब को मुरत्तबो मुदव्वन करके क़ादरियों के सर से बेबुनयाद इलज़ामात का बोझ बहुत हद तक हलका करने की कामयाब कोशिश की है।

साहिरुल बयान अल्लामा अब्दुर्रहीम क़ादरी

„सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़„ के मुअल्लिफ व मुरत्तिब साहिरुल बयान हज़रत अल्लाम अब्दुर्रहीम साहब क़ादरी हिन्दुस्तान के नामवर उलमाए अहले सुन्नत में शुमार किए जाते हैं तक़रीबन गुज़श्ता चालीस बरसों से मुल्क के गोशे गोशे में आप की ख़िताबत की धूम है। आप का वतने अस्ली उत्रौला ज़िला गोण्डा (मौजूदा ज़िला बलरामपुर) है मगर अवाइले उम्र में ही कानपुर आगए और यहीं तकमीले उलूमे दीनिया के बाद मुस्तक़िल केयाम और रिहाइश इख़्तियार करली और कानपुरी होकर रह गए। अपनी जमाअत के अकाबिर उलमा व मशाइख़ के साथ जल्सों और कान्फ्रन्सों में शिर्कत और ख़िताबत का आप को शरफ हासिल है। ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आअला हज़रत हुज़ूर मुफ्तिए आअज़मे हिन्द कुद्दि स सिर्रुहू से बैअतो ख़िलाफत से मुसतफीज़ हैं। आप ने अर्सा पहले कई किताबें तसनीफ की थीं जिन में अलमुअजिज़ात, सैय्यिदुल अंबिया और सीरते गौसे आअज़म„ बहुत मशहूर और

मक़बूल हुईं। आप का एक मक्तबा „मक्तबए रहीमिया„ के नाम से क़ाइम था जिस के ज़रीआ आप ने अपनी जमाअत के मुतअद्दिद मुसन्निफीन की किताबें शाएअ कीं और नाअतिया व मनक़बती मजमूअे भी छापे। पूरे मुल्क में मक्तबए रहीमिया की अपनी एक पहचान थी मगर हज़रत साहिरुल बयान की तवज्जोह उस तरफ से कम होगई इस लिए न तो मज़ीद तसनीफो तालीफ का काम होसका और न तबाअतो इशाअत का। मगर हस्बे ज़रूरतो मुतालबात अपनी तसनीफात की इशाअत करते रहे। पहले तो सिर्फ उर्दू में लिथो की किताबतो तबाअत थी मगर जब किताबें आम तौर पर आफ्सेट पर छपने लगीं और मुसलमानों में हिन्दीदाँ अफराद की ताअदाद ज़ियादा होने लगी तो आप ने नइ किताबत और आफ्सेट की दीदाज़ेब तबाअत के साथ अपनी किताबें शाएअ करने का सिलसिला शुरूअ किया। इस सिलसिले की पहली कड़ी „सीरते ग़ौसे आअज़म„ और „अलमोअजिज़ात„ है जो नई किताबतो तबाअत के साथ हिन्दी और उर्दू दोनों ज़बानों में नए गेटअप के साथ मन्ज़रे आम पर आई।

„सीरते ग़ौसे आअज़म„ की शोहरते तमाम और मक़बूलियते दवाम के सबब गुज़श्ता कई बरसों से हज़रत साहिरुल बयान से फरमाइशें की जारही थीं कि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की सीरत पर भी एक किताब उसी तर्ज़ पर लिख दें जिस तर्ज़ पर „सीरते ग़ौसे आअज़म„ लिखी है। दीनी, दुन्यावी, समाजी और ख़ानगी मसरूफियात के सबब लोगों की इस ख़्वाहिश को सर्फे नज़र करते रहे मगर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को भी शायद यही मनज़ूर था इस लिए आप को इस तरफ मुतवज्जेह होना पड़ा और एक अज़ीमो ज़ख़ीम किताब तैय्यार होकर मनज़रे आम पर आ गई।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की सीरतो सवानेह पर फारसी ज़बान में बहुत सी किताबें मौजूद हैं और बहुत सी किताबें ऐसी हैं जिन में अकाबिर औलियाए किराम के हालात हैं और सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का भी तफसीली ज़िक्र है मगर उर्दू ज़बान में मनज़रे आम पर क़ाबले ज़िक्र कोई किताब नहीं है। उन तमाम किताबों को सामने रख कर अगर „सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़„ का मुतालआ किया जाए तो यक़ीनन इस किताब में इन्फेरादियत

मिलेगी कुछ मवाद के एअतेबार से और कुछ अन्दाज़े तहरीर तरतीब के लेहाज़ से। इस किताब का मुतालआ करें और सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से अपनी अक़ीदतो वाबस्तगी का रिश्ता मज़बूत करने के साथ साथ आप के फ़ुयूज़ो बरकात से अपने दिलो दमाग़ और ईमानो अमल को रौशनो मुनव्वर करें।

मौला तआला अपने महबूबे मुकर्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सदक़े में हमें और आप को अपने अस्लाफ और बुज़ुर्गों के किरदारो अमल और सीरतो सवानेह का मुतालआ करने और उन के नुक़ूशे क़दम पर चलकर ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फरमाए और दुन्या व आख़िरत में हर लम्हा उन के दामाने करम से वाबस्ता रखे। आमीन

मुहम्मद मीकाईल ज़ियाई
सद्र नाअत एकेडमी
उस्ताज़ अलजामेअतुल अरबीया अहसनुल मदारिस क़दीम
ख़तीबो इमाम मस्जिद मौलवी मुहम्मद आबिद
तलाक़ महल कानपुर

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का पेदरी नसबनामा

हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन सैय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

आप की साहबज़ादी

ख़ातूने जन्नत सैय्यिदा फातिमा ज़हरा रदियल्लाहु तआला अन्हा (ज़ौजए सैय्यिदुना अलीये मुर्तज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु)

आप के साहबज़ादे

सैय्यिदुश्शुहदा सैय्यिदुना इमामे हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु

आप के साहबज़ादे

सैय्यिदुना इमामे ज़ैनुल आबिदीन रदियल्लाहु तआला अन्हु

आप के साहबज़ादे

सैय्यिदुना इमाम मुहम्मद बाक़िर रदियल्लाहु तआला अन्हु

आप के साहबज़ादे

सैय्यिदुना इमाम जाअफर सादिक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु

आप के साहबज़ादे

सैय्यिदुना इमाम मूसा काज़िम रदियल्लाहु तआला अन्हु

आप के साहबज़ादे

सैय्यिदुना इद्रीस रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना इब्राहीम रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना नजमुद्दीन ताहिर रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना अहमद हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना ख़्वाजा कमालुद्दीन रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना ख़्वाजा ग़यासुद्दीन हसन रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन ग़रीब नवाज़
रदियल्लाहु तआला अन्हु

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का मादरी नसबनामा

हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन सैय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम
आप की साहबज़ादी
ख़ातूने जन्नत सैय्यिदा फातिमा ज़हरा रदियल्लाहु तआला अन्हा
ज़ौजए सैय्यिदुना अलीये मुर्तज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना इमाम हसने मुजतबा रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना हसने मुसन्ना रदियल्लाहु तआला अनहु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना मूसा अलजून रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना अब्दुल्लाह सालेह रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना मुसा सानी रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे

सैय्यिदुना अबूबक्र दाऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना मुहम्मद शमसुद्दीन रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना यहया ज़ाहिद रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना अब्दुल्लाह अलहंबली रदियल्लाहु तआला अन्हु
आप के साहबज़ादे

सैय्यिदुना दाऊद
आप की साहबज़ादी
हज़रत सैय्यिदा उम्मुल वरअ

सैय्यिदुना अबू सालेह
आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना ग़ौसे पाक

आप के साहबज़ादे
सैय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़
(रदियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन)

निगाहे अव्वलीं

लुग़त में अगरचे „वली,, के माअना क़रीब, पैरो, मुतसर्रिफ़, मददगार, फरमाँरवा, दोस्त और मौसमे बहार की दूसरी बारिश के हैं और बाज़ के नज़दीक जब यह लफ्ज़ „अल्लाह,, के साथ मिलाकर बोला जाता है याअनी „वलिय्युल्लाह,, तो इस के माअना अल्लाह के क़रीब, अहकामे इलाही के पैरो, अल्लाह की तरफ से मुख़्तारो मुतसर्रिफ, अल्लाह की तरफ से ज़ईफों के मददगार, किश्वरे ज़ुहदो इत्तेक़ा के फरमाँरवा, अल्लाह पर सब कुछ कुर्बान करने वाले दोस्त और ख़ुदा के बन्दों केलिए मौसमे बहार की बारिश की तरह फायदामन्द के हैं। हमें लुग़वी माअनों के अलावा यहाँ यह देखना है कि इस ख़ुदाई ख़िताब „औलियाअल्लाह,, की जो पहचान अल्लाह के महबूबे आअज़म शहंशाहे दोआलम फख़्रे आदमो बनी आदम हज़रत मुहम्मद मुसतफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अहादीसे करीमा में बयान फरमाई है वह क़िस गरोह पर सादिक़ आती है।

हदीस में औलियाअल्लाह की यह शनाख़्त बताई गई है कि न वह आपस में रिश्तेदारी के सबब मिलेंगे न उन के दरमियान दुन्या होगी जिसे आपस में तक़सीम करें बल्कि वह मुख़्तलिफ शहरों और जुदा जुदा क़बाइल के होने के बावुजूद उन की बिनाए महब्बत महज़ ज़ाते बारी तआला होगी, सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की फरमूदा पहचान फुक़रा, मशाइख़ और सूफ़ियाए किराम के गरोह पर सादिक़ आती है। यही वह हज़रात हैं जो बिला किसी दुन्यावी लालच के बल्कि दुन्यावी मालो ज़र लुटाकर अपने मुर्शिद से सिर्फ ख़ुदा केलिए महब्बत करते हैं हालाँकि एक किसी शहर का होता हैऔर दूसरा किसी मक़ाम का, उन में आपस में न दुन्यावी हिर्स दामनगीर होती है न वह किसी दुन्यावी रिश्ते से मिलते हैं, न हमवतन या क़राबतदार होने की

वजह से आपस में महब्बत करते हैं बल्कि उन की महब्बत खुदा केलिए होती है, चुनाँचे हज़रत ख़्वाजा हसन बस्री रदियल्लाहु तआला अन्हु का रिश्तए महब्बत हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु के साथ, हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम बलख़ी रहमतुल्लाहि अलैह का तअल्लुक़ हज़रत फुज़ैल इब्ने अयाज़ रदियल्लाहु अन्हु के साथ और इस क़िस्म के बहुत से औलियाअल्लाह का उन्स अपने पीराने उज़्ज़ाम के साथ ताईद में पेश किया जासकता है।

इस गरोहे औलियाअल्लाह के हज़रात वह मुक़द्दस हज़रात हैं जो इश्क़ो महब्बत के तअल्लुक़ के साथ फना फिश्शैख़, फना फिर्रसूल और फना फिल्लाह होजाते हैं और ज़ाते मुतलक़ में अपनी हस्ती गुम करदेते हैं जिन के बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है कि „मैं उस की आँख बन जाता हूँ जिस से वह देखता है, मैं उस की ज़बान बन जाता हूँ जिस से वह बोलता है, मैं उस का हाथ बन जाता हूँ जिस से वह पकड़ता है, मैं उस का पाँव बन जाता हूँ जिस से वह चलता है और जब वह मुझ से कोई चीज़ मांगता है तो मैं उसे ज़रूर ज़रूर देता हूँ„ जब किसी बन्दए ख़ास को यह मरतबा हासिल होजाता है तो उस की नज़रे फैज़असर जिस पर पड़ जाती है वह भी वली होजाता है और जो कुछ यह ज़बान से फरमा देते हैं वह होकर रहता है, जिस बीमार को यह हाथ से छू लेते हैं वह शिफायाब होजाता है, जिस के सर पर हाथ रख देते हैं वह मामूनो महफूज़ होजाता है, जिसके हाथ से उन का दस्ते यदुल्लाही मस होजाता है वह फैज़याब और बाबरकत होजाता है। इसी वजह से लोग औलियाअल्लाह की एक नज़रे करम के जोयाँ, उन के इरशादात सुनने के मुशताक़ और उन के हाथ पाँव से अपने हाथ, सर, आँख और होंटों से मस करके बरकाते खुदावन्दी हासिल करते हैं और मुरीद करते वक़्त यह हज़रात मुरीद का हाथ अपने हाथ में लेकर कान में कुछ कहकर नज़र से नज़र मिलाकर और अपना लुआबे दहन बज़रिअए शर्बत वग़ैरह चखाकर बरकाते बातिनी और तस्फियए क़ल्ब से मुस्तफीज़ फरमाते हैं। बईं वजह बादे विसाल भी लोग औलियाअल्लाह के मज़ारात से हाथ मस करके, होंटों से चूमकर, आँखों से लगाकर और मज़ार से

मस शुदा चादर को सर पर रख कर बरकात हासिल करते हैं।

गरोहे अस्फिया में मुसल्लमुस्सुबूत औलियाअल्लाह हज़रत ख़्वाजा हसन बस्री, हज़रत बायज़ीद बुस्तामी, शैख़ अबुल हसन ख़िर्क़ानी, हज़रत फरीदुद्दीन अत्तार,सैय्यिदुत्ताइफा हज़रत जुनैद बग़दादी, ग़ौसे आअज़म हज़रत शैख़ मुहीयुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी, हज़रत ख़्वाजा अबू इसहाक़ शामी चिश्ती, हज़रत ख़्वाजा फुज़ैल इब्ने अयाज़, हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी और दूसरे हज़ारों औलियाए किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन हैं और उसी पाक गरोह में से हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती सनजरी रदियल्लाहु तआला अन्हुहैं।आप ने भी महज़ खुदा केलिए बमिस्दाक़े अहादीसे करीमा अपने पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी से रिश्तए महब्बत जोड़ा हालाँकि पीरो मुर्शिद मुत्तसिल नीशापुर क़स्बा हारवन के रहने वाले थे और हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सन्जरी थे मगर आपस में रिश्तए महब्बत ऐसा उस्तवार हुआ कि दुन्यावी दौलत, रिश्तेदारी और वतन के तअल्लुक़ात से बालातर होगया। दुन्यावी दौलत लुटाकर, रिश्तेदारों की मफारक़त इख़्तियार करके, वतन को ख़ैरबाद कहकर मुर्शिद की ख़िदमत इख़्तियार की। आप की दीद से खुदा की याद ज़ुहूर पज़ीर होती थी बल्कि बाज़ मुरीदीन तो आप के रूए अनवर की दीद को नूरे एज़दी की दीद समझते थे। आज भी आप का ज़िक्र खुदा व रसूल के ज़िक्र के साथ आता है, आप के ज़िक्र से खुदा व रसूल की तरफ रग़बत और महब्बत पैदा होती है। दरबारे एज़दी का बरगुज़ीदा फर्द ही समझकर लोग आप की ज़ियारत केलिए आया करते थे और आज तक आप के रौज़ए अक़दस की ज़ियारत केलिए आते हैं आप के फैज़े विलायत से हज़ारों बन्दगाने खुदा मन्ज़िले विलायत पर फाइज़ होगए, आज तक होरहे हैं और क़ेयामत तक यह सिलसिला जारी रहेगा। आप ही ने हिन्दुस्तान में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नियाबतो जानशीनी के फराइज़ बहुस्नो ख़ूबी अंजाम देकर सुल्तानुल आरिफीन, सुल्तानुल हिन्द, नाइबे रसूलुल्लाह फिल हिन्द और औलियाए हिन्दुस्तान का सरताज बनने का शरफ पाया। बिलआख़िर यदे क़ुदरत ने बादे विसाल आप की पेशानिए अतहर पर बख़त्ते नूर *„हाज़ा हबीबुल्लाहि मा त फी हुब्बिल्लाह„* लिखकर

अल्लाह के दोस्त और हबीब होने की और अल्लाह की महब्बत में जान क़ुर्बान करने की मुहर सब्त करके आप की विलायत की तसदीक़ फ़रमाई।

आप की ज़ाते वाला सिफ़ात उन हज़रात में से एक है जो मैदाने क़ेयामत में अर्शे इलाही के सामने मोतियों की मस्नद पर बैठे होंगे और „ला ख़ाफ़ुन अलैहिम„ के मुताबिक़ तमाम ख़ौफ़नाक मनाज़िर से वह बेख़ौफ़ होंगे और बमिसदाक़ „व लाहुम यहज़नून„ हर ग़मो अलम से आज़ाद व बे परवाह होंगे बल्कि जब उन से महब्बत करने वाला उनहें नज़र आएगा तो उस का हाथ पकड़कर अपने पास खड़ा करलेंगे अगर फ़रिश्ते कुछ कहेंगे तो उन से फ़रमाएंगे „यह हमारे चाहने वाले और पैरो हैं अल्लाह तआला का उन के बारे में हम से वाअदा है „हा उलाए क़ौमुल ला यश्क़ा जलीसुहुम„ यह लोग दुन्या में हमारे हमनशीं थे लिहाज़ा यहाँ भी हमारे पास रहेंगे।

आप ही जैसे मुक़द्दस हज़रात केलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि मैं उन की आँख बन जाता हूँ, मैं उन की ज़बान बन जाता हूँ, मैं उन का हाथ बन जाता हूँ वग़ैरह वग़ैरह चुनाँचे आप की नज़रे क़ीमिया असर जिस पर पड़जाती थी वह वली होजाता था बल्कि पत्थर तक तूर के पत्थरों की तरह जलकर ख़ाकिस्तर होजाते थे। आप जैसा फ़रमा देते वैसा ही ज़ुहूर में आता। शमसुद्दीन अलतमश को बरसों पहले आप ने हिन्दुस्तान का बादशाह फ़रमाया था और ऐसा ही ज़ुहूर में आया। राजा प्रिथवी रॉय केलिए आप ने फ़रमाया था कि हम ने उसे मुलमानों के हाथों ज़िन्दा गिरफ़्तार करा दिया। आख़िर कुछ अर्सा बाद ऐसा ही हुआ। जो आप के हाथों पर बैअत होजाता वह ख़ुदा रसीदा होजाता।

आप पर दरबारे एज़दी से जो ख़ासुल ख़ास इन्आमातो इकरामात हुए हैं उन के मुकम्मल राज़दार तो आप ख़ुद ही हैं मगर आप की विलादत, वफ़ात और हयाते मुक़द्दसा के बाज़ हालात से चन्द मख़सूस इन्आमात का क़दरे अन्दाज़ा ज़रूर होजाता है चुनाँचे ख़्वाजए हिन्द का दौरे वस्त में आलमे नासूत को ज़ीनत बख़्शना एक तरफ़ क़ुरूने ऊला की याद ताज़ा करता है तो दूसरी तरफ़ दौरे आख़िर केलिए शम्ए हिदायत है जिस की रौशनी में अहालियाने आलम बिलख़ुसूस बाशिन्दगाने हिन्द के

क़ुलूब नूरे इस्लाम से मुनव्वर नज़र आते हैं और बरकाते सुवरी व माअनवी से आज तक फ़ैज़याब होरहे हैं।

उस ज़र्री अहद में क़ुरूने ऊला की ज़िया पाशी हिजाज़ से फ़ैलकर एशियाई मुल्कों को इस्लाम के साथ साथ इलूमे ज़ाहिरो बातिन और अनवारे तरीक़तो माअरिफ़त से मुनव्वर करचुकी थी। फ़ारस व इराक़, रूम व शाम, ख़ुरासान व अफ़ग़ानिस्तान, ख़ेवार व बुख़ारा, सीस्तान व किरमान और सिन्ध व पंजाब में रूहानियत का दौरे उरूज था। एशिया के इसी ख़ित्ते में मशहूरे आलम मशाइख़ व दुर्वेश ताअलीमाते रूहानी व तसर्रुफ़ाते बातिनी से बारिशे इफ़ान कर रहे थे। फ़क़्र का हिलाले नव बद्रे कमाल हो चुका था, आफ़ताबे रूहानियत की गर्म बाज़ारी निस्फ़ुन्नहार पर थी। बग़दाद में ग़ौसे आअज़म दस्तगीर, शैख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी, ख़्वाजा अबू नजीब सोहरवर्दी और दूसरे बहुत से कामिलीन रूहानी फ़ुयूज़ और क़ल्बी नूर के ख़ज़ाने लुटा रहे थे। मश्हद में शैख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार, ख़्वार्ज़म में शैख़ नज्मुद्दीन कुब्रा, तब्रेज़ में शैख़ शमसुद्दीन, उस्तुराबाद में शैख़ नासिरुद्दीन, किरमान में शैख़ औहदुद्दीन, हारवन में ख़्वाजए ख़्वाजगान ख़्वाजा उस्मान हारवनी चिश्ती क़ुद्दिसत अस्रारुहुम और दूसरे सैकड़ों मायएं नाज़ मशाइख़ो दुर्वेश एशिया के इस चमनिस्तान पर गुलहाए माअरिफ़त बरसा रहे थे और गुलहाए इल्मो अमल की ख़ुश्बू फ़ैलाकर लाज़वाल शोहरत हासिल कर रहे थे यह वह हज़रात हैं जिन पर दुन्याए फ़क़्र जितना भी फ़ख़्र करे कम है।

अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरते कामिला से जो ख़ुसूसियात आप को अता फ़रमाई वह अपनी नज़ीर आप हैं। इस आलम में जलवा फ़रमा होते ही आप ने सर ज़मीने तख़्तगाहे जमशेद पर क़दम रखा। मुत्तसिले सन्जर अस्फ़हान ही वह मक़ाम है जहाँ जमशेद का मशहूरे आलम तख़्त आज तक बिछा हुआ है और जिस की मदहख़्वानी शाइरों के दीवान की ज़ीनत बनी हुई है। सरज़मीने तख़्त गाहे जमशेद में आप की विलादते मुबारका गोया क़ुदरत का इशारा था कि हम ने दुन्यावी तख़्ते शाही को दीनी बादशाह के क़दमों में बिछा दिया।

वस्ते एशिया में आप का नशवो नुमा होना क़ुदरत का किनाया है कि वह सरज़मीन जो माद्दी जंगी क़ुव्वत का मरकज़ बनी हुई थी

अब रूहानी कुव्वत के शहंशाह की पाबोसी करे। अवाइले उम्र में अगरचे बज़ाहिर आप बाग़ में आबपाशी कर हे थे मगर बबातिन चमने इस्लाम को आबे रहमत से सैराब कर रहे थे। आग़ाज़े शबाब में क़ेयामे समरक़न्द व बुख़ारा से साबित है कि कुदरत ने आप को एशिया की सद्रनशीनी अता फरमाई और क़ल्बे एशिया में क़ुर्आन ख़्वानी की बा बरकत आवाज़ से चारों तरफ़ नूरे इस्लाम और रूहानी रौशनी की शुआएं फैलाईं।

क़ुदरत ने आपका मुस्तक़रे अव्वल उस मक़ाम को बनाया जो इलूमे ज़ाहिरो बातिन का मरकज़ था उस वक़्त बग़दाद के मदरसा निज़ामिया में दूर दराज़ के तालिबाने इल्म आकर मुस्तफीज़ हो रहे थे और उसी मुक़द्दस शहर में तालिबाने माअरिफत अतराफो जवानिब से वारिद होकर अपनी रूहानी प्यास बुझा रहे थे। मस्लेहते खुदावन्दी थी कि उलमाए ज़ाहिर, मशाइख़ो दुर्वेश और बादशाह फ़क्र से रूशनास हों। आप की सियाहत में दरपर्दा मशिय्यते एज़दी थी कि मक्कए मुअज़्ज़मा और मदीनए मुनव्वरा से लेकर समरक़न्दो बदख़्शाँ तक और देहली व अजमेर से लेकर तब्रेज़ो दमिश्क़ तक सरज़मीने एशिया आप के क़ुदूमे मुबारक से बरकत हासिल करे। तमाम ममालिक के लोग आप के दीदारे पुरअनवार से मुशर्रफ हों और यह तूलो अर्ज़ आइन्दा नस्लों केलिए रूहानियत की आमाजगाह रहे। दौराने सियाहत अगरचे बज़ाहिर आप तीरो कमान से परिन्दों का शिकार फरमा रहे थे मगर हक़ीक़त यह है कि बबातिन आप इन्सानी क़ुलूब पर फतह हासिल कर रहे थे सुबूत में मुसलमानाने हिन्द की कसीर ताअदाद पेश की जा सकती है।

बहुत सी खुसूसियात में से आप की एक खुसूसियत यह भी है कि दरबारे रिसालत से आप को शरीअतो तरीक़त और माअरिफत केलिए वह मुल्क मिला जहाँ बुत परस्ती यूनान की हमपल्ला थी बलिक हिन्दुस्तान ही वह मुलक है जहाँ दुन्या की तवहहुम परस्ती ख़त्म होजाने के सैकड़ों बरस बाद भी अब तक यह सिलसिला जारी है आप ही ने सब से पहले शिमाली हिन्दुस्तान में आकर परचमे इस्लामो रूहानियत बे तेग़ो तफ़ंग बलन्द फरमाया बिला ख़ौफे तीरो शमशीर, दुशमनाने इस्लाम के नरग़े में हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु की तरह तशरीफ फरमा हुए और हज़रत इमाम हसन रदियल्लाहु तआला

अन्हु की तरह हुस्ने सुलूक और सुल्ह का रवैय्या इख़्तियार करके हिन्दुस्तान में तब्लीग़े इस्लाम की ख़िदमात बहुसनो ख़ुबी अंजाम दीं और इक़्तेदारे इस्लाम क़ाइम फरमाया।

आप की ज़ाते गिरामी आफताब से ज़ियादा रौशन और माहताब से ज़ियादा जाज़िबे क़ुलूबो रूह है। हिन्दुस्तान का चप्पा चप्पा आप के फुयूज़े बातिनी और दर्से ज़ाहिरी से माअमूरो मुज़ैय्यन है। अहालियाने हिन्द अपने मुहसिने आअज़म के एहसानात को आठ सदियाँ गुज़र जाने के बाद भी नहीं भूले हैं आज तक लाखों की ताअदाद में लोग ग़ैर मुन्क़सिम हिन्दुस्तान के गोशे गोशे से आकर आप की चौखट पर सरे नियाज़ झुकाते हैं, फुयूज़े सुवरी व माअनवी केलिए दामने दिल फैलाते हैं, क़ुर्बान हो हो कर इज़्हारे तशक्कुर करते हैं और अदलो इन्साफ, इजज़ो नियाज़, हिल्मो तवाज़ो, पाकबाज़ी व पाक बातिनी, सिदक़ो रास्त गुफ्तारी, इल्मो अमल, मख़्लूक़ परवरी, इन्सान नवाज़ी, फर्ज़ शनासी, इश्क़ो महब्बत, मसावातो यगानगत और ख़ुदा शनासी व ख़ुदारसी का दर्स हासिल करते हैं।

आज से तक़रीबन नौ सदी पहले पैवन्द दार कपड़ों में मलबूस, चन्द माशे सूखी रोटी खाने वाला, फक़ीराना ज़िन्दगी बसर करने वाला एक इन्सान हिन्दुस्तान में मुसाफिराना तौर से वारिद होता है और अहालियाने हिन्द के क़ुलूब को मुसख़्ख़र करलेता है उस के पास न तोप होती है न तल्वार,न फौज न ख़ंज़ाना मगर वह तेग़े इन्साफ चलाकर, फौजे अख़लाक़ियात फैलाकर, गंजे इरफानो सदाक़त लुटाकर न सिर्फ हिन्दुस्तान व सलातीने हिन्दुस्तान पर रूहानी फतह हासिल करलेता है बल्कि बैरूने हिन्द भी अपनी लाज़वाल रूहानी क़ुव्वत का सिक्का बिठा देता है। चीनो जापान, रूसो तुर्किस्तान, अरबो शाम, अफग़ानिस्तानो ईरान और इराक़ो सीस्तान में उस के अक़ीदत मनद आज भी नज़र आते हैं और अफरीक़ा व मिस्र, हालैन्डो फ्राँस और यूरप के दूसरे ममालिक से उस के रौज़ए अक़्दस की ज़ियारत करने केलिए आते हैं।

कौन जानता था कि मिसकीन सूरत, ख़िर्क़ा पोश और ग़रीबुल वतन इन्सान की गुदड़ी में लाअलों से ज़ियादा क़ीमती ख़ज़ाना मौजूद है यह इन्सान वह कामिलो अकमल इन्सान है जो हज़ारों को सिदक़ो सफा का रास्ता बताएगा, अकसर को ज़ाहिदो आबिद बनाएगा और उस का दर्से इन्सानियत बतसर्रुफाते रूहानी

हमेशा जारी रहेगा।

आख़िर वह दिन आया कि आफ़ताबे हिदायत ने उफ़ुक़े हिन्दुस्तान पर जल्वागर होकर अपनी शुआओं से मुल्क का कोना कोना मुनव्वर करदिया। यहाँ आप को सुकूनत केलिए मुल्क का वह सूबा मिला जो हिजाज़ से बदर्जए अतम मुशाबहत रखता है। राजपुताना की रेगिस्तानी सरज़मीन, पानी की कमयाबी, ऊँटों की सवारी और पहाड़ों का जाबजा वुक़ूअ हमारे इस दाअवे की तसदीक़ करते हैं, हज़रत ख़्वाजा ने जो दर्से इन्सानियत बिल्लिसान, बिल्क़लम और बिलक़ल्ब दिया है उस का नमूना पहले आप ने खुद बनकर दिखाया है। जो कुछ फरमाया उस का अमली सुबूत अपने किरदार से दिया, जो लिखा उस का मिस्दाक़ पहले खुद बने, जो बयान किया उस का मुशाहदा अपने आअमालो अफ़आल से कराया याअनी जो कहा वह करके दिखाया।

आप ने न सिर्फ तहज़ीबो अख़लाक़ की ताअलीम दी बल्कि फ़क़्रो दुर्वेशी का भी वह ऊँचा सबक़ दिया जो अपनी मिसाल आप है, कहीं रियाज़ातो मुजाहदात से तज़्कियए नफ्स का दर्स दिया है तो कहीं औरादो वज़ाइफ से खुदा की याद में मसरूफ रहने की हिदायत फरमाई है कहीं ज़िक्रो अज़कार से तस्फियए क़ल्ब की ताअलीम दी है तो कहीं पासे अन्फास की तलक़ीन फरमाई है कहीं सुल्तानुल अज़कार की तरफ इशारा किया है तो कहीं क़ल्ब जारी होने की तरफ किनाया फरमाया है कहीं शग़्ले शमसी का ज़िक्र किया तो कहीं शग़्ले माहताबी के मुतअल्लिक़ बयान फरमाया है कहीं माहताब दर आफताब का शग़्ल तल्क़ीन किया है तो कहीं आफताब दर माहताब का तरीक़ा सिखाया है।

आप की ताअलीमात में आलमे नासूतो मलकूत की अस्लियत और आलमे जबरूतो लाहूत की हक़ीक़त, बेहमा व बाहमा की कैफियत और सफरो हज़र की मन्ज़िल का हाल वाज़ेह तौर पर बयान किया गया है और „हमा अज़ ऊस्त हमा ऊस्त„ इश्क़ो ग़िना, खुलूसे इबादात, तौहीदे हक़ीक़ी, वहदतुल वुजूद, शाहिदो मशहूद और फना फ़िल बक़ा की हक़ीक़त को आश्कारा फरमाया गया है।

किस को माअलूम था कि वह पैकरे इस्तिग़ना जो ऐय्यामे जवानी ही में अपना सब कुछ लुटा देता है एक दिन हिन्दुस्तान में आकर बबातिन सुल्तानी करेगा बड़े बड़े उलुल अज़्म सलातीन उस

की चौखट पर सरे नियाज़ झुकाएंगे, अहले दुवल ख़ाकबोसी करेंगे, साहिबे हुकूमत उस के महकूम बनेंगे, अहलुल्लाह उस के नक़्शे क़दम पर चलेंगे, अहले माअरिफत उस की ख़ाकेपा को आँखों से लगाएंगे। आख़िर वह वक़्त भी आया कि ख़ाक नशीन ने तख़्तनशीनों पर हुक्मरानी की, ग़रीब नवाज़ी में खुदा की शान नज़र आई, खुदा के बन्दे ने बनी नौए इन्सान के साथ हमदर्दाना सुलूक किया, क़दमे, सुख़ने, दिरमे उन की इमदाद करके शरफे जाँनिसारी अता फरमाया।

आप की जाज़िबीयत सिर्फ हिन्दुस्तान तक ही महदूद न रही बल्कि किसी ने ख़ुरासान से आकर शरफे क़दमबोसी हासिल किया तो किसी ने सीस्तान से, कभी कोई ईरानी हल्क़ा बगोश हुआ तो कभी किसी अफग़ानी ने सरे इरादत झुकाया। आख़िर वह वक़्त आया कि बमन्शए क़ज़ा व क़द्र आप ने अपनी आख़री ख़्वाबगाह केलिए वह शहर पाया जो बलिहाज़े जाए वुक़ूअ मक्कए मुअज़्ज़मा की मिसाल और बलिहाज़े मकानियत मदीनए मनव्वरा के मुशाबेह है। आप की शराबे उलफत के मतवाले आज भी नश्शए महब्बत में मख़मूर नज़र आते हैं कोई आप के आस्ताने पर ज़र लुटा रहा है कोई गिर्या व बुका में मुबतला है कोई मदहोश है कोई सरशार है कोई हज़रत ख़्वाजा का नाम लेलेकर अश्कबार है। आप जिस क़दर मख़लूक़ में अज़ीज़ हैं उसी क़दर बारगाहे एज़दी में महबूब हैं अहले महब्बत केलिए आप के रौज़े की दीद ही ईद है अल्लाह ने जो शरफे क़ुबूलियत आप को बख़्शा है वह अपनी नज़ीर आप है तमाम औलियाए हिन्द आप के ज़ेरे नगीं हैं।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू का क़ौल है कि „जो ख़ालिक़ से महब्बत करता है मख़लुक़ उस से महब्बत करने पर मजबूर है„ इस सिलसिलए महब्बत ने ऐसे आअला मदारिज हासिल किए कि आप दरबारे एज़दी में मक़बूल और महबूब होगए मख़लूक़ ने आप की रूहे पुरफुतूह के वसीले से अपनी दिली मुरादें हासिल कीं हज़ारों बल्कि लाखों रुप्ये आप के आस्ताने पर निछावर किए, क़ीमती इमारात ताअमीर कीं, मवाज़ेआत वक़्फ किए, आप के सवानेहे हयात मुरत्तब किए, मनाक़िब लिखे, आप के नाम से बाज़ मक़ामात को मन्सूब किया और आप के आस्ताने पर हाज़री देने को अपनी सआदत समझा।

इस मौक़े पर आप की उस दुर्वेशाना ख़ुसूसियत का इज़हार

भी बेमहल न होगा कि आप से कसीर ताअदाद में करामतों का ज़ुहूर हुआ मुम्किन है कि यूरुप और मग़्रिब के मुक़ल्लिदीन इस को अफ्साना निगारी समझें मगर उन्हें माअलूम होना चाहिए कि यूरूप के जिस मुवर्रिख़ ने बाबर के हालात लिखे हैं उस ने बाबर की यह करामत ज़रूर लिखी है कि उस ने अपने बीमार फरज़न्द हुमायूँ का तवाफ किया, बेटे के एवज़ अपनी जान देदी और हुमायूँ तन्दुरुस्त होगया। लेहाज़ा एक आम मुसलमान बादशाह की करामत को लिखा और उस पर यक़ीन किया जासकता है तो एक दीनदार दुर्वेश की करामतें लिखने को किस तरह मुवर्रिख़ीन के तरीक़े के ख़िलाफ कहा जासकता है। इस के अलावा चूँकि क़रीब क़रीब तमाम मज़हबी पेशवाओं से माफौक़ल आदात वाक़ेआत रूनुमा होते रहे हैं जिन का तज़्किरा मुक़द्दस मज़हबी किताबों में जाबजा आया है मसलन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से मुर्दे ज़िन्दा करने, बीमारों को शिफ़ायाब करने के मोअजेज़े ज़ुहूर पज़ीर हुए, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से असा के अज़दहा बनने का मोजिज़ा ज़ुहूर में आया और सरकारे ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से लोगों को बकसरत साहिबे करामत बनाने का मोअजिज़ा मिनसए शुहूद पर आया। इसी तरह क़रीब क़रीब तमाम बानियाने मज़ाहिब और पाक लोगों से आज तक बराबर करामतें ज़ुहूर में आती रही हैं इस लिए सिवाए लामज़हब लोगों के और किसी मज़हब वाले को करामत से इन्कार का कोई मौक़ा हासिल नही है। सिर्फ करामत ही वह तुर्रए इम्तियाज़ है जिस से अल्लाह तआला अवाम और ख़वास का फर्क़ नुमायाँ करता है ब अलफाज़े दीगर करामत दरबारे एज़दी में क़ुबूलियत की एक ऐसी पहचान है जो असबाबी दुन्या और माद्दी कुव्वतों से बालातर है यह जब किसी वली से रूनुमा होता है तो करामत कहलाती है, जब नबी से ज़ुहूर पज़ीर हो तो मोअजिज़ा कहते हैं और जब किसी दूसरे मज़हब वाले से ज़ाहिर हो तो ब इस्तिलाहे शरीअते इसलाम उसे इस्तिदराज कहते हैं।

आप की मुकम्मल ख़ुसूसियात का इरफान तो आप ही जैसा मुकम्मल इन्सान हासिल कर सकता है मगर इस मौक़े पर जो कुछ पेश किया गया है „मुश्ते नमूना अज़ ख़र्वारे„ के मिस्दाक़ है लिहाज़ा हम एअतेराफे इज्ज़ करते हुए इसी पर इक्तिफा करते हैं „वल्लाहु यख़्तस्सु बिरहमतिही मैंय्यशाउ वल्लाहु ज़ुल फ़ज़्लिल

अज़ीम„

आप के अहदे मुबारक के सियासी हालात

छटी सदी और अवाइले सातवीं सदी हिजरी का दौर एशियाई मुल्कों में इस्लाम केलिए पुर ख़तर था फिर्क़ए बातिनी के मुक़ल्लिदीन ने शामो इराक़ और फारस वग़ैरह में हंगामा बरपा कर रखा था ख़ुदा के बन्दों को इन्तेहाई बेदर्दी से ज़िबह कर रहे थे उन का एअतेक़ाद था कि ग़ैर फिर्क़ा वाले को ख़्वाह वह मुसलमान ही क्यूँ न हों क़तल करना मुबाह है यह इस्लाम और मुसलमानों पर डाके और छापे मार रहे थे अल्लाह की मख़लूक़ उन के मज़ालिम से तंग आगई थी उन की कुव्वत इतनी बढ़ गई थी कि ख़ुलफाए वक़्त तक उन की लगाई हुई फसाद की उस आग को बुझाने से क़ासिर थे थोड़े ही अर्से में यह लोग ममालिके इस्लामियां में फैल गए थे उन के ख़ुफ्या कार गुज़ारों को फिदाईन कहा जाता था उन्हों ने बड़े बड़े उमराए सल्जूक़िया को ख़ाको ख़ून में मिला दिया। छटी सदी हिजरी के दौरे वस्त में क़ौमे ग़ज़ान का गरोह अपनी तेग़े ज़ुल्म से ख़ून की नदियाँ बहा रहा था ख़ुरासान के अलाक़ों में ऐसे वहशियाना तरीक़े से क़तले आम हुआ कि रिआया के दिल लरज़ गए नीशापुर और मशहदे मुक़द्दस बेरहमी के साथ लूट लिए गए, इमारातो मसाजिद तक जला दी गईं जो लोग मस्जिदों में पनाहगुज़ीं हुए उन्हें भी तहे तेग़ कर दिया गया हर तरफ लाशों के अंबार नज़र आते थे उस गरोह ने तुर्कों को ज़ेरो ज़बर किया उलमा व फ़ुज़ला तक उन ज़ालिम हमला आवरों के

हाथों शहीद होने से महफ़ूज़ न रह सके हज़रत मुहम्मद यहया फ़कीह ने भी उसी फ़ितने में शहादत पाइ। आख़िरकार बेदीन तातारियों ने चंगेज़ ख़ाँ की सरकर्दगी में सातवीं सदी हिजरी के अवाइल में उन की हुकूमत का ख़ातमा करदिया और तक़रीबन एक साल के अर्से में मुल्क के इस सिरे से उस सिरे तक के मालिक बन बैठे हज़रत शैख़ नजमुद्दीन कुबरा उन्हीं तातारियों की तेग़े ज़ुल्म से 618 हि0 में शहीद हुए।

क़ानूने क़ुदरत के मुताबिक़ उस दौरे ज़ुलमत में एक ऐसे मुजस्समए अख़लाक़, पैकरे इस्लाम, आफ़ताबे हिदायत और सरापा नूरे ईमान की ज़रूरत थी जिस की बातिनी कुव्वत और रूहानी तसर्रुफ़ात से इस्लाम की हिफ़ाज़त की जासके इस मन्शाए क़ुदरत को पूरा करने केलिए मुहसिने आअज़म, मुसलेहे कबीर हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह छटी सदी हिजरी के तीसवें साल रौनक़ बख़्शे ख़ित्तए अस्फहान हुए आप ने न सिर्फ़ बबातिन अपनी ईमानी और रूहानी कुव्वत से इस्लाम को बातिल के नरग़े से बचाया बल्कि अपने तसर्रुफ़ाते बातिनी से ज़ुलमतकदए हिन्दुस्तान में अलमे हिदायत बलन्द करके किश्वरे माअरिफ़त के साथ साथ बज़ाहिर भी इस्लामी हुकूमत क़ाइम करदी आप ही के क़ुदूम की बरकत से कुफ़्रिस्ताने हिन्द इस्लाम का चमनिस्तान हुआ। तारीख़ शाहिद है कि आप ही के तसर्रुफ़ाते बातिनी से शिकस्त ख़ुर्दा शहाबुद्दीन गौरी को प्रिथ्वीराज पर फ़तह नसीब हुई और हिन्दुस्तान में इस्लामी क़लमरौ की बुन्याद पड़ी।

आलमे अजसाम में शहंशाहे किश्वरे बातिन के तशरीफ़ फ़रमा होते ही इस्लामी निज़ामे ज़ाहिर में तब्दीली वाक़ेअ होती है उसी सन में ख़लीफ़ए राशिद माअज़ूल किया जाता है और उस की जगह पर अबू अब्दुल्लाह मुस्तज़्हर अलमुक़्तज़ी बग़दाद में मस्नदे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होता है अभी शहंशाहे इरफ़ान को इस आलम में तशरीफ़ फ़रमा हुए सिर्फ़ दो ही साल गुज़रे थे कि माअज़ूल ख़लीफ़ा राशिद और मलिक दाऊद फ़ारस व ख़रिस्तान पर क़ब्ज़ा करने केलिए ख़्वार्ज़म शाह के साथ इराक़ का क़स्द करते हैं सुल्तान मस्ऊद तल्वार और नीज़ा लिए उन के इस्तिक़बाल को निकलता है यह लोग मुन्तशिर होजाते हैं मलिक दाऊद फ़ारस चला जाता है ख़्वार्ज़म शाह अपने दारुल हुकूमत की जानिब लौटता है। राशिद असफ़हान का रास्ता इख़्तियार करता है

अस्नाए राह में चन्द ख़ुरासानी ब हमराहिए ग़ुलाम 532 हि0 में उस का ख़ातमा कर देते हैं मक़ामे शहरिस्तान में अस्फहान के बाहर उस को दफ़्न किया जाता है फ़ितना व फ़साद की गर्मबाज़ारी होती है यहाँतक कि बग़दाद से जो ग़िलाफ़े काअबा हर साल जाया करता था वह भी उस साल नहीं गया। एक फ़ारसी सौदागर अठारह हज़ार मिस्री दीनार के सरफ़े से यह ख़िदमत बजा लाता है उस सौदागर की आमदो रफ़्त इसी मुलक हिन्दुस्तान में थी जो शहंशाहे अक़्लीमे माअरिफ़त को अपनी आग़ोश में लेने केलिए हाथ फैलाए बेचैनी से इन्तेज़ार कर रहा था 533 हि0 के माहे रबीउल अव्वल में सुल्तान मस्ऊद वारिदे बग़दाद होकर चन्द क़िस्म के महसूल मआफ़ करके रिआया की दुआएं लेता है जब मुअल्लिमे एशिया अपनी उम्र के पन्दरहवें साल में इल्मे ज़ाहिर हासिल करने केलिए समरक़न्दो बुख़ारा के सफ़र में होता है उस ज़माने में ख़लीफ़ा मुक़्तज़ी क़लम्दाने वज़ारत यहया के सुपुर्द करता है ख़ुरासान का हुक्मराँ मलिक सन्जर सल्जूक़ी रय की जानिब कूच करता है उसी सन याअनी 544 हि0 में मलिक शाह इब्ने सुल्तान महमूद इराक़ वापस आता है और सुल्तान मस्ऊद वारिदे बग़दाद होता है जब मुसलेहे एशिया समरक़न्दो बुख़ारा में तहसीले इल्म कर रहा था उन ऐय्याम में बर्कियारक़ के अहदे सलतनत और इमारते सुलतान सन्जर में क़ुतबुद्दीन मुहम्मद इब्ने नविश्तगीन मुलक्क़ब बलक़बे ख़्वार्ज़म शाह ख़्वार्ज़म (ख़ेवा) में हुकूमत कर रहा था अभी मुसलेहे एशिया को समरक़न्दो बुख़ारा में आए हुए चार साल ही गुज़रे थे कि ख़ुरासान में ग़ज़ान ने फ़ितना बरपा करना शुरूअ कर दिया यह लोग नासिरुद्दीन मुलक्क़ब ब मुइज़्ज़ुद्दीन इब्ने जलालुद्दीन मलिक शाह याअनी सुल्तान सन्जर का फ़ौजी अड्डा लूट कर उस को क़ैद कर लेते हैं जब मुअल्लिमे इस्लाम पाँच साल तक तहसीले इल्म के बाद समरक़न्दो बुख़ारा से अपनी क़ल्बी प्यास बुझाने केलिए मुर्शिद की तलाश में बराहे ख़ुरासान इराक़ो अरब का सफ़र कर रहा था उस ज़माने में ग़ज़ान सुल्तान सन्जर को नज़रबन्द किए हुए ख़ुरासान को लूटते फिर रहे थे उमरा व अराकीने दौलत मुन्तशिर हो गए थे जो जिस शहर में पहुँचता था उसे दाब लेता था उस ज़माने में उस सरज़मीन से गुज़रना ख़तरे से ख़ाली न था आख़िर सुल्तान सन्जर 551 हि0 में अहमद हाकिमे तिरमिज़ की सई से गोर ख़ाँ वालिए तुर्किस्तान की

क़ैद से निकल कर भागा और 552 हि० में तुर्कों की मुदाफ़अत की तमन्ना लिए हुए इस जहाँ से रुख़सत हुआ उस वक़्त से ख़ुरासान उस के अमीरों में तक़सीम होगया बाद अज़ाँ बनी ख़्वार्ज़्म शाह ने कुल बलादे अस्फ़हान और रय पर क़बज़ा कर लिया और सूबाजाते ग़ज़ना भी उन्ही सुबुक्तगीन से लेलिए इस तरह सलातीने सल्जूक़िया की जगह पर यह ख़ानदान बरसरे हुकूमत आगया।

जब ताजदारे विलायत हारवन में ख़्वाजए आलमियाँ हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू के दस्ते हक़ परस्त पर बैअते अव्वल करने के बाद ढाई साल तक मसरूफ़े मुजाहदा रहकर ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ हुआ और 555 हि० में वारिदे बग़दाद होकर मशाइख़ से मुलाक़ात की बक़ौले इब्ने ख़ुल्दून उसी सन के माहे रबीउल अव्वल में ख़लीफ़ा मुक़्तज़ी ने चौबीस साल चार माह ओहदए ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन रहने के बाद वफ़ात पाई और ख़लीफ़ा मुस्तन्जिद की ख़िलाफ़त का दौर शुरूअ हुआ उसी सन में मुहम्मद इब्ने सल्जूक़ अस्फ़हान का हाकिम था।

557 हि० में सैय्याहे आलम ने उस्तुराबाद, हिरात, सब्ज़वार, क़िल्अए शादमाँ, मुल्तान, लाहौर, ग़ज़नी, बलख़ और समरक़न्द वग़ैरह की सियाहत शुरूअ फ़रमाई उन्हीं ऐय्याम में अलाउद्दीन जहाँसोज़ का इन्तेक़ाल होचुका था और क़ौमे ग़ज़ान ने अफ़ग़ानिस्तान में कुछ अर्से केलिए ग़ौरी व ग़ज़नी हुकूमत को मिटाकर ईरान का रुख़ किया था बाद अज़ाँ अलाउद्दीन के भतीजे ग़यासुद्दीन साम ने क़ौमे ग़ज़ान से 569 हि० में ग़ज़नी वापस लेलिया और दो साल बाद हिरात भी लेलिया।

जब 561 हि० में सुल्तानुल हिन्द बारे अव्वल वारिदे हिन्द हुआ उस ज़माने में लाहौर का हुक्मराँ ग़ज़नवी ख़ानदान का आख़री ताजदार ख़ुस्रौ मलिक इब्ने ख़ुस्रौ शाह बरसरे हुकूमत था।

562 हि० में „सीरू फ़िल अर्द„ पर अमल करते हुए आप ने अपना तवील सफ़र ख़त्म किया और हिन्दुस्तान से वापस हुए और बग़दाद में क़दमरंजा फ़रमाकर अपने मुर्शिदे गिरामी से बैअते दोम की और 563 हि० से 582 हि० तक पीरो मुर्शिद के हमरिकाबे सफ़र समरक़न्दो बुख़ारा, बदख़्शाँ व सीस्तान, शामो किरमान और हरमैने शरीफ़ैन वग़ैरह में रहा। उस बीस साल के अर्से में ख़लीफ़ा मुस्तन्जिद ने 566 हि० में वफ़ात पाई और उस की जगह पर मुस्तज़ी ख़लीफ़ा हुआ, ख़लीफ़ा मुस्तज़ी के शुरूअ ज़माने में दौलते

अलवीया का टिमटिमाता हुआ चराग़ मिस्र में गुल होगया और मुहर्रम 567 हि० में अब्बासी ख़लीफ़ा मुसतज़ी का जामेअ मस्जिद मिस्र में ख़ुत्बा पढ़ा गया ज़ीक़ाअदा 575 हि० में ख़लीफ़ा मुसतज़ी बिअम्रिल्लाह की वफ़ात हुई और अन्नासिर लिदीनिल्लाह की ख़िलाफ़त का दौर शुरूअ हुआ, उस के दौरे ख़िलाफ़त में फ़ख़्रे आदम ख़लीफ़तुल्लाह का जानशीन मुर्शिद के हमराह बीस साल सियाहत करके 582 हि० में वारिदे बग़दाद हुआ और बादे हुसूले ख़िलाफ़त बउम्र 52 साल शैख़े आअज़म अपने मुर्शिद से रुख़्सत होकर वारिदे औशो अस्फ़हान हुआ क़ुतबुल अक़्ताब ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी औशी को शरफ़े मुरीदी बख़्शा उसी सन में भलवान ने वफ़ात पाई जो हमदान, रय, आज़र बाइजान और आरामिया वग़ैरह में हुकूमत करतर था।

जब शहाबुद्दीन ग़ौरी लाहौर पर क़बज़ा करचुका था और सलतनते ग़ज़नविया ग़ौरी ख़ानदान में मुन्तक़िल होगई थी उस वक़्त 583 हि० में सुल्तानुल आरिफ़ीन ने मआ क़ुतबुल अक़्ताब औश से सफ़रे हरमैन इख़्तियार किया और बादे ज़ियारते हरमैन 585 हि० में मदीनए मुनव्वरा से हिन्दुस्ता का रुख़ किया उसी ज़माने में ख़लीफ़ा नासिर ने सलातीने सल्जूक़िया के दारुलख़िलाफ़त के इन्हेदाम का हुक्म सादिर किया और अपने वज़ीर जलालुद्दीन इब्ने यूनुस को क़ज़ल की कुमक पर 584 हि० में रवाना किया तुग़रल और अब्दुल्लाह से सख़्त लड़ाई हुई आख़िर 587 हि० में तुग़रल क़त्ल करदिया गया उस के क़त्ल से सलातीने सल्जूक़िया का चराग़ गुल होगया।

मदीनए मुनव्वरा से रवाना होने के बाद अहालिय्याने हिन्द के मुहसिने आअज़म ने 586 हि० में वारिदे अजमेर होकर ज़ुलमतकदए हिन्दुस्तान को नूरे इस्लाम की रौशनी और ज़ियाए माअरिफ़त से मुनव्वर फ़रमाया उस वक़्त रॉय पिथौरा अजमेर में हुक्मराँ था जहाँ हुनूद की आबादी थी , बकसरते मन्दिर थे, हिन्दुवाने रस्मो रिवाज़ थे, धोती का पहनावा था, रेगिसतान में सफ़र केलिए ऊँट की सवारी या बैल गाड़ी थी, नाहमवार पहाड़ी अलाक़ों में घोड़े पर सफ़र किया जाता था, ग़ुरबा व मसाकीन पैदल सफ़र करते थे, मार्वाड़ में पानी की क़िल्लत थी, ज़बान मार्वाड़ी थी। अभी रूहानी बादशाह को अजमेर आए थोड़ा ही अर्सा गुज़रा था कि तसर्रुफ़ाते बातिनी ने अपना काम करना शुरूअ करदिया 588 या 589 हि० में

शहाबुद्दीन ग़ोरी ने प्रिथ्वीराज पर फ़तह पाई और क़िलए सरस्ती, हांसी, समाना, कुहराम और अजमेर इस्लामी इक़्तेदार के साए में आगए इस तरह इस्लामी दौर का आग़ाज़ हुआ अल्लाह की इबादत केलिए मसाजिद ताअमीर हुईं, इस्लामी मरासिम ने रिवाज पाए, 589 हि० में देहली पायए तख़्त बना, अंधेरे उजाले से बदल गए, फ़ारसी, भाशा और मार्वाड़ी के इख़्तिलात से एक नई ज़बान आलमे वुजूद में आई जिस का नाम बाद में उर्दू पड़ा जो आज सारी दुन्या में छाई हुई है, इस्लामी फ़ुतूहात तरक़्क़ीपज़ीर हुईं बक़ौले ,,तारीख़े तुराब,, बयाना, ग्वाल्यार, नहरवाला, गुजरात, बदायूँ, कालपी और सूबा बिहार वग़ैरहइस्लामी हुकूमत में शामिल हुए।

रूहानी ताजदारे हिन्द की हयाते ज़ाहिरी में सुल्तान शहाबुद्दीन के फ़तहयाब होने के बाद बतौरे बाजगुज़ारे सुलतानी 589 हि० तक गोविन्दराज ने अजमेर में राज किया उस के बाद उस के चचा हरिराज ने उस से अजमेर छीन लिया फिर कुतबुद्दीन एबक 602 हि० से 617 हि० तक तख़्ते देहली पर मुतमक्किन रहा कुतबुद्दीन एबक के बाद उस के बेटे आरामशाह ने चन्द माह हुकूमत की फिर शमसुद्दीन अलतमश ने सरीरे हुकूमत पर जुलूस किया उसी नेक, मुतक़्क़ी, परहेज़गार, इबादतगुज़ार और इन्साफ पसन्द बादशाह के अहद में रौनक़े जहाँ फ़ख़्रे हिन्दुस्तान हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती कुदि स सिर्रुहुल अज़ीज़ अपने महबूबे हक़ीक़ी से वासिल हुए और सरज़मीने अजमेर को अपनी आख़री आरामगाह बनने का शरफ अता फ़रमाया ,,इन्ना लिल्लल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन,,

हरगिज़ न मीरद आँकि दिलश ज़िनदा शुद बइश्क़
सब्तस्त बर जरीदए आलम दवामे मा

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के

मशाइख़े तरीक़त

कुद्दिसत अस्रारुहुम

हुज़ूर नबिय्ये अकरम सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते गिरामी मज़हरे अनवारे इलाही, आईनए अस्रारे ख़ुदावन्दी, सरचश्मए शरीअतो तरीक़त और मरकज़े रुश्दो हिदायत है उन्हीं के नूर से दीनो दुन्या की हर महफ़िल और तौहीदो रिसालत की हर बज़्म आरास्ता, पैरास्ता और नूरुन अला नूर है और सुब्हे क़ेयामत तक उस शम्ए फ़रोज़ाँ की रौशनी दिलों की दुन्या में पूरी आबो ताब के साथ जलवागर रहेगी गोया कि :

यक चराग़ेस्त दरीं ख़ाना कि अज़ परतवे आँ
हर कुजा मी निगरी अन्जुमने साख़्ता अन्द

अहमदे मुख़्तार, हबीबे परवरदिगार, नुबूव्वतो रिसालत के ताजदार, इमामे अब्रारो अख़्यार हुज़ूर नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का वुजूदे मस्ऊद ही हक़ीक़त में शजरे तरीक़तो माअरिफ़त है और दुन्या भर के तमाम औलिया, सुलहा और सूफ़िया उसी की शाख़ें हैं आप को अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने इल्मो इरफ़ान का ऐसा समन्दर बनाया जिस की नहरें सहाबियत, इमामत, कुतबियत, ग़ौसियत और विलायत की शक्ल में अहदे रिसालत से जारी होकर रहती दुन्या तक रवाँ दवाँ रहेंगी।

हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बअताए इलाही व हुक्मे ख़ुदावन्दी तरीक़तो माअरिफ़त का मुक़द्दस व मुतबर्रक ख़िर्क़ा सैय्यिदुना हज़रत अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम को इनायत फ़रमाया और इस नूरानी व

इरफ़ानी सिलसिले को वसीओ दराज़ करने केलिए दस मुक़र्रबो बरगुज़ीदा सहाबए किराम रिदवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन को शरफ़े बैअत से मुशर्रफ़ फ़रमाया जिन के अस्माए गिरामी हस्बे ज़ैल हैं।

1–हज़रत सैय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु
2–हज़रत सैय्यिदुना उमर फ़ारूक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु
3–हज़रत सैय्यिदुना उस्माने ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु
4–हज़रत सैय्यिदुना अलीये मुर्तज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु
5–हज़रत सैय्यिदुना तल्हा रदियल्लाहु तआला अन्हु
6–हज़रत सैय्यिदुना ज़ुबैर रदियल्लाहु तआला अन्हु
7–हज़रत सैय्यिदुना अबू उबैदा इब्नुल जर्राह रदियल्लाहु अन्हु
8–हज़रत सैय्यिदुना साअद इब्ने अबी वक़ास रदियल्लाहु अनहु
9–हज़रत सैय्यिदुना सईद रदियल्लाहु तआला अन्हु
10–हज़रत सैय्यिदुना अब्दुर्रहमान इब्ने औफ़ रदियल्लाहु अन्हु

यही वह मुबारक जमाअत है जिस के दसों अफ़राद को सरवरे कौनैन सुल्ताने दारैन सैय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन की ज़िन्दगी में ही जन्नत की बशारत व ख़ुशख़बरी देदी थी और दुन्या व आख़िरत की बेशुमार लाज़वाल और क़ाबिले रश्क नेअमतों से नवाज़ा था उन मुक़द्दस सहाबए किराम को „अशरए मुबश्शरा„ के मुबारक ख़िताब से याद किया जाता है। इमामे इश्क़ो महब्बत आअला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने उन दसों ख़ुश नसीब हज़रात का ज़िक्र अपने मशहूरे ज़माना सलाम „मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम„ में इस तरह किया है।

वह दसों जिन को जन्नत का मुज़्दा मिला
उस मुबारक जमाअत पे लाखों सलाम

ख़ुसूसियत के साथ तमाम मराकिज़े तरीक़त में हज़रत अलीये मुर्तज़ा और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अन्हुमा के सलासिले बैअत जुम्ला सिलसिलों में अफ़ज़लो बरतर हैं और यही सिलसिले राइजो जारी हैं। सिलसिलए नक़्शबन्दिया हज़रत सैय्यिदुना अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के पोते हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से जारी हुआ और सिलसिए चिश्तिया, क़ादिरिया और सोहरवर्दिया व दीगर सलासिल हज़रत अलीये मुर्तज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु के पोते हज़रत

सैय्यिदुना इमामे ज़ैनुल आबिदीन और आप के ख़लीफ़ए ख़ास हज़रत सैय्यिदुना हसन बस्री रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से जारी हुआ।

सुल्तानुल हिन्द अताए रसूल सैय्यिदुना सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु सिलसिलए चिश्तिया से तअल्लुक़ रखते थे आप की ज़ात से इस सिलसिले को शोहरते दवाम हासिल हुई। ज़ैल में आप के मशाइख़े तरीक़त के अस्माए मुबारक दर्ज किए जारहे हैं। :

1–हुज़ूर अकरम सैय्यिदे आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम विसाल 11 हि०
2–अमीरुल मूमिनीन हज़रत सैय्यिदुना अलीये मुर्तज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 40 हि०
3–हज़रत ख़्वाजा हसन बस्री रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 111 हि०
4–हज़रत ख़्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 177 हि०
5–हज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 187 हि०
6–हज़रत ख़्वाजा इब्राहीम इब्ने अदहम रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 261 हि०
7–हज़रत ख़्वाजा सदीदुद्दीन हुज़ैफ़ा मरअशी रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 252 हि०
8–हज़रत ख़्वाजा अमीनुद्दीन अबू हुबैरा बस्री रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 287 हि०
9–हज़रत ख़्वाजा मुमशाद उलू दीनौरी रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 299 हि०
10–हज़रत ख़्वाजा अबू इसहाक़ शामी चिश्ती रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 329 हि०
11–हज़रत ख़्वाजा अबू अहमद अबदाल चिश्ती रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 355 हि०
12–हज़रत ख़्वाजा अबू मुहम्मद बिन अहमद अबदाल चिश्ती रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 417 हि०
13–हज़रत ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू यूसुफ़ चिश्ती रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 459 हि०

14–हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन मौदूद चिश्ती रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 527 हि0

15–हज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ ज़िन्दनी चिश्ती रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल 574 हि0

16–हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी चिश्ती रदियल्लाहु तआला अनहु विसाल 607 हि0

(„लुम्आते ख़्वाजा„मुसन्नफा जनाब मुईनुद्दीन अहमद चिश्ती क़ादरी व जनाब शमसुल हक़ साहब शम्स बरेलवी बहवालए „यासीन„ डाइजेस्ट„ कानपुर सुल्तानुल हिन्द नम्बर)
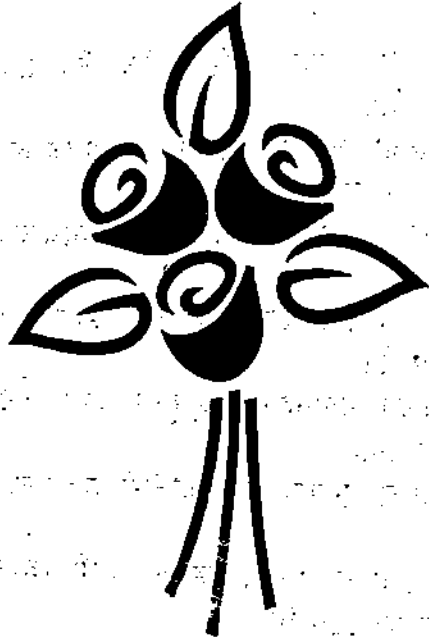
मरकज़े विलायते कुल आफ़ताबे रिसालत

सैय्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

रसूलों में रसूल ऐसे कि फख्रे अंबिया ठहरे
हसीनों में हसी ऐसे कि महबूबे ख़ुदा ठहरे

हुज़ूर पुरनूर, शाफेअे यौमुन्नुशूर, मालिके कुल, हादिये सुबुल, ख़त्मुर्रुसुल, फख्रे उमम, ताजदारे अरबो अजम, आफताबे रिसालत, माहताबे नुबूव्वत, सरवरे काइनात, फख्रे मौजूदात, सैय्यिदुल असिफया, इमामुल औलिया, शहंशाहे ख़ातमीयत, मज़हरे शाने अहदियत, बाइसे ईजादे ख़ल्क, मुहसिने आअज़म, सरापा रहमतो राफत स।य्यिदुना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम 12 रबीउल अव्वल शरीफ आमुलफील में दोशंबए मुबारका के दिन जल्वा अफ्रोज़े आलम हुए। उस सिराजे मुनीर पर हम दिलो जान से कुर्बान कि जिस की ज़ौफशानियों ने हमारे कुलूब को रौशनो मुनव्वर कर दिया जिस के नूर से हमारी रूह मुसफ्फा व मुजल्ला हो गई और जिस के करमो रहमत से हमारे लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए गए। वाज़ेह हो कि बलिहाज़े विलादत वुजूदे मुहम्मदी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के तीन मरातिब हैं।

अव्वल :–नियाज़, इस मरतबे में वुजूदे मुहम्मद वुजूदे बशर है।

दोम :– नाज़, मरतबए नाज़ में वुजूदे मुहम्मद ख़ातमुन्नबिय्यीन व रहमतुल्लिल आलमीन है।

सोम :– राज़, मरतबए राज़ में वुजूदे मुहम्मद ज़िल्लुल्लाह व मज़हरुल्लल्लाह है।

मशाइख़े किराम ने बयान किया है कि अल्लाह तआला ने ज़ाते पाके मुसतफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ उस वक़्त तवज्जुह फरमाई जब न ज़मीं था न ज़मीं, न मकाँ था न मकीं अगर किसी चीज़ का वुजूद था तो वह सिर्फ हस्तिये मुतलक़ याअनी ज़ाते लानिहायते बारी तआला, और उस के सिवा कुछ भी न था। जब उस वाजिबुल वुजूद हस्ती ने अपनी रुबूबियतो उलूहियत को आशकारा करना चाहा तो नूरे मुहम्मदी की तख़लीक़

फ़रमाई फिर सानेअे हक़ीक़ी ने अपनी सन्अते कामिला की खुद ताअरीफ फरमाई और उस नूरुन अला नूर को „मुहम्मद„ (बहुत ताअरीफ किया हुआ/हर तरह से क़ाबिले ताअरीफ) के इस्मे मुबारक से सरफराज़ फरमाया। ज़ाहिरन आलम से कहा *„अना बश रुम्मिस्लुकुम„* और बातिन में उस की रज़ाए कामिल का आइनादार था कि उस के बारे में *„वमा यन्तिकु अनिल हवा इन हुवा इल्ला वहयुँय्यूहा„* याअनी वह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते मगर वहय के मुताबिक़ जो इन्हें की जाती है। इन्हीं के लिए फरमाया *„माज़ागल बसरु वमा तग़ा„* न आँख झप्की न इधर उधर हुई फिर उन्हें *„क़ा ब क़ौसैनि औ अदना„* के तख़्त पर बिठाया और अपने कुर्बे ख़ास और दीदार से नवाज़ा। हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से उस नूर की तशरीह कराई *„अव्वलु मा ख़लक़ल्लाहु नूरी व कुल्लुल ख़लाइक़ि मिन नूरी व अना मिन नूरिल्लाह„* याअनी सब से पहले अल्लाह तआला ने मेरा नूर पैदा फरमाया और तमाम मख़्लूक़ को मेरे नूर से बनाया और मैं खुदा के नूर से हूँ। अल्लाह तआला ने उन्हीं की शान में फरमाया *„लौला क लमा ख़लक़्तुल अफ्लाक„* याअनी ऐ महबूब! अगर मैं तुझको न पैदा करता तो आस्मानों को न पैदा करता।

माअलूम हुआ कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ात जामेअे कमालात, बाइसे तख़्लीक़े काइनात और मौजूदाते आलम में बादे खुदा सब से अफ्ज़लो बरतर है आप इरशाद फरमाते हैं *„मर्रआनी फक़द रअलहक़„* याअनी जिस ने मुझको देखा उस ने हक़ को देखा। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की महबूबियत की रौशन दलील है कि अल्लाह तआला ने कहीं लिबास के लेहाज़ से ख़िताब फरमाया और फरमाया *„या ऐय्युहल मुज़्ज़म्मिलु„* और कहीं आअदाद में मुख़ातब किया है फरमाया „ताहा„ (याअनी „बद्र„ चौदहवीं का चाँद) इरशादे बारी महब्बते रसूल पर हुज्जते क़ातेआ है *„इन कुन्तुम तुहिब्बूनल्ला ह फत्तबिऊनी युहबिबकुमुल्लाह व यग्फिर लकुम जुनूबकुम वल्लाहु ग़फूरुर्रहीम„* (ऐ महबूब! तुम फरमाओ कि अगर अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरे फरमाँ बरदार बन जाओ अल्लाह तआला तुम को महबूब बना लेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह तआला बहुत ज़ियादा बख़्शने वाला निहायत रहम फरमाने वाला है।

आप के दीन को कामिल करके आप पर अपनी नेअमतें तमाम कर दीं और इस्लाम को पसन्दीदा दीन फरमाकर यह रूहपरवर मुज़दा सुनाया *„व लसौ फ युअ्ती क रब्बु क फतरदा„* और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुमको इतना अता फरमाएगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।

इश्क़े मुहम्मदी केलिए उस्वए मुहम्मदी को सामने रखना लाज़मी है इस लिए कि इत्तेबाओ इश्क़े रसूल के बग़ैर दिलों में इश्क़े इलाही पैदा हो ही नहीं सकता इरशादे खुदावन्दी है „मंय्युतिइर्रसू ल फक़द अताअल्लाह„ याअनी जिस ने रसूल का हुक्म माना उस ने खुदा का हुक्म माना। ऐसे बेमिसाल पैकरे महासिनो कमालात महबूब की ताअरीफ और मदहो सना करना इन्सान की बिसात से बाहर है बस यह कहकर ख़ामोश होजाना ज़ियादा मुनासिब है कि :

„बाद अज़ खुदा बुज़ुर्ग तुई क़िस्सा मुख़्तसर„

और बक़ौले इमामे इश्क़ो वफ़ा आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह :

कह लेगी सब कुछ उन के सनाख़्वाँ की ख़ामुशी
चुप होरहा हूँ कह के मैं क्या क्या कहूँ तुझे
आख़िर रज़ाने ख़तमे सुख़न इस पे करदिया
ख़ालिक़ का बन्दा ख़ल्क़ का आक़ा कहूँ तुझे

आप का विसाले पाक 12 रबीउल अव्वल शरीफ 11 हि0 बरोज़ दोशंबए मुबारका। मदीनए मुनव्वरा में आप का रौज़ए मुबारका „गुंबदे ख़ज़्रा„ के नाम से मशहूरो माअरूफ है जो सारी खुदाई पर आप की हुकूमतो सल्तनत की मुक़द्दस राजधानी है और हर मख़्लूक़ आप की बारगाह में हाज़िर होकर सलामे अक़ीदतो महब्बत पेश करने को ज़िन्दगी की सब सें बड़ी मेअराज समझते हैं।

मख़्ज़ने विलायत हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू

ख़लीफए चहारम, जानशीने रहमतुल्लिल आलमीन, शेरे खुदा,अमीरुल मूमिनीन हज़रत सैय्यिदुना अलीये मुर्तज़ा मुश्किल कुशा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम रदियल्लाहु तआला अन्हु तमाम सहाबा में मुमताज़ और नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के चचाज़ाद भाई और चहीते दामाद थे। आप की

वालिदए माजिदा ने आप का नाम „असद„ रखा और वालिद अबूतालिब ने „हैदर„ तज्वीज़ किया। आप का निकाह सैय्यिदा ख़ातूने जन्नत हज़रत फातिमतुज़्ज़हरा शहज़ादिये रसूले पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से हुआ जिन के साहबज़ादे हज़रत इमामे हसन और हज़रत इमामे हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हुमा हैं जिन की अज़ीम क़ुर्बानी, उलुल अज़्मी, बलन्द हिम्मती और जज़्बए ईमानी से मुसल्मानों का हरएक तब्क़ा वाक़िफो बाख़बर है।

हज़रत सैय्यिदुना अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने 12 रजब 20 आमुल फील में इस ख़ाकदाने गेती पर क़दम रखा आप की विलादत ख़ानए काअबा में हुई इसी लिए आप को मौलूदे काअबा भी कहा जाता है। हुज़ूर नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आप केलिए इरशाद फरमाया „अना मदीनतुल इल्मि व अलिय्युम बाबुहा„ मैं इल्म का शहर हूँ और अली उस का दरवाज़ा हैं। शबे मेअराज में ख़िर्क़ए फक़्र जो सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को रब्बुल इज़्ज़त से अता हुआ था वह आप ने हज़रत अलीये मुर्तज़ा को मरहमत फरमाया उस रूहानी तअल्लुक़ से क़ेयामत तक जितने ख़िर्क़ा पोश औलियाअल्लाह होंगे आप ही के वसीले से उन को ख़िर्क़ा इनायत होगा आप शहंशाहे किश्वरे विलायत हैं आप 22 ज़िल्हिज्जा 35 हि० को मस्नद आराए ख़िलाफत हुए। शक़ीये अज़ली अब्दुर्रहमान इब्ने मुल्जिम अलमुरादी ख़ारिजी ने ऐन हालते नमाज़ में आप पर क़ातिलाना हमला किया जिस के नतीजे में आप 21 रमज़ानुल मुबारक 40 हि० में शहीद हुए। शहादत के वक़्त आप की उम्र शरीफ 63 साल की थी। आप से 585 हदीसें रिवायत की गई हैं आप का मज़ारे मुबारक नजफे अशरफ (इराक़) में मरजए ख़लाइक़ है।

हज़रत ख़्वाजा हसन बस्री रदियल्लाहु अन्हु

अमीरुल मूमिनीन हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम के मुरीदो ख़लीफा और हज़रत शैख़ अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रदियल्लाहु तआला अन्हु के पीरो मुर्शिद हज़रत सैय्यिदुना ख़्वाजा

हसन बस्री रदियल्लाहु तआला अन्हु 21 हि० में मदीनए मुनव्वरा में पैदा हुए विलादत के बाद आप को हज़रत सैय्यिदुना उमर फारूक़े आअज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में पेश किया गया आप ने दुआओं से नवाज़ा और हुस्नो जमाल और ख़ूबसूरती की बिना पर आप का नाम हसन रखा आप की वालिदए माजिदा उम्मुल मूमिनीन हज़रत उम्मे सल्मा रदियल्लाहु तआला अन्हा की आज़ाद करदा लौंडी थीं। एक रोज़ आप रोरहे थे और आप की वालिदा किसी काम में मस्रूफ थीं कि हज़रत उम्मे सल्मा रदियल्लाहु तआला अन्हा ने आप के मुंह में दूध देदिया मुम्किन है कि कुछ क़तरात आपके दहने मुबारक से शिकम में चले गए हों और इन्हीं की यह बरकत हो कि अल्लाह तआला ने आप को उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी में कामिल बना दिया।

आप ने 133 सहाबए किराम रिदवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन की ज़ियारत का शरफ हासिल किया और ताबेई होने का मरतबा पाया। उन सहाबा में अकसर अहले बैत में से थे हज़रत इमामे हसन, हज़रत इमामे हुसैन और हज़रत ख़्वाजा कुमैल बिन ज़ियाद रदियल्लाहु तआला अन्हुम के फैज़ाने सुहबत से मुस्तफीज़ हुए आप अमीरुल मूमिनीन हज़रत अलीये मुर्तज़ा के मुरीद थे और उन्हीं से ख़िर्क़ए ख़िलाफत अता हुआ था।

हज़रत सैय्यिदुना हसन बस्री ने नव्वे साल की तवील उम्र पाई यकुम रजब या 4 मुहर्रमुल हराम 111 हि० में हिशाम इब्ने अब्दुल मलिक के अहदे ख़िलाफत में वफात पाई। आप के मशहूर ख़ुलफा यह हैं। :

1:—हज़रत शैख़ अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद
2:—हज़रत शैख़ बिन रज़ीन
3:—हज़रत शैख़ हबीब अजमी
4:—हज़रत शैख़ उत्बा इब्नुल अल्लाम
5:—हज़रत शैख़ मुहंम्मद वासेअ रदियल्लाहु तआल अन्हुम

हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु के वाक़ेअए शहादत के बाद आप बस्रा तशरीफ लेगए थे और वहीं आप का विसाल हुआ। बस्रा से तीन मील की दूरी पर आप का मज़ारे मुबारक ज़ियारतगाहे ख़लाइक़ और फैज़ बख़्शे ख़ासो आंम है।

हज़रत ख़्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रदियल्लाहु तआला अन्हु

हज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ के शैख़े तरीक़त हज़रत ख़्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रदियल्लाहु तआला अन्हुमा सिलसिलए चिश्तिया के मशाइख़े तरीक़त में एक ख़ास दर्जा रखते हैं। कुतुबे तसव्वुफ़ में आप के मुजाहदातो रियाज़ात और सैरो सियाहत के हालात कसरत से पाए जाते हैं साहिबे „मिर्आतुल अस्रार„ तहरीर फ़रमाते हैं।

„दर रियाज़तो मुजाहदातो तर्को तजरीद व ज़ौको इश्क़ दर अहदे खुद नज़ीरे न दाश्त„

याअनी रियाज़तो मुजाहदा, तर्को तजरीद और ज़ौक़े माअरिफ़तो इश्क़े इलाही में अपने ज़माने में अपनी मिसाल नहीं रखते थे। आप बस्रा में इक़ामत पज़ीर थे चालीस साल के मुजाहदे के बाद आप ने हज़रत ख़्वाजा हसन बस्री के हाथ पर बैअत की।

इमाम अब्दुल्लाह ने „तारीख़े याहक्क़ी„ में लिखा है कि चालीस साल तक आप ने इशा के वुज़ू से फज्र की नमाज़ पढ़ी है। कहा जाता है कि आप ने उलूमे ज़ाहिरो बातिन हज़रत सैय्यिदुना इमाम हसन रदियल्लाहु तआला अन्हु से भी हासिल किया था। हज़रत ख़्वाजा हसन बस्री ने आप को ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त अता किया था। 27 सफ़रुल मुजफ्फर 177 हि0 में आप का विसाल हुआ और बस्रा में ही मदफ़ून हुए।

हज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ कुद्दि स सिर्रुहू

हज़रत ख़्वाजा इब्राहीम इब्ने अदहम बलख़ी कुद्दि स सिर्रुहू के पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ की विलादत समरक़न्द में हुई और ख़ुरासान में ताअलीमो तरबियत पाई आप इल्मे तफ़्सीरो हदीस के इमाम तस्लीम किए गए थे।

फ़िक़्ह में सैय्यिदुना इमामे आअज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु से फ़ैज़े सुहबत हासिल किया और हज़रत ख़्वाजा अब्दुल वाहिद

बिन ज़ैद रदियल्लाहु तआला अन्हु से ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त पाया। हज़रत शैख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार रहमतुल्लाहि अलैह आप से मुतअल्लिक़ फ़रमाते हैं। :

„वै अज़ किबारे मशाइख़ बूद व अयारे तरीक़त व ग़रीक़े बहरे हक़ीक़त व मरजए क़ौम दर रियाज़तो करामात शाने रफ़ीअ दाश्त व दर वर्अ माअरिफ़त बेहमता बूद„

हज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ बड़े दर्जे के मशाइख़ में से थे और मुअयारे तरीक़तो हक़ीक़त के दरया में डूबे हुए और लोगों का मरजओ मरकज़ थे रियाज़तो बुज़ुर्गी में बलन्द मरतबे पर फ़ाइज़ थे और माअरिफ़तो परहेज़गारी में बेमिस्ल थे।

आप मोटा लिबास और सर पर सूफ़ की कुलाह पहना करते थे और अकसर हाथ में तसबीह लिए रहते थे। कहा जाता है कि अवाइले उम्र में आप डाकुओं के सरदार थे एक रात को कोई क़ाफ़ला आप के क़रीब से गुज़रा उस में एक शख़्स यह आयत पढ़ रहा था „*अलम यअनि लिल्लज़ी न आमनू अन तख़ श अ कुलूबुहुम लिज़िक्रिल्लाहि वमा न ज़ ल मिनल हक़्क़ि*„ याअनी क्या ईमान वालों केलिए अभी वह वक़्त नही आया कि उन के दिल ज़िक्रे इलाही और उस के अहकाम की जानिब माइल हों।

यह सुन कर आप सर से पैर तक काँप उठे और रहज़नी से ताइब होगए और राहे इरफ़ान पर चलकर विलायत के आअला मन्सब पर फ़ाइज़ हुए।

एक रिवायत के मुताबिक़ आप की निस्बत यह वाक़ेआ मशहूर है कि जवानी के ऐय्याम में आप ने मुज़द के अतराफ़ में वाक़ेअ एक जंगल में ख़ेमा नस्ब कर रखा था जिस में आप मस्रूफ़े इबादत रहा करते थे जिस्म पर एक कंबल और सर पर एक रेशमी टोपी आप का लिबास था चोर और रहज़न आप के अहबाब और हमनशीं थे वह लोग जो कुछ मालो अस्बाब चुराकर या लूटकर लाते थे आप के सामने रख देते और आप उस को तक़सीम कर देते थे यह चोर और डाकू भी आप के साथ नमाज़ें पढ़ा करते थे। एक मरतबा एक क़ाफ़ला वहाँ पहुँचा क़ाफ़ले वालों को यह माअलूम हुआ कि इस अलाक़े में चोर और डाकू डेरा डाले रहते हैं क़ाफ़ले के सरदार ने अपने साथियों से कहा कि अपना

तमाम नक़्द माल कहीं ज़मीन में दफ़्न करदो जब चोर और डाकू कहीं चले जाएंगे तो हम अपना माल निकाल लेंगे यह इरादा करके सब ने अपनी नक़्दी एक जगह इकट्ठा की और सरदार उसे लेकर दफ़्न करने के इरादे से एक तरफ़ चल दिया अचानक उस की नज़र एक ख़ेमे पर पड़ी सरदार बेतकल्लुफ़ उस ख़ेमे में दाख़िल होगया, वहाँ एक कंबलपोश बुज़ुर्ग को देख कर दिल में उस ने सोचा कि „ख़ुश क़िसमती से यह बुज़ुर्ग हमें मिल गए हैं तो बेहतर यही है कि अपना माल इन के पास अमानत रख दिया जाए„ चुनाँचे उस ने बुज़ुर्ग से अर्ज़ किया कि „हज़रत! यह ज़रे नक़्द अमानत रख लीजिए„।

आप ने फ़रमाया „एक जानिब रख दो„

सरदार ज़रे नक़्द रख कर चला आया थोड़ी देर के बाद चोरों और डाकुओं ने क़ाफ़ले पर धावा बोल दिया और बक़िया सारा सामान लूटकर लेगए।

उन के जाने के बाद क़ाफ़ले का सरदार ख़ेमे में अपनी अमानत लेने गया। ख़ेमे के अन्दर दाख़िल होते ही उस की आँखें हैरत से खुली की खुली रह गईं देखा कि क़ाफ़ले को लूटने वाले तमाम डाकू वहाँ मौजूद थे और कंबलपोश बुज़ुर्ग लूटा हुआ माल उन में तक़सीम कर रहे थे।

सरदार ने यह देख कर दिल ही दिल में ख़याल किया कि „अफ़सोस मैं ने अपना माल अपने ही हाथों चोरों को दे दिया।„

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ की नज़र जब सरदार पर पड़ी तो आप ने फ़रमाया कि „परीशान न हो जो अमानत तुम ने रखी है वह अपनी जगह महफ़ूज़ है उस में दस्त अन्दाज़ी नहीं होगी तुम अपनी चीज़ ले जाओ।„

सरदार ख़ुश ख़ुश अपना माल ले आया।

चोरों ने आप से अर्ज़ किया „इस क़ाफ़ले में से हम को ज़रे नक़्द कुछ नहीं मिला, आप ने उस ज़रे नक़्द को क्यूँ वापस करदिया।?„

आप ने फ़रमाया „उस शख़्स ने मुझ पर नेक गुमान किया है मैं भी अल्लाह तआला पर नेक गुमान करता हूँ ताकि ख़ुदावन्दे तआला अपने करम से मेरे गुमान को भी दुरुस्त करदे।„ आप के

यह कलेमात सुनकर तमाम चोर और डाकू ताइब होगए।

साहिबे „सफ़ीनतुल औलिया„ का बयान है कि „एक रोज़ आप अपने लड़के को प्यार कर रहे थे कि लड़के ने आप से कहा। „अब्बाजान! आप मुझको भी दोस्त रखते हैं और ख़ुदा को भी। यह क्यूँकर मुम्किन है एक दिल में दो दोस्त जमा नहीं होसकते।„

आप ने उस लड़के के क़ौल को ताईदे ग़ैबी ख़याल किया और ख़ुदा की महब्बत में सब कुछ छोड़कर घर से निकल गए और हज़रत ख़्वाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद के मुरीद होकर मुजाहदातो रियाज़ात में मशग़ूल होगए यहाँतक कि तमाम बातिनी कमालात हासिल करलिए और पीरो मुर्शिद से ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त भी पाया।

अब्बासी ख़लीफ़ा हारून रशीद एक मरतबा आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ आप ने उन को निहायत अहम और बेश क़ीमत नसीहतें फ़रमाईं ख़लीफ़ा आप के इरशादात सुनकर बहुत मुतअस्सिर और ख़ुश हुआ जाते जाते ख़लीफ़ा ने अर्ज़ किया „आप पर किसी का कुछ क़र्ज़ है।„

आप ने फ़रमाया „ख़ुदावन्दे तआला का क़र्ज़दार हूँ अदाइगी में मशग़ूल हूँ अल्लाह तआला इस पर मुझे साबित क़दम रखे।„

हारून रशीद ने हज़ार दीनार की थैली नज़्र करनी चाही। आप ने फ़रमाया „सुलतान! मैं ने तुम को इस क़दर नसीहतें कीं लेकिन कोई फ़ाइदा नहीं हुआ मैं तुम को नजात का रास्ता बताता हूँ और तुम मुझको बला में डालना चाहते हो।„

हारून रशीद यह सुनकर बहुत रोया और अपने वुज़रा से मुख़ातब होकर कहने लगा „ फ़ुज़ैल बिन अयाज़ फ़रिश्ता हैं।„

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रदियल्लाहु तआला अन्हु से आप का यह इरशद मन्क़ूल है कि „जिस ने रियासत की वह ख़्वार हुआ„

हज़रत बिशिर हाफ़ी ने आप से पूछा था कि „ज़ुहद बेहतर है या रज़ा„ तो आप ने फ़रमाया था „रज़ा„ और यह इस लिए बेहतर है कि राज़ी शख़्स मौजूदा हालत में ख़ुश रहता है और किसी चीज़ की ख़्वाहिश नहीं करता।„

हज़रत बू अली राज़ी फ़रमाते हैं कि „मैं ने ख़्वाजा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ को उन के फ़रज़न्द की वफ़ात पर मुस्कुराते हुए देखा

तो मुस्कुराने का सबब दरयाफ्त किया । आप ने फरमाया „जिस काम को ख़ुदा ने पसन्द किया मैं भी उस से खुश हूँ।„

बयान किया जाता है कि आप मक्कए मुअज़्ज़मा में तशरीफ़ फरमा थे कि किसी क़ारिये क़ुरआन ने आप के सामने „सूरतुल क़ारिअह„ पढ़ी। आप ने सुनकर एक नाअरा मारा और जान मुशाहदए हक़ में हक़ के सुपुर्द करदी। माहे मुहर्रमुल हराम 187 हि० में आप का विसाल हुआ जन्नतुल मुअल्ला में उम्मुल मूमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रदियल्लाहु तआला अन्हा के रौज़ए मुबारका से मुत्तसिल मदफून हैं। एक रिवायत के मुताबिक़ आप का विसाल 3 रबीउल अव्वल शरीफ 197 हि० में हुआ।

हज़रत ख़्वाजा इब्राहीम बिन अदहम बलख़ी कुद्दि स सिर्रुहू

सुल्तानुत्तारिकीन इमामुल आरिफीन हज़रत ख़्वाजा इब्राहीम इब्ने अदहम बलख़ी कुद्दि स सिर्रुहू शाहाने बलख़ में से थे शाही ख़ानदान में पैदा हुए बेहतरीन ताअलीमो तरबियत हासिल की और अपने आबाई तख़्ते सल्तनत पर मुतमक्किन हुए आप की कुन्नियत अबू इसहाक़ थी।

सैय्यिदुत्ताइफा हज़रत जुनैद बग़दादी कुद्दि स सिर्रुहू आप के बारे में फरमाते हैं „मफातीहुल उलूम इब्राहीम इब्ने अदहम„

मन्क़ूल है कि आप बलख़ो बुख़ारा के बादशाह थे एक मरतबा आप जंगल में बग़र्ज़े शिकार गए हुए थे कि अचानक हातिफे ग़ैबी ने निदा दी „ऐ इब्राहीम! तुम को इस काम केलिए नहीं पैदा किया गया।„

यह आवाज़ सुनकर आप के दिल पर ख़ौफे ख़ुदा तारी होगया और बादशाहत से मुतनफ्फिर और बेज़ार होकर तख़्ते सल्तनत को ठोकर मार दी और राहे ख़ुदा पर चल पड़े।

तर्के सलनत का दूसरा वाक़ेआइस तरह भी बयान किया जाता है कि एक रात आप अपने शाही महल में एक क़ीमती तख़्त पर आराम कर रहे थे कि अचानक निस्फ शब में छत पर किसी के चलने की आहट सुनाई दी आप ने आवाज़ दी „कौन है।?„

जवाब मिला कि आप का वाक़िफकार हूँ मेरा ऊँट गुम होगया है उसे तलाश कर रहा हूँ।„

आप ने इज़्हारे हैरत करते हुए फरमाया „अरे नादान छत पर ऊँट कैसे आसकता है।?„

उस शख़्स ने कहा कि ऐ ग़ाफिल! तुम तख़्ते ज़र्री पर आराम कर रहे हो और ख़ुदा की तलब रखते हो ख़ुदा यहाँ पर कैसे मिलेगा।?„

आप पर इस जवाब का गहरा असर हुआ और तख़्तो ताज को ख़ैरबाद कहकर फक़्रो दुर्वेशी की राह इख़्तियार करली। बयान किया जाता है कि आप ने इमामे आअज़म अबू हनीफा रहमतुल्लाहि तआला अलैह से इल्मे दीन पढ़ा था और इमामे ममदूह आप को सैय्यिदुना इब्राहीम कहकर पुकारते थे।

तर्के सलतनत के बाद आप ने सयाहत शुरूअ की और बुज़ुर्गाने दीन की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुजाहदात किए बिलआख़िर हज़रत ख़्वाजा अबुल फज़्ल फुज़ैल बिन अयाज़ की ख़िदमत में पहुँचे और आप के हलक़ए इरादत में दाख़िल होगए काफी अर्से तक पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में रहे और बातिनी कमालात हासिल करके आप ने अपने पीरो मुर्शिद से ख़िर्क़ए ख़िलाफत भी पाया।

मन्क़ूल है कि सैयाही के ज़माने में हज़राते ख़िज़्रो इल्यास अलैहिमस्सलाम आप के साथ रहा करते थे। आप ने हज़रत सुफ्यान सौरी और इमाम अबू यूसुफ की सुहबतें भी पाई हैं हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर रदियल्लाहु तआला अन्हु ने भी आप को ख़िर्क़ए ख़िलाफत अता फरमाया था।

हज़रत इमामे आअज़म रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने एक मौक़े पर फरमाया कि „इब्राहीम इब्ने अदहम हर वक़्त मशग़ूल बख़ुदा हैं और मैं दीगर कामों में भी मशग़ूल रहता हूँ।„

हज़रत शैख़ अबू सईद अबुल ख़ैर फरमाते हैं कि „इब्राहीम इब्ने अदहम ने नीशापुर के एक ग़ार में नौ साल मुजाहदा किया उस दौरान जुमेरात के दिन आप ग़ार से बाहर आते, जंगल से सूखी लक्ड़ियाँ जमा करते और जुमे के दिन शहर में जाकर लक्ड़ियाँ फरोख़्त करदेते उस से जो पैसे आप को मिलते उन में से आधे फुक़रा व मसाकीन पर तक़सीम फरमादेते और जुमे की नमाज़ अदा करके बक़िया पैसों से ज़रूरियात की चीज़ें ख़रीद कर ग़ार में वापस चले जाते। नौ साल गुज़रजाने के बाद जब लोगों ने आप को परीशान किया तो आप ने वह जगह छोड़ दी और

मदीनए मुनव्वरा तशरीफ लेगए। शैख़ अबुलख़ैर का बयान है कि मैं ने उस ग़ार को देखा है अबतक उस में से खुशबू आती है।

हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम की बहुत सी करामतें मशहूर हैं तवालत के अन्देशे से उन सब का ज़िक्र यहाँ मुनासिब नहीं इख़्तिसार के साथ सिर्फ़ एक करामत बयान की जाती है।

मन्कूल है कि एक मरतबा आप किसी बुजुर्ग के साथ पहाड़ पर तशरीफ रखते थे कि उस बुजुर्ग ने आप से पूछा „मर्द के कमाल की अलामत क्या है।?„

आप ने फरमाया „कामिल अगर पहाड़ से चलने को कहे तो चलने लगे।„ उस के बाद आप ने पहाड़ को इशारा किया और वह चलने लगा।

बाज़ अहले सियर का ख़याल है कि आप एक सौ बीस साल की उम्र में ग़ाइब होगए थे और फिर आप की कोई ख़बर न मिली।

„औरादे चिश्तिया„ में लिखा है कि आप ने 5 जुमादल ऊला 261 हि0 में वफात पाई और हज़रत इमाम अहमद-बिन हंबल के पहलू में मदफून हैं। साहिबे „सफ़ीनतुल औलिया„ का बयान है कि आप की वफात 26 जुमादल ऊला को हुई और आप का मज़ार शाम के किसी पहाड़ में है।

हज़रत ख़्वाजा सदीदुद्दीन हुज़ैफा अलमरअशी

कुद्दि स सिर्रुहू

आप मक़ामे मरअश वाक़ेअ दमिश्क़ में पैदा हुए सात साल की उम्र में कुरआने पाक का हिफ्ज़ मुकम्मल करलिया था और सोलह साल में उलूमे ज़ाहिरी से फराग़त पाकर बातिनी उलूम की तहसीलो तकमील केलिए हज़रत सैय्यिदुना इब्राहीम इब्ने अदहम कुद्दि स सिर्रुहू की ख़िदमत में हाज़िर होकर शरफे बैअत से मुशर्रफ हुए आप निहायत क़नाअत पसन्द थे किसी चीज़ के तमअ से इजतेनाब फरमाते और बग़ैर तलब जो कुछ मयस्सर आजाता बस उसी पर इक्तिफा फरमाते और उस में से भी दूसरे हाजत मन्दों को अता फरमा दिया करते, दुन्या दारों से मेल जोल और महब्बत का बरताव नहीं रखते थे।

मन्कूल है कि जब आप ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला

अलैहि वसल्लम के रौज़ए मुबारक पर हाज़री दी तो हुजूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बेपनाह करम फरमाते हुए आप को अपने दीदारे पुरअनवार से मुशर्रफ फरमाया।

रिवायत है कि मुरीद होने के बाद हज़रत हुज़ैफा मरअशी अपने पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में सिर्फ छः महीने रहे और इसी क़लील मुद्दत में मुर्शिद के फैज़ाने नज़र के तवस्सुत से तमाम बातिनी कमालात हासिल करलिए। उस के बाद हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम ने आप को ख़िलाफत से नवाज़ा और आप के हक़ में दुआ की चुनाँचे बवक़्ते रुख़्सत इरशाद फरमाया „हुज़ैफा! बुजुर्गाने दीन में तुम्हारा मरतबा बलन्द होगा।„

पीरो मुर्शिद से रुख़्सत होकर आप ने सैरो सियाहत शुरू की मक्कए मुअज़्ज़मा हाज़िर होकर हज अदा किया फिर रौज़ए रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर हाज़िर हुए। आप को इबादत से इस क़दर ज़ौक़ो शौक़ था कि रोज़ाना रात को एक ख़त्म कुरआन किया करते थे। आप तन्हाई पसन्द थे, टाट का लिबास पहनते और ख़ौफे इलाही से अकसर रोया करते थे रो रो कर फरमाया करते कि जन्नतियों और जहन्नमियों के फरीक़ों में से हमारा शुमार किस फरीक़ में होगा।? एक शख़्स ने इस पर एअतेराज़ किया कि „शैख़! जब तुमको अपने ही हाल की ख़बर नहीं तो दूसरों को साहिबे हाल क्यूँकर बना सकते हो।?„ इस जुमले से आप इस क़दर मुतअस्सिर हुए कि बेइख़्तियार आप की ज़बान से चीख़ निकल गई उसी हाल में यह ग़ैबी आवाज़ सुनी „ऐ खुदा के दोस्त! ख़ौफ न कर क़ेयामत के दिन तू हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ बहिश्त में दाख़िल होगा।„ इस ग़ैबी निदा से तमाम हाज़िरीन बहुत मुतअस्सिर हुए और पूरे शहर में इस का चर्चा आम होगया जिस के नतीजे में उसी रोज़ छः सौ काफिरों ने आप के हाथ पर इस्लाम कुबूल करलिया। 24 शव्वाल 252 हि0 में आप का विसाल हुआ बस्रा में आप की आख़री आरामगाह है।

हज़रत ख़्वाजा अमीनुद्दीन अबू हुबैरा बस्री

कुद्दि स सिर्रुहू

हज़रत ख़्वाजा मुमशाद उलू दीनौरी के पीरो मुर्शिद हज़रत

ख़्वाजा अमीनुद्दीन अबू हुबैरा बस्री कुद्दि स सिर्रुहुमा बस्रा में पैदा हुए औलियाए किराम और उलमाए इज़ाम दोनों तब्क़ों में आप साहिबे इक़्तिदार तस्लीम किए जाते थे उलूमे ज़ाहिरी की तक्मील के बाद मुसलसल तीस बरस इबादतो रियाज़त में मशग़ूल रहे। उस के बाद आप हज़रत ख़्वाजा सदीदुद्दीन हुज़ैफ़ा मरअशी कुद्दि स सिर्रुहू की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन के दस्ते हक़परस्त पर दाख़िले सिलसिला हुए पीरो मुर्शिद ने इरशाद फ़रमाया „अबू हुबैरा! जो मुजाहदा बिला वास्ता और अपनी ख़्वाहिश से हुआ है वह फ़ाइदा मन्द नहीं।„

यह इरशादे गिरामी सुनकर आप ने फिर मुकम्मल तीस बरस मुजाहदा किया उस के बाद जब अपने मुर्शिद के पास आए तो पीरो मुर्शिद ने बातिनी तवज्जुह से काम लिया और सिर्फ़ एक हफ़्ते में सुलूक की तमाम मन्ज़िलें तय करा दीं और क़रीब एक साल गुज़रने पर आप को ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया।

आप का और आप के मुरीदों का माअमूल यह था कि शबोरोज़ बावुज़ू रहते, हुज़ूरिए क़ल्ब से नमाज़ें अदा करते, अल्लाह तआला के ज़िक्र के अलावा किसी और का ज़िक्र अपनी मज्लिसों में न करते तीन चार रोज़ का रोज़ा रखते और जंगली फलों से इफ़्तार करते, आम मख़लूक़ से ज़ियादा मेल जोल भी आप को पसन्द न था उमरा व मुलूक की सुहबत को सालिक केलिए ज़हरे क़ातिल समझते थे।

आप का विसाल 17 या 18 शव्वाल 279 हि0 को बस्रा में हुआ आप ने एक सौ तीस साल की तवील उम्र पाई और बस्रा में मदफ़ून हुए।

हज़रत ख़्वाजा मुमशाद अलू दीनौरी कुद्दि स सिर्रुहू

मुक़्तदाए तरीक़त हज़रत ख़्वाजा मुमशाद अलू दीनौरी कुद्दि स सिर्रुहू बग़दाद और हमदान के दरमियान वाक़ेअ एक शहर दीनौर मे पैदा हुए बग़दाद में नश्वो नुमा पाई आप मुक़्तदर और अज़ीमुल मरतबत औलियाए किराम में से थे। साहिबे „मिर्आतुल अस्रार„बयान फ़रमाते हैं कि „दर मुजाहदातो रियाज़ात महल्ले रफ़ीअ दाश्त व दर मुशाहदए मक़ामाते आली बेनज़ीरे वक़्त बूद„

याअनी मुजाहदातो रियाज़ात में बलन्द मरतबा रखते थे और मक़ामाते आली के मुशाहदे में अपने वक़्त में बेमिसाल थे।

आप मादरज़ाद आरिफ़ बिल्लाह और इश्क़ो महब्बत के दिलदादा थे आप बग़दाद शरीफ़ में आम तौर पर „करीमुद्दीन मुन्अम„ के नाम से मशहूर थे क्यूँकि आप दौलतमन्द थे और हाजत मन्दों की हाजतें पूरी फ़रमाया करते थे जब आप पर इश्क़े इलाही का ग़लबा हुआ तो सारा मालो ज़र ख़ुदा की राह में ख़र्च करके तलाशे हक़ में निकल पड़े और ताजुल आरिफ़ीन हज़रत ख़्वाजा अमीनुद्दीन अबू हुबैरा बस्री से मुरीद हुए और ख़िरक़ए ख़िलाफ़त हासिल किया। आप अपनी ख़ानक़ाह का दरवाज़ा अकसर बन्द रखते जब कभी किसी मुसाफ़िर का उधर से गुज़र होता तो आप उस से दरयाफ़्त फ़रमाते कि मुसाफ़िर हो या मुक़ीम। अगर मुक़ीम हो तो इस ख़ानक़ाह में क़ेयाम कर लो और अगर मुाफ़िर हो तो इस ख़ानक़ाह में तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं, इस लिए कि जब तुम चन्द रोज़ यहाँ क़ेयाम करोगे तो यक़ीनन मुझे तुम से महब्बत हो जाएगी उस के बाद अगर तुम जाना चाहोगे तो मुझ में तुम्हारी जुदाई बर्दाश्त करने की ताक़त न होगी।

आप ने हज़रत ख़िज़्र अलैहिससलाम से भी मुलाक़ात की थी और आप ही की रहनुमाई पर हज़रत ख़्वाजा अबू हुबैरा बस्री के मुरीद हुए थे। हज़रत ख़्वाजा अबू हुबैरा बस्री ने आप के कमाल को देख कर एक दिन फ़रमाया :

„ऐ अलू! तुम्हारा काम हमेशा उलू (बलन्दी) के साथरहेगा मैं हक़ तआला से चाहता हूँ कि तुम मेरी जगह पेशवाए ख़ल्क़ हो और मख़लूक़ को अपने हलक़ए इरादत में शामिल करो।„ हज़रत ख़्वाजा अबू हुबैरा बस्री के इस इरशाद से आप की निगाहों से तमाम हिजाबात हट गए और सारे अस्रारे ग़ैबी मुन्कशिफ़ हो गए।

आप के पीरो मुर्शिद ने आख़री उम्र में आप को वह कंबल जो आप के बुज़ुर्गों से आप तक पहुँचा था मरहमत फ़रमाया और ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त पहना कर अपना जानशीं मुक़र्रर फ़रमाया।

आप की एक करामत बहुत मशहूर है कि एक मरतबा आप एक बुतख़ाने की जानिब गए और बुतपरस्तों के मजमे को मुख़ातब करके फ़रमाया कि „तुमको शर्म नहीं आती कि ख़ुदा को छोड़ कर बुतों को पूजते हो।„?

आप के इस [illegible] के असर से वहाँ मौजूद तमाम काफ़िर

मुसलमान होगए। 14 मुहर्रमुल हराम 319 हि० में आप की वफ़ात हुई मज़ार शरीफ क़स्बा दीनौर में है आप के तीन खुलफ़ा बहुत नामवर गुज़रे हैं (1) हज़रत ख़्वाजा अबू इसहाक़ शामी चिश्ती (2) हज़रत शैख़ अबू आमिर (3) हज़रत शैख़ अहमद अस्वद दीनौरी क़ुद्दिसत अस्रारुहुम।

हज़रत ख़्वाजा अबू इसहाक़ शामी चिश्ती

क़ुद्दि स सिर्रुहू

हज़रत ख़्वाजा अबू इसहाक़ शामी चिश्ती क़ुद्दि स सिर्रुहू का लक़ब शरीफ़ुद्दीन था आप की विलादत मुल्के शाम में हुई और चिश्त में ताअलीमो तरबियत हासिल की। अपने वतने मालूफ़ से बग़रज़े बैअत बग़दाद शरीफ आए और हज़रत ख़्वाजा मुमशाद उलू दीनौरी की ख़िदमते बाबरकत में हाज़िर होकर हलक़ए इरादत में दाख़िल हुए। हज़रत ख़्वाजा दीनौरी ने आप से पूछा कि „तुम्हारा नाम क्या है।„? आप ने जवाब दिया „बन्दे को अबू इसहाक़ शामी कहते हैं।„

ख़्वाजा दीनौरी ने फ़रमाया „आज से हम तुम्हें अबू इसहाक़ चिश्ती कहेंगे इस लिए कि चिश्त की मख़लूक़ तुम से हिदायत हासिल करेगी और जो लोग तुम्हारे सिलसिले में दाख़िल होंगे वह भी चिश्ती कहलाएंगे।„

पीरो मुर्शिद ने रूहानी तरबियत करके आप को ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया। आप को रिजालुल ग़ैब की सुहबत हासिल थी आप दिन में रोज़ादार रहते और चन्द लुक़मों से इफ़्तार करके इबादतो रियाज़त में मशग़ूल होजाते। लोगों ने आप से दरयाफ़्त किया कि „आप इस क़दर कम ग़िज़ा क्यूँ खाते हैं।„?

आप ने जवाब में इरशाद फ़रमाया कि „मैं भूक में जो लज़्ज़त व कैफ़ियत महसूस करता हूँ वह कैफ़ियतो लज़्ज़त किसी दूसरी चीज़ में नहीं मिलती।„

मन्क़ूल है कि आप की तवज्जुह और फ़ैज़रसानी का यह आलम था कि जो शख़्स आप की सुहबतो ख़िदमत इख़्तियार कर लेता उस से माअसियतो गुनाह का इरतिकाब नहीं होता था।

एक मरतबा का वाक़ेआ है कि वहाँ अर्सए दराज़ से बारिश

नहीं हुई थी लोगों ने आप से दुआ की दरख़्वास्त की। आप ने फ़रमाया „महफ़िले समाअ मुन्अक़िद करो।„

आप के हुक्म की ताअमील में महफ़िले समाअ क़ाइम की गई। समाअ में आप पर वज्दो हाल की कैफ़ियत तारी हुई और फ़ौरन बारिश शुरूअ होगई।

14 रबीउल अव्वल शरीफ 340 हि० में आप का विसाल हुआ। आप का मज़ार मक़ामे अक्का वाक़ेअ शाम में मरजए ख़लाइक़ है।

हज़रत ख़्वाजा अबू अहमद अब्दाल चिश्ती

क़ुद्दि स सिर्रुहू

हज़रत अबू अहमद अब्दाल चिश्ती क़ुद्दि स सिर्रुहू 260 हि० में चिश्त में पैदा हुए आप के वालिदे माजिद का नाम सुल्तान फ़रस्नाक़ा था। आप का नसबी सिलसिला आठ वास्तों से हज़रत सैय्यिदुना हसन मुसन्ना बिन सैय्यिदुना इमाम हसने मुजतबा रदियल्लाहु तआला अन्हुमा तक पहुँचता है। आप सुलतान फ़रस्नाक़ा के फ़रज़न्दे अरजुमन्द थे जो शुरफ़ाए चिश्त व उमराए विलायत में से थे आप ने ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त ताजुल औलिया हज़रत ख़्वाजा अबू इसहाक़ शामी चिश्ती क़ुद्दि स सिर्रुहू से हासिल किया आप के पीरो मुर्शिद कभी कभी आप के घर तशरीफ़ लाया करते और फ़रमाया करते कि „इस लड़के से ऐसी ख़ुश्बू आती है जिस से एक बड़े ख़ानदान और बुज़ुर्ग का ज़ुहूर होगा। अजीबो ग़रीब हालात और आसार देखने में आएंगे।

बयान किया जाता है कि जब आप की उम्र तक़रीबन बीस बरस की थी उस वक़्त एक ऐसा वाक़ेआ पेश आया जिस ने आप की ज़िनदगी की काया पलट दी। एक दिन अपने वालिदे गिरामी के साथ पहाड़ की तरफ़ तशरीफ़ लेगए और शिकार की तलाश में अपने वालिदे माजिद से जुदा होगए एक पहाड़ पर पहुँचे तो वहाँ चालीस रिजालुल ग़ैब की एक मज्लिस देखी जिन के दरमियान हज़रत अबू इसहाक़ शामी चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह मस्नद आरा व जल्वा अफ़्रोज़ थे। ख़्वाजा अबू अहमद की नज़र से शैख़ अबू इसहाक़ की नज़र मिलते ही उन में एक इन्क़ेलाब रूनुमा हुआ

याअनी दुन्या के कामों से उन को नफरत हो गई और जज़्बो इश्क़े इलाही का आप पर ग़लबा होगया। नतीजे के तौर पर आप ने सब कुछ छोड़कर शैख़ अबू इसहाक़ की रिफाक़त इख़्तियार कर ली और चन्द रोज़ में वासिल बिल्लाह होगए।

अल्लाह तआला ने आप को इल्मे लदुन्नी अता फरमाया था आप अलल एअलान अस्रारे ग़ैबी बयान फरमाने लगे थे लेकिन पीरो मुर्शिद की सुहबत ने अस्रारे बातिनी के इफ्शा व इज़हार से आप को बाज़ रखा हलक़ए इरादत में दाख़िल होने के बाद तीन साल तक इबादतो रियाज़त में मशगूल रहे। उस मुद्दत में आप ने न तो कभी शिकम सैर होकर खाना खाया न तो पानी पिया और न एक लमहे को बेवुज़ू रहे।

एक मरतबा आप का गुज़र एक आतिशकदे पर हुआ जहाँ कसरत से आतिश परस्त जमा थे आप को देख कर आतिश परस्तो ने कहा कि „मुसलमान आम तौर पर यह कहते हैं कि कलमागो पर आग असर नहीं करती क्या यह सच है।„?.........हज़रत ख़्वाजा ने फरमाया „बेशक यह दुरुस्त है आग मुन्किरों और काफिरों केलिए मख़सूस है और उन्हीं को जलाएगी कलमागो पर आग असर नहीं करेगी।„

आतिश परस्तों ने यह सुनकर कहा „अगर यह सच है तो आप इस आतिश कदे में तशरीफ लेजाइए।„

हज़रत ख़्वाजा ने फौरन अपना मुसल्ला लिया और आगे बढ़कर आतिश कदे में बिछा लिया और उस पर बैठकर नमाज़ पढ़ने लगे। आतिश परस्तो ने आग को खूब भड़काया लेकिन आग ने आप पर कुछ असर न किया। आतिश परस्त यह देखकर हैरान रह गए और सब ने इस्लाम क़ुबूल करलिया।

आप ने यकुम जुमादस्सानी 355 हि0 में वफात पाई और चिश्त में ही आप का मज़ारे पुर अनवार है।

हज़रत ख़्वाजा अबू मुहम्मद बिन अबू अहमद अबदाल चिश्ती कुद्दि स सिर्रुहुमा

हज़रत ख़्वाजा अबू मुहम्मद इब्ने अबू अहमद अबदाल चिश्ती, हज़रत ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू यूसुफ चिश्ती कुद्दि स सिर्रुहुमा के

मामूँ और पीरो मुर्शिद थे। आप शबे आशूराए मुहर्रमुल हराम 341 हि0 में पैदा हुए। 17 साल की उम्र में उलूमे ज़ाहिरी की तकमील करके अपने वालिदे माजिद हज़रत ख़्वाजा अबू अहमद चिश्ती के दस्ते हक़परस्त पर बैअत हुए।बैअत के बाद मुजाहदातो रियाज़ात में मशगूल होगए और बारह बरस तक बातिनी कमालात हासिल करते रहे उस अर्से में आप सातवें रोज़ थोड़ा सा खाना तनावुल फरमालेते और हरवक़्त मशगूले इबादत रहते। अल्लहा तआला ने आप के रूए मुबारक और आँखों में ऐसा नूर पैदा फरमाया था कि जिस किसी की निगाह आप के चेहरे और आँखों पर पड़ जाती वह हलक़ा बगोशे इस्लाम होजाता यहाँतक कि जिस शहर में आप इक़ामत गुज़ीं थे वहाँ एक शख़्स भी ग़ैर मुस्लिम बाक़ी न रहा सब के सब मुसलमान होगए थे। आप के वालिदे माजिद हज़रत ख़्वाजा अबू अहमद चिश्ती ने आप को अपने विसाल के वक़्त ख़िलाफत से सरफराज़ फरमाकर अपना जानशीं मुक़र्रर फरमाया था। सत्तर बरस की उम्र में आप ने 4 रबीउल अव्वल शरीफ या यकुम जुमादल उख़्रा या यकुम रजब 411 हि0 में दाइए अजल को लब्बैक कहा।

हज़रत ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू यूसुफ चिश्ती कुद्दि स सिर्रुहू

हज़रत ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू यूसुफ चिश्ती क़ुद्दि स सिरुहू 375 हि0 में पैदा हुए और 84 साल की उम्र पाई। आप के वालिदे माजिद का नाम मुहम्मद सम्आन था जिन का सिलसिलए नसब चन्द वास्तों से हज़रत सैय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आबिदीन रदियल्लाहु तआला अन्हु तक पहुँचता है।

आप बचपन से अपने मामूँ हज़रत ख़्वाजा अबू मुहम्मद चिश्ती कुद्दि स सिर्रुहू के पास रहे और उन्हीं से उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी हासिल किए। मनकूल है कि हज़रत ख़्वाजा अबू यूसुफ चिश्ती ने अपने मामूँ के सिलसिलए तरीक़त में शामिल होकर बड़ी सख़्त रियाज़तें कीं और बारह साल तक गोशए तन्हाई में इबादत व रियाज़त करते रहे।

हज़रत ख़्वाजा अबू मुहम्मद चिश्ती के विसाल के बाद हज़रत ख़्वाजा अबू यूसुफ अपने मामूँ की मस्नदे रुश्दो हिदायत पर जलवा

अफ़रोज़ होकर अहले तरीक़त की रहनुमाई फ़रमाते रहे।

बचपन में आप को क़ुर्आने पाक हिफ़्ज़ करने का मौक़ा नहीं मिला था जिस की वजह से आप कबीदा ख़ातिर रहते थे। एक बार आप की तबीअत इसी फ़िक्र में मुकद्दर थी तो आप को ख़्वाब में मामूँ और पीरो मुर्शिद की ज़ियारत नसीब हुई। पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया कि सौ मरतबा सूरए फ़ातिहा पढ़ो इस से दिल को सुकून हासिल होगा आप ने ताअमीले हुक्म की और हिफ़्ज़ शुरूअ करदिया। चुनाँचे थोड़ी ही मुद्दत में आप ने हिफ़्ज़े क़ुरआन मुकम्मल कर लिया। हाफ़िज़े क़ुर्आन होने के बाद आप रात और दिन में पाँच क़ुर्आने पाक ख़त्म करलिया करते थे।

आप ने अबू जाअफ़र उबैदुल्लाह (क़ाइम बिअम्रिल्लाह) अब्बासी ख़लीफ़ा और सलातीने सल्जूक़िया में सुल्तान तुग़रल बेग बिन मीकाईल बिन सल्जूक़ का अहदे हुकूमत पाया। वफ़ात के वक़्त अपने बड़े बेटे ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन मौदूद को तहसीलो तकमीले उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी की वसिय्यत की और अपना जानशीं मुक़र्रर कर दिया।

459 हि0 में आप का विसाल हुआ चिश्त में ही आप का मज़ारे मुबारक है।

हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन मौदूद चिश्ती क़ुद्दि स सिर्रुहू

हज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी क़ुद्दि स सिर्रुहू के वालिद और पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन मौदूद चिश्ती क़ुद्दि स सिर्रुहू 410 हि0 या बक़ौले बाज़ 430 हि0 में पैदा हुए छः साल की इब्तेदाई उम्र में क़ुर्आने पाक हिफ़्ज़ करलिया था उस के बाद ज़ाहिरी उलूम की तहसील की तरफ़ माइल हुए और थोड़े से अर्से में उन की भी तक्मील फ़रमाली फिर उलूमे बातिनी के हुसूल की जिद्दो जहद शुरूअ की और अपने वालिदे माजिद हज़रत ख़्वाजा अबू यूसुफ़ चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह से शरफ़े बैअतो इरादत हासिल किया 26 साल की उम्र में आप को ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त से नवाज़ा गया।

यह रिवायत मशहूर है कि जो शख़्स आप की ख़ानक़ाह में तीन रोज़ क़ेयाम करलेता था वह साहिबे करामत होजाता था। आप को फ़क़्रो फ़ाक़ा की ज़िन्दगी बहुत पसन्द थी आप अकसर इरशाद फ़रमाते कि „दुर्वेश को फ़ाक़ाकशी से कुशाइश हासिल

होती है।„ कश्फ़े क़ुलूब और कश्फ़े अरवाह में आप को ख़ास दख़्ल था। सूफ़िया का बयान है कि तमाम मशाइख़े वक़्त हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन मौदूद चिश्ती क़ुद्दि स सिर्रुहू के कमालात पर मुत्तफ़िक़ थे।

आप ने 97 साल की उम्र पाई 507 हि0 या 527 हि0 में बमुक़ामे चिश्त आप का विसाल हुआ और वहीं आप का मज़ारे मुबारक है। आप के ख़ुलफ़ा की ताअदाद बहुत थी मशहूर ख़ुलफ़ा के असमाए गिरामी यह हैं।

(1) हज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी (2) हज़रत शाह सुलैमान (3) हज़रत ख़्वाजा उस्मान रूमी (4) हज़रत ख़्वाजा अबुल हसन ख़िरक़ानी (5) हज़रत ख़्वाजा हसन तिब्बती (6) हज़रत ख़्वाजा अहमद हारून (7) हज़रत ख़्वाजा अबू नसर शक़ीबान (8) हज़रत शैख़ हुसैन (9) हज़रत ख़्वाजा सब्ज़ पोश (10) हज़रत ख़्वाजा शाम अलैहिमुर्रहमतु वर्रिज़वान।

हज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी क़ुद्दि स सिर्रुहू

हज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी क़ुद्दि स सिर्रुहू की विलादते बासआदत मौज़ा ज़िन्दना वाक़ेअ बुख़रा में हुई। उलूमे ज़ाहिरी की तहसीलो तकमील के बाद अपने वालिदे माजिद हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन मौदूद चिश्ती क़ुद्दि स सिर्रुहू के हलक़ए इरादत में दाख़िल होकर कमालाते बातिनी हासिल किए और आप ही से ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त पाया।

अहले तसव्वुफ़ का बयान है कि हज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी चिश्ती के रियाज़ातो मुजाहदात इन्तेहा दर्जे तक पहुँच गए थे और मशाइख़े वक़्त में इन्फ़ेरादी व इम्तियाज़ी दर्जे पर फ़ाइज़ थे आप के चेहरे से वह रोअबो जलाल टपकता था कि लोग ख़ौफ़ की वजह से आप की तरफ़ नज़र भर देख नहीं सकते थे।

तौहीद के मस्अले पर आप का तबह्हुरे इल्मी व रूहानी मुसल्लम था। तफ़रीदो तजरीद के इस क़दर शाइक़ थे कि चालीस साल तक ख़ल्क़े ख़ुदा से किनारा कशी इख़्तियार करके जंगल व बयाबान में गोशा नशीं रहे और दरख़्तों के पत्तों और फलों पर गुज़र की। मशहूर है कि जो शख़्स आप का पसख़ुर्दा (जूठा) खालेता वह मजज़ूब होजाता था। आप को इबादते इलाही से ऐसा लगाव था कि एक लम्हा केलिए भी ख़ुदा की इबादत से ग़ाफ़िल

रहना गवारा न था। हाजी साहब की ख़िदमत में जब कोई शख़्स नक़्द रक़म नज़्र करता तो आप इरशाद फ़रमाते „तुम को दुर्वेशों से क्या दुश्मनी है कि उन के सामने वह चीज़ पेश करते हो जो खुदा की दुश्मन है।„

आप ने 3 या 13 रजब या 6 शव्वाल 584 हि० को दुन्या से रेहलत फ़रमाई और अपने वतन ज़िन्दना में आसूदए ख़ाक हुए।

आप के ख़लीफ़ा हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू थे कुतुबे तसव्वुफ़ में आप के सिवा किसी और ख़लीफ़ा का ज़िक्र मौजूद नहीं।

हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू

हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू सिलसिलए आलिया चिश्तिया के अकाबिर मुतक़द्दिमीन में से हैं हिन्दुस्तान के रूहानी ताजदार हज़रत सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के पीरो मुर्शिद हैं। जिस बुज़ुर्ग के मुरीद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ जैसे रूहानियत के शहंशाह हों उस अज़ीमुल मरतबत मुर्शिद की अज़मतो जलालत को कौन समझ सकता है।

हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू 530 हि० में क़स्बा हारवन ज़िला नीशापुर में रौनक़ अफ़्रोज़े आलम हुए आप ख़ानवादए सादात के चश्मो चराग़ हैं सलिसिलए नसब ग्यारह वास्तों से मौलाए काइनात सैय्यिदुना अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से मिलता है। इब्तेदाई तालीमो तरबियत वालिदे माजिद के ज़ेरे साया हुई कम्सिनी में ही आप ने क़ुर्आने मजीद हिफ्ज़ कर लिया था और वक़्त के मशहूर और माहिरे फ़न असातज़ा से उलूमे मुरव्वजा की तक्मील की। इबादातो रियाज़ात की तरफ़ बचपन ही से आप की तबीअत का रुजहान था इस लिए शुरूअ से ही आप का माअमूल था कि एक क़ुर्आने पाक दिन में और एक रात में ख़त्म फ़रमाया करते थे।

उलूमे ज़ाहिरी की तक्मील के बाद आप हज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ख़िदमत में हाज़िर होकर अज़ राहे अक़ीदत क़दम बोस हुए। पीरो मुर्शिद ने ख़ुसूसी नज़रे इनायत के साथ आप को हलक़ए इरादत में दाख़िल फ़रमाया और कुलाहे चहार तरकी ज़ेबे सरे अक़दस फ़रमाकर

इरशाद फ़रमाया। :

„उस्मान! बुज़ुर्गों का हुक्म है कि कुलाहे चहार तरकी वह शख़्स सर पर रखता है जो अल्लाह के मासिवा दुन्या की हर चीज़ को तर्क करदे लिहाज़ा तुम्हें भी इन चार बातों पर अमल करना ज़रूरी है (1) तर्के दुन्या (2) तर्के हिर्सो आज़ (3) तर्के ख़्वाहिशाते नफ़्सानी (4) तर्के ख़्वाब के साथ शब बेदारी व ज़िक्रे इलाही।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जब इस राह को पसन्द फ़रमाया तो फ़क्रो फ़ाक़ा को इख़्तियार फ़रमाया आप के बाद यह सिलसिला उसी तरह जारी रहा ता आँकि यह तबर्रुक मेरे पास पहुँचा। मैं ने भी फ़क्रो फ़ाक़ा इख़्तियार किया यह मुतबर्रक कुलाह अब मैं ने तुम्हारे सर पर रख दी है तुम भी पीराने इज़ाम की तक़्लीद को ज़रूरी समझना और ख़ल्क़े ख़ुदा के साथ मेहरबानी से पेश आना।„

बैअत से शरफ़ अन्दोज़ होने के बाद पीरो मुर्शिद के हुज़ूर में रहकर आप ने कामिल तीन साल तक रियाज़ातो मुजाहदात करके सुलूक की मन्ज़िलें तय कीं।

बाज़ रिवायात के मुताबिक़ हज़रत ख़्वाजा हारवनी ने अपनी उम्र के सत्तर साल मुजाहदातो रियाज़ात में बसर किए उन अय्याम में आप अकसर रोज़े से रहते थे और पाँच रोज़ तक इफ़्तार न फ़रमाते थे मुजाहदात के सत्तर साला ज़माने में कभी आप ने सैर होकर खाना खाया न पानी पिया यही वजह है कि आप की रूहानी ताक़त इस दर्जा बढ़ी हुई थी कि नज़रे कीमिया असर जिस शख़्स पर पड़ जाती वह चश्मे ज़दन में ज़रे ख़ालिस बन जाता था।

हज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी कुद्दि स सिर्रुहू के सिलसिलए तरीक़त में दाख़िल होने के बाद आप ने अपनी ज़िन्दगी का बेश्तर हिस्सा सैरो सियाहत में गुज़ारा और तक़रीबन उस ज़माने के तमाम मशाइख़ से आप ने शरफ़े मुलाक़ात हासिल किया और उन के फ़ैज़े सुहबत से मुस्तफ़ीज़ हुए।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू बयान फ़रमाते हैं कि आप अकसर यह इरशाद फ़रमाया करते थे कि। :

„जिस शख़्स के अन्दर यह तीन ख़सलतें मौजूद हों

ख़ुदा उस को महबूब रखता है (1) दरया जैसी सख़ावतो फ़ैय्याज़ी (2) सूरज की मानिनद शफ़्क़त (3) ज़मीन की तरह तवाज़ोअ व इन्किसारी।„

आप से बेशुमार करामतें ज़ुहूर पज़ीर हुईं जिन में यह करामत बहुत मशहूर है कि एक मरतबा आतिश परस्तों की आबादी में आप तशरीफ लेगए जहाँ एक बहुत बड़ा आतिश क़दा था और जिस में हज़ारों मन लक्ड़ियाँ हर रोज़ जलाई जाती थीं आप ने उसी आतिश कदे के क़रीब क़ेयाम फरमाया और एक दरख़्त के साए में मुसल्ला बिछाकर नमाज़ में मशग़ूल होगए आप के ख़ादिम शैख़ फख़्रुद्दीन आग लाने की ग़रज़ से उस आबादी में गए। आग के पुजारियों ने उन्हें आग देने से इन्कार करदिया। ख़ादिम ने वापस आकर शैख़ से पूरा माजरा बयान करदिया। हज़रत ने ताज़ा वुज़ू फरमाया और उस गाँव में तशरीफ लेगए तो देखा कि उस का नाज़िम व मुतवल्ली अपनी गोद में एक सात साला लड़का लिए एक तख़्त पर बैठा आग की पूजा कर रहा है। हज़रत ख़्वाजा ने फरमाया „ऐ खुर्राँट बुड्ढे! इस आग को क्यूँ पूजता है ख़ुदा की इबादत क्यूँ नहीं करता कि यह आग तो उस की मख़लूक़ात में एक कम्तर दर्जे की है।„

उस ने जवाब दिया कि „हमारे मज़हब में आग बड़ा दर्जा रखती है। „

हज़रत ने फरमाया कि „उस आग की पूजा में तू ने क़ीमती और लम्बी उम्र सर्फ कर दी है क्या तू अपने जिस्म का कोई हिस्सा उस आग में रख दे और वह उसे न जलाए ऐसा होसकता है।?„

मजूसी ने कहा कि „आग की ख़ासियत ही जलाना है किस की हिम्मत है कि उंगली का सिरा भी उस में रख दे और सलामत निकल आए।„

हज़रत ख़्वाजा ने अचानक उस की गोद से लड़का लिया और आग में डाल दिया और ख़ुद भी उसी आतिश कदे में तशरीफ लेगए। आग गुलज़ार बन गई और दोनों सहीहो सलामत रहे यहाँतक कि उन के जिस्म के कपड़े का एक रीशा भी नहीं जला और थोड़ी देर उस में ठहरे रहे उस दौरान मजूसियों का एक जम्मे ग़फीर इकट्ठा होगया और सभी हैरतो इस्तेअजाब से आप को देख रहे थे।

हज़रत उस बच्चे को लेकर आग से बाहर तशरीफ लेआए और इस्लाम की हक़्क़ानियत बयान करते हुए उन सब को कलिमा पढ़ लेने की दाअवत दी। नतीजे के तौर पर सारे के सारे मजूसी मुसलमान होगए और ज़मीन पर सर रख कर आप के शुक्रगुज़ार हुए। आप ने इस क़ौम के सरदार का नाम अब्दुल्लाह और आग में डाले गए बच्चे का नाम इब्राहीम तजवीज़ किया और वहाँ कुछ दिनों मज़ीद क़ेयाम फरमाकर उन लोगों को इस्लाम की ताअलीम दी और उन को मज़हब में पुख़्ता करदिया। कुछ दिनों के बाद उस आतिशकदा की जगह पर एक आलीशान मस्जिद ताअमीर होगई। :

आँजा कि बूद नाअरए फरयादे मुश्रिकाँ
अक्नूँ ख़रोशे नग़्मए अल्लाहु अक्बरस्त

इस करामत से आग के पुजारियों को इस हक़ीक़त पर कामिल यक़ीन होगया कि हज़ारों साल भी आग की पूजा की जाए फिर भी वह अपनी फितरत से बाज़ नहीं आने वाली जो उस के क़रीब जाएगा वह उसे ज़रूर जलाएगी हाँ आग के ख़ालिक़ की इबादत करने वाले केलिए अल्लहा तआला उस आग की फितरत बदल देता है और वह उस के लिए गुलज़ार बन जाती है। :

अगर सद साल गिब्र आतिश फरोज़द
चु यकदम अन्दराँ उफ्तद बसोज़द

इस लिए आग के पैदा करने वाले की परस्तिश की जाए और उसी की बारगाह में इबादतो बन्दगी की पेशानी झुकाई जाए इसी में आख़िरत की नजात और हर तरह की दुन्यवी व उख़्रवी फ़लाहो बहबूदी का राज़ पोशीदा है।

हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू के बहुत से मुरीदीन व मुतवस्सिलीन थे लेकिन आप ने उन में से सिर्फ़ चार बुज़ुर्गों को ख़िर्क़ए ख़िलाफत से नवाज़ा था जिन के अस्माए गिरामी यह हैं।

(1) हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती संजरी अजमेरी
(2) हज़रत शैख़ नजमुद्दीन सुग़रा
(3) हज़रत शैख़ साअदी लंगोची
(4) हज़रत शैख़ मुहम्मद तुर्क नारनौली (अलैहिमुर्रहमतु वर्रिज़वान)

इन चारों ख़ुलफ़ा में आप ख़ुसूसियत के साथ सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की मुरीदी पर फख़्रो

मसर्रत का इज़हार फरमाया करते और अकसर फरमाते ,,मुईनुद्दीन हसन महबूबे हक़ है।,,

आप तमाम उलूमो मआरिफ पर आलिमाना नज़र रखते थे इस के अलावा आप एक खुश फ़िक्र और बाज़ौक़ शाइर भी थे आप का मजमूअए कलाम या दीवानतो दस्तयाब नही है लेकिन आम तौर पर आप का यह आरिफाना कलाम बहुत मशहूर है और मशाइख की महफ़िलों में विर्दो वज़ीफा के तौर पर बड़ी अक़ीदत और महब्बत के साथ पढ़ा जाता है।

नमी दानम कि आख़िर चूँ दमे दीदार मी रक़्सम
मगर नाज़म बई ज़ौके कि पेशे यार मी रक़्सम
तु आँ क़ातिल कि अज़ बहरे तमाशा खून मी रेज़ी
मनाँ बिस्मिल कि ज़ेरे ख़न्जरे खूँख़्वार मी रक़्सम
बया जानाँ तमाशा कुन कि दर अंबोहे जाँबाज़ाँ
बसद सामाने रुस्वाई सरे बाज़ार मी रक़्सम
खुशा रिन्दे कि पामालश कुनद सद पारसाई रा
ज़हे तक़्वा कि मन बा जुब्बओ दस्तार मी रक़्सम
मनज़ उस्माने हारूनी कि यारे शैख़े मन्सूरम
मलामत मी कुनद ख़ल्के व मन बेज़ार मी रक़्सम

आख़री उम्र में आप मक्कए मुअज़्ज़मा तशरीफ लेगए और हरमे काअबा में मुअतकिफ होगए थे वहाँ आप ने अल्लाह तआला से दो चीज़ों केलिए दुआएं मांगीं।

एक यह कि मेरा इन्तेक़ाल और मज़ार मक्कए मुअज़्ज़मा में हो।

और दूसरी यह कि हमारे मुरीदे ख़ास ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती को बलन्द मरतबा अता हो।

अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से आप की मज़कूरा दोनों दुआएं बारगाहे एज़दी में मक़्बूल हुईं। आप ने मक्काए मुअज़्ज़मा में ही पाँचवीं या छटी शव्वालुल मुकर्रम 603 या 617 हि0 में इन्तेक़ाल फरमाया और वहीं जन्नतुल मुअल्ला में आप का मज़ारे पुर अनवार है।

और दूसरी दुआ के ज़ेरे असर परवरदिगारे आलम ने हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन हसन चिश्ती को वह बलन्द मक़ाम अता फरमाया कि हज़रत शैख़ हारूनी के विसाल के बाद माअरिफतो तरीक़त का यह मुबारको नूरानी सिलसिला आप ही की

तरफ मुन्तक़िल होता हुआ और आप अपने पीरो मुर्शिद सैय्यिदुना हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी की जानिब से सिलसिले की इशाअतो तरवीज, दीने हक़ के फरोग़ो इस्तेहकाम और हिदायते ख़ल्क़ की ख़िदमत पर मामूरो मुक़र्रर किए गए और सारी दुन्या के मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों के दिलों में आप का नाम अक़ीदतो महब्बत के साथ रौशन है।

क़ेयास कुन ज़े गुलिस्ताने मन बहार मुरा
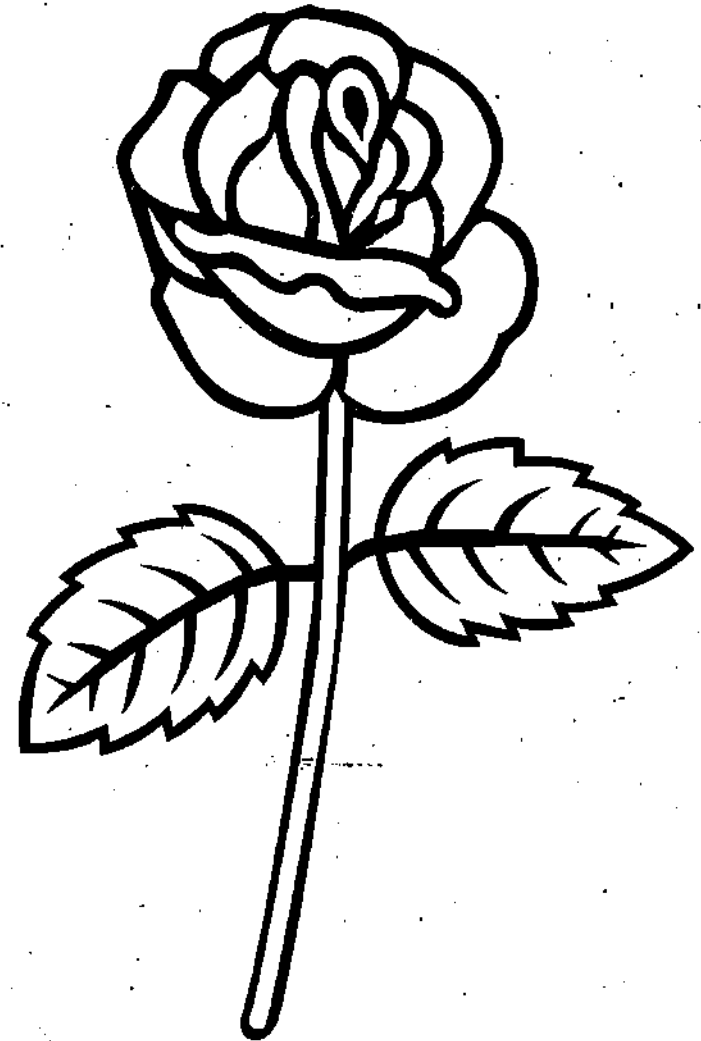
हिन्दुस्तान में इस्लाम के अज़ीम मुबल्लिग़ और रूहानी ताजदार

सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीबनवाज़

रदियल्लाहु तआला अन्हु

सुलतानुल हिन्द अताए रसूल हुज़ूर सैय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती संजरी सरकारे ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु एक बलन्द पाया और अज़ीम रूहानी शख़्सियत के मालिक हैं आप की ज़ात मंबए फ़ुयूज़ो बरकात की शोहरतो मक़बूलियत हिन्दो पाक के गोशे गोशे में ही नहीं बलिक बैरूनी ममालिक में भी सूरज की किर्नों की तरह फैली हुई है। अरबो अजम में आप की विलायतो फ़ैज़ बख़्शी, हाजत रवाई और कश्फ़ो करामात का चर्चा है। आप के अक़ीदत केश और नामलेवा चीन, जापान, इन्डोनेशिया, मलाया, सिंगापुर, रंगून और यूरप की सरज़मीन पर हज़ारों नहीं बल्कि लाखों की ताअदाद में आज भी मौजूद हैं और उन में बहुत से ऐसे ख़ुश नसीब हैं जो हर साल 6 रजब को उर्से पाक की नूरानी व बाबरकत मौक़े पर व दीगर मख़्सूस तवारीख़ में अजमेर शरीफ़ निहायत अक़ीदतो एहतेराम के साथ हाज़िर होकर सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के रूहानी फ़ुयूज़ो बरकात से मालामाल होते हैं जिन लोगों के दिलों में आप की अक़ीदत के चराग़ रौशन हैं उन की तमाम दुन्यवी व उख़्रवी उम्मीदों और तमन्नाओं का मरकज़ आप ही का मुक़द्दस आस्ताना है।

हज़रत सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु

तआला अन्हु बारगाहे रिसालत से हुक्म पाकर 586 हि० में अजमेर शरीफ़ तशरीफ़ लाए और इस्लाम की तरवीजो इशाअत में मसरूफ़ होगए। इस तरह आप ने ज़िन्दगी भर तब्लीग़े हक़्क़ो इशाअते इस्लाम का मुक़द्दस फरीज़ा पूरी मुस्तइद्दी और ज़िम्मेदारी के साथ अंजाम दिया और गुमराह बन्दों की हिदायतो रहनुमाई केलिए हमा वक़्त सरगर्मे अमल रहे। जिस दौर में आप ने हिन्दुस्तान की धरती पर क़दम रखा वह दौर कुफ़्रो शिर्क और ज़ुल्मो जिहालत से भरा हुआ था। उस वक़्त कट्टर और मुतअस्सिब राजा पृथ्वी राज की हुकूमत थी और लोग ख़ुदा से यक्सर ग़ाफ़िल और हक़्क़ो सदाक़त की राहों से भटके हुए थे। इस्लाम दुश्मन, मुस्लिम बेज़ार और मुतअस्सिब राजा के दरबारियों ने राजा को सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की अजमेर आमद की ख़बर दी तो उस ने आप को और आप के ख़ुद्दाम को तरह तरह से परीशान करके वहाँ से निकल जाने पर मजबूर करने की कोशिश की यहाँतक कि उस ज़माने के एक बहुत बड़े जादूगर अजयपाल जोगी को आप से मुक़ाबला करने की ग़रज़ से भेजा लेकिन उस में भी उसे बुरी तरह शिकस्तो नाकामी से दोचार होना पड़ा और सरकारे ग़रीब नवाज़ के परचमे हक़्क़ानियत व इल्मे रूहानियत को ज़बरदस्त फ़त्हो सरबलन्दी नसीब हुई मादि्दयत की तमाम तदबीरें, तख़्तो ताज और तमाम अज़मतो क़ुव्वत एक गुदड़ीपोश और ख़ाक नशीं दुर्वेश के क़दमों पर सरनिगूँ होगई।

न काम आती हैं तदबीरें न काम आती हैं शमशीरें
जो हो ज़ौक़े यक़ीं पैदा तो कट जाती हैं ज़न्जीरें

सुलतानुल हिन्द सरकारे ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु अपनी तब्लीग़ी ज़िन्दगी में ज़ुल्मो नफ़रत के ख़ूगर और जफ़ापेशा इन्सानों के सामने इस्लामी अख़लाक़ो किरदार का वह पुरकशिश नमूना पेश किया ककि बड़े बड़े संगदिल मोम हो गए और कुफ़्रो शिर्क और फ़िस्क़ो फ़ुजूर की बदतरीन लाअनतों में डूबे हुए इन्सानों के अन्दर इस्लामी ताअलीमात की रौशनी जाग उठी और आहिस्ता आहिस्ता वह सरकारे ग़रीब नवाज़ की हक़परस्ती व

सच्चाई के क़ाइलो मोअतरिफ होकर हल्क़ाबगोशे इस्लाम होने लगे। आप की असर आफ़रीं व दिलनशीं तब्लीग़ निहायत सरगर्मी के साथ बराबर जारी थी जिस का लाज़िमी नतीजा यह हुआ कि सरकारे ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के जाँनिसारों, फ़िदाइयों और अक़ीदत मन्दों की ताअदाद में रोज़ बरोज़ इज़ाफ़ा ही होता गया। आप की ख़िदमत में हर तब्क़े के लोग हाज़िर रहने लगे अवाम तो आप पर दिलो जान से शेफ़्ता व कुर्बान थे ही हुक्काम, उमरा व शाहाने ज़माना भी आप की बारगाहे विलायत में सरापा अदबो नियाज़ नज़र आते थे सुलतान शहाबुद्दीन गौंरी और बादशाह शमसुद्दीन अलतमश आप की ख़िदमत केलिए माअमूली ख़ादिमों की तरह मुस्तइद व कमरबस्ता रहते थे।

„अनीसुल इशबाह„ तरजमा „मूनिसुल अरवाह„ (मुसन्नफा सुलतान जहाँआरा बेगम व दुख़्तरे नेक अख़्तर शहंशाहे शाहजहाँ मतबूआ नामी प्रेस लखनऊ) में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के सफरे हिन्दुस्तान के बारे में जो तहरीर है उस का खुलासा ज़ैल में मुलाहज़ा कीजिए। :

„जब आप अपने पीरो मुर्शिद से नेअमते लाज़वाल पाकर, उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी से आरास्ता होकर रुख़्सत हुए तो मक्कए मुअज़्ज़मा और वहाँ से मदीनए मुनव्वरा हाज़िर हुए और एक मुद्दत तक उस दयारे नूर में मशगूले इबादत रहे। एक रोज़ हज़रते रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रौज़ए अक़्दस से आवाज़ आई कि ऐ मुईनुद्दीन! तू हमारे दीन का मुईनो मददगार है हिन्दुसतान की विलायत तुझे अता की गई तू मक़ामे अजमेर में क़ेयाम कर और उस सरज़मीन में छाई हुई कुफ़्रो शिर्क की ज़ुल्मतों को इस्लाम के उजालों में बदल दे चुनाँचे सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फरमाने आलीशान पर अमल पैरा होकर हिन्द के सफर पर रवाना होगए आप अपने चालीस हमराहियों के साथ शहरो, क़स्बों और मवाज़आत से गुज़रते हुए वहाँ के अकाबिर मशाइख़ से मुलाक़ातें करते हुए फैज़ हासिल करते और बाँटते हुए अपनी मन्ज़िल अजमेरे मुक़द्दस की जानिब बढ़ते रहे।„

उस ज़माने में अजमेर का हाकिम राजा पिथौरा था जिस की माँ इल्मे नुजूम में माहिर थी उस ने बारह साल पहले अपने बेटे को ख़बर देदी थी कि यहाँ एक बुज़ुर्ग ज़ाहिर होगा जिस के सबब तेरी हुकूमतो दौलत जाती रहेगी इस वजह से राजा हमेशा रंजीदा व ग़मगीन रहा करता था उस की वालिदा ने बुज़ुर्ग का जो हुल्या बयान किया था वह सरकारे ग़रीब नवाज़ का था आप को देख़ते ही उस की आँखों के सामने ख़तरात मंडलाने लगे मगर खुल्लम खुल्ला मुक़ाबला करने से डर रहा था इस लिए आप के साथ फरेब करने का इरादा किया और ज़ाहिरी जवाज़ोअ और ताअज़ीम के साथ आप की बारगाह में आकर उस के कारिन्दों ने इल्तिमास किया कि आप के वास्ते हम ने एक मुनासिब मक़ाम का इन्तेज़ाम किया है आप वहाँ तशरीफ रखें। सरकारे ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु उस की अस्ल हक़ीक़त से बाख़बर होगए और फरेबकारों के गरोह को वापस करदिया और जो मआमला देखा था वह अपने हमराही दोस्तों पर ज़ाहिर करके अजमेर शरीफ की तरफ रवाना होगए और दो दिन का सफ़र तय करके अजमेरे मुक़द्दस में वारिद हुए वहाँ आप ने चाहा कि एक दरख़्त के साए में बैठ जाएं इतने में एक शख़्स ने आवाज़ दी कि ऐ दुर्वेशो! इस दरख़्त के साए में राजा के ऊँट बैठते हैं तुम कहीं और जाकर ठहरो। आप ने फरमाया कि राजा के ऊँट बैठते हैं तो बैठें और वहाँ से उठ गए फिर अनासागर से मुत्तसिल एक दरख़्त के साए में जाकर क़ेयाम फरमाया। उस तालाब के किनारे कई हज़ार बुतख़ाने थे जिन में रोज़ाना एक सौ मन से ज़ियादा तेल जलता था और फूल ख़र्च होता था उन मन्दिरों के ब्रहमन पुजारियों ने आप के ख़ादिमों को उस तालाब से वुज़ू करने से मना किया जब यह मआमला सरकारे ग़रीब नवाज़ के सामने पेश हुआ तो आप ने अपनी रूहानी कुव्वत के ज़रीआ अनासागर तालाब का सारा पानी अपने एक प्याले में समेट कर भर लिया उस के अलावा शहर में पानी के जितने चशमे और कुएं वग़ैरह थे सब ख़ुश्क होगए यहाँतक कि दूध पिलाने वाली औरतों और जानवरों के दूध सूख

कहा जाता है कि राजा पिथौरा जिस देव की परस्तिश किया करता था वह उस के मुतअल्लिक़ यह अक़ीदा रखता था कि उस की दौलत और हुकूमत उसी के दम क़दम से क़ाइम है उस के इख़राजात केलिए कई परगने वक़्फ़ थे जब वहाँ दीने इस्लाम का आफताब तुलूअ हुआ और तौहीदो रिसालत की दिलनवाज़ सदाएं गूँजने लगीं तो वह जिन लरज़ता काँपता सरकारे ग़रीब नवाज़ की ख़िदमते बाबरकत में हाज़िर हुआ और आप के मुबारक क़दमों पर सर रख कर ईमान लेआया। आप ने उस को दाख़िले इस्लाम फरमाकर उस का नाम „शादी देव„ रखा। जब सरकारे ग़रीब नवाज़ की आमद की ख़बर और उस के साथ तालाबों के पानी सूख जाने और ऊँटों के अपनी जगह बैठे रहने के अजीबो ग़रीब वाक़ेआत राजा पिथौरा तक पहुँचाए गए। तो राजा की माँ ने कहा यह वही शख़्स है जिस से मुतअल्लिक़ मैं ने बारह बरस पहले तुझे ख़बर दी थी ख़बरदार उस से मत उलझना बल्कि तवाज़ोअ और ताअज़ीम से पेश आना मगर राजा ने अपनी माँ की बातों को दरख़ुरे एअतेना न समझकर इस्लाम दुश्मनी के जोश में आगया और अपना सब कुछ गंवा बैठा।

सुलतानुल हिन्द अताए रसूल सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू का दरबार वह अज़ीमुल मरतबत और फ़ैज़ बख़्श है जहाँ अमीरो ग़रीब, शाहो गदा, मुहताजो ग़नी और अपने बेगाने सब के दामन गुले मक़्सूद से भरे जाते हैं और आप के चश्मए जूदो सख़ा से एक दुन्या सैराब होती रहती है। मशहूर सलातीने मुग़लिया जलालुद्दीन अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, शेर शाह सूरी और औरंगज़ेब वग़ैरह जैसे शौकतो सतवत और जलालो जबरूत के मालिक सरकारे ग़रीब नवाज़ के आस्तानए आलिया पर हाज़री देते तो इजज़ो इन्केसार और अदबो एहतेराम की तस्वीर बन जाते और अपने आप को आप के दरबार में इस अन्दाज़ में पेश करते जिस तरह एक जाँनिसारो वफ़ादार ग़ुलाम आक़ा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ करता है। साथ ही अपने वक़्त के जलीलुल क़द्र व आली मरतबत सूफ़ियाए किराम, मशाइख़े इज़ाम व औलियाए ज़विल एहतेराम आप के मज़ारे पुरअनवार पर हाज़िर हो कर एक

निगाहे करम के मुन्तज़िर रहते और सरापा इलतेजा बन जाते हैं एक आलम आप के दरे पाक पर इस हक़ीक़तो करामत का अपनी आँखों से मुशाहदा करता रहता है।:

तुम्हारे दर की करामत ये बारहा देखी
ग़रीब आए हैं और बन गए ग़रीब नवाज़

अवामो ख़वास हर मुश्किल और मुसीबत की घड़ी मे अजमेर शरीफ हाज़िर होकर आप के रौज़ए मुक़द्दसा पर फ़रयादो ज़ारी करते हैं, हाजत मन्द अपनी हाजतें पेश करते हैं, साइल सुवाल करते हैं और ब फ़ज़ले रब सब की हाजत रवाई और मुश्किल कुशाई होती है लोग वक़्तो हालात के सताए, दर्दो अलम के मारे अश्कबार जाते हैं और सरकार ग़रीब नवाज़ के करमो नवाज़िश और लुतफ़ो इनायत से हंसते मुसकुराते बामुरादो शादकाम वापस आते हैं।

हुज़ूर सैय्यिदी सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की दिलनवाज़ो पुरकशिश शख़्सियत और आप के अख़लाको किरदार की वुस्अतो बलन्दी, रूहानियतो करामत, असर आफरीं तालीमात और रौशन ज़मीरी ने लोगों को ऐसा मुतअस्सिर किया कि सब आप के गिरवीदा हो गए और बहुत से ख़ुश नसीब इन्सानों को ईमानो इर्फ़ान की दौलत अता हुई। आप के मुरीदीन, मुतवस्सिलीन, मोअतक़िदीन और पैरोकारों का दाइरा बहुत वसीअ है सिलसिलए चिश्तिया निज़ामिया साबिरिया वग़ैरह की बुन्याद ही आप के अफकारे आलिया और रूहानी तालीमात पर मबनी है यही वजह है कि सरकार ग़रीब नवाज़ की ज़ाते गिरामी शुओ तसव्वुफ़ के हर मकतबे फ़िक्र केलिये नमूनए अमल और मिश्अले राह की हैसियत रखती है।

इस में कोई शक नहीं कि सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की रूहानी अज़मत और बातिनी क़ुव्वत नुक़्तए उरूज को पहुँची हुई थी जिस की एक वाज़ेह दलील यह है कि सदियाँ गुज़र जाने के बावजूद आप का चश्मए फ़ैज़ बदस्तूर जारी व सारी है लोग इन पर भरपूर ईमानो यक़ीन रखते हैं और उन्हें अपना हाजतरवा व मुश्किल कुशा तसव्वुर करते हैं।

सूफ़ियाए किराम का यह अक़ीदा और रूहानी मुशाहदा है कि सुल्तानुल हिन्द सरकार ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के रौज़ए मुक़द्दसा की सफ़ाई करने से दिलों की सफ़ाई होती है, यहाँ रौशनी करने से तारीक दिलों में रौशनी पैदा होती है और जो लोग यहाँ प्यासों को पानी पिलाने की ख़िदमत अन्जाम देते हैं वह दर अस्ल अपने दिलों की प्यास बुझाते हैं उन्हें इस बात पर यक़ीन है कि सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के आस्तानए पाक पर अक़ीदत का सर झुकाने से दोनों जहाँ की सरबलन्दी हासिल होती है। किसी हक़ीक़त पसन्द साहिबे दिल शाइर ने क्या खूब कहा है :

आजाए जो तुझ पर कोई मुश्किल भारी
कर जाके मज़ारे फुक़रा पर ज़ारी
सोता न समझ इन को ज़रा आँखें खोल
इन सोतों से है फ़ैज़ का चश्मा जारी

नाइबुन्नबी फ़िल हिन्द, अताए रसूल, किश्वरे विलायत के ताजदार, दाइये हक़्क़ो सदाक़त, आफ़ताबे विलायत, शमअे चिश्तियत हुज़ूर सैय्यिदुना सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन हसन चिश्ती अजमेरी रदियल्लाहु तआला अन्हु तब्लीग़े इस्लाम व इस्लाहे उम्मत का जो अज़ीम नसबुल ऐन लेकर हिन्दुस्तान के शहर अजमेर शरीफ़ में वारिद हुए थे आप ने उस नसबुल ऐन की तक्मील केलिये बड़ी जिद्दो जहद फ़रमाई और इस राह में पेश आने वाले सख़्त तरीन व हौसला शिकन हालात का ऐसा मुक़ाबला किया कि कोई रुकावट और कोई मुख़ालफ़त आप के सामने न ठहर सकी और बिल आख़िर सरकार ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू को नुमायाँ कामयाबी हासिल होकर रही। ऐसी ही अज़ीम शख़्सियतों के बारे में कहा गया है। :

विलायत , पादशाही इल्मे अश्या की जहाँगीरी
ये सब क्या है फ़क़त एक नुक़्तए इमाँ की तफ़्सीरें

सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू ने लोगों को हक़ परस्ती, सदाक़त शेआरी, महब्बतो उख़ुव्वत, इन्सानियतो शराफ़त, बाहमी इत्तेहादो इत्तेफ़ाक़, ख़ुदा शनासी, हक़ीक़त पसन्दी, इत्तेबाअे शरीअत, पैरवीये सुन्नत, इश्क़े रसूल, अमल बिल क़ुर्आन और इस्लामी तहज़ीबो तमद्दुन का सबक़ दिया और इन के तारीक दिलों में ईमानो यक़ीन के चराग़ रौशन कर दिये। इन्हीं अक़दारो सिफ़ात

की बुन्यादों पर आप ने एक पाकीज़ा और ख़ुशगवार मुआशरा क़ाइम किया और यही आप का ख़ास मक़सद था जिस से हर तब्क़े के अफ़राद, हर रंगो नस्ल और हर मज़हबो क़ौम के लोग हक़ीक़ी इन्सानियत और उस के तक़ाज़ों से आशना होकर सहीह माअनों में इन्सान बन गए और सब ने इन्सानियत का लिबास पहन लिया और दरिन्दगी को छोड़ कर करमो नवाज़िश, उख़ुव्वतो हमदर्दी और सुल्हो आश्ती की रविश इख़्तियार करली।

हुज़ूर सैय्यिदुना सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी तब्लीग़ी ज़िन्दगी में लोगों को जो तालीम दी उस पर पहले खुद अमल करके भी दिखला दिया यही सबब है कि आप के मवाइज़, इर्शादात, मकतूबात और मलफ़ूज़ात पढ़ने और सुन्ने वालों के दिलों पर गहरा असर डालते थे और आज भी उन के ज़रीआ शर्औ तसव्वुफ़ और तरीक़तो माअरिफ़त का सबक़ मिलता है।

आप की ज़ाते बाबरकात दयारे हिन्द में इस्लाम की तब्लीग़ो इशाअत के बाब में दीगर तमाम मुसिलहीनो बुज़ुर्गाने दीन पर फ़ौक़ियत व फ़ज़ीलत रखती है। आप की आमद से पहले हिन्दुस्तान कुफ़्रो बातिल, ज़ुल्मो जिहालत और नफ़रतो तअस्सुब के अन्धेरों में डूबा हुआ था। और दूर दूर तक इस्लामी तालीमात की रौशनी नज़र नहीं आती थी। प्रिथवी राज की फ़तह से हिन्दुओं के हौसले बढ़ गए थे और मज़हबे इस्लाम व ख़ुदा परस्त मुसल्मानों के असरो इक़तेदार को वह जड़ से उखाड़ फेंकने पर आमादा व कमर बस्ता थे यह सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की बाअज़मतो पुर वक़ार शख़्सियत ही थी जिस ने तमाम इस्लाम दुशमन अनासिर के मन्सूबों को ख़ाक में मिला दिया और दीने हक़ का परचम बलन्द करदिया।

" मुईनुल अर्वाह "(मुअल्लफ़ा मुहम्मद ख़ादिम हुसैन ज़ुबैरी मुईनी) में ख़्वाजए बुज़ुर्ग की तब्लीग़ो इशाअते इस्लाम के तनाज़ुर में बयान किया गया है कि :

" हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ज़ाते अक़दस बफ़ैज़े सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तमाम सिफ़ाते हमीदा की हामिल है। आप ने हिन्दुस्तान में ब फ़ैज़े मुहम्मदी वह

तब्लीग़ी ख़िदमात अन्जाम दीं जिन की बुन्याद सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हिजाज़े मुक़द्दस में डाली थी। यह ख़िदमात यूँ तो अला क़दरे मरातिब अकसर उलमा व सूफ़ियाए किराम ने अन्जाम दी हैं मगर सरकार ग़रीब नवाज़ की ज़ाते अक़दस ने इस बाब में जो शानदार कारनामा आलम के सामने पेश किया है वह अपनी मिसाल खुद है और सरवरे आलम की सुन्नते तब्लीग़ की जीती जागती तस्वीर है। बक़ौले साहिबे „ मआसिरुल किराम „ औलियाअल्लाह में सब से पहले अक़्लीमे हिन्दुस्तान में सिलसिए विलायत जारी करने और शरीअतो तरीक़त के नशरो इशाअत का शरफ़ आप ही को हासिल है। इस के आगे एक जगह तहरीर किया गया है कि :

„ अहले हिन्द को मुबल्लिग़ के हम मज़हब लोगों तक से इतनी नफ़रत थी कि लोग मुसल्मानों की सुरत तक देखने के रवादार न थे परछाईं तक से एहतेराज़ करते थे। दुसरी मुश्किल यह थी कि मुबल्लिग़ की ज़बान फ़ारसी थी और अहले हिन्द भाषा या मार्वाड़ी वग़ैरह बोलते थे मगर सरकार ग़रीब नवाज़ ने ब इकरामे ख़ुदावन्दी व ब फ़ैज़ाने रिसालत उन मुश्किलात के क़िले को भी फ़तह करके हिन्दुल वली, नाइबे रसुल फ़िल हिन्द और सुल्तानुल हिन्द का ख़िताब पाया। „

जानशीने नबी दरीं आलम
मज़हरे मुर्सलाँ मुईनुद्दीं

„ आप यह अज़ीम काम तने तन्हा अन्जाम नहीं देते थे बल्कि अपनी क़ेयादतो सरबराही में अपने मुरीदीन व वाबस्तगाने सिलसिला के साथ मिल कर तब्लीग़ो इस्लाह का एक शानदार व कामयाब निज़ाम आप ने क़ाइम फ़रमाया था और यह तब्लीग़ तीरो तल्वार और लश्करे जर्रार के ज़रीआ न थी बल्कि तसर्रुफ़ाते रूहानी, अख़लाक़े करीमाना, शफ़क़ते बुज़ुर्गाना और इज़हारे हक़ के साथ थी „

इस इबारत के बाद मुसन्निफ़ रक़मतराज़ हैं।

„हज़रत ख़्वाजा की ज़ाते अक़दस बुत परस्तों को सिर्फ़ ख़ुदा परस्त ही नहीं बनाती थी बल्कि इल्मो माअरिफ़त का ख़ज़ाना अता फ़रमाकर उन्हें साहिबे माअरिफ़त, हक़शनास व ख़ुदारसीदा भी बना देती थी। आप की तब्लीग़ के ज़ेरे असर ब तादादे कसीर लोग मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए। और बहुत से लोग आरिफ़ाने कामिल, औलियाअल्लाह और साहिबे दिल हुए। बअलफ़ाज़े दिगर आप सिर्फ़ मुबल्लिग़े शरीअत ही नहीं

बल्कि क़ासिमे गन्जीनए माअरिफ़तो हक़ीक़त भी हैं। हमारे इस क़ौल की दलील में सैरुल अक़्ताब, मसालिकुस्सालिकीन और इक़्तिबासुल अनवार के बयानात हैं। „

दलीलुल आरिफ़ीन के सफ़्हा 54–55 पर हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं। :

„ हम (मैं और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़)अजमेर पहुँचे उन दिनों अजमेर हिन्दुओं की मिल्कियत और उन्हीं की आबादी से माअमुर था वहाँ उस वक़्त मुसल्मान न थे जब हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के क़दमे मुबारक वहाँ पहुँचे तो इस क़दर ज़ुहूरे इस्लाम हुआ जिस की हद नहीं। „

सैरुल आरिफ़ीन के सफ्हा 13 पर मौलाना जमाली फ़रमाते हैं। :

„ इस दयार (हिन्दुस्तान) के बहुत से कुफ़्फ़ारे नामदार ब बरकते ज़ुब्दतुल आसार हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु शरफ़े ईमान से मुशर्रफ़ हुए बहुत से जो ईमान न लाए वह भी बेहद नुज़ूरो फ़ुतूह आप की ख़िदमत में भेजा करते थे। „

फ़वाइदुल फ़वाद की मज्लिसे चहारुम में लिखा है कि :

„ हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की हिदायत से (बहुत से) आदमी मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए। „

हिन्दुस्तान में इस्लाम हुज़ूर सैय्यिदुना सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के तसर्रुफ़ाते बातिनी, फ़ुयूज़े रूहानी, अख़लाक़े हमीदा और इस्लाम की सदाक़त की वजह से फैला न कि तल्वार के ज़ोर से। अगर यहाँ इस्लाम बज़ोरे शमशीर फैला होता तो बनये बक़्क़ाल ब्रहमन और अछूत अक़वाम में से कोई भी आज अपने आबाई मज़हब पर न होता बल्कि यह सब मुसल्मान हो चुके होते क्यूँकि सब से ज़ियादा बुज़दिल और डरने वाली क़ौमें यही हैं मगर इस के बरख़िलाफ़ हम यह देखते हैं कि बहादुर राजपूत और ठाकुर लाखों की तादाद में मुसल्मान हैं जिन के बारे में हरगिज़ यह नहीं कहा जासकता कि तल्वार के ख़ौफ़ से मुसल्मान हो गए बल्कि ऐसा कहना उन बहादुर अक़वाम की तज़लील है। हमारे इस बयान और दाअवे की ज़िन्दा दलील यह है कि बहादुर प्रिथवी राज ने शहाबुद्दीन ग़ौरी के हाथों गिरफ़्तार होकर भी दाअवते इस्लाम क़ुबूल न की और जान की सलामती के साथ अपना राजपाट वापस लेने का भी ख़याल न किया बलिक अपनी जान देना गवारा करलिया मगर उसी राजा की औलाद ने

बग़ैर तल्वार के डर और किसी लालच के इस्लाम क़ुबूल करलिया। (फिर चन्द सतरों के बाद) सिर्फ आप की हयाते ज़ाहिरी तक तब्लीग़ का सिलसिला जारी नहीं रहा बल्कि आप के विसाल के बाद भी आप के ख़ुलफ़ा ए ख़ास ने आप की इस सुन्नते महमूदा को जारी रखा बाद अज़ाँ आप के अहले सिलसिला बराबर यह ख़िदमते ख़ास अला क़दरे इस्तेअदाद अन्जाम देते रहे और अब तक आप के फ़ुयूज़े रूहानी और तसर्रुफ़ाते बातिनी से तबलीग़े इस्लाम, इशाअते शरीअत और तालीमे इल्मे माअरिफत का काम जारी है।

सुल्तानुल हिन्द सरकार ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की बेमिसाल मजमूअए कमालात हयातो शख़्सियत के नुमायाँ गोशों का इजमाली मुशाहदा करने के बाद हम इस इज़हारे हक़ीक़त में यक़ीनन हक़ बजानिब हैं कि आप एक इन्तेहाई बलन्द मरतबा हसती, आरिफ़े कामिल और सच्चे बुज़ुर्ग हैं जिन की ज़िन्दगी का एक एक लम्हा और किताबे हयात का एक एक वरक़ मिश्अले राह और चराग़े मन्ज़िल की शक्ल में रौशन व दरख़्शाँ है आप के इर्शादातो तालीमात पर अमलपैरा व कारबन्द होकर हम दुन्या व आख़िरत की सलाहो फलाह हासिल कर सकते हैं।

असर है मरहबा ये बख़्शिशो फैज़ाने ख़्वाजा में
सिमट आई है दुन्या सायए दामाने ख़्वाजा में

ख़्वाजा की राजधानी

अजमेर का तारीख़ी मन्ज़र नामा

अजमेर शरीफ हिन्दुस्तान के शेमालमग़्रिबी हिस्से में राजपूताना का एक बड़ा और खूब सूरत शहर है जो आगरा से 228 दिल्ली से 235, लाहौर से 570, और बम्बई से 687 मील के फ़ासले पर कोहे अरावली के दामन में छोटी छोटी पहाड़ियों के दरमियान वाक़ेअ है। उस शहर के शेमाल में गोगरा घाटी, जुनूब में कोहे अरावली, मश्रिक़ में रियासत किशन गढ़ और मग़्रिब में दरयाए सरसवती है।

तारीख़ के औराक़ नातिक़ हैं कि इस तारीख़ी शहर की बुनयाद दूसरी सदी ईसवी में राजा अजयपाल ने डाली थी, क़दीम शहर मौजूदा आबादी के जुनूब मग़्रिबी गोशे में था। जिस के कुछ खन्डरात अब भी मौजूद हैं। इन्क़ेलाबाते दहर से तब्दीलिये मक़ाम के साथ नामों में भी तग़ैय्युर होता गया। मवर्रिख़ीन ने इस शहर को जिया नगर, ज्यूदरिक, (दर्क बमाअना क़िला) जयमेर, औमेर और जलूपूर भी लिखा है मोअतबर तारीख़ी रिवायात से माअलूम होता है कि हिन्दुस्तान में क़दीम ज़माने में बुद्ध मज़हब का पैरो राजा कनिश्क गुज़रा है जो 78 ई0 में गद्दी नशीन होकर 42 साल तक निहायत शानो शौकत से हुक्मरानी करता रहा। उस राजा की राजधानी पेशावर में थी। तमाम ममालिक काबुल व कशमीर से लेकर दरयाए नरबदा तक शेमाली हिन्द पर उस का तसल्लुत था। राजा कनिश्क के बाद उस के दो बेटे दशीश्किं और हुवैशिक अपने बाप की गद्दी पर हुकूमत करते रहे मगर 120 ई0 या 123 ई0 में हुवैशिक ने ख़ुदमुख़तारी का एअलान करके 140 ई0 तक बड़े ज़ोरो शोर और दबदबे से हुकूमत की। हुवैशिक के बाद जब वासुदेव ने गद्दी संभाली तो वह अपनी कमज़ोरी के बाइस हुकूमत

का बार संभाल न सका नतीजा यह हुआ कि चन्द ही रोज़ में उस की सल्तनत का शीराज़ा बिखर गया। राजा अजयपाल चिकवा ने जो कनिश्क ख़ान्दान का बाजगुज़ार था अलाके पर क़ब्ज़ा करके शहर अजमेर को (जिस की बुन्याद वासुदेव ने गद्दीनशीन होते ही डाली थी) अपना पायए तख़्त क़रार देकर अपनी जुदागाना सल्तनत क़ाइम करली।

राजा अजयपाल दरअस्ल रियासत अन्हलपूर का राजा था जिस का पायए तख़्त पट्टन ज़िला गुजरात था 330 ई0 में गुप्त ख़ान्दान का उरूज शुरू हुआ तो समन्दर गुप्त ने अपनी पामर्दी और आली हिम्मती से क़रीब क़रीब तमाम शेमाली हिन्द ज़ेरे नगीं करलिया। राजपूताना की रियासतें भी उस के ज़ेरे असर आगई, पाँचवीं सदी ईसवी में चन्द्र गुप्त के अहद में भी तमाम राजपूताना उस के ज़ेरे इक़तेदार रहा मगर कुमार गुप्त के अहद में वस्ते एशिया से आमदा कबाइल से जंगो जिदाल में गुप्त हुकूमत का भी ख़ातमा हो गया और यह नव वारिद ताक़त पंजाब और राजपूताना में फैल गई और हरजगह लूटमार और क़त्लो ग़ारतगरी से निज़ामे सल्तनत मुअत्तल हो गया। अजमेर के राजा ने भी उस नव वारिद हुकूमत की इताअत कुबूल करली, छटी सदी ईसवी उसी इफ़्रा तफ़्री में गुज़री राजगाने हिन्द की बाहमी लड़ाइयों का कोई मुफीद नतीजा न निकला बिल आख़िर सातवीं सदी ईसवी के शुरू में राजा हरीश वालिये क़न्नौज की एक नई ताक़त हिन्दुस्तान में रूनुमा हुई उस राजा ने आसाम, बंगाल और गुजरात तक के ममालिक फतह करलिये। क़रीब क़रीब तमाम शेमाली हिन्द उस के हाथ में आगया।

1024ई0 में जब महमूद ग़ज़नवी ने सोमनात पर आख़री और ज़बरदस्त हम्ला किया और हिन्दुस्तान में दाख़िल होकर मुल्तान फतह करके अजमेर पहुँचा तो यहाँ राजा की फौजों से ज़बरदस्त लड़ाई हुई मैदान महमूद ग़ज़नवी के हाथ रहा। महमूद ग़ज़नवी अजमेर फतह करके राजा को उस का मुल्क अता करदिया बाज़ तारीख़ी रिवायतों से माअलूम होता है कि राजा मुसल्मान होकर सल्तनत से दस्तकश हो गया था इस वजह से महमूद ग़ज़नवी ने सालार साहू(वालिदे माजिद हज़रत सैय्यिद सालार मसऊद ग़ाज़ी बहराइची क़ुद्दि स सिर्रुहू)को अजमेर का

हाकिम मुक़र्रर किया 1044 ई0 में जब राजपूतों का ज़ोर बढ़ा तो उन्हों ने अजमेर के मुसल्मान गवर्नर को क़त्ल करके राजा की गद्दी पर सारंग देव को बिठाया मगर वह गद्दीनशीन होने के कुछ दिनों बाद ही मर गया। सारंग देव के बाद बेसलदेव का छोटा भाई अन्नादेव तख़्तनशीं हुआ(अजमेर का मशहूर तालाब अन्नासागर उसी की यादगार है)अन्नादेव के बाद जब प्रिथवीराज तख़्तनशीं हुआ तो उस ने सब से पहले क़िलअए तारा गढ़ की तामीर की तरफ तवज्जोह की(इस क़िलअे की बुन्याद भी राजा अजयपाल ने ही डाली थी मगर नासाज़गारिये रोज़गार के बाइस तामीर न करासका) प्रिथवीराज ने तारागढ़ का क़िलआ संगे सुर्ख़ से तामीर कराया और ऐसा नफीस व मुस्तहकम बनाया कि उस की नज़ीर उस वक़्त हिन्दुस्तान में न थी।

पृथ्वीराज के अहद में सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी ने हिन्दुस्तान पर हम्ला किया और तरावड़ी के मैदान में 1191 ई0 में प्रिथवीराज और उस के हलीफ राजाओं से ज़बरदस्त जंग हुई उस जंग में सुल्तान ज़ख़्मी होगया और उस की फौज ने दिलशिकसता होकर हज़ीमत उठाई सुल्तान को उस शिकस्त का बड़ा क़लक़ था चुनाँचे अजमेर पर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तशरीफआवरी के बाद आप की दुआओं के साए में 1193 ई0 में सुल्तान ने फिर हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की प्रिथवीराज और दूसरे हिन्दू राजे(जिन की तादाद एक सौ पचास के लगभग थी)पूरे साज़ोसामान के साथ फिर तरावड़ी के मैदान में मुक़ाबले केलिये तैय्यार होकर आगए। निहायत ख़ूँरेज़ जंग के बाद हिन्दुस्तानी फौजों को शिकसते फ़ाश हुई पृथ्वीराज और बीसियों दूसरे राजे उस लड़ाई में काम आए। उस फत्हे अज़ीम के बाद सुल्तान ने देहली और अजमेर पर क़ब्ज़ा करलिया और हिन्दुस्तान में इस्लामी हुकूमत की बुन्याद रखी।

पृथ्वीराज की शिकस्त के बाद अजमेर इस्लामी हुकूमत के ज़ेरे इक़्तेदार आगया शहाबुद्दीन ग़ौरी ने अजमेर में अपना सूबेदार मुक़र्रर किया और अजमेर हुकूमते देहली का एक सूबा क़रार पाया। अभी एक साल भी न गुज़रा था कि पाँसा पल्टा और अजमेर का साबिक़ चौहान ख़ान्दान फिर क़ाबिज़ होगया मगर दो साल न गुज़रने पाए कि देहली के पठान ख़ान्दान के बादशाह ने अपनी ताक़त और फौज से फिर अजमेर पर क़ब्ज़ा करलिया और

1400 ई0 तक (तक़रीबन ढाई सौ साल) अजमेर पठान बादशाहों के पास रहा मगर 1400 ई0 में अजमेर फिर मुसल्मानों के हाथों से निकल गया और राजपूतों के क़ब्ज़े में चला गया। इस रख़्ने क़हक़री का सबब यह था कि 1388 ई0 में फीरोज़ शाह तुग़लक़ के इन्तेक़ाल पर जानशीनी के वक़्त उस के लड़कों में अर्सा तक निज़ाअ रहा सल्तनत में गड़बड़ मच गई और कुछ ऐसी ख़ानाजंगी बरपा रही कि बादशाहे देहली का इक़्तेदार सिर्फ देहली तक महदूद होकर रहगया 1397 ई0 में देहली के पुराने क़िलअे में सुल्तान महमूद ख़िलजी की हुकूमत थी और चन्द ही मील के फासले पर फीरोज़ाबाद में नुस्रत शाह मुद्दइये सल्तनत था यहाँ मुसल्मान बादशाह आपस में लड़ते रहे मैदान ख़ाली था राजगाने मेवाड़ ने अजमेर पर क़ब्ज़ा करलिया। अजमेर पर मेवाड़ की हुकूमत 55 बरस रही 1455 ई0 में मान्डो के बादशाह ने अजमेर लेलिया और 1505 ई0 तक अजमेर उस के ज़ेरे तसर्रुफो इक़्तेदार रहा उसी साल फिर राजगाने मेवाड़ ने अजमेर छीन लिया और वह 28 साल तक हुकूमत करते रहे मगर 1533 ई0 में सुल्ताने गुजरात ने एक ज़बरदस्त जंग के बाद अजमेर पर क़ब्ज़ा कर लिया 1534 ई0 में मार्वाड़ के राठौर ख़ान्दान का क़ब्ज़ा हो गया बीस बरस तक राठौरों की हुकूमत रही बिलआख़िर 1556 ई0 में अकबर बादशाह ने फतह करलिया और 1730 ई0 तक उस अलाक़े पर ख़ालिस इस्लामी हुकूमत रही।

अकबर बादशाह चूँकि सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का पक्का मोअतक़िद था वह 15 जुलूस में जब चौथी मरतबा अजमेर आया तो उस ने उस शहर को अज़सरे नौ तामीर किया शहरपनाह पुख़्ता ढाई गज़ चौड़ी तामीर कराई जिस का दौर 4047 गज़ था यह फसील शिकस्ता हालत में अब भी कहीं कहीं नज़र आती है उस में शहर में दाख़िल होने के चार दरवाज़े थे।

(1)शिमाल में देहली दरवाज़ा
(2)मश्रिक़ में मदार दरवाज़ा
(3)जुनूब में डिग्गी दरवाज़ा
(4)मग़्रिब में उत्तर पोलिया दरवाज़ा

बाद में आगरा दरवाज़ा और अस्री दरवाज़ाका भी इज़ाफ़ा किया। वस्ते शहर में एक क़िल्आ नुमा इमारत बनवाई जो दरअस्ल

बादशाही महल था और अब मेगज़ीन के नाम से मशहूर है। उसी ज़माने में देहली दरवाज़ा और दरगाहे हुज़ूर ग़रीब नवाज़ के जुनूबन व शिमालन दरगाह बाज़ार निहायत ख़ुश वज़अ तामीर कराया और अहातए दरगाह में एक आलीशान मस्जिद तामीर की जो अकबरी मस्जिद के नाम से अवामो ख़वास में मशहूर है।

अकबर के बाद मुग़ल बादशाहों के ज़माने में भी अजमेर तरक़्क़ी करता रहा। शहन्शाह जहाँगीर अकसर अजमेर में ही रहा करता था आगरा उस का बराए नाम तख़्तगाह था क़िल्आ तारागढ़ के दामन में दोपहाड़ों के बीच में एक ख़ुशनुमा वादी है जो चश्मए जहाँगीरी के नाम से जाना जाता है और यहाँ पहाड़ो से हरवक़्त आबशार जारी रहते हैं जहाँगीर ने यहाँ एक ख़ूबसूरत सैरगाह और एक नफ़ीस महल बनवाया जिस के खन्डरात अब भी कहीं कहीं मौजूद हैं।

जहाँगीर के बाद शाहजहाँ ने अजमेर को चार चाँद लगा दिए अना सागर तालाब पर संगे मरमर का एक आलीशान महल बनवाया उस महल का अकसर हिस्सा शिकस्ता हालत में अब भी मौजूद है और अहातए दरगाह शरीफ में एक आलीशान और ख़ूबसूरत मस्जिद तामीर कराई जो शाहजहानी मस्जिद के नाम से अब भी मौजूद है और मश्रिक़ी फने तामीर का एक नादिर तरीन शाहकार है।

औरंगज़ेब के इन्तेक़ाल के बाद सल्तनते मुग़लिया का ज़वाल शुरूअ हुआ 1639 ई0 में नादिर शाह के हम्ले ने मुग़लिया हुकूमत की रही सही ताक़त का भी ख़ातमा करदिया जो हाकिम जिस हिस्सए मुलक में था वह उस को दबा बैठा। अजमेर के क़रीब उस वक़्त जोधपूर के राठौर राजाओं की ताक़त उरूज पर थी। 1743 ई0 में उन्हों ने अजमेर को अपनी हुकूमत में शामिल करलिया। औरंगज़ेब की वफ़ात के बादमरहटों ने सर उठाया ग्वालियार के राजा सिन्धिया ने अजमेर पर हम्ला करदिया और 1756 ई0 से 1758 ई0 तक राठौर और सिन्धिया दानों की हुकूमत रही 1758 ई0 में राठौर बेदख़ल होगए मगर अजमेर पर 1787 ई0 तक मरहटों का तसल्लुत रहा 29 साल के बाद 1787 ई0 में राठौर फिर क़ाबिज़ होगए लेकिन चार साल के बाद ही 1791 ई0 में मरहटों ने फिर क़ब्ज़ा करलिया यह क़ब्ज़ा 1818 ई0 तक क़ाइम

रहा बिलआख़िर उस अहदनामे की बिना पर जो बाबूराव सिन्धिया से हुआ था अजमेर ईस्ट इन्डिया कम्पनी के क़ब्ज़े में चला गया। 1947 ई० तक अजमेर पर अंग्रेज़ों की हुकूमत रही 1947 ई० में हिन्दुस्तान अंग्रेज़ों के तसल्लुत से आज़ाद होगया और अजमेर आज कल आज़ाद हिन्दुस्तान का एक अहम तरीन शहर है जो सूबए राजिसथान के ज़ेरे नगीं है।

आप का मुक़द्दस ख़ान्दान

नाइबुन्नबी, सुल्तानुल हिन्द, अताए रसूल, ख़्वाजए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन हसन चिश्ती सन्जरी रदियल्लाहु तआला अन्हुके ख़ान्दानी हालात सरवरे आलम नूरे मुजस्सम हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लांहु तआला अलैहि वसल्लम से लेकर कई पुश्त नीचे तक जो किताबों में नज़र आते हैं वह इस अम्र के शाहिद हैं कि आप के आबा व अजदाद को इल्मो फ़ज़्ल, ज़ुहदो तक़वा, हक़तलबी, हक़शनासी और ख़ुदा रसी में ख़ास इम्तियाज़ हासिल रहा है और जिस तरह हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का शजरए नसब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तक कुफ़्रो शिर्क से पाको साफ़ है उसी तरह ख़्वाजए हिन्द का शजरए नसब सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से लेकर हज़रत ख़्वाजए बुज़ुर्ग तक शिर्को इर्तेदाद और कुफ़्रो मआसी की आलाइशों से मुनज़्ज़ा व मुबर्रा है बल्कि उसी ख़ान्दाने रिसालत में बाज़ ऐसे मशहूरे आलम इमाम भी हुए हैं जो इल्मो फ़ज़्ल और फ़क़्रो दुर्वेशी में यगानए रोज़गार थे। चूँकि ख़ुलफ़ाए अब्बासिया सादात को तरह तरह की तक्लीफ़ें पहुँचाया करते थे यही वजह गुमाने ग़ालिब है कि आप के आबा व अजदाद ने वतन से हिजरत करके दारुल ख़िलाफ़त (बग़दाद)से दूर सन्जर (वाक़ेअ सीसतान)में इक़ामत इख़्तियार फरमाई।

आप के वालिदे माजिद हज़रत इमाम हुसैन इब्ने अलीये मुर्तज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हुमा की औलाद में हैं और वालिदए

मुहतरमा हज़रत इमाम हसन इब्ने हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हुमा की औलाद में से हैं आप के वालिदे माजिद हज़रत सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन निहायत मुत्तक़ी व परहेज़गार थे। ख़ान्दानी शराफ़त के साथ साथ साहिबे दौलतो सरवत भी थे नीज़ फ़क़्रो दुर्वेशी की दौलत से भी मालामाल थे आप ने अपना सब कुछख़ुदा की राह में वक़्फ़ कर रखा थाऔर बेशुमार बन्दगाने ख़ुदा सुब्हो शाम उन से फ़ैज़याब होते थे। ग़रीबों, मिस्कीनों, हाजतमन्दों और मुसीबतज़दा लोगों केलिये आप की सख़ावतो फ़ैय्याज़ी के दरवाज़े हमेशा और हरवक़्त खुले रहते थे। वह एक बाकरामत बुज़ुर्ग थे और हरतब्क़े के लोगों में निहायत इज़्ज़तो एहतेराम की निगाहों से देखे जाते थे। आप ने 552 हि० में दुनिया से रिहलत फरमाई। मज़ारे पाक बग़दाद में बाबुश्शाम के नज़दीक आज तक मरजए ख़लाइक़ है।

ज़ैल के वाक़ेआत से आप के जद्दे अमजद सैय्यिद कमालुद्दीन ताहिर और वालिदे माजिद सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन की अज़मतो बुज़ुर्गी का अन्दाज़ा लगाया जासकता है।

वालिदे माजिद सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन

ईरान पर सल्जूक़ियों की सत्वत का परचम लहरा रहा था अरसलान अरग़ौन अलमे बग़ावत बलन्द करके जब ख़ुरासान पर क़ाबिज़ हुआ और अपनी ख़ुदमुख़्तार हुकूमत क़ाइम की तो सुल्तान बरकियारक़ सल्जूक़ी ने ख़ुरासानी बग़ावत को फरो करने केलिये अपने चचा बोरबरस को भेजा मगर उसे शिकस्ते फ़ाश हुई। बोरबरस अरसलान अरग़ौन के हाथों मारा गया। दूसरी मुहिम सुल्तान ने अपने भाई सन्जर की सरकिर्दगी में रवाना की। सन्जर बग़दाद से एक बड़ा लशकर लेकर मानिन्दे तूफ़ान ख़ुरासान की तरफ़ झपटा वह जल्द से जल्द अपनी सलाहियतों को सुल्तान पर आशकारा करना चाहता था मगर जब वह अस्फ़हान के क़रीब पहुँचा तो अचानक उस के लशकर में हैज़े की वबा फूट पड़ी सन्जर ने लशकर को क़ेयाम का हुक्म दिया और पाबन्दी लगादी कि लशकर से निकल कर कोई कहीं नहीं जाएगा और कहा कि।

" यह बात ईमानो अख़लाक़ के मुनाफ़ी है कि हमारे ज़रीए

बीमारी किसी और जगह मुन्तकिल हो। „

लशकर को केयाम किये हुए तीसरा दिन था वबा की लपेट में आकर सैकड़ों सिपाही हलाक हो चुके थे फौजी तबीब और उस का अमला भी लुक़्मए अजल बन चुका था। सन्जर को जब सातवीं कय हुई तो उसे इत्तेलाअ दी गई कि एक मुख़्तसर सा काफ़ला लशकर की तरफ आरहा है।

सन्जर ने कहा „ एक आदमी फौरन जाकर काफ़ले को इधर आने से रोके कहीं वह इस मूज़ी मरज़ का शिकार न होजाएं। „ एक फौजी ने जाकर उस काफ़ले वालों को सूरते हाल से आगाह किया और अमीरे लशकर का यह पैग़ाम दिया कि „ वह जल्द अज़ जल्द वहाँ से दूर निकल जाएं। „

काफ़ला रुक गया उन में से एक शख़्स ने फौजी से कहा „ अमीरे लशकर की ख़्वाहिश के मुताबिक़ हम ज़रूर अपना सफर जारी रखेंगे लेकिन मैं तन्हा तुम्हारे साथ चलूँगा और अमीर का शुक्रिया अदा करके लौट आऊँगा यह नामुम्किन है कि उस अज़ीमुश्शान शख़्सियत की ज़ियारत न करूँ जो मौत के मुँह में पहुँचने के बावजूद दूसरों की भलाई और ख़ैरख़्वाही से ग़ाफिल नहीं है। „

फौजी ने बहुत रोका मगर मुख़्तसर काफ़ले का यह दुर्वेश सिफत जवान सन्जर की अयादत को पहुँच गया। सन्जर के चेहरे की चमक दमक उस का मरज़ चाट गया था उस ने इन्तेहाई कम्ज़ोर आवाज़ में कहा। „ आप ने यहाँ आकर अक़लमन्दी का सुबूत नहीं दिया। „

मैं „अयादत केलिये आया हूँ और अयादत सुन्नते रसूल है मौत और ज़िन्दगी अल्लाह के हाथ में है आप थोड़ा सा पानी मंगवाएं। „

पानी पेश किया गया, नव वारिद हाफिज़े कुर्आन ने पानी पर कलामे इलाही पढ़ कर दम किया „ इसे बहुत से पानी में मिलाकर सारे लशकर को पिलाओ अल्लाह शिफा देने वाला है „ नव वारिद दुर्वेश ने कहा।

पानी लशकरियों को पिलाया जाने लगा तो नव वारिद सजदे में गिर गया और जब वह तवील सजदे से फारिग़ हुआ तो अल्लाह के फज़्ल से वबा के आसार तक लशकर में बाकी न थे।

सन्जर की तबीअत भी बहाल थी उस ने कहा „ मैं किस ज़बान से आप का शुक्रिया अदा करूँ। „

नव वारिद ने कहा „ यह बात कहकर शुक्र के मौक़ा को ज़ाएअ न करो तमाम लशकर को हुक्म दो कि शुक्र का दुगाना अदा करे। „

थोड़ी देर बाद ही बीस हज़ार अफराद अपने रब के हुजूर सरबसुजूद थे नमाज़ से फरागत के बाद सन्जर ने दरयाफ्त किया „ आप कहाँ से आरहे हैं और कौन हैं। „

„ मैं संजिस्तान के एक क़स्बा सन्जर से आरहा हूँ वही मेरा मौलद है नाम ग़यासुद्दीन हसन है और सरेदस्त मन्ज़िल मेरी नीशापूर है। „

जद्दे अमजद ख़्वाजा सैय्यिद कमालुद्दीन ताहिर

सन्जर का नाम सुन कर अमीरे लशकर का चेहरा फर्ते मसर्रत से दमकने लगा कुछ तवक़्कुफ के बाद उस ने कहा „ इस का मक़सद यह हुआ कि हमारे ख़ान्दान पर अहले सन्जर का यह दूसरा एहसान है। दूसरे एहसान का सुबूत तो मेरे चराग़े हयात की रौशनी है। पहले एहसान के हालात मैं ने अपने वालिद अलमलिकुल आदिल मलिक शाह सल्जूक़ी से सुने थे। 479 हि0 में मेरे वालिद हलब में इब्नुल हैतती से नबर्द आज़मा होना चाहते थे उस नबर्दआज़माई के नतीजे में हज़ारों मुसल्मानों की हलाकत लाज़मी थी उस मौक़े पर सन्जर के एक बुज़ुर्ग ख़्वाजा सैय्यिद कमालुद्दीन ताहिर ने वालिये हलब इब्नुल हैतती को इस्लाम के वसीअतर मफादात केलिये इस बात पर आमादा करलिया कि वह सुल्तान की इताअत करके हलब से दस्त बर्दार हो जाए नतीजतन सुल्तान भी इब्नुल हैतती की तरह ख़्वाजा सैय्यिद कमालुद्दीन ताहिर के मोअतक़िद होगए और उन्हीं की याद ज़िन्दा रखने केलिये मेरे वालिद ने मेरा नाम सन्जर रखा। „

ख़्वाजा सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन ने यह बात सुनकर तबस्सुम फरमाया और कहा „ वाक़ई यह अजीब हुस्ने इत्तेफाक़ है कि तुम्हारे वालिद से जिन बुज़ुर्ग की मुलाक़ात वह मेरे वालिद थे। „

ख़्वाजा सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन वहाँ से रुख़्सत होकर अपने रुफ़क़ा के साथ नीशापूर पहुँचे। सब ने अपनी ज़रूरत के

मुताबिक़ ख़रीदो फरोख़्त की और बख़ैरो ख़ूबी सन्जर वापस आगए।

वालिंदे माजिद की शादी

ख़्वाजा सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन अपनी वालिदाए माजिदा के साथ एक आसूदा ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे एक पनचक्की और एक बाग़ की आमदनी उन केलिये बहुत काफ़ी थी आप हाफ़िज़े क़ुर्आन थे बसती के बच्चों को क़ुर्आने हकीम की तालीम देना और जवानों में दीनी ज़ौक़ को बेदार रखने की मुसलसल जिद्दो जहद आप के महबूब मशाग़िल थे। वालिदा की ख़िदमत में हरवक़्त कमरबस्ता रहना और उन की हर बात के सामने सरे तस्लीम ख़म करदेना उन का मिज़ाज बन गया था।

एक दिन वालिदा ने कहा „ बेटे ! मैं जानती हूँ कि तुम मेरे आराम की ख़ातिर कितनी मेहनत करते हो मगर मेरे आराम में एक रुकावट है जिस से मेरे दिल में एक काँटा सा चुभा हुआ है जब तक तुम शादी न करलोगे मैं सुकून हासिल न कर सकूँगी। „

आप माँ की यह बात सुनकर तड़प उठे और अर्ज़गुज़ार हुए „ मैं ने आज तक आप की नाफ़रमानी का कभी तसव्वुर तक नहीं किया है आप मुख़्तार हैं आप की ख़ुशनूदी केलिये मैं शादी से भी इन्कार नहीं करूँगा। „

वालिदा ने बेटे से मशवरे के बाद बुस्त के एक मुअज़्ज़ज़ ख़ान्दान में जो हसनी सादात से थे रिश्ता तय करके शादी करदी। ख़्वाजा सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन के ख़ुस्र का नाम अललामा दाऊद इब्ने अब्दुल्लाह हंबली था।

हज़रत ख़्वाजा ग़यासुद्दीन हसन की ज़ौजए मुहतरमा और हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन अलमाअरूफ़ ब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की वालिदए माजिदा बी बी माहेनूर भी हाफ़िज़े क़ुर्आन और इन्तेहाई आबिदा व ज़ाहिदा ख़ातून थीं। बहुत ही ख़ुदा तर्स और सख़ावत पसन्द थीं आप की कुन्नियत „ उम्मुल वरअ „ और लक़ब „ ख़ासुल मलिका „ था।

जाए विलादत

„सैरुल औलिया, दलीलुल आरिफ़ीन और हज़रत ख़्वाजा

ग़रीब नवाज़ की मुरत्तब कर्दा गन्जे असरार और अनीसुल अर्वाह „ में आप को सिर्फ़ सन्जरी लिखा गया है मगर बाद की मुख़्तलिफ़ रिवायात से पता चलता है कि ऐसे सन्जर तीन हैं जिन को मुख़्तलिफ़ तज़्किरा नवीसों ने मुख़्तलिफ़ पतों के साथ आप का मौलद लिखा है।

एक सन्जर एशियाए कोचक में बताया गया है जिसे मूसल से तीन दिन की राह पर बताया गया है। बाज़ ने सन्जार लिखा है और उसे इराक़ में बग़दाद से सात दिन की राह पर बताया है मगर मुहक़्क़िक़ीन के नज़दीक यह मक़ाम ग़रीब नवाज़ का मौलद नहीं अल्बत्ता शैख़ नज्मुद्दीन कुब्रा से हज़रते ख़्वाजा की मुलाक़ात का मक़ाम है।

दूसरा सन्जर सीस्तान में बताया गया है साहिबे सैरुल आरिफ़ीन ने आप का मौलद सजिस्तान लिखा है, साहिबे मसालिकुस्सालिकीन ने अपनी किताब की जिल्द दोम में सजिस्तान को सीसतान का मुअर्रब बताया है और उस का मुख़फ़्फ़फ़ बफ़त्हे सीन व सुकूने जीम व ज़ाए मुअज्जमा याअनी सजज़(स,ज,ज़) लिखा है। आईने अकबरी जिल्द दोम में मरक़ूम है कि ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती क़स्बा सन–जर में जो सीसतान से मुतअल्लिक़ है पैदा हुए। साहिबे सैरुल अक़्ताब ने ग़ालिबन उसी को सन्जरिस्तान लिखा है मगर उसे ग़रीब नवाज़ का मौलद तस्लीम नहीं किया बल्कि उसे आबा व अजदाद की जाए सुकूनत क़रार दिया है लिहाज़ा यह भी ख़्वाजए बुज़ुर्ग का मौलद नहीं बल्कि वह आप के आबा व अजदाद की जाए सुकूनत है।

तीसरा सन्जर अस्फ़हान के नज़दीक बताया गया है। बाज़ ने अस्फ़हान को बाज़ ने सन्जर मुत्तसिले अस्फ़हान को मौलदे ग़रीब नवाज़ लिखा है। बाद के मुहक़्क़िक़ीन ने सन्जर को अस्फ़हान का एक मुहल्ला तस्लीम किया है। साहिबे सैरुल अक़्ताब ने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का मौलद अस्फ़हान लिखा है जिस का दूसरा नाम सफ़ाहान भी है। इन रिवायात के पेशे नज़र क़रीने क़यास है कि हज़रत ख़्वाजा के वालिद ने अपने आबाई वतन सन्जर (वाक़ेअ सीसतान) से हिजरत करके अस्फ़हान के मुज़ाफ़ाती मुहल्ला सन्जर में इक़ामत इख़्तियार करली हो चूँकि यह ख़ान्दाने रिसालत सीसतानी सन्जर की निस्बते मकानी की वजह से सन्जरी कहलाता

था इस लिये अस्फहान में यह मक़ामे सुकूनत भी इस निस्बत से सन्जर कहलाने लगा यहीं हज़रत ख़्वाजा की विलादत हुई और उसी निस्बते मकानी की वजह से आप सन्जरी कहलाते हैं।

चिश्ती और अजमेरी से शोहरत

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू हिन्दो पाक के अवामो ख़वास और अक़ीदत मन्दों में „ सन्जरी „ की बजाय, चिश्ती या अजमेरी की निसबत से मशहूर हैं अजमेरी की शोहरत इस लिये हुई कि आप ने अपनी उम्र के चालीस साल अजमेर शरीफ में गुज़ारे और आप ने अजमेर को अपना वतने सानी बना लिया था लेकिन चिश्ती से मशहूर होने की वजह यह है कि आप सिलसिलए चिश्तिया के अज़ीमुल मरतबत बुज़ुर्ग हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी चिश्ती रहमतुल्लाहि तआला अलैह से शरफे बैअत रखते थे और आप के मशाइख़े सिलसिला भी चिश्ती कहलाते थे जिस की इब्तेदा हज़रत ख़्वाजा अबू इसहाक़ शामी से हुई जिन को उन के पीरो मुर्शिद ने इस निस्बते ख़ास का तुहफा अता फरमाया था इस लिये इस सिलसिले के तमाम मशाइख़ चिश्ती कहलाए और चूँकि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ भी उसी सिलसिले से तअल्लुक़ रखते थे इस लिये आप के नाम के साथ लफ्ज़े चिशती ऐसा जुड़ गया कि गोया आप के नाम का जुज़ बन गया और सारी दुन्या में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ चिशती के नाम से मशहूर होगए।

„ चिश्त „ ख़ुरासान का एक मशहूर शहर है जो हिरात से तीस कोस के फासले पर वाक़ेअ है जो अब शाक़िलान के नाम से जाना जाता है वहाँ कुछ अहले दिल और अरबाबे तरीक़त ने रुश्दो हिदायत और इस्लाहो तरबियत का मरकज़ क़ाइम किया वही निज़ामे तरबियतो हिदायत उस मक़ाम की निस्बत से सिलसिलए चिश्तिया कहलाने लगा और जैसा कि ऊपर मज़कूर हुआ कि इस निज़ाम के सरख़ैल व मुक़्तदा शैख़ अबू इसहाक़ शामी थे जो मुल्के शाम के मशाइख़े किबार में से गुज़रे हैं आप का मज़ारे मुबारक शहर अक्का में है जो मम्लुकते शाम में वाक़ेअ है। आप के पीरो मुर्शिद ने हल्क़ए इरादत में दाख़िल फरमाकर तरबियत के बाद

आप को चिश्त भेज दिया। शैख़ अबू इसहाक़ शामी चिश्त तशरीफ लेगए और मख़लूक़े ख़ुदा को फैज़ पहुँचाया बिलखुसूस आप के मुरीदो ख़लीफा और ख़्वाजा अबू मुहम्मद अब्दाल चिश्ती के वालिदो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा अबू अहमद चिश्ती व दीगर बुज़ुर्गाने चिश्त ने आप से कसबे फुयूज़ो बरकात किया इसी तअल्लुक़े ख़ास के सबब आप के मुर्शिद ने आप को चिश्त की निस्बते मकानी से मनसूब करते हुए चिश्ती फरमाया । इस तरह आप सिलसिलए चिश्तिया के बानीये अव्वल क़रार पाए और बाद में यह निस्बते मकानी एक सिलसिलए तरीक़त बन गई और इस सिलसिलए तरीक़त में बैअत होने वाले तमाम बुज़ुर्गाने दीन चिश्ती कहलाने लगे हिन्दुस्तान में इस सिलसिले की ख़िश्ते अव्वल हज़रत सैय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हैं और आप से मनसूब अनगिनत बुज़ुर्गाने दीन मुल्क के गोशे गोशे में तब्लीग़े दीन और रुश्दो हिदायत के काम में मशग़ूल हुए और इस सिलसिले को फरोग़ देने केलिये मुतऐय्यन हुए चुनाँचे आज भी मुल्क के बेशतर अलाक़ों में इस सिलसिले की तशहीरो इशाअत की ख़िदमात अन्जाम पा रही हैं।

नसबनामए पेदरी

मुईनुल अर्वाह के मुसन्निफ ने सुल्तानुल हिन्द हज़रत सैय्यिदुना सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु का नसबनामए पेदरी मुतअद्दिद कुतुबे तारीख़ो सेयर के हवालों से इस तरह तहरीर किया है।

ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन बिन ख़्वाजा सैय्यिद ग़यासुद्दीन बिन सैय्यिद सिराजुद्दीन बिन सैय्यिद अब्दुल्लाह बिन सैय्यिद अब्दुल करीम बिन सैय्यिद अब्दुर्रहमान बिन सैय्यिद अली अकबर बिन सैय्यिद इब्राहीम बिन इमाम मूसा काज़िम बिन इमाम जाअफर सादिक़ बिन इमाम मुहम्मद बाक़िर बिन इमाम ज़ैनुल आबिदीन बिन सैय्यिदुश्शुहदा हज़रत इमाम हुसैन बिन हज़रत सैय्यिदुना अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम व रदियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

साहिबे मिर्आतुल अस्रार ने आप का शजरए नसब यूँ बयान किया है।

ख़्वाजा मुईनुद्दीन बिन ख़्वाजा सैय्यिद ग़यासुद्दीन बिन ख़्वाजा नजमुद्दीन ताहिर बिन सैय्यिद अब्दुल अज़ीज़ बिन सैय्यिद इब्राहीम बिन सैय्यद इद्रीस बिन सैय्यिदुना इमाम मूसा काज़िम रदियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

दर्ज किये गए पहले शजरे के मुताबिक़ हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का सिलसिलए नसब बारह वास्तों से हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम तक पहुँचता है और दूसरे शजरे के मुताबिक़ दस वास्तों से हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु तक पहुँचता है इस तरह हज़रत सरकार ग़रीब नवाज़ का सिलसिलए नसब हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा के ज़रीआ रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से जा मिलता है।

नसबनामए मादरी

आप की वालिदए मुकर्रमा की तरफ से आप का नसबनामा इस तरह बयान किया जाता है।

हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन बिन बी बी उम्मुल वरअ माहे नूर या बी बी ख़ासुल मलिका बिन्ते सैय्यिद दाऊद बिन सैय्यिद अब्दुललाह हंबली बिन सैय्यिद ज़ाहिद बिन सैय्यिद मूरिस बिन सैय्यिद दाऊद बिन सैय्यिद मूसा जून बिन सैय्यिद अब्दुल्लाह महज़ बिन सैय्यिद हसन मुसन्ना बिन हज़रत सैय्यिदुना इमाम हसन मुजतबा बिन सैय्यिदुना अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम व रदियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

मज़कूरा शजरे के मुताबिक़ आप की वालिदए मुकर्रमा का सिलसिलए नसब नौ वास्तों से हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा से मिलता है। पेदरी नसबनामा सैय्यिदुश्शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु और मादरी नसबनामा हज़रत सैय्यिदुना इमाम हसन मुजतबा से होकर हज़रत अली, फ़ातिमतुज़्ज़हरा और रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तक पहुँचता है। इस तरह सावित हुआ कि आप हसनी हुसैनी नजीबुत्तरफ़ैन सैय्यिद और औलादे रसूल हैं।

सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु से क़राबत

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु का

मादरी नसबनामा " मसालिकुस्सालिकीन " के हवाले के मुताबिक़ सैय्यिदुना शैख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी बग़दादी (सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु)हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह हंबली के पोते हैं और हज़रत सैय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु की वालिदए मुहतरमा बी बी माहे नूर रहमतुल्लाहि अलैहा हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह हंबली की पोती हैं और इन दोनों के वालिद आपस में हक़ीक़ी भाई हैं याअनी सरकारे ग़रीब नवाज़ की वालिदए माजिदा सरकारे ग़ौसे आज़म की चचाज़ाद बहन हैं इस रिश्ते से सरकारे ग़ौसे आज़म सरकारे ग़रीब नवाज़ के मामूँ होते हैं।बग़दाद शरीफ में आम तौर पर मशहूर है और साहिबे मसालिकुस्सालिकीन ने अपनी किताब की जिल्द दोम के सफ़हा 271 पर तहरीर फरमाया है कि ग़रीब नवाज़ और ग़ौसे पाक (रदियल्लाहु तआला अन्हुमा) आपस में ख़ालाज़ाद भाई हैं इन दोनों रिश्तों की मुताबक़त इस तरह हो जाती है कि हज़रत सरकार ग़रीब नवाज़ की वालिदए मुहतरमा हज़रत सरकार ग़ौसे पाक की ननिहाली रिश्ते में ख़ाला और ददिहाली रिश्ते में बहन हैं इस लिये ग़ौसे पाक ग़रीब नवाज़ के ख़ालाज़ाद भाई और मामूँ भी होते हैं।

हुलिया शरीफ

तारीख़ो सेयर की मुतअद्दिद किताबों में हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू का हुलिया शरीफ इस तरह तहरीर किया गया है जिस से आप का मुक़द्दस सरापा निगाहों के सामने आजाता है।

सुर्ख़ो सफेद रंग, दराज़ क़द, मौज़ूँ जिस्म, मुतनासिब आअज़ा, चौड़े शाने, कुशादा पेशानी, बड़ी लम्बोतरी आँखें, सुत्वाँ नाक, भरी हुई सफ़ेद डाढ़ी, लबो पर रक़्स करता तबस्सुम, लोगों का रौशन कर देने वाला पुरनूर चेहरए अक़्दस, चलने में मतानतो वक़ार, उठने बैठने में एक इन्फेरादी शान और बात चीत का अन्दाज़ निहायत शीरीं और पुरकशिश। ग़रज़ आप रंगो रूप नाक नक़्शे, चाल ढाल, वज़अ क़तअ और ज़ाहिरो बातिन हर लेहाज़ से हसीन, ख़ूबसूरत और जाज़िबे निगाह थे।

आफ़ताबे विलायत की जल्वा नुमाई

537 हि0 में रजबुल मुरज्जब का चाँद 13 तारीख़ को अपनी मन्ज़िले कमाल तक पहुँचा सन्जर की बस्ती के लोग चैन की नींद सो रहे थे। रात की दहलीज़ पर तीसरे पहर ने दस्तक दी और तहज्जुद गुज़ारों की आँख खुल गई जागने वाले सुब्हे सादिक़ जैसा उजाला देख कर चौंक पड़े गुमान यह गुज़रा कि आज नमाज़े तहज्जुद क़ज़ा हो गई घबरा कर खुली फ़ज़ा में निकल आए तो देखा कि एक शुआऐ नूर आसमान की बेकराँ रिफ़अतों से ख़ते मुस्तक़ीम बनाए हुए ख़्वाजा सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन के दौलतकदे पर मुर्तकिज़ है उसी की रौशनी ने सुब्ह का समाँ पैदा कर रखा है।

यह हैरतनाक मन्ज़र तहज्जुद गुज़ारों के ज़ौक़े तजस्सुस को बेदार करके उन्हे कशाँ कशाँ मीनारए नूर तक लेगया। वहाँ पहुँचे तो एक नव मौलूद बच्चे की पहली आवाज़ ने उन की समाअतों के दामन पर फूल बरसाए। ख़्वाजा सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन बाहर चबूतरे पर सरबसुजूद थे क्यूँकि नेअमतों का शुक्र अदा करने केलिये सज्दे से बेहतर बारगाहे नईम केलिये बन्दे के पास कोई नज़राना है भी तो नहीं। दाया ने आकर विलादते फरज़न्द की ख़ुशख़बरी दी तो हाज़िरीन ने मुबारकबाद पेश की।

नमाज़े फज्र के बाद पूरी बस्ती में सिक़ह रावियों ने रात के मुशाहदे की तफ़सीलात बयान करके यह मुबारक ख़बर सुनाई कि अल्लाह के एक बरगुज़ीदा बन्दे की विलादत ने सन्जर की क़िस्मत जगा दी है शाम तक हसनी हुसैनी बाग़ के उस गुले नव शगुफ्ता की ज़ियारत केलिये भीड़ लग गई।

क़त्अए तारीख़े विलादते बासआदत

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के सने विलादत में तारीख़ नवीसों और तज़्किरा निगारों के बड़े इख़्तिलाफ़ात है मगर ज़ियादा तर मुवर्रिख़ीन का इस अम्र पर इत्तेफ़ाक़ है कि आप की विलादते बासआदत 14 रजबुलमुरज्जब 537 हि0 दोशंबा के दिन सुब्हे सादिक़ के रूहपरवर उजाले में हुई।

आप का मक़ामे विलादत सन्जर है जिस की तफ़सील गुज़श्ता सफ़हात में गुज़र चुकी है। सरवर नाम के किसी शाइर ने आप का साले विलादत दर्जे ज़ैल मिस्रों में नज़्म कियाहै। :

सैय्यिदे आलम मुईनुद्दीं वली
मुक़्तदा ए दीं शहे हिन्दूसताँ
साले तौलीदश बुगो „बदरुल मुनीर „(537 हि0)
बाज़ सरवर „ आरिफ़े सूफ़ी बख़्वाँ „(537 हि0)

„बदरुल मुनीर „ और „ आरिफ़े सूफ़ी „दानों के अलग अलग आदाद 537 हैं।

शिकमे मादर में कलिमए तैय्यिबा का विर्द

आप की वालिदए मुहतरमा हज़रत सैय्यिदा बी बी उम्मुल वरअ माहे नूर रहमतुल्लाहि अलैहा से रिवायत है कि जिस वक़्त से मुईनुद्दीन हसन के जिस्मे मुबारक में रूह डाली गई उस वक़्त से पैदाइश तक आप का माअमूल यह रहा कि निस्फ़ शब से दिन चढ़ने तक आप कलिमए तैय्यिबा „ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का ज़िक्र फरमाया करते थे और मैं अपने कानों से आप के ज़िक्र की आवाज़ सुना करती थी। मज़ीद आप फरमाती हैं कि मुईनुद्दीन हसन सुल्बे पिदर से मेरे शिकम में मुन्तक़िल हुए तो अल्लाह तआला ने ख़ैरो बरकात के दरवाज़े खोल दिये हमारे घर में ख़ैरो बरकत की फरावानी व कसरत हो गई और हमारा दिल इतमीनानो सुरूर से लब्रेज़ो माअमूर हो गया।

अक़्ताबो अब्दाल की मुबारकबाद

आप की वालिदए माजिदा फरमाती हैं कि जिस पुरनूर व दरख़्शाँ सुब्ह को मुईनुद्दीन हसन की फरहत अफ़ज़ा विलादते मुबारका हुई हमारे घर में एक अजीब सा नूर फैल गया और मैं ने अपने इर्द गिर्द बहुत सी नूरानी सूरतें देखीं। थोड़ी देर के बाद यह मन्ज़र-निगाहों से ओझल हो गया। फिर मैं ने अपने नव मौलूद बच्चे की तरफ नज़र की तो यह देख कर हैरान रह गई कि वह सज्दे में पड़ा है। मैं ने उसे प्यार से उठाकर अपनी गोद में लेलिया फिर जब ऊपर निगाह उठाई तो हज़ारों नूरानी सूरत और

हसीन चेहरे वालों को परे बाँधे हुए देखा जिन के फाख़िरा लिबासों से सुरूर अंगेज़ ख़ुश्बू की लप्टें आरही थीं मैं हैरत में थी कि यह कौन लोग हैं इतने में उन में से एक शख़्स ने मुझे मुख़ातब करते हुए कहा। :

„ ऐ ख़ातून! मुबारक हो कि आज तेरे घर मुईनुद्दीन की विलादत हुई हम लोग इस दौर के अक़्ताबो अब्दाल हैं और तुझे मुबारकबाद और ख़ुशख़बरी देने आए हैं। „

उस के बाद यह हज़रात निगाहों से रूपोश हो गए।

आप का इस्मे गिरामी

दूसरे दिन अक़ीक़ा के बाद जब नव मौलूद का नाम रखने केलिये ख़्वाजा सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन ने अपनी अहलिया उम्मुल वरअ से मशवरा किया तो उन्हों ने कहा „ बच्चे का नाम उस की पैदाइश से पहले कई बुज़ुर्ग ख़्वाब में आकर बता चुके हैं इस लिये इस का नाम „ ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन „ ही तजवीज़ किया जाए।बुज़ुर्गों के इर्शादात के मुताबिक़ यह अल्लाह की अमानत है इस की तरबियतो निगहदारी हमारे लिये बाइसे रहमत साबित होगी। „

मक़्बूले आम ख़िताबात

मुसन्निफे „मुईनुल अर्वाह „ ने सुल्तानुल हिन्द सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू के ख़िताबात व अल्क़ाब के मुतअल्लिक़ तहरीर फ़रमाया है कि। :

„ आप को दरबारे रिसालत से „ क़ुतबो मशाइख़िल बर्रि वलबहरि „ का ख़िताब अता हुआ और मख़्लूक़ आप की ख़ुसूसियात से मुतअस्सिर होकर आप को मुतअद्दिद ख़िताबात व अल्क़ाब से याद करने लगी उन में से बाज़ दर्जे ज़ैल हैं।

हिन्दुलवली, अताए रसूल, ख़्वाजए ख़्वाजगाँ, ख़्वाजए बुज़ुर्ग, ग़रीब नवाज़, सुल्तानुल हिन्द, नाइबे रसूल फिल हिन्द वग़ैरह। „

मुक़द्दस अल्क़ाब

आप के फ़ज़ाइलो कमालात और इल्मी व रूहानी इम्तियाज़ात के सबब आप को मुन्दरिजए ज़ैल अल्क़ाब से भी याद किया जाता

है।

मुईनुल हक़, मुईनुल मिल्लति वद्दीन, सुल्तानुल आरिफ़ीन, क़ुतबे दौराँ, वारिसुल अंबिया वलमुर्सलीन, मुहिब्बे औलियाए ज़माँ, इमामे शरीअतो तरीक़त, मख़्ज़ने माअरिफ़त, वाक़िफ़े रुमूज़े सोवरी व माअनवी, मुक़्तदाए अर्बाबे दीं, पेशवाए अर्बाबे यक़ीं, साहिबे अस्रार, आलिमे इल्मे ज़ाहिरी व बातिनी, क़ुदवतुस्सालिकीं, ताजुल मुक़र्रबीन वलमुहक़्क़िक़ीन, सैय्यिदुल आबिदीन, इमामुल आरिफ़ीन, रहनुमाए कामिलीन, ताजुल आशिक़ीन, बुर्हानुल वासिलीन वग़ैरह।

शीरख़्वारगी और अहदे तिफ़ली के ज़रीं वाक़ेआत

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू से आलमे शीरख़्वारगी में ही करामतों का ज़ुहूर होने लगा था। बयान किया जाता है कि जब कोई औरत अपना बच्चा लेकर आप के घर आती और वह बच्चा दूध केलिये रोने लगता तो आप अपनी वालिदए मुहतरमा की जानिब इशारा करते आप की वालिदा आप का इशारा समझ जातीं और उस बच्चे को अपना दूध पिला देतीं इस पर आप बहुत ख़ुश होकर फ़र्ते मसर्रत से मुस्कुराने लगते।

जब आप की उम्र शरीफ़ तीन साल की हुई तो अकसरो बेश्तर बाहर से अपने हमउम्र बच्चों को बुलाकर घर लेआते और उन्हें इन्तेहाई महब्बत के साथ बिठाकर खाना खिलाते जब वह आसूदा होजाते तो आप बेपनाह मसर्रत महसूस फ़रमाते।

ग़रीब नवाज़ी का एक रिक़्क़त आमेज़ वाक़ेआ

ईद का दिन था हरतरफ़ मसर्रतो शादमानी का माहौल था सरकार ग़रीब नवाज़ के बचपन का ज़माना था आप अपने घरवालों के हमराह निहायत उम्दा और नफ़ीस लिबास ज़ेबे तन फ़रमाकर नमाज़े ईद केलिये ईदगाह जारहे थे। रास्ते में एक नाबीना लड़के को फटे पुराने कपड़े में मल्बूस देखा। सरकार ग़रीब नवाज़ को उस की ग़रीबी और लाचारी पर बहुत दुख हुआ नतीजे के तौर पर आप ने अपना ख़ूबसूरत और क़ीमती लिबास उस ग़रीब नाबीना

लड़के को पहना दिया और खुद दूसरे कपड़े पहनकर उसे अपने साथ ईदगाह लेगए।

मज़्कूरा बाला वाक़ेआत की रौशनी में यह अन्दाज़ा लगाना आसान है कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन हसन चिश्ती अजमेरी रदियल्लाहु तआला अन्हु बचपन, अहदे तिफ़ली और शीरख़्वारगी में ही नहीं बल्कि ख़लक़ी और पैदाइशी ग़रीब नवाज़ थे और यह सिफ़ते ख़ास आप की हयाते ज़ाहिरी तक ही नहीं बल्कि बादे विसाल भी. आप से कभी किसी हाल में जुदा न होसकी। चुनाँचे आज भी आप उसी तरह ग़रीबों, मजबुरों, बेकसों, मज़्लूमों और बेसहारों को नज़दीको दूर से खूब खूब नवाज़ते हैं और इनशाअल्लाहु तआला क़ेयामत तक हम ग़रीबों केलिये आप ग़रीब नवाज़ रहेंगे।

बचपन में लहवो लइब से दूरी

आप आम बच्चों की तरह कभी अपने हमउम्र बच्चों के साथ खेल कूद में शरीक नहीं हुए और न कभी आवारा, आज़ाद, बदज़ुबान और गन्दे बच्चों की सुहबत इख़्तियार की „होनहार बिर्वा के चिकने चिकने पात „ की कहावत आप पर पूरी तरह सादिक़ आती है। इस में वालिदैन और घरवालों की सिफ़तों के असरात, उन की तरबियतो निगरानी के साथ साथ परवरदिगारे आलम के खुसूसी फ़ज़्लो एहसाम और इन्आमो इकराम की पाको पाकीज़ा रंगआमेज़ी व असर आफ़रीनी थी। :

बालाए सरश ज़े होशमन्दी
मी ताफ़्त सितारए बलन्दी

ईं सआदत बज़ोरे बाज़ू नेस्त
ता न बख़्शद ख़ुदा ए बख़्शिन्दा

मुरव्वजा तालीम का आग़ाज़ और वालिदे माजिद का इन्तेक़ाल

दादी साहिबा पोते पर फ़िदा थीं मगर उस की पाँच बहारों

से ज़ियादा न देख सकीं। माँ बाप दोनों हाफ़िज़े क़ुर्आन थे तालीम की ज़िम्मेदारी खुद ही क़ुबूल की चौदह साल की उम्र में ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन ने क़ुर्आन हिफ़्ज़ कर लिया क़ुर्आने हकीम की तिलावत का शौक़ उन्हें वरसे में मिला था आलिमे बाअमल बाप ने अरबी व फ़ारसी की मुरव्वजा तालीम का आग़ाज़ करदिया मगर वह उस की तक्मील न करसके और 552 हि० में हज़रत ख़्वाजा को खुदा की पनाह में देकर राहिये मुल्के बक़ा हो गए।

वालिदए माजिदा का विसाल

वालिदे माजिद की मौत को हज़रत ख़्वाजा ने अल्लाह की रज़ा जान कर क़ुबूल करलिया और माँ को किसी क़िस्म की तक्लीफ़ का सामना न करने दिया क्यूँकि आप ने अपने वालिद के सारे मआशी और तदरीसी उमूर बहुस्नो ख़ूबी संभाल लिये। अभी वालिद के इन्तेक़ाल को दो साल हुए थे कि वालिदए मुहतरमा का सायए आतफ़त भी सर से उठ गया। आप ने कज़ा व क़द्र का यह फ़ैसला भी सब्रो इस्तिक़लाल से क़ुबूल करलिया और माअमूलात में कोई फ़र्क़ न आने दिया।

आप के भाई और बहन

हज़रत बी बी माहे नूर „ उम्मुल वरअ „ ख़ासुल मलिका के शिकमे पाक से सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू के दो भाई भी थे लेकिन उन के हालात किताबों में नहीं मिलते एक बहन भी थीं उन के बेटे हज़रत ख़्वाजा अली सन्जरी अपने वक़्त के मशहूर सूफ़ी बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हज़रत ख़्वाजा अलैहिर्रहमह से बैअत थे और आप के ख़लीफ़ा व मुजाज़ भी थे।

वालिदे माजिद के इन्तेक़ाल से मुतअल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़वाल

सरकारे ख़्वाजा ग़रीव नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की इब्तेदाई तालीम घर पर हुई उस के बाद सन्जर के मेअयारी मदरसे में तफ़सीर, हदीस और फ़िक़्ह की तालीम मुकम्मल हुई। जब आप की

उम्र ग्यारह साल और बाज़ रिवायतों के मुताबिक़ बारह या पन्द्रह बरस की हुई तो आप के वालिदे माजिद हज़रत सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन कुदि स सिर्रुहू ने दाइये अजल को लब्बैक कहा और आलमे जावेदानी की तरफ रिहलत फरमा गए। इस तरह आप सने शऊर का पहुँचने से पहले ही सायए पेदरी से महरूम होगए। एक रिवायत के मुताबिक़ गरदिशे रोज़गार और इन्क़ेलाबे हुकूमत के सबब से हज़रत सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन अपने अहलो अयाल के साथ इराक़ की तरफ हिज़रत फ़रमा गए थे जहाँ के हालात निस्बतन पुरसुकून थे इराक़ ही में उन का विसाल हुआ और वहीं मदफून हैं।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अपने वालिदे माजिद की वफात के बाद अपनी वालिदा और दो भाइयों नीज़ बहन के साथ वतन वापस तशरीफ ले आए लेकिन दूसरी रिवायतों से पता चलता है कि हज़रत सैय्यिदुना ख़्वाजा सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन का इन्तेक़ाल सन्जर ही में हुआ। एक रिवायत यह भी है कि आप के वालिदे बुज़ुर्गवार हज़रत सैय्यिदुना ख़्वाजा ग़यासुद्दीन हसन का विसाल उस वक़्त हुआ जब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की उम्र शरीफ चौदह (14)साल की थी और उन का मज़ार शरीफ बग़दाद में होना साबित किया गया है इस लिये कि वह आख़री ज़माने में बग़दाद शरीफ तशरीफ लेगए थे।

तर्कए पेदरी

यूँ तो आप के वालिदे माजिद एक मुतमव्वल और साहिबे सर्वत होने के साथ साथ साहिबे इल्मो फज़्ल और ज़ाहिदो मुत्तक़ी इन्सान थे मगर हालात की नासाज़गारी और तर्के मकानी के सबब आख़िर वक़्त में इक़्तेसादी हालत कमज़ोर हो गई थी यही वजह है कि आप के वालिद की वफात के बाद पसमाँदगान और वुरसा में जब तर्का तक़सीम हुआ तो आप के हिस्से में सिर्फ एक पनचक्की और एक बाग़ आया था जिस की आमदनी से आप गुज़र औक़ात फरमाते थे।

ग़ैबी मुआविनीन

अकसर ऐसा होता कि जब आप बाग़ में तशरीफ लेजाते तो

बाग़ का हर काम आप को किया हुआ मिलता आप उन फुरसत के औक़ात में बलन्द आवाज़ में क़ुर्आने पाक की तिलावत फरमाते लेकिन आप को यह तजस्सुस ज़रूर पैदा हुआ कि वह आख़िर है कौन जो मेरे काम मेरे आने से पहले निमटा जाता है।? इसी तजस्सुस ने एक रात आप को बाग़ में रहने पर मजबूर करदिया। आप ने रात के तीसरे पहर देखा कि बाग़ की सफाई होरही है मगर सफाई करने वाला नज़र नहीं आरहा है फल शाख़ों से टूट रहे हैं और एक जगह जमा होरहे हैं मगर यह ख़िदमत अन्जाम देने वाला भी निगाहों से ओझल है। आप ने बलन्द आवाज़ में कहा „दोस्तों को दोस्त से परदा न करना चाहिये सामने आकर मुझे शुक्रिया का तो मौक़ा देना ही चाहिये। „

अभी इस जुमले की गोंज भी ख़तम न हुई थी कि छः आदमी आप को अपनी तरफ आते हुए नज़र आए उन्हों ने आकर सलाम किया और कहा „ हम जिन हैं और अलहमदुलिल्लाह साहिबे ईमान हैं आप की तिलावत हमें बहुत अच्छी मालूम होती है और इस से हमारी तिलावत की सेहत भी होती जाती है इस रिश्ते से आप हमारे उस्ताद हुए अब आप ही बताइये कि अगर हम अपने उस्ताद की थोड़ी बहुत ख़िदमत करलेते हैं तो यह एहसान तो न हुआ जिस का शुक्रिया आप पर वाजिब हो। „

आप ने फरमाया „ शुक्र बहरहाल अहले ईमान की निशानी है अल्लाह इस ख़िदमत का तुम्हें बेहतर अज्र अता फरमाए। „उस दिन के बाद हिजाब का तकल्लुफ ख़त्म होगया।

एक मजज़ूब की निगाहे इल्तेफात

एक दिन सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अपने बाग़ में मौजूद थे कि एक मर्दे कामिल मजज़ूब तशरीफ लाए आप ने बढ़कर उन का इस्तिक़्बाल किया और निहायत इज़्ज़तो एहतेराम के साथ एक सायादार दरख़्त के नीचे उन्हें बिठाकर उन की तवाज़ोअ केलिये अंगूर के कुछ खूशे ख़िदमत में पेश किये मजज़ूब आप के इस हुस्ने सुलूक और ख़ुल्क़े करीमाना से बहुत मुतअस्सिर और खुश हुए। वह अंगूर का एक एक दाना मुंह में डालते जाते और कहते जाते। „ इस में हसन के ज़ुहद का ज़ाइक़ा है, इस में उम्मुल

वरअ के वरअ की ख़ुशबू है, इस में मुइनुद्दीन के इख़लास की मिठास है, इस में चिश्त की शादाबी है। ,,

आप पूरी तवज्जोह से एक एक बात सुन रहे थे आप ने बुज़ुर्ग से कहा ,,बिला शुबह आप मेरे मुतअल्लिक़ बहुत कुछ जानते हैं मगर अपने तआरुफ़ से भी सरफ़राज़ फ़रमाएं। ,,

मजज़ूब ने जवाब दिया ,, मेरा नाम इब्राहीम क़न्दोज़ी है मुझे लोग दीवाना कहते हैं और ठीक ही तो कहते हैं मैं अपने मुर्शिद हाजी शरीफ़ का दीवाना हूँ और उन के इर्शाद की रौशनी में ऐसा महसूस होता है कि आज ही का दिन वह मुबारक दिन है कि मैरे जज़्ब की आग पर सुलूक का अब्रे करम खुल कर बरसेगा। मेरे मुर्शिद ने मेरी नस नस में आग भड़काकर एक चीज़ मुझे अता की थी और फ़रमाया था कि इसे खालेना सुकून मिल जाएगा मगर इस चीज़ का खाने की शर्त यह है कि हमारे मुईनुद्दीन हसन को तलाश करते रहना वह मिल जाए तो निस्फ़ खुद खालेना और निस्फ़ उस का हिस्सा है। ,, यह कहकर अपनी पोटली से ख़ुशबूदार खली का एक टुकड़ा निकाल कर आधा खुद खाया और आधा सरकारे ख़्वाजा को खिला दिया।

सरकारे ख़्वाजा ने अपना हिस्सा खाकर पूछा ,, आप की गुफ़्तगू में कुछ बातें तशरीह तलब हैं यह हाजी शरीफ़ कौन बुज़ुर्ग हैं और चिश्त से आप की क्या मुराद है।? ,,

इब्राहीम क़न्दोज़ी ने कहा ,, तुम सब कुछ जानने केलिये ही पैदा हुए हो और सब कुछ जान लोगे। ,, इतना कहा और नज़र से ओझल होगए।

मन्ज़िल की तलाश

हज़रत इब्राहीम क़न्दोज़ी की उस मुलाक़ात का सरकारे ख़्वाजा की तबीअत पर अजीबो ग़रीब असर हुआ। आप का दिल दुन्याए फ़ानी से बेज़ार होगया और हर रगो पै में इश्क़ो महब्बते इलाही का दरया मौज ज़न होगया। बाग़ और पनचक्की को फ़रोख़्त करदिया और उस से जो रक़म हासिल हुई उस का बेश्तर हिस्सा फ़क़ीरों और मिसकीनों में तक़्सीम फ़रमादी और वालिदैने करीमैन की आर्ज़ूओं की तक्मील में तहसीले इल्म और तलाशे मन्ज़िल केलिये घर से निकल पड़े। साथ में मुख़्तसर सामाने सफ़र लिया और दोस्त, अहबाब, अइज़्ज़ा व अक़ारिब की महब्बत, दुन्यवी रिश्तों और तअल्लुक़ात को नज़र अन्दाज़ करके वतने अज़ीज़ को ख़ैरबाद कहदिया गोया राहे हक़ का यह तालिब मन्ज़िले मक़सूद की तलाश में निकल खड़ा हुआ।

मन्ज़िले मक़सूद की जानिब पहला क़दम

जादए हक़ का यह ग़रीबो तन्हा मुसाफ़िर जिसे आज एक आलम ,,ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ,, के नाम से निहायत अक़ीदतो एहतेराम के साथ याद करता है और उन्हें ,,सुल्तानुल हिन्द ,, के लक़ब से जानता और मानता है। बे ख़ौफ़ो ख़तर दुशवार गुज़ार रास्तों, लक़्क़ो दक़ सहराओं और बे आबो गयाह मैदानों को तय करता हुआ मनिज़ले मक़सूद की तरफ़ रवाँ दवाँ था। राह में जहाँ कहीं शाम होजाती क़ेयाम पज़ीर होकर इबादते इलाही में मसरूफ़ होजाते और सुब्ह नमूदार होते ही अपने मामूलात से फ़ारिग़ होकर फिर सफ़र शुरूअ करदेते। उस दौर में बग़दाद शरीफ़, समरक़न्द, बुख़ारा और नीशापूर उलूमे इस्लामी के मराकिज़ तस्लीम किये जाते थे जहाँ बड़े बड़े जैय्यिद उलमाए दीन मौजूद थे और उन से हज़ारों तश्नगाने उलूम सैराबो फ़ैज़याब हो रहे थे। आप ने सब से पहले नीशापूर जाने का इरादा फ़रमाया क्यूँकि वहाँ के इल्मी हल्क़ों में जो उलमा शोहरए आफ़ाक़ थे वह आप के वालिदे माजिद ख़्वाजा सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन के क़रीबी अहबाब में थे।

दो राहज़नों से मुलाक़ात

,,सफ़र करते हुए आप वाशोर से आगे बढ़कर जब एक वीराने में पहुँचे तो देखा कि दो आदमी सरेराह बैठे हैं। आप ने सलाम करके ख़ैरियत दरयाफ़्त करते हुए धूप और वीराने में इस तरह बैठे रहने का सबब पूछा तो उन में से एक ने मग़मूम से लेहजे में जवाब दिया ,,भूक और प्यास से निढाल होकर यहाँ बैठ गए हैं। ,,

यह सुनकर आप ने तमाम खाना और पानी का छोटा सा मश्कीज़ा उन के सामने रख दिया और फ़रमाया ,,बिस्मिल्लाह इसे अपना ही समझिये। ,,

दोनों बिला तकल्लुफ खाने लगे और जबतक सब खाना और पानी ख़त्म नहीं होगया उन का हाथ न रुका। खाने के बाद उन दोनों ने कहा „कुछ रक़म हो तो वह भी देदो। „

आप ने अपनी थैली उन के सामने डालते हुए कहा „अगर इस रक़म से आप की ज़रूरत पूरी न हो तो मेरी माअज़िरत क़ुबूल फ़रमाइये मेरे पास अगर इस के अलावा और भी रक़म होती तो मैं आप की ख़िदमत में पेश करदेता „ आप ने इस वज़ाहत के बाद सलाम किया और चल दिये।

अभी कुछ ही दूर गए होंगे कि वह दोनों दौड़ते हुए आप के पास पहुँचे और पूछा „ आप कहाँ जारहे हैं और मक़सदे सफ़र क्या है।?

आप ने फरमाया „मैं हुसूले तालीम केलिये नीशापूर जारहा हूँ।„

आप की यह बात सुनकर वह कहने लगे „ नीशापूर अभी बहुत दूर है वहाँ तक पहुँचने में आप को तक़रीबन एक महीना लग जाएगा।„

आप ने कहा „ यह बात तो मुझे भी माअलूम है। „

वह दोनों हैरत से चीख़ पड़े और कहा „आप ने तो अपना तमाम ज़ादे सफर हमें देदिया अब आप का क्या बनेगा।? „ सरकारे ख़्वाजा ने फरमाया „ अल्लाह बड़ा कारसाज़ है जो इस वीराने में तुम्हें खिला पिला सकता है तुम्हारी हर ज़रूरत पूरी करसकता है तो क्या वह मुझ पर रहम नहीं फरमाएगा वह मेरा परवरदिगार नहीं है।? „

आप का यह जवाब सुनकर वह रोने लगे और कहा „ हमें मआफ करदें हम ने आप को धोका दिया है हम ज़रूरतमन्द और मुहताज नही रहज़न हैं आप ने हमारी आँखें खोल दी हैं और हमें अल्लाह की रुबूबियत पर भरोसा करना सिखादिया है हम खाना तो वापस नहीं करसकते लेकिन आप अपनी रक़म वापस लेलें। „

आप ने फरमाया „ कोई चीज़ किसी को देकर वापस लेना अख़लाक़े नबवी के मुनाफी है। „ वह इस्रार करते रहे मगर आप इन्हें हैरानो पशीमाँ छोड़कर अपनी राह चलपड़े।

मेज़बान ज़ईफ़ा

भूक और प्यास के आलम में सफर करते हुए सरकारे ख़्वाजा

दिलआराम क़स्बे में पहुँचे वहाँ एक आबिदा व ज़ाहिदा ख़ातून आप को अपने घर लेगईं। यह क़ुदरते ख़ुदावन्दी ही तो थी कि सरेराह मुहतरमा ने सरकारे ख़्वाजा को रोक कर फरमाया „ बेटे तुम मुसाफिर हो तुम दूर से आए हो और दूर जारहे हो क्या एक दिन की मेज़बानी की इज़्ज़त से मुझे सरफराज़ करोगे।? „

आप ने उन के ख़ुलूस की क़दर करते हुए और मन्शाए इलाही समझते हुए वहाँ एक रात क़ेयाम करना मन्जूर फरमालिया।

एक क़ाफिले की क़िसमत जागी

आप जब वहाँ से रवाना हुए तो बिलकुल ताज़ादम थे अभी अपनी मन्ज़िल से चन्द फरसख़ क़रीब हुए होंगे कि आप को एक क़ाफिला पड़ाव डाले हुए मिला जो हिरात जारहा था। क़ाफिले वालों ने सरकारे ख़्वाजा का गर्मजोशी से इस्तिक़बाल किया और आप को अमीरे क़ाफिला सुलैमान के पास लेगए वह बड़ा ख़ुदातर्स और इल्मदोस्त इन्सान था वह आप से तफसीली गुफतगू करके बहुत ख़ुश हुआ और अपने हुस्ने अख़लाक़ से मजबूर करके आप को अपने साथ सफर करने पर आमादा करलिया। हिरात तक का सफर अल्लाह तआला ने इस तरह आसान करदिया। हिरात से एक क़ाफिला नीशापूर की तरफ जारहा था जिस में अमीरे क़ाफिला सुलैमान के कई जानने वाले शरीक थे। सुलैमान सरकारे ख़्वाजा का उन से तआरुफ कराके रुख़सत होगया। आप नए क़ाफिले के साथ ईरान पहुँच गए उस ज़माने में वहाँ के शहर मरौ, तूस और नीशापूर वीरान पड़े हुए थे।

क़ौमे ग़ज़ और सरकारे ग़रीब नवाज़

तर्किसतान के नव मुस्लिम ग़ज़ जो सुल्तान सन्जर के ज़ेरे साया मावराउन्नहर से आकर बलख़ में आबसे थे, सुल्तान सन्जर से टकरा गए थे एक ख़ूँरेज़ माअरके में सुल्तान सन्जर को शिकस्ते फाश हुई बड़े बड़े सरदारक़त्ल किये गए और ख़ुद सुल्तान उन के हाथों असीर होगया। ग़ज़ों ने सुल्तान सन्जर को बराए नाम बादशाह की हैसियत से क़ुबूल करके सारे इख़्तियारात अपने हाथ में लेलिये थे और क़तले आम का बाज़ार गर्म कर रखा

था किसी की जान महफ़ूज़ न थी आबरूरेज़ी और लूटमार अपने पूरे शबाब पर थी उलमा, फुक़हा, मुहद्दिसीन और मशाइख़ भी उस क़त्लो ग़ारतगरी से न बच सके थे।

ग़ज़ों को नसीहत

नीशापूर की एक मस्जिद में सरकारे ख़्वाजा ने क़याम फरमाया आप को मस्जिद में पहुँच कर बड़ा दुख हुआ ऐसा महसूस होरहा था कि वहाँ मुद्दतों से किसी नमाज़ी ने क़दम भी नहीं रखा है। आप ने मस्जिद की सफ़ाई की और वुज़ू केलिये कुएं से पानी निकाला। अस्र का वक़्त हुआ तो वह मस्जिद न जाने कितने अर्से से अज़ान की आवाज़ को तरस रही थी गोंज उठी कुछ बूढ़े सहमे सहमे मस्जिद में आए और आप की इक़्तेदा में नमाज़ पढ़ी। वह जाने लगे तो उन्हों ने सरकारे ख़्वाजा से कहा „ आप भी हमारे साथ चलिये ग़ज़ किसी नौजवान को तो छोड़ते ही नहीं। „

आप ने कहा „ ज़िन्दगी और मौत सिर्फ़ अल्लाह के हाथ में है आप परीशान न हों। „

आप ने मग़्रिब की अज़ान दी तो सिर्फ़ दो बूढ़े नमाज़ में शरीक हुए इशा में एक भी फर्द नमाज़ केलिये न आया। आप ने तक्बीर पढ़कर नीयत बाँध ली आप दूसरी रक्अत में जब सूरए हश्र का आख़री रुकूअ तिलावत कररहे थे तो क़ातिल ग़ज़ों की एक टोली मस्जिद में घुस आई ग़ज़ों ने तिलावत सुनी तो उन के बदन पर राअशा तारी हो गया। क़ुर्आन पहले भी सुना था मगर आमिले क़ुर्आन की ज़बान में क्या असर होता है इन्हें इस का तजरबा नहीं था ग़ज़ इतमीनान से बैठकर आप को नमाज़ पढ़ते हुए देखते रहे।

नमाज़ से फारिग़ होकर आप ने ग़ज़ों को मुख़ातब किया और कहा „दोस्तो! यह मस्जिद है अल्लाह का फ़ज़्ल जब तुम्हें यहाँ लेही आया है तो वुज़ू करलो और अल्लाह के हुज़ूर खड़े होजाओ। दुन्या की हवस इन्सान को हलाक करदेती है अगर सुकून और इतमीनान चाहते हो तो वह सिर्फ़ अल्लाह की याद में मिलेगा। „

आप का इर्शाद उन पर मुअस्सिर होगया। वुज़ू करके ग़ज़ नमाज़ पढ़ने पर मजबूर होगए। नमाज़ के बाद सरकारे ख़्वाजा ने

नसीहत फरमाई „ दोस्तो ! बेगुनाह शहरियों से तुम्हारी क्या लड़ाई है तुम उन्हें क्यूँ क़त्ल कररहे हो। तुम्हारी लड़ाई सुल्तान सन्जर से है उसे तो बादशाह बनाकर रख छोड़ा है और अवाम को सतारहे हो। „

ग़ज़ों की टोली का सरबराह बोला „ हम जिन्हें क़त्ल कररहे हैं वह सब सुल्तान सन्जर से महब्बत करते हैं और यही उन का जुर्म है अगर सुल्तान से महब्बत करने वाले ज़िन्दा रहेंगे तो हमारे इक़्तेदार की उम्र तवील नहीं होसकती। „

आप ने ख़ूँरेज़ी का यह इस्तिदलाल सुनकर फरमाया „ तुम्हारी सोच ग़लत रास्ते पर चल पड़ी है तुम्हें पहले यह सोचना चाहिये कि अहले ख़ुरासान सुलतान से क्यूँ महब्बत करते हैं इस का जवाब इस के सिवा कुछ नहीं होसकता कि सुल्तान उन का हमदर्द है उस के निज़ामे हुकूमत की बुन्याद अदल पर थी। उस के दौरे हुकूमत में उन की जान, माल, इज़्ज़त, आबरू महफ़ूज़ थी तुम लोग जितनी ख़ूँरेज़ी करोगे उसी क़दर तुम्हारे ख़िलाफ़ दिलों में नफरत के शोअले भड़केंगे अगर बिलफर्ज़ तुम ख़ुरासान की पूरी आबादी को क़त्ल करने में कामयाब हो भी गए तो फिर हुकूमत किस पर करोगे!? शहरों की वीरानियाँ तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाएंगी तुम ख़ुद हाकिम होगे और ख़ुद ही महकूम। „

ग़ज़ों में से एक बोला „ आप की बात हमारे दिल को लगती है मगर हम यह बात ग़ज़ों की पुरी सरकश फौज को नहीं समझा सकते हमें आप से मिलकर नई रौशनी मिली हम आप की नसीहत हमेशा याद रखेंगे और हम आप को यक़ीन दिलाते हैं कि हमारे हाथों अब किसी शहरी का क़त्ल नहीं होगा। „ उस के बाद सब ने सरकारे ख़्वाजा की दस्तबोसी की और रुख़सत होगए।

सरकारे ख़्वाजा समरक़न्द में

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू 553 हि० में एक तवील सफर के बाद नीशापूर से समरक़न्द पहुँचे जहाँ इल्म मस्नदे तदरीस पर मुतमक्किन था बड़े बड़े उलमा, फ़ुज़ला, फ़ुक़हा और मुहद्दिसीन ने तशनगाने इल्म केलिये फ़ुयूज़ के दरया जारी कर रखे थे। सरकारे ख़्वाजा मौलाना हुस्सामुद्दीन मदनी के हल्क़ए दर्स में शामिल होगए। मौलाना मदनी इमामे आज़म अबूहनीफा

रहमतुल्लाहि तआला अलैह के फ़िक़्ही मस्लक के ज़बर्दस्त मुबल्लिग़ीन में शुमार किये जाते थे सरकारे ख़्वाजा के इल्मी जौहर उस्ताज़ पर जल्द ही आशकारा होगए। उस्ताज़ ने न सिर्फ यह कि खुद खुसूसी तवज्जोह दी बल्कि दूसरे असातज़ा को भी इस जौहरे क़ाबिल की तरफ खुसूसियत से तवज्जोह देने केलिये कहा।

नमाज़े तरावीह की इमामत

रमज़ानुल मुबारक का कैफ आफ़्रीं महीना आया तो नमाज़े तरावीह की सरकारे ख़्वाजा ने इमामत फरमाई। दिलंकश क़िराअत ने आप को समरक़न्द के इल्मी हल्क़े में मुतआरफ करा दिया हज़ारों आदमी समाअते क़ुर्आन केलिये आते रहे उस्ताज़े मुहतरम इतने खुश हुए कि मदरसे की मस्जिद में नमाज़े फज्र की मुस्तक़िल इमामत सरकारे ख़्वाजा के सुपुर्द करदी चार नमाज़ें खुद पढ़ाते और नमाज़े फज्र शागिर्द की इक़्तेदा में अदा फरमाते।

नूरे क़ुर्आन का ज़ुहूर

एक रोज़ तलबा ने रात के वक़्त सरकारे ख़्वाजा के हुजरे में दरवाज़े की दराज़ों से तेज़ रौशनी निकलते हुए देखी तो हैरान हुए और मौलाना मदनी से इस का तज़्किरा किया उन्हों ने कहा „ ख़ामोश रहो आइन्दा अगर ऐसी रौशनी देखना तो मुझे इत्तेलाअ करना।,

तलबा टोह में लगे रहे उन्हें शबे जुमा को फिर वही तेज़ रौशनी सरकारे ख़्वाजा के हुजरे में नज़र आई उस्ताज़े मुहतरम को इत्तेलाअ दी गई। वह तशरीफ लाए और रौशनी को देख कर फरमाया „ यह नूरे क़ुर्आन है जाओ अपने अपने हुजरे में आराम करो और मुईनुद्दीन हसन से इस सिलसिले में किसी क़िस्म के सोवाल से एहतेराज़ करो। „

मौलाना हुस्सामुद्दीन मदनी की पेशकश

मदरसा हुस्सामिया समरक़न्द में आप कमोबेश पाँच साल तक ज़ेरे तालीम रहे और बीस साल की उम्र में नहव, सर्फ, फ़िक़ह, उसूले फ़िक़्ह, तफसीर, हदीस, तारीख़ और दूसरे उलूमे अक़लिया में भी कमालात हासिल करलिये। रुख़्सत होने लगे तो उस्ताज़े

गिरामी मौलाना हुस्सामुद्दीन मदनी ने पेशकश की कि मदरसा हुस्सामिया में ही मुदर्रिस होजाएं मगर आप ने निहायत अदबो एहतेराम से अर्ज़ किया मेरी मन्ज़िल अभी बहुत दूर है मैं यहाँ अब क़ेयाम न करसकूँगा। „

उस्ताज़े मुहतरम ने फरमाया „ यहाँ नहीं रुक सकते तो मेरी एक ख़्वाहिश पूरी करदो तुम यहाँ से बुख़ारा चले जाओ वहाँ मेरे एक बुज़ुर्ग अल्लामा अब्दुल्लाह ख़्वार्ज़मी क़ेयाम पज़ीर हैं दर्सो तदरीस उन का महबूब मशग़ला है तफसीर एक मरतबा उन से और समझ लो मैं चाहता हूँ कि तुम आफताब की तरह इल्म के उफुक़ पर जगमगाते रहो और फ़िक़्हे हनफीया की तरवीजो तब्लीग़ तुम्हारे हाथों इस तरह हो कि यह मस्लक आफाक़गीर होजाए। „

उस्ताज़े मुहतर की यह बात आप ने मान ली और हज़रत अब्दुल्लाह ख़्वार्ज़मी के नाम उन का एक ख़त लेकर समरक़न्द से रवाना हुए।

अल्लामा अब्दुल्लाह ख़्वार्ज़मी से इक्तेसाबे फैज़

सरकारे ख़्वाजा तवील सफर के बाद बुख़ारा पहुँच कर हज़रत अल्लामा अब्दुल्लाह ख़्वार्ज़मी क़ुद्दि स सिर्रुहू के दरे दौलत पर हाज़िर हुए तो उन्हें दरवाज़े पर अपना मुन्तज़िर पाया। आप ने सलाम अर्ज़ किया तो उन्हों ने जवाब के साथ दुआएं देते हुए फरमाया „ हम यहाँ तुम्हारे ही मुन्तज़िर थे लाओ मौलाना हुस्सामुद्दीन का मकतूब हमें देदो, ग़ुस्ल और नाश्ते से फारिग़ होकर हम से मिलना। „

सरकारे ख़्वाजा को हज़रत ख़्वार्ज़मी का ख़ादिम अपने साथ लेगया। एक हुजरे में आप के क़ेयामो तआम का बन्दोबस्त किया गया। अस्र की नमाज़ अल्लामा ख़्वार्ज़मी के साथ मस्जिद में अदा की उन्हीं के साथ उन की नशिश्तगाह में पहुँचे अल्लामा ख़्वार्ज़मी ने फरमाया „ मौलाना हुस्सामुद्दीन ने तुम्हारी बहुत ताअरीफ की है और मैं भी तुम्हारी लौहे पेशानी पर सआदते कुबरा के आसार देख रहा हूँ मैं अगरचे बहुत अदीमुल फ़ुर्सत हूँ मगर मैं ने फैसला करलिया है कि तुम्हें नमाज़े तहज्जुद के बाद इल्मे तफसीर के वह अस्रारो रुमूज़ बताउँगा जिन के तुम बजा तौर पर मुस्तहक़ हो। „

हर रात वक़्ते मुक़र्ररा पर आप की तालीम होने लगी और यह सिलसिला दो साल तक जारी रहा क़ुर्आन के इश्क़ ने अपनी मन्ज़िल पाली। जो तुख़्म ख़्वाजा सैय्यिद ग़यासुद्दीन हसन और सैय्यिदा उम्मुलवरअ ने काश्त किया था वह एक ऐसा तनावर दरख़्त बन गया कि उस की छाउं फ़ैज़रिसाने जावेदाँ होगई। अल्लामा ख़्वार्ज़मी ने रुख़्सत करते हुए पेशानी चूम कर अपनी दुआओं के साए में आप को फ़ी अमानिल्लाह कहा।

सरकारे ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में

समरक़न्दो बुख़ारा में तहसीले उलूमे दीनिया से फ़रागत के बाद सरकारे ग़रीब नवाज़ क़ुदि स सिर्रुहू वहाँ से बग़दाद शरीफ़ केलिये रवाना हुए और वहाँ पहुँच कर शहन्शाहे बग़दाद हज़रत सैय्यिदुना शैख़ मुहीयुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु की हुज़ूर ग़ौसे आज़म से मुलाक़ात के बारे में अकसर मुवर्रिख़ीन इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि सरकारे ग़रीब नवाज़ की हुज़ूर ग़ौसे आज़म से पहली मुलाक़ात बग़दाद शरीफ़ में 557 हि0 में हुई जब ख़्वाजा साहब की उम्र बीस बरस थी। आप को देखकर सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने इर्शाद फ़रमाया कि :

„ यह मर्द मुक़्तदाए रोज़गार है बहुत से लोग इस की हिदायतो रहनुमाई के ज़रीआ मन्ज़िले मक़सूद को पहुँचेंगे।„

एक रिवायत के मुताबिक आप सैयिदुना गौसे आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में पाँच माह रहे। इस अर्से में सत्तावन रोज़ तक सैयिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु एक ही हुजरे में मुक़ीम रहे। इस से बख़ूबी अन्दाज़ा किया जा सकता है कि आप ने सैयिदुना ग़ौसे आज़म से किस कदर फ़ैज़ उठाया होगा।(ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी स0 52)

सरकारे ख़्वाजा हज्जो ज़ियारत के सफर पर

सरकारे ग़ौसे आज़म से मुलाक़ात के बाद सरकारे ख़्वाजा बग़दाद शरीफ़ से हज्जो ज़ियारते हरमैनं शरीफ़ैन के इरादे से

आज़िमे सरज़मीने हिजाज़ होगए। सफ़र करते हुए इश्क़आबाद में चन्द रोज़ क़ेयाम फ़रमाकर मशहदे मुक़द्दस पहुँचे हज़रत इमामे रज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे अक़दस पर फ़ातेहा ख़्वानी की फिर असफ़हान और बसरा से गुज़रते हुए मदीनए मुनव्वरा में हाज़िर हुए तीन माह वहाँ क़ेयाम किया। ज़िलहिज्जा में मक्कए मुकर्रमा में हज की सआदत हासिल करके जब दुबारा मदीना शरीफ़ आए तो मस्जिदे नबवी में मौलाना हुसामुद्दीन मदनी से मुलाक़ात होगई मुआन्क़ा हुआ तो फ़र्ते मसर्रत से उस्ताज़ और शागिर्द के अश्क बेक़ाबू होगए। मदीनए मुनव्वरा से मौलाना मदनी के साथ मक्कए मुकर्रमा पहुँचे तो मौलाना ने वहाँ के अकाबिर उलमा, फ़ुक़हा और मुहद्दिसीन से आप का शानदार अलफ़ाज़ में तआरुफ़ कराया।

शहरे हरम में ख़िताबत की धूम

मौलाना हुस्सामुद्दीन मदनी जैसे जैय्यिद आलिमे दीन से आप की ताअरीफ़ सुनकर अहले इल्म ने इस्रार किया कि एक दिन सहने हरम में आप ख़िताब फ़रमाएं। इस ख़्वाहिश की उस्ताज़ ने भी ताईद करदी तो आप ने दूसरे दिन बादे नमाज़े फ़ज्र हरम में फ़ाज़िलतरीन मजमा से ख़िताब फ़रमाया। दो घन्टे तक तक़रीर जारी रही सुन्ने वाले हमातन गोश और महवे हैरत थे आप ने उलूमो मआरिफ़ के दरया बहा दिये। तक़रीर के बाद मौलाना हुस्सामुद्दीन मदनी और इमामे काअबा अश्शैख़ अहमद अबदुल्लाह तमीमी की वसातत से अहले मक्का ने सरकारे ख़्वाजा से दरख़्वास्त की कि दर्से क़ुर्आनो हदीस का सिलसिला जारी रहना चाहिये। आप के रुकने केलिये अनवारे हरम की कशिश, अहले मक्का का बेहद इस्रार और पज़ीराई ही क्या कम थी, कि उस्ताज़े मुहतरम और इमामे हरम के इस्रार ने भी सरकारे ख़्वाजा को रुकने पर मजबूर करदिया। उस्ताज़े मुहतरम रुख़्सत होगए कि मदरसे की ज़िम्मेदारियाँ उन्हें पुकार रही थीं। आप ने दर्से क़ुर्आनो हदीस का सिलसिला शुरूअ करदिया जो काफ़ी दिनों तक जारी रहा हज़ारों उलमा और तलबा ने आप से इस्तेफ़ादा किया अल्लामा अब्दुर्रहमान उन्दुलुसी भी आप के दर्स में शरीक होकर मुस्तफ़ीद होने वालों में शामिल थे उन्हों ने अपनी तस्नीफ़ „फ़ैज़ुल हरम „ में सरकारे ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन का ज़िक्र बड़े वालिहाना

अन्दाज़ में किया है।

सफ़र ब सूए दोस्त

आप मक्कए मुअज़्ज़मा और मदीनए मुनव्वरा की ज़ियारत करके नीशापूर तशरीफ़ लाए क्यूँकि ख़ुश्बूए दोस्त उसी दयार से आरही थी। वहाँ एक दिन एक बुज़ुर्ग से हज़रत ख़्वाजा उस्मान की बुज़ुर्गी और उन के रूहानी तसर्रुफ़ात का ज़िक्र सुन रहे थे कि आप ने उन से पूछा „ ख़्वाजा उस्मान का पूरा इस्मे गिरामी क्या है।? „

„ ख़्वाजा उस्मान हारवनी „ बुज़ुर्ग ने जवाब दिया।

आप ने मज़ीद सुवाल किया „ सिलसिलए चिश्त से भी उन का कोई तअल्लुक़ है। ? „

बुज़ुर्ग बोले „ बेशक वह चिश्ती हैं उन के शैख़े मुकर्रम हाजी शरीफ़ चिश्ती ज़िन्दनी हैं। „

सरकारे ख़्वाजा हाजी शरीफ़ का नाम सुनकर बेक़रार हो गए। आप ने पूछा „ कहाँ क़ेयाम है उनका।? „

जवाब मिला „ नीशापूर से सिर्फ़ आठ फ़रसख़ के फ़ासले पर एक क़स्बा हारवन है वह वहीं के रहने वाले हैं। „

मुर्शिदे कामिल की ख़िदमत में

आप ने रख़्ते सफ़र बाँधा और हारवन पहुँच गए वहाँ सरकारे ख़्वाजा ने हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी की ज़ियारत की तो देखा कि हज़रत की मज्लिस में बड़े बड़े उलमा और मशाइख़ मुअद्दब बैठे हुए हैं और मुश्ताक़ाने जमाल की भीड़ लगी हुई है। आप ख़ामोशी से जाकर एक गोशे में बैठ गए उस वक़्त ख़्वाजा उस्मान हारवनी दिलनशीं अन्दाज़ में हाज़िरीन को इत्तेबाए सुन्नत की अहम्मियत समझा रहे थे। बात मुकम्मल हुई तो आप ने कहा „मैं बाग़े तौहीद के गुले नौबहार की ख़ुशबू महसूस कर रहा हूँ। „ यह कहकर आप अपनी जगह से उठे और सफ़ों को चीरते हुए जाकर सरकारे ख़्वाजा का हाथ पकड़ के उन्हें खड़ा किया और सीने से लगाते हुए फ़रमाया। „ मरहबा मरहबा ख़ुश आमदेद! मेरी आँखों की ठन्डक अल्लाह तुम्हें बामुराद करे। „ फिर सरकारे ख़्वाजा को अपनी नशिस्त तक लाए और मजमे से कहा „ यह मुईनुद्दीन हसन है इस्म बामुसम्मा „ उस के बाद इस्वाते वुजूद के मौज़ूअ पर सरकारे ख़्वाजा को तक़रीर का हुक्म देकर बैठ गए।

सरकारे ख़्वाजा ने तामीले हुक्म में एक फ़सीहो बलीग़ तक़रीर फ़रमाई लोग दमबख़ुद होगए और यूँ महसुस कर रहे थे जैसे ईमानो ईक़ान की बारिश होरही है। अज़ाने मग़्रिब तक यह सिलसिला जारी रहा। नमाज़ के बाद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी आप को अपने हुजरे में लेगए और सिलसिलए चिश्तिया में दाख़िल फ़रमाया।

हज़रत इब्राहीम क़न्दोज़ी से मुलाक़ात के बाद जो आप को सिलसिलए चिश्तिया, हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी और अपने शैख़े कामिल की तलाशो जुस्तुजू थी और जिस केलिये आप का दिल जब से बेचैनो बेक़रार था हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी के दस्ते हक़परस्त पर बैअत होजाने से उस को एक सूरत से क़रार आगया और आप का तजस्सुस ख़त्म होगया।

काम आख़िर जज़्बए बे इख़्तियार आ ही गया
दिल कुछ इस सूरत से तड़पा उन को प्यार आ ही गया

सरकारे ख़्वाजा के अस्फ़ार की इजमाली तरतीब

ढाई साल पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में गुज़ारने के बाद 562 हि0 में फिर सरकारे ख़्वाजा बग़दाद शरीफ़ तशरीफ़ लाए। हुज़ूर ग़ौसे आज़म का विसाल होचुका था आप के मज़ारे अक़्दस पर हाज़री दी और उस ज़माने में बग़दाद में मौजूद जलीलुलक़द्र मशाइख़े उज़्ज़ाम से कस्बे फ़ुयूज़ो बरकात किया। बग़दाद शरीफ़ में चन्द रोज़ क़ेयाम करने के बाद आप ने शाम की जानिब रुख़ किया 563 हि0 में हज़रत सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने किरमान की तरफ़ कूच किया उस के बाद 564 हि0 में जब कि आप की उम्र 27 साल की थी एक तवील तब्लीग़ी सफ़र पर रवाना हुए। बग़दाद शरीफ़ से सफ़र करके हमदान पहुँचे, हमदान से तब्रेज़ तशरीफ़ लेगए। यहाँ बुज़ुर्गों से मुलाक़ात के बाद उस्तुराबाद पहुँचे वहाँ के बाद बुख़ारा का सफ़र किया उस के बाद ख़िर्क़ान गए और वहाँ के अज़ीमुल मरतबत वली और बुज़ुर्ग हज़रत शैख़ अबुलहसन ख़िर्क़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मज़ारे पाक से रूहानी फ़ुयूज़ो बरकात हासिल किये ख़िर्क़ान से फिर समरक़न्द तशरीफ़ लेगए फिर चिश्त होते हुए हिरात का सफ़र किया यहाँ आप का तमाम वक़्त इबादत, रियाज़त और मुजाहदा में

गुज़रा यहाँ आप हज़रत शैख़ अब्दुल्लाह अनसारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहके मज़ारे मुबारक पर हाज़िर होकर फुयूज़े बातिनी से बहरावर हुए। यहाँ से सब्ज़वार (वाक़ेअ अफ़ग़ानिस्तान) में जलवा फरमा हुए वहाँ कुछ रोज़ क़ेयाम करके हिन्दुस्तान के लिये रवाना हो गए और मुलतान तशरीफ लाए वहाँ से लाहौर वारिद हुए और दाता गंजबख़्श हज़रत शैख़ अली हिजवैरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मज़ारे पाक पर एअतेकाफ किया और फैज़याब होने के बाद नव्वे लाख हिन्दुओं को मुसल्मान करने वाले सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ज़बाने पाक पर बेसाख़्ता यह शेर जारी होगया जो आज भी मज़ारे मुक़द्दस पर लिखा हुआ है।

गंजबख़्शे फ़ैज़े आलम मज़्हरे नूरे खुदा
नाक़िसाँ रा पीरे कामिल कामिलाँ रा रहनुमा

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हज़रत दाता साहब के मज़ार पर मुअतकिफ रहे। आप का हुजरए एअतेकाफ अबतक अन्दरूने अहातए मज़ार मौजूद है।

हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी से बैअत की तफसील

सिलसिलए चिश्तिया के मशाइख़ में दोबार बैअत का तरीक़ा राइज था। चुनाँचे हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी से उन के वतन हारवन में पहली बैअत का शरफ हासिल किया था उस के बाद पीरो मुर्शिद आप से हद दर्जा महब्बत फरमाने लगे थे यह उसी महब्बत का नतीजा था कि हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि अलैह हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को शरफे मुलाक़ात बख़शने और अपने फुयूज़ो बरकात से मालामाल करने केलिये बग़दाद शरीफ तशरीफ लेगए और इस केलिये एक तवील सफर की सऊबतें बरदाश्त कीं। उधर पीरो मुर्शिद की आमद की ख़बर सुन कर हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ भी बग़दाद शरीफ हाज़िर हुए और पीरो मुर्शिद से बैअते सानी का शरफ हासिल किया। उस बैअत की तफसील खुद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अपनी किताब „ अनीसुल अर्वाह

„ में इन अलफाज़ में बयान फरमाई है आप तहरीर फरमाते हैं कि :

„ मुसल्मानों का यह दुआगो मुईनुद्दीन हसन बग़दाद शरीफ ख़्वाजा जुनैद की मस्जिद में हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी की क़दमबोसी की दौलत से मुशर्रफ हुआ जब इस दुर्वेश ने सरे नियाज़ ज़मीन पर रखा तो पीरो मुर्शिद ने इर्शाद फरमाया कि दो रकअत नमाज़ अदा करो, मैं ने नमाज़ अदा की। फिरक़िबला रू बैठ, मैं बैठ गया। हुक्म हुआ सुरए बक़रा पढ़, मैं ने पढ़ी। फरमान हुआ कि इक्कीस बार दुरूद शरीफ पढ़, मैं ने पढ़ा। हज़रत ने आसमान की जानिब निगाह उठाई और फक़ीर का हाथ पकड़कर फरमाया „ तुरा बखुदा रसानीदम व मक़्बूले हज़रते ऊ गरदानीदम „ याअनी मैंने तुझ को खुदा तक पहुँचाया और उस की बारगाह का मक़बुल बनाया।

उस के बाद हज़रत ने इस आजिज़ के बाल कैंची से तराशे और कुलाहे चहार तरकी फक़ीर के सर पर रखी फिर अपना गिलीमे ख़ास मरहमत फरमाया और हुक्म दिया कि हज़ार बार सूरए इख़लास पढ़, मैं ने हुक्म की तामील में सूरए इख़लास पढ़ी। फिर फरमाया कि हमारे ख़ान्वादे में एक शबाना रोज़ मुजाहदा करने का अमल है तू आज मुजाहदे में मशग़ूल रह, यह दुर्वेश बहुक्मे मुहतरम (पीरो मुर्शिद ख़्वाजा उस्मान हारवानी) तामीले हुक्म में हस्बे इर्शाद एक शबाना रोज़ मशग़ूले मुजाहदा रहा दूसरे दिन जब हाज़िर हुआ तो इर्शाद फरमाया बैठ जा और एक हज़ार बार सूरए इख़लास पढ़ मैं ने पढ़ी। फरमाया आसमान की जानिब देख! मैं ने देखा। दरयाफ्त फरमाया कि कहाँ तक नज़र आरहा है अर्ज़ की अर्शे आज़म तक। फरमाया ज़मीन की तरफ देख, मैं ने देखा। फरमाया कहाँ तक देख रहा है मैं ने अर्ज़ की तहतस्सरा तक। फरमाया फिर हज़ार मरतबा सूरए इख़लास पढ़ मैं ने फिर पढ़ी फरमाया आसमान की जानिब देख मैं ने देखा पुछा अब कहाँ तक देख रहा है मैं ने अर्ज़ की हिजाबे अज़मत तक फरमाया आँखें बन्द कर मैं ने आँखें बन्द करलीं फरमाया खोल मैं ने खोल लीं। फिर अपनी उंगलियाँ दिखलाकर इस्तिफसार फरमाया क्या नज़र आरहा है मैं ने अर्ज़ की कि हीज़दा हज़ार आलम देख रहा हूँ फिर उस के बाद सामने पड़ी हुई एक ईंट उठाने का हुक्म दिया मैं ने उसे उठाली तो उस के नीचे से मुट्ठी भर दीनार बरआमद हुए फरमाया इन को लेजाकर फुक़रा में तक़्सीम करदो मैं ने तामील की और हाज़िरे ख़िदमत हुआ इर्शाद फरमाया कि हसन अब हमारी ख़िदमत ही मे रहाकरो अर्ज़ किया ताबेअे फरमान हूँ। „

ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त

हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि अलैह के हलक़ए इरादत में दाख़िल होने के बाद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अपने पीरो मुर्शिद की तक़रीबन बीस साल तक ख़िदमत की और उस मुद्दत में आप ने हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी के साथ काफ़ी सैरो सियाहत की आप को अपने पीरो मुर्शिद से हद दर्जा अक़ीदतो महब्बत थी। यह कैफ़ियत थी कि हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी जहाँ कहीं सफ़र करते हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ उन का लिबास, बिसतर और तोशए सफ़र अपने सर पर लेकर शरीके सफ़र होते। आप की इस वालिहाना महबबत और मुख़्लिसाना ख़िदमत से हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी के दिल पर गहरा असर मुरत्तब हुआ इसी सबब से आप पीरो मुर्शिद के ख़ासुल ख़ास और मुक़र्रब महबूब बन गए। चुनाँचे एक मरतबा फ़रमाया। :

„ मुईनुद्दीन महबूबे ख़ुदा अस्त व मुरा फ़ख़्र अस्त बरं मुरीदीये ऊ। „

याअनी मुईनुद्दीन ख़ुदा का महबूब है और मुझे उस की मुरीदी पर फ़ख़्र है। आख़िरकार आप बग़दाद शरीफ़ में अपने पीरो मुर्शिद से रुख़सत हुए तो मुर्शिदे कामिल ने आप को बकमाले महब्बत ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त अता फ़रमाया और जानशीनी के मनसब पर फ़ाइज़ किया उस वक़्त हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की उम्र तक़रीबन बावन साल थी। हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी ने तबर्रुकाते मुसतफ़वी(जो सिलसिलए चिश्तिया में सिलसिला बसिलसिला चले आरहे थे)सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को ख़िलाफ़त अता फ़रमाते वक़्त इनायत फ़रमाए और चन्द मुफ़ीद नसीहतें फ़रमाने के बाद अपना असाए मुबारक भी आप को बख़्श दिया इस के अलावा नाअलैने शरीफ़ैन और मुसल्ला भी अता फ़रमाया नीज़ इर्शाद फ़रमाया कि :

„ यह तबर्रुकात हमारे मशाइख़े तरीक़त की यादगारें हैं जो हुज़ूर सरवरे काइनात फ़ख़रे मौजूदात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से हम तक पहुँचे हैं इन को इस तरह अपने पास रखना जिस तरह हम ने रखा और उसी को यह यादगारें

देना जिस को तुम इस का अहल पाओ और जो कुछ हम ने तुम को बताया उस पर अमल करना ताकि क़यामत के दिन शर्मिनदगी न हो। ख़ल्क़ से तमअ न रखना आबादी से दूर रहना और किसी से कुछ तलब न करना „ (अनीसुल अरवाह स0 34 बहवाला बज़्मे सूफ़िया स0 53)

कुलाहे चहार तरकी

सिलसिलए चिश्तिया में अपने मुरीद या ख़लीफ़ा को जो कुलाहे चहारतरकी पहनाने का दसतूर है उस की वज़ाहत हज़रत हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी रहमतुल्लाहि अलैह ने नसीहत के अन्दाज़ में फ़रमाई है जिस को हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के सर पर रखते वक़्त हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि अलैह ने दुहराई जो दर्जे ज़ैल है। :

„ मुराद अज़ कुलाहे चहारतरकी चार तर्क अस्त। अव्वल तर्के दुन्या, दोम तर्के उक़्बा,सिवाए ज़ाते हक़ मक़सूदे दीगर नदारी। सौम तर्के ख़ुर्दो ख़्वाब मगर क़दरे बराए सद्दे रमक़ अस्त कि अज़ ज़रूरियात अस्त। चहारम तर्के ख़्वाहिशे नफ़्स याअनी हर कि बुगोयद ख़िलाफ़े आँ कुनी व हर कि ईं चहार तर्क कुनद पोशीदने कुलाहे चहार तरकी बऊ सज़ावार अस्त। „

याअनी कुलाहे चहार तरकी से मुराद चार तर्क हैं अव्वल तर्के दुन्या याअनी दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार करलेना। दोम तर्के उक़बा याअनी हरवक़्त अपनी ज़ात केलिये आख़िरत की भलाई तलब न करता रहे बल्कि सिवाए ज़ाते इलाही और रज़ाए इलाही के और कोई ग़रज़ न रखे। सोम सोना और खाना तर्क करना मगर सिर्फ़ उसी क़दर जिस से ज़िन्दगी क़ाइम रहे याअनी कम खाए कम सोए। चहारम नफ़्स की ख़्वाहिशात को तर्क करना याअनी जो नफ़्स कहे उस के ख़िलाफ़ अमल करना। जो इन चीज़ों को तर्क करने का अहद करे वही कुलाहे चहारतर्की पहने का हक़दार (अहल) है। „

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुदि स सिर्रुहू फ़रमाते हैं कि पीरो मुर्शिद ने यह इर्शाद फ़रमाकर मुझे अपनी आग़ोशे मुबारक में ले लिया और सरो चश्म को बोसा देकर फ़रमाया „ तुझको ख़ुदा के सुपुर्द किया „ उस के बाद दुआगो रुख़सत हुआ। „

हज़रत ख़्वाजए बुज़ुर्ग ने मुर्शिदे बरहक़ की ख़िदमत में बीस बरस की जो तवील मुद्दत गुज़ारी उस में ज़ियादातर वक़्त सफ़र में गुज़रा उस का इजमाली ज़िक्र दर्जे ज़ैल है।

चराग़ से चराग़ रौशन हो गया

अब हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन की दुन्या ही बदल चुकी थी दिन का बेशतर वक़्त मुर्शिदे गिरामी की मुसाहबत में गुज़रता और रात इबादत में सर्फ़ होती। नज़र, ख़बर,परवाज़, करामत, हक़ीक़त, ख़िर्के आदत और इल्मे हुज़ूर के हुसूल गोया तमाम मराहिल तेज़ी से तय होने लगे। आप कभी मस्जिदे जुनैद में जाकर बैठ जाते तो भीड़ लग जाती शैख़ बुर्हानुद्दीन, शैख़ मुहम्मद असफ़हानी और दूसरे बुज़ुर्ग आप से इस्तिफ़ादा करते।

मुर्शिदे बरहक़ हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी अपने लाइक़ो फ़ाइक़ मुरीद सरकारे ख़्वाजा को साथ लेकर सफ़रे हज पर रवाना हुए। तवील सफ़र में आप ने ख़िदमते शैख़ की नादिर मिसालें क़ाइम कीं और क़दम क़दम पर अपने मुर्शिद की दुआओं से आला मदारिज पाए। बसरा के क़रीब हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी के एक पुराने मुरीद अबूसालेह अब्दुल्लाह से मुलाक़ात हुई वह हज़रत ख़्वाजा के कमालाते रूहानी देख कर हैरान रह गए उन्हों ने बड़ी हसरत से अपने शैख़े मुकर्रम से कहा „ यह कितने ख़ुशनसीब हैं कितनी जलदी कितने बड़े मक़ाम पर फ़ाइज़ हो गए एक मैं हूँ कि अभी मन्ज़िल से कोसों दूर हूँ। „

हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी ने कहा „ जब तुम पैदा हुए थे तो बरहना थे मुईनुद्दीन हसन पैदा हुए तो हुल्लए विलायत उन के जिस्म पर मौजूद था। „

यह जवाब सुनकर अबूसालेह आबदीदा होगए तो हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन ने आगे बढ़कर उन्हें सीने से लगा लिया सीना सीने से मिला तो दिल रौशन होगया अबूसालेह जगमगाने लगे।

हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी ने ज़ेरे लब तबस्सुम फ़रमाकर कहा „ अबूसालेह! तुम्हारा हिस्सा तुम्हें मिल गया

मुबारक हो। „

आप ने हरमैने तैय्यिबैन का सफ़र फ़रमाया। यहाँ एक शहर की जामेअ मस्जिद में दोनों बुज़ुर्गों ने एअतेकाफ़ किया उस के बाद मक्कए मुकर्रमा केलिये रवाना हुए ख़ानए काअबा की ज़ियारत का शरफ़ हासिल किया उस मुबारक मक़ाम पर हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी ने सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का हाथ पकड़कर हक़ तआला के सुपुर्द किया और बारगाहे ख़ुदावन्दी में आप केलिये दुआ की। रब्बे करीम की रहमते कामिला जोश में आई ग़ैब से निदा आई कि „ हम ने मुईनुद्दीन को क़ुबूल किया „ उस के बाद मदीनए मुनव्वरा में हाज़िर हुए आप ने बारगाहे रसूले दोजहाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में नज़रानए सलाम पेश किया जवाब आया „ वाअलैकुम अस्सलाम या कुत ब मशाइख़िल बर्रि वल बहरि „ यह आवाज़ सुनकर मुर्शिदे बरहक़ मे आप से फ़रमाया कि : „ अब तू (ए ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती) दर्जए कमाल तक पहुँच गया „

यहाँ से आप शैख़े तरीक़त हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के साथ बुख़ारा पहुँचे और सैकड़ों बड़े बड़े मशाइख़ से शरफ़े ज़ियारतो मुलाक़ात हासिल किया। उस के बाद दोनों हज़रात औश तशरीफ़ लेगए यहाँ भी दुर्वेशों से मुलाक़ातों का सिलसिला जारी रहा फिर बदख़्शाँ का सफ़र इख़्तियार किया। इस सैरो सियाहत के बाद आप बग़दाद शरीफ़ तशरीफ़ लाए यहाँ चन्द रोज़ के क़ेयाम के बाद फिर औश तशरीफ़ लेगए यहाँ से आप 573 हि० में सीविस्तान तशरीफ़ लेगए जहाँ मुतअद्दिद मजज़ूबों से मुलाक़ात हुई और अजीबो ग़रीब मनाज़िरे क़ुदरत का मुशाहदा फ़रमाया यहाँ से दमिश्क़ पहुँचकर अंबियाए किराम के मज़ाराते मुक़द्दसा की ज़ियारत से मुसतफ़ीज़ हुए और बुज़ुर्गों से मुलाक़ात का शरफ़ भी हासिल किया उस के बाद फिर बुख़ारा तशरीफ़ लेगए और हज़रत शैख़ नजमुद्दीन कुब्रा से मुलाक़ात की और काफ़ी दिनों तक उन के पास क़ेयाम भी फ़रमाया।

इर्शादे ग़ौसे आज़म की ताअज़ीम

जिन दिनों सुलतानुल हिन्द अताए रसूल सरकारे ख़्वाजा

ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन हसन चिश्ती सन्जरी कुद्दि स सिर्रुहू मुजाहदा व रियाज़त में मशगूल थे। सैय्यिदुना ग़ौसे पाक शैख़ मुहीयुद्दीन अबदुलक़ादिर जीलानी रदियल्लाहु तआला अन्हु की शाने ग़ौसियत का वह हैरत अंगेज़ वाक़ेआ पेश आया जिस में आँजनाब को सैय्यिदुल अक़्ताब वल औलिया मुक़र्रर किया गया।

हज़रत सैय्यिद मुहम्मद गेसूदराज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह हज़रत शैख़ नसीरुद्दीन महमूद चराग़े देहली रहमतुल्लाहि तआला अलैह से नक़्ल करते हैं कि :

„जब सरकारे ग़ौसे आज़म हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी कुद्दि स सिर्रुहू ने „ क़दमी हाज़िही अला रक़बति कुल्लि वलियल्लाह „(याअनी मेरा क़दम तमाम औलियाअल्लाह की गरदन पर है) फरमाया तो उस वक़्त सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का अहदे शबाब था और वह ख़ुरासान के पहाड़ों में कहीं मशग़ूले मुजाहदा व रियाज़त थे उन्हों ने ग़ाइबाना सरकारे ग़ौसे आज़म का इर्शाद सुना और अपनी गरदन झुकाकर जवाब दिया „बल अला ऐनी व राअसी „ याअनी यही नही कि आप का क़दम हमारी गरदन पर है बल्कि आप का मुबारक क़दम मेरी आँख और सर पर है। „

रियाज़त, मुजाहदा और कस्बे फ़ुयूज़ केलिये सफर

गुज़शता सफ्हात में सुल्तानुल हिन्द सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के असफार का कुछ इजमाली तज़्किरा किया गया है इस की मज़ीद तफसीलात „ बज़्मे सूफ़िया „ के हवाले से पेश की जारही हैं जिन में इबारतों की तलख़ीस की गई है पूरी इबारत हर्फ बहर्फ और लफ्ज़ बलफ्ज़ बख़ौफे तत्रालत नक़्ल नहीं की जारही है। मुसन्निफे बज़्मे सूफ़िया (मतबूआ मआरिफ प्रेस आज़म गढ़) आप के तब्लीग़ी असफार के बारे में तहरीर करते हैं कि :

„ हज़रत ख़्वाजा मुर्शिदे बरहक़ से अलाहदा होने के बाद पहले सन्जान आए फिर जील पहुँचे जहाँ से बग़दाद शरीफ वारिद हुए वहाँ से चलकर हमदान तशरीफ लाए फिर तबरेज़ आए फिर ख़िर्क़ान, उस्तुराबाद, सब्ज़वार, हिसार और बलख़ होते हुए ग़ज़नी पहुँचे जहाँ से हिन्दुस्तान की तरफ रुख़ किया। „

„ दलीलुल आरिफ़ीन „ और दूसरे तज़्किरों से माअलूम होता है कि उन्हों ने असफहान, किरमान और बुख़ारा के भी सफर किए। उस के बाद आगे लिखते हैं। :

„ मदीनए मुनव्वरा में उन को हिन्दुस्तान जाने की बशारत मिली जिस से यह ख़याल होता है कि उस ज़माने में मक्कए मुअज़्ज़ा और मदीनए मुनव्वरा की भी ज़ियारत करते रहे। हज़रत ख़्वाजा की यह तवील और बामुशक़्क़त सियाहत राहे सुलूक की कठिन मन्ज़िलें तय करने की ख़ातिर हुई इस लिये वह वहीं पहुँचे जहाँ बहरे माअरिफत के ग़व्वास और शनावर मौजूद थे उन की सुहबत में रहकर फ़ुयूज़ो बरकात हासिल करते रहे। मसलन सन्जान पहुँचे तो वहाँ शैख़ नजमुद्दीन कुब्रा (मुतवफ्फी 618 हि0)की ख़िदमत में ढाई बरस तक क़ेयाम पज़ीर रहे। बग़दाद आए तो हुज़ूर ग़ौसे पाक के आस्ताने पर पाँच माह तक मोअतकिफ रहे बग़दाद शरीफ में आप का हुजरए एअतेकाफ आज भी „ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के चिल्ले „ के नाम से मौजूदो मशहूर है नीज़ वहीं हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सोहरवरदी (मुतवफ्फी 632 हि0) के पीर शैख़ ज़ियाउद्दीन की सुहबत से मुस्तफ़ीज़ हुए। „

एहसासे नदामत से गोशा नशीनी

बग़दाद के क़ेयाम के ज़माने में एक बार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ दजला के कनारे एक ख़ानक़ाह में गए जहाँ एक बुज़ुर्ग मुक़ीम थे। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने उन को सलाम किया तो उन्हों ने इशारे से जवाब दिया और बैठ जाने को कहा जब वह बैठ गए तो उन बुज़ुर्ग ने मुख़ातब करके फरमाया कि „ मुझे पचास साल होगए कि अल्लाह की मख़लूक़ से अलग थलग होकर यहाँ बैठा हूँ जैसे तुम सफर करते फिरते हो उसी तरह मैं भी सफर करता था एक सफर में मेरा गुज़र एक शहर में हुआ। वहाँ एक मालदार शख़्स को देखा कि बाज़ार में खड़ा हुआ लोगों से भाव ताव कररहा है और निहायत सख़्ती से पेश आरहा है और अपने गाहकों को बहुत तकलीफ देरहा है मैं ख़ामोशी के साथ वहाँ से गुज़र गया और उस मालदार शख़्स को कुछ न कहा। मेरे कानों में आवाज़ आई कि अगर तू ख़ुदा केलिये उस शख़्स को मुर्दार दुन्या से बाज़ रखता और झिड़क देता कि ऐसा काम न करो तो शायद

वह मान जाता और ज़ुल्म से बाज़ आजाता। जिस रोज़ से मैं ने यह आवाज़ सुनी है बहुत शर्मिनदा हूँ चुनाँचे मैं जब से इस ख़ानक़ाह में मुक़ीम हूँ कभी इस से बाहर क़दम नहीं निकालता क्यूँकि मुझे इस बात का बड़ा ख़ौफ है कि क़ेयामत के रोज़ जब उस मुआमले के मुतअल्लिक़ मुझ से पूछा जाएगा तो मैं क्या जवाब दूँगा। मैं ने उस तारीख़ से क़सम खाली है कि कहीं न जाऊँगा ताकि मेरी नज़र किसी चीज़ पर न पड़े और मैं शहादत में पकड़ा न जाऊँ।

ख़ौफो ख़शीयत से हड्डियों का ढाँचा

जब हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ किरमान पहुँचे तो वहाँ एक ऐसे बुज़ुर्ग से मिले जो बड़े साहिबे नेअमतो रियाज़त थे यादे हक़ में मशगूलियत की वजह से उन के बदन में सिर्फ रूह ही बाक़ी रह गई थी गोश्त पोस्त का कहीं पता न था वह बातें बहुत कम करते थे। हज़रत ख़्वाजा ने इरादा किया कि उन से पूछें कि आप का यह हाल क्यूँकर है। तो उन्हों ने अपनी रौशन ज़मीरी से इन के इरादे को माअलूम करलिया और इन के सुवाल करने से पहले अपना हाल बयान करना शुरूअ करदिया और कहा कि „ ऐ दुर्वेश ! एक रोज़ मैं अपने दोस्त के साथ क़बरस्तान गया और एक क़ब्र के पास हम दोनों खड़े हुए उस दोस्त से लहवो लइब की कोई बात सरज़द होगई जिस पर मुझे हंसी आगई हंसने पर मेरे कान में आवाज़ आई कि जिस का हरीफ मलकुल मौत और ज़ेरे ख़ाक साँप बिच्छू के दरमियान जिस का घर हो उस को हंसी ज़ेब नहीं देती। जब मैं ने यह बात सुनी तो आहिस्ता से उठा और अपने दोस्त को रुख़्सत किया वह अपने घर गया और मैं इस ग़ार में आया और यहाँ सुकूनत इख़्तियार करली। उस दिन से मुझपर बड़ी हैबत तारी है और ख़ौफ से मेरी जान घुलती जारही है। आज चालीस साल होगए मैं हंसा नहीं और मारे नदामत के सर उठाकर आसमान की तरफ नहीं देखा कि कल क़ेयामत के दिन वहाँ क्या मुंह दिखाऊँगा।

ग़ैरत वाली आँखें

उस्तुराबाद पहुँचे तो शैख़ नासिरुद्दीन उस्तुराबादी की ज़ियारत की। बुख़ारा के सफर में एक मर्दे हक़ से मिले जो नाबीना थे लेकिन यादे इलाही में मशगूल रहते थे। सरकारे ग़रीब नवाज़ ने उन से पूछा कि कब से नाबीना हुए तो कहने लगे कि जब मैं दर्जए कमाले विलायतो माअरिफत को पहुँचा तो एक दिन अचानक मेरी निगाह ग़ैर पर पड़ गई ग़ैब से आवाज़ आई „ ऐ मुद्दई ! तू मेरी महब्बत का दाअवा करता है लेकिन ग़ैर की तरफ देखता है। „ इस को सुनते ही मैं इतना शर्मिनदा हुआ कि मैं ने दुआ की कि इलाही जो आँख दोस्त के सिवा ग़ैर को देखें वह अन्धी होजाए। अभी यह बात मुकम्मल भी न हुई थी कि दोनों आँखें अन्धी होगईं।

तबरेज़ में हज़रत शैख़ अबूसईद तबरेज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से मुलाक़ात की, असफहान में शैख़ महमूद असफहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से कस्बे फ़ुयूज़ किया, बलख़ में हज़रत शैख़ अहमद ख़िज़रवीया रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ख़ानक़ाह में मुक़ीम रहे, ग़ज़नी में शैख़ निज़ामुद्दीन अबुल मुऐय्यिद के पीर शैख़ अब्दुल वाहिद ग़ज़नवी की ज़ियारत की और फिर उस सफर में बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर चिल्ला करके फ़ुयूज़े बातिनी भी हासिल करते रहे। मसलन हमदान में तशरीफ लाए तो हज़रत अबूयूसुफ हमदानी (मुतवफ्फी 535 हि0) के मज़ारे अक़दस पर हाज़िरी दी, ख़िर्क़ान में शैख़ अबुलहसन ख़िर्क़ानी (मुतवफ्फी 425 हि0)के मज़ारे अक़दस की ज़ियारत की, हिरात में शैख़ अब्दुल्लाह अनसारी (मुतवफ्फी 481 हि0)के मज़ार पर मुराक़बा किया और जब यहाँ शबबेदारी करते तो इशा के वुज़ू से फज्र की नमाज़ पढ़ते।

तब्लीग़े दीन और

तक़्सीमे फ़ुयूज़ो बरकात केलिये सफर

राहे सुलूक की मन्ज़िलें तय करने और उस राह की तमाम

सख़्तियाँ और मुशक़्क़तें बरदाश्त करने के बाद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के अनदर औलिया ए किराम की तमाम सिफ़ात और ख़ूबियाँ पैदा होती गईं जिन के मुज़ाहरे इस तवील सफ़र के दौरान होते रहे और राहे हिदायत से भटके हुए बेशुमार लोगों को मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुँचाने का काम अनजाम दिया।

हाकिमे सब्ज़वार का वाक़ेआ

चुनाँचे उसी सफ़र के दौरान आप सब्ज़वार (अलाक़ए अफ़ग़ानिस्तान) पहुँचे। वहाँ का एक अहम और तारीख़ी वाक़ेआ पेश आया जो हाकिमे सब्ज़वार से मुतअल्लिक़ है जिसे „ बज़्मे सूफ़िया „ के मुसन्निफ़ ने इस तरह बयान किया है। :

„ जब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सब्ज़वार तशरीफ़ लाए तो वहाँ एक बाग़ में एक हौज़ के पास फ़रोकश हुए वहाँ का हाकिम यादगार मुहम्मद बाग़ में सैर केलिये पहुँचा तो एक अजनबी को देखकर चींबजबीं (नाराज़) हुआ लेकिन हज़रत ख़्वाजा ने जब उस की तरफ़ निगाह उठाकर देखा तो वह मग़लूबुलहाल होगया और उस पर बेहोशी की कैफ़ियत तारी होगई हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हौज़ का पानी लेकर उस की चन्द छींटें उस के मुंह पर मारीं जब उस को होश आया तो उस के दिल की दुन्या बदल चुकी थी याअनी वह ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का गिरवीदा हो गया। वह मज़हबन शीआ था लेकिन उसी वक़्त अपने अअयानो अरकाने दौलतो हुकूमत के साथ ख़्वाजा का मुरीद होगया और अपनी सारी दौलत अपने पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में पेश करदी। मगर हज़रत ख़्वाजा ने उस को क़ुबूल करने से इन्कार करदिया और फ़रमाया कि जो माल ज़ुल्मो तअद्दी के ज़रीआ हासिल कया गया हो वह उस के अस्ल मालिकों के हवाले करदिया जाए। यादगार मुहम्मद ने ऐसा ही किया यहाँतक कि ग़ुलामों और लौन्डियों तक को आज़ाद करदिया और ज़ाहिरी व बातिनी तालीम की तकमील के बाद हज़रत ख़्वाजा ने उस को ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त भी अता करदिया। „(सैरुल आरिफ़ीन)

एक ख़ुदसर हकीमो फलसफ़ी का हलक़ाबगोश होना

सब्ज़वार से हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ बलख़ पहुँचे जहाँ

कुछ दिनों शैख़ अहमद ख़िज़रवीया के यहाँ क़ेयाम फ़रमाया। बलख़ में उन दिनों एक बहुत बड़ा नामी गिरामी हकीम और फ़ल्सफ़ी शख़्स रहता था जिसे मौलाना हकीम ज़ियाउद्दीन के नाम से जाना जाता था। उसे उलूमे ज़ाहिरी बिलख़ुसूस फ़ल्सफ़ा व हिकमत में बड़ी दस्तरस हासिल थी वह तसव्वुफ़ और अहले तसव्वुफ़ से हद दर्जा मुतनफ़्फ़िर था और अकसर कहा करता था कि तसव्वुफ़ एक हिज़्यान है और सूफ़िया अक़्लो तमीज़ से बेबहरा होते हैं।

बलख़ के मुज़ाफ़ात में उस का एक पुर फ़ज़ा बाग़ था जिस में उस का एक मदरसा था जहाँ वह अपने शागिर्दों को फ़ल्सफ़ा व हिकमत की ताअलीम दिया करता था। सफ़र के दौरान एक रोज़ हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का गुज़र उस अलाक़े से हुआ जहाँ हकीम ज़ियाउद्दीन का बाग़ और उस की दर्सगाहे हिकमत थीं। हज़रत ख़्वाजा का माअमूल था कि तीरो कमान, चक़्माक़ और नमकदान हमेशा अपने साथ रख्ते थे ताकि शदीद ज़रूरत के वक़्त जंगल में किसी जानवर का शिकार करके उसे भून कर तनावुल फ़रमा सकें। उस मक़ाम पर भी आप ने एक कुलंग का शिकार किया और ख़ादिम को हुक्म दिया कि उसे भून कर तैय्यार करे और ख़ुद इबादत में मस्रूफ़ होगए। उसी अस्ना में मुन्किरे हक़ीक़त ज़ियाउद्दीन आनिक्ला उस ने देखा कि एक दुर्वेश मस्रूफ़े इबादत है और उस का ख़ादिम कुलंग भून रहा है। जब हज़रत नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो ख़ादिम ने भुना हुआ गोश्त हज़रत की ख़िदमत में पेश किया। हकीम ज़ियाउद्दीन भी पास ही बैठा था हज़रत ने बिस्मिल्लाह पढ़कर एक रान ज़ियाउद्दीन को अता करदी और दूसरी रान ख़ुद तनावुल फ़रमाने लगे। ज़ियाउद्दीन गोश्त खाते ही बेहोश होगया। जब होश में आया तो उस के दिल में ईमान की शमा रौशन होचुकी थी और फ़ल्सफ़ा व हिकमत के तमाम शोशे व गोशे उस के दिलो दमाग़ से महव होचुके थे, क़ल्बो रूह की गहराई से हज़रत ख़्वाजा का मोअतक़िद होचुका था। उसी वक़्त हकीम अपने तमाम शागिरदों के साथ हज़रते ख़्वाजा के दस्ते हक़परस्त पर बैअत होगया और अपने घर पहुँचकर उस ने फ़ल्सफ़ा व हिकमत की तमाम किताबें दरया में डाल दीं। इल्मे बातिन के शग़फ़ ने उसे मर्दे कामिल बना दिया और अस्रारे

इलाही उस पर मुन्कशिफ़ होगए। तमाम दुन्यावी अलाइक़ से अलाहदगी इख़्तियार करली और शबोरोज़ ज़िक्रो फ़िक्रे इलाही को अपना शेवा बना लिया। यह अज़ीम इन्क़ेलाब हज़रते ख़्वाजा की एक निगाहे करम की अदना करामत थी।

हकीम ज़ियाउद्दीन और उस के फ़ल्सफ़ाज़दा शागिर्दों का हज़रते ख़्वाजा के हल्क़ा बगोशों में शामिल होजाना बड़ा ग़ैर माअमूली वाक़ेआ था जिस ने पूरे बलख़ और अतराफ़ो जवानिब में आप की शानों अज़मत की धूम मचादी, जिस ने सुना वह आप की बारगाह में हाज़री और क़दम बोसी केलिए बेचैन होगया नतीजे के तौर पर लोगों की आमद का एक न ख़त्म होने वाला सिलसिला क़ाइम होगया।

फ़ल्सफ़ियाना अक़्ल परस्ती से ताइब होने के बाद हकीम ज़ियाउद्दीन इबादतो रियाज़त में मशग़ूल होगए। मुर्शिदे कामिल ने मदारिजे सुलूक तय कराए और रुमूज़े बातिनी की ताअलीम की तक्मील के बाद ख़िर्क़ए दुर्वेशी पहनाकर अपना जानशीं बनादिया। और उस अ़लाक़े के लोगों की हिदायत के काम पर उन को मामूर फ़रमाकर आप वहाँ से आज़िमे सफ़र होगए।

हरमे काअबा में ग़ैबी बशारत

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अपने मुर्शिद से शरफ़े बैअत हासिल करने के बाद ख़ुद पीरो मुर्शिद के साथ भी और उस के अलावा भी मुतअद्दिद बार हरमैने तैय्यिबैन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए लेकिन जब 583 हि0 में आप मक्कए मुअज़्ज़मा पहुँचे तो एक दिन हरमे काअबा में मशग़ूले इबादत थे कि ग़ैब से एक आवाज़ आई :

„ऐ मुईनुद्दीन! हम तुझ से ख़ुश हैं और हम ने तुझको बख़्श दिया जो कुछ चाहे हम से मांग ले हम अता करेंगे।„

आप ने अर्ज़ की :

„ख़ुदावन्दा! मुईनुद्दीन के मुरीदीने सिलसिला को बख़्श दे।„

इरशाद हुआ :

„ऐ मुईनुद्दीन! तू हमारी मिल्क है जो तेरे मुरीद और तेरे सिलसिले में ता क़ेयामत मुरीद होंगे उन सब को हम बख़्श देंगे।„ (मुईनुल अरवाह स0 78)

अताए रसूल
मदीनए मुनव्वरा से अजमेरे मुक़द्दस तक

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू अदाएगिए हज के बाद मदीनए मुनव्वरा हाज़िर हुए और अर्से तक वहाँ मशग़ूले इबादत रहे, बक़ौले बाअज़ मस्जिदे क़ुबा में तवील क़ेयाम फ़रमाया। उसी मौक़े पर एक रोज़ आप को दरबारे रिसालत से बशारत हुई कि :

„ऐ मुईनुद्दीन! तू मेरे दीन का मुईन (मददगार) है मैं ने विलायते हिन्दुस्तान तुझको अता की वहाँ कुफ़्रो शिर्क की ज़ुल्मत फैली हुई है तू अजमेर जा तेरे वुजूद से वहाँ की ज़ुल्मते कुफ़्र दूर होगी और इस्लाम का उजाला फैलेगा।„

आप इस बशारत से बहुत ख़ुश हुए मगर हैरान थे कि इलाही अजमेर कहाँ है और कौन सा मक़ाम है, उसी आलमे तहैय्युर में आप की आँख लग गई और हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आप को अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाया। तुर्फ़तुल ऐन (पलक झिपकते) में आप को तमाम शहरो क़िला और कोहिस्तान दिखला दिया और एक बहिश्ती अनार अता फ़रमाकर रुख़्सत फ़रमादिया।

मख़्दूम जहानियाँ जहाँ गश्त रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपने सफ़रनामे में लिखा है कि :

„हज़रत ख़्वाजा के मज़ार शरीफ़ के पाईं अनार का एक दरख़्त मेरी हाज़री के वक़्त था रोज़ाना सात फल उस से उतरते थे जो शख़्स उस अनार को अपने यहाँ फ़रज़न्द होने की निय्यत से खालेता था बहुक्मे रब्बी वह साहिबे औलाद होजाता था।„ (इक्तेबास अज़ हाशिया मुईनुल अरवाह स0 79)

बेदारी में रसूले काइनात की ज़ियारतो मुलाक़ात

„सैरुल अक़्ताब„ में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को हुज़ूर

रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से हिन्दुस्तान आने का हुक्म बेदारी की हालत में मिलने की तफ़सील उस तरह दर्ज है। :

„हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू सैरो सियाहत करते हुए मक्कए मुअज़्ज़मा पहुँचकर वहाँ चन्द दिनों क़ेयाम फरमाने के बाद काअबए आशिक़ाँ मदीनए मुनव्वरा की मुक़द्दस सरज़मीन पर पहुँचे और रौज़ए सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर गुलामाना हाज़री की सआदत हासिल की और चन्द दिनों आप वहीं मुक़ीम रहे यहाँतक कि एक दिन रौज़ए मुतबर्रकए मुनव्वरा से निदा आई कि मुईनुद्दीन को बुलाया जाए। ख़ादिमे आस्ताना ने वहाँ मौजूद तमाम ज़ाइरीनो आशिक़ाने रसूल को मुख़ातब करके आवाज़ लगाई कि मुईनुद्दीन किस का नाम है हाज़िर हो। उस के जवाब में कई आवाज़ें आई कि आप किस मुईनुद्दीन को बुला रहे हैं यहाँ तो इस नाम के बहुत से गुलाम हाज़िर हैं। ख़ादिम लौटकर फिर आस्तानए पाक पर आए। दोबारा रौज़ए पाक से आवाज़ आईकि मुईनुद्दीन चिश्ती को बुलाओ। ख़ादिमे आस्ताना ने हुक्म के मुताबिक़ मुईनुद्दीन चिश्ती को आवाज़ देकर कहा कि आप हाज़िरे बारगाह हों। फिर क्या था हज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती कुद्दि स सिर्रुहू की कैफियत अजीबो ग़रीब होगई, उफ़्ताँ व ख़ेज़ाँ, गिरयाँ व नालाँ, लबों पर दुरूदे पाक के फूल सजाकर रौज़ए रसूलके मुक़द्दस आस्ताने पर सरापा अदबो नियाज़ बनकर खड़े होगए अन्दर से आवाज़ आई कि ऐ क़ुतबुल मशाइख़ अन्दर आजाओ। आप अज़ख़ुदरफ़्तगी, बेख़ुदी और दीवानगी के आलम में भी होशो हवास और अदबो एहतेराम का दामन थामे अन्दर हाज़िर हुए। आप की क़िस्मत बेदार हुई कि हालते बेदारी में रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के जमाले जहाँआरा के दीदारे पुरअनवार से मुशर्रफ हुए आक़ाए करीम ने इरशाद फरमाया। :

„मुईनुद्दीन! तू हमारा ऐने दीन है लेकिन तुझे हिन्दुस्तान जाना होगा वहाँ एक जगह अजमेर है जहाँ मेरे फरज़न्द सैय्यिद हुसैन नामी तब्लीग़े दीन व जिहाद फी सबीलिल्लाह की नियत से गए थे अब वह शहीद होगए हैं जिस के सबब से वह जगह काफिरों के तसल्लुत में आगई है तुम्हारे क़दमों की बरकत से वहाँ इस्लाम फैलेगा और वहाँ के काफिर मग़्लूब होंगे।„

फिर नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक अनार हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हाथ में अता फरमाया और फरमाया कि इस में देखो ताकि तुम यह देख लो और जान लो कि तुम्हें कहाँ जाना है। हुक्म के मुताबिक़ हज़रते ख़्वाजा ने अनार के अन्दर निगाह की तो मश्रिक़ से मग़्रिब तक जो कुछ था सब निगाहों के सामने आगया नीज़ शहरे अजमेर और उस की पहाड़ियाँ वग़ैरह भी अच्छी तरह नज़र आगई। बारगाहे रसूल में मदद की दरख़्वास्त करते हुए हिन्दुस्तान की तरफ माइल ब सफर हुए चुनाँचे चालीस अफराद का एक मुक़द्दस क़ाफ़ला भी आप की क़ेयादतो सरबराही में मदीनए मुनव्वरा से अजमेरे मुक़द्दस केलिए रवाना हुआ।„ (सैरुल अक़्ताब स0 123–124)

हिन्दुस्तान में तशरीफ आवरी

हज़रते सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की हिन्दुस्तान में तशरीफ आवरी के सिलसिले में बेशुमार, मुख़्तलिफ और मुतज़ाद रिवायतें बयान की गई हैं अलग अलग तारीख़ नवीसों और तज़्किरा निगारों ने अपनी अपनी अलाहदा तहक़ीक़ात की रौशनी में मुख़्तलिफ आरा और ख़यालात का इज़हार किया है मसलन बाअज़ लोगों का क़ौल है कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ चार बार हिन्दुस्तान तशरीफ लाए पहली बार मुहर्रम 561 हि0 में और आख़री बार 587 हि0 में (बरिवायते तारीख़े फरिश्ता व मुईनुल अरवाह)

बाअज़ कहते हैं कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ 602 हि0 में हिन्दुस्तान तशरीफ लाए (सैरुल आरिफ़ीन)

एक ख़याल यह भी है कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी के लश्कर के साथ 587 हि0 में हिन्दुस्तान तशरीफ लाए और अजमेर में पृथ्वीराज के ज़वाल के बाद पहुँचे (तब्क़ाते नासिरी, मुन्तख़बुत्तवारीख़, इन्डिया ऑफ औरंगज़ेब वग़ैरह)

चौथा नज़रिया जो क़रीनें क़ेयास है वह यह है कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ 587 हि0 में पृथ्वीराज के दौरे इक़्तेदार में तशरीफ लाए। (मिफ्ताहुत्तवारीख़, अकबरनामा, तुज़्के जहाँगीरी, सैरुल औलिया, अस्रारुल औलिया, फवाइदुस्सालिकीन, सैरुल अक़्ताब, अख़्बारुल अख़्यार और तज़्किरतुल किराम वग़ैरह)

हमारे नज़दीक मुअख़्ख़िरुज़्ज़िक्र रिवायत, रिवायतो दिरायत की कसौटी पर खरी उतरती है कि सरज़मीने हिन्द को पहली मरतबा हज़रत ख़्वाज़ा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के क़दूमे मैमनत लुज़ूम चूमने का शरफ़ 587 हि0 मुताबिक़ 1191–92 ई0 में हासिल हुआ और उस के बाद फिर हज़रत ख़्वाजा इस मुल्क से बाहर तशरीफ़ नहीं लेगए। प्रिथ्वीराज ने आप से मुक़ाबला और ज़ोरआज़माई की बहुत कोशिश की मगर उस बदतीनत और मुतकब्बिर हुक्मराँ का सितारए इक़्बाल आप ही के सामने ग़ुरूब हुआ। इस तौजीहो तावील को इस से भी तक़्वियत मिलती है कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ 582 हि0 में अपने मुर्शिद हज़रत उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू से रुख़्सत हुए और 582 से 587 हि0 के दरमियानी अर्से में मुख़्तलिफ़ ममालिक की सियाहत करते रहे।

फिर एक बार से ज़ियादा हिन्दुस्तान या अजमेर हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की आमद की रिवायतें यूँ भी ग़लत और बेबुन्याद माअलूम होती हैं कि जब मदीनए मुनव्वरा में सरकारे दोजहाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को मुल्के हिन्दुस्तान में अजमेर जाने का हुक्म सादिर फ़रमाया तो आप ने ज़ेहनो दमाग़ में ग़ौर करना शुरूअ किया या सरकार से दरयाफ़्त किया कि अजमेर कहाँ है और हिन्दुस्तान किधर है। तो बाअज़ रिवायत के मुताबिक़ ख़्वाब में आप को सब कुछ दिखा और बता दिया गया या बक़ौले बाअज़ सरकार ने एक अनार अता फ़रमाया और फ़रमाया कि इस में देखो। जब हज़रत ख़्वाजा ने इस में देखा तो मशरिक़ ता ब मग़रिब सब कुछ सामने था यहाँतक कि हिन्दुस्तान और इस का शहर अजमेर नीज़ उस के इर्द गिर्द की पहाड़ियाँ सब कुछ आप ने देख लिया। तो अगर आप हिन्दुस्तान या अजमेर इस से पहले आए होते तो यह पूछने, ग़ौर करने या देखने दिखाने की कोई ज़रूरत ही न पड़ती। इस से भी यह साबित होता है कि हज़रत ख़्वाजा सरकार का हुक्म पाने के बाद पहली बार हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए और फिर यहीं के होकर रह गए।

आप के अहद का हिन्दुस्तान

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की हिन्दुस्तान में तशरीफ़ आवरी से पहले कुछ मुसलमान बुज़ुर्ग भी इस सरज़मीन

को शरफ़े क़दमबोसी बख़्श चुके थे उन बुज़ुर्गों की तब्लीग़ी हिदायत की बदौलत इस मुल्क में मुतअद्दिद मक़ामात पर दीने हक़ के नाम लेवा पैदा हो चुके थे बिलख़ुसूस लाहौर और उस के नवाही अलाक़ों में हज़रत शैख़ इस्माईल बुख़ारी और मख़्दूम शैख़ अली हिजवैरी (दाता गंज बख़्श लाहौरी) रहमतुल्लाहि तआला अलैहिमा की तब्लीग़ी कोशिशों की बदौलत इस्लाम का बड़ा गहरा असर पड़ चुका था इसी तरह क़न्नौज, बदायूँ,नागौर और बिहार के बाअज़ शहरों में भी मुसलमान मौजूद थे। लेकिन हिन्दुस्तान में इस्लाम अभी एक हमागीर कुव्वत की हैसियत से नहीं उभरा था। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तशरीफ़ आवरी हिन्दुसतान में एक ज़बरदस्त रूहानी और समाजी इन्क़ेलाब का पेशख़ेमा साबित हुई और दीने हक़ ने इस सरज़मीन में एक हमागीर हैसियत इख़्तियार करली। हज़रत ख़्वाजा की तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल हिन्दुस्तान की सियासी ताक़त ऊँची ज़ात के हिन्दू राजाओं के हाथ में थी जो परले दर्जे के मुश्रिक, सरकश और मुतकब्बिर थे। आम लोगों की मज़हबी, तमद्दुनी और अख़लाक़ी हालत इन्तेहाई पस्त होचुकी थी उन पर हवलनाक फ़िक्री जुमूद तारी था। जाहिलाना ज़ईफ़ुल एअतिक़ादी, कुफ़्रो शिर्क, औहाम परस्ती, ज़ात पात का इम्तियाज़ और छूतछात उन का ख़ास्सा बन चुके थे। पत्थर,दरख़्त, साँप, चौपाए और उन का गोबर उन के माअबूद थे, कोई शोदर किसी ब्रहमन से क़रीब होकर गुज़र जाता तो उस की पेशानी दाग़ दी जाती। नीच ज़ात के लोगों केलिए ज़िन्दगी एक बोझ बन गई थी, बाअज़ फ़िर्क़ों की बेहयाई का यह आलम था कि मादरज़ाद नंगे रहना अपने लिए बाइसे इफ़्तेख़ार समझते थे बाअज़ फ़िर्क़े शिव लिंग और शिव की बीवी की शर्मगाह को पूजना एक मज़हबी फ़रीज़ा जानते थे, लिवातत और ज़िना की वह गर्म बाज़ारी थी कि अल्लाह की पनाह। बाअज़ फ़िर्क़ेतो उन अफ़आले क़बीहा को गुनाह समझते ही न थे बाज़ नाँहंजार इन्सानों का गोश्त खाना और देवी देवताओं के सामने इन्सानी जान की क़ुर्बानी पेश करना एक मज़हबी लाज़िमा समझते थे।

अमीर ख़ुर्द देहलवी ने अपनी किताब „सैरुल औलिया„ में उस दौर के हिन्दुसतान का नक़्शा दर्जे ज़ैल अल्फ़ाज़ में खींचा है :

„मम्लकते हिन्दुस्तान.........................हमा दयारे कुफ़्रो काफ़िरी व बुतपरस्ती बूद व मुतमर्रिदाने हिन्द हर यके दाअवए

„अना रब्बुकुमुल आअला„ मी करदन्द व खुदाए जल्ल व अला रा शरीक मी गुफ्तन्द व संगो कुलूख़ व दारो दरख़्त व सुतूरे गाव व सरगीने ईशाँ रा सज्दा मी करदन्द व ब जुल्मते कुफ्र कुफ्ले दिले ईशाँ मुज़लमो मुहकम बूद।„

तरजमा :–पूरा हिन्दुस्तान कुफ्रो शिर्क और बुतपरस्ती का गहवारा था और हिन्दुस्तान के सरकशों में से हर सरकश „अना रब्बुकुमुल आअला„ (मैं तुम्हारा रब्बे आअला हूँ) का दाअवा करता था और अपने आप को अल्लाह जल्ल शानुहू का शरीक समझता था और वह लोग पत्थर, ढेले, दरख़्त, गाय और उस के गोबर को सज्दा करते थे और कुफ्र की तारीकी से उन के दिलों के ताले और भी मज़बूत होरहे थे।

आज के हिन्दुस्तान में भी हिन्दुओं के हालात उस से मुख़्तलिफ नही हैं मगर आज तो अल्लाह तआला के फज़्लो करम से मुल्क के हर गोशे और हर ख़ित्ते में मुसलमान मौजूद हैं उस ज़माने में कोई अल्लाह व रसूल का नामलेवा न था और आप की मदद करने वाला न था ऐसे हालात और माहौल में हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू हिन्दुस्तान में वारिद हुए।

मुल्तान में वुरूद

सरकारे ख़्वाजा सफर करते हुए गज़नी पहुँचे और ख़्वाजा अब्दुल वाहिद ग़ज़नवी से मुलाक़ात की और वहाँ से क़न्धार,चमन और कोइटा होकर मुल्तान पहुँचे। मुलतान में मुलाहिदा की हुकूमत का ख़ातमा करके सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी अपनी हुकूमत क़ाइम करचुके थे और अली करमाख़ को गवर्नर बनाके आप ग़ौर जाचुके थे। हुकूमत बिलाशुबहा उस वक़्त ग़ौरियों की थी मगर मुल्तान में मुलाहिदा की मुअतक़िदाती जड़ें मज़बूत थीं, सरकारे ख़्वाजा की आमद इल्मी हल्क़ों केलिए बड़ी अहम्मियत इख़्तियार कर गई। मुलाहिदा को तश्वीश हुई तो अहले सुन्नत ने कुव्वत और तवानाई महसूस की। मुलाहिदा के चलते हुए फिक्रों की फरेबकारी को सरकारे ख़्वाजा ने अपने इसितदलाल की आग से जलाकर ख़ाक करदिया। पहले निजी महफिलों में मुलाहिदा का नातिक़ा बन्द करके कुरआनो सुन्नत की हक़्क़ानियत का लोहा मनवाया, उस के

बाद बड़े बड़े मुनाज़रों में मुलाहिदा का इस तरह इब्ताल किया कि बेख़बरों की आँखें खुल गईं, सिराते मुस्तक़ीम से भटक जाने वाले आप के दस्ते हक़परस्त पर जूक़ दर जूक़ ताइब होने लगे।

क़त्ल का नाकामो नापाक इरादा

मुलाहिदा ने इल्मी महाज़ पर शिकस्ते फाश खाकर अपने तरबियत याफ्ता क़ातिलों को सरकारे ख़्वाजा के क़तल पर मामूर करदिया। कई हम्ले नाकाम होने के बाद एक रात मुलाहिदा के पाँच आदमी ज़हर आलूद ख़न्जर लहराते हुए आप के हुजरे में घुस गए, आप उस वक़्त नवाफिल में मशगूल थे। उन्हों ने आते ही ख़न्जरों के वार शुरूअ करदिए मगर वह उस वक़्त हैरतज़दा रह गए जब उन्हों ने यह महसूस किया कि हज़रत ख़्वाजा के जिस्म से ख़न्जर इस तरह पार होरहे हैं जैसे वह फज़ा में ख़न्जर चला रहे हों। आप इतमीनान से नमाज़ में मसरूफ रहे सलाम फेरने के बाद आप हम्ला आवरों की तरफ मुतवज्जेह हुए तो वह ख़न्जर चला चला के निढाल होचुके थे।

मुलाहिदा का पेशवा अमले तन्वीम का माहिर था अपने अमल का ताबेअ बनाकर वह जिसे जो हुक्म देता था वह उस हुक्म को बजा लाने पर मजबूर होजाता था। वह पाँचों भी उसी का माअमूल बनकर क़त्ल करने आए थे मगर जब सरकारे ख़्वाजा ने उन को ख़ामोशी से एक तरफ बैठ जाने का हुक्म दिया तो उन के ज़ेहन आज़ाद होगए। अमले तन्वीम के सारे असरात ज़ाइल होगए। हवासो होश बजा हुए तो तमाम सूरते हाल उन की समझ में आगई और वह रोरोकर मआफी मांगने लगे। आप ने निहायत फराख़दिली से दरगुज़र फरमादिया, मआफी हासिल करने के बाद उन्हों ने सरकारे ख़्वाजा से कहा „आप अगर इजाज़त दें तो मुलाहिदा के सरबराह इब्ने कश्शाफ को हम ख़तम करदें ताकि ख़ूँरेज़ी का यह घिनौना सिलसिला बन्द होजाए जिस से अहले हक़ का मुसलसल ख़ून बह रहा है।„

आप ने फरमाया „पहले अपनी निय्यतों का जाइज़ा लो अगर तुम बक़ाए अम्न केलिए वाक़ई किसी ज़ालिम को राह से हटाना चाहते हो तो अल्लाह के यहाँ उस का बड़ा अज्र है लेकिन अगर

अपने नफ्स की तहरीक पर किसी को तुम ने क़त्ल किया तो बिला शुबहा यह बड़े घाटे का सौदा है।

मुलतान में मुद्दते क़ेयाम

सरकारे ख़्वाजा ने मुल्तान में तक़रीबन तीन साल क़ेयाम फरमाया क्यूँकि आप ने इस ज़रूरत को महसूस करलिया था कि अगर मुलाहिदा का अवाम पर असर बाक़ी रह गया तो किसी वक़्त भी कोई दाख़िली इन्क़ेलाब ऐसा बरपा होसकता है जिस से मुसलमानों की ताक़त पारा पारा होसकती है। क़ेयाम की दूसरी वजह यह भी थी कि मुल्तान में ऐसे मुसलमानों की ताअदाद काफी थी जो संस्क्रित और भाषा जानने वाले थे क्यूँकि वह सदियों पहले इस्लाम कुबूल करचुके थे और हिन्दू तहज़ीबो तमद्दुन से बख़ूबी वाक़िफ़ थे। आप ने वहाँ हिन्दुस्तानी ज़बानों में मलका पैदा किया क्यूँकि तब्लीग़े दीन केलिए उन ज़बानों का इल्म ज़रूरी था।

अजमेर के राजा और राजमाता पर हैबत

हिन्दुस्तान में भी अहले ख़बर और साहिबे नज़र रूहानियों की कमी न थी। करामत तो ईमान के साथ मशरूत है मगर इस्तिदराज के दरवाज़े रियाज़ते नफ्स केलिए खुले हुए हैं। इस्तिदराज के ज़रीआ भी हैरतनाक उमूर का इज़्हार होसकता है। मज़ीद बराँ हिन्दुस्तान में सेहर भी अपने पूरे शबाब पर था। आप ने जब मुलतान में क़दम रखा था तो अजमेर में राजगुरू ने राजमाता सबीता को आने वाले ख़तरे से आगाह करदिया था और सरकारे ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन को राह से हटाने की तदबीरें शुरूअ कर दी थीं।

तारा गढ़ पर हवन

तारा गढ़ के बलन्द और संगीन किले में हवन की तैय्यारियाँ मुकम्मल होचुकी थीं हिन्दू धर्म में किसी आफते नागहानी को टालने केलिए यह रस्म अदा की जाती है। बड़े बड़े साधू, ज्ञानी, राजगुरू और राजमाता सबीता मश्रिक़ की तरफ रुख़ किए ज़ेरे लब कुछ पढ़ रहे थे। सूरज देवता के रौशन होते ही सैकड़ों मन

संदल को जलाना था जिस पर गाव माता का घी छिड़का हुआ था। आख़िर इन्तेज़ार की घड़ियाँ ख़त्म हुईं सूरज ने मश्रिक़ से झाँक कर तवहहुम परस्तों को देखा तो राजगुरू ने वैद के कुछ श्लोक पढ़कर एक मिश्अल से हवन की आग जला दी, सैकड़ों पण्डितों ने हम आहंग होकर श्लोक पढ़ना शुरूअ कर दिया, फ़ज़ा शोर, ख़ुश्बू और गरमी से भर गई आग के शोअले और धुवाँ बलन्द हुआ तो जहाँ जहाँ से देखा गया वहाँ वहाँ तमाम मन्दिरों के घंटे जाग पड़े और पूरा शहर एक पाँव पर खड़ा होकर प्रार्थना करने लगा। पाँच घंटों के बाद आग शोअलों से महरूम हुई उसी के साथ हवन की रस्म का भी इख़्तेताम हो गया।

राजमाता का बुज़्दिलाना ख़िताब

पृथ्वीराज की माँ, राजमाता सबीता की तरफ से पंडितों पर ज़रो जवाहिर की बारिश की गई उस के बाद सबीता ने खड़े होकर सब को प्रणाम किया और दूर दूर से आने वालों का शुक्रिया अदा करते हुए कहा „यह मेरी बड़ी ख़ुश नसीबी है कि आप जैसे महा पुर्षों ने अजमेर आने का कष्ट उठाया, पृथ्वीराज मेरा बेटा है निडर और बहादुर, उस की तलवार दुश्मनों के सर काटने से पहले हौसलों की डोर काट देती है।

हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान से बाहर किसी में इतना दम नही कि उस से आँख मिला सके। आज हिन्दुस्तान के बावन राजा उस के सामने अपनी गरदन झुकाते हैं। देहली, अजमेर की हुकूमत का एक सूबा है यह बात आप लोग अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे धर्म के वास्ते भी पृथ्वीराज एक मज़बूत क़िला है वरना मुसलमान अबतक हमारा और हमारे धर्म का सत्यानास करचुके होते। अगर बड़े से बड़ा दुश्मन बड़ी से बड़ी फौज लेकर इधर आता तो मैं आप को तक्लीफ न देती। पृथ्वीराज उस के दाँत खट्टे कर देने केलिए काफी था मगर राजगुरू जी कहते हैं कि एक मुसलमान दुर्वेश अपनी रूहानी ताक़तों के साथ मुलतान तक आचुका है और वहाँ से वह इधर का रुख़ करने ही वाला है। राजगुरू जी कहते हैं कि हमारी सारी फौजें मिलकर भी उस रूहानी कुव्वत का मुक़ाबला नहीं कर सकतीं। रूहानी कुव्वत का

मुक़ाबला रूहानी क़ुव्वत ही से किया जा सकता है अब यह मुआमला आप लोगों के सुपुर्द है आप ही लोग जानें।

जादूगर अजयपाल जोगी का जवाबी ख़िताब

राजमाता अपनी बात ख़त्म करके बैठी तो हिन्दुस्तान का सब से बड़ा जादूगर अपनी जगह से उठा उसे उस अहद का „सामरी„ कहा जाता था उस के पास बड़े बड़े देवताओं का आशीर्वाद था उसे लोग रूहानी क़ुव्वतों का सरचश्मा कहते थे वह अपनी जगह से उठकर वहाँ पहुँचा जहाँ सबीता ने अभी अभी अपनी बात ख़त्म की थी। उसे देख कर तमाम मजमा फ़लक शिगाफ़ नाअरों से गूँज उठा „महाराज अजयपाल जी की जय।„

नाअरों का शोर थमा तो अजयपाल ने मजमे को मुख़ातब किया और कहा „राजमाता सबीता जी और सज्जनो! हम सब अपने धर्म के सेवक हैं राजगुरू जी ने मुसलमान दुर्वेश की रूहानी क़ुव्वतों के ज़िक्र से जो ख़ौफ़ो हेरास फैलाया है मैं नहीं समझता कि उस का सबब किया है मैं यह जानता हूँ कि वह बड़े ज्ञानी हैं और उन का इल्म मोअतबर है मगर रस्सी को साँप समझकर काँपना बुज़्दिली है। वह कहते हैं कि मुसलमान दुर्वेश के पास बड़ी शक्ति है। क्या मैं यह पूछ सकता हूँ कि उन्हें हमारी शक्तियों का भी हाल माअलूम है।?„

मजमा फिर से बेक़ाबू होगया नाअरों का शोर देर तक जारी रहा „आप ने हवन करके देवता को राज़ी कर लिया है सितारों की चाल अब हमारा कुछ नही बिगाड़ सकती ।„ अजयपाल फिर बोलने लगा „निराश होने की ज़रूरत नहीं, मैं यक़ीन दिलाता हूँ कि यहाँ के जो बड़े हैं वह तो बहुत बड़े हैं मेरा माअमूली से माअमूली चेला भी मुसलमान दुर्वेश को दौड़ाता हुआ वहाँ पहुँचा आएगा जहाँ से वह चला है। अब सारे ज्ञानियों से मेरा दरख़्वास्त है कि आप लोग अपने अपने स्थानों पर जाएं सिर्फ़ कुछ लोग यहाँ रुकें ताकि साँप का मुंह कुचलने में हमारी मदद करें। हम जिन लोगों को रोक रहे हैं वह सब शक्तिवान हैं उन में कोई काली देवी का लाडला है तो कोई विश्नू का प्यारा, कोई शंकर का मीत है तो कोई जादू में अपनी मिसाल आप है।„

सरकारे ख़्वाजा के लिए जासूसी

रुके हुए लोगों के साथ एक मीटिंग हुई जिस में अपने ज़राएअ इस्तेअमाल करके सरकारे ख़्वाजा के बारे में ज़ियादा से ज़ियादा माअलूमात हासिल करने की ज़िम्मेदारियाँ सौंपी गईं।

सब अपनी अपनी छूलदारियों में चले गए और अपने अपने वसाइल से सरकारे ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन से मुतअल्लिक़ माअलूमात इकट्ठा करने की कोशिशों में मस्रूफ़ होगए।

दूसरे दिन मुक़र्रा वक़्त पर सब अहले कमाल जमा हुए और सब ने अपनी नाकामी का इज़्हार किया सिर्फ़ जोगी अनन्द नरायन मथुरा बाशी और अजयपाल जोगी ने अपनी कामयाबी का एअलान किया जिस से उन में मसर्रत की एक लहर दौड़ गई। उन्हों ने बताया कि दुश्मन इस वक़्त मुलतान में है और उस के साथी उसे ख़्वाजा साहब कहते हैं। उस के बाद दोनों ने आप का हुल्या बयान किया जो बड़ी हद तक मुशाबहते कामिल का आइनादार था। अब ज़रूरत इस बात की थी कि हुल्ये के मुताबिक़ एक तस्वीर बनाई जाए।

जादुई तसव्वुर से सूरतगरी

अभी इस मस्अले में तश्वीश के इज़्हार ने राह पाई थी कि भूटान के एक अज़ीम जादूगर नाथ ने कहा „अगर चन्द अच्छे मुसव्विर मयस्सर आजाएं तो मैं तस्वीर बनवा दूँगा।„

राजमाता सबीता ने दो घंटे के अन्दर अन्दर चार मुसव्विर बुलवा लिए वह ऐसे माहिरे फ़न थे कि एक मरतबा किसी को देखकर उस की तस्वीर बना लेने की सलाहियत रखते थे।

नाथ ने दो मुसव्विरों को जोगी अजयपाल के सामने और दो को जोगी अनन्द नरायन के सामने बिठाकर कहा „सब लोग आँखें बन्द करलें„ दूसरा मुतालबा उस ने अजयपाल और अनन्द नरायन से किया „आप दोनों ख़्वाजा की देखी हुई सूरत पर अपने ज़ेहन को आधे घंटे तक मुर्तकिज़ रखें आप जैसे ज्ञानियों केलिए यह काम मुश्किल नहीं होगा।„ उस के बाद जादूगर नाथ ने मुसव्विरों को मुख़ातब किया „मैं अब मंत्र पढ़ना शुरूअ करता हूँ तुम कुछ ही लम्हों के बाद अपनी नज़रों के सामने उसे पाओगे।„

जोगियों के ज़ेहन में उभरने वाली तस्वीर मुसव्विरों की नज़रों

के सामने आगई आधे घंटे के बाद जब यह अमल पूरा होगया तो नाथ ने पूछा „क्या अब तुम तस्वीर बना सकते हो।?„

चारों मुसव्विरों ने बयक ज़बान कहा „अब हम अपने दुश्मन की तस्वीर आसानी से बना सकते हैं।„

चारों मुसव्विरों को अलग अलग कमरों में बन्द करदिया गया और ज़रूरत का हर सामान उनहें फ़राहम कर दिया गया। जब दो घंटे बाद वह तस्वीरें बनाकर कमरों से बाहर आए तो सब हैरान रह गए वह एक ही आदमी की चार तस्वीरें थीं।

तस्वीरों की मदद से नाका बन्दी

मुसव्विरों के ज़रीआ सरकारे ख़्वाजा की मज़ीद सोलह तस्वीरें बनवाई गईं और तमाम सरहदी चौकियों पर इस सरकारी हुक्मनामे के साथ भिजवा दी गईं कि इस शख़्स को पृथ्वीराज की हुदूदे सल्तनत में दाख़िल न होने दिया जाए। अगर न माने तो उसे गिरफ्तार करलो या क़त्ल करके उस का सर पृथ्वीराज के पास लेआओ।सर लाने वाले को या ज़िन्दा गिरफ्तार करने वाले को मुंह मांगा इन्आम दिया जाएगा। उसी के साथ जासूस राम प्रकाश को मुल्तान की तरफ भेजा गया कि वह सरकारे ख़्वाजा को ढूँडकर क़त्ल करदे या उन की सरगर्मियों से हमें मुत्तला करता रहे।

राम प्रकाश ज़ियाउर्रहमान होगया

राम प्रकाश एक ज़हीन नौजवान था वह कट्टर मज़हबी और बला का दिलेर था। सिंध और पंजाब में रहकर मुसलमानों की तहज़ीब और उन के आदातो अतवार से वह अच्छी तरह वाफ़ि होगया था मुसलमानों के ख़िलाफ जासूसी की कई कामयाब कारगुज़ारियों की वजह से पृथ्वीराज की नज़र में उस की काफ़ी इज़्ज़त थी।

राम प्रकाश ने मुल्तान पहुँचकर मुसलमानों का भेस बदल लिया, सरकारे ख़्वाजा को तलाश करने में उसे कोई दुश्वारी पेश न आई। वह किसी अच्छे और मुनासिब मौक़े की ताक में सरकारे ख़्वाजा के आस पास मंडलाता रहा आख़िर एक रात आँख बचाकर वह सरकारे ख़्वाजा के ख़ेमे में दाख़िल होगया मगर उस ने तवक़्क़ोअ के ख़िलाफ सरकारे ख़्वाजा को जागता हुआ पाया। जैसे ही वह अन्दर पहुँचा सरकारे ख़्वाजा ने उस से कहा „राम प्रकाश!

तुम्हें मुल्तान आए हुए सात दिन होचुके हैं और हमारे पास आज आए हो जब ज़हर में बुझा हुआ ख़न्जर लेकर तुम अजमेर से चले थे हम उसी वक़्त से तुम्हारे मुन्तज़िर थे।„

इन इन्केशाफात पर वह हैरान रह गया मगर तहैय्युर को ज़ेहन से झटक कर उस ने हम्ले केलिए ख़न्जर लहराया। आप की एक ही निगाह ने उसे शल करदिया। आप ने ज़ेर लब तबस्सुम के साथ फरमाया „अरे तुम रुक क्यूँ गए।? पृथ्वीराज, राजगुरू और सबीता को ख़ुश करने के उइस मौक़े को क्यूँ खो रहे हो।?„

राम प्रकाश क़दमों पर गिर गया और कहने लगा „मुझे मआफ कर दीजिए आप तो भगवान के औतार हैं।„

सरकारे ख़्वाजा ने फरमाया „ऐसा न कहो राम प्रकाश! मैं अल्लाह का एक नाचीज़ बन्दा हूँ और सिर्फ एक पैग़ाम लेकर यहाँ आया हूँ कि हम सब एक ख़ुदा के बन्दे हैं ऊँच नीच की हर तक़्सीम ग़ैर फितरी है अपने बनाए हुए बुतों के सामने सर झुकाना इन्सानी शरफ का इन्कार है।„ आप ने थोड़ी सी देर में राम प्रकाश के ज़ेहन को तौहीद के नूर से मुनव्वर करदिया और वह हल्क़ए इस्लाम में दाख़िल होगया। उस का इस्लामी नाम ज़ियाउर्रहमान रखा गया।

मुल्तान से लाहौर की तरफ

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुलतान से लाहौर की तरफ रवाना हुए उस सफर में ज़ियाउर्रहमान भी आप के साथ होगया। बस्ती बस्ती आप ने लोगों के दिलों पर इस्लाम की अज़मत का सिक्का जमाया, मुसलमानों को क़ुर्बे इलाही का रास्ता दिखाया, काफिरों और मुश्रिकों को कलमए तैय्यिबा पढ़ाया। यह क़ाफला साहीवाल पहुँचा वहाँ एक दिन क़ेयाम के बाद ओकांड़ा से गुज़र कर आप लाहौर पहुँचे वहाँ उलमा और मशाइख़ ने आप का शानदार इस्तिक़्बाल किया। आप की शोहरत आप से पहले लाहौर पहुँच चुकी थी अमाइदीनो अकाबिरीने सल्तनत मेज़बानी का शरफ हासिल करने में एक दूसरे पर सब्क़त लेजाना चाहते थेमगर आप ने शहर से बाहर हज़रत शैख़ अली हिजवैरी दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाहि तआला अलैह के आस्तपने के क़रीब क़ेयाम फरमाया। अहले शहर को माअलूम हुआ तो हुजूम लग गया। पूरा दिन रुश्दो

हिदायत के कामों में सर्फ होता, रात गए जब चाहने वाले बादिले नाख़्वास्ता चले जाते तो आप कुछ देर आराम फ़रमाकर तहज्जुद केलिए उठ जाते। लाहौर ही में चालीस अफ़राद की एक जमाअत आप ने ऐसी मुरत्तब की जो सफ़रे तब्लीग़ में हरतरह के हालात का मुक़ाबला करने केलिए रूहानी ताक़तों से पूरी तरह मुसल्लह थी।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हज़रत दाता गंज बख़्श लाहौरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की मदह में यह शेर फ़रमाया था। :

गंज बख़्शे फैज़े आलम मज़हरे नूरे ख़ुदा
नाक़िसाँ रा पीरे कामिल कामिलाँ रा रहनुमा

आज भी आस्तानए पाके हज़रत दाता गंज बख़्श पर यह शेर जली हुरूफ़ में कन्दा है और लोगों को मुख़ातब करके ज़बाने हाल से सरकारे ख़्वाजा की दाता गंज बख़्श से दिली अक़ीदत और महब्बत का सुबूत पेश कर रहा है।

लाहौर में तशरीफ़ आवरी

बाअज़ मुवर्रिख़ों और रिवायतों के मुताबिक़ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू ग़ज़नी से सीधे लाहौर पहुँचे और लाहौर से दो माह के सफर के बाद अजमेर की सरज़मीन पर रौनक़ अफरोज़ हुए इस हिसाब से आप का हिन्दुस्तान (अजमेर) में साले वुरूद 586 या 587 हि0 ठहरता है।

क़ेयामे लाहौर के दौरान हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हज़रत मख़्दूम अली हिजवैरी अलमाअरूफ़ ब दाता गंज बख़्श के मज़ारे पुरअनवार पर हाज़िर हुए और उस से मुत्तसिल एक हुजरे में मोअतकिफ होकर चालीस दिन यादे इलाही में मशग़ूल रहे। यह हुजरा आज भी हज़रत शैख़ अली हिजवैरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मज़ार के पास हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के चिल्ले के नाम से महफ़ूज़ो मशहूर है। डॉकटर इक़्बाल ने भी अपने एक शेर में इस वाक़ेअे की तरफ इशारा किया है वह कहते हैं। :

सैय्यिदे हिजवेर मख़्दूमे उमम
मरक़दे ऊ पीरे सन्जर रा हरम

लाहौर से देहली

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ लाहौर में आठ माह क़ेयाम फ़रमाने के बाद वहाँ से देहली रवाना होगए। अम्रितसर से कुछ आगे बढ़े तो ज़ियाउर्रहमान ने अर्ज़ किया „सरहदी चौकी क़रीब आगई है यहाँ आप को ज़रूर रोका जाएगा।„

आप ने फरमाया „बढ़ते रहो परीशान होने की ज़रूरत नहीं है।„ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने जो कुछ कहा वही हुआ। क़ाफ़ला सरहदी चौकी से गुज़र गया और चौकी के निगराँ इस तरह बैठे रहे जैसे उन के सामने से कोई गुज़रा ही नहीं है। रास्ते में पानी का ज़ख़ीरा ख़त्म होगया और क़ाफ़ले वाले पानी केलिए बेचैन होगए। आप ने रुक जाने का हुक्म दिया। ज़ियाउर्रहमान ने चाहा अर्ज़ करे कि प्यास के ऐसे आलम में रुकने से सफर जारी रखना क़रीने मस्लेहत है। चलते रहने से किसी जगह पानी दस्तयाब होजाने का इम्कान रौशन रहते है, रुकने में हलाकत का यक़ीनी तसव्वुर ज़ेहन को परीशान करता है मगर वह चुप ही रहा वह जान चुका था कि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का कोई हुक्म मस्लेहत से ख़ाली नहीं होता।

क़ाफ़ला रुक गया तो सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने सर उठाकर एक निगाह आस्मान की तरफ डाली और गरदन झुकाली थोड़ी देर बाद ही मश्रिक़ से एक तेज़ रफ्तार आँधी काली घटाओं के साथ नमूदार हुई और इस ज़ोर की बारिश हुई कि कोहो बयाबाँ जल थल होगए। सब ने ख़ूब सैर होकर पानी पिया और पानी का वाफिर ज़ख़ीरा करलिया।

एक क़सबे में क़ेयाम

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का क़ाफ़ला उस पड़ाव से रवाना हुआ फिर लुधियाना और पटियाला के दरमियान एक क़सबे में पहुँचकर मुक़ीम हुआ। वहाँ के मन्दिर का पुजारी बड़ा ज्ञानी था उस की पाठशाला में दूर दूर से तालिबे इल्म आकर पढ़ा करते थे। उसे अपने इल्म से यह बात माअलूम होगई कि एक पवित्र आत्मा उस के क़स्बे में आई है। वह चेलों के साथ दर्शन केलिए आया मगर जब उस ने यह देखा कि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ दूसरे धर्म के मानने वाले हैं तो उस के तेवर बदल गए। उसे

अजमेर के हवन की बात भी याद आगई। क्यूँकि वह उस में शरीक था। वह सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के पास पहुँचा और निहायत सख़्त लबो लेहजे में कहा „तुम अपनी ख़ैरियत चाहते हो तो फ़ौरन लौट जाओ वरना जलाकर राख का ढेर बना दूँगा।„

ख़्वाजा क़ुतुब की बलन्द परवाज़ी

पुजारी की सख़्त कलामी का जवाब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने कमाले नरमी से दिया और फ़रमाया „हमारी तुम से कोई लड़ाई नही है हम तो सिर्फ़ हक़ का पैग़ाम लाए हैं सुन लो क़ुबूल करो या न करो यह तुम्हारी मरज़ी है। अगर हमारी बात मान लोगे तो पस्तियों से निकल कर बलन्दी हासिल करलोगे।„

आप की यह बात सुनकर पुजारी फ़ज़ा में बलन्द होगया और कहा „बलन्दी की बात करनी है तो फिर बलन्दी पर आओ ज़मीन पर क्या खड़े हो।„

आप नें ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी से कहा जो आप के साथ सफ़र कर रहे थे „जाओ उसे उसी की ज़बान में बलन्दी और पस्ती का मफ़्हूम समझा दो।„ हुक्म सुनते ही ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी भी फ़ज़ा में बलन्द हुए और पुजारी से ज़ियादा बलन्द होकर कहा „आओ यहाँ बात करेंगे।„ जब पुजारी ने मज़ीद बलन्द होना शुरूअ किया तो आप ने भी बलन्द होना शुरूअ करदिया और रफ़्तार ऐसी रखी कि दरमियानी फ़ास्ला क़ाइम रहे। बलन्दी की तरफ़ दोनों का सफ़र जारी रहा मगर एक ऐसा मक़ाम आया जहाँ कुर्रए बाद ख़त्म होगया। ख़्वाजा बख़्तियार ने देखा कि कुर्रए बाद की हुदूद से वह आगे बढ़ने से क़ासिर है तो उसे मज़ीद बलन्द होने की दाअवत दी।

पुजारी ने हाथ जोड़कर सर झुका दिया और कहा „बेशक आप बहुत बलन्द हैं। हिन्दुस्तान के ज्ञानी यहाँ से ज़ियादा बलन्दी तक परवाज़ नहीं कर सकते। मैं यह सोच रहा हूँ कि चेले इतने बलन्द परवाज़ हैं तो गुरू की परवाज़ क्या होगी। आओ गुरू देव के पास चलें।„ जब दोनों सरकारे ख़्वाजा के पास पहुँचे तो ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार ने अपने मुर्शिद की दस्त बोसी की और पुजारी क़दमों में गिर गया आप ने उसे उठाकर सीने से लगा लिया। सीना सीने से मस हुआ तो उस के अन्दर नूरे ईमान क़ुबूल करने की इस्तेअदाद पैदा होगई। आप ने कलेमए तैय्यिबा पढ़ाकर उसे

दाख़िले इस्लाम करलिया। पुजारी के तमाम चेले भी उसी वक़्त मुसलमान होगए। शाम होने से पहले अकसर हिन्दू बाशिन्दे मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो चुके थे। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने वहाँ एक हफ़्ता क़ेयाम किया और अपने एक मुरीद ख़्वाजा ग़रीब असग़र को नव मुसिलमों की दीनी और रूहानी तरबियत केलिए मुक़र्रर करदिया। पुजारी का नाम आप ने अब्दुल्लाह तजवीज़ किया वह आप की एक हफ़्ते की मुसाहबत में वलिए कामिल होगया।

रूहानी हिसार

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ उस क़स्बे से रुख़्सत होकर पटियाला से गुज़रते हुए सरस्मा और फिर हाँसी पहुँचे। हाँसी में क़ाफ़ले को लूटने केलिए जाटों ने हम्ला कर दिया। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने जाटों के उस अंबोहे कसीर को देखा तो अंगुश्ते शहादत से एक हिसार खींच दिया जैसे ही उंगली ने दाइरा मुकम्मल किया एक संगीन हिसार क़ाइम होगया। जाट उस क़िला नुमा हिसार को देख कर दंग रहगए। अचानक किसी इमारत के ज़ुहूर में आने का मस्अला उन के नज़दीक ख़ारिज अज़ इम्कान था।

जाट ख़ौफ़ज़दा होकर भाग लिए उन के सरदार ने उन्हें रोका और बुज़दिली के ताअने देकर ग़ैरत दिलाई। उस ने पलटकर देखा तो क़ाफ़ला मैदान में फ़रोकश था और उस के गिर्द किसी क़िस्म का हिसार न था। पहले मुशाहदे को फ़रेबे नज़र समझकर वह फिर हमला आवर हुए इस मरतबा उस की नज़रें अहले क़ाफ़ला पर जमी रहीं मगर जब बिलकुल क़रीब पहुँचे तो उन्हें फिर संगीन हिसार राह में सर फोड़ने केलिए हाइल मिला। इस बार उन का ख़ौफ़ तवहहुम की हदें पार करके यक़ीन बन चुका था। वापस होने लगे तो फिर उन के सरदार ने उन्हें रोकना चाहा मगर वह न रुके और जिधर जिस के सींग समाए निकल गया।

सरकारे ख़्वाजा का देहली में वुरूद

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हाँसी से रोहतक पहुँचे और वहाँ से 587 हि० मुताबिक़ 1191 ई० में देहली पहुँचे। वहाँ ख़ुशी के जश्न मनाए जारहे थे, घर घर घी के चराग़ रौशन थे क्यूँकि प्रिथ्वीराज ने पानीपत के क़रीब तराइन के मैदान में हिन्दुस्तान के

मातहत राजाओं की मुत्तहिदा कुव्वत से शहाबुद्दीन ग़ौरी को शिकस्त देकर पस्पा कर दिया था। हिन्दू जिस क़दर खुश थे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ उसी क़दर मलूल हुए। आप कुछ दिन देहली में ठहरे देहली का चप्पा चप्पा भी कुफ्रो शिर्क में डूबा हुआ था। वहाँ के लोग उन मुसलमान दुर्वेशों को देख कर तिलमिलाए तो बहुत लेकिन ख़ुदा की क़ुदरत कि उन पर उन अल्लाह के शेरों की कुछ ऐसी हैबत तारी हुई कि शरारत की जुर्अत न करसके। अलबत्ता एक नौजवान खुफ़िया तौर पर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को क़त्ल करने के इरादे से एक छुरी बग़ल में छुपाकर आप की मज्लिस में आया और वार करने केलिए मौक़े की तलाश में था कि आप ने अचानक उस की तरफ़ देख कर फ़रमाया „भाई अपना काम कर ना! झिझकता क्यूँ है!?„ आप के अल्फ़ाज़ नश्तर बनकर उस नौजवान के सीने में पैवस्त होगए। वह उसी वक़्त क़दमों पर गिर पड़ा, अपने दरगुज़र का ख़्वास्तगार हुआ और फिर मुशर्रफ़ ब इस्लाम होगया।

सरकारे ख़्वाजा क़ेयामे देहली के दौरान बराबर तब्लीगे हक़ में मसरूफ़ रहे। पाँचों वक़्त अज़ान और नमाज़े बाजमाअत का एहतेमाम होता। आप की जलालत और अज़मत से मुतअस्सिर होकर हज़ारों हिन्दू हल्क़ा बगोशे इस्लाम होगए।

समाना में आप के ख़िलाफ़ साज़िश

कुछ दिन क़ेयामे देहली के बाद आप अजमेर की तरफ़ रवाना होगए। बाअज़ तज़्किरा निगारों के बक़ौल आप ने अजमेर के सफ़र में सोनीपत, नारनोल और समाना में भी क़ेयाम किया। सोनीपत में सैय्यिदुना इमाम नासिरुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह के आस्ताने पर मोअतकिफ़ होने का भी ज़िक्र मिलता है। समाना में आप के दौराने क़ेयाम एक अजीब वाक़ेआ भी पेश आया। बयान किया जाता है कि वहाँ के राजा के पास सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तस्वीर भी थी और आप को गिरफ़्तार या क़त्ल करने के अहकामात भी। उसे जब आप की आमद का हाल मालूम हुआ तो बहुत खुश हुआ। पृथ्वीराज को खुश करने का एक नादिर मौक़ा उस के हाथ आगया था। उस ने अपने मुशीरों को जमा करके उन की राय ली कि सरकारे ख़्वाजा और उन के साथियों पर किस तरह क़ाबू पाया जाए।

राजा के एक तेज़ मिज़ाज मुशीर ने कहा „आप इस मसअले को इतनी अहमियत क्यूँ देरहे हैं आप मुझे हुक्म दीजिए उन तीस चालीस मुसलमानों को गिरफ़्तार करना या क़त्ल करना कोई मुश्किल काम नहीं।

राजा यह बात सुनकर बोला „यह काम इतना आसान नहीं है जितना तू समझ बैठा है उन के सामने ताक़त से काम लेना खुद को मौत के मुंह में डालना है। महाराजा अनन्द नराइन से यह बात मैं ने खुद सुनी है कि अगर हिन्दुस्तान के सारे जोगी, ज्ञानी और जादूगर मिलकर भी हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का मुक़ाबला करें तो हार जाएंगे। हाँ उन पर अगर धोके से क़ाबू पालिया जाए तो कामयाबी का इम्कान है।

खाने से ज़हर बाहर

सोचे समझे मन्सूबे के मुताबिक़ राजा पुरुषोत्तम अपने मुसाहिबीने ख़ास के साथ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के क़ाफ़ले में पहुँचा और हाथ जोड़ कर प्रणाम करते हुए कहा „यह हमारी खुश नसीबी है कि आप जैसा महात्मा हमारी रियासत में आया है। मेरी इल्तेजा है कि आप राजमहल की शोभा बढ़ाएं और हमें अपनी सेवा का मौक़ा दें।„

आप ने कहा „हम किसी राजमहल में नहीं ठहर सकते। यह ज़मीन यह आस्मान हमारे लिए काफ़ी हैं।„ राजा पुरुषोत्तम बोला „यह आप ने ठीक कहा आप जैसे लोग इन तकल्लुफ़ात को पसन्द नहीं करते। अलबत्ता यह इल्तिजा ही क़ुबूल कर लें कि जब तक आप यहाँ ठहरें आप सब का भोजन मेरी रसोई से पेश किया जाए।„

सरकारे ख़्वाजा ने यह पेशकश मुस्कुराते हुए क़ुबूल करली और कहा „हम ने सुना है कि राजपूत बात के धनी होते हैं और मेहमान के साथ कभी धोका नहीं करते। क्या तुम भी राजपूतों की रिवायत का एहतेराम करोगे!?„

पुरुषोत्तम के चेहरे का रंग उड़ गया मगर उस ने हज़रत ख़्वाजा को यक़ीन दिलाया कि „यह राजपूतों की रिवायत के मुताबिक़ मेहमानों की इज़्ज़त करता है।„

राजमहल से खाना आया तो सरकारे ख़्वाजा के सामने लाकर रखा गया। खाना देख कर आप मुस्कुराए और ख़्वाजा फ़ख़रुद्दीन

से कहा „एक काग़ज़ खाने के पास रख दो।„ इरशाद की ताअमील होगई तो आप ने कुछ क़ुरआनी आयात पढ़कर खाने पर दम कर दिया। खाने में जितना ज़हर था खाने से निकल कर सुफ़ूफ़ की सूरत में कागज़ पर जमा हो गया। आप ने ज़हर की पुड़िया बाँध कर खाना लाने वालों में से एक आदमी के हाथ पर रख दी जो फटी फटी आँखों से यह सब मन्ज़र देख रहा था।

„पुरुषोत्तम से कहना यह अपना ज़हर वापस लेलो तुम राजपूतों के माथे पर कलंक का दाग़ हो अल्लाह ज़ालिमों और बदअहदों को अपनी मख़लूक़ की निगहदारी पर कभी बरक़रार नही रखता।„ सरकारे ख़्वाजा ने उस शख़्स से कहा जिस को ज़हर की पुड़िया दी।

खाना लाने वाले चले गए तो आप ने अपने रुफ़क़ा से कहा „बिस्मिल्लाह„ और दुर्वेश खाने में मसरूफ़ होगए।

माँ और बेटे की ख़ुदकुशी

उधर मुलाज़िम ने ज़हर की पुड़िया राजा के हाथ पर रख कर जो कुछ देखा था बता दिया और सरकारे ख़्वाजा का पैग़ाम लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ सुना दिया। उस वक़्त राजा पुरुषोत्तम की माँ भी वहाँ मौजूद थी जब उस ने अपने बेटे के हाथों राजपूती आन की धज्जियाँ उड़ती हुई देखीं तो अपना सर पीट लिया और कहा „कम्बख़्त! अगर मैं ने तेरी बजाए साँप जना होता तो अच्छा था तू ने राजपूतों की नाक कटवा दी।„

पुरुषोत्तम जो बुत बना हुआ था माँ के इस तंज़ पर चौंक पड़ा उस ने पुड़िया खोल कर ज़हर अपने मुंह में डाल लिया। ज़हर इतना मुहलिक था कि पुरुषोत्तम ने एक पल भी न गुज़रा था कि जान देदी। माँ उस के मुंह पर थूक कर उठ खड़ी हुई और अपना कमरा बन्द करके अपने कपड़ों में आग लगा ली और वह भी मर गई। पूरा शहर मातमकदा बन गया।

अनन्द नरायन जोगी जन्नत की आग़ोश में

सरकारे ख़्वाजा समाना से चले तो किसी ने मुज़ाहमत न की अभी आप समाना से दस फ़रसख़ ही चले होंगे कि आप के रुफ़क़ा में से एक ने देखा कि एक शख़्स हिरन की खाल पर बैठा हुआ हवा में परवाज़ करता हुआ चला आरहा था। आप को इत्तेलाअ दी

गई तो फ़रमाया:-

„आने दो यहीं आ रहा है।„

थोड़ी ही देर में आने वाला सरकारे ख़्वाजा के क़दमों में पड़ा हुआ था। आप ने फ़रमाया „तुम्हें आना ही था अनन्द नरायन जोगी! अच्छा हुआ कि वक़्त पर आगए। जब तुम ने और अजयपाल ने हमें तसव्वुर में देखा था और हमारी तस्वीरें बनवाई थीं उसी वक़्त मेरे ख़ुदा ने ईमान का बीज तुम्हारे दिल में बो दिया था आओ देर न करो।„

अनन्द नरायन दोज़ानू आप के सामने बैठ गया आप ने कलेमए तैय्यिबा पढ़ाया और उस के हक़ में दुआए ख़ैर फ़रमाई, फिर क़ल्ब पर तवज्जुह डाली जिस से उस पर नशे की कैफ़ियत तारी होगई। उसी आलम में उस ने कहा „मेरे ख़्वाजा !अब इजाज़त दीजिए।„

आप ने कलेमए तैय्यिबा पढ़ना शुरूअ किया तमाम रुफ़क़ा भी हम आहंग होगए, अनन्द नरायन भी कलेमए तैय्यिबा के विर्द में शरीक होगया और कलेमा पढ़ते पढ़ते ही अपनी जान जाँआफ़रीं के सुपुर्द करदी। सरकारे ख़्वाजा ने मुरीदों से कहा „देखा ख़ुश नसीबी इसे कहते हैं मरने से पहले अल्लाह तआला ने ईमान लाने की तौफ़ीक़ अता फरमादी मुझे क़वी उम्मीद है कि यह शख़्स जिस ने न कभी नमाज़ पढ़ी न रोज़े रखे न हज किया न दीगर फ़राइज़ अदा करने की मुहलत पाई, अल्लाह अपनी रहमतों से उसे बख़्श देगा।„

आप ने ग़ुस्ल दिलाकर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और अपने हाथों से क़ब्र में उतारा। आख़री दीदार करने वालों ने क़ब्र में एक शगुफ़्ता चेहरा देखा जिस पर आसूदगी और इतमीनान की बारिश होरही थी। तदफ़ीन के बाद रात उसी मन्ज़िल पर गुज़ारी सुब्ह क़ाफ़ला अपनी मन्ज़िल की तरफ़ चल पड़ा।

साधुओं के एक मनचले गरोह को सबक़

सरकारे ख़्वाजा का क़ाफ़ला चलते चलते वहाँ पहुँचा जहाँ अब जैसूर है तो साधुओं के एक मनचले गरोह से आप का टकराव हो गया। किसी को ख़ुद छेड़ना मुसलमानों के अख़लाक़ के मुनाफ़ी था जवाबी कार्रवाई पर मजबूर होजाते तो भी दुश्मन को हलाक करने से दामन बचाते, कोशिश यही होती कि इस्लाहे हाल होजाए अगर ईमान न लाएं तो अहले ईमान के रास्ते में दीवार न बनें।

साधुओं का यह हरीफ गरोह अपने कर्तबों पर नाज़ाँ था। हज़रत ख़्वाजा और उन के रुफ़का का इस्लाम उन साधुओं के लिए जंग का जवाज़ बन गया। पहल उन्हीं की तरफ से हुई उन्हों ने अपने मंत्रों से मुसलमानों पर आग बरसानी शुरूअ करदी। ख़्वाजए बुज़ुर्ग ने उस आग को अपने ज़ेरे लब तबस्सुम से फूल बना दिया फूलों की बारिश देख कर वह हैरान हुए। उन्हों ने दूसरा वार किया। सरकारे ख़्वाजा की तरफ एक तूफ़ानी धुआँ भेजा जिस में धाँस ही धाँस थी अगर यह धुआँ सरकारे ख़्वाजा तक पहुँच जाता तो मुसलमान उस वक़्त तक छींकते रहते जब तक वह बेहोश न हो जाते मगर सरकारे ख़्वाजा ने उस धुएं की यलग़ार को दुश्मनों ही की तरफ लौटा दिया नतीजे में साधुओं पर छींकों का दौरा पड़ गया। वह छींकते छींकते निढाल होगए और बेहोश हो हो कर एक दूसरे पर ढेर होगए। आप के नज़दीक उन सरकशों केलिए इतनी ही सज़ा काफी थी आप उन्हें उसी हाल में छोड़ कर अपनी राह चल पड़े।

सरकारे ख़्वाजा का क़ाफला अजमेर में

राजमाता सबीता को राजगुरू ने इत्तेलाअ दी कि „ख़्वाजा को रोकने की सारी कोशिशें नाकाम होगईं हमारा दुश्मन अजमेर से क़रीब आगया है।„ सबीता ने यह ख़बर सुनकर हिक़ारत की नज़र से राजगुरू की तरफ देखा और फौरन चन्द फौजी दस्तों को अजमेर की तरफ आने वाले तमाम रास्तों पर रवाना कर दिया फिर हुक्म दिया कि जहाँ कहीं भी मुसलमान मिल जाएं उन्हें क़त्ल करदिया जाए।„

सरकारे ख़्वाजा अपने साथियों के साथ चले आरहे थे कि दूर से फौजी दस्ते के घोड़ों की उड़ाई हुई गर्द आप ने देखी तो अपने साथियों को रास्ते से ज़रा हटा कर एक तरफ लेगए और एक हिसार खींच कर एक तरफ खड़े होगए। फौजी दस्ता उन के सामने से गुज़र गया मगर उसे सरकारे ख़्वाजा और उन के साथी नज़र न आए। क़ाफला फिर चल पड़ा और चन्द घंटों के सफर के बाद अजमेर की हुदूद में दाख़िल होगया।

बेटे को माँ की नसीहत

क़ाफले ने पहाड़ी सिलसिले की एक वादी में क़ेयाम किया। फौजी दस्तों ने राजमाता सबीता को इत्तेलाअ देदी कि बारह बारह

कोस की हुदूद में मुसलमानों का कोई क़ाफला नहीं मिला यह इत्तेलाअ ग़लत है कि अजमेर की हुदूद में मुसलमानों का कोई क़ाफला दाख़िल हुआ है।

सरकारे ख़्वाजा दूसरे दिन अजमेर शहर में दाख़िल होकर एक सायादार दरख़्त के नीचे ठहर गए। आप के अजमेर आने की ख़बर शहर में आम हो गई। यही ख़बर तारागढ़ पहुँची तो राजमहल पर बिजली बन कर गिरी पृथ्वीराज अजमेर ही में था। राजमाता ने उसे मश्वरा दिया कि वह ख़्वाजा को उस के हाल पर छोड़ दे „वह तुझ पर हमला करने नहीं आया है„ राजमाता बोली। „उस के उपदेश का यहाँ कोई असर क़ुबूल न करेगा उस पर ताक़त इस्तेअमाल करना खुली नादानी होगी।„

पृथ्वीराज का ग़ुरूर

पृथ्वीराज शहाबुद्दीन ग़ौरी को शिकस्त देने के बाद बहुत मग़रूर होगया था वह अपनी माँ से बोला „माताजी! आप अपने काम से काम रखें बेकार बातें सोच सोच कर अपनी सेहत ख़राब न करें आप की यह बात मैं मानता हूँ कि निहत्तों के ख़िलाफ फौजकशी करना मेरी तौहीन है मैं महाराज अजयपाल जोगी को बुलाकर उस के ज़रीआ उस के सारे कस बल निकाल दूँगा।„

दौराने सफर सैकड़ों लोगों का क़ुबूले इस्लाम

लाहौर से अजमेर तक तमाम रास्ते में हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू तब्लीगे हक़ का फरीज़ा सरअंजाम देते रहे। एक रिवायत के मुताबिक़ देहली और अजमेर के रास्ते में सात सौ आदमी मुशर्रफ ब इस्लाम हुए थे। „ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया„ में है कि हज़ारों लोगों ने आप के हाथ पर इस्लाम क़ुबूल किया। उस की रिवायत के अल्फाज़ यह हैं। :

> „हज़ारहा हज़ार सिगारो किबार बख़िदमते आँ महबूबे किरदिगार हाज़िर शुदा मुशर्रफ ब शरफे इस्लाम व इरादते आँ हज़रत शुदन्द बहदद्दे कि चराग़े इस्लाम दर हिन्द बतुफ़ैले ई ख़ानदाने आलीशान रौशन गश्त।„

इस रिवायत में जिन हज़ारहा लोगों के इस्लाम लाने का ज़िक्र किया गया है उन में वह लोग भी शामिल हैं जो अजमेर में

बारगाहे ग़रीब नवाज़ में हाज़िर होकर शरफ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए।

ग़ौरी लश्कर हिन्दुस्तान में

सल्तनते ग़ौर के उलुल अज़्म फरमांरवा सुल्तान शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ौरी और राजा पृथ्वीराज के दरमियान पहली जंग 587 हि0 मुताबिक़ 1191 ई0 में थानसेर से चौदह मील दूर तराइन या तरावड़ी के मैदान में हुई। सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी अपने बड़े भाई सुल्तान ग़यासुद्दीन ग़ौरी की वफात के बाद तख़्त नशीं हुआ। उस का अस्ली नाम मुहम्मद था ऐय्यामे शहज़ादगी में लोग उसे शहाबुद्दीन कहते थे। तख़्त नशीनी के बाद उस ने अपने लिए मुइज़्ज़ुद्दीन का लक़ब इख़्तियार किया लेकिन आम तौर पर वह शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ौरी के नाम से मशहूर है। वह बचपन ही से निहायत जरी, शुजाअ और बलन्द हिम्मत था 1174 ई0 में उस ने महमूद ग़ज़नवी की यादगार सल्तनते ग़ज़नी उस के कमज़ोर जानशीनों से छीन ली उस के बाद उस ने सरज़मीने हिन्द की तरफ अपने क़दम बढ़ाए और मुल्तान, औच और लाहौर पर क़ब्ज़ा कर लिया 1190 ई0 के अवाख़िर में क़िलए सरहिन्द (भटिन्डा) पर भी अपनी फतह का झन्डा गाड़ दिया। उस फतह के बाद वह वापस ग़ज़नी जारहा था उसे रास्ते में ख़बर मिली कि अजमेर और देहली का राजा पृथ्वीराज एक लश्करे जर्रार के साथ क़िलए सरहिन्द पर हमले केलिए आ रहा है। सुल्तान के पास उस वक़्त पृथ्वीराज के क़हहार लश्कर से निपटने केलिए फौज काफी नहीं थी। लेकिन उस की ग़ैरत ने गवारा न किया कि भटिन्डा के नामज़द क़िलादार को बे यारो मददगार छोड़ दे फौरन वापस पलट पड़ा और तरावड़ी के मैदान में पृथ्वीराज के लश्कर के सामने ख़ेमाज़न होगया। पृथ्वीराज के पास दो लाख जंगजू सिपाही और तीन हज़ार हाथी थे। सुलतान के लश्कर की ताअदाद ज़ियादा से ज़ियादा बारह हज़ार थी।

दोनों फौजों के दरमियान घमसान का रन पड़ा। ऐने माअरेकए कारज़ार में सुल्तान शहाबुद्दीन का प्रिथ्वीराज के शुजाअ भाई खाँडेराव (हाकिमे देहली) से सामना होगया। खाँडेराव हाथी पर

सवार था और सुल्तान घोड़े पर। खाँडेराव ने सुल्तान को पहचान लिया और उस पर अपना हाथी रेल दिया। सुल्तान ने अपना नेज़ा खाँडेराव के मुंह पर देमारा। खाँडेराव के दो दाँत टूट गए लेकिन उस ने संभलकर सुल्तान पर अपने नेज़े से एक भरपूर जवाबी वार किया। सुल्तान सख़्त ज़ख़्मी हुआ और नीम बेहोशी के आलम में घोड़े से गिरा ही चाहता था कि उस का एक नौउम्र ख़िलजी ग़ुलाम जो पास ही लड़ रहा था उचक कर सुल्तान के बर्क़ रफ्तार घोड़े पर बैठ गया। उस ने एक हाथ से सुल्तान को संभाला और दूसरे हाथ से शमशीर ज़नी के जौहर दिखाता हुआ खाँडेराव के टिड्डीदल से निकल भागा। सुल्तान की हालत देख कर उस की फौज बद दिल हो गई और उस ने मैदाने जंग से राहे फिरार इख़्तियार कर ली। बचे खुचे ग़ज़नवी सिपाही लाहौर में जमा हुए, सुल्तान भी वहाँ कई हफ्ते ज़ेरे इलाज रहा और ज़ख़्म मुन्दमिल होने पर अपनी बाक़ीमाँदा फौज के साथ वापस ग़ज़नी चला गया। प्रिथ्वीराज को लाहौर का रुख़ करने की जुर्अत तो न हुई लेकिन उस फतह ने उस के हौसले बढ़ा दिए उस से उस की ताक़त और वक़ार में इज़ाफा होगया। उस लड़ाई के बाद उस ने क़िलए सरहिन्द का मुहासरा कर लिया। क़िला का हाकिम उस वक़्त क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन तोलकी था वह एक निहायत बहादर और बलन्द हिम्मत शख़्स था। प्रिथ्वीराज का ख़याल था कि क़िलए सरहिन्द पर क़ब्ज़ा करना चन्द दिन की बात है लेकिन क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन तोलकी और उस के गिन्ती के बहादर साथियों ने डटकर मुक़ाबला किया जब कई हफ्ते तक क़िला फतह होने में न आया तो प्रिथ्वीराज मुहासरे पर अपने लड़के गोला को छोड़ कर अजमेर चला आया। महसूरीन ने तेरह माह के जानतोड़ मुक़ाबले के बाद मजबूरन क़िला ख़ाली कर दिया क्यूँकि उस अर्से में उन्हें किसी तरफ से कोई मदद न पहुँच सकी।

अजमरे में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का पहला क़दम

587 हि0 में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू के क़दमे मुबारक अजमेर की सरज़मीन पर आए जैसा कि बयान

किया जा चुका है कि उस दौर में चौहान ख़ानदान के मशहूर राजा रॉय पिथौरा की वहाँ हुकूमत थी जिस का दाइरए इख़्तियारो इक़्तिदार दूर दूर तक फैला हुआ था यहाँतक कि देहली जैसा अहम शहर भी उसी के ज़ेरे हुक्मरानी था। प्रिथ्वीराज अपने ज़माने के तमाम मक़ामी राजाओं से ताक़त, असर, इक़्तिदार और बहादुरी में मशहूरो मुमताज़ था।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु और उन के हमराही चालीस दुर्वेशों का मुक़द्दस क़ाफ़ला अजमेर शहर से बाहर वसीअ मैदान में एक घनेरे सायादार दरख़्त की छाँव में जाकर फ़रोकश हुआ। उस मैदान में राजा के ऊँट बैठा करते थे। राजा के कारिन्दों को उन दुर्वेशों का उस मैदान में ठहरना बुरा माअलूम हुआ चुनाँचे उन्हों ने ख़ुदा के उन नेक बन्दों को मैदान ख़ाली करदेने को कहा। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने उन से फ़रमाया „भाई! यह मैदान बहुत वसीअ है राजा के ऊँट भी यहीं बैठ जाएंगे इस में कोई परीशानी की बात नहीं है।„ लेकिन राजा के मुलाज़िमीन ने उन की एक न सुनी और बद तहज़ीबी पर उतर आए। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इन्तेहाई ज़ब्तो तहम्मुल का मुज़ाहरा फ़रमाया और यह फ़रमाते हुए अपने साथियों को लेकर वहाँ से उठ खड़े हुए कि „अच्छा भाई यह जगह न सही कोई दूसरी जगह सही यहाँ ऊँट बैठते हैं तो बैठें।„

ऊँट बैठे रह गए

यहाँ से जाकर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अना सागर के किनारे क़ेयाम फ़रमाया वह जगह आज भी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के चिल्ले के नाम से मशहूर है। मैदान में जब ऊँट आकर बैठे तो ऐसे बैठे कि सारबानों के हज़ार जतन के बावुजूद न उठे ऐसा महसूस होता था कि जैसे ज़मीन ने उन को जकड़ लिया हो और वह अपनी जगह से जुंबिश भी न कर पारहे हों। सारबानों ने घबरा कर उस वाक़ेअे की इत्तेलाअ राजा को दी। राजा ने पूरी दास्तान सुनने के बाद कहा कि „तुम लोग दुर्वेश की ख़िदमत में हाज़िर होकर उन से अपनी ग़लती और गुस्ताख़ी की मआफ़ी तलब करो। शुत्रबानों ने आप के पास आकर माअज़ेरत चाही। आप ने फ़रमाया „अच्छा जाओ ऊँट खड़े होगए„ फिर जब उन शुत्रबानों ने वहाँ से आकर ऊँटों को उठाया तो वह फ़ौरन उठ खड़े हुए।

अनासागर तालाब या हौज़े मुर्तज़वी

अनासागर एक निहायत वसीअो अरीज़ और ख़ूबसूरत तालाब है जिसे राजा अन्नादेव ने बनवाकर अपने नाम से मन्सूब किया था। कसरते इस्तेअमाल से „अन्नासागर„ से „अनासागर„ होगया। तालाब के चारों तरफ़ बड़े बड़े मन्दिर थे। उन में एक बहुत बड़ा मन्दिर ख़ास राजा पृथ्वीराज और उस के ख़ानदान के लोगों के पूजा पाठ के लिए मख़सूस था। उस के अख़राजात केलिए कई गाँव की आमदनी वक़्फ़ थी। बयान किया जाता है कि उन मन्दिरों में हर रात सैकड़ों मन तेल जल जाता था और सैकड़ों की ताअदाद में पुजारी और महंत हर वक़्त वहाँ मौजूद रहते थे। उन मन्दिरों के क़रीब होने की वजह से अनासागर को भी एक मुक़द्दस तालाब तसव्वुर किया जाता था।

„सैरुल अक़्ताब„ में अना सागर पर क़ेयाम से मुतअल्लिक़ यह रिवायत भी तहरीर की गई है कि जब हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु अना सागर तालाब के किनारे रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो एक शख़्स ने अर्ज़ की „हुज़ूर! यह वही जगह है कि जब मीर सैय्यिद हुसैन ख़ुनिग सवार रहमतुल्लाहि तआला अलैह इस दयार की तस्ख़ीर के लिए तशरीफ़ लाए थे तो आप ने भी यहीं क़ेयाम फ़रमाया था और इस का नाम „हौज़े मुर्तज़वी रखा था।„

हज़रत ख़्वाजा ने इरशाद फ़रमाया „अलहम्दु लिल्लह कि अपने भाई की मिल्कियत पर मैं मुतसर्रिफ़ हूँ।„ अगरचे उस वक़्त हौज़ के चारों किनारों पर अनगिनत मन्दिर और बुतख़ाने आबाद थे जब हज़रत ख़्वाजा ने देखा तो फ़रमाया कि „इन शा अल्लाह तआला हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मदद से जल्द ही यह बुतख़ाने नापैद हो जाएंगे।„

तब्लीग़ी मिशन का आग़ाज़

उस तालाब पर क़ेयाम फ़रमाने के बाद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इस्लाम की तब्लीग़ का काम निहायत ज़ोरो शोर के साथ शुरू करदिया। आप के बेमिसाल अख़लाक़ो अतवार में इस क़दर जाज़िबीयतो कशिश थी कि लोग कसीर ताअदाद में आप की ख़िदमत में आकर इस्लाम क़ुबूल करने लगे।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की तब्लीग़ी जिद्दो जहद के ज़ेरे असर खुश क़िस्मत और सआदत मन्द लोग खुद बख़ुद इस्लाम की हक़्क़ानियतो जामेइय्यत से मुतअस्सिर होकर उस की जानिब दीवानावार बढ़ने लगे मगर शहरे अजमेर की अकसरियत कुफ़्रो शिर्क और फ़िस्क़ो फ़ुजूर की लाअनतों में घिरी हुई थी। उस तीरा ओ तारीक माहौल में सदाए तौहीदो रिसालत जब चारों तरफ़ गूँजी तो उन बदबख़्तों में ग़मो ग़ुस्सा और हैजान पैदा होगया वह सब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के दरपए आज़ार होगए और उन पर ज़ुल्मो सितम के पहाड़ ढाने लगे। प्रिथ्वीराज भी अजमेर में उन मुक़द्दस दुर्वेशों की मौजूदगी बरदाश्त नहीं कर रहा था लेकिन वह ताक़त का इस्तेअमाल करके उन को निकालना भी मुनासिब नहीं जानता था क्यूँकि उस को माँ की एक नसीहत याद थी जो मुद्दतों पहले बतौरे पेशगोई उस की माँ ने उसे मुतनब्बेह किया था।

बाज़ तज़्किरा निगारों ने तहरीर किया है कि राजा पृथ्वीराज की माँ एक निहायत होशमन्द औरत थी और इल्मे कोहानतो नुजूम में महारत रखती थी उस ने कई बरस क़ब्ल ही राजा को अच्छी तरह बाख़बर कर दिया था कि किसी रोज़ अजमेर में एक दुर्वेश वारिद होगा अगर उस को सताया गया और उस के साथ ज़ालिमाना सुलूक किया गया तो प्रिथ्वीराज की हुकूमतो सल्तनत का ख़ातमा हो जाएगा।

माँ उस तंबीह की वजह से राजा उन दुर्वेशों पर ज़ियादती करने से एहतेराज़ करता था मगर उस के दिल में उन हज़रात के लिए नफ़रतो अदावत का लावा पक रहा था और वह यही चाहता था कि यह मुसलमान लोग उस की हुदूदे सल्तनत से बाहर चले जाएं।

हमले की नाकाम कोशिश

„सैरुल अक़्ताब„ में है कि जब हज़रत ख़्वाजा का कारवाँ अनासागर के किनारे ख़ेमाज़न हुआ तो आप के ख़ादिम रोज़ाना एक गाय ख़रीद कर लाते और ज़िबह करके पकाकर सब लोग खाते और बाज़ लोगों ने लिखा है कि „अनासागर से मछलियाँ निकाल कर लोग खाते थे। क़रीब के मन्दिरों में आने जाने वाले पुजारी यह देख देख कर ग़ज़बनाक हुए और आपस में मुत्तहिद

होकर आप पर हमला करने का प्लान बना लिया और चाहा कि ताक़त का इस्तेअमाल करके उन मुक़द्दस नुफ़ूस को यहाँ से बाहर निकाल दें। चुनाँचे उस वक़्त के तमाम तरह के हथियारों से मुसल्लह होकर आप की तरफ़ रवाना हुए और आप के गिर्द जमा होकर आप को अज़िय्यत पहुँचाना चाही।

हज़रत ख़्वाजा नमाज़ में मसरूफ़ थे आप के साथी और ख़ादिम मौजूदा हालात से मुज़तरिब होकर आप के पास गए और आप को सूरतेहाल की इत्तेलाअ दी। हज़रत नमाज़ से फ़ारिग़ होकर उठे और एक मुट्ठी ख़ाक लेकर उस पर आयतुल कुर्सी पढ़ी और उन काफ़िरों की तरफ़ उछाल दी। वह ख़ाक जिस जिस पर पड़ी उस का जिस्म ऐसा ख़ुश्क होगया कि उस में कोई हिस्सो हरकत बाक़ी न रही। बाक़ी लोग मैदान छोड़ कर भाग गए।

महंत रामदेव का क़ुबूले इस्लाम

अनासागर के आस पास सैकड़ों मन्दिरों में जो सब से बड़ा मन्दिर था और जो राजा पृथ्वीराज और उस के ख़नदान के लिए मख़सूस था उस मन्दिर का सब से बड़ा महंत „रामदेव„ था जिस से तमाम लोगों की गहरी अक़ीदतें वाबस्ता थीं यहाँतक कि राजा पृथ्वीराज का यह अक़ीदा था कि उस की दौलतो हुकूमत सब उसी रामदेव की रहीने मिन्नत है। वह एक क़वी हैकल शख़्स था और बहुत सी सिफ्ली क़ुव्वतों का मालिक भी। बाज़ तज़्किरा निगारों ने बयान किया है कि वह एक जिन था जिसे पृथ्वीराज ने अपनी हिफ़ाज़त पर मामूर कर रखा था। ग़ालिबन उन तज़्किरा निगारों को लफ़्ज़ „देव„ से ग़लत फ़हमी हुई है। संसक्रित ज़बान में „देव„ „जिन„ को नहीं कहते बल्कि यह लफ़्ज़ „देवता„ के मुख़फ़्फ़फ़ के तौर पर इस्तेअमाल किया जाता है।

„सैरुल अक़्ताब„ में उन के क़ुबूले इस्लाम का वाक़ेआ इस तरह दर्ज है कि „जब दुश्मनाने इस्लाम हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से जिस्मानी और माद्दी ताक़तों के ज़रीआ मुक़ाबले से आजिज़ आ गए तो यह तरीक़ा छोड़ कर किसी दूसरे तरीक़े की तलाश में ग़ौरो ख़ौज़ करने लगे। अचानक उन के ज़ेहनों में महंत रामदेव का ख़याल आया और सब के सब उस बड़े बुतख़ाने में गए रामदेव जहाँ का महंत था। वहाँ जाकर उन से उन लोगों ने मिन्नत समाजत की कि आप अपनी बातिनी क़ुव्वत से काम लेकर हम

लोगों को उन से नजात दिलाइए। महंत रामदेव कुछ देर ख़ामोश रहकर बोला „ऐ रफ़ीक़ो! यह दुर्वेश जो यहाँ क़ेयाम फ़रमा हैं बड़े ही साहिबे कमालात शख़्सियत के मालिक हैंउन से यूँ मुक़ाबला करना आसान नहीं है मुम्किन है जादू टोने के ज़रीए उन को ज़ेर कर लिया जाए इस के अलावा कोई तरीक़ा नहीं। चुनाँचे उन सब लोगों को जादू टोना सिखाया और कहा कि जिस क़दर इस की तकरार कर सकते हो करो ताकि उन दुर्वेशों को यहाँ ठहरने की हिम्मत न रहे फिर महंत रामदेव उन सारे लोगों को अपनी क़ेयादत में लेकर सरकारे ख़्वाजा की सम्त चल दिया यहाँतक कि वहाँ पहुँच कर वह लोग महंत के पीछे पनाह लेकर खड़े हुए और जादू टोना का जाप शुरू किया। एक मुरीद ने हज़रत की ख़िदमत में अर्ज़ किया „या पीरे दस्तगीर! यह कुफ़्फारो फ़ुज्जार देव की हिमायत लेकर फिर वापस आ गए हैं और जादू चला रहे हैं ताकि हम पर ग़लबा हासिल कर लें।„

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाया कि „उन सब का जादू बातिल है इन शाअल्लाह हम लोगों पर उस का कोई असर नहीं होगा बल्कि देव ख़ुद उन लोगों पर हमला आवर हो जाएगा।„ यह फ़रमाकर हज़रत ख़्वाजा नमाज़ में मशग़ूल हो गए यहाँतक कि वह तमाम कमबख़्त क़रीब आगए मगर जब उन लोगों की निगाहें हज़रत ख़्वाजा पर पड़ीं तो उन के क़दमों और ज़बानों से रफ़्तारो गुफ़्तार की ताक़त सल्ब हो गई वह जहाँ थे वहीं खड़े रह गए।

जब हज़रत ख़्वाजा नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो अपना चेहरए मुबारक उन की तरफ़ किया। उन के पेशवा महंत रामदेव ने जब आप का जमालो कमाल देखा तो सर से पाँव तक बेद की तरह लरज़ उठा और ज़बान से राम राम कहने की कोशिश की मगर रहीम रहीम के सिवा कुछ न निकला। तमाम काफ़िर यह मनज़र देख कर हैरान रह गए और देव को नसीहत करने लगे। उन की बातें सुन कर देव को ग़ुस्सा आ गया और सामने लकड़ी पत्थर जो कुछ मिला उठा लिया और काफ़िरों के सर पर मारना शुरूअ कर दिया नतीजे के तौर पर उन में से बहुत से लोग हलाक हो गए और बाक़ी लोग बदहवास होकर भाग खड़े हुए।

हज़रत ख़्वाजा ने महंत रामदेव को तलाश करके उन को शाबाशी दी और अपने मुबारक हाथों से एक प्याला पानी एक

ख़ादिम के ज़रीआ इनायत फ़रमाया। देव ने फ़ौरन उस प्याले को अपने हाथ में लेकर अक़ीदत के साथ पूरा पानी पी लिया। उस पानी का पीना था कि उस का दिल कुफ़्र की ज़ुल्मतों से साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ हो गया वह वहाँ से बेतहाशा दौड़ता हुआ हज़रत ख़्वाजा के फ़लकपैमा क़दमों पर गिर पड़ा और कलिमए शहादत पढ़कर मुसलमान हो गया।

मुसलमान होने के बाद हज़रत ख़्वाजा से देव ने अर्ज़ की „हुज़ूर! आप के जमाले जहाँताब की ज़ियारत से मैं बहुत शादमाँ (ख़ुश) हूँ।„ हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाया कि इसी मुनासबत से तुम्हारा नाम „शादी देव„ रखते हैं। महंत रामदेव हज़रत ख़्वाजा के क़दमों में आकर „शादी देव„ हो गया और दुन्या व आख़िरत की तमामतर भलाइयाँ अपने दामन में समेट कर सुर्ख़रू हो गया।

अना सागर कूज़े में

बयान किया जाता है कि शादी देव के मुसलमान होजाने के बाद मद्दे मुक़ाबिल लोगों में ग़मो ग़ुस्सा और ज़ियादा हो गया यहाँतक कि अनासागर से पानी के इस्तेअमाल पर रोक लगा दी। एक ख़ादिम वुज़ू करने गए उन को बग़ैर वुज़ू किए वापस कर दिया जब हज़रत ख़्वाजा को इस की इत्तेलाअ मिली तो आप ने एक ख़ादिम को एक प्याला अता करते हुए फ़रमाया „जाओ अना सागर से कहो तुझेख़्वाजा ने बुलाया है।„

चुनाँचे वह ख़ादिम गया और अना सागर से काफ़ी दूरी से ही प्याला दिखाते हुए कहा „ऐ अना सागर! तुझे मेरे ख़्वाजा ने बुलाया है।„ इतना कहना था कि अना सागर का पानी एक एक बूँद उस प्याले में समा गया यहाँतक कि अजमेर के दूसरे तालाब और कुंवें भी ख़ुश्क हो गए मज़ीद हैरत की बात यह कि दूध पिलाने वाली औरतों और जानवरों का दूध भी सूख गया।

„सैरुल अक़्ताब„ में इस वाक़ेअे को इस तरह तहरीर फ़रमाया है कि „शादी देव के इस्लाम लाने के बाद जब दुशमनों ने ग़ज़बनाक होकर आप का मुहासरा किया और शादी देव को मुख़ातब करके अपने एहसानात, अक़ीदतो महब्बत और उन की पूजा पाठ याद दिलाकर उन से अपने लिए मदद तलब कर रहे थे मगर शादी देव ने उन की किसी बात का जवाब ही नहीं दिया।

उसी वक़्त हज़रत ख़्वाजा ने फ़रमाया „ऐ शादी देव!„ „लब्बैक या हज़रत„ शादी देव ने बिला ताख़ीर ख़ादिमाना अन्दाज़ में जवाब दिया।

वह लोग हैरत में थे कि हमारे इतने पुराने मुआमलात को चन्द लम्हों में फ़रामोश करके उन के इशारए अबरू पर अपनी जान क़ुरबान करने को तैय्यार है। हज़रत ख़्वाजा ने एक कूज़ा शादी देव को देते हुए इरशाद फ़रमाया कि „जाओ अना सागर से इसे भर लाओ और इस्मे या बुद्दूह का विर्द करते रहना। शादी देव इस नाम का वज़ीफ़ा करते हुए तालाब के किनारे पहुँचे और इसी पाक नाम के सहारे कूज़ा भरना चाहा तो अल्लाह तआला की क़ुदरत से तालाब का सारा पानी उस कूज़े में सिमट आया। ऐसा महसूस हो रहा था कि अना सागर में मुद्दतों से पानी था ही नहीं।

अजयपाल जादूगर ख़्वाजा के क़दमों में

शादी देव के मुसलमान होजाने से बातिल परस्तों बिल ख़ुसूस राजा पर बड़ा गिराँ गुज़रा। वह अपनी जगह पर यह ख़याल करने लगा कि यह दुर्वेश साहिराना ताक़तो क़ुव्वत रखते हैं और उन का सरदार एक बड़ा जादूगर है जिस का मुक़ाबला जादू ही से किया जासकता है। उस वक़्त हिन्दुस्तान में एक बड़ा जादूगर अजयपाल जोगी के नाम से बहुत मशहूर था जो जादूगरी के फ़न में निहायत महारतो कमाल रखता था। उस के सैकड़ों शागिर्द थे और वह मुल्क में बेपनाह असरो इक़्तेदार का मालिक था बड़े बड़े राजे महाराजे भी उस की बहुत इज़्ज़त करते थे।

राजा प्रिथ्वीराज उस की जादूगरी के कमालात से बख़ूबी वाक़िफ़ था शादी देव के मुसलमान होजाने से वह बहुत घबरा गया था। उस ने बहुत ग़ौरो फ़िक्र करने के बाद यह नतीजा निकाला कि अजयपाल ही इन दुर्वेशों को शिकस्त देसकता है। चुनाँचे उस ने तमाम माजरा उस के पास कहला भेजा और उसे फ़ौरन अजमेर आने का हुक्म देदिया। अजयपाल हालात सुन कर ग़ैज़ो ग़ज़ब में आ गया और बिला ताख़ीर अपने सैकड़ों शागिर्दों को अपने हमराह लेकर अजमेर पहुँचा अजमेर में उस का बड़ी शानो शौकत के साथ इस्तिक़्बाल किया गया वह जादू की क़ुव्वत से हिरन की खाल पर बैठ कर हवा में परवाज़ करता हुआ आया जबकि उस के चेले शेरों पर सवार थे और उन के हाथों में साँपों के कोड़े थे।

राजा पृथ्वीराज और उस के हमनवा व हमअक़ीदा कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन ने उन की बड़ी ख़ातिर मदारात की और उन जादूगरों से आजिज़ाना दर्ख़्वास्त की कि वह सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू और उन के तमाम साथियों को नेस्तो नाबूद करदें। जैसा कि बयान किया जाचुका है कि अजयपाल को अपनी जादूगरी के कमाल पर बड़ा नाज़ था वह इस मुआमले में किसी को ख़ातिर में नहीं लाता था वह बहुत ही मग़रूरो मुतकब्बिर था उस को अल्लाह वालों की रूहानी ताक़त का बिल्कुल अन्दाज़ा नहीं था। उस को अपनी जादूगरी पर पूरा एअतेमाद और भरोसा था वह समझता था कि कोई बड़े से बड़ाजादूगर उस का मुक़ाबला नहीं कर सकेगा। इसी मुतकब्बिराना ख़याल के ज़ेरे असर उस ने कहा कि यह सब जादू का करिश्मा है मैं इस का इलाज कर दूँगा। राजा पिथैरा ने कहला भेजा कि मैं चलता हूँ तू भी आजा। अस्नाए राह में जब राजा सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के बारे में बुरा इरादा करता था तो वह फ़ौरन अन्धा हो जाता था और जब उस से दिल ही दिल में नादिम हो जाता था तो फिर बीनाई वापस आजाती थी इस तौर पर वह सात बार अन्धा और सात बार बीना हुआ बिल आख़िर मजबूर होकर वह अपने दिल को बुरे इरादों से पाको साफ़ करके आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अजयपाल जोगी भी अपने सात सौ जादू के साँपों, एक हज़ार पाँच सौ चक्करों (जो बज़ोरे सेहर हवा में मुअल्लक़ होकर आए थे) और सात सौ शागिर्दों के साथ आप के नज़दीक पहुँचा और जिस क़दर जादू वग़ैरह वह जानता था सब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और उन के साथियों पर आज़मा डाला मगर उन पर इस का कुछ भी असर न हुआ बल्कि वह चक्कर जो आप पर और आप के ख़ादिमों पर इस्तेअमाल किए जाते वह सब अजयपाल जोगी के शागिर्दों पर पलट आते थे जिस के असर से उन के सर, हाथ और पैर कट जाते और बुरी तरह ज़ख़्मी हो जाते सेहरो अफ़्सूँ के ज़रीआ बनाए गए तमाम साँप सूराख़ों में घुस कर ग़ाइब हो गए।

ख़ुश्क कुंएं और तालाब जलथल

जब राजा पिथैरा और अजयपाल जोगी ने यह हाल देखा कि उन का जादू कोई काम नहीं कर रहा है और अना सागर का पानी ख़्वाजा के क़ब्ज़े में होने की वजह से लोग पानी के बग़ैर

हलाकत के क़रीब पहुँच गए हैं तो सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से आजिज़ी और इन्केसारी के साथ रहम की दरख़्वास्त करने लगे।

आप ने फ़रमाया कि हमारा यह लोटा उठा ला! अजयपाल ने अपना पूरा ज़ोर सर्फ़ कर दिया मगर लोटा हिला भी न सका। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाया कि „यह तेरा जादू नहीं है कि बातिल होजाए यह लोटा मर्दाने हक़ का है।„ फिर आप ने शादी देव से कहा कि लोटा लेआ। वह आप के हुक्म की ताअमील में लोटा उठा लाया। आप ने उस में से थोड़ा पानी तालाबों की जानिब उछाल दिया तो बहुक्मे इलाही तमाम ख़ुश्क हौज़, कुंएं, तालाब और चश्मे पानी से भर गए।

खड़ाँव से पिटाई और सुधार

यह मन्ज़र देख कर कुफ्फारो मुश्रिकीन अंगुश्त बदन्दाँ होकर कहने लगे कि हम ने तमाम उम्र इस देव की पूजा और अजयपाल जोगी की ख़िदमत में गुज़ारी मगर इस वक़्त हमारे कुछ काम न आए।

उस वक़्त अजयपाल जोगी ने सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से जानना चाहा कि आप ने अपने आप को किस मक़ाम तक पहुँचाया है।?

आप ने जवाब में इरशाद फ़रमाया कि पहले तू जो कुछ अपने पास रखता है वह दिखला! अजयपाल जोगी ने मर्गछाला हवा में फेंका और ख़ुद भी एक जस्त लगाकर उस पर बैठ गया मर्गछाला हवा में बलन्द होने लगा। काफ़िरों को इस जादू से बहुत ख़ुशी हुई। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने मुराक़बा फ़रमाया और कुछ देर के बाद सरे मुबारक उठाकर फ़रमाया कि अजयपाल कहाँतक पहुँचा।? अर्ज़ की कि एक चिड़या के बराबर नज़र आ रहा है। फिर पूछा अब कहाँतक पहुँचा।? अर्ज़ किया गया कि अब नज़रों से पोशीदा होगया। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू ने अपनी खड़ाँव को इशारा किया वह उड़ी और ऊपर चलती चली गई यहाँतक कि अजयपाल जोगी के सर पर पड़नी शुरूअ हुई उस वक़्त तमाम हाज़िरीन खड़ाँव के सर पर पड़ने की खटाखट आवाज़ और अजयपाल जोगी की मिन्नत, समाजत और फ़रयाद सुन रहे थे थोड़ी देर में लोगों ने देखा कि खड़ाँव उस को मार मार कर फ़ज़ा से नीचे ज़मीन पर लेआई।

अजयपाल जोगी इस मुक़ाबले में भी बुरी तरह शिकस्त खागया और उस का सेहरो अफ़्सूँ नीज़ ग़ुरूरो तकब्बुर ख़ाक में मिल गया अब वह निहायत आजिज़ी व इन्केसारी और तज़र्रोओ ज़ारी के साथ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मुबारक क़दमों पर गिर पड़ा और मआफ़ी व अमान तलब करने लगा।

मलकूत की सैर

अजयपाल जोगी नेहज़रत ख़्वाजा से अर्ज़ की कि हुज़ूर! आप भी अपना कोई कमाल दिखाएं।

आप ने मुराक़बा फ़रमाया और उसी हालत में आप की रूह आलमे मलकूत तक परवाज़ कर गई। अजयपाल जोगी की रूह भी इस्तिदराज के ज़ोर से आप की रूह के पीछे उड़ने लगी यहाँतक कि पहले आस्मान तक पहुँच गई फिर वहाँ से सरकारे ख़्वाजा की रूहे पाक आस्मान के ऊपर बलन्द हुई मगर अजयपाल जोगी की रूह आस्मान के नीचे ही रह गई उस की ताबे परवाज़ यहीं तक थी उसे उस से आगे जाने का रास्ता न मिला। उस ने आप से इल्तेजा की कि मुझे भी अपने हमराह लेचलें। आप ने उस को भी अपने साथ लेलिया और अर्शेअज़ीम के नीचेपहुँचे। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की रूहे मुक़द्दस की सोहबत की बरकत से अजयपाल जोगी की रूह पर पड़ा हुआ हिजाब उठ गया और फ़रिश्ते सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह की रूह की जो ताअज़ीमो तकरीम कर रहे थे उस का मन्ज़र भी अजयपाल जोगी ने अपनी आँखों से देखा।

क़ेयामत तक की ज़िन्दगी

जब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की रूह मुराजअत करके आस्माने अव्वल तक पहुँच कर दोबारा उरूज की तरफ़ माइल हुई तो अजयपाल जोगी की रूह ने आप से इल्तेजा की कि मुझे आप यहाँ न छोड़ें ताकि मैं हुज़ूर के साथ रहकर क़ुदरतहाए ख़ुदावन्दी का मुशाहदा कर सकूँ।

आप ने जवाब में फ़रमाया कि तू इस मक़ामो मन्सब के लाइक़ जब होगा कि पहले सिदक़ दिल से ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल और उस के रसूले बरहक़ पर ईमान लेआए। अजयपाल जोगी ने सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की इस बात को बसरो चश्म क़ुबूल

कर लिया और बोला कि मैं मुसलमान होता हूँ लेकिन आप से यह गुज़ारिश करता हूँ कि अल्लाह तआला मुझे क़ेयामत तक दुन्या में ज़िन्दा रहने की मुहलत देदे।

सरकारे ख़्वाजा ने बारगाहे इलाही में मुनाजातो दुआ की। जवाब आया कि तुम्हारी दुआ क़ुबूल की गई। उस के बाद आप ने अपना दस्ते मुबारक अजयपाल के सर पर रख कर फरमाया कि तू ज़िन्दा रहेगा। अजयपाल जोगी की रूह फौरन ईमान लेआई फिर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की रूहे पाक अजयपाल की रूह को साथ लेकर बलन्द हुई और अर्शे आअज़म तक पहुँची और अर्शो कुर्सी, जन्नतो दोज़ख़ और तमाम अजाइबात को देख कर वापस हुई।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने मुराक़बे से आँख खोली तो अजयपाल जोगी कलिमए तैय्यिबा पढ़ता हुआ आप के क़दमे मुबारक पर गिर पड़ा। उस वक़्त हक़्क़ो बातिल के फ़र्क़ो इम्तियाज़ को जानने परखने और समझने केलिए मजमए कसीर इकट्ठा था। उन सब के सामने अजयपाल जोगी तीन बार कलिमए शहादत पढ़कर मुसलमान होगया। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने उस का नाम „अब्दुल्लाह,, रखा। तमाम कुफ्फ़ारो मुश्रिकीन मअ राजा पिथैरा के इन वाक़ेआत को अपने सामने गुज़रते हुए देख कर निहायत शरमिन्दगी और नाउमीदी के एहसास के साथ अपने अपने घरों को ख़इबो ख़ासिर वापस हो गए। बयान किया जाता है कि अजयपाल जोगी अभी तक ज़िन्दा और बाहयात है और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के फरमान के मुताबिक़ इनशाअल्लाह क़ेयामत तक ज़िन्दा रहेगा। अजमेर के कोहिस्तानी अलाक़ों में गश्त करते रहना और भूले भटके मुसाफिरों की रहनुमाई उन का काम है। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू के रौज़ए मुक़द्दसा की ज़ियारत के लिए हर रोज़ हाज़िरी भी देते रहते हैं।

रिवायत में बयान किया जाता है कि अजयपाल जोगी के क़ुबूले इस्लाम से मुतअस्सिर होकर उन के सैकड़ों शागिर्दों ने भी हज़रत ख़्वाजा के दस्ते हक़ परस्त पर मुसलमान हो गए। हज़रत ख़्वाजा ने अब्दुल्लाह को कलिमा पढ़ाने के बाद उन को मुरीद करके हलक़ए इरादत में दाख़िल फरमा लिया। फिर अपने साथ रख कर इस्लामी उलूमो मआरिफ की दौलतों से मालामाल कर दिया और हज़रत अब्दुल्लाह ने भी पूरी दिलचस्पी और लगन के

साथ मुजाहदा व रियाज़त करके हज़रत की ख़ास रूहानी तवज्जुह की बदौलत मुख़्तसर सी मुद्दत में मरतबए विलायत हासिल कर लिया हज़रत ख़्वाजा ने उन्हें ख़िर्क़ए ख़िलाफत भी अता किया। जंगल और बयाबान में रहनुमाई का फरीज़ा अन्जाम देने की वजह से लोग उन्हें „अब्दुल्लाह बयाबानी,, भी कहते हैं।

मुस्तक़िल जगह पर क़ेयाम

राजा के ऊँटों के बैठने की जगह से उठकर हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अपने साथियों के हमराह अना सागर के क़रीब एक आरज़ी क़ेयामगाह में मुक़ीम थे। शादी देव और अजयपाल जोगी के मुसलमान हो जाने से हज़रत ख़्वाजा की तब्लीग़ी तहरीक को ज़बर्दस्त ताक़त और मज़बूती हासिल हुई। ख़ुद शादी देव और अजयपाल नेआप से अर्ज़ की कि हुज़ूर! यहाँ हम लोग मुसाफ़रत की ज़िन्दगी कब तक गुज़ारेंगे, शहर के अन्दर चल कर क़ेयाम फ़रमाएं ताकि मख़्लूक़ आप के क़दमों की बरकत से मुस्तफ़ीज़ हों। आप ने उन की अर्ज़ क़ुबूल फरमाते हुए अपने ख़ादिमे ख़ास (साबिक़ हाकिमे सब्ज़वार) मुहम्मद यादगार को हुक्म दिया कि शहर में जाकर फ़ुक़रा के क़ेयाम केलिए मुनासिब जगह का इन्तेज़ाम करें। मुहम्मद यादगार ने हसबुल हुक्म अन्दरकोट की मुख़्तसर आबादी से मुत्तसिल वह मक़ाम पसन्द किया जहाँ इस वक़्त आप का रौज़ए मुबारक है। दर अस्ल यह जगह शादी देव की उफ्तादा ज़मीन थी। मुहम्मद यादगार पसन्द करके वापस आए और माअरूज़ा पेश किया। हज़रत ख़्वाजा ने वहाँ (लबे झालरा जहाँ आप का मज़ार है) जाकर क़ेयाम फरमाया और जमाअतख़ाना, इबादतख़ाना और लंगरख़ाना (मत्बख़) की ताअमीर हुई। इस वक़्त जहाँ आप का रौज़ा है यहाँ मत्बख़ था।

राजा के मुलाज़िम को मुरीद नहीं किया

अजमेरे मुक़द्दस में अना सागर से मुन्तक़िल होकर आप ने लबे झालरा जब मुस्तक़िल क़ेयाम फरमालिया तो दीने इस्लाम की तब्लीग़ का काम और तेज़ रफ्तार होगया। लोग कसीर ताअदाद में आप की बारगाह में हाज़िर होकर कुफ़्रो शिर्क से तौबा करने और कलिमए शहादत पढकर मुसलमान होने लगे। ख़्वाजा बदरुद्दीन इस्हाक़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपने रिसाले „अस्रारुल

औलिया,, में तहरीर फरमाया है कि उसी दौरान पृथ्वीराज का एक मुसलमान मुलाज़िम ख़ुलूसे दिल से हज़रत ख़्वाजा की ख़िदमत में मुरीद होने की निय्यत से हाज़िर हुआ मगर आप ने उसे मुरीद नहीं किया। उस ने यह वाक़ेआ पिथौरा से कहा पिथौरा ने दरयाफ्त कराया कि आप उसे मुरीद क्यूँ नहीं करते आप ने जवाब में कहलाया कि उस में तीन बातें ऐसी हैं जो जाने वाली नहीं हैं। अव्वल यह कि कसरत से गुनाह करेगा। दूसरे यह कि यह तुम्हारा मुलाज़िम है यहाँ उसे कुलाह नहीं दी जाती जो बेगाने के आगे सर झुकाए। तीसरे लौहे महफूज़ में मैं ने देखा है कि वह बेईमान मरेगा।

पृथ्वीराज का ज़वाल

शादी देव और अजयपाल जोगी के मुसलमान हो जाने और सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के ख़ास मुरीदों में शामिल होजाने से प्रिथ्वीराज को बड़ा झटका लगा और उस के दिल पर बहुत शाक़ गुज़रा। इन वाक़ेआत के बाद वह इन्तेहाई ग़मो गुस्सा और ग़ैज़ो ग़ज़ब के आलम में पेचो ताब खाने लगा क्यूँ न होता कि उस का मायए नाज़ और शोहरत याफ्ता जादूगर अजयपाल भी हज़रत ख़्वाजा की रूहानियतो करामत से मग़लूबो शिकस्त ख़ुरदा होकर उस के हाथें से जाता रहा। गोया उस के तरकश का हर तीर बल्कि आख़री तीर भी अपने निशाने से ख़ता कर गया। अब उस को चारों तरफ मायूसियों का अंधेरा दिखाई देने लगा और इधर यह हाल था कि अजमेर के बाशिन्दों में इस्लाम निहायत तेज़ी से फैलने लगा जिस के सबब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु का हल्क़ए असर भी बढ़ने लगा। ज़ाहिर है कि इस सूरते हाल से राजा प्रिथ्वीराज परीशान होगया और हुकूमतो सल्तनत और ताजो तख़्त के बावुजूद वह अपने आप को बेबस, लाचार और आजिज़ो दरमाँदा महसूस करने लगा।

इस मोड़ पर होना तो यह चाहिए था कि वह भी सरकारे ख़्वाजा की बारगाह में अदबो एहतेराम से हाज़िर होकर हल्क़ा बगोशे इस्लाम होजाता और ईमान की दौलत से मालामाल होकर दीनो दुन्या की इज़्ज़तो सरबलन्दी और कामयाबी व कामरानी हासिल कर लेता इस सूरत में उस का राज पाट भी महफूज़ो

सलामत रह जाता और उस की आख़िरत भी बन जाती मगर बदनसीबी के नतीजे में दुन्यवी चन्द रोज़ा जाहो हशम ने उस को मग़रूरो मुतकब्बिर बना दिया था और वह इक़्तेदार के नशे में सोचने समझने की सलाहियतें भी खो बैठा था। उस ने बार बार इरादा किया कि वह सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को अजमेर की सरज़मीन से बाहर करदे लेकिन दूर अंदेश माँ की नसीहतें हर मरतबा उस के अज़्मो इरादे की तक्मील में रुकावट पैदा करती रहीं। बिल आख़िर एक रोज़ उस के सब्रो ज़ब्त का पैमाना लब्रेज़ होकर छलक ही पड़ा।

हुआ यूँ कि पृथ्वीराज एक दिन क़िले की बुर्जियों पर खड़ा था उस ने वहीं से सरकारे ख़्वाजा की क़ेयामगाह की तरफ देखा वहाँ उस वक़्त सरकारे ख़्वाजा के अक़ीदतमन्दों का एक हुजूमो इज़्देहाम था। वह उस मन्ज़र की ताब न लासका कि मेरी हुकूमत में मुसलमानों का इस क़दर असरो इक़्तेदार और इस दर्जा उन की मक़्बूलियत। उस ने अपनी माँ की नसीहतें और पेशगोइयाँ भी बिल्कुल फरामोश कर दीं और पक्का इरादा कर लिया कि उन दुर्वेशों को कुव्वतो ताक़त इस्तेअमाल करके अजमेर से निकाल दिया जाएगा इस जुनून में उस ने सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और आप के ख़ुद्दामो मुरीदीन की शान में नाज़ेबा और ग़ैर मुनासिब जुम्ले मुंह से निकाले और अपने एक सरदार के ज़रीआ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के पास हुक्म भेजा कि अपने तमाम साथियों के साथ अजमेर से फौरन निकल जाएं।

जब राजा का यह गुस्ताख़ाना हुक्म और ज़ालिमाना पैग़ाम सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने सुना तो आप को जलाल आ गया और उसी आलम में फरमाया।

,,पिथैरा रा ज़िन्दा गिरफ्तेम व दादेम,,

पिथौरा को हम ने ज़िन्दा गिरफ्तार कर लिया और दे दिया।

हिन्दुस्तान की हुकूमत ग़ौरी के हवाले

,,मुईनुल अर्वाह,, के मुसन्निफ ने अपनी किताब में यह भी तहरीर फरमाया है कि आप (सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़) ने चन्द अश्ख़ास के ज़रीए प्रिथ्वीराज को इस्लाम क़ुबूल करलेने की दाअवत और तरग़ीब भी दी लेकिन उस ने क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया। आप ने उस का जवाब सुनने के बाद मुराक़बा फरमाया

और फिर इरशाद फ़रमाया कि अगर यह ईमान न लाया तो मैं (ब कुव्वते रूहानी) उस को बदस्ते लश्करे इस्लाम ज़िन्दा गिरफ़्तार करा दूँगा।

एक दिन राजा ने आप को कहला भेजा कि „आप हमारी सरहद से चले जाएं।„

आप ने जवाब में कहला भेजा कि „हम तो नहीं जाएंगे अल्बत्ता तुम को निकालने वाला शहाबुद्दीन ग़ौरी अन्क़रीब आने वाला है।„

चुनाँचे जब शहाबुद्दीन ग़ौरी 587 हि0 में खाँडेरांव के हाथों ज़ख़्मी होकर हिन्दुस्तान से ख़ुरासान पहुँचा तो उस ने एक शब ख़्वाब में देखा कि वह सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की बारगाह में खड़ा है और आप अज़ राहे करम उस से फ़रमा रहे हैं कि „ख़ुदाए तआला ने हिन्दुस्तान की सुल्तानी तुझे बख़्शी है लिहाज़ा तुम जल्द इस तरफ़ तवज्जुह करो और राजा पृथ्वीराज को ज़िन्दा गिरफ़्तार करके सज़ा दो।„

शहाबुद्दीन ग़ौरी इस ख़्वाब से हैरान हो गया और बेदार होने के बाद उस ने अपना यह ख़्वाब उलमा व फ़ुज़ला से बयान किया। सब ने ख़्वाब की बहुत ताअरीफ़ की और उस की ताअबीर में मुज़्दए फ़त्ह सुनाया और हर तरह दिल जोई की। (सैरुल अक़्ताब)

राजा की धम्की

मुअल्लिफ़े „अताए रसूल„ ने तहरीर किया है कि पृथ्वीराज ने एक दिन ग़ज़बनाक होकर एक राजपूत सरदार को उन सरदारों की गिरफ़्तारी केलिए भेजा जो सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत में मौजूद थे और साथ ही शहर में एअलान करा दिया कि जो शख़्स उन बुज़ुर्ग के पास जाएगा उसे क़त्ल कर दिया जाएगा, उस का घरबार लुटवा दिया जाएगा नीज़ सरकारे ख़्वाजा से कहलाया कि „कल (यकुम मुहर्रमुल हराम 588 हि0) तक अजमेर से चले जाएं"।

बाज़ तज़्किरा नवीसों ने लिखा है कि आप ने प्रिथ्वीराज को जवाब में यह कहलवाया कि „तीन दिन में माअलूम होजाएगा कि तू निकलता है या हम।„

इस्लामी लश्कर की फ़तह

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपनी किताब „अख़्बारुल अख़्यार„ में बयान किया है कि:

„आप (सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू) पिथौरा रॉय के दौरे हुकूमत में अजमेर (हिन्दुस्तान) तशरीफ़ लाए और इबादते इलाही में मश्ग़ूल हो गए। पिथौरा रॉय उस ज़माने में अजमेर ही में मुक़ीम था एक रोज़ उस ने आप के एक अक़ीदतमन्द को किसी वजह से सताया वह बेचारा आप के पास फ़रयाद लेकर पहुँचा आप ने उस की सिफ़ारिश में पिथौरा रॉय के पास पैग़ाम भेजा लेकिन उस ने आप की सिफ़ारिश क़ुबूल न की और कहने लगा कि यह शख़्स यहाँ आकर बैठ गया है और ग़ैब की बातें करता है। जब सरकारे ख़्वाजा को यह बात माअलूम हुई तो इरशाद फ़रमाया कि हम ने पिथौरा को ज़िन्दा गिरफ़्तार करके लश्करे इस्लाम के हवाले कर दिया उसी ज़माने में सुलतान मुइज़्ज़ुद्दीन उर्फ़ शहाबुद्दीन ग़ौरी की फ़ौज ग़ज़नी से यहाँ पहुँची, पिथौरा लश्करे इस्लाम के मुक़ाबले केलिए आया और सुल्तान मुइज़्ज़ुद्दीन के हाथों शिकस्त खाकर गिरफ़्तार होगया। उसी तारीख़ से इस मुल्क में इस्लाम फैला और कुफ़्र की जड़ें कट गईं।

बदला लेने की तैय्यारियाँ

जिन दिनों अजमेर में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू और प्रिथ्वीराज के दरमियान कश मकश हो रही थी सुलतान शहाबुद्दीन ग़ौरी ग़ज़नी में राजा प्रिथ्वीराज से अपनी शिकस्त का बदला लेने केलिए हिन्दुस्तान पर दोबारा हम्ला करने की तैय्यारियों में मसरूफ़ था। सुल्तान को तरावड़ी की पहली जंग में शिकस्त खाने से सख़्त सदमा पहुँचा था। वह एक ग़ैय्यूर, बलन्द हिम्मत और हस्सास बादशाह था। ग़ज़नी पहुँच कर उस ने क़सम खाई कि जब तक इस शिकस्त का बदला न लेलेगा आराम से नहीं बैठेगा। चुनाँचे उस ने अपने आप को यक्सर जंगी तैय्यारियों केलिए वक़्फ़ कर दिया। ख़िल्वतकदे में जाना और नया लिबास पहनना बिल्कुल तर्क कर दिया था। रूखी सूखी रोटी खाकर किसी वक़्त थोड़ी देर केलिए ख़ाक के बिस्तर पर आराम कर लेता। वरना सुब्हो शाम यही धुन थी कि जल्द अज़ जल्द मैदाने जंग में पहुँचे। ग़ज़नवी फ़ौज के जो उमरा तरावड़ी की

पहली जंग में मैदाने जंग से भागे थे सुल्तान ने उन पर बड़ा इताब किया उन की गरदनों में जौ से भरे हुए तोबड़े लटकाकर शहर में फिराया ताकि उन्हें इबरत हासिल हो। फरिश्ता लिखता है:

„उमराए ग़ौरो ख़िल्जो ख़ुरासान मआतियो मुआख़िज़ गरदानीद व तोबराहाए पुर जौ बगरदने इशाँ दर आवेख़्ता गिर्दे शहर बगरदानीद व हुक्म कर्द कि आँचे दर तोबराकि हस्त न ख़ुरद सरश अज़ तन जुदा कुनन्द।„

याअनी ख़ुरासान, ख़िल्ज और ग़ौर के उमरा सुल्तान के इताब का निशाना बने। सुल्तान ने उन की गरदनों में जौ से भरे हुए तोबरे लटकाकर शहर के गिर्द फिराया और हुक्म दिया कि जो शख़्स उन तोबरों में से जौ न खाए उस का सर क़लम कर दिया जाए।

यहाँ इस बात की वज़ाहत कर देना ज़रूरी है कि सुलतान ख़ुद मैदाने जंग से नहीं भागा था बल्कि एक ख़िल्जी गुलाम उसे बेहोशी के आलम में मैदाने जंग से निकाल लाया था। सुल्तान अगर होश में होता तो मैदाने जंग से हटने की बजाए वहीं मर जाना क़ुबूल करता। यही तवक़्क़ो उसे अपनी फ़ौज से थी लेकिन सिवाए अफ़ग़ान उमरा के दूसरे उमरा ने उस की तवक़्क़ुआत पूरी न कीं। उन में अक्सरियत ग़ौर, ख़िल्ज और ख़ुरासान के लोगों की थी। उन उमरा के मैदाने जंग से फ़िरार होने की वजह से आम सिपाही भी हौसला हार बैठे और मैदान पृथ्वीराज के हाथ चला गया। साल भर तक सुल्तान पूरी तुन्दही से दूसरे हमले की तैय्यारी करता रहा हत्ता कि एक लाख बीस हज़ार के क़रीब मुसल्लह सवार उस के झन्डे तलेजमा होगए। सुल्तान ने अभी कूच का दिन मुक़र्रर नहीं किया था कि एक रात ख़्वाब में एक नूरानी सूरत बुज़ुर्ग को देखा जो फरमा रहे थे कि „हिन्दुस्तान की तरफ जल्द तवज्जोह करो अल्लाह तआला तुम्हें इस मुल्क की बादशाहत अता फरमाएगा।„ सुल्तान ने ख़्वाब से बेदार होकर अपने दरबार में उस रूहानी बशारत का हाल सुनाया तो लोगों के हौसले दोचन्द होगए। उसी अस्ना में क़िलए सरहिन्द के सुक़ूत की ख़बर सुलतान को पहुँची। अब उस के लिए मुम्किन न था कि कूच में मज़ीद ताख़ीर से काम लेता। ज़ेरे इताब उमरा को बुलाया। वह अपने किए पर नादिम थे। सुल्तान ने उन की ख़ता मुआफ करदी और फिर अपनी फौज में शामिल होने की इजाज़त देदी। इस दफ़आ

सुल्तानी फौज के तमाम अमीरों ने हलफ उठाई कि मर जाएंगे लेकिन मैदाने जंग से मुंह न मोड़ेंगे। ग़रज़ एक लाख बीस हज़ार जंगजोओं को लेकर पूरी तैय्यारी और साज़ो सामान के साथ सुल्तान हिन्दुस्तान की तरफ रवाना हुआ।

तरावड़ी की पहली जंग अगरचे पृथ्वीराज ने जीत ली थी लेकिन उस का दिल मुतमइन नहीं था। उसे यक़ीन था कि जल्द या बदेर सुल्तान शहाबुद्दीन अपनी हज़ीमत का बदला लेने केलिए हिन्दुस्तान पर ज़रूर चढ़ाई करेगा चुनाँचे वह बड़ी मुस्तइद्दी से अपनी फौजी क़ुव्वत में इज़ाफा करने में मस्रूफ रहा। क़िलए सरहिन्द की फतह के बाद जिस दिन उस ने सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को अजमेर से निकाल देने की धम्की दी उस के दूसरे ही दिन खाँडेराव हाकिमे देहली की तरफ से यह इत्तेलाअ मौसूल हुई कि सुलतान शहाबुद्दीन एक जर्रार लश्कर के साथ हिन्दुस्तान की तरफ बढ़ रहा है।

पृथ्वीराज ने यह इत्तेलाअ मिलते ही अपनी जंगी तैय्यरियाँ तेज़ कर दीं। हिन्दुस्तान के तमाम ही राजाओं को उस ने क़ौमी हमीयत का वास्ता देकर अपनी मदद केलिए बुलाया। सिवाए एकआध के मुल्क के तमाम राजे अपनी आज़मूदाकार फौजों को साथ लेकर फौरन पृथ्वीराज की मदद केलिए निकल खड़े हुए। तज़्किरानिगारों का बयान है कि पृथ्वीराज और खाँडेराव की कोशिशों से थोड़े ही दिनों में तक़रीबन डेढ़ सौ राजा अपनी फौजों के साथ पृथ्वीराज के झंडे तले जमा होगए। फरिश्ता के बयान के मुताबिक़ पृथ्वीराज की फौज तीन लाख सवारों और तीन हज़ार जंगी हाथियों पर मुश्तमल थी। बाज़ मुवर्रिख़ीन लिखते हैं कि पृथ्वीराज डेढ़ लाख सवार, एक लाख पियादे, तीन हज़ार जंगी हाथी और सोलाह हज़ार सामाने जंग के छकड़े लदवाकर सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी के मुक़ाबले केलिए रवाना हुआ। कुछ और मुवर्रिख़ पृथ्वीराज के लश्कर की ताअदाद बेक़ेयास बयान करते हैं। उस लश्कर की अस्ल ताअदाद ख़्वाह कितनी ही हो इस हक़ीक़त से इन्कार नहीं किया जासकता कि वह सुल्तानी लश्कर से बहुत ज़ियादा थी और उस के पास जंगी साज़ो सामान भी बहुत ज़ियादा था। बाज़ मुवर्रिख़ों का बयान है कि सुल्तान ने लाहौर पहुँचकर पृथ्वीराज के पास पैग़ाम भेजा कि सरहिन्द और थानसेर का अलाक़ा ख़ाली करदो और जिस तरह अजमेर के साबिक़ राजा

सुल्तान महमूद ग़ज़नवी और उस की औलाद के मुतीअ रहे थे उसी तरह तुम भी हमारी इताअत कुबूल करलो वरना जंग केलिए तैय्यार होजाओ।

पृथ्वीराज ने उस पैग़ाम का निहायत हिकारतआमेज़ जवाब दिया और सुल्तान को लिखा कि सरज़मीने हिन्द से फौरन निकल जाओ वरना तुम्हें इब्रतनाक सज़ा दी जाएगी। इस नामा व पयाम के बाद जंग नागुरेज़ होगई।

दूसरी ख़ूँरेज़ जंग

इत्मामे हुज्जत के बाद सुल्तान ग़ौरी तूफ़ाने बर्क़ो बाद की तरह राजाई लश्कर से नबर्दआज़मा होने केलिए बढ़ा और तरावड़ी के मैदान में खेमाज़न होगया। दूसरी तरफ से प्रिथ्वीराज भी अपने कहहार लश्कर के साथ तरावड़ी के मैदान में आपहुँचा। दोनों लश्करों के अज़्म का यह आलम था कि एक तरफ तो सुल्तानी फौज के अमीरों ने क़स्में खा रखी थीं कि मर जाएंगे लेकिन मैदाने जंग से मुंह न मोड़ेंगे। दूसरी तरफ पृथ्वीराज और उस के हलीफ राजाओं ने अपने माथों पर क़श्क़ा खींचकर और पान का बीड़ा मुंह में लेकर सोगंध खाई थी कि जबतक दुश्मन को सफ़्हए हस्ती से मिटा न लेंगे पीछे नहीं हटेंगे।

27 मुहर्रमुल हराम 588 हि० को दोनों लश्कर लड़ाई केलिए तैय्यार होकर एक दूसरे के सामने आगए। प्रिथ्वीराज ने अपनी फौज इस तरह तर्तीब दी थीकि आगे एक लाख तीरअन्दाज़ थे, उन के पीछे डेढ़ सौ राजाओं की फौज और उन के पीछे प्रिथ्वीराज पचास हज़ार सवारों के साथ मौजूद था और पुश्त पर जंगी हाथियों की क़तार थी। सुल्तान ने फौज के पाँच हिस्से किए। एक हिस्से को जिस में बीस हज़ार सवार और तीस हज़ार पैदल थे कमान की शक्ल में तरतीब दिया और उसे सब से आगे रखा। तीन हिस्सों को एक एक तजरबाकार सिपहसालार के सुपुर्द करके हिदायत की कि वह लड़ाई के शुरूअ में ख़ामोश खड़े रहें और थोड़े थोड़े वक़्फे के बाद मुख़्तलिफ सम्तों से हम्ला करें। बारह हज़ार चीदा सवार सुल्तान ने अपनी ख़ासा की फौज में रखे और एक ऊँचे टीले पर खड़ा होगया। तबले जंग बजते ही राजाई लश्कर के तीरअन्दाज़ों ने तीरों की बारिश शुरूअ करदी। इधर से

ग़ौरी फौज अपने नेज़े संभालकर बर्क़ रफ्तारी से उस लश्कर पर जापड़ी और दस्त बदस्त जंग शुरूअ होगई। राजपूत जाँबाज़ों और सुल्तानी मुजाहिदों में इस ज़ोर का रन पड़ा कि ज़मीन काँप उठी। सुल्तान तेज़ रफ्तार सवारों के ज़रिए अपनी फौज को हिदायात भेज रहा था जंग शुरूअ होने के थोड़ी देर के बाद सुल्तान की महफूज़ फौज के दस्ते बारी बारी मुख़्तलिफ सम्तों से हम्लाआवर होने लगे। इस अन्दाज़े जंग से राजाई लश्कर बौखला उठा लेकिन राजाओं के जोश दिलाने पर राजपूत जाँबाज़ों ने निहायत साबितक़दमी से मुक़ाबला किया। सुल्तान की हिदायत के मुताबिक़ सुल्तानी फौज ने लड़ाई को बहुत वसीअ रक़्बे में फैला दिया और राजाई लश्कर जो एक सीसा पिलाई दीवार की तरह जमा खड़ा था, मुख़्तलिफ सम्तों में फैल कर बिखर गया। सुल्तानी फौज का मक़सद लड़ाई को तूल देकर राजाई लश्कर को थकाना था। इस मक़सद में उसे क़ामयाबी मिली और सेहपहर तक उस फौज पर थकावट के आसार नुमायाँ होने लगे। ऐन उस वक़्त अपनी ख़ासा फौज के बारह हज़ार ताज़ादम सवारों के साथ सुल्तान ने एक तूफ़ानी हम्ला किया। सुल्तानी फौज के मुजाहिदीन ने फलक शिगाफ नाअराहाए तक्बीरो रिसालत लगाते हुए राजाई लश्कर को अपने नेज़ों पर रख लिया। यह हम्ला इतना ख़ौफनाक और शदीद था कि राजा का लश्कर हज़ार कोशिश के बावुजूद साबितक़दम न रह सका। बीसियों राजे जो अपनी फौज को लड़ाई पर उभार रहे थे ख़ाको ख़ून में लोट गए और राजाई फौज अपने हज़ारहा मक़्तूलों को मैदाने जंग में छोड़कर भाग खड़ी हुई। प्रिथ्वीराज और खाँडेराव ने भी मजबूर होकर राहे फिरार इख़्तियार की। खाँडेराव लड़ाई में मारा गया या बचकर निकल गया उस के मुतअल्लिक़ मुवर्रिख़ीन के बयानात में इख़्तिलाफ है। प्रिथ्वीराज भागते हुए दरयाए सरस्वती के किनारे सुल्तानी फौज के हाथों गिरफ्तार होगया और फिर क़त्ल कर दिया गया। इस तरह सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की यह पेशगोई पूरी हुई कि „पिथौरा रा ज़िन्दा गिरफ्तार करदेम व दादेम„ सुल्तानी फौज ने बड़ी दूर तक हज़ीमत ख़ुर्दा उस फौज का तआक़ुब किया। इस तरह कई मील तक हज़ारों मक़्तूलों की लाशों से ज़मीन अट गई और सालहा साल

तक उन मक़्तूलों की हड्डियाँ लोगों को इस खूनी माअरके की याद दिलाती रहीं।

सुल्तान ग़ौरी सरकारे ख़्वाजा की बारगाह में

पृथ्वीराज को शिकस्त देने के बाद सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी किला सरस्वती, हाँसी, समाना और केहराम वग़ैरह को फतह करता हुआ 589 हि० में अजमेर पहुँचा। यहाँ उस ने चन्द हज़ार अफ़राद को जो उस से मुक़ाबिल हुए तहे तेग़ करके अजमेर फतह कर लिया और यहाँ इस्लामी हुकूमत क़ाइम की। प्रिथ्वीराज के लड़के गोला या कोला को इस शर्त पर कि वह मुतीओ फरमाँबरदार रहेगा अजमेर शरीफ का फरमाँरवा बना दिया। अजमेर में क़ेयाम के दौरान सुल्तान ग़ौरी सरकारे ख़्वाजा की ख़िदते अक़्दस में निहायत अक़ीदतो एहतेराम के साथ हाज़िर होता रहा। उस ज़माने में हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह भी अजमेर में मौजूद थे। उस मुलाक़ात के मौक़े पर सरकारे ख़्वाजा ने सुल्तान ग़ौरी को शरफे मुरीदी से मुशर्रफो सरफराज़ फरमाया सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने सुल्तान को सीने से लगा लिया, उसे फतह की मुबारकबाद दी, अपनी दुआओं से नवाज़ा और बहुत सी नसीहतें फरमाईं जिन में ख़ास तौर पर ताकीद फरमाई कि यहाँ के लोगों को तक्लीफों अज़िय्यत न देना और अदलो इन्साफ की बुन्यादों पर ही हुकूमत क़ाइम करना। सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी ने अजमेर शरीफ में तीन रोज़ तक क़ेयाम किया। उस दौरान वह सरकारे ख़्वाजा की इक़्तेदा में नमाज़ें पढ़ता रहा और आप के फैज़े सुहबत से खूब खूब मुस्तफीज़ होता रहा।

हिन्दुस्तान में मुस्लिम इक़्तेदार

अजमेर शरीफ से सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी ग़ज़नी वापस चला गया और यहाँ केलिए कुतबुद्दीन एबक को अपना नाइब मुक़र्रर कर दिया। यह बहुत ही बहादर और आली हिम्मत था उस ने अपनी सलाहियतों के ज़रीए फुतूहात का सिलसिला जारी रखा और थोड़ी सी मुद्दत में गुजरात, ग्वालयर और बयाना वग़ैरह के अलाक़ों में अपनी शानदार फतह का परचम लहरा दिया उसी तरह बख़्तियार ख़िल्जी ने बिहार, बंगाल और आसाम के सूबे फतह करके वहाँ सुल्तान का इक़्तेदार क़ाइम करदिया।

दोसाल गुज़रने के बाद राजा जयचन्द ने अपने पर पुर्ज़े निकालने शुरूअ करदिए और दीगर कई एक राजाओं को अपने साथ मुत्तहिद करके सुल्तान के मुक़ाबले में सफआरा हुआ। कुतबुद्दीन एबक ने सुल्तान के पास जयचन्द की सरकशी की ख़बर भिजवाई वह इस इत्तेलाअ पर फौरन निहायत तेज़ी के साथ हिन्दुस्तान के लिए रवाना होगया और यहाँ पहुँचकर एक ही हल्ले में राजा जयचन्द और उस के हमनवाओं और शरीके जंग राजाओं के नापाक मन्सूबों को ज़ेरो ज़बर करके ख़ाक में मिला दिया उस जंग में जयचन्द मारा गया। इस फतहो कामरानी से हिन्दुस्तान में मुस्लिम इक़्तेदार की बुन्यादें बहुत मज़बुत और मुस्तहकम हो गईं। सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी के क़ाइम मक़ाम ने पहले केहराम फिर देहली को अपना दारुल हुकूमत बना लिया। सुल्तान के जाने के बाद उस के चचा ने जो तरावड़ी की जंग में हारने के बाद कहीं छुप गया था अजमेर पर हम्ला करके अपने भतीजे को निकाल कर सल्तनत पर क़ाबिज़ हो गया। जब एबक को इस वाक़ेअे की ख़बर मिली तो उस ने फौरन अजमेर का रुख़ कर लिया और एक मुख़्तसर सी जंग के बाद अजमेर को दुबारा फतह कर लिया। अब

उस ने मीर ख़ुनिग सवार को अजमेर का हाकिमो फरमाँरवा बना दिया। मीर ख़ुनिग सवार सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हल्क़ए इरादत में शामिल होगए और इस्लाम की तब्लीग़ो इशाअत में सरकारे ख़्वाजा के शरीको मुआविन हो गए।

मीर ख़ुनिग सवार की शहादत

602 हि0 में कुतबुद्दीन एबक की मौत की ग़लत ख़बर फैल गई उस हादसे से दुश्मनों को अच्छा मौक़ा मिल गया और आस पास के बहुत से लोगों ने मुत्तहिदा महाज़ बनाकर मीर ख़ुनिग सवार पर हम्ला कर दिया उस वक़्त शाही फौज अजमेर से बाहर थी। मीर ख़ुनिग सवार के साथ चन्द आदमी थे उन्हों ने निहायत इस्तिक़लाल ो पामरदी से बाग़ी लश्कर का मुक़ाबला किया और लड़ते लड़ते शहीद होगए। यह वाक़ेआ रात में पेश आया सुब्ह के वक़्त जब इस की ख़बर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ तक पहुँची तो आप बज़ाते ख़ुद तशरीफ लाए और शहीदों की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। मीर ख़ुनिग सवार का मज़ार शरीफ तारागढ़ की पहाड़ी पर है।

सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी की शहादत

उसी साल खोखरों ने शोरिश बरपा की जिन को सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी ने हिन्दुस्तान आकर बुरी तरह शिकस्त दी। उस बग़ावत को पामाल करके सुल्तान ग़ज़नी वापस जारहा था कि दरयाए जेहलम के साहिल धमेक के मक़ाम पर किसी खोखर या इस्माईली फिदाई ने रात के वक़्त सुल्तान के ख़ेमे में अचानक दाख़िल होकरउस मुजाहिदे आअज़म को शहीद कर दिया।

अहदे ख़्वाजा के मुस्लिम बादशाह

1206 ई0 में सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी की शहादत के बाद तुर्क बिरादरान ने कुतबुद्दीन एबक को मुत्तफक़ा तौर पर बादशाहे हिन्द मुन्तख़ब किया। यह बादशाह हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का हम अस्र था जो निहायत इन्साफ पसन्द, फैय्याज़ और सख़ी वाक़ेअ हुआ था उस की फैय्याज़ी और सख़ावत बहुत मशहूर हो गई थी। सुल्तान एबक के इन्तेक़ाल के बाद सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश

तख़्त नशीं हुआ वह भी एक दीनदार और होशमन्द बादशाह गुज़रा है। वह सरकारे ख़्वाजा के ख़लीफए अरशद और महबूब मुरीद हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से बेपनाह अक़ीदत और मुख़्लिसाना इरादत रखता था इस बादशाह का तज़्किरा „ख़ज़ीनतुल अस्फिया„ में इस तरह किया गया है:-

„बादशाह रहमदिलव व आदिल व सुल्ताने कामिल व मुकम्मल अज़ ख़ुलफाए नामदार व मुरीदाने बावक़ार ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार अस्त व अज़ महबूबानो नज़र मन्ज़ूराने ख़्वाजा मुईनुद्दीन सन्जरी बूद व कमाले एअतेक़ाद बख़िदमते अहले चिश्त नेक सिरिश्त पैदा कर्द अगरचे बज़ाहिर तअल्लुक़ बबादशाही दाश्त लेकिन अज़ दिले फक़ीर व हक़ीर दोस्त बूद, कम ख़ुर्देव कम गुफ़्ते व कम ख़ुफ्ते व शबहाए दराज़ बेदार बूदे।

याअनी शमसुद्दीन अलतमश रहमदिल, इन्साफ करने वाला और कामिलो मुकम्मल बादशाह ख़्वाजा कुतबुद्दीनबख़्तियार काकी अलैहिर्रहमतु वर्रिदवान के नामवर ख़ुलफा और बावक़ार मुरीदों में से है। वह ख़्वाजा मुईनुद्दीन सन्जरी का भी महबूब और मन्ज़ूरे नज़र था उसे सिलसिलए चिश्त के बुज़ुर्गों से इन्तेहाई अक़ीदत थी अगरचे वह बज़ाहिर बादशाह था लेकिन दिल से फक़ीरों और ग़रीबों का दोस्त था कम खाता, कम सोता, कम बोलता और रातों में देर तक जागता रहता था।

सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश फक़ीर दोस्त, ग़रीब परवर, नेक नफ्स और आबिदो रियाज़त गुज़ार था इन्हीं ख़ूबियों की वजह से अक्सर तज़्किरा नवीसों ने उसे वलीए कामिल लिखा है हज़रत ख़्वाजा बख़्तियार काकी ने उसे ख़िर्क़ए ख़िलाफत से भी नवाज़ा था।

अलतमश की रिआया परवरी के मुतअल्लिक़ बयान किया जाता है कि वह रात में भेस बदल कर अहम मक़ामात पर गश्त किया करता था और हाजतमन्दों की इस तरह एआनतो मदद करता था उन्हें मेहरबानो निगहबान का पता तक न चलता था। फुक़रा, मसाकीन, तलबा ग़रीब लोगों के लिए अपने ख़ज़ानों के दरवाज़े खोल दिए थे। उस ने अपने महल में एक ज़न्जीर लटका रखी थी जिस का सिलसिला उस की ख़्वाबगाह तक था उस ने पूरे मुल्क में मुनादी करा दी थी कि जिस पर ज़ुल्मो ज़ियादती हो

वह फ़ौरन मेरे पास आकर इन्साफ का तलबगार हो और महल में आकर ज़न्जीरे अदल को हिलाए। ग़रज़ सुल्तान अलतमश ने अपने अदलो इन्साफ और दादो दहिश की बदौलत सारी रिआया के दिलों में अपनी जगह बना ली थी उस की इल्म नवाज़ी और फकीर दोस्ती के तज़्किरे सुन सुन कर दूर दराज़ मुल्कों के उमरा और उलमा अपने वतन से हिजरत करके देहली में आकर बस गए थे।

„तब्क़ाते नासिरी„ और मन्जूम „तारीख़े फुतूहुस्सलातीन„ में अलतमश को एक बेमिसाल हुक्मराँ और उस के अहदे सल्तनत को बेहतरीन दौर साबित किया है यहाँतक कि ग़ैर मुस्लिम मुवर्रिख़ीन भी सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश की ताअरीफो तौसीफ करने पर मजबूर हैं दर अस्ल उस की शानदार व मिसाली हुकूमत और निकोकारी में हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी अलैहिर्रहमतु वर्रिदवान के रूहानी फुयूज़ो बरकात का असर ज़ियादा था। यह नेक सीरत बादशाह हर मुआमले में अपने पीरो मुर्शिद हज़रत बख़्तियार काकी से हिदायतो रहनुमाई हासिल करता था।

„सैरुल औलिया„ में बयान किया गया है कि बादशाह अलतमश ने अजमेर शरीफ के अतराफ में एक गाँव और अशर्फियों के कई तोड़े सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत में पेश किए थे लेकिन यह नही माअलूम कि हज़रत ने यह नज़्र कुबूल की थी या नहीं। अगर कुबूल फरमाई भी होगी तो आप की अज़ीम शख़्सियत के पेशे नज़र यही समझा जासकता है कि वह रक़मइस्लाम की तब्लीग़ो इशाअत के कामों में ही सर्फ की होगी वरना आप को अपने लिए दुन्यवी मालो ज़र की क्या हाजत थी वह तो मुतवक्किल अलल्लाह थे उन को जिस चीज़ की जब ज़रूरत पेश आती थी तो ग़ैब से उस का इन्तेज़ाम हो जाता था आप दर हकीक़त इस शेर के मिस्दाक़ थे जो यादे इलाही की बरकतों से आप को हासिल हुआ था। :

यादे ऊ गर मूनिसे जानत बुवद
हर दोआलम ज़ेरे फरमानत बुवद

यादे इलाही अगर तेरी जान की साथी और शरीक हो जाए तो दोनों आलम तेरे ताबेअे फरमान हो जाएं।

हज़रत गंजे शकर पर इलतेफातो करम की बारिश

मुसन्निफे „मुईनुल अर्वाह„ ....„मसालिकुस्सालिकीन जिल्द दोम„ के हवाले से तहरीर फरमाते हैं कि :

„जब सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी ने हिन्दुस्तान पर फतह हासिल की तो उस के कुछ दिनों बाद (589 हि० में) ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती देहली तशरीफ लाए यहाँ चन्द दिन केयाम फरमाकर फिर मुस्तकिल केयाम केलिए अजमेर शरीफ तशरीफ लेगए।

मुसन्निफे मौसूफ आगे तहरीर फरमाते हैं कि :

„केयामे देहली के दौरान हज़रत सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी अलैहिर्रहमतु वर्रिदवान व दीगर तालिबाने माअरिफत ने अपनी अपनी लियाकत के मुताबिक नेअमतो करामत हासिल की जब सब लोग फैज़याब होचुके तो सरकारे ख़्वाजा ने हज़रत बख़्तियार काकी से दरयाफ्त फरमाया „तुम्हारे मुरीदों में से कोई नेअमत पाने से बाकी तो नहीं रह गया है।?„

हज़रत ख़्वाजा काकी ने अर्ज़ की „मस्ऊदी (बाबा फरीदुद्दीन गंजे शकर) रह गया है वह चिल्ले में बैठा है।„

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ यह सुन कर खड़े हो गए और फरमाया „आओ उसे देखें।„

दोनों हज़रात उस हुजरे के दरवाज़े पर तशरीफ ले गए जहाँ हज़रत गंजे शकर चिल्लाकश थे दरवाज़ा खुला तो देखा कि हज़रत बाबा फरीद ज़ोअफो नक़ाहत के सबब ताअज़ीम केलिए खड़े न होसके। मजबूरन भीगी पल्कों के साथ आप ने ज़मीन पर सर रख दिया।

सरकारे ख़्वाजा ने बाबा फरीद का यह हाल देख कर इरशाद फरमाया „कुतबुद्दीन! इस बेचारे को मुजाहदे में कब तक घुलाओगे आओ इसे कुछ अता कर दें।„

यह फरमाकर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने बाबा फरीद का दाहिना बाज़ू और बाबा कुतबुद्दीन ने उन का बायाँ बाज़ू पकड़ कर ज़मीन से ऊपर उठाया उस के बाद सरकारे ख़्वाजा ने आस्मान की जानिब मुंह करके बारगाहे इलाही में

दुआ की „ख़ुदावन्दा! हमारे फ़रीद को क़ुबूल फ़रमा! और दुर्वेशे कामिल के दर्जे पर पहुँचा।„

आवाज़ आई „हम ने फ़रीद को क़ुबूल कर लिया यह यक्ताए ज़माना होगया।„

यह सुन कर बाबा साहब की हालत मुतग़य्यर हो गई उस के बाद सरकारे ख़्वाजा ने बाबा कुतबुद्दीन से फ़रमाया „इस्मे आअज़म जो ख़्वाजगाने चिश्त में सीना बसीना चला आरहा है उसे तलक़ीन करो।„

इस्मे आअज़म की बरकत से बाबा फ़रीद को इल्मे लदुन्नी हासिल हो गया, सारे हिजाबात दरमियान से उठ गए। सरकारे ख़्वाजा ने बाबा फ़रीद को ख़िल्अत से नवाज़ा और बाबा कुतबुद्दीन ने दस्तार, मिसाल और दीगर लवाज़िमाते ख़िलाफ़त अता फ़रमाए। उस मौक़े पर सरकारे ख़्वाजा ने फ़रमाया।„ क़ुतुब! बड़े शहबाज़ को दाम में लाए इस का आश्याना सिदरतुल मुन्तहा होगा।„

उस महफ़िल में क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी, मौलाना अली किरमानी, अलाउद्दीन किरमानी, सैय्यिद नुरुद्दीन ग़ज़नवी, मौलाना मुबारक ग़ज़नवी, शैख़ निज़ामुद्दीन अबुल मुअय्यिद, मौलाना शमसुद्दीन तुर्क, ख़्वाजा महमूद मोनियादोज़ और दीगर मशाइख़ मौजूद थे। उस मोक़े पर एक शाइर ने फ़िलबदीह यह अश्आर पेश किए। :

बख़्शिशे कौनैन अज़ ,शैख़ैन शुद दर बाबे तू
बादशाही याफ्तन अज़ बादशाहाने जहाँ
मम्लुकत दुन्या व दीं गश्ता मुसल्लम बर तुरा
आलमे कुन गश्ता अक़्ताएऐ तू ऐ शाहे जहाँ

हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी की तशरीफ़ आवरी

मोअतबर रिवायात के मुताबिक़ ख़्वाजए ख़्वाजगाँ हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने हिन्दुस्तान की सरज़मीन को अपने क़ुदूमे मैमनत लुज़ूम के शरफ़ से मुशर्रफ़ फ़रमाया है। अगरचे बाज़ मुवर्रिख़ीन ने इस पर इख़्तेलाफ़ ज़ाहिर किया है। साहबे „इक़्तिबासुल अन्वार„ ने हज़रत हारवनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाने से इन्कार किया है, बाज़ तारीख़ें इस मुआमले में बिल्कुल ख़ामोश हैं मगर „सौलते अफ़ग़ानी„ में तहरीर है कि :

„हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी तरफ़ शहरे देहली तशरीफ़ लेगए उस वक़्त में सुलतान शमसुद्दीन बादशाह देहली का था ख़बरे तशरीफ़ आवरीए ख़्वाजा साहब (ख़्वाजा उस्मान) सुन कर (बादशाह) बाहर आए और बअख़्लासो एअतेक़ादे तमाम मुलाज़मत करके साथ एअज़ाज़ो इकरामे तमाम के शहर में लाए।„

नीज़ „फ़रिश्ता„ ने जिल्द दोम में बहवालए तारीख़े „हाजी (मुहम्मद) क़न्धारी„ लिखा है कि।:

„ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के पीर याअनी ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू शमसुद्दीन अलतमश के दौर में देहली तशरीफ़ लाए जो आँहज़रत (ख़्वाजा उस्मान) का मुरीद था आप की ताअज़ीमो तकरीम में कोई दक़ीक़ा फ़रोगुज़ाश्त नहीं किया और और उस ज़माने में ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेर में मुतवत्तिन थे इस सूरत में माअलूम न हुआ कि हिन्दुस्तान में फिर उन से मुलाक़ात हुई या नहीं।„

इस बयान से साबित है कि हाजी मुहम्मद क़न्धारी हज़रत ख़्वाजा उस्मान के हिन्दुस्तान आने पर तो मुत्तफ़िक़ हैं मगर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से मुलाक़ात होने के मुतअल्लिक़ लाइल्मी ज़ाहिर करते हैं मगर हिन्दुस्तान में हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू से ग़रीब नवाज़ की मुलाक़ात से मुतअल्लिक़ तवील बहस नुस्ख़ए „गंजे अस्रार„ (मुरत्तबाए ख़्वाजा ग़रीब नवाज़) में मौजूद है जिस से रोज़े रौशन की तरह यह अम्र ज़ाहिर होजाता है कि हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी बकमाले शफ़्क़तो महब्बत ग़र्रए ज़िल हिज्जा 611 हि० में बमुक़ामे देहली क़दमरंजा फ़रमाकर तीन साल क़ेयाम फ़रमाया और सरकारे ग़रीब नवाज़ अपने मुर्शिद से क़दमबोस हुए और उन के फ़ुयूज़ो बरकात से ख़ूब ख़ूब मुस्तफ़ीज़ हुए। मज़ीद यह कि किताब „ गंजे अस्रार„ की तस्नीफ़ की वजह बताते हुए ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने तहरीर फ़रमाया है कि „हज़रत पीरो मुर्शिद ख़्वाजा उस्मान हारवनी ने सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश की ख़ातिर इस फ़क़ीर को हुक्म फ़रमाया कि क़ुरआनो हदीस और मल्फ़ूज़ाते औलियाए किराम पर मुश्तमल एक रिसाला तरतीब देकर सुल्तान को देदो कि वह उसे हर वक़्त अपने पास रखे और उस से फ़ायदा हासिल करता रहे। चुनाँचे फ़क़ीर ने ताअमीले इरशाद में यह रिसाला मुरत्तब किया।„

हज़रत शैख़ साअदी से मुलाक़ात

कुतुबे तवारीख़ में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की हज़रत शैख़ साअदी शीराज़ी से भी मुलाक़ात का ज़िक्र मिलता है, खुद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी के नाम एक मक्तूब में तहरीर फ़रमाते हैं कि :

„भाई मेरे! शैख़ उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू फरमाते हैं कि सिवाए अहले माअरिफत के और किसी को रमूज़े इश्क़ से वाक़िफ़ न करना चाहिए जब शैख़ साअदी ने आप (ख़्वाजा उस्मान) से दरयाफ्त किया था कि अहले माअरिफत को किस तरह पहचाना जासकता है तो आप ने इरशाद फरमाया कि अहले माअरिफत की अलामत „तर्क„ है जिस में तर्क है यक़ीन जानो वह अहले माअरिफत से है और उसे ख़ुदाशनासी का दर्जा हासिल है जिस में तर्क नहीं उस में माअरिफते हक़ तआला की बू नहीं। वग़ैरह वग़ैरह।„

इस ख़त की इबारत से साफ़ ज़ाहिर है कि शैख़ साअदी का हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू से यह मुकालमा सरकारे ग़रीब नवाज़ के सामने हुआ और यह मुलाक़ातें भी देहली ही में हुईं। चूँकि शैख़ साअदी का भी हिन्दुस्तान और देहली का सफर तारीख़ों में दर्ज है। अल्ताफ हुसैन हाली ने „हयाते साअदी„ में सर गोरा वस्ली का हसबे ज़ैल बयान नक़्ल किया है। :

„शैख़ (साअदी) को चार मरतबा हिन्दुस्तान आने का इत्तेफाक़ हुआ है अज़ाँ जुम्ला एक दफआ पठान अग़लमश के दौर में और दो मरतबा ख़ास अमीर ख़ुस्रौ से मिलने देहली आया है।„

फिर आगे लिखते हैं कि :

„उस ने सोमनात से निकल कर एक बार मग़्रिबी हिन्दुस्तान का दौरा किया है और वहाँ से बहरे हिन्द और बहरे अरब के रास्ते से यमन और हिजाज़ में पहुँचा है।„

शैख़ साअदी के सफर जिस क़दर उन की किताब „गुलिस्ताँ„ और „बोस्ताँ„ से साबित होते हैं उन की तफ्सील यह है कि मश्रिक़ में ख़ुरासान, तुर्किस्तान और तातार तक गया है और बलख़ो काश्ग़र में मुक़ीम रहा है, जुनूब में सोमनात तक आया है

और एक मुद्दत तक यहाँ ठहरा सोमनात से मग़्रिबी हिन्दुस्तान में फिर कर दरया की राह से अरब चला गया।„

शैख़ ने तहसीले इल्म से फारिग़ होकर सियाहत शुरूअ की और एक मुद्दते दराज़ तक सफर करते रहे जिस की मुद्दत आम तज़्किरों में बीस साल लिखी है। हसबे „हयाते साअदी„ अज़ अहमद हुसैन ख़ाँ लाहौरी वग़ैरह पहले शैख़ ने हिन्दुस्तान का सफर इख़्तियार किया और छः साल (611 हि० ता 617 हि०) हिन्दुस्तान में रहा। ग़ालिबन उन्हीं ऐय्याम में शैख़ देहली आए और हसबे तफ्सीले गुज़श्ता सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहुमा की ख़िदमत में देहली में मुक़ीम रहे और रिसाला „गंजे अस्रार„ बहुक्मे मुर्शिद सुल्तान शमसुद्दीन की ताअलीमो तल्क़ीन केलिए मुकम्मल फरमाया जिस में शैख़ साअदी से चन्द अहादीस भी नक़्ल की गई हैं और मौसूफ़ के अश्आर भी लिखे गए हैं।

एक ग़रीब किसान की दिल जोई

हज़रत सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू अजमेर शरीफ में क़ेयाम पज़ीर थे कि एक काश्तकार ने सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की बारगाह में फरयाद करते हुए अर्ज़ की कि „मेरे खेत की पैदावार हाकिम ने ज़ब्त कर ली है वह कहता है कि जब तक शाही फरमान न लाओगे इस में से कुछ न पा सकोगे लिहाज़ा हज़रत की इमदाद का तालिब हूँ ताकि इस साल का ख़र्च पूरा हो सके क्यूँकि मेरी रोज़ी का ज़रीआ उस के सिवा कुछ नहीं।„

आप ने फरमाया „बाद अज़ाँ हाकिम क्या करेगा।?„

उस ने अर्ज़ किया „जो हुक्म सुल्तान का होगा उस के मुताबिक़ अमल करेगा।„

आप ने फरमाया „अगर दाइमी फरमान मिल जाए तो हमेशा केलिए यह तक्लीफ दूर हो जाएगी।„

उस ने अर्ज़ किया „अगर हुज़ूर कुतुब साहब को सिफारिशनामा लिख दें तो मुस्तक़िल या मीआदी फरमान मिल जाएगा।„

आप ने ग़ौरो फिक्र के बाद फरमाया „अगरचे सिफ़ारिश से तेरी मक़सद बरआरी आसान है मगर अल्लाह तआला ने मुझे तेरे

काम केलिए मुतऐय्यन किया है लिहाज़ा मेरे साथ चल।„ चुनाँचे आप उसी वक़्त उस को हमराह लेकर देहली रवाना होगए।

उस से पहले जब आप देहली तशरीफ ले गए थे तो क़ुतुब साहब को अपनी आमद से मुत्तला फरमा दिया था मगर इस मरतबा आप ने अपने देहली पहुँचने की इत्तेलाअ नहीं दी मगर इत्तेफाक़ से रास्ते में एक शख़्स मिल गया उस ने दौड़ कर क़ुतुब साहब को आप की तशरीफ आवरी की इत्तेलाअ दे दी। क़ुतुब साहब आप की अचानक तशरीफ आवरी से मुतअज्जिब हुए और बादशाह को आप की आमद से मुत्तला किया बादशाह ने अफ्वाज और जुलूस के साथ आप का इस्तिक़्बाल किया।

हज़रत क़ुतुब साहब ने लोगों के चले जाने के बाद आप की ख़िदमत में अर्ज़ किया „बिला इत्तेलाअ यक्बारगी हुज़ूर के तशरीफ लाने का क्या सबब है।?„

आप ने किसान की तरफ इशारा करके फरमाया „इस के काम केलिए आया हूँ।„

क़ुतुब साहब ने अर्ज़ की „हुज़ूर के ख़ादिमों में से कोई भी सुल्तान से अर्ज़ करता तो इस शख़्स का काम होजाता इस काम केलिए हुज़ूर को तक्लीफ करने की क्या ज़रूरत थी।„

आप ने इरशाद फरमाया „ यह ठीक है मगर अहले इस्लाम ज़िल्लत और ग़ुरबत के वक़्त ख़ुदा की रहमत के क़रीब होते हैं। जब यह शख़्स मेरे पास आया था तो बहुत रंजीदा था मैं ने मुराक़िब होकर दरबारे एज़दी में इस के मुतअल्लिक़ अर्ज़ किया तो इरशाद हुआ कि रंजो ग़म में शरीक होना ऐने बन्दगी है बस मैं हक़ तआला की बन्दगी केलिए ख़ुद यहाँ तक आया हूँ।„

उस मौक़े पर क़ुतुब साहब ने अर्ज़ किया „हुज़ूर के तशरीफ लेजाने की ज़रूरत नहीं हुज़ूर क़ेयाम फरमाएं मैं जाता हूँ।„

चुनाँचे शैख़ुल इस्लाम ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश के पास तशरीफ लेगए और फरमाने मआफी ले आए।

क़ुतुब साहब की मक़्बूलियत और शैख़ुल इस्लाम की कबीदा ख़ातिरी

हज़रत शैख़ नज्मुद्दीन सुग़रा ख़ुरासान से तर्के वतन करके

देहली में मुक़ीम हो गए थे और शैख़ुल इस्लाम के मन्सब पर फाइज़ थे हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से मुलाक़ात का शरफ हासिल करने देहली के बहुत से लोग आए मगर शैख़ नज्मुद्दीन सुग़रा नहीं आए। हालाँकि उन से सरकारे ख़्वाजा की ख़ुरासान में मुलाक़ात थी चुनाँचे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ब इत्तेबाए ख़ुल्क़ मुहम्मदी दूसरे या तीसरे दिन ख़ुद उन के मकान पर तशरीफ ले गए। उस वक़्त शैख़ नज्मुद्दीन सुग़रा अपने मकान के आँगन में एक चबूतरा ताअमीर करवा रहे थे ग़रीब नवाज़ के वहाँ तशरीफ फ़रमा होने पर न उन्हों ने आप का इस्तिक़्बाल किया और न आप की जानिब मुतवज्जेह हुए। यह बेगानगी का बरताव ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ पर गिराँ गुज़रा। आप ने फरमाया „ऐ नज्मुद्दीन! ऐसी तुझ पर क्या बला आई कि शैख़ुल इस्लामी के नशे में इन्सानियत से दर गुज़रा और राहो रस्मे दैरीना व वज़अदारिए क़दीम को यक्सर तर्क कर दिया।„

यह सुन कर शैख़ नज्मुद्दीन सुग़रा सरकारे ग़रीब नवाज़ के क़दमों पर सर रख कर माअज़िरत ख़्वाह हुए और कहने लगे। :

> „मैं पहले जैसा आप का मुख़्लिस था वैसा ही अब भी हूँ मगर क़ुतबुद्दीन बख़्तियार ने मेरी मन्ज़िलत बिल्कुल बरबाद कर दी है जब से वह मुरीद आप का यहाँ आया है तमाम मख़्लूक़ उस की तरफ रुजूअ है मैं बराए नाम शैख़ुल इस्लाम हूँ कोई मेरी पुर्सिश नहीं करता।„

यह सुन कर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने तबस्सुम फरमाया और कहा :

> „तू ख़ातिर जमा रख मैं इस बारे गिराँ को जो तेरे दिल पर है अपने हमराह अजमेर ले जाऊँगा।„

यह फरमा कर आप वहाँ से चलने लगे। हरचन्द शैख़ नज्मुद्दीन सुग़रा ने तनावुले माहज़र के लिए इस्रार किया मगर आप ने क़ुबूल न फरमाया और चले आए। जब आप देहली से अजमेर शरीफ केलिए रवाना होने लगे तो क़ुतुब साहब को अपने हमराह लिया। चूँकि अहले देहली को क़ुतुब साहब से क़ल्बी मोहब्बत हो गई थी इस लिए जब क़ुतुब साहब बक़स्दे अजमेर देहली शहर से बाहर तशरीफ लाए तो कोई शख़्स फिराक़ को गवारा न कर सका पूरे शहर में इज़्तेराब फैल गया और अहले शहर दीवानावार आप के पीछे चल दिए जहाँ आप क़दम रखते लोग उस जगह की ख़ाक तबर्रुकन उठा लेते और आँखों से लगाते।

जब सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश कुतुब साहब की रवाँगी से मुत्तला हुआ तो बे इख़्तियार वह दौड़ा आया और ग़रीब नवाज़ से ब मिन्नतो ज़ारी अर्ज़ किया:

„हुज़ूर! कुतुब साहब को अजमेर न ले जाएं यहीं रहने दें।„

जब ग़रीब नवाज़ ने पूरे शहर को कुतुब साहब का शेफ़्ता व फरेफ़्ता पाया तो सुल्तान की इल्तेजा कुबूल करली और फरमाया:

„बाबा कुतुब तुम यहीं रहो! तुम्हारे जाने से अहले शहर परीशानो बेक़रार हैं मैं नहीं चाहता कि इतने लोगों के दिलों को तुम्हारी आतिशे जुदाई से कबाब करूँ, मैं ने इस शहर को तुम्हारी अमान में छोड़ा।„

यह फरमाकर सरकारे ग़रीब नवाज़ अजमेर तशरीफ लेगए और कुतुब साहब आप से रुख़्सत होकर अपने मक़ाम पर आए और वहीं मुस्तक़िल क़ेयाम फरमाया अल्बत्ता हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग की ज़ियारत केलिए अजमेर आते जाते रहे।

दीने इस्लाम की इशाअत

बर्रे सग़ीरे हिन्दो पाक के सब से पहले दाइए इस्लाम हज़रत शैख़ इस्माईल बुख़ारी थे जो 1005 ई० में लाहौर तशरीफ लाए। आप एक ख़ुदारसीदा मुतबहहिर आलिमे दीन थे। आप के वाअज़ो इरशाद से हज़ारों ग़ैर मुस्लिम मुशर्रफ ब इस्लाम हुए। „तज़्किरए उलमाए हिन्द„ में आप के तबलीग़ी मसाई का ज़िक्र इन अल्फाज़ में किया गया है:

„अज़ उज़माए मुहद्दिसीन व मुफस्सिरीन बूद। अव्वल कसे अस्त कि इल्मे तफ्सीरो हदीस ब लाहौर आउरदा हज़ारहा मर्दुम दर मज्लिसे वाअज़े वय मुशर्रफ ब इस्लाम शुदन्द।„

शैख़ इस्माईल बुख़ारी के बाद हज़रत शैख़ अली हिजवैरी अलमाअरूफ ब दाता गंजबख़्स ने अपने कुदूमे मैमनत लुज़ूम से सरज़मीने लाहौर को रौनक़ बख़्शी। उन के ज़ोहदो तक़्वा, इल्मो फज़्ल, तबलीग़ो हिदायत और शख़्सियत की कशिश की बदौलत हज़ारों हिन्दू मुशर्रफ ब इस्लाम हुए।

इन के अलावा शैख़ सफियुद्दीन गाज़रूनी, शाह यूसुफ गुर्देज़ी मुलतानी और कुछ दूसरे मुसलमान बुज़ुर्ग भी हिन्दुस्तान तशरीफ ला चुके थे। उन की तब्लीग़ी कोशिशों की बदौलत हिन्दुस्तान में कहीं कहीं मुसलमान नज़र आने लगे थे लेकिन करोड़ों ग़ैर मुस्लिमों के दरमियान उन की हैसियत आटे में नमक के बराबर भी

न थी। तब्लीग़ और इशाअते इस्लाम का काम अभी तक किसी बाक़ायदा निज़ाम और मरकज़ के मातहत नहीं हुआ था। हज़रत सरकारे ग़रीब नवाज़ का सब से बड़ा कारनामा यह है कि आप ने ज़ुल्मतकदए हिन्द में तब्लीग़े हक़ का काम निहायत बाक़ायदगी से आगे बढ़ाया और फिल वाक़ेअ हिन्दुस्तान में इस्लाम की जड़ें आप ही ने मज़बूत कीं इसी वजह से बाज़ तज़्किरा निगार सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को हिन्दुस्तान में इस्लाम का पहला दाई कहते हैं।

अजीब इत्तेफाक़ है कि एक तरफ तो सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हिन्दुस्तान में इस्लाम के तब्लीग़ी निज़ाम की बुन्याद रख रहे थे और दूसरी तरफ यहाँ मुसलमानों के सियासी इक़्तेदार की बुन्याद भी रखी जा रही थी। यूँ तो हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इस्लामी हुकूमत के क़ेयाम से पहले ही निहायत नामुसाइद हालात में तब्लीग़ी कोशिशों का आग़ाज़ फरमा दिया था लेकिन मुसलमानों के सियासी इक़्तेदार के हुसूल के बाद आप के काम को बहुत तक़्वियत पहुँची और चन्द सालों के अन्दर अन्दर लाखों बन्दगाने ख़ुदा दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए। हज़रत सरकारे ख़्वाजा की हिन्दुस्तान में तशरीफ आवरी का मक़सद ही यह था कि अल्लाह के दीन को इस मुल्क में फैलाएं। इसी वजह से अजमेर को आप का मुस्तक़र बनाया गया जो सियासी और मज़हबी लिहाज़ से उस वक़्त सारे हिन्दुस्तान का मरकज़ था। कुफ्रो शिर्क के इस मरकज़ में चन्द सालों के अन्दर अन्दर सरकारे ख़्वाजा की तब्लीग़ी जिद्दो जहद की बदौलत क़ालल्लाहु व क़ालर्रसूल की सदाएं गूँजने लगीं, बुतख़ाने और मन्दिर वीरान हो गए और अजमेर इशाअते इस्लाम का एक अज़ीमुश्शान मरकज़ बन गया।

सरकारे ख़्वाजा की तब्लीग़ी जिद्दो जहद

दर अस्ल सुल्तानुल हिन्द सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह फितरी तौर पर अख़लाके हसना के पैकर और साहिबे किरदार वाक़ेअ हुए थे इस वजह से जो शख़्स भी आप की नूरानी व इरफानी मज्लिस में हाज़िर होकर आप की बातें सुन लेता वह आप का गिर्वीदा होकर कुफ्रो माअसियत की ज़िन्दगी से ताइब हो जाता। आप अताए रसूल और वारिसुन्नबी फिल हिन्द थे और हुज़ूर सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु तआला

अलैहि वसल्लम ने अजमेर की सरज़मीन पर हिन्दुस्तान में तब्लीगे दीनो इशाअते इस्लाम की ख़ातिर भेजा था। „बज़्मे सूफ़िया„ के मुसन्निफ़ ने तहरीर किया है :

„शहाबुद्दीन गौरी की फतह के बाद मुसलमानों के सियासी इक़्तेदार और सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह के फ़ुयूज़ो बरकात से हिन्दुस्तान इस्लाम के नूर से मुनव्वर हो गया इस लिए हज़रत का लक़ब „वारिसुन्नबी फ़िल हिन्द„ है।

इसी तरह „सैरुल औलिया„ में है। :

„ब वुसूले क़दमे मुबारके आँ आफ़्ताबे अहले यक़ीं कि ब हक़ीक़त मुईनुद्दीन बूद ज़ुल्मते ईं दयार ब नूरे इस्लाम रौशनो मुनव्वर गश्त।„

याअनी उस आफ़्ताबे अहले यक़ीं (सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह) के मुबारक क़दम की आमद से जो हक़ीक़त में दीन के मददगार थे इस दयार की तारीकी इस्लाम के नूर से काफ़ूर हो गई।

अबुल फ़ज़्ल ने सरकारे ख़्वाजा की तब्लीग़ी जिद्दो जहद का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़ में किया है। :

„उज़्लत गज़ीं बअजमेर शुद व फरावाँ चराग़ बर अफ़्रोख़्त व अज़ दमे क़ुवराए ऊ गरोहागरोह मर्दुम बहरा गिरफ़्तन्द।„

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की तब्लीग़ से मुतअस्सिर हो कर देहली और अजमेर के दरमियानी रास्ते में ही सात सौ हिन्दू मुसलमान हो गए थे। (दाअवते इस्लाम, तरजमा इनायतुल्लाह बहवाला „बज़्मे सूफ़िया„)

„ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, जिल्द अव्वल में बयान किया गया है कि :

„हज़ारो हज़ार अज़ सिग़ारो किबार बख़िदमते आँ महबूबे किरदिगार हाज़िर शुदा मुशर्रफ़ ब शरफ़े इस्लाम व इरादते आँ हज़रत शुदन्द बहद्दे कि चराग़े इस्लाम दर हिन्द बतुफ़ैले ईं ख़ान्दाने आलीशान रौशन गश्त।„

याअनी हज़ारों हज़ार छोटे बड़े लोग इस महबूबे किरदिगार (ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस्लाम के शरफ़ से मुशर्रफ़ और उन के मुरीद हो गए यहाँतक कि इस्लाम का चराग़ हिन्दुस्तान में इसी ख़ान्दाने आलीशान के तुफ़ैल रौशन हुआ।

नबवी तब्लीग़ का हसीन अक्स

किसी पर भी अपनी बातों का असर क़ाइम करने के लिए ज़रूरी है कि पहले उस के सामने अपनी ज़ात तस्लीम कराई जाए। नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तब्लीग़ से पहले अपनी क़ौम के सामने आअमालो किरदार और अख़्लाक़ो इख़्लास का ऐसा नमूना पेश किया कि सब बयक ज़बान आप को „अमीन और सादिक़„ जैसे मुक़द्दस व पुर वक़ार ख़िताबात से याद करने लगे। उस के बाद फिर एअलाने नुबुव्वत फरमाकर आप ने तब्लीग़ शुरूअ फरमाई।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अता और आप के नइबो वारिस सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ भी अपने रहीमो करीम आक़ा की इस सुन्नत पर मज़बूती से अमलपैरा हुए और कुछ कहने से पहले ख़ुद कर के दिखाया वरना „लि म तक़ूलू न मा ला तफ़अलून„ का मिस्दाक़ बनने वालों की बातों में असर पैदा हो जाना नामुम्किन ही नहीं मुहाल है साथ ही सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने क़ुरआने मुक़द्दस की आयत उदउ इला सबीलि रब्बि क बिल्हिक्मति वल मौइज़तिल हसनह„ को भी सामने रखा।

अजमेर शरीफ़ में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तक़रीबन पचास साल तक क़ेयाम फरमाया। इस मुद्दत में आप ने क़ुरआनी व नबवी तरीक़ए तब्लीग़ को इख़्तियार करके मख़्लूक़े ख़ुदा को हिक्मतो मौइज़त के दिलनशीं अन्दाज़ में दीने हक़ की तरफ़ बुलाया। हज़रते ख़्वाजा की ज़ाते गिरामी अख़्लाक़े रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का एक बेहतरीन नमूना थी जिस की तासीरो कशिश से हर तब्क़े के लोग खिंचे चले आते थे। आप की बाबरकतो फ़ैज़बख़्श मज्लिसों में जहाँ दीनो शरीअत के अस्रारो रुमूज़ का तज़्किरा होता वहीं तहज़ीबो तमद्दुन से भी हाज़िरीन को रूशनास कराया जाता और उन्हें इस्लामी अख़्लाक़ो किरदार की ताअलीम दी जाती, ज़ात पात, ऊँच नीच, छूत छात और तब्क़ाती फर्क़ो इम्तियाज़ की जो दीवारें खड़ी थीं आप की उख़ुव्वतो इन्सानियत की जामेअ ताअलीमात से गिर गईं। आप की ख़ानक़ाह एक चश्मए फ़ैज़ बन गई जिस से तश्नगाने इल्मो माअरिफ़त बराबर सैराब होते थे। उस ख़ानक़ाह में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने एक वसीअ लंगरख़ाना जारी किया

जिस के दरवाज़े बिला तफ़रीके मज़हबो मिल्लत मुस्लिमो ग़ैर मुस्लिम सब केलिए हमेशा खुले रहते थे और हर शख़्स उस आम लंगरख़ाने से फ़ैज़याब होता था। आप के अख़लाक़े करीमाना में इस दर्जा तासीरो कशिश थी कि जो लोग अपनी खुशबख़्ती से एक बार आप की ख़िदमते बाबरकत में हाज़िर हो कर आप के इरशादात सुन लेते थे वह हल्क़ा बगोशे इस्लाम हो जाया करते थे।

ग़रज़ कि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तब्लीग़ी तहरीकात की बदौलत हिन्दुस्तान में एक अज़ीमुश्शान रूहानी व समाजी इन्क़ेलाब ने जन्म लिया। इस लिए आप को नांइबे रसूलिल्लाह फ़िल हिन्द बजा तौर पर कहा जाता है।

मुकम्मल तब्लीग़ी निज़ाम की तश्कील

अताए रसूल ख़्वाजए ख़्वाजगाँ सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की शोहरतो मक़्बूलियत थोड़े ही अर्से में आलमगीर हैसियत इख़्तियार कर गई जिस के सबब दूर दराज़ ममालिक के तलबा, मशाइख़ और सूफ़िया आप की ख़िदमत में हाज़िर होने लगे। यह लोग हज़रत से तरबियत पाकर दूर दराज़ अलाक़ों में फैल गए और हर तरफ़ इस्लाम की रौशनी फैलाने लगे। हज़रत के ख़लीफ़ए आअज़म हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी कुद्दि स सिर्रुहू ने आप की हिदायत के मुताबिक़ देहली को अपना मुसतक़र बनाया और वहाँ पूरी ज़िन्दगी तब्लीग़े हक़ की बेश बहा ख़िदमात अन्जाम दीं। सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश और देहली के बाशिन्दे उन के इस दर्जा अक़ीदतमन्द हो गए थे कि वह जिस रास्ते से गुज़रते वहाँ की ख़ाक तबर्रुकन उठा लेते। इसी तरह सरकारे ख़्वाजा के दूसरे ख़ुलफ़ा दाइयाने इस्लाम बन कर हिन्दुस्तान भर में फैल गए और अपनी तब्लीग़ी जिद्दो जहद से ज़ुल्मतकदए हिन्द को नूरे इस्लाम से मुनव्वर कर दिया।

ग़रज़ इस तरह सरकारे ख़्वाजा ने एक मुकम्मल तब्लीग़ी निज़ाम की तश्कील फ़रमा दी। उस तब्लीग़ी निज़ाम की इमारत निहायत मुसतहकम बुनयादों पर क़ाइम की गई जो आप के विसाल के बाद सदियों तक बाक़ी रही और जो चश्मए फ़ैज़ आप ने ज़ारी किया वह आज भी सिलसिलए चिश्त के नाम से जारी व सारी है। हज़रत के जानशीनों में हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे

शकर और हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही ने सिलसिलए चिश्तिया को इन्तेहाई उरूज पर पहुँचा दिया और हज़रत महबूबे इलाही के जानशीन हज़रत ख़्वाजा नसीरुद्दीन चराग़े देहली ने तो सिलसिलए चिश्तिया को अफ़्ग़ानिस्तान, मलाया, इण्डिया, इण्डोनेशिया और चीन तक पहुँचा दिया। उन के बाद भी चिश्तिया सिलसिले में बड़े बड़े नामवर मशाइख़ हुए जिन्हों ने तारीख़ के हर दौर में और निहायत नामुसाइद हालात में शम्ए इस्लाम को रौशन रखा उन सब के सरदारो पेशवा सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ही थे। यही नहीं बल्कि आज भी हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के अवामो ख़वास के दिलों पर ख़्वाजए अजमेरी हुकूमत कर रहे हैं।

अख़लाक़ो आदात

दुन्या से बे नियाज़ी

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के ज़ोहदो क़नाअत और आप की दुन्या से बेनियाज़ी का यह आलम था कि सुल्ताने वक़्त और उमरा व हुक्काम आप के अक़ीदतकेश थे मगर आप ने कभी उन के सामने अपनी हाजत का इज़्हार नहीं फ़रमाया, न उन से कोई सवाल किया और न ही किसी बादशाह और अमीर के पास किसी दुन्यवी ग़रज़ केलिए तशरीफ़ ले गए। अगर कभी कोई अक़ीअतमन्द व जाँनिसार कोई नज़्र पेश करता तो उसे अपने ज़ाती मसारिफ़ में न लाते बल्कि ग़रीबों में तक़्सीम फ़रमा देते या तब्लीग़ी मिशन में सर्फ़ फ़रमाते। आप हक़ीक़त में मुतवक्किल अलल्लाह थे और अपना सारा मुआमला ख़ुदा के फ़ज़्लो करम और उस की मरज़ी व मन्शा पर छोड़ दिया था।

ग़रीब परवरी

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू अपने करीमाना

अख़लाको आदात में „तख़ल्लक़ू बि अख़लाक़िल्लाह„ (याअनी अल्लाह के अख़लाक़ इख़्तियार करो) के पैकरे जमील और सीरते मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मज़्हरे अतम और कामिल नमूना थे। अल्लाह तआला ने आप को पसन्दीदा अख़लाको आदात, नेक ख़साइल और औसाफ़े हमीदा से आरास्ता व मुज़ैय्यन फरमाया था उन्हीं ख़ूबियों की वजह से आप ग़रीबों और मिस्कीनों से बहुत महब्बत फरमाते और उन की ज़रूरियात पूरी करने में ज़रा सा भी तअम्मुल व तवक़्क़ुफ़ न फरमाते। मुरीदों और अक़ीदतमन्दों को भी हमेशा यही नसीहत फरमाया करते कि „दुर्वेशों और ग़रीबों से महब्बत रखो जो उन को दोस्त रखता है अल्लहा अज़्ज़ व जल्ल उस को दोस्त रखता है।„

ग़रीबों पर बेपनाह शफ़क़तो मेहरबानी करने के सबब आप मशाइख़ो सूफ़िया की तारीख़ो सीरत समेत पूरे आलमे इन्सानियत में „ग़रीब नवाज़„ के मुअज़्ज़ज़ो मुम्ताज़ लक़ब से याद किए जाते हैं। मुल्क के क़दीम व मशहूर उस्ताज़ शाइर दाग़ देहलवी अपनी एक मन्क़बत में अर्ज़ करते हैं :

लाई है मुझे उम्मीदे करम इस ख़ाक की और इस दर की क़सम
आया हूँ पए हाजत तलबी सुल्तानुल हिन्द ग़रीब नवाज़
फरयाद तुम्ही से है मेरी तक्लीफ सही कैसी कैसी
हो दादतलब की दादरसी सुल्तानुल हिन्द ग़रीब नवाज़

फैय्याज़ी व दरया दिली

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियललाहु तआला अन्हु की अता व बख़्शिश और फैय्याज़ी व दरया दिली की यह कैफियत थी कि कभी कोई साइल आप के दर से महरूम न जाता। हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का बयान है कि मैं एक अर्से तक आप की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर रहा उस दौरान कभी किसी साइल या फक़ीर को आप के दर से ख़ाली हाथ जाते नहीं देखा।

आप के लंगरख़ाने में रोज़ाना इतना खाना तैय्यार किया जाता था कि शहर के तमाम ग़ुरबा व मसाकीन ख़ूब सैर होकर खाते। ख़ादिम हाज़िरे बारगाह होकर जब यौमिया ख़र्च का मुतालबा करता तो तो आप मुसलले का एक गोशा उठाकर फरमाते „जिस क़दर आज के ख़र्चे केलिए ज़रूरत हो लेलो„ वह मतलूबा मिक़्दार

में लेलेता और इससे माअमूल खाना पकवाकर ग़रीबों और मिस्कीनों को तक़्सीम कर देता उस के अलावा सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के दरबार से दुर्वेशों का वज़ीफा भी मुक़र्रर था। आप की दरगाह शरीफ में रोज़ाना का लंगर और मुस्तहक़्क़ीन केलिए वज़ाइफ का सिलसिला अब तक जारी है।

सादगी

सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ निहायत सादगीपसन्द थे माअमूली और सादा लिबास ज़ेबेतन फरमाते हत्ता कि उस में कई कई पैवन्द लगे रहते मुख़्तलिफ रंगों के निहायत सादा दुहरे कपड़े बख़्या किया हुआ लिबास इस्तेअमाल फरमाते और जब तक वह पुराना होकर नाक़ाबिले इस्तेअमाल न होजाता उस में पैवन्द लगा लगा कर पहनते रहते। दुन्या के ज़ाहिर परस्त लोगों की नज़र में आप निहायत ग़रीबो मुफ्लिस दिखाई देते थे लेकिन बातिन में किश्वरे रूहानियत के ताजदार थे अगर आप चाहते तो बादशाहों की तरह निहायत शानदार ज़िन्दगी गुज़ार सकते थे मगर राहे सुलूक और मन्ज़िले तसव्वुफ में शानो शौकत और कर्रो फर को पसन्द नहीं फरमाया गोया गुदड़ी में छुपे हुए लाल की मानिन्द थे और अहले नज़र हज़रात आप की अज़्मतो बुज़ुर्गी के सामने जबीने अक़ीदतो एहतेराम झुका देते थे। उन्हीं ख़ासाने ख़ुदा और फक़्रो फाक़ा की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले दुर्वेशों के बारे में हदीसे पाक में फरमाया गया जिस के मफ्हूम का ख़ुलासा यह है :

„बहुत से अल्लाह के नेक बन्दे हैं जो परागन्दा बाल होंगे और उन के चेहरे ग़ुबार आलूद होंगे लोग उन को अपने दरवाज़ों से दूर करेंगे लेकिन ख़ुदा की बारगाह में वह इस क़दर मुक़र्रबो मक़्बूल होंगे कि वह जिस काम केलिए अल्लाह की क़सम खा लेंगे अललाह तआला उन की क़सम पूरी कर देगा।„

हज़रत शैख़ साअदी शीराज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने ऐसे ही लोगों के बारे में दुन्या वालों को ख़बरदार करते हुए फरमाया है कि

ख़ाक्साराने जहाँ रा बहिक़ारत म निगर
गाह बाशद कि दरीं गर्द सवारे बाशद

याअनी दुन्या के ख़ाक सारों को ज़िल्लत की नज़र से न देखो हो सकता है कि उस गर्द में कोई सवार छुपा हुआ हो।

पड़ोसी का ख़याल

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू अपने पड़ोसियों के हुक़ूक़ का बड़ा ख़याल रखते थे, उन की ख़बरगीरी फरमाया करते थे। अगर किसी पड़ोसी का इन्तेक़ाल हो जाता तो उस के जनाज़े के साथ ज़रूर तशरीफ लेजाते जब उस को दफ्न करने के बाद लोग वापस होजाते तो आप अकेले उस की क़ब्र के पास बैठ कर मरने वाले के हक़ में मग़्फिरतो नजात की दुआ करते, उस के पस माँदगान को सब्र की तल्क़ीन करते और उन्हें तसल्ली व तशफ्फी दिया करते थे।

एक दफ्आ का वाक़ेआ है कि एक पड़ोसी का इन्तेक़ाल होगया आप तदफीन में शरीक हुए और हसबे माअमूल बादे दफ्न आप अपने हमसाया की क़ब्र पर ठहरे रहे। हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि „मैं ने देखा कि आप के चेहरे का रंग मुतग़ैय्यर हुआ फिर अस्ली हालत में आ गया बाद अज़ाँ आप अलहम्दु लिल्लाह फरमाते हुए वहाँ से उठे और मुझ से मुख़ातब होकर फरमाया कि „बैअत भी अजीब चीज़ है।„

मैं ने उस की वजह दरयाफ्त की तो फरमाया कि „जिस वक़्त इस मुर्दे को दफ्न किया गया अज़ाब के फरिश्ते आ गए और उस पर अज़ाब करना चाहा। उसी वक़्त सैय्यिदुना ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तशरीफ फरमा हुए और फरिश्तों से फरमाया कि „यह मेरा मुरीद है इस पर अज़ाब न करो।„

फरिश्तों ने कहा „यह आप का मुरीद है मगर आप के तरीक़े पर न चला।„

आप ने फरमाया „सच है लेकिन उस ने अपनी ज़ात को फक़ीर के साथ वाबस्ता किया था मैं नहीं चाहता कि इस पर अज़ाब हो।„

उसी वक़्त फरमाने एज़्दी आया कि कि हमें शेख़ की ख़ातिर मनज़ूर है। उस पर अज़ाब न करो।„ („राहतुल क़ुलूब„ बहवाला „मुईनुल अरवाह„स0 188)

मुरीदीन व मोअतक़ेदीन से महब्बत

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अलैह अपने मुरीदीन, मोअतक़ेदीन, ख़ुलफा और उन के मुतअल्लिक़ीन से बहुत महब्बत फरमाया करते थे और उन्हें अपने बातिनी फ़ुयूज़ो बरकात से मालामाल करने की ज़ियादा से ज़ियादा कोशिश फरमाया करते। जिन ऐय्याम में हज़रत बाबा फरीदुद्दीन गंजे शकर मस्ऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु अपने अहदे शबाब में मुजाहदा व रियाज़त में मशग़ूल थे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी कुद्दि स सिर्रुहूमा दोनों बुज़ुर्ग उन के हुजरे में तशरीफ लाए। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ उन की इबादतो रियाज़त से बहुत मुतअस्सिर हुए और उन को बहुत सी नेअमतों और करामतों से नवाज़ा और उन की जानिब ख़ास रूहानी तवज्जुह फरमाकर उन्हें दर्जए कमाल तक पहुँचा दिया।

अफ्वो बुर्दबारी

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू बहुत ही मुतहम्मिल मिज़ाज, मतीन और सन्जीदा बुज़ुर्ग थे आप को ग़ुस्सा शायद ही कभी आया हो कोई सख़्त बात भी कह देता तो आप बरहम नही होते ऐसा माअलूम होता था जैसे आप ने उस की नाज़ेबा बातें सुनी ही न हों ऐसी सूरत में आप किसी से इन्तेक़ाम लेते इस का सवाल ही पैदा नहीं होता आप हमेशा अफ्वो दरगुज़र से काम लेते थे।

एक मरतबा एक शख़्स आप का क़त्ल करने के इरादे से आप के पास आया। कश्फ के ज़रीआ आप पर उस के आने का मक़सद ज़ाहिर हो गया उस शख़्स को निहायत शफ़क़तो महब्बत से अपने पास बिठाकर फरमाया „जिस इरादे से यहाँ आए हो उसे पूरा करो।„

वह शख़्स सरकारे ख़्वाजा की ज़बान से यह जुम्ला सुन कर मबहूतो हैरान रह गया वह उसी वक़्त आप के क़दमों पर गिर कर मुआफी का तलबगार हुआ हज़रत ने उसे मुआफ़ कर दिया और उस के हक़ में दुआए ख़ैर भी फरमाई।

बाज़ तज़्किरा निगारों ने इस वाक़ेअे के ज़िम्न में लिखा है कि वह शख़्स ग़ैर मुसिलम हिन्दू था और यह वाक़ेआ उस वक़्त पेश आया जब आप लाहौर से अजमेर आते हुए देहली में क़ेयाम

पज़ीर थे वह शख़्स आप के अख़लाके करीमाना की बरकत से कलिमा पढ़कर मुसलमान होगया और हज़रत के फ़ैज़े सुहबत और दुआओं के असर से उसे पैंतालीस मरतबा हज्जो ज़ियारत की सआदत नसीब हुई।

„अस्रारुल औलिया„ में बयान किया गया है कि :

„वह शख़्स आख़िर में ख़ानए काअबा के मुजावरों में शामिल होगया था और ख़ुश क़िस्मती से वही मुक़द्दस सरज़मीन उस का मदफ़न हुई।„

तवाज़ोओ इन्केसारी

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू निहायत मुन्कसिरुल मिज़ाज और मुतवाज़ेअ थे। ख़ाकसारी व फ़रोतनी आप की आदत में शामिल थी। बुज़ुर्गों ने किसी वली की पहचान के बारे में फ़रमाया है कि उस की ज़ात में सूरज की तरह शफ़क़त, दरया की तरह सख़ावतो फ़ैय्याज़ी और ज़मीन की मानिन्द ख़ाकसारी हो।

यह तीनों औसाफ़ हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अलैहिर्रहमह की शख़्सियत में बदर्जए कमाल जल्वागर थे इसी ख़ाकसारी का असर था कि आप हमेशा लोगों से सलाम करने में सबक़त फ़रमाया करते थे। (दलीलुल आरिफ़ीन)

दुर्वेशों के साथ हुस्ने सुलूक

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर क़ुद्दि स सिर्रुहुल अज़ीज़ अपने पीरो मुर्शिद सैय्यिदुना ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लहि तआला अलैह का बयान रक़म फ़रमाते हैं कि :

„मैं सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू के साथ बीस साल तक रहा। एक मरतबा हम एक ऐसे जंगल में पहुँचे जहाँ कोई परिन्दा भी पर नहीं मार सकता था। हम तीन रोज़ तक उस जंगल में फिरते रहे मैं ने सुना था कि उस जंगल के पास एक पहाड़ पर कोई बुज़ुर्ग रहते हैं सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू मुसल्ले के नीचे से दो रोटियाँ निकाल कर मुझ को दीं और फ़रमाया कि उन बुज़ुर्ग की ख़िदमत में लेजाओ और मेरा उन से सलाम कहो।

मैं ने रोटियाँ उन बुज़ुर्ग के सामने रखीं। उन्हों ने एक रोटी मुझे इनायत फ़रमाई और दूसरी इफ़्तार केलिए रख ली फिर मुसल्ले के नीचे से चार खजूरें निकालीं और मुझे देते हुए फ़रमाया „यह मुईनुद्दीन को देदेना।„

जब मैं खजूरें लेकर आया तो सरकारे ग़रीब नवाज़ मुझे देख कर बहुत मसरूर हुए और फ़रमाया „ऐ दुर्वेश! पीर का फ़रमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फ़रमान होता है पस जो पीर का फ़रमान बजा लाता है वह गोया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फ़रमान बजा लाता है।

(तरजमा „अस्रारुल औलिया„ बहवाला मुईनुल अरवाह)

परदा पोशी

हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का बयान है कि :

„मैं कई बरस तक सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर रहा लेकिन उस मुद्दत में मैं ने कभी नहीं देखा कि आप ने कभी किसी दोस्त का राज़ ज़ाहिर किया हो। आप किसी के भेद का कभी तज़्किरा तक न फ़रमाते और न ही उन अन्वारो तजल्लियात को ज़र्रा बराबर ज़ाहिर होने देते जो आप पर नाज़िल होते थे।„(तरजमा उर्दू फ़वाइदुस्सालिकीन)

ख़ौफ़े ख़ुदा

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु पर ख़ौफ़े ख़ुदा का इस क़दर ग़लबा था कि आप हमेशा ख़शियते इलाही से काँपते औ गिरया व ज़ारी करते रहते थे। आप इस मुआमले में फ़रमाया करते कि

„ऐ लोगो! अगर तुम को ज़ेरे ख़ाक सोए हुए लोगों का ज़रा सा भी हाल माअलूम हो जाए तो तुम (मारे ख़ौफ़ो दहशत के) खड़े खड़े पिघल जाओ और नमक की तरह पानी हो जाओ।„ (मसालिकुस्सालिकीन)

इत्तेबाओ सुन्नत

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू इत्तेबाओ सुन्नत में कामिलो अक्मल थे और हमेशा जानो दिल से सुन्नते नबवी की पैरवी करते थे क्यूँकि आप इस हक़ीक़त से वाक़िफ़ो बाख़बर थे कि बग़ैर इत्तेबाओ रसूल व पैरवीये मुसतफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तरीक़तो माअरिफ़त की मन्ज़िल नहीं मिल सकती है।

खिलाफे पयम्बर कसे रह गुज़ीद
कि हरगिज़ ब मन्ज़िल न ख़्वाहद रसीद

इरशादे रब्बानी है „व मैंय्युतिइर्रसू ल फक़द अताअल्लाह„ याअनी जिंस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस अल्लाह का हुक्म माना। (तरजमा कन्ज़ुल ईमान पारा 5) और इरशादे बारी है „कुल इन कुन्तुम तुहिब्बूनल्ला ह फत्तबिऊनी युहबिबकुमुल्लाह„ याअनी ऐ महबूब! तुम फरमादो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फरमाँबरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा। (तरजमए कन्ज़ुल ईमान पारा 3) हर वक़्त आप के पेशे नज़र रहते और तरीक़े रसूले किर्दिगार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इख़्तियार करके ज़िन्दगी गुज़ारते और अपने तमाम मुरीदीन व मुतवस्सिलीन को भी शरीअते मुहम्मदिया पर अमलपैरा होने की ताकीद फरमाते।

मुहम्मद की गुलामी दीने हक़ की शर्ते अव्वल है
इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ नामुकम्मल है
मुहम्मद की गुलामी है सनद आज़ाद होने की
ख़ुदा के दामने तौहीद में आबाद होने की

महब्बते रसूल

„बज़्मे सूफिया„ में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की महब्बते रसूल की कैफियत बयान करते हुए तहरीर किया गया है कि :

> „सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ तमाम उम्र इश्क़े इलाही में वारफ्ता व बेख़ुद रहने के साथ महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नशे में भी सरशार रहे।„

आप अपने मल्फूज़ात में रसूले मुहतरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ज़िक्रे मुबारक बहुत वालिहाना अन्दाज़ में फरमाते थे और अक्सर हदीसे नबवी बयान फरमाकर रोने लगते थे। एक जगह मल्फूज़ात में आप ने फरमाया है कि :

> „अफसोस है उस शख़्स पर जो क़ेयामत के दिन आप से शर्मिन्दाहोगा उस की जगह कहाँ होगी जो आप से शर्मिन्दा होगा कहाँ जाएगा यह फरमाने के बाद हाय हाय कहकर रो पड़े।„

आप को रसूले पाक से इस दर्जा इश्क़ था कि जब सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ज़िक्र करते या सुनते तो आप की आँखें पुरनम हो जातीं। इसी महब्बते रसूल व इश्क़े मुसतफा का एअजाज़ था कि आप की शख़्सियत आफाक़ी शुहरतो मक़्बूलियतकी हामिल हो गई और पुरे आलमे इस्लाम में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का नाम नामी इस्मे गिरामी निहायत क़दरो मन्ज़िलत और कमाले एहतेराम के साथ लिया जाता है और आज भी वह मख़्लूक़े ख़ुदा के दिलों पर हुकूमत कर रहे हैं और आप के आस्ताने पर शबोरोज़ बिला तफ्रीक़े मज़हबो मिल्लत मुस्लिम, ग़ैर मुसलिम, अपने और बेगाने सभी नज़रानए अक़ीदत और हदियए महब्बत पेश करते हैं और आप के फैज़बख़्श दरबार से अल्लाह की नेअमतें और दौलतें पाते हैं।

जज़्बाते महब्बत का कैसा ये फसाना है
सिम्टे तो दिले आशिक़ फैले तो ज़माना है

मुर्शिद की तक्रीम

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के दिल में अपने पीरों मुर्शिद केलिए बड़ी क़द्रो अज़्मत थी। एक दिन का ज़िक्र है कि आप अपने हम मश्रब लोगों के साथ बैठे थे और सुलूक के बारे में गुफ्तुगू फरमा रहे थे उस दौरान जब आप दाहिनी तरफ चेहरा करते तो अदब के साथ खड़े होजाते। हाज़िरीन आप के इस अमल से हैरान थे और समझ नहीं पा रहे थे कि बार बार किस की ताअज़ीम के लिए खड़े हो जाते हैं। जब इस के मुतअल्लिक़ आप से दरयाफ्त किया गया तो इरशाद फरमाया कि :

> „इस तरफ मेरे पीरो मुर्शिद का रौज़ा है और जब मैं इस तरफ देखता था तो वह नज़र आने लगता था इस लिए मैं उस की ताअज़ीम के वास्ते खड़ा हो जाता था।„ („मसालिकुस्सालिकीन„ जिल्द दोम बहवाला „मुईनुल अरवाह„)

इस वाक़ेअ से अन्दाज़ा लगाया जासकता है कि पीरो मुर्शिद का रौज़ए मुबारक तसव्वुर में नज़र आजाने पर उस की ताअज़ीम का यह हाल है कि जब उस तरफ नज़र उठे ताअज़ीमन खड़े हो जाएं तो जब पीरो मुर्शिद के आस्तानए पाक पर जिस्मो जिस्मानियत के साथ हाज़िर होते होंगे तो उस की ताअज़ीम का क्या हाल होता होगा। और ख़ुद पीरो मुर्शिद की हयाते ज़ाहिरी में उन से मुलाक़ात पर हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ किस अन्दाज़ से

ताअज़ीमो तौक़ीर फ़रमाते होंगे। और बुज़ुर्गों की ताअज़ीमो तक्रीम ही से आप के दरजात बलन्द से बलन्दतर होते गए सच कहा है किसी ने :

बाअदब बानसीब बे अदब बेनसीब

नमाज़

सरकारे सैय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के मल्फ़ूज़ात के मुतालअे से पता चलता है कि आप के नज़दीक अहले सुलूक केलिए हर क़िस्म के सोवरी व माअनवी अख़्लाक़ो महासिन से मुज़ैय्यन होना ज़रूरी है क्यूँकि उन के नज़दीक तसव्वुफ न इल्म है और न इस्म बल्कि मशाइख़ का एक ख़ास अख़्लाक़ है जो हर लिहाज़ से मुकम्मल होना चाहिए। सोवरी हैसियत से उन अख़्लाक़ की तक्मील यह है कि सालिक अपने हर किरदार में शरीअत का पाबन्द हो। जब उस से कोई बात ख़िलाफ़े शरअ सरज़द न होगी तब वह दूसरे मक़ाम पर पहुँचेगा जिस का नाम तरीक़त है और जब उस में साबित क़दम रहेगा तो माअरिफत का दर्जा हासिल करेगा ओर जब उस में पूरा उतरेगा तो हक़ीक़त का मरतबा पाएगा उस के बाद वह जो कुछ तलब करेगा उस को मिलेगा। इस लिए सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने शरीअत के तमाम अरकान और उन के जुज़ईयात बिल्ख़ुसूस नमाज़ की पाबन्दी पर बड़ा ज़ोर दिया है फरमाते हैं :

„नमाज रुक्ने दीन है और रुक्न व सुतून मुतरादिफ (हम माअना) हैं। अगर सुतून खड़ा है तो घर भी खड़ा रहेगा और जब सुतून गिर जाएगा जो घर भी सलामत नहीं रहेगा। जिस ने नमाज़ में ख़लल डाला उस ने अपने दीन और ईमान को ख़राब किया।„

नमाज़ की अहम्मियत की तल्क़ीन करते हुए हज़रत ख़्वाजा ने फरमाया कि :

„मेरा गुज़र शाम के करीब एक शहर में हुआ उस शहर के बाहर एक ग़ार था जिस में एक बुज़ुर्ग सुकूनत पज़ीर थे ख़ौफे ख़ुदा और हैब्ते इलाही से उन के बदन का गोश्त पोस्त सब पिघल गया था पूरे जिस्म पर सिर्फ़ हड्डियाँ ही रह गई थीं। एक सज्जादा पर मुतमक्किन (तशरीफ फरमा) थे मैं अदब से करीब जाकर बैठ गया। बुज़ुर्ग ने दरयाफ्त किया „कहाँ से आए हो।?„

मैं ने जवाब दिया „बगदाद से हाज़िर हुआ हूँ।„

फरमाया „ख़ूब आए लेकिन मुनासिब यह है कि दुर्वेशों की ख़िदमत करते रहो ताकि तुम को ज़ौक़े दुर्वेशी हासिल हो। मुझे इस ग़ार में रहते हुए कई बरस गुज़र गए पूरी दुन्या से अलाहदगी इख़्तियार करके इस ग़ार में छुपा बैठा हूँ एक बात से ऐसा डरता हूँ कि रात दिन रोते गुज़र जाते हैं।„

मैं ने पूछा कि „हज़रत वह कौन सी बात है।?„

फरमाया „नमाज़ है, जिस वक़्त अदा करता हूँ ख़ौफ माअलूम होता है कि कहीं कोई शर्त फ़रोगुज़ाश्त न हो गई हो और मेरी सारी मेहनत अकारत होकर यही नमाज़ मोजिबे इताबे ख़ुदावन्दी न हो जाए।„ („दलीलुल आरिफीन„ मज्लिसे दोम बहवाला „बज़्मे सूफ़िया„ स० 76)

जिस तरह हदीसे पाक में नमाज़ को मोमिनों की मेअराज बताया गया है उसी की रौशनी में हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फरमाया है कि :

„जब वह (मोमिन) नमाज़ पढ़े तो इस तरह कि गोया अनवारो तजल्लियात का मुशाहदा कर रहा है।„ (दलीलुल आरिफीन)

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू के नज़दीक नमाज़ के साथ साथ रोज़े और हज की भी बड़ी अहम्मियत थी वह ख़ुद साइमुद्दहर (हमेशा रोज़ादार) रहे और आप ने ख़ानए काअबा की ज़ियारत भी बकस्रत की है। „फ़वाइदुस्सालिकीन„ मजिलसे पंजुम में है कि :

„अजमेर से हर साल हज केलिए तशरीफ ले जाते थे। मुम्किन है यह ख़याल हो कि हर साल अजमेर से हज केलिए जाना और वापस आना उस ज़माने में इतना आसान न था बल्कि दूसरे लफ़्ज़ों में यही कहिए कि नामुम्किन था तो इस से यह मुराद है कि उन्हों ने ख़ानए काअबा की ज़ियारत इतनी बार फरमाई है कि उस का शुमार नहीं किया जासकता।„ (बज़्मे सूफ़िया„)

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और समाअ

हज़रत सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को समाअ से बहुत शग़फ़ था। बयान किया जाता है कि हिन्दुस्तान आकर आप ने अपनी मज्लिसे समाअ से तब्लीगे दीन का काम भी लिया। नग़मओ लहन और मौसीक़ी अहले हिन्द की घुट्टी में पड़ी हुई थी और „आहन ब आहन नर्म तवाँ कर्द„ के बमिस्दाक़ मौसीक़ी ही उन के नज़रयात में इन्केलाब लाने का मुअस्सिर तरीन ज़रीआ बन

सकती थी चुनाँचे एक तरफ तो आप ने अपनी पाकीज़ा ज़िन्दगी और मजालिसे हिदायत से लोगों को इस्लाम की तरफ रागिब करना शुरूअ किया और दूसरी तरफ मजालिसे समाअ के ज़रीआ उन्हें अपने दामे तब्लीग़ का असीर बनाने लगे। माअलूम होता है कि सरकारे ख़्वाजा दो क़िस्म की मजालिसे समाअ मुन्अक़िद फरमाते थे एक ख़ास याराने तरीक़त के लिए और दूसरी अवाम के लिए। दूसरी क़िस्म की मजालिसे समाअ से ही तब्लीग़ का काम लिया जाता होगा क्यूँकि मख़्सूस मजालिस में हरकसो नाकस को शरीक होने की इजाज़त नही होती।

मख़्सूस मजालिसे समाअ में आप पर अजीबो ग़रीब कैफियत तारी होजाती। बाज़ दफ्आ आप बेहोश हो जाते और बाज़ दफ्आ वज्द में आजाते। कभी कभी ऐसा होता कि बे इख़्तियार रोने लगते। „दलीलुल आरिफीन„ की एक रिवायत के मुताबिक़ एक दफ्आ आप ख़्वाजा अबू यूसुफ चिश्ती की ख़ानक़ाह में चन्द दुर्वेशों के साथ मुक़ीम थे एक दिन वहाँ मज्लिसे समाअ मुन्अक़िद हुई जब क़व्वालों ने यह शेर पढ़े। :

आशिक़ ब हवाए दोस्त बेहोश बुवद
वज़ यादे मुहिब्बे ख़्वेश मदहोश बुवद
फरदा कि ब हश्र हैराँ मानद
नामे तू दुरूने सीनओ गोश मानद

तो सरकारे ख़्वाजा बेहोश होगए और सात रात दिन आलमे बेहोशी में तड़पते रहे। इस से हज़रते ख़्वाजा के क़ल्बे गुदाज़ का अन्दाज़ा किया जा सकता है।

हज़रते ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी का बयान है कि „सरकारे ख़्वाजा की मज्लिसे समाअ में उस दौर के बड़े बड़े नामवर मशाइख़ शरीक हुआ करते थे।

समाअ एक मुख़्तलफ फीह मस्अला

समाअ का मस्अला मिल्लते इस्लामिया में हमेशा से मुख़्तलफ फीह रहा हैं मुसलमानों के बाज़ तब्क़े हर क़िस्म के समाअ को हराम क़रार देते हैं उस के बर ख़िलाफ बाज़ तब्क़े कुछ शराइत के साथ समाअ को न सिर्फ जाइज़ बल्कि उसे तब्लीग़े इस्लाम का एक मुफीद और मुअस्सिर ज़रीआ समझते हैं। बुज़ुर्गाने चिश्त के अश्ग़ाल में समाअ को हमेशा ख़ास अहम्मियत हासिल रही है

लेकिन उन बुज़ुर्गों ने समाअ के जो आदाब मुक़र्रर किए थे उन को बरक़रार रख कर क़व्वाली सुनना कुछ आसान काम नहीं। मौजूदा दौर में समाअ की मजिलसें कस्रत से मुन्अक़िद होने लगी हैं और आम तौर पर लोग समाअ को तफरीहे तबअ का एक ज़रीआ समझने लगे हैं। यहाँ यह वाज़ेह कर देना ज़रूरी माअलूम होता है कि जो बुज़ुर्गाने चिश्त मजालिसे समाअ मुन्अक़िद फरमाते थे उन्हों ने कभी अपने मुरीदों और अक़ीदत मन्दों के लिए समाअ सुनना ज़रूरी क़रार नही दिया बल्कि मजालिसे समाअ के इन्अेक़ाद पर ऐसी कड़ी शराइतो क़ुयूद आइद की हैं कि एक आम आदमी केलिए समाअ का सुनना एक अम्रे मुहाल है।

हज़रत चराग़े देहली का नज़रियए समाअ

समाअ से मुतअल्लिक़ हज़रत शैख़ नसीरुद्दीन महमूद चराग़े देहली के नज़रिए का ज़िक्र करना दिलचस्पी से ख़ाली न होगा। आप हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही के ख़लीफए आअज़म थे और हज़रत महबूबे इलाही के ज़ौक़े समाअ से तमाम तज़्किरे भरे पड़े हैं लेकिन हज़रत चराग़े देहली हर क़िस्म के समाअ से कुलिलय्यतन इज्तिनाब फरमाते थे। बयान किया जाता है कि एक दिन आप के एक पीरभाई के यहाँ मज्लिसे समाअ मुन्अक़िद हुई आप भी वहाँ मौजूद थे जब बाजे के साथ समाअ शुरूअ हुआ तो आप वहाँ से उठ कर चल दिए लोगों ने रोका तो आप ने फरमाया कि „यह बात ख़िलाफे सुन्नत है।„

लोगों ने कहा „क्या आप ने अपने बुज़ुर्गों का मस्लक तर्क कर दिया है और समाअ के मुन्किर हो गए हैं।?„

शैख़ चराग़े देहली ने फरमाया „यह कोई दलील नहीं है क़ुरआनो हदीस से कोई सनद लाओ।„

लोग ख़ामोश हो गए और हज़रत अपने मकान को तशरीफ लेगए। लोगों ने हज़रत महबूबे इलाही से इस वाक़ेअे का तज़्किरा किया तो वह मुसकुरा दिए और सिर्फ इतना फरमाया „शैख़ नसीरुद्दीन का इत्तेक़ा बहुत बढ़ा हुआ है।„

„ख़ैरुल मजालिस„ (मुरत्तबा हमीद शाइर) में हज़रत शैख़ नसीरुद्दीन महमूद चराग़े देहली के नज़रयए समाअ के बारे में इस तरह नक़्ल किया गया है। :

„अज़ीज़े बख़िदमते शैख़ नसीरुद्दीन महमूद दर आमद व

अर्ज़ कर्द कि कुजा रवा बाशद कि मज़ामीर दर जमा बाशद व दफ़ व नाए व रुबाब व सूफ़ियाँ रक़्स कुनन्द ख़्वाजा फ़रमूद कि मज़ामीर व इज्माअ मुबाह नेस्त अगर यके अज़ तरीक़त बयुफ़्तद यारे दर शरीअत बाशद अगर अज़ शरीअत बयुफ़्तद कुजा रवद। अव्वल दर समाअ इख़्तिलाफ़ अस्त नज़दीके उलमा बा चन्दीं शराइत मुबाह अहले आँ रा। अम्मा मज़ामीर व इज्माअ हराम अस्त।,,

तरजुमा :–एक अज़ीज़ हज़रत शैख़ नसीरुद्दीन महमूद चराग़े देहली की ख़िदमत में हाज़िर आया और अर्ज़ किया कि महफ़िल में मज़ामीर बजें और सूफ़िया रक़्स करें यह कहाँतक जाइज़ है। आप ने इरशाद फ़रमाया कि मज़ामीर व इज्माअ मुबाह नहीं है अगर एक शख़्स तरीक़त से गिर जाए तो शरीअत पर तो रहेगा और अगर शरीअत से गिर जाए तो कहाँ जाएगा। अव्वल तो यह कि समाअ में इख़्तिलाफ़ है, उलमा के नज़दीक चन्द शरतों के साथ उस के अहल के लिए मुबाह है लेकिन मज़ामीर तो व इज्माअ हराम है। याअनी मज़ामीर किसी के नज़दीक भी सुनना जाइज़ नहीं बिला इख़्तिलाफ़ हराम है।

समाअ के शराइत

जो मशाइख़ समाअ को जाइज़ समझते हैं उन्हों ने उस के आदाबो शराइत मुक़र्रर कर दिए हैं उन की पाबन्दी न करने वालों को समाअ का अहल नहीं समझा जाता। ,,फ़वाइदुल फ़वाद,, में हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही से मन्क़ूल है कि समाअ केलिए मुन्दरजए ज़ैल शरतें लाज़िमी हैं।

(1)–महफ़िले समाअ में औरतें न हों।

(2)–सुनाने वाला (क़व्वाल) लड़का न हो।

(3)–मज़ामीर याअनी बाजे वग़ैरह न हों।

(4)–जो सुना जाए सिर्फ़ ख़ुदा के लिए सुना जाए।

(5)–जो कुछ सुना जाए वह फ़हश और फ़ुज़ूल बातों से पाक हो।

मशहूर चिश्ती बुज़ुर्ग हज़रत शैख़ कलीमुल्लाह जहानाबादी ने अपनी अज़ीम तस्नीफ़ ,,अशराते कामिला,, में समाअ के बारे में मुफ़स्सल बहस की है उन्हों ने बुज़ुर्गाने सलफ़ के हवाले से समाअ के जो आदाब तहरीर किए हैं उन में से कुछ यह हैं। :

(1)–महफ़िले समाअ में जो लोग शरीक हों वह बावुज़ू हों और

जब तक मज्लिस में रहें बा वुज़ू रहें।

(2)–महफ़िले समाअ शारेअे आम पर न हो और न ऐसी जगह पर हो जिस की ज़ाहिरी सूरत से कराहत महसूस हो और उस जगह कोई ऐसी चीज़ भी न हो जिस की तरफ़ क़ल्ब मुतवज्जेह हो जाए।

(3)–मज़्लिसे समाअ का इन्अेक़ाद ऐसे वक़्त में होना चाहिए कि न वह नमाज़ का वक़्त हो न खाने का और न कोई अम्र मानेओ मुख़िल हो।

(4)–समाअ के मुन्किर को महफ़िले समाअ में शरीक न होना चाहिए।

(5)–मजिलसे समाअ के आग़ाज़ से पहले एक दफ़्आ सूरए फ़ातिहा और तीन मरतबा सूरए इख़्लास पढ़ें और हुज़ूर नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर बकस्रत दुरूद भेजें।

(6)–मजिलसे समाअ में आल्ती पाल्ती मार कर बैठना या लेटना जाइज़ नहीं बल्कि दोज़ानू (नमाज़ के क़ाअदे की तरह) बैठें।

(7)–समाअ के वक़्त बात चीत और हंसी मज़ाक़ से एहतेराज़ लाज़िम है इसी तरह खाँसने खंखारने, जमाइयाँ लेने और इधर उधर देखने से इज्तेनाब करना चाहिए।

(8)–क़व्वाल तामेअ और हरीस न हों बावुज़ू रहें और जो कुछ उन को दिया जाए उसे एहसान समझें।

(9)–समाअ के वक़्त सर झुकाए रहें और जो कुछ क़व्वाल कहें उस को सुन कर क़ल्ब की रिआयतों में मश्ग़ूल रहें।

(10)–जब अपने दिल में समाअ की अदमे हुज़ूरी पाएं याअनी अपने दिल को समाअ की तरफ़ मुतवज्जेह न पाएं तो फ़ौरन महफ़िले समाअ से बाहर आजाएं ऐसी हालत में राग सुनना महज़ हराम व नाजाइज़ है।

(11)–जब मज्लिसे समाअ बरख़ास्त हो तो फिर सब हाज़िरीन सूरए फ़ातिहा और सूरए इख़्लास तीन बार पढ़कर बकस्रत दुरूद शरीफ़ पढ़ें और उस का सवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, सहाबए किराम, ताबेईन, सालेहीन और मशाइख़े सिलसिला की बारगाहों में नज़्र करें। जो शख़्स इन आदाब को तर्क करके महफ़िले समाअ में शरीक होगा उस को नफ़ा कि बजाए नुक़्सान होगा।

रियाज़तो मुजाहदा

सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू फ़क्रो ग़िना, तजरीदो तफ़रीद और ज़ुहदो इबादत में यगानए रोज़गार थे। शुक्रगुज़ार बन्दों की तरह आप ने अपनी तमाम उम्र इबादातो मुजाहदात में बसर की। सत्तर बरस तक शब में इस्तेराहत नहीं फ़रमाई और पहलुए मुबारक ज़मीन से नहीं लगाया। उस अर्से में सिवाए क़ज़ाए हाजात के बराबर बावुज़ू रहे आप उमूमन इशा के वुज़ू से सुब्ह की नमाज़ अदा करते थे। सफ़रो हज़र तक में आप दो कुरआन रोज़ाना ख़त्म फ़रमाते थे एक दिन में और एक रात में पढ़ लेते थे और बमिस्दाक़ „व मन कम म ल इरफ़ानहू कम म ल इबादतहू„ याअनी जो इरफ़ान में कामिल होता है वह इबादत में भी कामिल होता है। आप इबादतो इरफ़ान में कामिलो अकमल थे। (मसालिकुस्सालिकीन जिल्द दोम)

इश्क़े खुदा

रूए मुबारक पर ग़मगीनी और उदासी छाई रहती थी हज़रत कुतबुल अक़्ताब फ़रमाते हैं कि :

„मैं बीस बरस तक हाज़िरे ख़िदमत रहा मैं ने नहीं सुना कि कभी आप ने अपनी सेहत की दुआ माँगी हो बल्कि आप अक्सर फ़रमाया करते थे कि „खुदावन्दा! जहाँ कहीं दर्दे महब्बत हो अपने मुईनुद्दीन को अता फ़रमा„ मैं ने एक बार अज़ राहे गुस्ताख़ी अर्ज़ किया „हुज़ूर! यह क्या दुआ है जो आप अपने हक़ में किया करते हैं„ इरशाद हुआ „जब कोई मुसलमान दर्द में मुब्तला होता है तो उस के गुनाह मुआफ़ होते हैं और इब्तेला मुसलमान के लिए सेहते ईमान की दलील है।„ (मसालिकुस्सालिकीन जिल्द दोम)

शाने जलालो जमाल

आप की हालत कभी जलाल और कभी जमाल की थी जब जमाल का ग़लबा होता तो आप ऐसे मुस्तग़रक़ हो जाते थे कि तमाम आलम और कुल मासिवा की मुत्लक़ ख़बर न रहती थी नमाज़ का वक़्त आता तो सैय्यिदुना कुतबुल अक़्ताब कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी व क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी कुद्दि स सिर्रुहुमा सामने जाते और दस्त बस्ता खड़े होकर बआवाज़े बलन्द अर्ज़ करते

„अस्सलात, अस्सलात„ मगर आप को ख़बर न होती फ़िर गोशे मुबारक में बलन्द आवाज़ से यही कहते. उस पर भी आप को आगाही न होती तब नाचार शानए मुबारक को जुंबिश देते उस वक़्त आप चश्मे मुबारक खोलते और फ़रमाते „शर्अे मुहम्मदी से चारा नहीं।„ सुब्हानल्लाह मुझे कहाँ से कहाँ लाए। (मसालिकुस्सालिकीन जिल्द दोम)

जब हालते जलाल का ग़लबा होता तो हुजरे का दरवाज़ा बन्द करके मश्ग़ूल होजाते हज़रते कुतबुल अक़्ताब और शैख़ हमीदुद्दीन नागौरी कुद्दि स सिर्रुहुमा दरवाज़े के सामने पत्थरों के ढेर का परदा कर लेते और उस के पीछे छुप कर हाज़िर रहते नमाज़ के वक़्त जब आप हुजरे से बाहर तशरीफ़ लाते और पत्थरों पर नज़र पड़ती तो वह ख़ाकिस्तर होजाते जब आप नमाज़ शुरूअ करते तो दोनों हज़रात पीछे पहुँच कर इक़्तेदा करते और जैसे ही आप सलाम फेरते दोनों साहिबान भाग कर छुप जाते।

आप से अक़ीदत और खुलूस

जब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की करामात की अजमेर और नवाहे अजमेर बल्कि तमाम हिन्दुस्तान में शुहरत हुई तो ग़ैर मुस्लिम साहिबान की जमाअतें भी आप की बारगाह में अक़ीदत से हाज़िर होने लगीं। आप मशरबे सूफ़िया के मुताबिक़ जो ईमान लाता उसे मुशर्रफ़ ब इस्लाम फ़रमाते जो न लाता उस से मुज़ाहिम न होते आप हर फ़िरक़े के साथ तवाज़ोअ से पेश आते। बईं वजह मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम, ख़्वेशो बेगाना सब आप से महब्बत रखते थे और आप की ज़ियारत से फ़ैज़याब होते थे चुनाँचे आज तक यह सिलसिला जारी है कि अहले हुनूद और दीगर अक़वाम मुल्क के मुख़्तलिफ़ हिस्सों से से ब ज़मानए उर्स और दीगर औक़ात में आकर रौज़ए मुतहहरा पर नज़्रो नियाज़ सिदक़ो खुलूस के साथ पेश करती हैं।

बहुत से लोग़ जो ईमान नहीं लाते थे वह भी बड़े नुज़ूरो फ़ुतूहात आप की ख़िदमत में भेजते थे आज तक ग़ैर मुस्लिम मोअतक़िदीन उसी तरह से एअतेक़ाद रखते हैं हर साल (ब मौक़ए उर्स) आते हैं और आप के आस्तानए पाक की ख़ाक सर पर रखते हैं और आप के रौज़ए मुतहहरा के मुजावरों को ज़र नज़्र करते हैं और उन की ख़िदमत बजा लाते हैं।

आप की फैज़ रसानी

सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की सुहबत इतनी ज़ूद असर थी कि जो शख़्स तीन रोज़ तक आप की सुहबते बाबरकत में रहता साहिबे करामत होजाता। चुनाँचे एक शख़्स जो निहायत फासिक़ो फाजिर था, बनज़रे इम्तेहान आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ आप ने उस से तौबा कराई और वह उसी रोज़ मुराद को पहुँच गया।.

आप के मुरीदीने सिलसिला (हिन्दुस्तान में) क़रीब क़रीब हर जगह बतौरे साहिबे विलायत शाही करते हैं और यहाँ तक़रीबन कोई शहर ऐसा नहीं जहाँ उन हज़रात में से कोई आसूदा व मुतसर्रिफ न हो नीज़ आप की विलायते माअनवी से दीगर सलासिल के मशाहीर अस्फिया भी मुस्तफ़ीज़ हैं उन में से बाज़ ने आप के सिलसिले से ख़िर्क़ा पाया है बाज़ ने सिर्फ फैज़े रूहानी हासिल करके कमाल हासिल किया हैं और चहारदाँग हिन्दुस्तान में माअनन उन हज़रात ने तसर्रुफ किया है वहदानियत में आप का फैज़े रूहानी उन का हर ज़माने में मददगार रहा है।

आप बकमाले इस्तिग़राक़ वहदतुल वुजूद बिला इम्तियाज़े मज़हबो मिल्लत ख़्वेशो बेगाना जो मिलने आता उस से कुशादा पेशानी से पेश आते थे अगर कोई मरीज़ या हाजतमन्द आता और आप से रहम तलब करता तो आप दिलजोई के साथ उस का हाल पूछते और उस की हाजत बरारी करते, उस के हक़ में दुआए ख़ैर फरमाते और जो कुछ उस की क़िस्मत का होता मुसल्ले के नीचे से निकाल कर उस को इनायत फरमाते। चुनाँचे हयाते ज़ाहिरी की उस आदत के मुताबिक़ बादे विसाल इस ज़माने में भी ईसाई, पारसी, हुनूद और दीगर मज़ाहिब के लोग बिला तफ़रीक़े मज़हबो मिल्लत आप की दरगाह में हाज़िर होकर उसी तरह फैज़याब होते हैं।

एक दिन आप बहुत ख़ुश थे हाज़िरीन से फरमाया „माँगो जिस को जो माँगना है क़ुबूलियत का दर खुला है।„ एक शख़्स ने दुन्या माँगी दूसरे ने उक़बा। और दोनों अपने अपने मक़सद में कामयाब हुए बाद अज़ाँ आप ने सूफ़ी शैख़ हमीदुद्दीन नागौरी की तरफ रुख़ करके फरमाया कि „तू क्या माँगता है।?„ शैख़ ने अर्ज़ की कि „बन्दे की क्या मजाल है जो सवाल केलिए ज़ुबान खोले

मौला का चाहा मेरा चाहा है।„

फरमाया „मैं ने तेरे लिए ख़ुदा से दुआ की है कि तू दुन्या व आख़िरत में मुअज़्ज़ज़ो मुकर्रम रहे।„ बाद अज़ाँ आप ने ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की तरफ मुतवज्जेह होकर फरमाया „तू भी जो कुछ चाहे माँग ले।„उन्हों ने जवाब में अर्ज़ किया :

हरचे तू ख़्वाही बख़्वाहम रूए सर बर आस्तानम
बन्दा रा फरमाँ न बाशद हरचे बर आई बरानम

आप दोनों हज़रात से ख़ुश हुए और फरमाया :

„अत्तारिकु मिनद्दुन्या,..........,वलफारिगु मिनल उक़बा„ सुल्तानुत्तारिकीन हमीदुद्दीन सूफ़ी व क़ुतबुल वासिलीन क़ुतबुल अक़्ताब क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी औशी„ उस दिन से सूफ़ी हमीदुद्दीन सुल्तानुत्तारिकीन और हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी क़ुतबुल अक़्ताब हुए। आज तक यह दोनों उन्हीं ख़िताबात से याद किए जाते हैं। (अख़्बारुल अख़्यार स0 30 व ख़ज़ीनतुल अस्फिया जिल्द अव्वल स0 308)

इस्तिग़राक़ की कैफियत

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू हालते इस्तिग़राक़ में आँखें बन्द रखते जब नमाज़ का वक़्त आजाता तो आँखें खोलते कहा जाता है कि उस हालत में जिस पर आप की नज़र पड़ जाती वह वलिय्ये कामिल हो जाता। („मसालिकुस्सालिकीन„ जिल्द दोम बहवाला „मुईनुल अरवाह„)

लिबासे मुबारक

आप का लिबासे मुबारक जामए दोताई था यह बख़्या किया हुआ था जब हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी ने आप के दस्ते हक़परस्त पर बैअत की और आप ने ख़िलाफत से नवाज़ा तो वह दोहर हज़रत क़ुतबुल अक़्ताब को अता फरमाई बाद अज़ाँ वही दोहर क़ुतबुल अक़्ताब ने हज़रत बाबा फरीद गंजे शकर को और बाबा फरीद ने हज़रत शैख़ुल मशाइख़ निज़ामुद्दीन औलिया को और शैख़ुल मशाइख़ ने हज़रत नसीरुद्दीन चराग़े देहली को अता फरमाई।

जब कोई कपड़ा कहीं से फट जाता तो जिस क़िस्म का भी

पाक कपड़ा मयस्सर आता बिला तअम्मुल उस का पैवन्द लगा लेते थे। आप का लिबास अक्सर पैवन्द दार होता था। (तारीख़े फरिश्ता जिल्द दोम व तज़्किरए औलियाए हिन्द व मसालिकुस्सालिकीन जिल्द दोम बहवाल मुईनुल अरवाह)

गुज़र औक़ात

इब्तिदा में आप बाग़ और पनचक्की की आमदनी से गुज़र औक़ात फरमाते थे सफर में तीर, कमान और चक़माक़ साथ रखते थे और शिकार से अपनी रोज़ी मुहैय्या करते थे। आप की ख़ुराक गोश्त और ख़ुश्क रोटी पानी में तर की हुई होती थी।

सफर की हालत में

आप सफर में उमूमन एक दुर्वेश से ज़ियादा को साथ नहीं रखते थे अक्सर गोरिस्तान या ग़ैरआबाद मक़ाम पर क़ेयाम फरमाते थे जहाँ कुछ शुहरत होजाती थी वहाँ से फौरन कूच कर जाते थे।

आप का विसाल और उम्र शरीफ

सैय्यिदी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की उम्र शरीफ और साले विसाल के मुतअल्लिक़ तज़्किरा निगारों में ज़बर्दस्त इख़्तिलाफ पाया जाता है। उम्र शरीफ किसी ने 104 बरस, किसी ने 100 बरस और किसी ने 97 बरस लिखी है। साले विसाल अक्सर तज़्किरानिगारों ने 633 हि0 मुताबिक़ 1235 ई0 लिखा है तारीख़े वफात 6 रजब (दोशंबा) बयान की जाती है। „ख़ज़ीनतुल अस्फिया„ का बयान है कि :

> „विलादते बासआदते आँजनाब बइत्तेफाक़े अहले तवारीख़ दर साल पान सद व सी व हफ्त व वफाते आँ जामेउल कमालात रोज़े दोशंबा शशुम माहे रजबुल मुरज्जब साल शश सद व सी व सेह दर अहदे सल्तनते शमसुद्दीन अल्तमश बवुक़ूअ आमद।„

याअनी सैय्यिदी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की विलादते बासआदत तज़्किरा निगारों के इत्तेफाक़ के साथ 537 हि0 में हुई और आप का विसाल दोशंबा के दिन 6 रजबुल मुरज्जब 633 हि0 शमसुद्दीन अल्तमश के अहदे सल्तनत में वाक़ेअ हुआ।

इसी तरह „मूनिसुल अरवाह„ का बयान है कि :

> „उम्रे मुबारके हज़रत ब नवद व हफ्त साल रसीदा बूद व रिहलते आँ हज़रत रोज़े दोशंबा शशुम माहे रजबुल मुरज्जब शश सद व सी व सेह हिजरी ई मुक़द्दमा अज़ किताब „सैरुल आरिफीन„ नविश्ता शुदा।„

याअनी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की उम्रे मुबारक 97 साल को पहुँच गई थी और आप की रिहलत दोशंबा के दिन 6 रजबुल मुरज्जब 633 हि0 को हुई। यह मुक़द्दमा किताब „सैरुल आरिफीन„ से लिखा गया।

„अख़्बारुल अख़्यार„ में शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की वफात के बारे में लिखते हैं। :

> „नक़्ले ख़्वाजा सादिस रजब सनतु सलासिंव्वसलासी न व सित्तति मिअत„

याअनी हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने 6 रजब 633 हि0 में इन्तेक़ाल फरमाया।

सरमद की इस रुबाई से भी हज़रते ख़्वाजा का साले विसाल 633 हि0 ही निकलता है। :

> शुद ज़ि दुन्या चु दर बहिश्ते बरीं
> मुर्शिदे मुत्तक़ी मुईनुद्दीं
> गुफ्त तारीख़े रिहलतश सरमद
> महरमे दिल वली मुईनुद्दीं

नक़्ल किया गया है कि जिस रात आप का विसाल हुआ इशा की नमाज़ के बाद आप हुजरए ख़ास में तशरीफ ले गए और दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लिया आस पास में जो ख़ुद्दाम हाज़िर थे रात भर आप के पाँव पटख़ने की आवाज़ें सुनते रहे जैसे हालते वज्द में अक्सर हुआ करता था। उन ख़ादिमों ने भी यही समझा कि आप हालते वज्द में हैं फिर रात के आख़िरी हिस्से में वह आवाज़ें बन्द हो गईं यहाँतक कि सुब्ह की नमाज़ का वक़्त आ गया लोगों ने दरवाज़े पर बहुत दस्तक और आवाज़ें दीं मगर कोई असर नहीं देखा और न ही कोई जवाब मिला मजबूरन उन लोगों ने दरवाज़ा खोला तो अचानक निगाह पड़ी और देखा कि हज़रत रिहलत फरमा चुके हैं।

जिस शब आप ने रिहलत फरमाई चन्द लोगों ने हज़रते रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा आप इरशाद फरमा रहे थे कि अल्लाह तआला के दोस्त

मुईनुद्दीन हसन आने वाले हैं हम उन के इस्तिक़्बाल में आए हैं।

जब आप का विसाल हुआ तो आप की पेशानी पर लोगों ने एक ग़ैबी तहरीर देखी थी „हबीबुल्लाहि मा त फी हुब्बिल्लाह„ आप के विसाल की तारीख़ 6 रजब 633 हि0 है। जिस की तारीख़ „आफताबे मुल्के हिन्द„ से निकलती है। बअहदे सुल्तान शमसुद्दीन अल्तमश। (सैरुल अक़्ताब)

हज़रते कुतबुल अक़्ताब का बयान

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के मुक़द्दस मलफ़ूज़ात का मजमूआ „दलीलुल आरिफीन„ हज़रते क़ुतबुल अक़्ताब ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने मुरत्तब फरमाया है उस की बारहवीं मज्लिस में हज़रते क़ुतबुल अक़्ताब यूँ रक़म तराज़ हैं। :

„जुमेरात के रोज़ क़दम बोसी का शरफ हासिल हुआ और यह आख़िरी मज्लिस थी अजमेर की जामेअ मस्जिद में दुर्वेश, अज़ीज़, अहले सफा और मुरीद हाज़िरे ख़िदमत थे बात मलकुल मौत के बारे में शुरूअ हुई आप ने इरशाद फरमाया कि „बग़ैर मलकुल मौत के दुन्या की क़ीमत जौ भर भी नहीं।„

पूछा क्यूँ।?

फरमाया „इस लिए कि हदीसे पाक में है „अलमौतु जस्रु न यू स लुल हबी ब इलल हबीब„ याअनी मौत एक पुल है जो दोस्त को दोस्त तक पहुँचा देता है।„

फिर फरमाया कि „दोस्त वह है जो दिल से याद करे क्यूँकि दिल दोस्त केलिए पैदा किए गए हैं ख़ासकर इस वास्ते कि अर्श के गिर्द तवाफ करें जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है „ऐ मेरे बन्दे! मेरा ज़िक्र तुझ पर ग़ालिब आ जाएगा तो मैं तेरा आशिक़ याअनी मुहिब्ब हो जाऊँगा।„

जब हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ फवाइद ख़त्म कर चुके तो आप ने आबदीदा होकर फरमाया कि „हमें उस जगह लाया गया है जहाँ हमारा मदफन होगा हम चन्द ही रोज़ में इस जहान से सफर कर जाएंगे।„

मज्लिस में शैख़ अली सन्जरी भी हाज़िरे ख़िदमत थे उन्हें हुक्म हुआ कि मिसाल लिखो और शैख़ क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी को देदो ताकि वह देहली जाएं क्यूँकि उन्हें हम ने ख़िलाफत दी है और वही उन का मक़ाम है।

बाद अज़ाँ जब मिसाल मुकम्मल हुई तो मुझे दी। मैं अदब बजा लाया। हुक्म हुआ कि नज़दीक आओ। जब मैं नज़दीक

गया तो दस्तार और कुलाह मेरे सर पर रखी और शैख़ उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का असा दिया, ज़िरह पहनाई, क़ुरआन शरीफ और मुसल्ला भी इनायत किया और फरमाया कि पैग़म्बरे ख़ुदासल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से हमारे ख़्वाजगाने चिश्त को बतौर अमानत मिली है हम ने तुझे देकर रवाना किया है जिस तरह उन्हों ने हम तक पहुँचाई है तुम आगे पहुँचा देना नीज़ इस का हक़ अदा करना ताकि क़ेयामत के दिन हम ख़्वाजगान के रूबरू शर्मिन्दा न हों।

मैं आदाब बजा लाया और ख़्वाजा साहब ने दुगाना अदा किया फिर फरमाया जा! तुझे ख़ुदा को सोंपा और तुम्हें तुम्हारी मन्ज़िल तक इज़्ज़त से पहुँचाया। उस के बाद फरमाया कि „चन्द चीज़ें निहायत नफीस गौहर हैं अव्वल वह दुर्वेश जो अपने तईं दौलतमन्द ज़ाहिर करे, दूसरे वह भूका जो अपने तईं पेटभरा ज़ाहिर करे, तीसरे वह ग़मज़दा जो अपने तईं ख़ुश ज़ाहिर करे, चौथे वह जिस की किसी से दुश्मनी हो और वह उसे दोस्त दिखाई दे।

फिर फरमाया कि अहले महब्बत का मरतबा ऐसा है कि अगर उस से पूछें कि तू ने रात की नमाज़ अदा की थी तो कह दे कि मुझे फुर्सत नहीं हम मलकुल मौत के गिर्दागिर्द घूमते हैं जहाँ वह जाता है वहीं उसे पकड़ते हैं।

ख़्वाजा साहब यही फवाइद बयान कर रहे थे मैं ने चाहा कि क़दम बोसी करके रवाना हो जाऊँ। चूँकि आप रौशन ज़मीर थे इस लिए जान गए। फरमाया नज़दीक आ। मैं ने उठकर सर क़दमों पर रख दिया। सूरए फातिहा पढ़कर फरमाया कि ग़म न करो और मुर्दा न बनो। मैं आदाब बजा लाकर वापस आया जब देहली पहुँचा तो तमाम इमाम और असिफया मेरे पास आए। अभी देहली आए चालीस रोज़ ही गुज़रे थे कि ख़बर पहुँची कि ख़्वाजा साहब मेरे रवाना होने के बाद बीसवें रोज़ इस जहाने फानी से कूच फरमा गए।

उसी रात मुज़्तरिब दिल के साथ मुसल्ले पर बैठकर सो गया देखा कि ख़्वाजा साहब अर्श पर खड़े हैं मैं ने सर क़दमों पर रख दिया और अहवाल पूछे, फरमाया „अल्लाह तआला ने बख़्श दिया, और करोबियाँ और साकिनाने अर्श के पास जगह दी मैं यहीं रहूँगा।„ अल्हम्दु लिल्लाहि अला ज़ालिक

नाइबुन्नबी फिल हिन्द

नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते अक़्दस मजमूए कमालाते सोवरी व माअनवी है अगर

हुज़ूर एक तरफ साहिबे रिसालत हैं तो दूसरी तरफ साहिबे विलायत भी हैं चुनाँचे आप ने हसबे तलबो इस्तेअदाद मख़लूक़ को इन दोनों नेअमतों के फैज़ से सरफराज़ फरमाया। इल्मे शरीअत उलमाए ज़ाहिर के हिस्से में और इल्मे लदुन्नी का गंजे मख़फ़ी औलियाए किराम के दामन में आया। उलमाए ज़ाहिर ने दलाइलो बराहीन पेश करके तब्लीगे इस्लाम की ख़िदमत अन्जाम दी और औलियाए किराम ने अपने आअमालो किरदार और कश्फो करामात के ज़रीए खुदा का दीन लोगों तक पहुँचाया। उन हज़रात ने बमुशाहदए सदाक़त माअरिफते इलाही और दौलते इस्लाम से सरफराज़ फरमाया। हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ज़ाते अक़दस बफैज़े सैय्यिदुल कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हरदो उलूमे हमीदा की हामिल है आप ने हिन्दुस्तान में बफैज़े रिसालत वह तब्लीग़ी ख़िदमात अन्जाम दीं जिन की हुज़ूर सरवरे आलम ने हिजाज़े मुक़द्दस में मिसाल क़ाइम फरमाई थी। यह ख़िदमात यूँ तो अला क़दरे मरातिब अक्सर उलमा व सूफिया ने अन्जाम दी हैं मगर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ज़ाते अक़दस ने इस बाब में जो शानदार कारनामा आलमे इस्लसाम के सामने पेश किया है वह अपनी मिसाल खुद है और सरवरे आलम की सुन्नते तब्लीग़ की जीती जागती तस्वीर है।

ब क़ौले साहिबे „मआसिरुल किराम„

„औलिया अल्लाह में सब से पहले अक़्लीमे हिन्दुस्तान में सिलसिलए विलायत जारी करने और शरीअतो तरीक़त की तरवीजो इशाअत का शरफ आप ही को हासिल है यहाँ बाज़ उमूर में अरब से ज़ियादा दिक़्क़तें दरपेश थीं। वहाँ मुबल्लिग़ के पास बाशिन्दगाने मुल्क की बेतकल्लुफ आमदो रफ्त थी और वह मुबल्लिग़ के आदातो ख़साइले हमीदा से पूरी तरह वाक़िफ थे। वह जानते थे कि मुबल्लिग़ ऐय्यामे तिफ्ली से रास्तगुफ्तार, अमीनो नेक किरदार है नीज़ बाज़ का मुबल्लिग़ से मेल जोल, शनासाई या क़राबत थी अलावा अज़ीं हिजाज़ में वह ही ज़बान राइज थी जो मुबल्लिगे आअज़म की थी मगर हिन्दुस्तान में बरख़िलाफ इस के मुबल्लिग़ से मवानसत तो दरकिनार अहले हिन्द को मुबल्लिग़ के हम मज़हब लोगों तक से इतनी नफ्रत थी कि लोग मुसलमान की सूरत तक देखने के रवादार न थे परछाई तक से एहतेराज़ करते थे दूसरी मुश्किल यह थी कि मुबल्लिग़ की ज़बान फारसी थी और अहले हिन्द भाषा या मारवाड़ी वग़ैरह बोलते थे। चुनाँचे

ज़रूरते तब्लीग़ के पेशे नज़र दोनों के इख़्तेलात से एक नई ज़बान (जिस की तफ्सील आगे आएगी) वुजूद में आई मगर सरकारे ग़रीब नवाज़ ब इकरामे खुदावन्दी व ब फैज़ाने रिसालत उन मुश्किलात के क़िले को भी फतह करके नाइबुन्नबी फिल हिन्द और सुल्तानुल हिन्द का ख़िताब पाया।„ („मआसिरुल किराम„ दफ्तरे अव्वल स० 6–7बहवाला „मुईनुल अरवाह„)

जानशीने नबी दरीं आलम
ग़ौसुल मुर्सलाँ मुईनुद्दीन

महाफिले समाअ तब्लीग़ का मुअस्सिर ज़रीआ

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नावाज़ सिर्फ खुद ही यह ख़िदमत अन्जाम नहीं देते थे बलिक यह मुबारक काम आप अपने मुरीदीन व मुतवस्सिलीन से भी लेते थे। यह तब्लीग़ तल्वार के ज़रीए न थी बल्कि तसर्रुफाते रूहानी, अख़्लाक़े करीमाना व शफ्क़ते बुजुर्गाना के ज़रीए थी। महाफिले समाअ इस तब्लीग़ के लिए मुअस्सिर तरीन ज़रीआ थी वह महफिलें ग़ैर मानूस को मानूस और मौसीक़ी के दिलदादा बलिक इबादत तसव्वुर करने वाले ग़ाइबीन को हाज़िर करने में बहुत कामयाब साबित हुईं इस लिए जहाँतक तब्लीग़ का तअललुक़ है महफिले समाअ को इस्लाम की तब्लीग़ का बेहतरीन ज़रीआ कहा जाए तो ग़ैर मौजूँ न होगा।

क़ासिमे गंजीनए माअरिफत

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की ज़ाते अक़दस बुत परस्तों को सिर्फ खुदा परस्त ही नहीं बनाती थी बल्कि इल्मे माअरिफत का ख़ज़ाना अता फरमाकर उन्हें साहिबे माअरिफतो हक़शनास और खुदारसीदा भी बना देती थी। आप की तब्लीग़ के ज़ेरे असर ब ताअदादे कसीर लोग मुशर्रफ ब इस्लाम हुए और बहुत से लोग आरिफाने कामिल औलियाअल्लाह और साहिबे दिल हुए ब अल्फाज़े दीगर आप सिर्फ मुबल्लिगे शरीअत ही नहीं बल्कि क़ासिमे गंजीनए माअरिफतो हक़ीक़त भी हैं। आप की तब्लीग़ के ज़ेरे असर जहाँ एक बड़ी ताअदाद अहले इस्लाम की नज़र आती है वहीं आप के मुरीदीने सिलसिला याअनी अहले माअरिफत की लम्बी फिहरिस्त भी दिखाई देती है। हमारे इस क़ौल के शाहिद

„सैरुल अक़्ताब„ „मसालिकुस्सालिकीन„और „इक़्तिबासुल अनवार„ वग़ैरह कुतुबे तज़्किरा के बयानात हैं।

इस्लाम कैसे फैला

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के तसर्रुफ़ाते बातिनी, फ़ुयूज़े रूहानी, अख़लाके हमीदा और इस्लाम की सदाक़त के सबब हिन्दुस्तान में इस्लाम फैला न कि तल्वार के ज़ोर से। अगर यहाँ इस्लाम बज़ोरे शमशीर फैला होता तो बनिय, बक़्क़ाल, ब्रह्मण और अछूत अक़्वाम में से आज कोई भी अपने आबाई मज़्हब पर न होता बल्कि यह सब मुसलमान हो चुके होते क्यूँकि सब से ज़ियादा बुज़दिल और डरने वाली क़ौमें यही मानी गई हैं मगर इस के बर ख़िलाफ हम यह देखते हैं कि बहादर राजपूत और ठाकुर लाखों की ताअदाद में मुसलमान हैं उन बहादर और जाँबाज़ लोगों केलिए हरगिज़ यह नहीं कहा जासकता कि यह तलवार के ख़ौफ से मुसलमान होगए बल्कि ऐसा कहना उन बहादर अक़्वाम की तज़्लील व तौहीन है। हमारे इस बयान का एक ज़िन्दा सुबूत यह भी है कि बहादर प्रिथ्वीराज ने शहाबुद्दीन ग़ौरी के हाथों गिरफ्तार होकर भी दाअवते इस्लाम क़ुबूल न की और जान की सलामती के साथ अपना राजपाट लेने का भी ख़याल न किया बलिक अपनी जान देना गवारा कर लिया। मगर उसी राजा की औलाद ने बग़ैर तल्वार के डर और बिना किसी लालच के इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

पृथ्वीराज की औलाद

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने राजा प्रिथ्वीराज को जिस दाअवते इस्लाम से सरफराज़ फरमाया था वह अगरचे उस वक़्त राजा को नागवार हुई मगर वह आख़िरकार रंग लाकर रही और सतरहवीं पुश्त में प्रिथ्वीराज की औलाद में सब से पहले क़स्बए मंडराज(अलाक़ा अलवर)में राव जहाम के पिसर राव हाजी चाँद बअहदे फ़ीरोज़ शाह मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए बाद की पुश्तों में राव मुईनुद्दीन ख़ाँ वलद राव अवधू, राव दौलत ख़ाँ, राव फ़ीरोज़ ख़ाँ, राव उमर ख़ाँ,राव हबीब ख़ाँ, राव अजमेर ख़ाँ और राव यूसुफ अली ख़ाँ वग़ैरह भी इस्लाम की पनाह में आ गए उन में राव यूसुफ अली ख़ाँ ख़ान्दानी एअज़ाज़ की वजह से रियासते अलवर

के सरदारों में थे। (मिरआतुल अनसाब स0 182–183 बहवाला मुईनुल अरवाह)

उर्दू ज़बान की इब्तेदा

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हमराही और ख़ुद हज़रते ख़्वाजा की मादरी ज़बान फारसी थी, अजमेर की ज़बान मारवाड़ी थी और हिन्दुस्तान में दीगर मक़ामात पर भाषा (हिन्दुस्तान की एक क़दीम ज़बान) वग़ैरह बोली जाती थी। ऐसी हालत में तबलीग़ का काम बहुत मुश्किल था इस लिए कि तबलीग़ के लिए ज़रूरी है कि तबलीग़ करने वाले और जिन लोगों में तबलीग़ की जाए उन सब की ज़बान एक हो या दरमियान में कोई मुतरजिम या तरजुमान हो जो दोनों ज़बानें बेहतर तरीक़े पर जानता हो और दोनों के माफ़िज़्ज़मीर को एक दूसरे तक आसानी से देयानत दारी के साथ पहुँचा सके और वहाँ यह सुहूलत भी मफ़कूद थी। चुनाँचे उन सब के आपसी इख़्तेलात, मेल जोल और ज़बानों के तबादले से एक अलग ज़बान वुजूद में आई जो तबलीग़ी कामों के लिए बहुत ही मुफ़ीद और कारआमद साबित हुई। अब इस ज़बान के ज़रीए यहाँ के लोग आप की बातें कुछ कुछ समझ लेते थे और अपना माअरूज़ा भी आप की ख़िदमत में पेश कर लेते थे।

बाद अज़ाँ हज़रत अमीर ख़ुस्रौ रहमतुल्लाहि तआला अलैह के ज़माने तक भाषा और फारसी दोनों ज़बानें राइज रहीं आप की शाइरी में भी दोनों ज़बानें मौजूद हैं और बाज़ इबारात में मख़्लूत ज़बान याअनी उर्दू की इब्तिदा नज़र आती है। चुनाँचे बाहर से आए हुए फारसी बोलने वाले अहले मुल्क के नज़दीक यह क़ाबिले तस्लीम है कि ख़रीदो फरोख़्त और दीगर ज़रूरियाते ज़िन्दगी के लिए भी यही मख़्लूत ज़बान इस्तेअमाल की जाती थी गोया उर्दू के नक़्शे अव्वल के बाद यह नक़्शे दोम था। यही ज़बान फरोग़ पाकर शहंशाह जहाँगीर के ज़माने में लश्करी ज़रूरियात पूरा करने का ज़रीआ बन कर उर्दू कहलाई। चुनाँचे साबित हूआ कि उर्दू ज़बान के हक़ीक़ी बानी और मूजिदे अव्वल सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हैं यह अलग बात है कि इस ज़बान में कोई तसनीफ़ आप ने नहीं छोड़ी।

इज़्दवाजी ज़िन्दगी

आप की शादी

केयामे अजमेर शरीफ के ज़माने में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की दो शादियों के तज़्केरे कुतुबे तवारीख़ में मिलते हैं। आप इज़्दवाजी ज़िन्दगीं में किस उम्र में दाख़िल हुए इस सिलसिले में तज़्किरा निगारों का इख़्तिलाफ है। एक मशहूर रिवायत के मुताबिक़ पहली शादी आप ने 89 नवासी साल की उम्र में की और वह भी रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हिदायतो ताकीद पर। एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ आप ने पहला निकाह 589 हि० में किया। अगर सरकारे ख़्वाजा का साले विलादत 537 हि० तसलीम किया जाए तो 589 हि० में आप की उम्र बावन साल की होगी न कि नवासी साल की। इसी तरह एक रिवायत में आप का विसाल पहले निकाह के सत्ताइस साल बाद होने का ज़िक्र है। साले विसाल और उम्र के बारे में भी मुवर्रिख़ीन में बहुत इख़्तिलाफ है इस लिए आप के पहले और दूसरे निकाह का साल और उस वक़्त आप की उम्र के मुतअल्लिक़ यक़ीनी तौर पर कुछ कहना बहुत मुश्किल है अल्बत्ता यह बात तारीख़ी तौर पर साबित है कि आप ने दो निकाह किए एक बीवी का नाम अस्मतुल्लाह बीबी था और दूसरी का नाम बीबी अमतुल्लाह था। उन में कौन सी बीवी आप के निकाह में पहले आई इस के मुतअल्लिक़ भी मुवर्रिख़ीन के बयानात मुख़्तलिफ हैं। बीबी अस्मतुल्लाह हाकिमे अजमेर ख़्वाजा वजीहुद्दीन मश्हदी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की साहबज़ादी थीं कहा जाता है कि ख़्वाजा वजीहुद्दीन मश्हदी हज़रत ख़्वाजा के क़राबत दार और एक बाकमाल बुज़ुर्ग थे उन्हों ने ख़्वाब में सैय्यिदुना इमामे जाअफर सादिक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु को देखा कि आप फरमाते हैं

„वजीहुद्दीन! हुजुर रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मनशा है कि तुम अपनी दुख़्तरे नेक अख़्तर का अक़्द मुईनुद्दीन हसन से कर दो।„ चुनाँचे आप ने ख़्वाब से बेदार होकर अपनी साहबज़ादी का निकाह हज़रत ख़्वाजा से कर दिया।

बीबी अमतुल्लाह किसी हिन्दू राजा की लड़की थीं मुसलमानों ने एक क़िला फतह किया तो असीराने जंग में यह भी थीं उन्हें हज़रत ख़्वाजा के सुपुर्द कर दिया गया उन्हों ने बरज़ा व रग़बत इस्लाम कुबूल कर लिया तो सरकारे ख़्वाजा ने उन से निकाह कर लिया।

औलादे अमजाद

साहिबे „मुईनुल अरवाह„ के मुताबिक़ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू का पहला रिश्तए इज़्दवाज़ बीबी अमतुल्लाह के साथ 590 हि० में क़ाइम हुआ और इसबे रिवायते मौलाना शमसुद्दीन ताहिर उन के बत्न से तीन औलादें हज़रत ख़्वाजा फख़रुद्दीन अबुलख़ैर, हज़रत ख़्वाजा हुसामुद्दीन अबू सालेह और हज़रत बीबी हाफिज़ जमाल ताजुल मस्तूरात अलैहिमुर्रहमह तवल्लुद हुईं।

और ज़ौजए दोम बीबी अस्मतुल्लाह से सरकारे ख़्वाजा का निकाह 620 हि० में हुआ जिन के बत्न से एक साहबज़ादे हज़रत ख़्वाजा ज़ियाउद्दीन अबू सईद पैदा हुए।

हज़रत ख़्वाजा फख़रुद्दीन

हज़रत ख़्वाजा फख़रुद्दीन अबुलख़ैर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के ख़लफे अक्बर हैं। आप की विलादत 591 हि० में हुई।

आप ने मौज़ा मॉडल (जो अजमेर से तीन मन्ज़िल के फासले पर है) में बुदो बाश इख़्तियार फरमाई यहाँ ज़िराअत करके अक्ले हलाल से बसर औक़ात फरमाते थे आप आली मरतबत बुज़ुर्ग और साहिबे मक़ामे आलिया हैं उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी और कमालाते सोवरी व माअनवी से आरास्ता थे आप की तारीख़े शहादत 5 शाबान है मज़ार शरीफ क़स्बा सरवाड़ शरीफ में है। यह क़स्बा अजमेर शरीफ से तक़रीबन 34 मील के फासले पर अलाक़ा किशन गढ़ में वाक़ेअ है। आप के पाँच साहबज़ादे पैदा हुए उन में से एक शैख़ हुसामुद्दीन सोख़्ता हैं आप का उर्स मुबारक हर साल 3

शाअबान से 6 शाअबान तक सरवाड़ शरीफ में होता है।

हज़रत ख़्वाजा हुसामुद्दीन

हज़रत ख़्वाजा हुसामुद्दीन अबू सालेह सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के पिसरे दोम (फरज़न्दे औसत) हैं आप के मुतअल्लिक़ मुख़्तलिफ रिवायात हैं बाज़ कहते हैं कि आप बउम्र 45 साल और बाज़ के नज़दीक खुर्दसाली में ही अबदालों की जमाअत में शामिल हो गए। हालाँकि दूसरी रिवायत सही नहीं माअलूम होती इस लिए कि तवारीख़ में आप के सात साहबज़ादों का भी ज़िक्र मिलता है। आप का मज़ार एहातए दरगाहे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में लबे झालरा वाक़ेअ है।

हज़रत बीबी हाफिज़ जमाल

ताजुल मस्तूरात हज़रत बीबी हाफिज़ जमाल रहमतुल्लाहि तआला अलैहा का निकाह शैख़ रज़ियुद्दीन उर्फ अब्दुल्लाह बिन क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह (साकिन मौज़ा मन्डल अलाक़ा नागौर) के साथ हुआ आप के दो साहबज़ादे हुए मगर दोनों का बहालते तिफ्ली इन्तेक़ाल हो गया। आप का मज़ार सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के पाईं में ज़ियारत गाहे ख़लाईक़ है। आप का उर्स शरीफ बतारीख़ 17 रजब बमुक़ामे दरगाह शरीफ होता है और बीबी के चिल्ले पर लबे नूर चश्मा 19 रजब को सालाना मेला होता है अजमेर शरीफ में यह साल का मेला और बीबी हाफिज़ जमाल के मेले के नाम से मशहूर है आप बड़ी आबिदा व ज़ाहिदा थीं।

हज़रत ख़्वाजा ज़ियाउद्दीन

हज़रत ख़्वाजा ज़ियाउद्दीन अबू सईद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के फरज़न्दे खुर्द हैं उम्र शरीफ पचास साल की हुई आप के दो साहबज़ादे थे मज़ार शरीफ दरगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के एहाते में लबे झालरा साया घाट पर ज़ियारतगाहे ख़लाइक़ है आप का उर्स शरीफ 13 ज़िलहिज्जा को होता है।

साहिबे „मुईनुल औलिया„ ने लिखा है कि „आप के दोनों साहबज़ादों के नाम ख़्वाजा अहमद और ख़्वाजा वहीद हैं। उन का ज़िक्र „फवाइदुल फवाद„ में भी है।

„वाज़ेह हो कि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू ने सैय्यिद फख़रुद्दीन और बीबी हाफिज़ जमाल अलैहिमर्रहमह को ख़िलाफत भी अता फरमाई थी। बीबी हाफिज़ जमाल औरतों को शरई और रूहानी तालीम दिया करती थीं।„ (इक़्तेबास अज़ बज़्मे सूफिया)

इल्मी व इरफानी तसानीफ

सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू हाफिज़े क़ुर्आन और मुतबहहिर आलिमे दीन थे बाज़ रिवायात में उन के दर्से हदीस का भी ज़िक्र मिलता है। तज़्किरा निगारों ने उन की तसानीफ और शेअरी दीवान का भी ज़िक्र किया है।

सैय्यिद मीर अब्दुल वाहिद बिल्गिरामी क़ुद्दि स सिर्रुहुस्सामी अपनी मशहूर क़िताब „सब्ओ सनाबिल„ में तहरीर फरमाते हैं कि :

„ख़्वाजा मुईनूल हक़्क़ वद्दीन हसन सन्जरी इल्मे कामिल रखते थे आप की तसानीफ खुरासान के अत्राफो नवाह में बहुत मिलती हैं।„

लेकिन बाज़ अहले इल्म और अहले क़लम ने सिरे से ही उन की तसानीफ का इन्कार किया है।

सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान „बज़्मे औलिया„ में लिखते हैं कि :

„ख़्वाजा साहब ने कोई मुस्तक़िल तस्नीफ नहीं छोड़ी।„

इस की बुन्याद औलियाए किराम की शान में उन की अपनी रिवायती कज रवी है या लेदे के हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की जानिब मन्सूब यह क़ौल :

„शैख़ निज़ामुद्दीन मी फरमूद कि मन हेच किताबे न नविश्ता अम ज़ीरा कि शैख़ुल इस्लाम फरीदुद्दीन व शैख़ुल इस्लाम क़ुतबुद्दीन व अज़ ख़्वाजगाने चिश्त हेच शख़्से तस्नीफ न करदा अस्त।„

(ख़ैरुल मजालिस, मुरत्तबा हज़रत ख़्वाजा नसीरुद्दीन महमूद चराग़े देहली)

तरजमा :— शैख़ निज़ामुद्दीन फरमाते हैं कि मैं ने कोई किताब नही लिखी इस लिए कि शैख़ुल इस्लाम फरीदुद्दीन (गंजे शकर) और शैख़ुल इस्लाम क़ुतबुद्दीन (बख़्तियार काकी) और ख़्वाजगाने चिश्त में से किसी ने भी तस्नीफ नहीं फरमाई है।

पहली बात तो यह है कि अक्सर तज़्किरा निगारों ने आप की तसानीफ का ज़िक्र किया है जबकि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तसानीफ का इन्कार किसी क़लमकार ने नहीं किया है नीज़

बाज़ कुतुबे मतबूआ और मुतदावल भी हैं और बाज़ के क़लमी नुस्ख़े भी लाइब्रेरियों में महफ़ूज़ हैं इस तनाज़ुर में उस का पायए इस्तेनाद बजाए ख़ुद मुस्तनद है। ऐसी सूरत में अक्सर रिवायात को नज़र अन्दाज़ करके सिर्फ एक रिवायत की बुन्याद पर नादिर शाही फ़रमान जारी कर देना कहाँ की दानिशमन्दी है। और अगर हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की जानिब मन्सूब यह क़ौल मुस्तनद भी तसलीम कर लिया जाए तो इस में शैख़ुल इस्लाम फ़रीदुद्दीन और शैख़ुल इस्लाम क़ुतबुद्दीन की तरह हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती का ज़िक्र इस में मौजूद नहीं है जबकि ऐसी सूरत में सरे फ़िहरिस्त हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का ज़िक्र होना चाहिए था। और अगर „ख़्वाजगाने चिश्त„ में शामिल माना जाए तो क्या ख़्वाजगाने चिश्त में अरबो अजम के तमाम मशाइख़े चिश्तिया उन में शामिल हैं बसूरते इस्बात यह मुराद अक़्लन व नक़्लन बातिल है। तारीख़ो सेयर पर नज़र रखने वालों पर मख़्फ़ी नहीं कि बहुत से मशाइख़े चिश्त की तसानीफ मौजूद हैं, और बाज़ मुराद लेने की सूरत में हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की शुमूलियत इस क़ौल में क्या ज़रूरी है जब कि अरबाबे इल्मो दानिश उन की तसानीफ, मलफ़ूज़ात और मक्तूबात का मुसलसल ज़िक्र करते चले आ रहे हैं।

यह भी मुम्किन है कि हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया का यह इरशाद किसी ख़ास पसे मनज़र में सादिर हुआ हो याअनी मजिलस में किसी ख़ास मौज़ूअ के मस्अले पर गुफ़्तुगू चल रही हो तो उसी मौज़ूअ की जानिब इशारा करके फरमाया हो कि ख़्वाजगाने चिश्त ने इस मौज़ूअ पर कोई किताब नही छोड़ी या यह मुराद हो कि तसव्वुफ के नज़रयाती मबाहिस पर कोई मबसूत किताब नही छोड़ी जैसा कि प्रोफेसर निसार अहमद फारूकी अपने एक मज़मून में तहरीर करते हैं। :

> „इस का यह मतलब भी हो सकता है कि चिश्ती बुज़ुर्गों ने तसव्वुफ के नज़रयाती मबाहिस पर ऐसी कोई तसनीफ नहीं छोड़ी जैसी मिर्सादुल इबाद, कूतुल क़ुलूब,कश्फ़ुल महजूब, अत्तसर्रुफ, अवारिफ़ुल मआरिफ या आदाबुल मुरीदीन वग़ैरह हैं।„ (ज़ियाए वजीह, जनवरी, फ़रवरी 1993 ई० रामपुर)

यह भी हो सकता है कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की

तसानीफ हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के ज़माने तक मनस्सए शुहूद पर न आ सकी हों हज़रत के विसाल के बाद अवाम उन से मुतआरफ हुए हों इस लिए पुराने तज़्करों में आप की तसानीफ का ज़िक्र नहीं है। यह मुसल्लम होने के बावुजूद कि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुसन्निफ और शाइर थे। इस हक़ीक़त से भी इन्कार नहीं किया जासकता कि उन के सरमायए क़लम में इल्हाक़ात भी हुए हैं और कुछ चीज़ें उन की जानिब ग़लत मन्सूब भी हो गई हैं और नादान या शातिर मेहरबानों की यह कारस्तानी हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी और बाज़ दीगर बाकमाल उलमा व मशाइख़ के साथ भी रही है लेकिन तारीख़ में इस से भी बदतर अमल यह हो चुका है कि बाज़ लोगों ने अपनी ज़िन्दगी में ही दूसरों की किताबें अपनी जानिब मनसूब कर लीं जैसा कि मौलवी अशरफ अली थानवी ने ग़ुलाम अहमद क़ादयानी की एक किताब अपने नाम से शाएअ कर ली जिस पर क़ादियानियों ने ख़ूब वावैला मचाया और बाज़ नक़्क़ादों ने भी ख़ूब खरी खरी सुनाईं।

अब बहसो तहक़ीक़ को नज़र अन्दाज़ करते हुए पेशे ख़िदमत है सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तस्नीफ़ात व तालीफात का एक जायज़ा।

(1)—अनीसुल अरवाह

यह किताब हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू के मलफ़ूज़ात का मजमूआ है जिसे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अपने मुर्शिद के हुक्म से बग़दाद में जमा फरमाया था ख़ुद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ तहरीर फरमाते हैं :

> „जब हम सफर करते हुए दोबारा बग़दाद पहुँचे तो ख़्वाजा उस्मान हारवनी (मेरे पीरो मुर्शिद) ने फरमाया कि मैं कुछ अर्सा एअतिकाफ में बैठूँगा इस दौरान में तुम रोज़ाना मेरे पास आया करना और जो कुछ मुझ से सुनना उसे याद रखना„ चुनाँचे हज़रत के एअतेकाफ के दौरान मैं ने जो इरशादात ज़बाने मुबारक से सुने उन्हें क़लमबन्द कर लिए।„

इस से साफ वाज़ेह होता है कि बग़दाद की मस्जिद में हज़रत शैख़ उस्मान हारवनी दौराने एअतेकाफ अपने लबहाए मुबारक से तसव्वुफ के अस्रारो रुमूज़ बयान फरमाते और सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अपनी नोके क़लम से तहरीर की सदाबहार

लड़ियों में पिरोते जाते इस तरह इस्लाम की अख़लाक़ी और इरफ़ानी ताअलीमात का एक बेशबहा गुलदस्ता महफ़ूज़ होगया जिस की इत्रबेज़ियों से एक आलम महक रहा है और हमेशा महकता रहेगा। यह मजमूअए मलफ़ूज़ात अट्ठाइस मजालिस पर मुश्तमल है अस्ल नुस्ख़ा फ़ारसी ज़बान में है उर्दूदाँ तब्क़े में उस का उर्दू तरजमा हिर्ज़े जाँ बना हुआ है। „अनीसुल अरवाह„ का ज़िक्र दोनों बुज़ुर्गों के अक्सर तज़्केरों में मौजूद है और अक्सर बुज़ुर्गों का ख़याल है कि मलफ़ूज़ात का यह मजमूआ फ़िल वाक़ेअ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने मुरत्तब किया है।

(2)—कश्फ़ुल अस्रार

यह रिसाला भी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने तालिबाने माअरिफ़त के लिए मुरत्तब फ़रमाया। यह किताब फ़ारसी ज़बान में तसव्वुफ़ के मौज़ूअ पर है इस किताब का दूसरा नाम „मेअराजुल अनवार„ भी तज़्केरों में मिलता है ऐसा महसूस होता है कि यह किताब हिन्दुस्तान में आप की तशरीफ़ आवरी के बाद लिखी गई है क्यूँकि इस में बाज़ इस्तेलाहात का हिन्दी नाम भी दर्ज किया गया है। इस में चहार दम, हब्से दम और ज़िक्रे ख़फ़ी पर बहस की गई है।

(3)—कन्ज़ुल अस्रार

यह किताब भी फ़ारसी ज़बान में है बाज़ तज़्केरा निगारों की रिवायात के मुताबिक़ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अपने मुर्शिद ख़्वाजा उस्मान हारवनी के हुक्म की ताअमील में सुल्तान शमसुद्दीन अल्तमश की ताअलीमो तल्क़ीन के लिए लिखी थी यह किताब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के क़ेयामे देहली की यादगार है इस की तस्नीफ़ का ज़माना 611 हि० और 615 हि० के दरमियान का है इस किताब में तसव्वुफ़ और माअरिफ़तकी आअला ताअलीम दी गई है। क़ुरआन, अहादीस और बुज़ुर्गाने दीन के अहवालो अक़्वाल के मुताबिक़ ज़ाहिरी व बातिनी पाकीज़गी की तफ़्सील, मजाज़ी और हक़ीक़ी इबादात की तशरीह भी की गई है। इस में हज़रत शैख़ साअदी शीराज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से भी अहादीस नक़्ल की गई हैं और मौसूफ़ के अश्आर भी दर्ज किए गए हैं।

(4)—रिसालए आफ़ाक़ो अन्फ़ुस

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की यह किताब भी फ़ारसी ज़बान में है मगर अभी तक क़लमी ही है उस की इशाअत नहीं हो सकी है। इस का एक क़लमी नुस्ख़ा इण्डिया आफ़िस लाइब्रेरी लन्दन में मौजूद है। इस में भी तसव्वुफ़ के बाज़ अहम निकात पर बहस की गई है। (मुईनुल अरवाह)

(5)—रिसालए तसव्वुफ़ मन्ज़ूम

यह भी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तस्नीफ़ है इस का एक क़लमी नुस्ख़ाकुतुब ख़ानए आसिफ़ीया हैदराबाद दकन में मौजूद है इस किताब से आप की शाइरी और ताअलीमे तसव्वुफ़ पर काफ़ी रोशनी पड़ती है। (मुईनुल अरवाह)

(6)—हदीसुल मआरिफ़ (7)—रिसालए वुजूदिया

(8)—रिसाला दर कस्बे नफ़्स

यह तीनों किताबें भी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तस्नीफ़ात बताई जाती हैं लेकिन नायाब हैं।

शेअरो सुख़न

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू के शेअरी दीवान के सिलसिले में अहले इल्मो तहक़ीक़ का इख़्तिलाफ़ ज़रूर है लेकिन इतना तय शुदा है कि आप फ़ारसी ज़बान के एक बलन्द पाया शाइर थे। आप के अश्आर की ताअदाद सात आठ हज़ार के क़रीब बताई जाती है साहिबे „सैरुस्सालिकीन„ लिखते हैं।

> „हज़रते ईशाँ दर ज़ुमरए शोअराए नामवर अज़ मुग़तनमाते रोज़गार अन्द, व दर अस्नाफ़े शेअर क़सीदा व ग़ज़ल मरआ दारन्द मजमूअए कलामे इरफ़ाने आँ हस्त कि गंजीना बेश अज़ हफ़्त हश्त हज़ार बैत बूदा अज़ दस्ते दौराने नामेहरबाँ अज़ मियाँ रफ़्त व अन्दके कि अज़ाँ माँदा।„

याअनी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ज़माना की ख़ुश

बख़्तियों से नामवर शोअरा की सफ़ में हैं क़सीदा व ग़ज़ल के अस्नाफ़ में दस्तगाह रखते थे हज़रत का सूफ़ियाना कलाम सात आठ हज़ार अश्आर का बेशबहा ख़ज़ाना था मगर ज़माने की दस्त दराज़ियों से महफ़ूज़ न रह सका उस में से जो कुछ बचा वह बहुत मुख़्तसर है।

फारसी शोअरा के मशहूर तज़्केरे „आतिशकदा„ में मुसन्निफ़ लुत्फ़ अली बेग आज़र ने आप की यह दो रुबाइयाँ नक़्ल की हैं।:

आशिक़ हरदम फ़िक्रे रुख़े दोस्त कुनद
माअशूक़ करिश्मा कि नकोस्त कुनद
मा जुर्मो गुनह कुनेम व ऊ लुत्फ़ो अता
हर कस चीज़े कि लाइक़े ओस्त कुनद

ऐ बाजे नबी बर सरे तू ताजे नबी
ऐ दादा शहाँ ज़े तेग़े तू बाजे नबी
ऐ तू कि मेअराजे तू बाला तर शुद
यक क़ामते अहमदी ज़े मेअराजे नबी

दीवाने मुईन

यह दीवान सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की बलन्दपाया शाइरी का गिराँ क़दर नमूना है इस में आप की आअला और मेअयारी शाइरी के नुमाइन्दा क़त्आत, रुबाइयात और नाअतो हम्द पर मुश्तमल अश्आर हैं। इस दीवान से मुतअल्लिक़ अहले क़लम ने बहुत कुछ ख़ामा फरसाई की हैवाज़ ने इसे साहिबे „मआरिजुन नुबुव्वत„ मौलाना मुईनुद्दीन काशिफ़ी का दीवान बताया है लेकिन प्राफेसर अब्दुन मुग़नी ने अपनी किताब „प्री मुग़ल परसियन इन इण्डिया„ में इस को हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्तीअजमेरी का दीवान साबित किया है, ज़ैल की मशहूर रुबाई को डॉक्टर इक़्बाल ने भी ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की जानिब मन्सूब किया है।

शाह अस्त हुसैन बादशाहस्त हुसैन
दीन अस्त हुसैन दीं पनाहस्त हुसैन
सर दाद न दाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बिनाए ला इलाहस्त हुसैन

दर्जे ज़ैल शेर भी आम तौर पर हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तरफ़ मन्सूब किया जाता है जो हज़रत शैख़ अली हिज्वैरी

दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाहि तआला अलैह की मदह में है और लाहौर में हज़रत के आस्ताने पर आज भी मुनक़्क़श है।

गंज बख़्शे फ़ैज़े आलम मज़हरे नूरे ख़ुदा
नाक़िसाँ रा पीरे कामिल कामिलाँ रा रहनुमा

इन अश्आर के सिलसिले में अक्सर अहले नक़्द और अहले फ़िक्र की राय यही है कि यह हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती का कलाम है। इस कलाम का „दीवाने मुईन„ में होना इस दाअवे को तक़्वियत बख़्शता है कि यह दीवान मुईनुद्दीन चिश्ती ही का है।

अब रहा प्रोफेसर महमूद शेरवानी और प्रोफेसर इब्राहीम डार की तहक़ीक़ात का हासिल कि मौलाना मुईनुद्दीन काशिफ़ी की तसनीफ़ „मआरिजुन्नुबुव्वत„ में बहुत सी ऐसी ग़ज़लें हैं जो „दीवाने मुईन„ में मौजूद हैं इस लिए ज़ेरे बहस दीवान मौलाना मुईनुद्दीन काशिफ़ी का है।

यह बात ग़ौरतलब है लेकिन इस का जवाब यह है कि मुम्किन है मौलाना मुईनुद्दीन काशिफ़ी ने अपनी तहरीरों को मुबरहन करने या बरकत हासिल करने या क़ारेईन की दिलकशी केलिए हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का कलामे दिलनवाज़ जाबजा नक़्ल किया हो और नस्री किताबों में दूसरों के मुन्तख़ब अश्आर नक़्ल करना कोई माअयूब भी नहीं। ताहम यह एहतेमाल बाक़ी है कि मुरत्तिब को तख़ल्लुस मुईन देख कर ग़लत फ़हमी हुई हो और बिला तहक़ीक़ दोनों बुज़ुर्गों का कलाम जमा करके शाइर का नाम मुईनुद्दीन लिख दिया हो और बाद वालों केलिए यह समझना मुश्किल हो गया कि यह मुईनुद्दीन चिश्ती हैं या काशिफ़ी। लेकिन यह सिर्फ़ एहतेमाल है वरना यह मजमूआ बरसों से हज़रत मुईनुद्दीन चिश्ती ही के नाम से छप रहा है।

औलिया रा हस्त कुदरत अज़ इलाह
तीरे जस्ता बाज़ गरदानंद ज़ेराह

हैरत अंगेज़ करामात

यूँ तो किसी भी वली अल्लाह की सब से बड़ी करामत और विलायत की अहम अलामत उन की इस्तिक़ामत फ़िद्दीन हुआ करती है। तमाम फ़राइज़ो वाजिबात पर अमल करने के अलावा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की एक एक सुन्नत और तमाम मुस्तहब्बात पर दवामो इस्तिम्रार और मुवाज़बत के साथ अमल पैरा होना हर वली की ख़ासियत होती है। यहाँतक कि सैय्यिदुना सरकारे ग़ौसे आअज़म मुहिय्युद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी क़ुद्दि स सिर्रुहू का फ़रमान है कि „एक भी सुन्नत का तारिक वली नहीं होसकता„ मगर ग़ैर मुस्लिमों के दरमियान इस्लाम की हक़्क़ानियत साबित करने और उन्हें मुतअस्सिर करने केलिए अंबियाए किराम से मोअजेज़ात का ज़ुहूर हुआ और औलियाए किराम से ख़र्वारिक़े आदात और करामात का सुदूर हुआ।

चुनाँचे हुज़ूर ख़्वाजए ख़्वाजगाँ सुल्तानुल हिन्द अताए रसूल हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रदियल्लाहु तआला अन्हु से भी बेशुमार करामतें ज़ुहूर में आईं यही नहीं बल्कि आप का हर नफ़स इन्सानी ज़िन्दगी में इन्क़ेलाब लाने वाला और आप का हर तारे नज़र दुन्या से बुराइयों का ख़ातमा करने वाला और नेकियों को जनम देने वाला था याअनी आप की ज़ाते बाबरकात सरापा करामत है बाज़ मुहक़्क़िक़ीन के आअदादो शुमार के मुताबिक़ आप की करामतों की ताअदाद चार हज़ार छः सौ आठ 4608 है उन में से चन्द करामतों का ज़िक्र ज़ैल में किया जा रहा है।

ख़ानए काअबा का तवाफ़

क़ुतबुल अक़्ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी क़ुद्दि स सिर्रुहू फ़रमाते हैं कि आप (ख़्वाजा ग़रीब नवाज़) हर साल अजमेर से बक़ुव्वते रूहानी मक्कए मुअज़्ज़मा ख़ानए काअबा की ज़ियारत केलिए तशरीफ़ लेजाते थे। जब आप दर्जए कमाल को पहुँच गए तो आप बयक वक़्त अजमेरे मुक़द्दस के अपने हुजरे में भी होते और मक्कए मुअज़्ज़मा में हज्जो ज़ियारत भी अदा कर रहे होते थे। इस लिए कि जो हाजी साहिबान हज को जाते थे और आप को पहचानने वाले होते थे वह वापस आकर बताते थे कि हम ने हज़रत ख़्वाजा को मक्कए मुअज़्ज़मा में ख़ानए काअबा का तवाफ़ करते हुए देखा है। याअनी ऐय्यामे हज में हर रोज़ आप मक्कए मुअज़्ज़मा में भी होते और अजमेर शरीफ़ में भी। एक साथ दोनों जगह आप का मौजूद होना सिवाए रूहानी तसर्रुफ़ के और क्या हो सकता है।

मज़लूम नवाज़ी

एक मरतबा एक मुरीद ने आप की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होकर अपनी परीशानी का इज़्हार करते हुए कहा „वालिए शहर मुझे शहर से बाहर निकालना चाहता है, उस हाकिम ने ख़ल्क़े ख़ुदा को बहुत परीशान कर रखा है।„

आप ने पूछा „इस वक़्त वह ज़ालिम कहाँ है।?„

मुरीद ने अर्ज़ किया „अभी अभी सवार होकर शिकार खेलने गया है।„

आप ने इरशाद फ़रमाया „वह घोड़े से गिर कर मर गया और ख़ल्क़े ख़ुदा को उस से नजात मिल गई।„

मुरीद तहक़ीक़े हाल केलिए मैदान की तरफ़ गया तो उस ने देखा कि वालिए शहर वाक़ई घोड़े से गिर कर मर चुका है और ख़ल्क़े ख़ुदा उस की लाश को चारों तरफ़ से घेरे हुए है।

निगाहों से ओझल हो गए

एक दिन आप मुराक़बे में थे कि आलमे तन्ज़ीह आप के जिस्मे अतहर पर तारी हुआ और लोगों की निगाहों से ओझल होगए चालीस दिनों तक आप किसी को नज़र नही आए फिर

चालीस दिनों के बाद आप का पुरनूर सरापा लोगों की निगाहों और दिलों को नूरो सुरूर बख़्शने लगा।

मौत से रिहाई

एक शख़्स को हाकिमे वक़्त ने बेकुसूर फाँसी की सज़ा दिलवादी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ वुज़ू करने केलिए बैठे थे कि उस की माँ गिर्या व ज़ारी करती हुई आप की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अपने बेटे को बेकुसूर बताते हुए इन्साफ और रहम की भीक माँगने लगी। आप अपना असाए मुबारक लेकर उस औरत के साथ चल दिए। सूफ़ियों, ख़ादिमों और अहले शहर की एक जमाअत आप के साथ हो गई, मुल्ज़िम को फाँसी दी जाचुकी थी। आप मक़्तूल के क़रीब पहुँचे और असा से उस की तरफ इशारा करके फरमाया „ऐ मज़्लूम! अगर तू बेकुसूर क़त्ल किया गया है तो ख़ुदा के हुक्म से ज़िनदा होजा और दार से नीचे चला आ।„

आप का यह फरमाना था कि मक़्तूल ज़िन्दा हो गया और दार से उतर कर आप के क़दमों पर झुक गया और अपनी माँ के साथ अपने घर चला गया।

आग न जला सकी

शहरे बग़दाद शरीफ में सात आतिश परस्त मजूसी इबादत, रियाज़त और मुजाहदे में बहुत मशहूर थे छः छः महीने बाद एक लुक़्मा खाते थे इस लिए मख़लूक़ उन की मोअतक़िद थी। एक दिन आप की नज़रे मुबारक उन पर पड़ी तो उन पर इस क़दर हैबत तारी हुई कि बेद की तरह काँपने लगे और आप के क़दमों पर गिर गए।

आप ने फरमाया कि „तुम लोग आग क्यूँ पूजते हो हक़ तआला को क्यूँ नही पूजते कि तुम्हें तुम्हारी मन्ज़िले मक़्सूद मिल जाती।?„

उन्हों ने कहा „हम इस लिए आतिश परस्ती करते हैं कि क़ेयामत के दिन आग हमें न जलाए।„

आप ने फरमाया कि „आग की क्या मजाल कि ख़ालिक़ो मालिक की मरज़ी और उस के हुक्म के ख़िलाफ कुछ भी कर सके।„ यह फरमाकर आप ने अपनी पापोश(जुता) आग में डाल

दी। जलना तो दरकिनार उस में दाग़ तक न आया। यह करामत देख कर वह लोग सिदक़ दिल से ईमान ले आए और आप की सोहबतो ख़िदमत में रहकर औलियाए कामिलीन में से होगए।

भूके पर रहम

दमिश्क़ की मस्जिद में ख़्वाजए बुज़ुर्ग हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी, हज़रत औहदुद्दीन किरमानी, हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और बहुत से दुर्वेश तशरीफ फरमा थे। तय यह हुआ कि हर एक कोई न कोई करामत दिखाए। हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू ने अपने मुसल्ले के नीचे हाथ डाला और मुट्ठी भर सोने के टुकड़े निकाल कर एक दुर्वेश को दिए कि जाकर हल्वा लेआओ। तमाम लोगों को खिलाया जाए। हज़रत औहदुद्दीन किरमानी ने एक लकड़ी पर हाथ रखा तो वह सोना बन गई, हज़रत उस्मान हारवनी के बहुत इस्रार पर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने भी अपनी करामत दिखाई और वह यह कि आप ने कश्फ से माअलूम कर लिया कि इन तमाम दुर्वेशों में एक बहुत ज़ियादा भूके हैं लेकिन शर्मो हया की वजह से वह किसी से इस का इज़्हार नहीं कर रहे हैं। चुनाँचे आप ने अपने मुसल्ले के नीचे हाथ डाला और चार गर्म गर्म रोटियाँ निकाल कर उन की ख़िदमत में पेश कर दीं। इस पर ख़्वाजा आरिफ ने कहा कि „जब तक दुर्वेश में इतनी क़ुव्वत न हो उसे दुर्वेश न कहना चाहिए।

छह रोटियाँ

एक शख़्स ने हज़रत बाबा फारीदुद्दीन गंजे शकर की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि „हुज़ूर! मैं ने एक वक़्त ख़्वाब देखा था कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने मुझे छः रोटियाँ इनायत फरमाई हैं। उस वक़्त से आज तक तक़रीबन साठ साल का ज़माना हो गया मुझे वह वज़ीफा बिला नाग़ा पहुँच रहा है।„

हज़रत बाबा फारीदुद्दीन गंजे शकर ने फरमाया कि „वह ख़्वाब न था बल्कि हक़ तआला का करम था कि हज़रत ख़्वाजा ने तुझ पर मेहरबानी फरमाई ताकि तू मुब्तलाए इफ्लास न हो।„

माँ के शिकम से बच्चा बोल उठा

एक दिन ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी सुल्तान शमसुद्दीन अल्तमश के हाथ में हाथ डाले शाही क़िले की सैर फरमा रहे थे वहाँ बहुत से उमरा व अराकीने सल्तनत भी मौजूद थे कि इतने में एक बदकार हामिला औरत ने हाज़िर होकर बादशाह से फरयाद की कि „ख़ुदारा आप मेरा निकाह करा दीजिए मैं बड़े अज़ाब में हूँ।„

बादशाहे देहली ने कहा कि „तेरा निकाह किस के साथ करा दूँ और तू क्यूँ अज़ाब में है।?„

उस ने निहायत गुस्ताख़ाना अन्दाज़ में क़ुतुब साहब की तरफ इशारा करते हुए कहा „मेरे पेट में इन का हमल है।„

हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह शर्म से पसीना पसीना होगए। बादशाह और तमाम मुसाहिबीन पर सक्ता तारी हो गया। हज़रत क़ुतुब साहब ने फौरन अपने पीरो मुर्शिद हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तरफ तवज्जुह की। सरकारे ख़्वाजा उस वक़्त अजमेर शरीफ में रौनक़ अफ्रोज़ थे। क्या देखते हैं कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ बनफ्से नफ़ीस वहाँ मौजूद हैं और दीगर हाज़िरीन ने बढ़कर क़दम बोसी की।

सरकारे ख़्वाजा ने हज़रत क़ुतुब साहब से पूछा कि „तुम ने मुझे क्यूँ याद किया।„?

आप मुंह से कुछ न कह सके अलबत्ता आँखों से आँसू जारी होगए।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ फरते महब्बत से तड़प उठे और फरमाया „ऐ बदकार हामिला तू ख़ुद ही सुन!„ फिर औरत के शिकम की तरफ मुतवज्जेह होकर फरमाया „ऐ पेट के बच्चे तू ही बता! तेरी माँ क़ुतुब साहब को तेरा बाप बताती है क्या यह सच है।?„

पेट से बच्चे ने जवाब दिया „हुज़ूर! यह बिल्कुल ग़लत है यह औरत बड़ी मक्कार और फाहिशा है मैं हरगिज़ क़ुतुब साहब का बेटा नहीं हूँ।„

तब उस ज़ने फाहिशा ने एअतेराफ किया कि हज़रत क़ुतुब साहब के दुश्मनों ने इन पर इल्ज़ाम लगाने केलिए तैय्यार करके उसे भेजा था।

हाथी पत्थर का

अजमेर शरीफ में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के क़ेयाम के इब्तिदाई ऐय्याम में राजा पृथ्वीराज या उस के कारिन्दों ने एक दफ्आ फितरी शरारत का मुज़ाहरा करते हुए एक मस्त हाथी आप की तरफ दौड़ा दिया जूँ ही वह मस्त हाथी आप के क़रीब पहुँचा आप ने ज़मीन से थोड़ी सी ख़ाक उठाकर उस हाथी की तरफ फेंकी अल्लाह की क़ुदरत से वह हाथी पत्थर का हो गया।

काअबा दिखा दिया

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ जिस ज़माने में समरक़न्द में मुक़ीम थे एक दिन ख़्वाजा अबुल्लैस समरक़न्दी के मकान से मुत्तसिल मस्जिद पर एक शख़्स ने एअतेराज़ कर दिया कि इस मस्जिद के क़िब्ले की सम्त सहीह नहीं है। हज़रत ख़्वाजा भी इस मस्जिद में नमाज़ अदा फरमाते थे आप ने पहले तो उस शख़्स को समझाया कि इस की सम्त बिल्कुल सहीह है मगर वह इन्कार ही करता रहा और अपनी बात पर अड़ा रहा फिर यकायक सरकारे ख़्वाजा ने उस की गरदन पकड़ कर कहा देख सामने देख! उस ने देखा तो ख़ानए काअबा उस की निगाहों के सामने था जिस से उसे यक़ीन होगया कि इस मस्जिद की सम्ते क़िब्ला बिल्कुल दुरुस्त है।

दस्ते ग़ैब

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का लंगरख़ाना बहुत वसीअ था हज़ारहा लोग दोनों वक़्त उस से फैज़याब होते थे। लेकिन हैरत अंगेज़ बात यह थी कि हज़रत की आमदनी का कोई मुस्तक़िल ज़रीआ नहीं था क्यूँकि आप एक बोरिया नशीं फक़ीर थे बादशाह और उमरा से भी आप कुछ क़बूल नहीं फरमाते थे। तज़्किरा निगारों ने लिखा है कि उस शाहाना ख़र्च से उहदा बरआ होने केलिए अल्लाह तआला ने आप को दस्ते ग़ैब अता फरमाया था। चुनाँचे मतबख़ का दारोग़ा ज़रूरत के वक़्त हाज़िरे ख़िदमत होता और आप अपने मुसल्ले का गोशा उठा देते और फरमाते जितनी ज़रूरत हो उठा लेजाओ। उस के नीचे ग़ैबी ख़ज़ाने का अथाह

समन्दर होता था दारोग़ा हसबे ज़रूरत रक़म निकाल लेता और इस तरह पूरे एहतेमाम से लंगरख़ाना जारी रहता और कभी कोई कमी महसूस न होती।

देहली का बादशाह

एक रोज़ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ तशरीफ फरमा थेहज़रत शैख़ औहदुद्दीन किरमानी और हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी भी आप की ख़िदमत में हाज़िर थे शमसुद्दीन अल्तमश का बच्पना था वह आप के सामने से तीरो कमान लिए गुज़रा। आप ने शमसुद्दीन को देख कर फरमाया कि „यह लड़का देहली का बादशाह होगा।„

चुनाँचे हज़रत की पेशगोई के मुताबिक़ शमसुद्दीन अल्तमश देहली का बादशाह हुआ। यह बादशाह फक़ीर मनुष और दुर्वेश दोस्त था।

लायन्हल मसाइल का हल

हज़रत शैख़ फैज़ुल्लाह बलख़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का बयान है कि „मैं सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की ख़िदमत में हाज़िर हुआ मेरे हाज़िर होने का सबब यह था कि मैं चन्द मसाइल में उलझ गया था जो किसी तरह मेरी समझ में नहीं आ रहे थे मैं ने अपने सुवालात एक काग़ज़ पर लिखे और अलस्सुब्ह हाज़िरे ख़िदमत हुआ लेकिन उस वक़्त भी अहले अक़ीदत का काफ़ी हुजूम था मुझे अर्ज़े हाल करने का मौक़ा बिल्कुल न मिल सका। कुछ देर के बाद हज़रत ने मुझे क़रीब बुलाया और एक काग़ज़ मेरे हवाले करते हुए फरमाया „इस में आप के मसाइल का हल मौजूद है।„ रुख़्सत होने के बाद जब मैं ने वह काग़ज़ खोला तो वाक़ई मेरे सुवालात के जवाब उस में मौजूद थे जिन से मुझे पूरी तरह तसल्ली व तशफ्फी होगई।

बर्स से नजात मिल गई

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की बारगाह में एक बर्स ज़दा जागीरदार हाज़िर हुआ उस ने कहा मैं बहुत इलाज कर चुका हूँ लेकिन किसी तरह मुझे इस मुज़ी मरज़ से नजात नहीं मिलती। आप की निगाहे करम का तालिब हूँ।

आप ने एक आबख़ोरे में पानी मंगवाया उस से थोड़ा ख़ुद पिया और बचा हुआ पानी उस मरीज़ को पिला दिया। अल्लाह के फ़ज़्लो करम से उसे कामिल शिफा व सेहत हासिल हो गई।

लड़का हो गया

एक दौलत मन्द ख़ातून के सात लड़कियाँ पैदा होचुकी थीं उस का शौहर लड़कियों की कस्रत से सख़्त नाराज़ था और उस ने दूसरी शादी करने का इरादा कर लिया था। वह औरत बारगाहे ग़रीब नवाज़ में हाज़िर हुई और अर्ज़े हाल करते हुए कहा कि „ग़रीब नवाज़! मैं फिर हामला हूँ इस बार अल्लाह से मुझे लड़का दिलवाइए।„

हज़रत ने फरमाया „जा तेरा मक़सद पूरा होगा।„

चन्द माह के बाद उस के बत्न से निहायत ख़ूब सूरत लड़का पैदा हुआ।

ग़ैब की ख़बर

उदयपूर से एक शख़्स हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया कि „फ़ुलाँ जागीरदार ने हज़रत का पुराना कुर्ता मंगाया है। हज़रत ख़्वाजा ने फरमाया „उसे अब कुर्ते की ज़रूरत नहीं।„

जब वह शख़्स उदयपूर वापस आया तो माअलूम हुआ कि उस जागीरदार का इन्तेक़ाल हो चुका है।

मुर्दा दरख़्त सरसब्ज़ हो गए

अजमेर शरीफ के कुछ फासले पर एक बाग़ था। उस का मालिक हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि „बाग़ के दरख़्त बिल्कुल ख़ुश्क और बे बर्गो बार हो गए हैं।„

हज़रत ने मिट्टी के लोटे में पानी भर कर दिया और फरमाया „यह पानी उन दरख़्तों की जड़ों में डाल दो।„

वह पानी ख़ुश्क दरख़्तों की जड़ों में डाल दिया गया। जिस की बरकत से वह बाग़ सरसब्ज़ो शादाब और फलदार होगया।

दुश्मन दुर्वेश हो गया

एक शख़्स ख़न्जरे आबदार छुपा कर आप को शहीद करने के इरादे से आप के पास आया लेकिन उस के बुशरे से यह माअलूम होता था कि यह शख़्स आप का बड़ा अक़ीदत मन्द है। अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से आप को उस का फरेब माअलूम हो गया। आप ने मुस्कुरा कर फरमाया „अब तुम जिस इरादे से आए हो उस को पूरा क्यूँ नहीं करते।?„

आप की यह बात सुन कर वह शख़्स ख़ौफज़दा होगया और छुपा हुआ ख़न्जर निकाल कर आप के सामने फेंक दिया और आप के क़दमों में गिर कर मआफी का तलबगार हुआ। आप ने उसे मआफ कर दिया उस के बाद वह मुसलमान होकर आप के हाथ पर बैअत हो गया। बिलआख़िर वह शख़्स अल्लाह तआला की मेहरबानी और आप के तसर्रुफाते रूहानी से दुर्वेशे कामिल हो गया। उस ने 55 हज किए यहाँतक कि मक्कए मुअज़्ज़मा में ही उस का इन्तेक़ाल हुआ और वहीं दफ्न किया गया।

गाय ज़िन्दा हो गई

अनासागर के क़रीब एक ग़रीब औरत रहा करती थी उस के पास एक गाय थी जिस का दूध बेच कर वह अपना गुज़ारा करती थी इत्तेफाक़ से वह गाय मर गई औरत को बहुत अफसोस हुआ और वह दहाड़ें मार मार कर रोने लगी। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से उस की अश्क बारी और आहो ज़ारी न देखी गई और अल्लाह तआला से दुआ की। आप की दुआ की बरकत से और अपने फज़्लो करम से अल्लाह तआला ने उस गाय को ज़िन्दा कर दिया।

बदकार, वली हो गया

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ जब बग़दाद शरीफ में क़ेयाम पज़ीर थे तो वहाँ यह ख़बर मशहूर थी कि जो शख़्स आप की ख़िदमते बाबरकत में तीन दिन क़ेयाम कर लेता है वह वलिय्ये कामिल होजाता है। चुनाँचे एक दिन एक शख़्स जो बदकार और फासिक़ था आप की ख़िदमते सरापा हिदायत में आया। आप ने

उसे उस के गुनाहों से तौबा कराई उस के बाद वह शख़्स तीन दिन तक आप की ख़िदमत में रहा और आप के साथ नमाज़े पंजगाना अदा करता रहा बिल आख़िर आप के फ़ुयूज़े बातिनी से तीसरे दिन वह वलिय्ये कामिल हो गया।

बछिया ने दूध दिया

एक मरतबा आप अपने चन्द साथियों के साथ अनासागर के किनारे सैर कर रहे थे। कि उधर से एक चरवाहा छोटी छोटी बछियों को लिए हुए निकला। आप ने फरमाया कि „भाई मुझे थोड़ा दूध पिलादो।„

उस ने हंस कर कहा „बाबा अभी यह बच्चे हैं इन में दूध कहाँ से आया।„

आप ने फरमाया „नहीं, जा तू दूध दूह ले।„ उस ने मज़ाक़ समझा।

आप ने एक बछिया की तरफ इशारा करके फरमाया „जा उस का दूध दूह ले।„

उस ने क़रीब जाकर देखा तो हैरान रह गया कि अभी इस के थन बराए नाम थे अब दूध भर जाने की वजह से उस के थन काफी बड़े होगए थे। उस चरवाहे ने दूध दूहना शुरूअ किया उस ने इस क़दर दूध दूहा कि आप ने भी नोश फरमाया और आप के चालीस साथी भी शिकम सैर हो गए।

कुछ करामात का खुलासा

करामात के बाब में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की चन्द करामतों का ज़िक्र किया गया और पिछले अबवाब में भी ज़िमनन कई करामतें बित्तफसील बयान की जाचुकी हैं मिन व अन उन को दुहराना यहाँ मुनासिब नहीं उन का खुलासा यहाँ दर्ज किया जाता है तफसील केलिए उसी हवाले से गुज़श्ता अबवाब में मुलाहज़ा फरमा लें।

(1)–सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की सैरो सियाहत के दौरान सब्ज़वार का बदकिरदार हाकिम यादगार मुहम्मद आप के हाथ पर ताइब हुआ और आप की एक निगाहे करम ने उस की ज़िन्दगी में इन्क़ेलाब पैदा कर दिया नतीजे के तौर पर वह विलायत के अज़ीम मन्सब पर फाइज़ हो गया।

(2)–एक मुतकब्बिर और ख़ुदसर फलसफी मौलाना ज़ियाउद्दीन क़े दिल से तमाम फलसफियाना ख़यालात आप की निगाहे फैज़ असर से महव हो गए और आप की ग़ुलामी में आकर दुन्या व उक़्बा में सुर्ख़ रूई हासिल करली।

(3)–अजमेर में राजा के ऊँट बैठ गए तो ऐसे बैठे कि उठने की ताक़त से यक्सर महरूम होगए जब तक सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने न चाहा वह ज़मीन से हिल भी न सके।

(4)–महंत रामदेव पर आप की निगाहे करमो करामत ने यह असर किया कि वह अपना आबाई धर्म तर्क करके आनन फानन असीरे हल्क़ए इस्लाम हो गया।

(5)–जयपाल जोगी और उस की तमाम साहिराना क़ुव्वतें सरकारे ख़्वाजा के सामने सरनिगूँ हो गईं।

(6)–पृथ्वीराज के ज़वाल की आप ने जो पेशगोई फरमाई थी वह हर्फ ब हर्फ पूरी हुई।

(7)–आप के हुक्म से एक प्याले में अनासागर ही नहीं बल्कि तमाम तालाबों, कुंवों और चश्मों का पानी यहाँतक कि औरतों और जानवरों का दूध सिमटकर आ गया। जब ख़ल्क़े ख़ुदा परीशान हुई तो आप ने सारा पानी उस के मक़ामात तक लौटा दिया।

(8)–जब हुनूद के मजमे ने आप को अनासागर के किनारे से उठाने केलिए हम्ला किया तो आप ने एक मुश्त ख़ाक उठाकर उस पर आयतल कुर्सी दम करके उन की तरफ फेंक दी जिस पर वह ख़ाक पड़ी उस का जिस्म ख़ुश्क होगया।

बादे विसाल तसर्रुफाते रूहानी

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की हयाते ज़ाहिरी का लम्हा लम्हा करामातो ख़वारिक़े आदात का आइनादार तो था ही आप के विसाल से लेकर आज तक तक़रीबन आठ सदियाँ गुज़र जाने के बाद भी आप के मज़ारे पाक दरे अक़दस और नामे मुबारक से बेशुमार करामतों का ज़ुहूर हुआ और आए दिन नित नए वाक़ेआत रूनुमा होते ही रहते हैं। विसाले मुबारक के बाद तसर्रुफाते रूहानी के चन्द वाक़ेआत ज़ैल में दर्ज किए जारहे हैं।

शाने बन्दा नवाज़ी

„ज़ियाउल मक्तूब„ में है कि „एक ज़मीनदार दौलतो सरवत ओर शानो शौकत का मालिक था। अंग्रेज़ी दौरे हुकूमत जब शुरूअ हुआ तो उन की ज़मीनदारी वग़ैरह ज़ब्त कर ली गई। उस के लिए वह तमाम कोशिशें और तदबीरें वह कर चुके थे मगर अपने मक़सद में वह नाकाम ही रहे। हिरमाँ नसीबी से मायूस होकर वह आस्तानए ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ पर पहुँच गए। पूरी ज़िन्दगी ऐशो इश्रत में गुज़री थी मिज़ाज नाज़ुक था मगर हिम्मत मुस्तक़िल थी यह समझकर कि ग़रीब नवाज़ की बन्दानवाज़ी मशहूर है यहाँ से कोई महरूम नहीं जाता उस ने यह अहद कर लिया कि जब तक तमाम आराज़ी और कुल जायदाद वापस नहीं मिल जाती इस दरे पाक से नहीं जाएगा और न कुछ खाए पिएगा। तीन रोज़ तक बे आबोदाना बाबे इजाबत पर खड़े खड़े गुज़ार दिए। आशिक़ों की नाज़ बर्दारीकरने वाले, ख़ुद्दाम के हाजतरवा बन्दानवाज़ ने अपने मचले हुए आर्ज़ूमन्द को धुन का पक्का और बात का पूरा पाकर

अपने जमाले जहाँआरा की एक झलक दिखलादी और अपनी शाने ग़रीब नवाज़ी का मुज़ाहरा फरमाते हुए दरयाफ्त फरमाया कि „तू क्या चाहता है!?„

उन्हों ने अपने दिल की ख़्वाहिश बयान कर दी।

इरशाद हुआ „जा जो ज़बान से कहेगा पूरा होगा।„ याअनी उस बेकराँ बख़्शिश ने उन ज़मीनदार साहब को मुसतजाबुद्दअवात बना दिया। आलमे मलकूत और लौहे महफ़ूज़ उन पर मुन्कशिफ़ हो गया। उन का ज़र्फ़ इतना वसीअ और कुशादा न था कि इस दौलते गिराँबार का मुतहम्मिल हो सकता फौरन मजज़ूब हो गए और सहरानवर्दी और बादिया पैमाई इख़्तियार कर ली।

उधर मौलवी फ़ज़्ले रसूल साहब, साहबे „ज़ियाउल मक्तूब„ के पीरो मुर्शिद आलमे जज़्ब में दश्त नवर्दी को अपना शेआर किए हुए थे किसी सहरा में दोनों बुज़ुर्गों की मुलाक़ात हुई बक़ौले शख़्से। :

खूब गुज़रेगी अगर मिल बैठेंगे दीवाने दो

उन ज़मीनदार साहब ने जो ख़्वाजा की चश्मे करम से मालामाल हो चुके थे फरमाया कि „मौलवी! मैं एक इस्मे आअज़म बताता हूँ जो हमेशा हर मक़सद की कामयाबी केलिए अक्सीर का काम देगा। इस को आप याद रखें और जिसे चाहें इजाज़त से सरफराज़ फरमाएं। वह इस्मे आअज़म यह है। :

„इलाही बहुरमते ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती मुश्किल कुशा।„

उस के बाद साहबे „ज़ियाउल मक्तूब„ नवाब मौलाना ज़ियाउद्दीन ख़ाँ साहब फरमाते हैं कि „उस इस्मे आअज़म की इजाज़त हज़रत पीरो मुर्शिद ने अक्सर अकाबिर को अता फरमाई और मुझे भी अपने करमे ख़ास से अता फरमाई।„

हज़रत गंजे शकर की इस्लाह

हज़रत बाबा फरीदुद्दीन गंजे शकर कुद्दि स सिर्रुहू फरमाते हैं कि „एक मरतबा मैं सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के रौज़ए पाक में मोअतकिफ रहा ज़िलहिज्जा का महीना था अरफा की रात थी रौज़ए मुबारक के नज़्दीक मैं ने नमाज़ अदा की और वहीं क़ुरआने पाक की तिलावत में मशग़ूल हो गया थोड़ी रात गुज़री थी कि मैं ने पन्दरह सीपारे ख़त्म कर लिए सूरए कहफ या सूरए मरयम में पढ़ने में एक हर्फ मुझ से छूट गया था सरकारे

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की क़ब्र शरीफ से आवाज़ आई कि „बेटे फरीदुद्दीन! फुलाँ सूरह की फुलाँ आयत का यह हर्फ तुम से पढ़ने में छूट गया है उसे दुहरा लो।„

बाबा फरीदुद्दीन गंजे शकर फरमाते हैं कि जब मैं ने उस छूटे हुए हर्फ को दुहरा लिया तो फिर से आवाज़ आई कि माशाअल्लाह बहुत उम्दा क़ुरआन पढ़ता है ख़लफुर्रशीद ऐसा ही किया करते हैं।

बाबा फरीदुद्दीन गंजे शकर फरमाते हैं कि जब मैं ने क़ुरआने मजीद की तिलावत मुकम्मल कर ली तो सरकारे ग़रीब नवाज़ की जानिब मुतवज्जेह हुआ और अर्ज़ की कि „हुज़ूर मुझे पता नहीं कि मैं किस गरोह से हूँ।„

क़ब्र शरीफ से फिर आवाज़ आई कि „मौलाना! जो शख़्स यह नमाज़ अदा करता है वह बख़्शे हुओं में से है।„ यह सुन कर आप बेहद मसरूर हुए और एक मुद्दत क़ेयाम और बेशुमार रूहानी नेअमतें हासिल करने के बाद वापस हुए।

हज़रत गंजे शकर की खुसूसी नमाज़

हज़रत बाबा फरीदुद्दीन गंजे शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैह को जिस नमाज़ के पढ़ने की बुन्याद पर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु ने मग़फिरत का मुज़्दा सुनाया था वह नमाज़ 9 ज़िलहिज्जा की रात को पढ़ी जाती है सिर्फ दो रक्अतें होती हैं। हर रक्अत में सूरए फातिहा के बाद आयतल कुर्सी 100–100 बार पढ़ी जाती है। (सब रंग डायजेस्ट देहली ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ नम्बर स0 146, अगस्त 1975 ई0)

सलाम का जवाब

मशहूर है कि इल्मे ज़ाहिर के दिलदादा शहंशाहे हिन्द औरंगज़ेब आलमगीर जब अजमेर शरीफ हाज़िर हुए तो उन के दिल में एक ख़्याल पैदा हुआ कि मैं शरअ शरीफ के मुताबिक़ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत में सलाम पेश करूँगा जैसा कि बताया जाता है कि हज़रत ख़्वाजा अपनी क़ब्र शरीफ में ज़िन्दा हैं। तो अगर आप वाक़ई ज़िन्दा हैं तो मेरे सलाम का जवाब आना चाहिए कि सलाम करना सुन्नत और जवाब देना वाजिब है अगर जवाब न आया तो मैं दरगाह शरीफ को शहीद करा दूँगा।

चुनाँचे जब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के रौज़ए मुबारक पर

वह हाज़िर हुए तो बलन्द आवाज़ से सलामे मस्नून पेश किया क़ब्र शरीफ से आवाज़ आई „वाअलैकुम अस्सलाम आलमगीर हुज्जती।„

आलमगीर इस वाक़ेअे से बहुत मुतअस्सिर हुए और उन्हों ने हज़रत ख़्वाजा की रूहानी बुज़ुर्गी तस्लीम की। (मुईनुल अरवाह)

शहंशाह जहाँगीर की मन्नत

शहंशाहे हिन्द नूरुद्दीन जहाँगीर एक मरतबा शिकार केलिए एक नील गाय के पीछे दौड़ते हुए काफी दूर निकल गए। नील गाय भी अपनी जान बचाने केलिए पूरी तेज़ रफ्तारी से भाग रही थी। सुल्तान जहाँगीर थक हार कर और मायूस होकर बैठ गए कि अब यह नील गाय शिकार न हो सकेगी। अपने उमरा व वुज़रा के सामने नाकामी की शर्मिन्दगी से बचने केलिए सुल्तान जहाँगीर दिल ही दिल में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तरफ मुतवज्जेह हुए और अर्ज़ किया „सरकार! अगर आप के करम से नील गाय को शिकार करने में कामयाब होगया तो आस्तानए आलिया पर लाकर ज़िब्ह करके आप के ख़ुद्दाम में तक़्सीम कर दूँगा।

सुल्तान जहाँगीर ने यह इल्तेजा करने के बाद जब नील गाय की जानिब घोड़ा दौड़ाया तो नील गाय बजाए भागने के एक जगह पर खड़ी होगई सुल्तान ने निहायत आसानी से उस नील गाय का शिकार कर लिया और सरकारे ग़रीब नवाज़ के आस्तानए पाक पर लाकर उसे ज़िब्ह करके और उस का गोश्त पकवाकर आस्ताने के ख़ुद्दाम और फ़ुक़रा में तक़्सीम कर दिया।

आप की नज़्र

मज़्कूरा वाक़ेअे के दो तीन दिन बाद सुल्तान जहाँगीर को फिर एक नील गाय नज़र आई जहाँगीर ने हर चन्द चाहा कि यह किसी जगह ठहरे तो मैं बन्दूक़ मारूँ लेकिन ऐसा कोई मौक़ा उस ने नहीं दिया और उस के पीछे बन्दूक़ लिए शहंशाह शाम तक फिरता रहा यहाँ तक कि आफताब ग़ुरूब हो गया। नाउम्मीदी के आलम में जहाँगीर की ज़बान पर फौरन यह जुम्ला आ गया कि „या ख़्वाजा! यह नील गाय भी आप की नज़्र है।„

यह कहना था कि नील गाय फौरन उसी जगह बैठ गई जहाँ वह थी। जहाँगीर ने बन्दूक़ चलाकर उस का भी शिकार कर लिया और फ़क़ीरों को खिलाए जाने का हुक्म दे दिया।

मज़्कूरा दोनों वाक़ेआत में नील गाय का रुक जाना इस बात की तरफ एक लतीफ इशारा है कि नील गाय ने ज़बाने हाल से बता दिया कि सुल्तान जहाँगीर तुम मुझे शिकार नहीं कर सके बल्कि मैं ने अपने आप को सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के नाम और उन की मरज़ी पर क़ुरबान कर दिया। (तुज़्के जहाँगीरी बहवाला मुईनुल अरवाह)

मुसाफ़हा केलिए हाथ बाहर आ गया

हज़रत मौलाना जलालुद्दीन बुख़ारी मख़्दूमे जहानियाँ जहाँगश्त रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपने सफरनामे में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के आस्तानए पाक की हाज़िरी के तज़्केरे में लिखा है कि :

„अजमेर की सरज़मीन में सिलसिलए चिश्तिया के सरगरोह हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती आसूदएं ख़ाक हैं आप की क़ब्र शरीफ के पाईं अनार का एक दरख़्त था जिस की यह ख़ासियत थी कि जो शख़्स सात अनार खालेता वह वली होजाता और जिस ने औलाद की आरज़ू के साथ खाया हक़ तआला ने उस को फरज़न्द अता किया हिन्दुस्तान में आप ही के क़दम से इस्लाम आया । फ़क़ीर जब आप के मज़ार पर हाज़िर हुआ तो अर्ज़ किया अस्सलामो अलैकुम या ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती! अपना दस्ते मुबारक दीजिए दस्त बोसी करूँ।„ उसी वक़्त मज़ारे मुबारक से एक नूरानी हाथ बरआमद हुआ और सलाम का जवाब भी मिला मैं ने मुसाफ़हा और दस्त बोसी का शरफ हासिल किया।„

पान की ग्लोरी इनायत फरमाई

सैय्यिदुल औलिया हज़रत मीर सैय्यिद मुहम्मद तिर्मिज़ी सुम्मा कालपवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह क़ादरी सिलसिले के मशहूर बुज़ुर्ग हैं जिन का मज़ार कालपी शरीफ ज़िला जालौन (यू. पी.) में है। अल्लामा मीर ग़ुलाम अली आज़ाद चिश्ती बिल्गिरामी हज़रत सैय्यिद साहब की हाज़िरीये अजमेर के तज़्केरे में लिखते हैं। :

„आप का माअमूल था कि हर साल सुल्तानुल हिन्द सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे पुरअनवार की ज़ियारत के लिए अजमेर शरीफ हाज़िर

होते थे एक बार आप आठ रोज़ तक अजमेर शरीफ में मुक़ीम रहे। एक रोज़ आप मज़ारे मुबारक के रूबरू मुराक़बे में थे कि यकायक कैफियत तारी हुई और आप पर ग़ुनूदगी छा गई उसी आलम में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ तशरीफ ले आए और पान की एक ग्लोरी आप को इनायत फरमाई। थोड़ी देर बाद जब यह कैफियत जाती रही तो आप ने देखा कि पान की ग्लोरी आप के हाथ में मौजूद थी। बारगाहे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में आप की महबूबियत व मक़्बूलियत का यह आलम था कि जिस जगह भी आप चाहते रूहानी मुलाक़ात से मुशर्रफ हो जाते और फुयूज़ो बरकात से हमकिनार होजाते।

एक वहाबी दरबारे ख़्वाजा में

आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरेलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने एक वाक़ेआ बयान फरमाया है जिस को आप के मलफ़ूज़ात में हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द अलैहि रहमह ने नक़्ल फरमाया है। :

„भागलपुर (बिहार) से एक साहब हर साल अजमेर शरीफ हाज़िर हुआ करते थे उन की एक वहाबी रईस से मुलाक़ात थी उस ने कहा मियाँ हर साल कहाँ जाते हो बेकार इतना रुप्या सर्फ करते हो। उन्हों ने कहा चलो इन्साफ की आँखों से खुद देख लो फिर तुम को इख़्तियार है।

ख़ैर एक साल वह साथ आया देखा कि एक फक़ीर सोंटा लिए हुए रौज़ा शरीफ का तवाफ कर रहा है और यह सदा लगा रहा है „ख़्वाजा पाँच रुप्या लूँगा, एक घंटे के अन्दर लूँगा और एक ही शख़्स से लूँगा।„

जब उस वहाबी को ख़याल आया कि अब बहुत वक़्त गुज़र गया एक घंटा हो गया होगा और अबतक उसे किसी ने कुछ न दिया, जेब से पाँच रुप्ये निकाल कर उन के हाथ पर रखे और कहा लो मियाँ! तुम ख़्वाजा से माँग रहे हो भला ख़्वाजा क्या देंगे लो हम देते हैं। फक़ीर ने वह रुप्ये तो जेब में रखे और चक्कर लगाकर ज़ोर से कहा „ख़्वाजा तोरे बलिहारी जाऊँ दिलवाए भी तो कैसे ख़बीस मुन्किर से।„(अल मलफूज़ मतबूआ मेरठ स० 47)

बाज़ पीर भाई, खुलफा और खुद्दाम

हज़रत शैख़ मुहम्मद तुर्क नारनोलवी

आप का वतन तुर्किस्तान है वतन से तर्के सुकूनत करके आप ने नारनोल (अलाक़ा पटियाला) में क़ेयाम फरमाया आप ने अपनी ज़िन्दगी में किसी को मुरीद नहीं किया। आप नारनोल में हौज़ के किनारे रहा करते थे। जुमा के दिन जब मुसलमान जामे मस्जिद में जमा थे हुनूद नंगी तल्वारें लिए आ पहुँचे और उन पर हम्ला कर दिया आप उस हंगामे में शहीद होगए। (गुल्ज़ारे अब्रार)

आप हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहुल अज़ीज़ के मुरीदो ख़लीफा हैं मगर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से भी ख़िलाफत का ख़िर्क़ा पाया। शहादत 642 हि० में हुई। मज़ार शरीफ नारनोल में ज़ियारतगाहे ख़लाइक़ है।

हज़रत ख़्वाजा फख़्रुद्दीन गुर्देज़ी

हज़रत ख़्वाजा फख़्रुद्दीन गुर्देज़ी इब्ने ख़्वाजा अहमद की विलादत 544हि० में गुर्देज़(अलाक़ा काबुल मुत्तसिल ज़िला क़ंधार अफगानिस्तान) में हुई। आप सादाते हुसैनी से हैं। तेरह वास्तों से आप का सिलसिलए नसब हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से मिलता है। हसबे तफ्सीलाते गुज़श्ता आप ने 582 हि० में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हमराह अस्फहान का सफर किया।

„मूनिसुल अरवाह„ में है कि हज़रत क़ुतबुद्दीन अवशी फरमाते हैं।

„बीस बरस मैं आप (ख़्वाजा ग़रीब नवाज़) की सोहबत में रहा

में ने कभी नहीं देखा कि आप ने किसी को अपने पास (क़रीब तर) आने दिया हो। जब बावरचीख़ाने में कुछ न होता ख़ादिम आकर अर्ज़ करता आप मुसल्ला उठाकर फरमाते आज के ख़र्च के बक़दर लेले। ख़ादिम उसी क़दर लेलेता। इसी तरह बरसों और महीनों दुर्वेशों का वज़ीफ़ा पहुँचता रहता।,,

कहा जाता है कि लंगरख़ाना की ख़िदमत ख़्वाजा फख़्रुद्दीन गुर्देज़ी ही के सुपुर्द थी। „मूनिसुल अरवाह,, में ख़ादिमे मतबख़ का नाम भी फख़्रुद्दीन ही लिखा है। किताब „मौलूदे अताए रसूल,, में बहवालाए किताब „गुलशन,, मरक़ूम है कि आप ग़रीब नवाज़ के पीर भाई हैं। साहिबे „गुल्ज़ारे अब्रार,, आप को ख़ुलफ़ाए ग़रीब नवाज़ के ज़ुमरे में शुमार करते हैं। वह तहरीर करते हैं कि :

„आप (ख़्वाजा फख़्रुद्दीन) को पीर की ख़िदमतगारी और दरबानी में दर्जए ग़ुलामी हासिल था। आप पीर की नासिहाना गुफ़्तुगू को लिख लिया करते थे। अपनी पूरी ज़िन्दगी इबादतो रियाज़त केलिए वक़्फ़ कर रखी थी।,,

जब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने निकाहे सानी किया तो आप से भी सुन्नते निकाह की अदाइगी केलिए फरमाया। आप ने अर्ज़ किया „इस ज़ईफ़ी में क्या शादी करूँ ख़ुदा माअलूम औलाद कैसी हो। इस का बार मेरे काँधों पर रहेगा।,,

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इरशाद फरमाया। „तुम इस का ख़याल न करो तुम्हारी औलाद में जो बुरे होंगे उन को हम संभालेंगे।,, चुनाँचे आप ने भी 76 साल की उम्र में सुन्नते निकाह अदा फरमाई और आप के तीन साहबज़ादे मौलाना मस्ऊद, हज़रत सैय्यिद महबूब उर्फ़ बहलोल और सैय्यिद इब्राहीम हुए। हज़रत ख़्वाजा सैय्यिद फख़्रुद्दीन गुर्देज़ी की औलादों में सोलहवीं पुश्त में हज़रत सैय्यिद हुसैन अली रज़वी थे जो वकीले जावरा के नाम से मशहूर थे और सरकारे आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमह के चहीते मुरीद और जलीलुल क़द्र ख़लीफ़ा भी थे आप के विसाल के बाद आप के साहबज़ादे मौलवी सैय्यिद अहमद अली साहब रज़वी ख़लीफ़ए हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द और आप के साहबज़ादगान जनाब सैय्यिद असद अली रज़वी, हाजी सैय्यिद फ़ुरक़ान अली रज़वी, सैय्यिद इरफ़ान अली रज़वी और सैय्यिद आसिफ़ अली रज़वी दरगाहे अजमेर में मौजूद हैं और जिस तरह उन के जद्दे अमजद (ख़्वाजा फख़्रुद्दीन गुर्देज़ी) ख़्वाजा

ग़रीब नवाज़ की हयाते ज़ाहिरी में ख़िदमात बजा लाते थे उसी तरह यह हज़रात आज भी रौज़ए अतहर की ख़िदमात बजा लाकर अपने अजदाद की यह सुन्नत वफ़ादारी और इस्तिक़्लाल के साथ बराबर अदा कर रहे हैं।

साहिबे „तारीख़े सलफ़,, ने „इक़्तेबासुल अनवार,, और „मिरआतुल अस्रार,, के हवालों से नक़्ल किया है कि ख़्वाजा फख़्रुद्दीन सैय्यिद अबुल हसन साकिन कड़ा मानिक पुर की औलाद हैं। चुनाँचे साहिबे „मिरआतुल अस्रार,, लिखते हैं कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के आस्तानए आलिया के ख़ुद्दाम सैय्यिद फख़्रुद्दीन की औलाद से हैं और सैय्यिद फख़्रुद्दीन सैय्यिद अबुल हसन कड़ा मानिकपुर की औलाद हैं। लेकिन साहिबे „तारीख़े सलफ़,, ने सैय्यिद फख़्रुद्दीन के सैय्यिद अबुल हसन की औलाद मानने से इन्कार किया है उन का कहना है कि उन दोनों बुज़ुर्गों के आबा व अजदाद एक हैं।

आप का विसाल बतारीख़ 26 रजब 637 हि० बउम्र 93 साल अजमेर शरीफ़ में हुआ। मज़कूरा तारीख़ में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की दरगाह में आप का सालाना उर्स होता है।

हज़रत क़ाज़ी क़िदवा

हज़रत क़ाज़ी क़िदवतुद्दीन उर्फ़ क़ाज़ी क़िदवा रहमतुल्लाहि अलैह सादात में से हैं। बादशाहे रूम ने जो बनी इस्राईल में से था अपनी दुख़्तर की शादी क़ाज़ी क़िदवा के वालिद के साथ की थी उन्हीं के बत्न से हज़रत क़ाज़ी क़िदवा पैदा हुए। इस सुल्तानी निस्बत की वजह से उन्हें बनी इस्राईली भी कहते हैं। सुल्तान मीरक के दो बेटे थे बड़े हज़रत क़ाज़ी क़िदवा क़ुद्दि स सिर्रुहू और छोटे सैय्यिद नुस्रतुद्दीन। सुल्तान मीरक के बाद सल्तनत के मुरव्वजा क़वानीन के मुताबिक़ तख़्तो ताज छोटे बेटे सैय्यिद नुस्रतुद्दीन के सुपुर्द हुए और हज़रत क़ाज़ी साहब मस्नदे क़ज़ा पर जल्वा अफ़रोज़ हुए।

सुल्तान नुस्रतुद्दीन शरीअत का पाबन्द नहीं था बहुत से अमल ख़िलाफ़े शरअ करता था मगर चूँकि क़ाज़ी के अहकाम सुल्तान केलिए वाजिबुल अमल थे इस लिए उन से छुपाकर सारे मकरूह अफ़आल करता था मगर यह ज़ियादा दिनों छुप न सका और माअलूम होने पर क़ाज़ी साहब ने सख़्ती से अहकाम नाफ़िज़ कर

दिए। क़ाज़ी साहब का यह अमल सुल्तान नुस्रतुद्दीन केलिए नागवारी का सबब बना और अपनी फौजी ताक़त की बुन्याद पर क़ाज़ी साहब को हुदूदे सल्तनत से निकल जाने का हुक्म सादिर कर दिया। क़ाज़ी साहब बिला तअम्मुल अपने वतने मालूफ़ से मअ अहलो अयाल के रवाना हो गए। आप के साथ आप की इफ्फत मआब बीवी सालिहा और बेटे अज़ीज़ुद्दीन जो बीवी सालिहा के बत्न से थे और एक हज़ार आदमी सवार और दस गुलाम रवाना हुए। गुलामों के नाम इस तरह हैं। फर्रुख़, सुहराब, अख़्तर, फहीम, आफरीद, अस्कर, सैदा, जम्शेद या जम्शेर, सैदूँ और शेर।

हज़रत क़ाज़ी साहब रूम से निकल कर शाम, इराक़, बस्रा, बुस्ताम, बुख़ारा और मावराउन्नहर वग़ैरह होते हुए अपने मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के हुक्म से बअहदे सल्तनते सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी 597 हि0 में हिन्दुस्तान वारिद हुए और अपने पीर भाई हज़रत सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती कुद्दि स सिर्रुहू की मरज़ी के मुताबिक़ शहरे अवध में सुकूनत इख़्तियार फरमाई।

„जब सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी को माअलूम हुआ कि हज़रत क़ाज़ी साहब रूम से हिन्दुस्तान तशरीफ ले आए हैं तो सुल्तान ग़ौरी ने अपने वज़ीर को चन्द ग़ौरी सवारों के साथ क़ाज़ी साहब की ख़िदमत में भेजा जिन के ज़रीआ अपनी मुलाक़ात और देहली में क़ेयाम की तमन्ना का इज़्हार किया। हज़रत क़ाज़ी साहब ने सुल्तानी दाअवत मन्ज़ूर फरमा ली और उसी क़ाफले के हमराह देहली केलिए रवाना होगए। जब देहली के क़रीब पहुँचे तो ख़ुद सुल्तान शहाबुद्दीन ने अराकीने सल्तनत के साथ इन्तेहाई मसर्रतो शादमानी और ख़ुश ख़ुल्क़ी का मुज़ाहरा करते हुए देहली से बाहर आकर आप का इस्तिक़्बाल किया और निहायत इज़्ज़तो एहतेराम के साथ एक शाही महल में आप का क़ेयाम कराया। आप ने दो साल पाँच महीने सात दिन देहली में क़ेयाम फरमाया। उसी दौरान सैय्यिद ज़करीया मदनी ने जो सुल्तान के साथ ग़ौर से मअ अहलो अयाल देहली आकर मुक़ीम हो गए थे सुल्तान की वसातत से क़ाज़ी साहब के साहबज़ादे क़ाज़ी अज़ीज़ुद्दीन के साथ अपनी बेटी के निकाह का पैग़ाम दिया मगर चूँकि क़ाज़ी साहब हज़रत ज़करीया मदनी साहब के नसबी हालात से वाक़िफ न थे इस लिए आप ने सुल्तान से फरमाया कि अगर शरीफे मदीनए मुनव्वरा जो औलादे रसूले पाक में से हैं उन की सियादत की तस्दीक़ फरमा दें तो मुझे यह रिश्ता मन्ज़ूर करलेने में कोई तअम्मुल न होगा।

सुल्तान शहाबुद्दीन ने शरीफे मदीना से सैय्यिद ज़करीया मदनी की सियादत से मुतअल्लिक़ इस्तिफ्सार किया तो शरीफे मदीना ने जवाबन तहरीर फरमाया कि सैय्यिद ज़करीया साहब का नसब आफ़ताब की तरह रौशन है और हमारे उन के दरमियान ख़ानदानी वास्ता भी है।

इस जवाब से मुतमइन और ख़ुश होकर क़ाज़ी साहब ने अपने बेटे क़ाज़ी अज़ीज़ुद्दीन का निकाह सैय्यिद ज़करीया मदनी की साहबज़ादी से 11 रजब 598 हि0 को कर दिया।

सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी ने हज़रत क़ाज़ी साहब से कहा कि क़ौमे बहर से आबाद सूबए अवध बतौरे नज़्र मैं आप की ख़िदमत में पेश करता हूँ उन कुफ्फार से जितने मवाज़ेआत आप पाक करा लेंगे वह आप की और आप औलाद की मिल्क रहेंगे। और सूबए अवध का दस्तख़्ती मआफीनामा क़ाज़ी साहब के हवाले कर दिया। सूबए अवध उस वक़्त अगरचे सल्तनते देहली के मातहत था मगर बराए नाम। यहाँ के अलाक़ादार और ज़मीनदार अपने अपने महकूमातो मक़्बूज़ात पर पूरे पूरे इख़्तियार के साथ मुतसर्रिफ थे। क़ाज़ी साहब जब अपने हमराह एक हज़ार सवारों और दस ग़ुलामों को लेकर अवध की जानिब रवाँगी केलिए तैय्यार हुए तो सुल्तान शहाबुद्दीन ने पाँच हज़ार ग़ौरी सवार मज़ीद आप के साथ कर दिए आप उन सवारों को लेकर रवाना हुए और 17 रमज़ान 599 हि0 में मौज़ा जगदेव पुर (जगौर) के क़रीब ख़ेमाज़न हुए। आप के चन्द सवार किसी ज़रूरत से मौज़ा जगदेव पुर गए तो वहाँ के सरकश लोगों ने देखते ही राजा जगदेव अवधराज के हुक्म से बिला वजह उन सवारों को शहीद करके उन के घोड़े और अस्लहा वग़ैरह लेलिए। यह ख़बर मिलते ही क़ाज़ी साहब ग़ज़बनाक हो गए और तीन हज़ार रूमी व ग़ौरी सवारों के साथ जगदेव पुर पर हम्ला कर दिया और सुब्ह से शाम तक ख़ूँरेज़ जंग हुई चुनाँचे नमाज़े मग़रिब के क़रीब अवधराज समेत उस के कुंबा, क़बीला और तीन हज़ार सिपाहियों को तहे तेग़ करके मौज़ा जगदेव पुर पर क़ाज़ी साहब क़ाबिज़ होगए। उस माअरेके में तीन सौ रूमी और ग़ौरी सवार भी शहीद हुए।

7 शव्वाल 599 हि0 को मौज़ा हरसौली (रसौली) में दानियाल

व अर्जुन से (जो राजा गणेश और सूरजभान के भाई और मौज़ा सरसंड, कोसंड, भटिया और अवध के ज़मीनदार थे) जंगे अज़ीम वाक़ेअ हुई दानियाल ने धोके से रात को क़ाज़ी साहब के लश्कर पर हम्ला करके पाँच सौ नौ आदमियों को शहीद कर दिया जवाब में क़ाज़ी साहब ने दानियाल व अर्जुन के चार हज़ार फ़ौजियों को मौत के घाट उतार दिया। दानियाल और अर्जुन उस ख़ूँख़्वार हम्ले से घबरा कर भागने की कोशिश करने लगे जिस से उस का लश्कर दरहम बरहम होगया लेकिन क़ाज़ी साहब के जंग आज़मा सिपाहियों की ख़ूँआशाम तल्वारों ने दोनों दुश्मनों के सर काट दिए और रसूल पुर पर पूरा कब्ज़ा कर लिया।

उस के बाद क़ाज़ी साहब चमलाई (बड़ा गाँव) की तरफ़ मुतवज्जेह हुए यहाँ भी माअमूली सी जंग के बाद कब्ज़ा होगया इसी तरह महगाँव (भैय्यारा) पर भी। याअनी 599 हि० से 602 हि० तक बावन मवाज़ेआत पर क़ाज़ी साहब क़ाबिज़ हो गए।

क़ाज़ी अजमल बिन क़ाज़ी अमाद का बयान है कि „मैं जब नब्बे 90 साल का हुआ तो मेरे दादा क़ाज़ी मुहम्मद बर्क मुतवत्तिन सतरख जिन्हों ने एक सौ सत्तर बरस की उम्र में वफ़ात पाई मुझ से बयान फरमाते थे कि मैं ने अपने वालिद से सुना है कि हज़रत क़ाज़ी क़िदवा साहब ने बावन मवाज़ेआत फतह करने के बाद सुहराब, सैय्यिद, आफरीद और सैदू को मअ बक़िया सवारों केसरसेंढ व करसंढ वग़ैरह मवाज़ेआत की निग्रानी पर मुक़र्रर किया और जमशेदो जम्शेर को क़ाज़ी अज़ीज़ुद्दीन साहब के हमराह और फहीम, फर्रुख़ और अख़्तर को अपने साथ रखा।

602 हि० में आप अयोधिया तशरीफ लेगए और वहीं एक मुहल्ले में क़ेयाम फरमाया जो बाद में आप के नाम से मन्सूब क़िदवाई मोहल्ला के नाम से मशहूर हुआ और यहीं 605 हि० में 11रजब को आप का विसाल हुआ और उसी मुहल्ले में मदफून हुए। जब 1200 हि० में दरयाए घाघरा काटता हुआ मज़ारे अक़दस के क़रीब पहुँच गया तो क़ाज़ी साहब ने अपनी औलाद में से एक साहब को जो नवाब सआदत अली ख़ाँ बुर्हानुल मुल्क नाज़िमे अवध की फौज में किसी अहम ओहदे पर फाइज़ थे हालते ख़्वाब मे हुक्म फरमाया कि „दरया मेरे जिस्म से क़रीब होकर बह रहा है कहीं ऐसा न हो कि बहा लेजाए लिहाज़ा तुम मेरी नाश को यहाँ से निकाल कर फलाँ जगह दफ्न करदो।„ उधर नवाब साहब को भी ख़्वाब में इसी तरह का हुक्म दिया। चुनाँचे दोनों ने आपस में

मश्वरा करके उस की ताअमील का फैसला किया और आप की नाशे मुबारक निकाल कर एक सन्दूक़ में रखी गई और शहरे अवध के किनारे जहाँ अब आप का मज़ारे अक़दस ज़ियारतगाहे आम है दफ्न किए गए 595 बरस का तवील ज़माना गुज़र जाने के बाद भी जिस्मे अक़दस या कफ़न में कोई तब्दीली नहीं आई थी इस से यह बात वाज़ेह हो जाती है कि यह करामत आप की शुहरते शहज़ादगी या मन्सबे क़ज़ा की वजह से न थी बल्कि वह अस्रारे रब्बानी व लताइफ़े रूहानी थे जिन के लाज़िमी नताइज क़ुबूलियते आम और हयाते अलद्दवाम की सूरत में सामने आते हैं। आप से कसीर ताअदाद में करामतों और ख़वारिक़े आदात का भी ज़ुहूर हुआ। 11 ज़ीक़ाअदा को हर साल आप का उर्स अयोध्या में होता है।

हज़रत हाजी रूमी

आप हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू के मुरीद हैं।

सैय्यद मुईनुद्दीन

आप भी हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू के मुरीद हैं मज़ारे मुबारक बयाना (मुत्तसिल भरतपुर राजस्थान) में है।

सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश

„मसालिकुस्सालिकीन„ के मुसन्निफ के बयान के मुताबिक़ „सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू के मुरीद थे और सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू से ताअलीम (ताअलीमे तसव्वुफ) याफ्ता थे लेकिन उन को हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी क़ुद्दि स सिर्रुहू के साथ इन्तेहा दर्जे की अक़ीदतो महब्बत थी मुम्किन है कि बाद में आप ने क़ुतुब साहब से भी शरफे इरादत हासिल कर लिया हो लेकिन साहिबे „मुईनुल अरवाह„ का क़ौल है कि :

> „हमारे नज़दीक सहीह यह है कि „गंजे अस्रार„ और „सैरुल अक़्ताब„ वग़ैरह के मुताबिक़ सुल्तान शमसुद्दीन अल्तमश ख़्वाजा क़ुतुब साहब के मुरीदो ख़लीफा थे। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से फ़ैज़ हासिल किया और हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी क़ुद्दि स सिर्रुहू से निस्बते आअला के हुसूल की ख़ातिर तजदीदे बैअत की„

हज़रत क़ाज़ी दानियाल क़तरी

आप क़तर से तर्के सुकूनत करके इस्लामी लश्कर के साथ हिन्दुस्तान में वारिद होकर लाहौर में मुक़ीम हुए थे सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश की ख़्वाहिश पर बड़ी इज़्ज़तो इकराम के साथ बदायूँ लाए गए और वहाँ अज़मतो वक़ार के साथ उहदए क़ज़ा पर फ़ाइज़ किया गया उस वक़्त से आप दाइरए हुकूमते शमसी में „क़ाज़ियुलक़ुज़ात„ के लक़ब से मशहूर हुए।

हज़रत क़ाज़ी साहब को ज़ाहिरी उलूम के साथ साथ बातिनी कमालात भी हासिल थे हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू के साथ फ़र्ते अक़ीदत ने आप को सिलसिलए आलियए चिश्तिया के ज़ुमरए इरादत में दाख़िल कर दिया था। आप के साले रिहलत का पता नहीं चलता। आप का मज़ारे मुबारक आस्तानए आलियए क़ादिरिया (बदायूँ) से जुनूब मश्रिक़ में हज़रत पीरे मक्का साहब अलैहिर्रहमह की हरीम के मश्रिक़ी दरवाज़े के सामने बताया जाता है आप की नस्ल में इल्मो फ़ज़्ल नस्लन बा द नस्लिन अब तक चला आरहा है।

शैख़ अब्दुल्लाह राज़ी

यह बुज़ुर्ग तेहरान से मुत्तसिल रय के बाशिन्दे थे यह वही साबिक़ आतिश परस्त हैं जिन के हाथ से बच्चा लेकर हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू ने आतिशकदे में डाल दिया थाऔर ख़ुद भी आतिश्कदे से सहीह सलामत वापस आगए थे। यह करामत देख कर वह मुसलमान होगए थे और सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की चश्मे विलायतो माअरिफ़त से इरफ़ानो कमालाते बातिनी की नेअमतों से बहरावर हुए और हक़शनासी के मरतबे पर पहुँचे। साहिबे „गुलज़ारे अब्रार„ ने उन्हें ख़ुलफ़ाए ग़रीब नवाज़ में शुमार किया है मुम्किन है कि मुरीद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी के दस्ते हक़परस्त पर हुए हों और मन्सबे विलायत पर फ़ाइज़ करने के बाद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया हो।

शैख़ सफ़ियुद्दीन इब्राहीम राज़ी

यह वही बच्चा है जिन को लेकर हज़रत उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू आतिशपरस्तों के आतिशकदे में चले गए थे और नम्रूदी आग वाला इब्राहीमी जल्वा दिखाकर सहीहो सालिम निकल आए थे। कहते हैं कि आप अपने पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी की तलाशो जुस्तुजू में हिन्दुस्तान आए थे जब अजमेर पहुँचे तो हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमतो मुलाज़मत अपना शेवा बना लिया आख़िरकार दर्जए विलायत पर फ़ाइज़ हुए। बादे रिहलत आप को हज़रत ख़्वाजा के रौज़े की दीवार के साए में जगह मयस्सर आई। साहिबे „गुलज़ारे अब्रार„ ने आप को भी हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के ख़ुलफ़ा में तस्लीम किया है।

हज़रत सैय्यिद अरब

सातवीं सदी हिजरी के शुरूअ में आप बदायूँ तशरीफ़ लाए बड़े साहिबे माअरिफ़तो बातिन हैं मज़ार शरीफ़ बदायूँ में है। आप को हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी से शरफ़े बैअत हासिल है। (सैय्यिद मेहदी हसन मारहरवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह बहवाला मुईनुल अरवाह)

शैख़ नजमुद्दीन सुग़रा

यह बुज़ुर्ग भी हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू के मुरीदो ख़लीफ़ा और हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के पीरभाई हैं। हज़रत नजमुद्दीन सुग़रा तो ख़ुरासान से तर्के वतन करके देहली ही में मुक़ीम होगए थे और शैख़ुल इस्लाम के मन्सब पर फ़ाइज़ होगए थे यहीं आप का विसाल हुआ और मज़ारे मुबारक भी देहली में है।

आप के मशाहीर खुलफा

सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का सब से अहम मक़सद हिन्दुस्तान में एक मुस्तक़िल वसीअ तबलीग़ी निज़ाम का क़ेयाम था उस के लिए ज़रूरी था कि आप ज़ियादा से ज़ियादा इस्लाम के दाई और मुबल्लिग़ तैय्यार करें यही वजह थी कि आप ने अपने बेशुमार मुख़्लिस मुरीदों को इस्लामी ज़ाहिरी व बातिनी ताअलीम से आरास्ता व पैरास्ता करके ख़िरक़ए ख़िलाफत से सरफराज़ फरमाया और उन्हें मुल्क के दूरो दराज़ अलाक़ों में दीने इस्लाम की तबलीग़ के लिए मुतऐय्यन फरमाया। आप के मुतअद्दिद मशाहीर खुलफा का तज़्किरा तारीख़ की किताबों में मिलता है मगर उन सब में हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह आप के ख़लीफए आअज़म और हक़ीक़ी सज्जादा नशीन हैं जिन के मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी ज़ैल में दर्ज किए जाते हैं।

हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी

सिलसिलए चिश्त के बुज़ुर्गों में आप का मरतबा बहुत बलन्द है हज़रत बाबा फरीदुद्दीन गंजे शकर रहमतुलाहि तआला अलैह जैसे जलीलुल क़द्र बुज़ुर्ग आप ही के मुरीदो ख़लीफा हैं। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ज़ियादा तर अजमेर में रहे और देहली व नवाह में आप के सिलसिले का काम ख़्वाजा क़ुतुब साहब करते थे। आप सतरह या बीस साल की उम्र में हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के दामने फैज़ से वाबस्ता हुए और ज़िन्दगी की आख़िरी साँस तक तब्लीग़ो हिदायत का मुक़द्दस फरीज़ा अपने मुर्शिद की रहनुमाई में अंजाम देते रहे।

विलादत

हज़रत ख़्वाजा बख़्तियार काकी 568 हि0 माहे रबीउल अव्वल में मावराउन्नहर के एक क़स्बा „औश„ में पैदा हुए। इस्मे गिरामी बख़्तियार और क़ुतबुद्दीन लक़ब था। आम लोगों में ख़्वाजा काकी के लक़ब से मशहुर हो गए थे। इस की तफ्सील आगे आएगी। आप का सिलसिलए नसब सोलह वास्तों से शहीदे करबला सैय्यिदुना इमामे हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु से जामिलता है जो दर्जे ज़ैल है।

शजरए नसब

(1)सैय्यिदुश्शुहदा इमामे हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु
(2)सैय्यिदुना इमामे ज़ैनुल आबिदीन रदियल्लाहु तआला अन्हु
(3)सैय्यिदुना इमाम मुहम्मद बाक़िर रदियल्लाहु तआला अन्हु
(4)सैय्यिदुना इमाम जाअफर सादिक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु
(5)सैय्यिदुना हज़रत मूसा काज़िम रदियल्लाहु तआला अन्हु
(6)सैय्यिदुना हज़रत अली मूसा रज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु
(7)सैय्यिदुना हज़रत नक़ीयुल वुजूद रदियल्लाहु तआला अन्हु
(8)सैय्यिद जाअफर रदियल्लाहु तआला अन्हु
(9)सैय्यिद रशीदुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह
(10)सैय्यिद हुसामुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह
(11)सैय्यिद रज़ियुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह
(12)सैय्यिद अहमद रहमतुल्लाहि तआला अलैह
(13)सैय्यिद मुहम्मद रहमतुल्लाहि तआला अलैह
(14)सैय्यिद कमालुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह
(15)सैय्यिद अहमद रहमतुल्लाहि तआला अलैह
(16)सैय्यिद मूसा रहमतुल्लाहि तआला अलैह
(17)सैय्यिद कमालुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह
(18)ख़्वाजा सैय्यिद क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी क़ुद्दि स सिर्रुहू

ताअलीमो तरबियत

ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी अभी डेढ़ बरस के थे कि उन के वालिदे माजिद सैय्यिद कमालुद्दीन को ख़ालिक़े हक़ीक़ी का बुलावा आ गया और उन्हों ने दाइये अजल को लब्बैक कहा। आप

की वालिदा ने निहायत महब्बत और तवज्जुह से आप की परवरिश की। जब कुतुब साहब की उम्र पाँच बरस की हुई तो शफ़ीक़ वालिदा ने अपने बच्चे को एक हमदर्द पड़ोसी के सुपुर्द किया और उस से दर्ख़्वास्त की कि इसे किसी मकतब में लेजाकर बिठा आओ। वह शख़्स आप का हाथ पकड़कर जारहा था कि रास्ते में एक नूरानी सूरत बुज़ुर्ग मिले उन्हों ने उस शख़्स से पूछा „यह बच्चा किस का है और तुम इसे कहाँ लेजा रहे हो।?„

उस ने जवाब में सारा हाल बयान कर दिया। उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया। „आओ भई मैं इस बच्चे को एक ऐसे उस्ताज़ के पास लेजाऊँगा जो इसे एक लासानी इनसान बना देगा।„

चुनाँचे वह बुज़ुर्ग उन को साथ लेकर मौलाना अबू हफ्स रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मकान पर पहुँचे। मौलाना अबू हफ्स एक बाकमाल बुज़ुर्ग थे और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी पर कामिल उबूर रखते थे उन बुज़ुर्ग ने ख़्वाजा कुतुब का हाथ हज़रत मौलाना अबू हफ्स के हाथ में देदिया और कहा „ऐ अबू हफ्स! इस बच्चे को ख़ास तवज्जुह से ताअलीम देना यह एक दिन आस्माने विलायत पर आफ़ताब बनकर चमकने वाला है।„ इतना कहकर वह बुज़ुर्ग वहाँ से चले गए। हज़रत अबू हफ्स ने ख़्वाजा बख़्तियार काकी के साथी से पूछा „जानते हो यह कौन थे।?„

उस ने लाइल्मी का इज़्हार किया तो अबू हफ्स ने फ़रमाया „यह हज़रत ख़िज़्र थे तुम अब इत्मीनान से घर जाओ इनशाअल्लाह इस बच्चे की ताअलीम में कोई दक़ीक़ा फ़रोगुज़ाश्त नहीं किया जाएगा।„

उस पड़ोसी ने वापस आकर हज़रत की वालिदा से सारा वाक़ेआ बयान किया तो वह बहुत मसरूर हुईं। उधर मौलाना अबू हफ्स ने निहायत मेहनत और तवज्जुह से ख़्वाजा बख़्तियार काकी को ताअलीम दी और चन्द ही बरसों में उन्हें एक जैय्यिद आलिमे दीन बनाने के साथ बातिनी उलूमो कमालात भी अता कर दिए।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से बैअत

हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी ने सतरह बरस की उम्र में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से बैअतो इरादत का शरफ़ हासिल किया। यह बैअत कहाँ हुई इस के बारे में दो रिवायात हैं पहली रिवायत के मुताबिक़ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सियाहत

फ़रमाते हुए ख़ुद ही औश पहुँच गए इस तरह ख़्वाजा बख़्तियार काकी को घर बैठे गौहरे मक़सूद हाथ आ गया और आप ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की बैअत से मुशर्रफ़ हुए। (सब्ओ सनाबिल)

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ ख़्वाजा बख़्तियार काकी पीरे कामिल की जुस्तुजू में मुख़्तलिफ़ मक़ामात का सफ़र करते हुए बग़दाद पहुँचे और वहाँ हज़रत अबुल्लैस समरक़न्दी की मस्जिद में शैख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी, शैख़ बुरहानुद्दीन चिश्ती, शैख़ औहदुद्दीन किरमानी, शैख़ महमूद अस्फ़हानी और शैख़ दाऊद किरमानी अलैहिमुर्रहमह की फ़ैज़बख़्श मौजूदगी में हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मुक़द्दस हाथों पर आप ने बैअत की और उन से ख़िरक़ए ख़िलाफ़त पाया। (सैरुल औलिया व दलीलुल आरिफ़ीन)

रियाज़तो मुजाहदा

हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी मौलाना अबू हफ्स की ताअलीमात के ज़ेरे असर बचपन ही में रियाज़ातो मुजाहदात में मशग़ूल रहने लगे थे और बैअत के बाद उस में और ज़ियादा इज़ाफ़ा हो गया था एक दिनरात में बइख़्तिलाफ़े रिवायत पच्चानवे या ढाई सौ रक्अत नमाज़ अदा फ़रमाते थे और तीन हज़ार बार दुरूद शरीफ़ रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर भेजते थे।

हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाहि तआला अलैह का बयान है कि क़स्बा औश का एक रईस हज़रत ख़्वाजा (कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी) का मुरीद था एक रात को उस ने ख़्वाब में देखा कि एक आलीशान महल है जिस के इर्द गिर्द लोगों का हुजूम है एक नूरानी सूरत के बुज़ुर्ग बार बार उस महल के अन्दर जाते और फिर बाहर आकर उन लोगों में से किसी से एक आध बात करते हैं। रईसे मज़कूर ने लोगों से पूछा कि यह क्या मुआमला है। जवाब मिला कि इस महल के अन्दर रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रौनक़ अफ़रोज़ हैं और यह बुज़ुर्ग हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु हैं। जो हुज़ूर के पयामे अक़दस उन लोगों को नाम बनाम पहुँचा रहे हैं। उस रईस ने मौक़ा पाकर हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद से अर्ज़ किया कि बारगाहे रिसालत में मेरी यह इल्तेजा पहुँचा दीजिए कि यह आजिज़ भी हुज़ूर के दीदार का मुश्ताक़ है। हज़रत इब्ने

मस्ऊद अन्दर गए और हुज़ूर का यह पैग़ाम लाए कि तुम्हारे लिए अभी हमारी ज़ियारत का वक़्त नहीं आया तुम जाओ और कुतबुद्दीन से कहो कि जो तुहफ़ा तुम हर शब हमारे लिए भेजा करते थे वह तीन रातों से हमारे पास नहीं पहुँचा। उस के बाद ही रईस की आँख खुल गई। बेदार होते ही वह सीधा हज़रत ख़्वाजा बख़्तियार काकी की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपने ख़्वाब की सारी कैफ़ियत बयान की माअलूम हुआ कि हज़रत ख़्वाजा ने शादी की है इसी वजह से तीन शब से माअमूल के मुताबिक़ दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ सके। हज़रत ख़्वाजा बख़्तियार काकी ने ख़्वाब की कैफ़ियत सुनकर उसी वक़्त अपनी बीवी को तलाक़ देदी और दुन्यवी मुआमलात से किनाराकश होगए अब रात दिन इबादते इलाही से ही सरोकार था। अवाइले उम्र में तो नींद के ग़लबे की वजह से कुछ सो भी लेते थे लेकिन रफ़्ता रफ़्ता आराम करना बिल्कुल तर्क कर दिया। आख़िर उम्र में तो दिन रात बेदार रहते थे और एक एक लम्हा यादे इलाही में गुज़ारते थे बीस साल तक ज़मीन से पीठ न लगाई हर वक़्त आलमे इस्तिग़राक़ में रहते अलबत्ता नमाज़ के वक़्त हुश्यार होजाते ग़ुस्ल फ़रमाते और तज्दीदे वुज़ू करके नमाज़ अदा फ़रमाते और चूँकि कलामे पाक के हाफ़िज़ भी थे इस लिए उस की बकस्रत तिलावत भी फ़रमाते थे आम तौर पर अपने हुजरे में ख़िल्वत गज़ीं रहते और शुहरत से परहेज़ करते अगर कभी बहुत से लोग ज़ियारत केलिए जमा होजाते तो आहे सर्द भरते हुए हुजरे से बाहर तशरीफ़ लाते सब लोगों को एक एक प्याला तक़्सीम फ़रमाते फिर उन्हें पन्दो नसीहत फ़रमाते जब वह रुख़्सत होजाते तो हज़रत फिर हुजरे में मुशाहए रब्बानी में मशग़ूल होजाते।

हिन्दुस्तान आमद

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से शरफ़े बैअत हासिल करने और अलाइके दुन्यवी से किनाराकश होने के बाद एक अर्सा तक अपने पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में रहकर इबादतो रियाज़त में मशग़ूल रहे फिर ख़्वाजए बुज़ुर्ग की इजाज़त से मुख़्तलिफ़ मुल्कों और शहरों कीसैरो सियाहत की और बहुत से औलियाए किराम से मुलाक़ात की। उसी दौरान आप को इत्तेलाअ मिली कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ बग़दाद छोड़कर हिन्दुस्तान चले गए हैं तो

वह भी अपने मुर्शिद के शौक़े मुलाक़ात में हिन्दुस्तान केलिए आज़िमे सफ़र होगए। इस तरह यके बाद दीगरे मुर्शिदो मुरीद दोनों ने हिन्दुस्तान की सरज़मीन को अपने अपने क़ुदूमे मैमनत लुज़ूम से नवाज़ा। एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ आप हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के साथ 586 हि० में हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए लेकिन और रिवायतें इस की तसदीक़ नहीं करतीं।

मुल्तान में तशरीफ़ आवरी

जब हज़रत ख़्वाजा बख़्तियार काकी बग़दादे मुक़द्दस से रवाना होकर मुल्तान पहुँचे और यहाँ के मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करीया मुल्तानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के पास क़ेयाम किया। दोनों ख़ुदारसीदा बुज़ुर्ग थे कुछ दिनों ख़ूब सुहबतें रहीं। उसी ज़माने में मुग़लों ने मुल्तान पर हम्ला किया और शहर का निहायत सख़्ती से मुहासरा करलिया। मुल्तान का हाकिम नासिरुद्दीन क़बाचा हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करीया की ख़िदमत में हाज़िर होकर दुआ का तालिब हुआ। उस वक़्त वहाँ हज़रत ख़्वाजा बख़्तियार काकी भी मौजूद थे। क़बाचा ने हज़रत ख़्वाजा क़ुतुब से भी दुआ की दरख़्वास्त की। उस वक़्त आप के हाथ में एक तीर था वह तीर क़बाचा को देदिया और फ़रमाया कि इसे दुश्मन के लश्कर की तरफ़ छोड़ देना। क़बाचा ने ऐसा ही किया। तीर के छोड़ते ही दुश्मन का लश्कर मुहासरा उठाकर तितर बितर हो गया।

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर मुल्तान ही में हज़रत ख़्वाजा बख़्तियार काकी के मुरीद हुए थे इत्तेफ़ाक़ से उन दिनों शैख़ जलालुद्दीन तब्रेज़ी भी मुल्तान में मुक़ीम थे ख़्वाजा मौसूफ़ की उन से भी ख़ूब सुहबतें रहीं।

देहली में वुरूदे मस्ऊद

शहरे मुल्तान में कुछ दिनों क़ेयाम, बुज़ुर्गों से फ़ुयूज़ हासिल करने और तालिबों को बरकतें अता करने के बाद ख़्वाजा बख़्तियार काकी देहली तशरीफ़ लेआए। शहर से बाहर सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश ने आप का निहायत शानदार इस्तिक़्बाल किया और आप से शहर के अन्दर क़ेयाम करने की दरख़्वास्त की। हज़रत ख़्वाजा ने फ़रमाया मुझे यह जगह (शहर के बाहर ही) पसन्द है। क्यूँकि

यहाँ पानी और सबज़ा बइफ़रात है चुनाँचे आप ने देहली के बाहर मौज़ा किलोखरी या तिलोखरी में अपना डेरा लगाया। यहाँ से अपने मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत में एक अरीज़ा इरसाल किया जिस में तहरीर फरमाया कि शौक़े क़दमबोसी में देहली तक आपहुँचा हूँ अब इजाज़त हो तो अजमेर हाज़िर होकर आस्तानए आली पर जिब्हसाई करूँ।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने जवाब में रक़म फरमाया कि तुम वहीं देहली में क़ेयाम करो और हिदायते ख़ल्क़ में मशग़ूल रहो मैं इनशाअल्लाह देहली आकर खुद तुम से मिलूँगा। चुनाँचे सरकारे ख़्वाजा के फरमान के मुताबिक़ आप ने देहली ही में मुस्तक़िल क़ेयाम फरमा लिया। चन्द दिनों के अन्दर दूर दूर तक आप की शुहरत होगई और आप की बारगाह में हरवक़्त ख़िल्क़त का हुजूम रहने लगा। खुद सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश देहली से दोबार किलोखरी आया और हज़रत के फुयूज़ो बरकात से मुस्तफीज़ हुआ। कुछ मुद्दत के बाद सुल्तान के इस्रार पर हज़रत ख़्वाजा देहली शहर के अन्दर तशरीफ लेआए और मलिक ऐनुद्दीन या इज़्ज़ुद्दीन की मस्जिद में क़ेयाम फरमाया। सुल्तान ने एक वसीअ हवेली भी आप के सुपुर्द कर दी थी। शहर तशरीफ लाने के बाद अवाम का बेपनाह हुजूम बढ़ गया और देहली के रुऊसा व उमरा भी आप की ख़िदमत में हाज़िर होने लगे।

उहदए क़ज़ा क़ुबूल करने से इन्कार

हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी को देहली शहर तशरीफ लाए हुए कुछ ही दिन गुज़रे थे कि उस वक़्त के शैख़ुल इस्लाम मौलाना जमालुद्दीन बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का इन्तेक़ाल होगया। सुल्तान शमसुद्दीन ने ख़्वाजा काकी से इल्तिजा की कि आप शैख़ुल इस्लाम का उहदा क़ुबूल फरमा लीजिए लेकिन हज़रत ने उसे मन्ज़ूर नहीं फरमाया। चुनाँचे सुल्तान ने इस उहदे पर शैख़ नजमुद्दीन सुग़रा को मामूर किया। शैख़ नजमुद्दीन सुग़रा एक आलिमो फाज़िल और साहिबे तरीक़त बुज़ुर्ग और हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के पीरभाई थे लेकिन ख़ुदा की क़ुदरत कि शैख़ुल इस्लाम के उहदे पर फाइज़ होने के बाद वह ख़्वाजा बख़्तियार काकी की मक़्बूलियत और असरो रुसूख़ से ख़ार खाने लगे थे। उस का तफ्सीली वाक़ेआ गुज़श्ता सफहात में बयान किया

जाचुका है। चुनाँचे उस वाक़ेअे के बाद ख़्वाजा बख़्तियार काकी आख़िर तक देहली ही में मुक़ीम रहे और शैख़ नजमुद्दीन सुग़रा आप से बदस्तूर ख़ार खाते रहे आख़िरकार सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश की नाराज़गी का शिकार होकर शैख़ुल इस्लाम के उहदे से माअज़ूल होगए और निहायत उस्रतो परीशानी की हालत में दुन्या से रुख़्सत हुए।

काकी कहलाने की वजह

हज़रत ख़्वाजा क़ुतुब साहबकाकी के लक़ब से कैसे मशहूर हुए इस सिलसिले में कई रिवायतें बयान की जाती हैं जिन में दो रिवायतें बहुत मशहूर हैं जो दर्जे ज़ैल हैं।

हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार कुद्दि स सिर्रुहू के घर में अक्सर फाक़ा रहता था बज़ाहिर कोई आमदनी का ज़रीआ नहीं था। आप के पड़ोस में एक बनिया रहता था शदीद ज़रूरत के वक़्त आप उस से कुछ कर्ज़ उधार लेलिया करते थे। एक दिन बनिया की बीवी को गुरूर आगया और उस ने आप के ख़ादिम से तनज़न कहा कि हम तुम्हें कर्ज़ न दें तो तुम लोग भूके मर जाओ।

हज़रत ख़्वाजा को इस वाक़ेअे का इल्म हुआ तो आप ने अपने ख़ादिम को हुकम दिया कि आइन्दा कर्ज़ न लेना और ज़रूरत के वक़्त मेरे मुसल्ले का कोना उठा लेना उस के नीचे से तुम्हें ज़रूरत के मुताबिक़ काक (मीठी रोटियाँ) मिल जाया करेंगी। एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ आप ने फरमाया कि हुजरे के ताक़ में „बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम„ कहकर हाथ डाल देना बक़द्रे ज़रूरत काक मिल जाया करेंगी। चुनाँचे एक ज़माने तक हज़रत ख़्वाजा मअ अफरादे ख़ाना व मेहमान उसी खुदाई अतिय्या पर गुज़र बसर करते रहे और इस वजह से आप „काकी„ (काक वाले) के नाम से मशहूर होगए।

एक रोज़ शाही नानबाई से सुल्तान अलतमश के ख़ास काक जल गए उधर सुल्तान के ख़ासे का वक़्त क़रीब था नानबाई सख़्त परीशान हुआ इत्तेफ़ाक़ से ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन उधर से गुज़रे। नानबाई का हाल देखकर फरमाया „घबराओ नहीं बिस्मिल्लाह कहकर तन्नूर में हाथ डालो और काक निकालो„ नानबाई ने ताअमीले इरशाद की। देखा तो सब काक बे जले और निहायत उम्दा पके हुए थे।

यह वाक़ेआ आनन फानन लोगों में मशहूर होगया और आप „काकी„ के लक़ब से पुकारे जाने लगे।

तवक्कुलो इस्तिग़ना

सैय्यिदुना ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह को परवरदिगारे आलम ने तवक्कुल, फक़्र और इस्तिग़ना की दौलत से मालामाल फरमाया था अगरचे शहंशाहे हिन्दुस्तान शमसुद्दीन अलतमश और दूसरे बड़े बड़े उमरा व साहिबाने दौलतो सरवत आप के मुख़्लिस मुरीद और मोअतक़िद थे जो आप की ख़िदमत करना अपने लिए बाइसे संद सआदतो इफ्तिख़ार जानते थे मगर आप ने उन लोगों से कभी कोई दुन्यवी फाइदा न उठाया बारहा आप की ख़िदमत में कई कई गाँव बतौरे नज़्र देने की पेशकश की गई लेकिन आप ने हर बार उन को कुबूल करने से इन्कार कर दिया और फरमाया „हमारे ख़्वाजगान का यह तरीक़ा नहीं है अगर आज हम यह गाँव कुबूल कर लें तो कल क़ेयामत के दिन अपने ख़्वाजगान के सामने कैसे जाएंगे।„

हज़रत ख़्वाजा काकी इब्तेदा में अपनी गुज़र औक़ात केलिए बक़द्रे ज़रूरत क़र्ज़ लेलिया करते थे लेकिन बाद में उसे भी तर्क कर दिया। अपने पास कभी इतनी रक़म न रखते थे जिस पर ज़कात वाजिब होजाती अगर कोई कुछ नज़्र करता तो उसे फौरन हाजतमन्दों में तक़सीम कर देते या लंगरख़ाने में देदेते जहाँ हर वक़्त मेहमानों केलिए खाना तैय्यार किया जाता। बारहा घर में फाक़ों तक की नौबत पहुँची मगर किसी से उस का ज़िक्र तक न फरमाते अल्लाह पर तवक्कुल करके साबिरो शाकिर रहते।

आप की बाज़ करामतें

दीगर औलियाए किराम की तरह हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से भी बे शुमार करामात का ज़ुहूर हुआ है जिन की तफ्सील केलिए एक अज़ीम दफ्तर की ज़रूरत पेश आएगी। ज़ैल में सिर्फ चन्द करामात दर्ज की जारही हैं।

घर बैठे हज का सवाब

एक मरतबा हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी क़ुद्दि स सिर्रुहू, क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी, मौलाना अलाउद्दीन किरमानी और कई दूसरे बुज़ुर्ग एक मज्लिस में इकट्ठा थे। हज के मौज़ूअ पर गुफ्तुगू हो रही थी कि अचानक ख़्वाजा बख़्तियार काकी की ज़बान से यह अल्फाज़ निकले „अल्लाह तआला की रहमत बे हिसाब है वह चाह ले तो अपने फज़्ल से अपने बन्दों के पास काअबा शरीफ भेज दे कि अपने अपने मक़ाम पर ही उस का तवाफ कर लें।„

हज़रत के इरशाद पर हाज़िरीने मज्लिस पर वारफ्तगी का आलम तारी होगया निगाहें उठाकर देखा तो ख़ानए काअबा सामने मौजूद था सब ने तवाफ की सआदत हासिल की। फिर ग़ैब से एक आवाज़ आई „अज़ीज़ो! हम ने तुम्हें हज का सवाब अता कर दिया।„

छप्पन हज़ार अशरफियाँ

फारसी ज़बान का मशहूरो माअरूफ ईरानी शाइर नासिरी सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश की सख़ावतो दरियादिली का शोहरा सुन कर देहली आया। शाही दरबार में जाने से पहले हज़रत ख़्वाजा काकी की ख़िदमत में हाज़िर होकर दुआ की दरख़्वास्त की हज़रत ने दुआ देते हुए फरमाया „जाओ अल्लाह तआला तुम्हें सुर्ख़रू करेगा।„

नासिरी पुर उम्मीद होकर ख़ुशी ख़ुशी दरबार में पहुँचा और सुल्तान की शान में एक मदहीया क़सीदा पढ़ा अत्तेफ़ाक़ से बादशाह की तवज्जुह किसी और तरफ़ थी क़सीदा पर किसी रद्दे अमल का इज़्हार नही किया। नासिरी ने मायूसी के आलम में दिल ही दिल में हज़रत ख़्वाजा काकी को याद किया। अचानक बादशाह मुतवज्जेह होगया और हुक्म दिया कि फिर से अपना क़सीदा पढ़ो। उस ने दोबारा शुरूअ किया जिस का मतला था। :

ऐ फ़िल्ना अज़ नहीबे तू ज़िन्हार ख़्वास्ता
तेग़े तू मालो फ़ील ज़े कुफ़्फ़ार ख़्वास्ता

जब पूरा क़सीदा पढ़ चुका तो फिर तीसरी बार पढ़वाया फिर पूछा „इस क़सीदे में कितने अश्आर हैं।?„

नासिरी ने अर्ज़ किया „छप्पन„।

दरियादिल बादशाह ने छप्पन हज़ार अशरफ़ियाँ नासिरी को देने का हुक्म सादिर कर दिया। उसे इतने बड़े इन्आम की तवक़्क़ो न थी। शादाँ व फ़रहाँ हज़्रत ख़्वाजा काकी की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और निस्फ़ अशरफ़ियाँ आप की ख़िदमत में नज़्र करना चाहा मगर आप ने क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया और उसे महब्बत से रुख़्सत कर दिया।

दरियाए सीमो ज़र

बादशाहे हिन्द शमसुद्दीन अलतमश का शाही चौकीदार इख़्तियारुद्दीन एबक अशरफ़ियों के कुछ तोड़े लेकर हाज़िरे ख़िदमत हुआ आप ने उसे अपने क़रीब बुलाया और अपने मुसल्ले का एक गोशा उठाकर फ़रमाया „ज़रा इधर देखो।„

इख़्तियारुद्दीन की आँखें फटी की फटी रह गईं देखा कि सीमो ज़र का एक दरियाए ज़ख़्ख़ार बह रहा है। उस के बाद ख़्वाजा काकी ने फ़रमाया „जिसे अल्लाह तआला ने यह ख़ज़ाने अता कर रखे हों वह तुम्हारी अशरफ़ियाँ लेकर क्या करेगा। जाओ आइन्दा किसी दुर्वेश के साथ ऐसी गुस्ताख़ी न करना।„

शमसी तालाब

सुलतान शमसुद्दीन अलतमश एक हमदर्द और रहम दिल इन्सान था अवाम की तकलीफ़ से वह तड़प उठता था। एक अर्से से उस के दिल में यह आरज़ू थी कि एक वसीओ अरीज़ तालाब

खुदवाकर देहली के बाशिन्दों को पानी मुहैय्या कराया जाए ताकि उन की परीशानी दूर होसके लेकिन उस केलिए कोई मौज़ूँ जगह अभी तक नहीं मिली थी एक रात ख़्वाब में क़िस्मत बेदार हुई और रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दीदार किया। देखा कि सरकार घोड़े पर सवार हैं और एक ख़ास मक़ाम पर खड़े होकर इरशाद फ़रमा रहे हैं „तालाब यहाँ खुदवाओ।„

सुल्तान नींद से बेदार होकर फ़ौरन उस जगह पहुँचा तो देखा कि ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी वहाँ पहले से खड़े हैं। सुल्तान ने सरकार की बताई हुई जगह पर ही तालाब खुदवाना शुरूअ कर दिया जिस की तक्मील के बाद देहली में पानी की कमी दूर होगई। यह तालाब आज भी „शमसी तालाब„ के नाम से मौजूद है।

दरिया ने रास्ता दे दिया

हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी एक मरतबा कहीं जारहे थे आप के साथ बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर भी थे रास्ते में एक दरिया आगया जिस के पार जाने की कोई सबील न थी आप ने सूरए इख़्लास पढ़कर दरिया के पानी पर फूँक मारी उसी वक़्त दरिया में रास्ता बन गया आप दोनों आसानी से दरिया के पार चले गए।

गुम्शुदा लड़का वापस आगया

एक दफ़्आ आप की ख़िदमत में एक ज़ईफ़ा रोती चिल्लाती हुई आई और अर्ज़ किया „हुज़ूर! मेरा नौ बरस का बच्चा मुद्दत से लापता है मैं उस के फ़िराक़ में तड़पती रहती हूँ लिल्लह दुआ कीजिए कि अल्लाह तआला मुझे मेरे लख़्ते जिगर से मिलादे।„

हज़रत ख़्वाजा ने सिदक़ दिल से उस औरत केलिए दुआ माँगी और फिर फ़रमाया „घर जा अल्लाह ने चाहा तो तेरा नूरे नज़र मिल जाएगा।„

बुढ़िया जब घर पहुँची तो देखा कि उस का लड़का वहाँ पहले ही से मौजूद है। उस ने अपनी सरगुज़श्त बताते हुए कहा कि मुझे कोई सौदागर मुल्के रूम लेगया था आज एक शख़्स मुझे शहर से बाहर लेआया और कहा कि अपनी आँखें बन्द करो। मैं ने आँखें बन्द कीं और कुछ देर के बाद खोलीं तो मैं यहाँ मौजूद था।

इस तरह की बहुत सी करामात हज़रत कुतुब साहब से मन्सूब हैं।

कैफियते समाअ

अपने पीरो मुर्शिद और दीगर चिश्ती बुज़ुर्गों की तरह हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी कुद्दि स सिर्रुहू को भी समाअ से बहुत लगाव था और उसे बहुत पसन्द फरमाते थे लेकिन मज्लिसे समाअ के इन्अेक़ाद में उस के तमाम आदाबो शराइत का लेहाज़ रखते थे। अपनी ख़ानक़ाह के अलावा कभी कभी हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ख़ानक़ाह में होने वाली महफिले समाअ में शिरकत फरमाते और कभी दीगर हम मशरब बुज़ुर्गों के यहाँ तशरीफ लेजाकर अपने ज़ौक़े समाअ की तस्कीन फरमाते। एक बार एक समाअ की मज्लिस में क़व्वालों ने दर्जे ज़ैल शेर पढ़ाः

सुरूद चीस्त कि चन्दीं फुसूने इश्क़ दरूस्त
सुरूद महरमे इश्क़स्तो इश्क़ महरमे ऊस्त

तो हज़रत ख़्वाजा काकी पर कैफियत तारी हो गई और उसी आलमे मदहोशी में सात रात और दिन गुज़र गए उस दरमियान जब नमाज़ का वक़्त आता तो आप होश में आजाते। और नमाज़ अदा करते ही फिर बेहोश होजाते ग़रज़ समाअ में आप की कैफियत अजीबो ग़रीब होजाती अक्सर ऐसा होता कि किसी शेर पर वज्द में आजाते और पहरों तड़पते और फड़कते रहते।

सानेहए इरतेहाल

अक्सर तज़्किरा नवीसों का इस अम्र पर इत्तेफाक़ है कि आप का विसाल पीरो मुर्शिद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के विसाल के बाद 14 रबीउल अव्वल 634 हि० में दोशंबए मुबारका की शब में हुआ। आप के विसाल का हाल यूँ बयान किया जाता है कि एक दिन हज़रत शैख़ अली संजरी या सजिस्तानी की ख़ानक़ाह में मज्लिसे समाअ मुन्अक़िद हुई हज़रत ख़्वाजा काकी भी वहाँ तशरीफ लेगए। क़व्वालों ने हज़रत अहमद जाम का कलाम पढ़ना शुरूअ किया जब वह उस शेर पर पहुँचे :

कुश्तगाने ख़न्जरे तस्लीम रा
हर ज़माँ अज़ ग़ैब जाने दीगरस्त

तो हज़रत ख़्वाजा काकी ने यह शेर एक बार अपनी ज़बाने मुबारक से दुहराया और फिर मुर्ग़े बिस्मिल की तरह तड़पने लगे और हालत इन्तेहाई नाज़ुक होगई। हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी, मौलाना बदरुद्दीन ग़ज़नवी और दूसरे बुज़ुर्ग आप को सहारा देकर ख़ानक़ाह तक लाए यहाँ फिर क़व्वाली शुरूअ हुई मुकम्मल तीन दिन और तीन रातों तक इसी शेर की तकरार होती रही नमाज़ के वक़्त आप होश में आजाते और वुज़ू करके नमाज़ अदा करने के बाद फिर बेख़ुद होजाते। कैफियत यह थी कि पहला मिस्रा पढ़ने पर बिल्कुल बेजान होजाते और दूसरा मिस्रा पढ़ते ही बदन में हरकत पैदा होजाती।

बिल आख़िर तमाम लोगों की राय से दूसरे मिस्रे की तकरार बन्द कर दी गई और सिर्फ पहली मिस्रा पढ़ा जाने लगा दो चार दफआ की तकरार से ही आप वासिले बहक़ होगए। विसाल के वक़्त सरे मुबारक हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी की गोद में था और पाँव मौलाना बदरुद्दीन ग़ज़नवी की आग़ोश में। सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश ने ग़ुस्ल दिया और ख़ुद ही नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और फिर उसी जगह दफ्न किया जो हज़रत ख़्वाजा काकी ने अपनी हयाते ज़ाहिरी में ही अपने मरक़द केलिए ख़रीद ली थी। मज़ारे मुबारक मेहरौली शहर देहली में मरजअे ख़ासो आम है।

हज़रत ख़्वाजा बख़्तियार काकी के ख़ुलफा

आप के मशहूर ख़ुलफा के असमाए गिरामी दर्जे ज़ैल हैं। :

हज़रत बाबा फरीदुद्दीन गंजे शकर, सुल्तान शमसुद्दीन अलतमश, शैख़ ताजुद्दीन मुनव्वर औशी, शैख़ बदरुद्दीन ग़ज़नवी, शैख़ बदरुद्दीन मूताब, शैख़ ज़ियाउद्दीन रूमी, शैख़ बुरहानुद्दीन बलख़ी, शैख़ अहमद तमामी, शैख़ नजमुद्दीन क़लन्दर, क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी, शैख़ सूफी बधनी, शाह ख़िज़र क़लन्दर, मौलाना बुरहानुद्दीन हलवाई, शैख़ महमूद बिहारी, शैख़ बाबा सन्जरी बमहरे दरिया रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के दीगर ख़ुलफा

सैय्दिुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू ने हिन्दुस्तान में कितने लोगों को दाख़िले इस्लाम किया। यहाँ तशरीफ आवरी से क़ब्ल दौराने सियाहत भी बहुत से ख़ुश नसीब

कुफ़्र की तारीक वादियों से निकल कर आप की रहनुमाई में इस्लाम की रौशन दुन्या में आए और कितने लोगों को मुरीद किया और पूरी दुन्याए इस्लाम में कितनों को इजाज़तो ख़िलाफ़त से नवाज़ा तामा मुरीदीनो ख़ुलफ़ा की मुतऐय्यन ताअदाद बताने से तारीख़ के औराक़ क़ासिर हैं मुख़्तलिफ़ कुतुबे तारीख़ में ख़ुलफ़ा के अलग अलग नाम और ताअदाद मज़कूर है। मशहूर ख़ुलफ़ाए किराम के अलावा इख़्तिलाफ़े रिवायत के साथ जो अस्माए गिरामी दस्तयाब होसके ज़ैल में दर्ज किए जाते हैं और जिन के सने विसाल और मदफ़न का इल्म होसका वह भी शामिले फ़ेहरिस्त है। सब से चहीते, क़रीबतर और मशहूर ख़लीफ़ा हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी कुद्दि स सिर्रुहू के तफ़सीली हालात गुज़श्ता सफ़हात में पेश किए जाचुके हैं इस लिए उन का इस्मे गिरामी इस में शामिल नहीं है।

नम्बरशुमार	इस्मे गिरामी	साले विसाल	मज़ारे मुबारक
2	हज़रत ख़्वाजा सैय्यिद फ़ख़रूद्दीन चिश्ती	661 हि0	सरवाड़ शरीफ़
3	हज़रत शैख़ हमीदुद्दीन नागौरी	643 हि0	देहली
4	हज़रत सूफ़ी हमीदुद्दीन नागौरी	673 हि0	नागौर शरीफ़
5	हज़रत ख़्वाजा बुरहानुद्दीन	664 हि0	अजमेर शरीफ़
6	हज़रत शैख़ अहमद काबुली	594 हि0	बनारस
7	हज़रत शैख़ अब्दुलगफ़्फ़ार	692 हि0	मुलतान
8	हज़रत शैख़ अहमद ख़ाँ ग़ाज़ी	603 हि0	क़न्नौज
9	हज़रत कीरवान अहमद तुर्क	584 हि0	देहली
10	हज़रत शैख़ शमसुद्दीन अहमद फ़ौक़ानी	674 हि0	अहमदाबाद
11	हज़रत शैख़ मुहम्मद यादगार सब्ज़वारी	645 हि0	क़ंधार
12	हज़रत शैख़ वजीहुद्दीन ख़ुरासानी	645 हि0	हिरात
13	हज़रत शैख़ मुहम्मद ज़ाहिद तुर्क	634 हि0	देहली
14	हज़रत मांअरूफ़ शहाद	638 हि0	अजमेर शरीफ़
15	हज़रत अबुल फ़रह क़ुरैशी	617 हि0	देहली
16	हज़रत शैख़ अहमद	630 हि0	अजमेर शरीफ़

„सैरुल अक़्ताब„ में मज़्कूरा अस्माए गिरामी में से कुछ असमा मौजूद नहीं हैं और इस में कुछ नाम ऐसे भी हैं जो इस फ़िहरिस्त में शामिल नहीं हैं वह नाम यह हैं मगर इस में सने विसाल और मक़ामे मज़ार का तज़्किरा नहीं है।

17 हरत शैख़ मुहसिन

18 हज़रत शैख़ सुलैमान ग़ाज़ी
19 हज़रत ख़्वाजा हसन ख़ैय्यात
20 हज़रत अबदुल्लाह अलमाअरूफ़ ब अजयपाल जोगी
21 हज़रत बीबी हाफ़िज़ जमाल (साहबज़ादी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़)

साहिबे „मुईनुल अरवाह„ ने „गुलज़ारे अब्रार„ „ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया„ „तज़्किरए उलमाए हिन्द„ और „आईनए तसव्वुफ़„ के हवालों से दीगर मुतअद्दिद ख़ुलफ़ा का तज़्किरा किया है उन के अस्माए गिरामी भी दर्ज किए जाते हैं।

नम्बरशुमार	इस्मे गिरामी	साले विसाल	मज़ारे मुबारक
22	हज़रत मौलाना हकीम ज़ियाउद्दीन हामिद बलख़ी		
23	हज़रत सैय्यिद हुसैन मश्हदी उर्फ़ ख़ुनिंग सवार		
24	हज़रत शैख़ मुईनुद्दीन		
25	हज़रत शैख़ निज़ामुद्दीन नागौरी		
26	हज़रत शैख़ मजद्दुदीन संजरी		
27	हज़रत मौलाना अहमद ख़ादिम		
28	हज़रत शैख़ महता या मत्ता		
29	हज़रत शैख़ अली संजरी		
30	हज़रत शाह अब्दुल्लाह किरमानी		
31	हज़रत पीर करीम सलौनी	663 हि0	
32	हज़रत शैख़ सदरुद्दीन किरमानी		
33	हज़रत बुरहान जी सदा सुहाग	600हि0	अजमेर शरीफ़
34	हज़रत नियाज़ुल्लाह इब्ने शफ़ीक़ अहमद ख़ुरासानी	585 हि0	
35	हज़रत इमामुद्दीन इब्ने नजमुद्दीन दिमश्क़ी	547हि0	
36	हज़रत दाऊद बिन शैख़ सलीम साकिन ताइफ़	600हि0	अजमेर शरीफ़
37	हज़रत क़ादिर सईद	607हि0	अजमेर शरीफ़
38	हज़रत अहमद ख़ाँ दुर्रानी	602हि0	
39	हज़रत सुल्तान शाह	593हि0	
40	हज़रत ग़ुलाम हादी तुर्क	588हि0	
41	हज़रत असग़र क़ंधारी	615हि0	देहली
42	हज़रत अज़हर ख़ाँ तुर्क देहलवी	607हि0	देहली
43	हज़रत सुबहान अली ख़ाँ चमक़ी	619हि0	अजमेर शरीफ़
44	हज़रत फ़क़ीर अहमद जमरूदी	611हि0	अजमेर शरीफ़
45	हज़रत हादी मुहम्मद ग़फ़रत क़रयानी	609हि0	अजमेर शरीफ़
46	हज़रत निज़ाम ख़ाँ तुर्क	621हि0	

47	हज़रत सोग़ी बहादुर शाह	618हि0	अजमेर शरीफ़
48	हज़रत मुराद बेग मुग़ल	614हि0	अजमेर शरीफ़
49	हज़रत शाअबान ख़ाँ तुर्क	617हि0	अजमेर शरीफ़
50	हज़रत मुहम्मद असग़र बिहारी	657हि0	देहली
51	हज़रत मर्द आर ख़ाँ तुर्क	619हि0	अजमेर शरीफ़
52	हज़रत नेअमत अहमद सफ़ा	617हि0	अजमेर शरीफ़
53	हज़रत महमूद अहमद	607हि0	अजमेर शरीफ़
54	हज़रत अकबर शाह	621हि0	अजमेर शरीफ़
55	हज़रत ग़रीब असग़र	608हि0	अजमेर शरीफ़
56	हज़रत शहाब वली	617हि0	अजमेर शरीफ़
57	हज़रत सरवर अहमद	685हि0	अजमेर शरीफ़
58	हज़रत ज़हीरुद्दीन इब्ने शमसुद्दीन	601हि0	अजमेर शरीफ़
59	हज़रत सुफ़यान अहमद	615हि0	देहली
60	हज़रत माअरूफ़ शहाबुद्दीन कुरैशी	638हि0	अजमेर शरीफ़
61	हज़रत अब्दुल्लाह असग़र	640हि0	देहली
62	हज़रत अब्दुल ग़फ़्फ़ार	661हि0	अजमेर शरीफ़
63	हज़रत अज़ीज़ अहमद शाह	697हि0	देहली
64	हज़रत मुशियूख़ इराक़ी	700हि0	देहली
65	हज़रत करीम शुऐब इब्ने महमूद शाह ईरानी	672हि0	देहली
66	हज़रत याअक़ूब ख़ाँ	698हि0	देहली
67	हज़रत हसन दाऊद जी	621हि0	अजमेर शरीफ़
68	हज़रत ख़्वाजा अहमद शाह	618हि0	देहली
69	हज़रत शैख़ मुहम्मद फ़त्तार	633हि0	अजमेर शरीफ़
70	हज़रत ख़्वाजा यादगार ख़ुर्रम	640हि0	ग़ज़नी
71	हज़रत ख़्वाजा सब्ज़ यादगारी	645हि0	क़ंधार
72	हज़रत शैख़ अहमद क़हर इब्ने फ़क़ीर जब्बार	641हि0	देहली
73	हज़रत शैख़ वजीहुद्दीन	672हि0	मुल्तान
74	हज़रत ख़्वाजा मुहिय्युद्दीन		अजमेर शरीफ़
75	हज़रत अहमद शहाब क़ूफ़ी		अजमेर शरीफ़

मुख़्तलिफ़ कुतुबे सियर के हवालों से मज़कूरा 75 अस्माए गिरामी के बारे में यह यक़ीनी तौर पर नहीं कहा जासकता कि यक सब के सब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के ख़ुलफ़ाए किराम ही हैं ऐसा भी हो सकता है कि इस फ़िहरिस्त में चन्द ख़ुलफ़ा के अलावा उन मख़सूस मुरीदीन के नाम भी शामिल

हों जो सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से ज़ियादा क़रीब रहकर ख़ुसूसी फ़ुयूज़ो बरकात से मालामाल हुए हों और दीने इस्लाम की तबलीग़ो इशाअत में अपने पीरो मुर्शिद का साथ देने में पेश पेश रहे हों।

हफ़्त हमीद

जिस ज़माने में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू देहली में क़ेयाम पज़ीर थे उसी दौरान एक दिन आप का गुज़र एक बुतख़ाने के क़रीब से हुआ जहाँ सात अशख़ास बुतों की परस्तिश कर रहे थे अचानक उन की निगाहें सरकारे ग़रीब नवाज़ के पुरनूर चेहरे पर पड़ीं और वह बेतहाशा आप के क़दमों पर आकर गिर पड़े ख़ुदा जाने, उन्हों ने आप की कौन सी रूहानी क़ुव्वत का मुशाहदा कर लिया या आप के चेहरए पाक में जज़्बो कशिश वाला कोई जल्वा देख लिया कि उसी वक़्त उन सातों लोगों ने कलेमए शहादत पढ़कर हज़रत ख़्वाजा के हाथों इस्लाम क़ुबूल कर लिया। आप ने उन सातों का इस्लामी नाम „हमीदुद्दीन„ रखा। हुआ यूँ कि जब हज़रत ख़्वाजा ने उन में से सब से बड़े का नाम हमीदुद्दीन रखकर दूसरे का नाम रखना चाहा तो उन सब ने बयक ज़बान इल्तिजा की कि जिस तरह हालते कुफ़्र में हम सब एक साथ रहे और अब एक साथ ही मुसलमान भी हुए तो हम सब चाहते हैं कि हमारा नाम भी एक ही हो चुनाँचे यह सातों एक ही नाम से मौसूम होगए। अलबत्ता पहचान केलिए उन के नामों के साथ अलग अलग अलामती अलफ़ाज़ जोड़ दिए गए जो इस तरह हैं।

(1) ख़ुई हमीदुद्दीन (2) कासा बरदार हमीदुद्दीन (3) असा बरदार हमीदुद्दीन (4) मश्रिक़ी हमीदुद्दीन (5) मग़्रिबी हमीदुद्दीन (6) हमीदुद्दीन ख़ासा (7) हमीदुद्दीन देहलवी।

बताया जाता है कि उन सातों के मज़ारात नागौर शरीफ़ में हैं और वहाँ उन्हीं नामों से मशहूर हैं लोग उन के आस्ताने से फ़ैज़याब होते हैं।

माअनवी औलादें

हिन्दुस्तान में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की हक़ीक़ी और माअनवी याअनी नसबी और रूहानी दो तरह की औलादें आज भी मौजूद हैं बल्कि नसबी औलाद तो महदूद हैं रूहानी औलाद का सिलसिला बहुत वसीअ है। मुल्क का क़रीब क़रीब कोई शहर ऐसा नहीं जहाँ आप की माअनवी और रूहानी औलाद मौजूद न हो बल्कि छोटे छोटे क़स्बों और गाँवों तक में आप का सिलसिला पहुँचा हुआ है। कहीं चिश्ती निज़ामी के नाम से मन्सूब है तो कहीं चिश्ती साबिरी से मशहूर है।

साहिबे „गुल्ज़ारे अब्रार„ बयान करते हैं कि पूरे मुल्क में जितने मशाइख़े चिश्त मदफ़ून हैं उन सब का सिलसिला हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ पर ही ख़त्म होता है सिवा एक सिलसिलए शैख़ अज़ीज़ुल्लाह मंडवाला के कि वह शैख़ रुक्नुद्दीन नहरवाला से मिलता है और शैख़ रुक्नुद्दीन अपने आप को छः वास्तों से हज़रत ख़्वाजा मौदूद चिश्ती तक पहुँचाते हैं।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के ख़ुलफ़ा व मुक़्तदर मुरीदीन में आप की जानशीनी का शरफ़ हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी को हासिल है। हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी के ख़ुलफ़ा में जानशीनो सरगरोह हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर हैं। हज़रत बाबा फ़रीद गंजे शकर के भी बहुत से ख़ुलफ़ा हैं मगर मुक़्तदर व साहिबे सिलसिला हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही और मख़्दूम अलाउद्दीन साबिर कल्यरी हैं। यहाँ से सिलसिलए चिश्तिया की हिन्दुस्तान में दो शाखें जारी हुईं एक निज़ामी चिश्ती से मशहूर हुई और दूसरी साबिरी चिश्ती कहलाई। सिलसिला ब सिलसिला मौलाना फ़ख़्रुद्दीन देहलवी अलमाअरूफ़ ब मौलाना फ़ख़र साहब से निज़ामी सिलसिले की दो शाखें हो गईं।

एक शाख़ हाजी नूर मुहम्मद साहब से चली जो तौंसवी कहलाती है और दूसरी शाख़ शाह नियाज़ अहमद साहब बरेलवी से चली जो नियाज़ी कहलाती है। उन दोनों शाख़ों में इस वक़्त मुल्क के लाखों अफ़राद शामिल हैं। साबिरिया सिलसिले का दाइरा भी बहुत वसीअ है इस में लाखों अफ़राद नज़र आते हैं मुरादाबाद, हैदराबाद दकन, पानीपत, रुदौली शरीफ़, मैनपुरी, देहली और दीगर बहुत से मक़ामात पर साबिरिया ख़ानक़ाहें फ़ैज़ो जूद का दरिया बहा रही हैं।
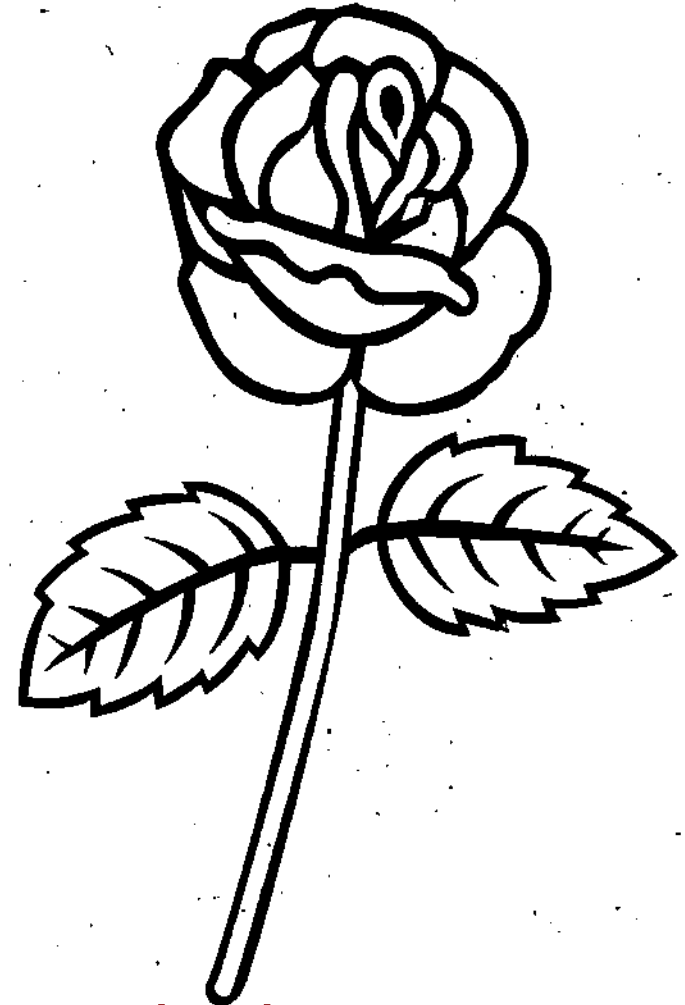
बाज़ हमअस्र उलमा व मशाइख़

सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की हयाते ज़ाहिरी के ज़माने में मुख़्तलिफ ममालिक, शहरों और क़स्बों में मुतअद्दिद अकाबिर मशाइख़ के अलावा अपने वक़्त के जलीलुल क़दर, जैय्यिद और मक़्बूले ख़वासो अवाम उलमा, सूफिया और मशाइख़ भी मौजूद थे जो अपने अपने मक़ाम पर दीनी, इल्मी और रूहानी ख़िदमात अन्जाम दे रहे थे। सियाहत और फिर अजमेर शरीफ व देहली वग़ैरह में क़ेयाम के दौरान उन में से बाज़ मशाहीरे वक़्त से सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की मुलाक़ातें और सुहबतें भी रही हैं। उन बाज़ मआसिर के अहवाल क़ारेईन की माअलूमात में इज़ाफे केलिए ज़ैल में अख़्तिसार के साथ दर्ज किए जारहे हैं।

शैख़ ज़ियाउद्दीन अबुन्नजीब सुहरवर्दी कुद्दि स सिर्रुहू

आप ख़लीफए अव्वल हज़रत सैय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु की औलाद में हैं। आप की विलादत 490हि० में हुई आप का इस्मे गिरामी अब्दुल क़ाहिर, कुन्नियत अबू नजीब और लक़ब ज़ियाउद्दीन है। आप सिलसिलए सुहरवर्दिया में अपने चचा हज़रत शैख़ वजीहुद्दीन अबू हफ्स सुहरवर्दी कुद्दि स सिर्रुहू के मुरीदो ख़लीफा हैं और सिलसिलए कुबरविया में हज़रत अबुल फुतूह इब्ने इमाम अहमद ग़िज़ाली रहमतुल्लाहि तआला अलैहिमा के ख़लीफा हैं। आप ने ग़ौसे हज़रत सैय्यिदुना शैख़ मुहियुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी कुद्दि स सिर्रुहू की सुहबत भी पाई है और ख़िर्क़ए ख़िलाफत भी। और जैसा कि गुज़श्ता सफ्हात में बयान किया जाचुका है कि बग़दाद में क़ेयाम के दौरान सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की भी आप से मुलाक़ात हुई है। आप का विसाल 563हि० में हुआ मज़ारे पाक बग़दाद में

दरयाए दजला के किनारे वाक़ेअ है।

हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन उमर सुहरवर्दी कुद्दि स सिर्रुहू

आप की विलादत 539हि० में हुई आप हज़रत शैख़ ज़ियाउद्दीन अबू नजीब सुहरवर्दी के मुरीदो ख़लीफए आअज़म हैं। शैख़े मौसूफ ने ही बचपन में आप की परवरिश भी की। आप को शैख़ मुहियुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी और हज़रत सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन हसन चिश्ती रदियल्लाहु तआला अन्हुमा की सुहबतों से मुस्तफीज़ होने का सुनहरी मौक़ा मिला है। हज़रत शैख़ साअदी शीराज़ी वग़ैरह आप के मुरीद हैं। आप का विसाल 623हि० में हुआ आप का मज़ार शरीफ भी बग़दाद शरीफ में है।

हज़रत शमसुद्दीन तब्रेज़ी कुद्दि स सिर्रुहू

आप कियानियों की औलाद में हैं आप के वालिद ख़ावन्द अलाउद्दीन क़िलउल मौत के वाली थे उन्हों ने अपने अजदाद के मज़हब से किनारा कश होकर मुलहिदों के दफ़्तर और रिसाले को जला दिया और इस्लाम के आसार मुलहिदों के क़िले में ज़ाहिर किए। आप ने ख़ुफिया तरीक़े से अपने बेटे शमसुद्दीन को हुसूले इल्म केलिए तब्रेज़ रवाना कर दिया वहाँ जाकर मौसूफ ने औरतों से ज़रदोज़ी भी सीखी इस लिए आप को ज़रदोज़ के लक़ब से भी जाना जाता है। उलूमे ज़ाहिरी की तक्मील के बाद हज़रत अबू बक्र सल्माबाफ तब्रेज़ी से आप ने बैअत की और फिर रियाज़तो मुजाहदा में मश्ग़ूल होगए। शैख़ रुकनुद्दीन सन्जानी और शैख़ औहदुद्दीन किरमानी की ख़िदमत में भी बहुत दिनों तक रहे। एक दिन हज़रत रुकनुद्दीन ने इरशाद फरमाया कि „शमसुद्दीन तुम रूम जाओ और वहाँ एक सोख़्ता के आग लगाओ।„ चुनाँचे आप क़ूनिया पहुँचे और मौलाना जलालुद्दीन रूमी को मुस्तफीज़ किया। हज़रत शमस तब्रेज़ी का विसाल 645हि० में हुआ।

शैख़ साअदी शीराज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह

आप शीराज़ में अताबुक साअद ज़ंगी के अहदे हुकूमत में पैदा

हुए जहाँ बाद में अबू बक्र इब्ने साद ज़ंगी हुक्मराँ हुए। आप ने मदरसा निज़ामिया बग़दाद में ताअलीम पाई शैख़ अबुल फरह इब्ने जौज़ी आप के मख़सूस उस्ताज़ हैं बैतुल मुक़द्दस में एक ज़माने तक ख़िदमते सक़्क़ाई अन्जाम दी है चौदह हज पापियादा किए हैं हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी के साथ एक कश्ती में दरिया का सफर भी किया है आप ने दुन्या के बहुत से ममालिक का सफर किया है हिन्दुस्तान की सियाहत भी की है उसी दौरान देहली में हज़रत सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से भी मुलाक़ात हुई आख़िरी ज़माने में गोशा नशीं होकर यादे इलाही में मशग़ूल हो गए। आप फारसी के मशहूर शाइर व अदीब हैं। आप की मशहूर इल्मी यादगार „गुलिस्ताँ„ और „बोस्ताँ„ वग़ैरह हैं। बोस्ताँ 655हि० में और गुलिस्ताँ 656हि० में तस्नीफ की। आप का विसाल माहे शव्वाल 691हि० में हुआ।

मौलाना जलालुद्दीन रूमी रहमतुल्लाहि तआला अलैह

आप की विलादत 604हि० में हुई। आप के वालिदे माजिद हज़रत मौलाना बहाउद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह बलख़ के रहने वाले थे बाद में रूम के शहर कूनिया में इक़ामत पज़ीर हो गए थे। बचपन में आप की मुलाक़ात हज़रत शैख़ फरीदुद्दीन अत्तार रहमतुल्लाहि तआला अलैह से भी हुई। 628हि० में आप के वालिद के इन्तेक़ाल के बाद सुल्तान सलाहुद्दीन सल्जूक़ी ने आप को उन का जानशीं बनाया आप अपने वालिद के मुरीद हज़रत बुरहानुद्दीन तिर्मिज़ी की सुहबत में भी नौ साल तक रहे उन के विसाल के पाँच साल के बाद आप हज़रत शमस तब्रेज़ी के मुरीदो मुजाज़ हुए „मस्नवी मौलाना रूम„ आप की मशहूरो मायए नाज़ तस्नीफ है। आप का विसाल 5 जुमादल उख़्रा 671 या 672हि० में हुआ।

हज़रत शैख़ नजमुद्दीन कुबरा रहमतुल्लाहि अलैह

आप उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी के हामिल और शैख़े कामिल थे जिस पर आप की निगाह पड़ जाती थी वह विलायत के मरतबे पर फाइज़ हो जाता था। आप ने शैख़ अम्मार यासिर और शैख़

मुहम्मद इस्माईल से इरादतो ख़िलाफत पाई थी नीज़ बाबा फर्रुख़ तब्रेज़ी ने भी आप को ख़िर्क़ा पहनाया था। चंगेज़ी लश्कर ने आप को बउम्र 66 साल 10 जुमादल ऊला 618हि० में शहीद कर दिया। आलमे इस्लाम के मशहुर आलिमो फलसफी हज़रत इमाम फख़्रुद्दीन राज़ी आप के मुरीदो मोअतक़िद थे। आप का मज़ारे अक़दस ख़्वार्ज़म में है 581 हि० में हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से सन्जान में मुलाक़ात हुई।

हज़रत शैख़ वजीहुद्दीन

अबू हफ्स सुहरवर्दी रहमतुल्लाहि अलैह

आप हज़रत अबू मुहम्मद उमवीया के ख़लीफ़ा हैं आप का शुमार अजिल्लए औलियाए किराम में होता है आप को हज़रत शैख़ मुम्शाद अलू दीनौरी और हज़रत अख़ी फर्रुख़ रैहानी से निस्बत हासिल है शैख़ शहाबुद्दीन उमर सुहरवर्दी को आप से ही कामिल फैज़ पहुँचा है शैख़े मौसूफ आप के बिरादर ज़ादा भी हैं।आप का विसाल 3 रमज़ानुल मुबारक 566हि० में हुआ।

शैख़ अब्दुल ख़ालिक़ ग़ुज्दवानी

आप की विलादत बुख़ारा के क़रीब ग़ुज्दवान में हुई आप हज़रत यूसुफ हमदानी के ख़लीफए आअज़म हैं। ज़िक्रे ख़फी का तरीक़ा आप ही ने शुरूअ किया है। आप ने अपने साहबज़ादे को वसिय्यत की थी कि जाहिल सूफियों से दूर रहना, बादशाहों से कुरबत न रखना, ज़ियादा समाअ न सुनना, मख़लूक़े ख़ुदा को ज़लीलो कमतर न समझना, अपने आप को बेहतर न जानना, जहाँतक मुम्किन हो ख़िदमते ख़ल्क़ करना और बुज़ुर्गों से हमेशा महब्बत करना वग़ैरह वग़ैरह। आप की वफात 12 रबीउल अव्वल 575हि० में हुई ग़ुज्दवान में ही मज़ारे पाक है।

शैख़ मुहम्मद आरिफ रेवगीरी

आप हज़रत शैख़ अब्दुल ख़ालिक़ ग़ुज्दवानी के मुरीदो ख़लीफा और सज्जादा नशीं हैं। आप का शुमार भी औलियाए

किबार और मशाइख़े उज़्ज़ाम में होता है। मस्जिदे दमिश्क़ में हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी, हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती और शैख़ औहदुद्दीन किरमानी से आप की मुलाक़ात हुई 650 हि० में आप का विसाल हुआ मज़ारे पाक क़स्बा रेवगीर में है जो बुख़ारा से अट्ठारह कोस की दूरी पर है।

हज़रत शैख़ ताजुद्दीन अब्दुर्रज़्ज़ाक़ कुद्दि स सिर्रुहू

आप ग़ौसे आअज़म सैय्यिदुना शैख़ मुहियुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी कुद्दि स सिर्रुहू के फ़रज़न्दे सईद, शागिर्द और मुरीद हैं। आप ने ही हुज़ूर ग़ौसे पाक के मलफ़ूज़ात „जलाउल ख़वातिर„ के नाम से जमा किए हैं। चूँकि हज़रत ग़ौसे आअज़म ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मामूँ हैं इस रिश्ते से आप हज़रत ग़रीब नवाज़ के मामूँज़ाद भाई हैं। आप का विसाल 6 शव्वाल 633हि० में हुआ मज़ारे मुबारक बग़दाद शरीफ में है।

हज़रत सैय्यिद

अहमद कबीर रिफ़ाई रहमतुल्लाहि तआला अलैह

आप से सलिसिलए जुनैदिया की रिफ़ाई शाख़ निकली है आप का विसाल 22 जुमादल ऊला 572हि० में हुआ।

हज़रत शैख़ मुहम्मद मुहियुद्दीन

इब्ने अरबी कुद्दि स सिर्रुहू

आप का इस्मे गिरामी मुहम्मद इब्ने अली इब्ने मुहम्मद है आप स्पेन के शहर क़रसिया में 17 रमज़ान 561हि० में पैदा हुए आप बड़े आरिफ़, आलिम, मुहक़्क़िक़ और साहिबे तसानिफ़े कसीरा हैं। फ़ुतूहाते मक्की, फ़ुसूसुल हिकम और तफ़्सीर आप की मशहूर तसानीफ़ हैं। आप का विसाल रबीउल अव्वल 637 हि० में हुआ। मज़ार दमिश्क़ के क़रीब जील में है।

हज़रत शैख़ निज़ामुद्दीन गंजवी कुद्दि स सिर्रुहू

आप हज़रत शैख़ अख़ी ज़नजानी के मुरीदो ख़लीफ़ा हैं आप की वफ़ात 596 हि० में हुई।

हज़रत शैख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार रहमतुल्लाहि अलैह

आप की विलादत 513 हि० में हुई आप का अस्ले वतन नवाहे नीशापुर में क़स्बा कदगन है। इब्तेदा में अत्तारी का पेशा करते थे इस लिए आप अत्तार से मशहूर हुए बाद में हज़रत रुकनुद्दीन काफ़ और हज़रत मजदुद्दीन बग़दादी की ख़िदमतो सुहबत में रहे आख़िरुज़्ज़िक्र बुज़ुर्ग से ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त पाया। मौलाना जलालुद्दीन रूमी आप से 610 हि० में छः साल की उम्र में मिले थे। आप का विसाल एक सौ चौदह साल की उम्र में 627 हि० में हुआ। „चालीस रिसालए नज़्म, और „मन्तिक़ुत्तैर„ आप की यादगार तस्नीफ़ात हैं।

हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करीया मुल्तानी कुद्दि स सिर्रुहू

आप कुतबुद्दीन इब्ने कमालुद्दीन क़ुरैशी के फ़रज़न्द हैं। आप की विलादत 565 हि० में कोट करोड़ (मुज़ाफ़ाते मुल्तान) में हुई। तहसीले उलूम से फ़राग़त के बाद आप ने सियाहत शुरूअ की उसी दौरान आप बग़दाद में हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन उमर सुहरवर्दी के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत हुए। थोड़े अर्से के बाद आप के पीरो मुर्शिद ने आप को इजाज़तो ख़िलाफ़त से भी नवाज़ा फिर मुल्तान तशरीफ़ लाकर यहीं मुस्तक़िल मुक़ीम हो गए। हज़रत शैख़ फ़रीदुद्दीन गंजे शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैह से आप का बड़ा गहरा रब्त था। हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से भी आप की मुलाक़ात है। आप का विसाल 667 हि० में हुआ मज़ार शरीफ़ मुल्तान में फ़ैज़ बख़्शे आम है।

हज़रत शैख़ औहदुद्दीन किरमानी कुद्दि स सिर्रुहू

आप अपने ज़माने के बड़े उलमा व मशाइख़ में से हैं। आप हज़रत शैख़ रुकनुद्दीन सन्जानी के मुरीद हैं जो हज़रत शैख़ अबू

नजीब सुहरवर्दी के ख़लीफ़ा हज़रत कुतबुद्दीन सुहरवर्दी के मुरीदो ख़लीफ़ा थे। शैख़ शमसुद्दीन तब्रेज़ी और शैख़ मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाहि तआला अलैहिमा से भी आप की मुलाक़ात है आप की वफ़ात 634 हि० या 635 हि० में हुई मज़ार शरीफ़ दमिश्क़ के मुहल्ला क़सारा में हैं। गुज़श्ता बयान के मुताबिक़ हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहुमा से आप की मुलाक़ातें रही हैं और बाज़ सफ़र में भी साथ रहा है।

हज़रत शैख़ जलालुद्दीन तब्रेज़ी कुद्दि स सिर्रुहू

आप हज़रत शैख़ अबूसईद तब्रेज़ी कुद्दि स सिर्रुहू के मुरीदो ख़लीफ़ा हैं। फ़क्र की तक्मील हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी कुद्दि स सिर्रुहू से की। तब्रेज से तर्के वतन करके हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए और देहली में क़ेयाम पज़ीर हुए वहीं हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू से शरफ़े मुलाक़ातो ख़िदमत हासिल किया। हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी कुद्दि स सिर्रुहू की कुर्बतो सुहबत से बहुत फ़ैज़ हासिल किया यहाँतक कि आप का मशाइख़े चिश्त में शुमार हुआ फिर देहली से बंगाला गए और वहाँ मुतअद्दिद मसाजिद व ख़ानक़ाहों की ताअमीर की। आप की वफ़ात 642 हि० में हुई आप का मज़ार देवमहल बंदर (सिल्हट) में है।

हज़रत अम्मार यासिर कुद्दि स सिर्रुहू

आप हज़रत शैख़ ज़ियाउद्दीन अबू नजीब अब्दुल क़ाहिर सुहरवर्दी कुद्दि स सिर्रुहू के ख़लीफ़ए नामदार और हज़रत शैख़ नजमुद्दीन कुबरा कुद्दि स सिर्रुहू के पीरो मुर्शिद हैं। आप का विसाल 16 रबीउल अव्वल 582 हि० में हुआ मज़ारे मुबारक बग़दाद शरीफ़ में है।

हज़रत इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि अलैह

आप का अस्ल वतन तब्रिस्तान है आप की विलादत 25 रमज़ानुल मुबारक 544 हि० में „रय„ (मुल्के ईरान) में हुई इसी

निस्बत से आप को राज़ी कहा जाता है। आप ने अपने वालिदे माजिद से इल्म हासिल किया। वालिद के इन्तेक़ाल के बाद आप सजिस्तान चले आए। उलूमे ज़ाहिरी में महारते ताम्मा के सबब आप को इमाम कहा जाता है। आप की वफ़ात यकुम शव्वालुल मुकर्रम 606 हि० में हुई मज़ारे पाक ख़याबान हिरात में है आप की तस्नीफ़ात में से „हदाइक़ुल अनवार„ और „तफ़्सीरे कबीर„ वग़ैरह बहुत मशहूर हैं।

हज़रत ख़्वाजा अलाउद्दीन ग़ज्दवानी कुद्दि स सिर्रुहू

आप हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के बहुत क़रीबी दोस्त थे हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की इजाज़त से हज़रत ख़्वाजा पारसा की ख़िदमत इख़्तियार कर ली थी हज़रत ख़्वाजा पारसा हमेशा आप से फ़रमाया करते थे कि आप को देखने से हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की याद दिल में ताज़ा हो जाती है।
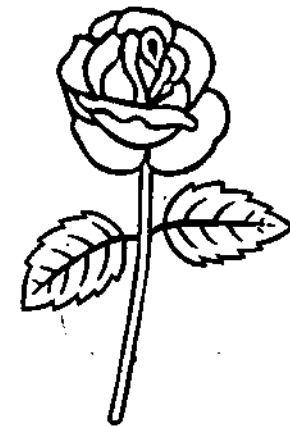
सुल्तानुल हिन्द के दरबार में

ग़ुलामाना हाज़िरियाँ

सुल्तानुल हिन्द अताए रसूल हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती सन्जरी सुम्मा अजमेरी अलमाअरूफ ब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के सिलसिलए तरीक़त में उस ज़माने से आज तक बिला वास्ता व बिलवास्ता सिर्फ हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि पूरी दुन्या के लाखों करोड़ों मुसलमान दाख़िल हैं और आप से निस्बत, अक़ीदत और महब्बत रखते हैं।अहले सिलसिलए चिश्तिया के अलावा दीगर सलासिले तरीक़त के अवाम, उलमा और मशाइख़ कसीर ताअदाद में आप से रिश्तए अक़ीदत रखते हैं बल्कि अगर यूँ कहा जाए तो बेजा न होगा कि सारी दुन्या के बिलउमूम और मुल्के हिन्दुस्तान के बिलखुसूस तमाम मुसलमानों के दिलों में आप की अक़ीदतो महब्बत के चराग़ रौशन हैं सिवा उन मुट्ठी भर लोगों के जो औलियाए किराम और बुज़ुर्गाने दीन से कोई अक़ीदत नहीं बल्कि अदावत रखते हैं यहाँतक कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शाने अक़दस में गुस्ताख़ियाँ करके फ़ख़्रो मसर्रत का इज़्हार करते हैं। दर अस्ल वह हयात बादल ममात के क़ाइल ही नहीं हैं। हालाँकि अकसर देखा जाता है कि किसी शदीद मरज़ या भयानक मुसीबत का इलाज जब कहीं और मुम्किन नहीं होता तो ऐसे लोग भी बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में ही हाज़िर होकर अपनी मुसीबतों और परीशानियों से छुटकारा हासिल करते हैं और खूब खूब फैज़याब होते हैं चूँकि वह दरबार अपने और बेगाने में कोई तफ़रीक़ो इम्तेयाज़ नहीं करता वहाँ सब का नवाज़ा जाता है। चुनाँचे जिस तरह हज़रत ख़्वाजा की हयाते ज़ाहिरी में उलमा, मशाइख़, सूफ़िया, औलिया, राजे,

महाराजे, उमरा, हुक्काम, शाह, गदा, ग़रीब, फ़क़ीर, मिसकीन, बेसहारा, बीमार, मुसीबतज़दा, परीशान हाल, हाजतमन्द और तालिबाने हिदायत आप की ख़िदमत में हाज़िर होकर रूहानी फ़ुयूज़ो बरकात हासिल करके नेक और जाइज़ आरज़ूएं पूरी करते थे उसी तरह आप के विसाल के बाद से आज तक हर दौर में हर फ़िरक़े और तबक़े के लोग आप के आस्तानए पाक पर हाज़िरी देते और दिली मुरादें पाते हैं। माहे रजबुल मुरज्जब में उर्स के मौक़े पर तो लाखों अक़ीदत मन्दों का मजमा आस्तानए पाक पर इकट्ठा होता ही है उस के अलावा हर रोज़ वहाँ महब्बत करने वालों का मेला लगा रहता है उन में मशाइख़ भी होते हैं और उलमा भी, मुल्को बैरूने मुल्क के मुअज़्ज़िज़ीन भी होते हैं और बिला इम्तेयाज़े मज़हबो मिल्लत क़ौमी, समाजी और सियासी रहनुमा भी। गुज़श्ता आठ सदियों में कितने और कैसे कैसे लोग उस आस्तानए पाक पर हाज़िर हुए उन का पूरा रिकार्ड या उन की पूरी ताअदाद तो किसी के पास भी महफ़ूज़ न होगी हाँ हर ज़माने में कुछ नामवर शख़्सियतें ऐसी होती हैं कि उन का तज़्किरा कहीं न कहीं किसी तरह तारीख़ो सियर की किताबों में मिल जाता है। उन्हीं हवालों से ज़ैल में कुछ माज़ी बईद की और माज़ी क़रीब की अहम शख़्सियतों का तज़्किरा किया जारहा है जो बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में हाज़िर होकर आपनी अक़ीदतों और महब्बतों के फूल निछावर कर चुके हैं।

हज़रत बू अली शाह क़लन्दर रहमतुल्लाहि अलैह

हज़रत शैख़ शरफ़ुद्दीन बू अली शाह क़लन्दर पानीपती रहमतुल्लाहि तआला अलैह का शुमार मशाहीर औलियाए किराम में होता है आप मजज़ूब सिफ़त बावक़ार चिश्ती बुज़ुर्गों में से एक हैं तहसीले इल्म के बाद रियाज़तो मुजाहदे में मसरूफ़ हो गए जब जज़्बो सुक्र का ग़लबा हुआ तो किताबें दरियाबुर्द कर दीं इश्क़ो महब्बत, अवारिफ़ो हक़ाइक़, तौहीदो रिसालत और तर्के दुन्या व महब्बते मौला के मौज़ूआत पर आप की कई तसानीफ़ हैं आप के दो ख़ुतूत भी बशक्ले किताब मौजूद हैं जो आप ने अपने मुरीदे ख़ास इख़्तियारुद्दीन के नाम तहरीर फ़रमाए हैं।

„सैरुल अक़्ताब„ के मुसन्निफ़ के मुताबिक़ आप हज़रत इमामे आअज़म अबू हनीफ़ा कूफ़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की औलाद

में से हैं और चन्द वास्तों से आप का सिलसिलए नसब हज़रत इमामे आअज़म से मिलता है। आप हज़रत ख़्वाजा शमसुद्दीन तुर्क पानीपती रहमतुल्लाहि तआला अलैह के हमअस्र हैं।

मशहूर है कि जब आप दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में हाज़िर हुए तो उस ज़माने में हज़रत ख़्वाजा का मज़ारे अक़दस कच्चा था आप ने रौज़ए पाक के ख़ादिम से इरशाद फ़रमाया कि „इस मज़ार की ख़िदमत करोगे तो तुम्हारी औलादें बहुत तरक़्क़ी करेंगी।„

आप का विसाल 13 रमज़ानुल मुबारक 724 हि० में हुआ मज़ारे पाक पानीपत करनाल में है।

मौलाना फ़ख़रुद्दीन ज़रावी रहमतुल्लाहि तआला अलैह

आप शैख़ुल मशाइख़ हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही कुद्दि स सिर्रुहू के मुरीदो ख़लीफ़ए ख़ास थे। उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी के जामेअ और शेरगोई में मुम्ताज़े ज़माना थे आप मुतअद्दिद बार ख़्वाजए बुज़ुर्ग के रौज़ए पाक की ज़ियारत केलिए अजमेर शरीफ़ आए और शैख़ फ़रीदुद्दीन गंजे शकर के मज़ारे पुर अनवार की ज़ियारत केलिए अजोधन (पाक पटन) भी पहुँचे। आप अकसर सफ़र में रहा करते थे हज़रत नसीरुद्दीन चराग़े देहली अक्सर फ़रमाया करते थे कि जो कुछ मुझे एक माह में मुन्कशिफ़ होता है वह फ़ख़रुद्दीन ज़रावी को एक साअत में होजाता है आप 740 हि० में ग़रक़े दरियाए मग़्फ़िरत हो गए।

हज़रत ज़िन्दा शाह मदार रहमतुल्लाहि तआला अलैह

हज़रत सैय्यिद शाह बदीउद्दीन कुतबुल मदार उर्फ़ ज़िन्दा शाह मदार मकनपुरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह हिन्दुस्तान के मशहूर मशाइख़ व औलियाए किबार में से हैं। हज़रत शैख़ तैफ़ूर शामी (बायज़ीद बुस्तामी) रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मुरीद हैं। जब आप हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए तो सब से पहले अजमेर शरीफ़ पहुँचे और हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के दरबार में हाज़िर हुए। अजमेर की कोकला पहाड़ी पर आप कुछ दिन मोअतकिफ़ भी रहे। हज़रत ख़्वाजा की बातिनी इजाज़त हासिल करके आप कालपी तशरीफ़ ले गए। आप की वफ़ात 840 हि० में हुई मज़ार शरीफ़ मकनपुर (ज़िला कानपुर) में है।

हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाहि अलैह

आप की विलादत 883 हि० में हुई आप ख़्वाजा इब्राहीम रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मुरीद हैं आप के वालिद का नाम बहाउद्दीन है आप बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैह की औलाद में हैं। अठारह साल की उम्र में ख़ुश्की के रास्ते से आप हज्जो ज़ियारते हरमैने तैय्यिबैन केलिए रवाना हुए तीस साल तक अरब, इराक़, रूम, शाम और मिस्र की सियाहत फ़रमाते रहे उस दरमियान आप ने चौदह हज किए 940 हि० में फ़तेहपुर सीकरी तशरीफ़ लाए 962 हि० में फिर हज केलिए रवाना हुए 971 हि० में वापस हिन्दुस्तान आकर फ़तेहपुर सीकरी में ख़ानक़ाह ताअमीर कराई। शेरशाह, सलीम शाह और शहंशाह अकबर को आप से बड़ी अक़ीदत थी।

मशहूर है कि एक मरतबा आप और शहंशाह अकबर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के दरबार में हाज़िर थे शहंशाह अकबर ने आप से दरयाफ़्त किया „हज़रत ख़्वाजा की क्या शान है।?„

आप ने जवाब में इरशाद फ़रमाया „हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग की यह शान है कि अकबर जैसा बादशाह और सलीम जैसा मिस्कीन इतनी देर से दरबार में हाज़िर हैं मगर अब तक बारयाबी नसीब नहीं हुई।„

आप ही की दुआ से अकबर के यहाँ शहज़ादा सलीम उम्र लेकर तवल्लुद हुआ। आप का विसाल 29 रमज़ान 976 हि० में हुआ मज़ारे पुरअनवार आगरा से 24 मील दूर फ़तेहपुर सीकरी में है।

हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाहि अलैह

हज़रत शैख़ अहमद सरहिन्दी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की विलादते बासआदत 971 हि० में हुई। आप ख़लीफ़ए दोम हज़रत सैय्यिदुना उमरे फ़ारूक़े आअज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की औलाद में हैं। आप सिलसिलए नक़्शबन्दिया में शैख़ अब्दुल बाक़ी उर्फ़ बाक़ी बिल्लाह के सिलसिलए क़ादिरियामें शैख़ अस्कन्दर के और सिलसिलए चिश्तिया साबिरिया व सिलसिलए सुहरवर्दिया में अब्दुल अहद से मुरीद हैं।

जिस ज़माने में आप अजमेर शरीफ़ में हाज़िर थे रमज़ानुल मुबारक बरसात में पड़ा था और बारिश का यह आलम था कि रात

हज़रत शैख़ फख़रुद्दीन अलमाअरूफ ब मौलाना फख़र कुद्दि स सिर्रुहू

आप अपने वालिदे माजिद हज़रत मौलना निज़ामुद्दीन कुद्दि स सिर्रुहू के मुरीदो ख़लीफा थे और उन्हीं से उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी भी हासिल किए। आप की ज़ात से बहुत से लोगों ने राहे हिदायत पाई। नवाब निज़ामुद्दौला नासिर जंग वालिए हैदराबाद और हिम्मत यार ख़ाँ के अदवारे हुकूमत में आप ने कुछ दिन हैदराबाद में गुज़ारे फिर वहाँ से तर्के सुकूनत करके अजमेरे मुक़द्दस आ गए। यहाँ चन्द ऐय्याम दरबारे ख़्वाजा में हाज़िर रहे बिलआख़िर सुल्तानुल हिन्द के इरशादे बातिनी की ताअमील में देहली तशरीफ ले आए आप से बहुत लोगों को फैज़ पहुँचा लाखों अफराद आप के सिलसिले में दाख़िल थे „निज़ामुल अक़ाइद„ „रिसालए मर्ज़िया„ और „फख़्रुल हसन„ आप की तसानीफ हैं।

आप 27 जुमादल उख़्रा 1199 हि0 में आलमे बक़ा की जानिब कूच कर गए। आप का मज़ारे पाक हज़रत कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी कुद्दि स सिर्रुहू की दरगाह में अन्दरूनी दरवाज़े से मुत्तसिल ज़ियारतगाहे ख़लाइक़ है। आप चिश्ती निज़ामी सलिसिले के चराग़े हिदायत हैं तोंसवी और नियाज़ी शाख़ें आप ही से जारी हुई।

हज़रत हाजी हाफिज़ वारिस अली शाह क़ुद्दि स सिर्रुहू

आप की विलादत यकुम रमज़ानुल मुबारक 1228 हि0 को हुई आप अपने बेरादरे निस्बती हाजी ख़ादिम अली शाह रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मुरीदो ख़लीफा हैं। मशहूर है कि आप बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में हाज़िरी केलिए जब अजमेर शरीफ पहुँचे तो आप ने जूते पहनना तर्क कर दिए और फिर कभी न पहने। अजमेर शरीफ से आप नागौर, पाक पटन, भक्कर अहमदाबाद होते हुए बम्बई पहुँचे वहाँ से मक्कए मुअज़्ज़मा हाज़िर हो कर हज्जो ज़ियारते हरमैने शरीफैन से मुशर्रफ हुए। फिर बैतुल मुक़द्दस, नजफे अशरफ, करबलाए मुअल्ला, काज़िमैन और बग़दाद शरीफ की ज़ियारतों से भी मुशर्रफ हुए। आप हिन्दुस्तान के बहुत मशहूर

दुर्वेश हैं बिला इख़्तिलाफे क़ौमो मज़हब मुल्क के करोड़ों अफ्राद आप के मोअतक़िद हैं। आप की वफात यकुम सफर बरोज़े जुमा 1323 हि0 हुई मज़ार शरीफ देवा शरीफ ज़िला बारा बंकी में ज़ियारतगाहे ख़लाइक़ है। इमाराते मज़ार शरीफ बहुत आलीशान हैं सालाना उर्स बड़ी शानो शौकत से होता है जिस में लाखों अफ्राद शरीक होकर फुयूज़ो बरकात हासिल करते हैं।

हज़रत सैय्यिद शाह अबुल हुसैन अहमदे नूरी क़ुद्दि स सिर्रुहू

ज़ैदी सादात का मशहूर घराना जिस की शाख़ें बिलगिराम और मारहरा शरीफ में हैं उस ख़ानवादे के मशहूर कादरी बुज़ुर्ग हज़रत सैय्यिद शाह बरकतुल्लाह के नाम से मन्सूब ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा शरीफ ज़िला एटा में है जो पूरी दुन्या में शुहरत की हामिल है। उसी ख़ानदान के एक नामवर बुज़ुर्ग हज़रत सैय्यिद शाह अबुल हुसैन अहमदे नूरी हैं जिन की विलादत 1255 हि0 में हुई और अपने आबा व अजदाद से ही ताअलीमो तरबियत पाई। बारह साल की उम्र (1267हि0) में अपने दादा हज़रत सैय्यिद शाह आले रसूले अहमदी कुद्दि स सिर्रुहू से बैअतो ख़िलाफत के शरफ से मुशर्रफ हुए और दादा के विसाल के बाद 1297 हि0 में ख़ानदानी सज्जादा व मस्नदे इरशाद पर जुलूस फरमाया।

हज़रत नूरी मियाँ कुद्दि स सिर्रुहुल अज़ीज़ अक्सरो बेशतर बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में हाज़िरी केलिए अजमेर शरीफ तशरीफ ले जाया करते थे। एक मरतबा आप अपने चन्द ख़ुद्दाम के साथ उर्से मुबारक के मौक़े पर हाज़िर हुए रजबुल मुरज्जब की पाँचवीं तारीख़ को इरशाद फरमाया कि „सरकारे ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के दरबार से फक़ीर को हुक्म हुआ है कि अपने ख़ुद्दाम को बता दें कि अगर किसी को कुछ अर्ज़ करना हो तो दरख़्वास्त लिख कर वह आप को पेश कर दें वह दरख़्वास्तें आप की माअरिफत मेरे दरबार में पेश होंगी और उस के जवाब भी आप ही की माअरिफत उन को मिलेंगे।„

मौलाना ग़ुलाम शब्बीर बदायूनी ने अर्ज़ की „हुज़ूर! वह दरख़्वास्तें किस तरह दरबार तक पेश होंगी।?„

आप ने इरशाद फरमाया कि „आस्ताने के कुछ ख़ुद्दाम जिन्नात भी हैं जो इस काम पर मामूर हैं।„

चुनाँचे दरख़्वास्तें हज़रत के पास जमा हुई और हज़रत ने वह दरख़्वास्तें हाफ़िज़ नज़रुल्लाह ख़ाँ बदायूनी को इनायत फ़रमाते हुए हुक्म फ़रमाया कि आस्तानए आलिया के जुनूब मग़्रिब कोने पर कोहे चिल्ला की जानिब एक घाटी है वहाँ जाओ और जो शख़्स तुम से यह दरख़्वास्तें तलब करे उसे देदो।

हज़रत मौलाना ग़ुलाम शब्बीर बदायूनी का बयान है कि जब हज़रत के हुक्म से हाफ़िज़ नज़रुल्लाह साहब वह दरख़्वास्तें लेकर चले तो मैं भी ख़ामोशी से उन के पीछे लग गया। जब घाटी में दाख़िल हुए तो हाफ़िज़ नज़रुल्लाह ख़ाँ और मेरे दरमियान सिर्फ़ चन्द क़दमों का फ़ास्ला था। अचानक मैं ने देखा कि हाफ़िज़ नज़रुल्लह ख़ाँ साहब का हाथ ख़ाली है। मैं ने उन से पूछा कि „दरख़्वास्तें कहाँ हैं।?„

हाफ़िज़ साहब ने कहा कि „तुम मुझ से मज़ाक़ करते हो अभी तुम ने ही तो वह परचियाँ मुझ से यह कहकर लेलीं कि हुज़ूर ने तलब की हैं।„

इस जवाब पर मैं हैरान रह गया।

हाफ़िज़ साहब ने वापस आकर हज़रत की ख़िदमत में सारा वाक़ेआ बयान कर दिया। हज़रत ने फ़रमाया कि „वही ख़ादिमे आस्ताना थे जो इस सूरत में तुम से परचियाँ लेगए।

फिर फ़रमाया कि „यह हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का इस फ़क़ीर पर करमे ख़ास है वरना मुझ से बेहतर हज़ारों इस दरबारे आली वक़ार में हाज़िर होते हैं मगर यह ख़ास निगाहे करम बाज़ ख़ास ख़ुद्दाम ही पर होती है कि वह अपने मुरीदों की अर्ज़ियाँ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हुज़ूर तक पेश करें।

तीसरे दिन वह परचियाँ जवाब के साथ हम सब को मिलीं जो नवादिरात में से थे।

हज़रत नूरी मियाँ से बेशुमार लोगों को फ़ैज़ पहुँचा आप का विसाल 1324 हि0 में हुआ मज़ारे मुबारक आस्तानए आलिया बरकातिया मारहरहा शरीफ़ में है।

आअला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी क़ुद्दि स सिर्रुहू

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत आअला हज़रत

मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादिरी बरकाती क़ुद्दि स सिर्रुहू बरेली शरीफ़ के एक इल्मी घराने के चश्मो चराग़ हैं आप की विलादत 1272 हि0 में हुई अपने वालिद मौलाना नक़ी अली ख़ाँ और दादा मौलाना रज़ा अली ख़ाँ अलैहिमर्रहमह से उलूमे ज़ाहिरी हासिल किए और मारहरा शरीफ़ की ख़ानक़ाहे बरकातिया में ख़ातमुल अकाबिर हज़रत सैय्यिद शाह आले रसूले अहमदी क़ुद्दि स सिर्रुहू से बैअतो ख़िलाफ़त का शरफ़ हासिल किया। हज़रत सैय्यिद अबुल हुसैन अहमदे नूरी क़ुद्दि स सिर्रुहू से भी उलूमे बातिनी और कमालाते रूहानी की तहसील फ़रमाई। आप के इल्मो फ़ज़्ल का आज पूरी दुन्या में शुहरा है तक़रीबन 65 फ़ुनून पर एक हज़ार किताबें तसनीफ़ फ़रमाईं। सरकारे रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और औलियाए किराम की बारगाहों में दरीदा देहनी करने और गुस्ताख़ी करने वालों के चेहरों को बेनक़ाब किया।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू के ख़ादिमे ख़ास हज़रत सैय्यिद फ़ख़्रुद्दीन गुर्देज़ी रहमतुल्लाहि तआलाअलैह की औलाद में से हज़रत सैय्यिद हुसैन वकीले जावरा ख़ादिमे आस्तानए ग़रीब नवाज़ को आप से शरफ़े बैअत हासिल था। सैय्यिद साहब मौसूफ़ ने अपनी किताब „दरबारे चिश्त„ में आअला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी की अजमेरे मुक़द्दस में हाज़िरी से मुतअल्लिक़ तहरीर फ़रमाते हैं कि :

> „मेरे पीरो मुर्शिद मुजद्दिदे दीनो मिल्लत आअला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब क़ुद्दि स सिर्रुहू भी दो बार दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में हाज़िर हुए हैं। दूसरी हाज़िरी आअला हज़रत की ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र है।
>
> आप 1325 हि0 में हज्जो ज़ियारत की सआदत हासिल करके जब साहिले हिन्दुस्तान पर, उतरे तो आप के फ़िदाई मुख़्तलिफ़ बिलादो अम्सार से आप को लेने बम्बई पहुँच गए थे। अलावा वतन के और भी कई जगह से तार दिए गए कि हमारे वतन को अपने क़ुदूमे वाला से मुनव्वर फ़रमा दें आप ने किसी की न सुनी और सीधे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के आस्ताने पर हाज़िर हुए और ख़्वाजए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दरबार की हाज़िरी के बाद आप ने उन के शाहज़ादे ख़्वाजए हिन्द के दरबार में हाज़िरी दी। यह हाज़िरी ऐसी अक़ीदतो महब्बत की हामिल थी कि हम ख़ुद्दामे आस्ताना

और तमाम मुसलमानाने अजमेर शरीफ के दिलों पर नक़्श हो गई आज तक हम ख़ुद्दाम में उस हाज़िरी के चरचे होते हैं यही वजह थी कि 1340हि० में जब आप का विसाल हुआ और आस्तानए ग़रीब नवाज़ पर उन के विसाल की ख़बर पहुँची तो अजमेर शरीफ के लोगों ने काफी ताअदाद में जमा होकर कुरआन मजीद, और कलेमए तैय्यिबा पढ़कर ईसाले सवाब किया और उस के बाद उलमा व मुकर्रिरीन ने उन के ज़र्री कारनामे हाज़िरीन के सामने पेश किए और दुन्याए अजमेर को यह बताया कि आअला हज़रत की इल्मी फौक़ियत आज दुन्याए इस्लाम मानती है उलमाए अरबो अजम उन को इस सदी का मुजद्दिद और तमाम उलूमो फुनून का माहिर और यगानए रोज़गार माने हुए हैं उन का हर शोअबए हयात इत्तेबाअे सुन्नत की वजह से इस्लामी ज़िन्दगी का एक बेहतरीन नमूना है उन के मज़हबी रसाइल और किताबें अक़ाइदो आअमाल का क़ौले फैसल और शरीअते मुतहहरा का इस दौर में आख़री फतवा हैं। ग़रज़ कि उस मौक़े पर मुसलमानाने अजमेर और दीगर ज़ाइरीन ने बड़ी अक़ीदत मन्दी का इज़्हार किया जो एक ज़माने तक यादगार रहेगा।

आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेलवी क़ुद्दि स सिर्रुहू इश्क़ो महब्बते रसूल से मस्तो सरशार थे सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से मुतल्लिक़ व मन्सूब हर शय का एहतेराम उन की सिरिश्त में था औलियाए किराम की महब्बतो ताअज़ीम उन का शेआर था। उन के नाअतिया व मन्क़बती दीवान „हदाइक़े बख़्शिश„ के ज़रीआ इन दाअवों को परखा जासकता है।

उन का विसाल 25 सफरुल मुज़फ्फर 1340 हि० में हुआ बरेली शरीफ में उर्स के मौक़े पर मज़कूरा तारीख़ में हर साल लाखों अक़ीदत मन्द दीवानावार शिरकत की सआदत हासिल करते हैं।

सदरुश्शरीअह

मौलाना अमजद अली आअज़मी रहमतुल्लाहि अलैह

सदरुश्शरीअह हज़रत मौलाना हकीम अबुल उला शाह अमजद अली क़ादिरी बरकाती रज़वी आअज़मी रहमतुल्लाहि तआला अलैह 1296 हि० में घोसी ज़िला आअज़म गढ़ (मौजूदा ज़िला मऊ) में पैदा हुए। बड़े साहिबे इल्मो फज़्ल थे। आप एक अच्छे हकीम भी थे पटना में एक साल मतब भी किया इल्मे फ़िक़्ह आप का

पसन्दीदा मौज़ूअ था। दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ में बरसों मन्सबे तदरीस पर फाइज़ रहे वहीं आअला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ फाज़िले बरेलवी से शरफे बैअतो ख़िलाफत हासिल किया तक़रीबन अठारह बरस शैख़े कामिल के फुयूज़ो बरकात से मुस्तफीज़ होकर कमाले उरूज को पहुँचे।

मदरसतुल हदीस पीलीभीत, मदरसा मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ, दारुल उलूम हाफिज़ीया सईदिया दादूँ (अलीगढ़) और दारुल उलूम मुईनिया उस्मानिया अजमेर शरीफ में दर्सो तदरीस की ख़िदमात अन्जाम दीं। पीरो मुर्शिद आअला हज़रत फाज़िले बरेलवी के विसाल के बाद 1342 हि० में आप अजमेर शरीफ तशरीफ लेगए जहाँ उस ज़माने में दारुल उलूम मुईनिया उस्मानिया के नाम से एक मेआयारी दीनी दर्सगाह थी। बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से हुसूले फुयूज़ो बरकात के साथ आप के दरियाए इल्म से सैराब होने वालों में मुल्क की अज़ीमो जलील दीनी व इल्मी शख़्सियतें थीं बिल ख़ुसूस सैय्यिदुल उलमा हज़रत मौलाना हकीम सैय्यिद शाह आले मुस्तफा मियाँ क़ादिरी बरकाती मारहरवी, शेरे बेशए अहले सुन्नत हज़रत मौलाना हशमत अली ख़ाँ साहब क़ादिरी रज़वी पीलीभीती, हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हबीबुर्रहमान साहब क़ादिरी, शम्सुल उलमा हज़रत मौलाना क़ाज़ी शम्सुद्दीन साहब जाअफरी जौनपुरी, हाफिज़े मिल्लत हज़रत मौलाना अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिस मुबारकपुरी, सदरुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यिद गुलाम जीलानी मेरठी, मुहद्दिसे पाकिस्तान हज़रत मौलाना सरदार अहमद ख़ाँ साहब और अमीने शरीअत हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद रिफाक़त हुसैन साहब मुफ्तिए आअज़म कानपुर रहि म हुमुल्लाहु तआला वग़ैरहुम के अस्माए गिरामी क़ाबिले ज़िक्र हैं।

हज़रत सदरुश्शरीअह ने अपने होनहार तलाममज़ा के साथ दर्सो तदरीस के बहाने तक़रीबन दस साल तक सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू से इक्तिसाबे फैज़ किया। 1351 हि० में आप फिर अपने पीरो मुर्शिद के आस्तानए पाक पर रूहानी बरकतें हासिल करने केलिए बरेली शरीफ तशरीफ ले आए। आअला हज़रत का तरजुमए क़ुरआन „कन्ज़ुल ईमान„ आप ही की कोशिशों का नतीजा है „बहारे शरीअत„ फिक़्हे हनफी के मुताबिक़ मसाइले शरईया का बेशबहा मजमूआ आप की

शुहरए आफ़ाक़ और मक़्बूले ख़ासो आम गिराँ क़द्र तसनीफ़ है। आप की दीगर तसनीफ़ात में „हाशिया बर शर्हे मआनियुल आसार„ „फ़तावए अमजदिया„ और „इस्लामी अख़लाक़ो आदाब„ वग़ैरह आप की मशहूर इल्मी यादगार हैं।

आप का विसाल हरमैने तैय्यिबैन की दूसरी हाज़िरी केलिए सफ़र पर जाते हुए बम्बई में 2 ज़ीक़ाअदा 1367 हि0 बरोज़े दोशंबए मुबारका हुआ। मज़ारे मुबारक क़स्बा घोसी ज़िला मऊ में है जहाँ हर साल बड़े एहतेमाम से उर्स की तक़रीबात मुन्अक़िद होती हैं।

हज़रत मौलाना हशमत अली ख़ाँ साहब रहमतुल्लाहि अलैह

शेरे बेशए अहले सुन्नत हज़रत मौलाना हशमत अली ख़ाँ रहमतुल्लाहि तआला अलैह की विलादत 1319 हि0 में क़स्बा अमेठी ज़िला लखनऊ में हुई। आप ने हिफ्ज़ो क़िराअत और दर्से निज़ामी के मुतवस्सितात तक की ताअलीम मदरसा फ़ुरक़ानिया लखनऊ में हासिल की 1336 हि0 में बरेली शरीफ हाज़िर होकर आअला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी, हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ(शहज़ादए आअला हज़रत) और सदरुश्शरीअह मौलाना अमजद अली क़ादिरी रज़वी आअज़मी व दीगर अहले इल्म बुज़ुर्ग उलमा व फ़ुज़ला से इक्तिसाबे इल्म फरमाया। दौरे तालिबे इल्मी ही में आअला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी के दस्ते हक़परस्त पर बैअत और इजाज़तो ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए। 1340 हि0 में दस्तारबन्दी के मौक़े पर दीगर असातज़ए किराम ने भी सनदो इजाज़तो ख़िलाफ़त से नवाज़ा। आप एक मुतबह्हिर, ज़हीन, हाज़िर जवाब और मुतसल्लिब फ़िद्दीन आलिम, ख़तीब और मुनाज़िर थे।

आप ने मदरसा मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़, दारुल उलूम मिस्कीनिया धौराजी गुजरात और मदरसा अहले सुन्नत पादरा ज़िला बड़ोदा गुजरात में तदरीसी ख़िदमात अन्जाम दीं। आप के मशाहीर तलामज़ा में सैय्यिदुल उलमा हज़रत अल्लामा सैय्यिद शाह आले मुस्तफा मियाँ क़ादिरी बरकाती मारहरवी, मुफस्सिरे आअज़मे हिन्द नबीरए आअला हज़रत, हज़रत मौलाना मुहम्मद

इब्राहीम रज़ा ख़ाँ क़ादिरी रज़वी, शैख़ुल उलमा हज़रत अल्लामा ग़ुलाम जीलानी आअज़मी क़ादिरी, मुफ़्तिए मालवा हज़रत अल्लामा मुहम्मद रिज़वानुर्रहमानसाहब क़ादिरी, मुफ़्तिए धौराजी हज़रत अल्लामा मुफ्ती अहमद मियाँ क़ादिरी, मुफ्तिए जावरा हज़रत मौलाना मुहम्मद तैय्यब साहब दानापुरी और अहसनुल उलमा हज़रत अल्लामा सैय्यिद शाह मुस्तफा हैदर हसन मियाँ क़ादिरी बरकाती मारहरवी रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन के अस्माए गिरामी ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं। आप ने बारगाहे रिसालत के गुस्ताख़ और औलियाए किराम की अज़मतों के मुन्किर गरोहे वहाबिया से मुतअद्दिद तारीख़ी मुनाज़रे किए। आप की तक़रीरों का ख़ास मौज़ूअ रद्दे वहाबिया ही होता था इस में आप को पूरी महारत हासिल थी जिस से आप की इश्क़े रसूल में सरशारी का अन्दाज़ा होता है।

दीगर उलमा व मशाइख़े अहले सुन्नत की तरह सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से आप को भी बड़ी अक़ीदत और महब्बत थी जिस के इज़्हार केलिए अक्सरो बेशतर बारगाहे ग़रीब नवाज़ में हाज़िरी केलिए अजमेर शरीफ का सफ़र फरमाते थे। एक बार की हाज़िरी का सुबूत तो आप के तिलमीज़े रशीद हज़रत सैय्यिदुल उलमा अलैहिर्रहमह के दर्जे ज़ैल वाक़ेअे से मिलता है जिसे हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद महबूब अली ख़ाँ साहब अलैहिर्रहमह ने „सवानेहे शेरे बेशए सुन्नत„ में नक़्ल फरमाया है।

> „(हज़रत सैय्यिदुल उलमा) फरमाते हैं कि जिस ज़माने में मैं तालिबे इल्म था अजमेरे मुक़द्दस में आअला हज़रत का यह शेर मुतालअे में आया
>
> ज़बाने फ़ल्सफ़ी से अम्ने ख़र्क़ो इल्तेयाम अस्रा
> पनाहे दौरे रहमतहाए एक साअत तसलसुल को
>
> बहुत ग़ौर करता रहा मगर समझ में नहीं आया ....कुछ रोज़ बाद शेरे बेशए सुन्नत अजमेरे मुक़द्दस तशरीफ़ लाए, इस शेर का मतलब उन से दरयाफ्त किया तो सुनते ही आप ने फरमाया „मतलब बिलकुल साफ है।„
>
> फल्सफी ख़र्क़ो इल्तेयामे अफ्लाक को मुहाल बताते हैं मगर जब आयते अस्रा के माअना पर ग़ौर किया जाए तो फल्सफी के मक़ूलए इस्तेहालए ख़र्क़ो इल्तेयाम से बिल्कुल अम्न हासिल होजाता है कि अस्रा के माअना हैं लेजाना और लेजाने वाला क़ादिरे मुतलक़ है तो फल्सफी का इस्तेहालए ख़र्क़ो इल्तेयाम बातिल हो गया।„

रादुल मुहन्नद, अजमले अनवारे रज़ा, सत्तर बाअदब सुवालात, तक़रीरे मुनीरे क़ल्ब, अस्सवारिमुल हिन्दिया, मज़्हरुल हक़्क़िल अजल, रद्दे सीरत कमेटी, अलक़ौलुल अज़्हर,, क़हरे वाजिदे दैय्यान, सैफे ख़ुदावन्दी, अलजवाबातुस्सनीया, अलक़लादतुत्तैय्येबतुल मुरसिआ, अलअनवारुल ग़ैबिया, क़हरु
तक़रीबन चालीस किताबें और रिसाले आप की इल्मी व क़लमी यादगार हैं।

आप को कुतबे मदीना हज़रत अल्लामा ज़ियाउद्दीन क़ादिरी रज़वी से भी इजाज़तो ख़िलाफत हासिल थी आप के मुरीदीनो खुलफा मुल्क में दीनो सुन्नियत की तबलीग़ में मसरूफ हैं उन में बहुत से लोग इस दुन्या से रुख़्सत भी हो चुके हैं बीस हज़ार से ज़ाइद मुरीदीन और पचास से ज़ाइद खुलफा की ताअदाद बताई जाती है। आप के साहबज़ादगान हज़रत अल्लाम मुशाहिद रज़ा ख़ाँ साहब, हज़रत अल्लामा मुहम्मद मशहूद रज़ा ख़ाँ साहब, हज़रत अल्लामा मुहम्मद इदरीस रज़ा ख़ाँ साहब, हज़रत मौलाना मुहम्मद माअसूम रज़ा ख़ाँ साहब और हज़रत मौलाना मुहम्मद नासिर रज़ा ख़ाँ साहब अपने वालिदे गिरामी के नक़्शे क़दम पर चल कर दीनो मिल्लत और मस्लके आअला हज़रत की तरवीजो इशाअत में मसरूफ हैं। आप के फरज़न्दे अक्बर हज़रत अल्लाम मुहम्मद मुशाहिद रज़ा ख़ाँ साहब का विसाल हो चुका है। इस वक़्त तमाम साहबज़ादगान में हज़रत अल्लामा मुहम्मद इदरीस रज़ा ख़ाँ साहब अपने वालिदे गिरामी के मिशन को फरोग़ देने में पूरी तवज्जुह और तुन्दही से मुन्हमिक और मसरूफ हैं और पूरे मुल्क में मशहूरो मुतआरफ हैं।

आप का विसाल 8 मुहर्रमुल हराम 1380 हि0 में हुआ मज़ारे मुबारक पीलीभीत शरीफ में है 21, 22, 23 सफरुल मुज़फ्फर को हर साल बड़े तुज़्को एहतेशाम से उर्स होता है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद

महबूब अली ख़ाँ साहब रहमतुल्लाहि अलैह

ग़ाज़िए मिल्लत हज़रत मौलाना मुफ्ती अबुज़्ज़फर मुहिब्बुर रज़ामुहम्मद महबूब अली ख़ाँ साहब क़ादिरी मुफ्तिए आअज़म बम्बई हज़रत शेरे बेशए अहले सुन्नत के बिरादरे असग़र थे लखनऊ में

विलादत हुई हिफ्ज़े क़ुरआने पाक और इब्तेदाई तालीम दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ में हासिल की। दारुल उलूम हिज़्बुल अहनाफ लाहौर में हज़रत मौलाना सैय्यिद दीदार अली अलवरी क़ुद्दि स सिर्रुहू से दौरए हदीस की तक्मील करके सनदे फज़ीलत हासिल की।

अल्लाह तआला ने हक़ बोलने और हक़ लिखने की बेपनाह सलाहियत आप को अता की थी तहरीर से आप को इस दर्जा शग़फ था कि तादमे ज़ीस्त परवरिशे लौहो क़लम और फिर उस की नश्रो इशाअत में सरगर्मे अमल रहे। आप ने अक्सर इस्लाहे अक़ाइदे फासिदा के मौज़ूअ पर क़लम उठाया है। किताबों का मौज़ूअ ख़ालिस इल्मी रंग लिए हुए है किताबों के मुतालअे से इल्मी दक़ीक़ारसी और नुक्ता शनासी का अन्दाज़ा होता है। आप की जुम्ला तसानीफ का इहाता तो नहीं किया जासकता अलबत्ता इतना लिखने में हक़ बजानिब हूँ कि वह दरजनों अहम किताबों के मुसन्निफ थे।

तहसीले इल्म से फराग़त के बाद एक अर्से तक लखनऊ में दीने हक़ की इशाअत फरमाते रहे फिर आप पटियाला तशरीफ लेगए और वहाँ भी इल्मे दीन की वह शमा रौशन की जिस से अपने तो अपने बेगानों के क़ुलूब भी मुनव्वर हुए बग़ैर न रह सके। कितनों को आप ने दाख़िले इस्लाम किया। ऐसा जादुई लबो लेहजा खुदा ने आप को अता किया था कि हर तक़रीर में कोई न कोई दुशमने रसूल आशिक़े रसूल ज़रूर बन जाता। आप के वाअज़ से ही मुतअस्सिर होकर एक ईसाई भी इस्लाम की दौलत से मालामाल हुआ। उरूसुल बिलाद बम्बई उज़्मा में सुन्नियत की इशाअत आप ही की जिद्दो जहद का नतीजा है। पटियाला में एक अर्सा ख़िदमते दीन अन्जाम देने के बाद हज़रत शेरे बेशए अहले सुन्नत के हुक्म से बम्बई जैसे अज़ीम शहर की सुन्नी बड़ी मस्जिद (मदनपुरा) में इमामो ख़तीब की हैसियत से तशरीफ लाए और साथ ही उन्हें उस अज़ीम शहर में इफ्ता की ज़िम्मेदारी सुपुर्द करके मुफ्तिए आअज़मे बम्बई जैसे अहम लक़ब से नवाज़ा गया।

शरीअत का उन्हें बेहद पास था ज़ुहदो तक़्वा उन की ज़िन्दगी का हिस्सा बन चुका था कोई काम करने से पहले शरई नुक़्तए नज़र से उस का जाइज़ा ज़रूर लेते। ज़ियारते हरमैने तैय्यिबैन की सआदत से भी बहरामन्द थे बैअतो इरादत का भी सिलसिला था

सिलसिलए क़ादिरीया में सैकड़ों मुरीदीन उन के दामने इरादत से वाबस्ता हैं आप ख़ुद आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी अलैहिर्रहमह के दस्ते हक़परस्त पर बैअत थे।

आप को औलियाए किराम व उलमाए इज़ाम से बड़ी अक़ीदत और महब्बत थी दीगर आस्तानों के अलावा आस्तानए सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू पर हाज़िरी केलिए अक्सरो बेशतर अजमेर शरीफ का सफर फरमाते थे और वहाँ इन्तेहाई अक़ीदत के साथ ख़ुलूसो महब्बत का नज़्राना पेश करते थे।

24 जुमादल उख़्रा 1385 हि0 मुताबिक़ 20 अक्तूबर 1965 को आप ने सफ़रे आख़िरत किया बम्बई के नारियल बाड़ी क़ब्रिस्तान में ही आप का मदफ़न है और हर साल तारीख़े विसाल पर आप का उर्स भी मुन्अक़िद होता है। आप के दो नामवर फरज़न्द हज़रत अल्लामा अलहाज मुहम्मद मनसूर अली ख़ाँ साहब क़ादिरी और हज़रत मौलाना अलहाज मुहम्मद मक़सूद अली ख़ाँ साहब क़ादिरी अपने वालिदे माजिद की तरह आज भी ख़िदमाते दीनो सुन्नियत में हमातन मसरूफ हैं।

हज़रत अल्लामा सैय्यिद आले मुस्तफा रहमतुल्लाहि तआला अलैह

सैय्यिदुल उलमा हज़रत अल्लामा हाफिज़ क़ारी मुफ्ती हकीम अलहाज सैय्यिद शाह आले मुस्तफा सैय्यिद मियाँ क़ादिरी बरकाती मारहरवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह 25 रजबुल मुरज्जब 1333 हि0 बरोज़ बुध मारहरा शरीफ ज़िला एटा में पैदा हुए। अपने नाना हज़रत अबुल क़ासिम शाह इस्माईल हसन और ख़ाले मुहतरम हज़रत ताजुल उलमा मौलाना सैय्यिद शाह औलादे रसूल मुहम्मद मियाँ क़ादिरी अलैहिमर्रहमह से उलूमे दरसियए मुरव्वजा का इक्तेसाब किया। सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू के आस्तानए अक़दस पर दारुल उलूम मुईनिया उस्मानिया में हुज़ूर सदरुश्शरीअह मौलाना मुहम्मद अमजद अली साहब आअज़मी के बहुत ही चहीते और अरशद तलामज़ा में से थे। तिब्बिया कालेज अलीगढ़ से तिब में डी, आई, एम, एस का डिपलोमा हासिल किया। बम्बई की खड़क मस्जिद में इमामत के मन्सब पर फाइज़ हुए आल इन्डिया सुन्नी जम्ईयतुल उलमा के बानी व सद्र थे ता दमे आख़िर इस आहदे पर फाइज़ रह कर दीनो मिल्लत की

ख़िदमात अन्जाम देते रहे आप ने दीनो सुन्नियत की तबलीगो इशाअत केलिए अपना सब कुछ वक़्फ कर दिया था। तबलीगे दीन, इशाअते अक़ाइदे हक़्क़ए अहले सुन्नत व जमाअत और रद्दे फिर्क़हाए ख़बीसए मल्ऊना के सिलसिले में मुल्क भर के दौरे किए आख़िर उम्र में दौरे पर नेपाल तशरीफ लेगए जहाँ काफी ताअदाद में लोग सिलसिलए आलियए क़ादिरीयए बरकातिया में दाख़िल हुए कई ग़ैर मुस्लिम आप के हाथ पर मुशर्रफ ब इस्लाम हुए। आप को तमाम सलासिले ख़ानवादए बरकातिया मारहरा मुतहहरा क़दीमा व जदीदा की इजाज़तो ख़िलाफत अपने नाना हज़रत अबुल क़ासिम शाह इस्माईल हसन से थी हज़रत ताजुल उलमा से भी ख़िर्क़ए ख़िलाफत हासिल किया उन के अलावा सैय्यिद शाह मेहदी हसन साहब और हज़रत शाह इरतेज़ा हुसैन साहब के वसी व जानशीं भी थे।

हज़रत सैय्यिदुल उलमा मुस्तनद आलिमे दीन, तबीबे हाज़िक़, शैख़े तरीक़त और अदीबो शाइरहोने के साथ साथ एक फ़क़ीदुल मिसाल ख़तीबो मुक़र्रिर भी थे। उन की तक़रीरइतनी फसीहो बलीग़ और जाज़िबो पुरकशिश होती थी कि आख़िर तक मजमा टस से मस नहीं होता था। तबीअत में ख़ुददारी कूट कूट कर भरी हुई थी। हक़्क़ो सदाक़त के इज़्हार में कभी कोई दबाव या लालच को आड़े नहीं आने दिया।

मैदाने शेरो सुख़न में दाग़ देहलवी के शागिर्दे रशीद हज़रत अहसन मारहरवी से तलम्मुज़ था सैय्यिद तख़ल्लुस फरमाते थे। नाअतो मन्क़बत के अलावा बहारिया में भी तबअ आज़माई की है। दो इस्लाही नाविल „मुक़द्दस ख़ातून„ और „नई रोशनी„ के साथ साथ एक तन्क़ीदी मक़ाला „फ़ैज़े तंबीह„ आप की इल्मी व अदबी यादगारें हैं।

10–11 जुमादल उख़्रा की दरमियानी शब में ग्यारह बजकर चालीस मिनट पर दारे फानी से दारे बक़ा की तरफ कूच फरमाया। मारहरा मुतहहरा (ज़िला एटा) में अपने नाना हज़रत अबुल क़ासिम शाह इस्माईल हसन साहब के रौज़े में दफ्न हुए।

हाफिज़े मिल्लत मौलाना अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैह

हाफिज़े मिल्लत हज़रत मौलाना अलहाज हाफिज़ अब्दुल

अज़ीज़ साहब मुहद्दिस मुरादाबादी सुम्मा मुबारकपुरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की विलादत 1314 हि० में क़स्बा भोजपुर ज़िला मुरादाबाद में हुई। इब्तेदाई ताअलीम वालिदे माजिद हाफिज़ ग़ुलाम नूर और भोजपुर के एक स्कूल में हासिल की। वालिदे माजिद की निगरानी में ही हिफ्ज़े क़ुरआन मुकम्मल किया। फारसी व अरबी की इब्तेदाई ताअलीम जनाब मौलवी अब्दुल मजीद साहब भोजपुरी से हासिल करने के बाद जामेआ नईमिया मुरादाबाद में दाख़िल हुए वहाँ तीन साल तक क़ेयाम करने के बाद 1342 हि० में मदरसा मुईनिया अजमेर शरीफ में हाज़िर होकर सद्रुश्शरीअह हज़रत मौलाना मुहम्मद अमजद अली साहब आअज़मी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से शरफे तलम्मुज़ हासिल किया। ज़मानए तालिबेइल्मी में ही शैख़ुल मशाइख़ मौलाना सैय्यिद शाह अली हुसैन अशरफी मियाँ किछौछवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के दस्ते हक़ परस्त पर आस्तानए ग़रीब नवाज़ पर शरफे बैअत हासिल किया फिर मुबारकपुर में क़ेयाम के दौरान हज़रत ने आप को ख़िलाफत से भी नवाज़। आप को अपने उस्ताज़े गिरामी हज़रते सद्रुश्शरीअह से भी क़ादिरी रज़वी सिलसिले में 1351 हि० में दस्तार बन्दी के मौक़े पर बरेली शरीफ में ख़िलाफत अता हुई 1353 हि० में अपने मुश्फिक़ उस्ताज़ व मुर्शिद हज़त सद्रुश्शरीअह के हुक्म से आप मुबारकपुर तशरीफ लाए जहाँ आज अहले सुन्नत व जमाअत की मुल्की सतह पर सब से बड़ी दीनी इल्मी दर्सगाह अलजामेअतुल अशरफिया अरबी यूनिवरसिटी की शक्ल में दीनी व इल्मी ख़िदमात की अन्जामदही में मसरूफ है। यह आप ही की पुर ख़ुलूस मेहनतों और काविशों का नतीजा है। आप बड़े साहिबे इल्मो फज़्ल व ज़ुहदो तक़्वा आलिम थे आप के शागिरदों की ताअदाद हदो शुमार से बालातर है। आप ने एक मौक़े पर इरशाद फरमाया कि:

„हाज़िरीए हरमैने तैय्यिबैन से क़ब्ल मैं कहा करता था कि मेरी ज़िन्दगी का सब से क़ीमती वक़्त ज़मानए तालिबे इल्मी का वह नौसाला दौर है जो अजमेरे मुक़द्दस बारगाहे ग़रीब नवाज़ अलैहिर्रहमह में हज़रत सद्रुश्शरीअह अलैहिर्रहमह की कफश बरदारी में गुज़रा लेकिन अब मैं कहता हूँकि मेरी ज़िन्दगी का सब से क़ीमतीऔर पुरकैफ वक़्त यह ग्यारह रोज़ हैं जो बारगाहे रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम की हाज़िरी के ऐय्याम हैं।„

अलजामेअतुल अशरफिया व दीगर इल्मी व तबलीग़ी मसरूफियतों के बावुजूद जो आप ने तहरीरी ख़िदमात अनजाम दी हैं वह हसबे ज़ैल हैं।

मआरिफे हदीस, इरशादुल क़ुरआन, अल इरशाद, इंबाउल ग़ैब, अल मिसबाहुल जदीद, फिरक़ए नाजिया (सब मतबूआ) फतावा अज़ीज़िया (ग़ैर मतबूआ) और हाशियए शर्हे मिरक़ात मुसन्नफा मौलाना अब्दुल हक़ ख़ैराबादी (नामुकम्मल और ग़ैर मतबूआ) आप का विसाल यकुम जुमादल उख़्रा 1396 हि० बरोज़ दोशंबा शब में ग्यारह बजकर पचास मिनट पर हुआ। अलजामुअतुल अशरफिया में ही आप का मज़ारे पुर अनवार है। तारीख़े विसाल पर हर साल एतेमाम के साथ उर्से मुबारक की तक़रीबात अन्जाम पाती हैं उसी मौक़े पर जामेआ से फारिग़ होने वाले तलबा की दस्तार बन्दी भी अमल में आती है।

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत रहमतुल्लाहि तआला अलैह

हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत हज़रत अल्लामा अलहाज अश्शह मुहम्मद हबीबुर्रहमान साहब क़ादरी अब्बासी अलैहिर्रहमह 8 मुहर्रमुल हराम 1322 हि० बरोज़ दोशंबा उड़ीसा के ज़िला बालासोर के क़स्बा धाम नगर में एक जागीरदार मगर दीनदार घराने में पैदा हुए। आप अब्बासी हाशमी सैय्यिद हैं। आप के जद्दे आअला शाह कमाल बलख़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह बन्दगाने ख़ुदा की रुश्दो हिदायत केलिए बलख़ से पटासपुर ज़िला मिदनापुर (मग़्रिबी बंगाल) तशरीफ लाए थे हज़रत मुजाहिदे मिल्लत का जद्दे आअला शाह कमाल बलख़ी तक शजरए नसब दर्जे ज़ैल है।

हज़रत मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हबीबुर्रहमान इब्ने अब्दुल मन्नान इब्ने मुल्ला मज़हरुल हक़ इब्ने मुहम्मद सादिक़ अली उर्फ पुरान मियाँ इब्ने मुल्ला मुहम्मद ग़ुलाम अली उर्फ धन मियाँ इब्ने मौलाना मुहम्मद सादिक़ उर्फ मियाँ साहब इब्ने मौलाना साअदुद्दीन इब्ने मौलाना मुहम्मद ताहिर इब्ने मौलाना मुहम्मद सादिक़ अली इब्ने शाह मुहम्मद याअक़ूब इब्ने मौलाना ख़ुदा बख़्श इब्ने हज़रत शाह कमाल बलख़ी अलैहिमुर्रहमह और शाह कमाल बलख़ी का सिलसिलए नसब चन्द वास्तों से सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम के मुक़द्दस चचा हज़रत अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु से मिलता है।

आप रऊफ़िया स्टेट नामी ख़ान्दानी बहुत बड़ी जागीर के वारिस व मुतवल्ली थे साथ ही इल्मी, दीनी,व रूहानी रुजहान भी आप का ख़ान्दानी वस्फ़ था। आप ने अपने ज़माने के मशाहीर माहिरे फुनून उलमा व मशाइख़ से उलूमो फुनून की तहसील फ़रमाकर अपने मुआसिरीन में इम्तेयाज़ी हैसियत और इन्फ़ेरादी मक़ाम हासिल किया। आप के मशाहीर और मुम्ताज़ तलामज़ा में शम्सुल उलमा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद निज़ामुद्दीन साहब बल्यावी सुम्मा इलाहाबादी, हज़रत मौलाना अब्दुर्रब साहब मुरादाबादी, हज़रत मौलाना अलहाज नईमुल्लाह ख़ाँ साहब, हज़रत मौलाना सैय्यिद अब्दुल क़ुद्दूस साहब भदरकी, हज़रत मौलाना सैय्यिद अब्दुलहई साहब अजमेरी सुम्मा जयपुरी, ख़तीबे मश्रिक़ हज़रत अल्लामा मुशताक़ अहमद साहब निज़ामी, हज़रत मौलाना क़ारी सैय्यिद मक़बूल हुसैन साहब इलाहाबादी और हज़रत मौलाना आशिक़ुर्रहमान साहब के अस्माए गिरामी क़ाबिले ज़िक्र हैं।

मदरसा सुबहानिया में दौरे तालिबे इल्मी में ही मदरसे के बानी व मुहतमिम हज़रत मौलाना अब्दुलकाफ़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने आप को सिलसिलए क़ादिरिया नक़्शबन्दिया मुजद्दिदिया में बैअत से सरफ़राज़ फ़रमाया और मज़कूरा सलासिल में इजाज़तो ख़िलाफ़त अहसनुल हुकमा हज़रत मौलाना सैय्यिद शाह मुहम्मद अहसन अलमाअरूफ़ ब हकीम बादशाह अलैहिर्रहमह ने अता फ़रमाई। सिलसिलए क़ादिरिया मुअम्मरिया मुनव्वरिया और सिलसिलए चिश्तिया निज़ामिया अशरफ़िया की इजाज़तो ख़िलाफ़त शैख़ुल मशाइख़ मौलाना सैय्यिद शाह अली हुसैन अशरफ़ी मियाँ किछौछवी अलैहिर्रहमह से हासिल हुई और साथ ही दुआए सैफ़ी की इजाज़त भी। क़ुतबे मदीना हज़रत अल्लामा ज़ियाउद्दीन महाजिरे मदनी अलैहिर्रहमह ने सिलसिलए आलिया क़ादिरिया मुअम्मरिया चिश्तिया की इजाज़त दी नीज़ हदीस और दीगर सलासिल की इजाज़त भी मरहमत फ़रमाई। हज़रत मौलाना मिस्बाहुल हसन और हज़रत मौलाना अब्दुल क़दीर बदायूनी ने हदीस की सनदे इजाज़त अता फ़रमाई। हज़रत अल्लामा अब्दुल क़दीर बदायूनी अलैहिर्रहमह की मईयत में सरकारे ग़ौसे पाक के आस्ताने से वापसी पर हज़रत मौलाना साअदुल्लाह मक्की

रहमतुल्लाहि तआला अलैह से दलाइलुल ख़ैरात, क़सीदा बुर्दा शरीफ़, हिज़्बुल बहर, हिज़्बुल आअज़म और हिस्ने हसीन वग़ैरह की इजाज़त अता फ़रमाई। सिलसिलए हुस्सामिया की इजाज़तो ख़िलाफ़त हज़रत मौलाना शाह ज़ुहूर हुस्साम मानिकपुरी अलैहिर्रहमह से मिली और तारीख़े मशैख़त का एक नादिर वाक़ेआ यह ज़ुहूर में आया कि सरकारे मुजाहिदे मिल्लत के उस्ताज़ और मुर्शिदे इजाज़त शाह ज़ुहूर हुस्साम मानिकपूरी ने ख़ुद सरकारे मुजाहिदे मिल्लत से सिलसिलए क़ादिरिया मुनव्वरिया की इजाज़त हासिल की 1350 हि0 में शहज़ादए आअला हज़रत हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अल्लामा शाह मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ाँ अलैहिर्रहमह ने सरकारे मुजाहिदे मिल्लत को तमाम सलासिल की इजाज़त अता फ़रमाई साथ ही क़ुरआने हकीम, सिहाहो सुनने अहादीस, अज़्कारो आअमालो औराद की इजाज़त से भी सरफ़राज़ फ़रमाया। उस के बाद आप दीनी, इल्मी, क़ौमी व समाजी ख़िदमात की अन्जामदही में मसरूफ़ हो गए मुल्क भर में तबलीग़ी दौरे दीनी जल्सों, कान्फ्रन्सों और मुनाज़रों में शिरकत, मदारिस का क़ेयाम, तन्ज़ीमों की तशकील और आम लोगों के रुश्दो हिदायत यही आप की ज़िन्दगी के अहम मशग़ले थे। सरकारे ग़ौसियम मआब की बारगाह में हाज़िरी केलिए बग़दादे मुक़द्दस का सफ़र और हज्जो ज़ियारते हरमैने तैय्यिबैन केलिए भी मुतअद्दिद सफ़र फ़रमाए। बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू में हाज़िरी केलिए अजमेरे मुक़द्दस के सफ़र तो अनगिनत हैं। हर साल 6 रजब को उर्से पाक के मौक़े पर तो हाज़िरी लाज़िमी थी उस के अलावा भी साल में कई बार हाज़िरी के शरफ़ से मुशर्रफ़ होते और अक्सरो बेशतर हज़रत मौलाना सैय्यिद अब्दुलहई साहब अजमेरी अलैहिर्रहमह के इशरतकदे पर क़ेयाम फ़रमाते। सैय्यिद साहब मौसूफ़ हज़रत ख़्वाजा मौदूद चिश्ती की औलादे अम्जाद में हैं और इस निस्बत से वह सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के पीरज़ादगान में होते हैं और सरकारे मुजाहिदे मिल्लत के बड़े चहीते शागिर्द हैं। हज़रत मौलाना अब्दुत्तव्वाब साहब हबीबी ख़लीफ़ए हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत का बयान है कि :

„सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज क़ुद्दि स सिरुहू के उर्स शरीफ़ के मौक़े पर हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत क़ुद्दि स सिर्रुहू हजरत मौलाना सैय्यिद अब्दुलहई साहब के मकान पर ही

केयाम फरमाते थे और रुख़्सत होते वक़्त कुछ रक़म मुझे इनायत फरमाते कि हज़रत मौलाना सैय्यिद अब्दुलहई अलैहिर्रहमह को पेश कर दूँ। सरकारे मुजाहिदे मिल्लत की उर्से ग़रीब नवाज़ में यह आख़िरी हाज़िरी थी रुख़्सत होते वक़्त माअमूल के मुताबिक़ मुझे रक़म इनायत फरमाई कि सैय्यिद साहब को पेश कर दूँ लेकिन फौरन ही इरशाद फरमाया कि „अब्दुत्तव्वाब! मैं चाहता हूँ कि इस दफ़्आ मैं ख़ुद नज़राना पेश करूँ तुम मौलाना सैय्यिद अब्दुलहई साहब को बुला लाओ।„ मैं ने जाकर उन्हें पैग़ाम सुनाया। हज़रत मौलाना तशरीफ ले आए सरकारे मुजाहिदे मिल्लत ने बड़ी महब्बत व इसरार के साथ नज़राना पेश किया और सैय्यिद साहब का हाथ अपने हाथों में लेकर इरशाद फरमाया कि „मौलाना वाअ्दा करो कि बारगाहे सरकारे ग़रीब नवाज़ में जाकर मेरे लिए दुआ करोगे।„

सैय्यिद साहब ने कहा कि „हुज़ूर! मैं आप केलिए दुआ करूँगा ।„

सरकारे मुजाहिदे मिल्लत ने फिर महब्बत भरे अन्दाज़ में इसरार किया कि „मौलाना वहाँ जाकर दुआ करने का वाअदा करो।„

सैय्यिद साहब चीख़ मार कर रो पड़े और कहा „हुज़ूर! वहाँ जाने का वाअदा न लें। मैं वहाँ जाने के लाइक़ नहीं हूँ वह बारगाह तो फरिश्तों की गुज़रगाह है।

यह सुन कर सरकारे मुजाहिदे मिल्लत भी बेक़रार होगए और रोते रोते हिचकी बंध गई जब कुछ सुकून हुआ तो सरकारे मुजाहिदे मिल्लत ने फरमाया „मौलाना अब्दुलहई साहब! बात तो आप सच कह रहे हैं अल्लाह तआला अपने हबीबे पाक के सदक़े में हम सब को उस बारगाहे आली वक़ार में सही अदबो ताअज़ीम बजा लाने की तौफीक़ अता फरमाए।„ (अल हबीब पक्सरावाँ राय बरेली „ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ नम्बर„ मार्च अप्रेल 2003 ई0)

पूरी ज़िन्दगी इल्मी व दीनी ख़िदमात के साथ क़ौमी, मिल्ली व समाजी कारकरदगियों में भी हमेशा मुजाहिदाना जुर्अतो बेबाकी का मुज़ाहरा करते हुए गुज़ारी मुतअद्दिद बार क़ैदो बन्द की सऊबतों से भी दोचार हुए। 6 जुमादल ऊला 1401 हि0 को बम्बई के इस्माईलिया अस्पताल में दाइये अजल को लब्बैक कहा। आप का

जसदे अत्हर बज़रिअए तैय्यारा कल्कत्ता और फिर वहाँ से धाम नगर (उड़ीसा) लेजाया गया जहाँ आप का आलीशान मक़बरा और आस्ताना ताअमीर हुआ और हर साल उर्से पाक में लाखों अक़ीदत मन्दों का बेताबाना हुजूम होता है।

हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द रहमतुल्लाहि अलैह

मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द अल्लामा अलहाज अश्शाह अबुल बरकात मुहियुद्दीन आले रहमान मुहम्मद मुस्तफा रज़ा ख़ाँ क़ादिरी बरकाती नूरी इब्ने आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फाज़िले बरेलवी क़ुद्दि स सिरुहुमा की विलादते बासआदत 22 ज़िलहिज्जा 1310 हि0 को बरेली शरीफ़ में हुई। आला हज़रत के मुर्शिदे इजाज़त ख़ान्क़ाहे बरकातिया के सज्जादा नशीन और उस ज़माने के मशहूर क़ारिदी बुज़ुर्ग ख़ातमुल अकाबिर हज़रत सैय्यिदुना शाह अबुल हुसैन अहमदे नूरी क़ुद्दि स रिहुलअज़ीज़ ने बरेली शरीफ तशरीफ आवरी के मौक़े पर छह माह की उम्र में हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द को अपनी आग़ोशे महब्बत में लेकर नेक दुआओं से नवाज़ा और मुंह में अंगुश्ते मुबारक डाल कर अपने हल्क़ए इरादत में दाख़िल किया और तमाम सलासिले तरीक़त की इजाज़तो ख़िलाफत से सरफराज़ फरमाया। बैअत करते वक़्त मुर्शिदे कामिल ने फरमाया कि „यह बच्चा दीनो मिल्लत की बड़ी ख़िदमत करेगा और मख़लूक़े ख़ुदा को इस की ज़ात से बहुत फैज़ पहुँचेगा। यह बच्चा वली है इस की निगाह से लाखों गुमराह इन्सान दीने हक़ पर क़ाइम होंगे और फैज़ का दरिया बहाएगा।„

आप ने जिन नाबेग़ए रोज़गार शख़्सियतों की बारगाहे इल्मो फ़ज़्ल में ज़ानुए तलम्मुज़ तह किया उन में वालिदे माजिद हुज़ूर आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेलवी, बिरादरे अक्बर हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अल्लामा हामिद रज़ा ख़ाँ, हज़रत अल्लाम शाह रहम इलाही मुज़फ्फर नगरी और हज़रत मौलाना बशीर अहमद अलीगढ़ी ज़ियादा मशहूर हैं।

हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द क़ुद्दि स सिर्रुहू के ज़मीरो ख़मीर और फितरतो सिरिश्त में तफक़्क़ुह फिद्दीन का वह मलिका वदीअत किया गया था कि आप अपने ज़माने में अपना कोई सानी और नज़ीर नही रखते थे यही वजह थी कि पाक, हिन्द और बंगलादेश

के अलावा ममालिक अफरीका, अमेरीका, श्रीलंका, मलेशिया, मश्रिक़े वुस्ता और यूरप तक के उलमा फतावा केलिए आप ही से रुजूअ फरमाते थे।

आप ने क़ौमी, मिल्ली और तन्ज़ीमी क़ेयादत का फरीज़ा भी अन्जाम दिया, फितनए इर्तेदाद के इन्सेदाद केलिए „जमाअते रज़ाए मुस्तफा„ ने जो तहरीक चलाई थी उस की सरबराही भी आप ही ने फरमाई थी और लाखों मुसलमानों को इर्तेदाद के फितने से महफूज़ रखने में कामयाबी हासिल की थी।

हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द ने दर्सो तदरीस, तस्नीफो तालीफ, बातिल मज़ाहिब और गुमराह फिरक़ों का रद्दो इब्ताल, दीनी जल्सों, कान्फ्रन्सों और मुनाज़रों में शिरकत, तबलीग़ी अस्फार और बैअतो इरशाद वग़ैरह जैसे हर महाज़ पर क़ौमो मिल्लत की हिदायतो रहबरी और मज़हबो मस्लक के फरोग़ो इर्तेक़ा के साथ साथ अज़मतो नामूसे रिसालत और इज़्ज़तो शाने औलियाअल्लाह की हिफाज़तो सियानत के अहम फराइज़े मन्सबी निहायत खुश उस्लूबी के साथ अन्जाम दिए हैं। आप ने बरेली शरीफ में दारुल उलूम मज़हरे इस्लाम के अलावा मुल्क के मुख़्तलिफ मक़ामात पर दीनी मदारिस भी क़ाइम फरमाए और तक़रीबन ढाई तीन दर्जन कुतुबो रसाइल तस्नीफ फरमाए जो रहती दुन्या तक लोगों की हिदायतो रहनुमाई का फरीज़ा अन्जाम देते रहेंगे।

हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द का हल्क़ए इरादत भी बहुत वसीअ है दुन्या के अक्सर ममालिक में आप के मुरीदीन मौजूद हैं यहाँतक कि हरमैनु शरीफैन में भी आप के मुरीदीन हैं दरगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अजमेरे मुक़द्दस की जामेअ मस्जिद के इमामो ख़तीब और दरगाह शरीफ के बहुत से शाहज़ादे आप के मुरीद हैं और बाज़ हज़रात को आप से इजाज़तो ख़िलाफत भी हासिल है।

गुज़श्ता सफहात में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के ख़ादिमे ख़ास हज़रत सैय्यिद फख़रुद्दीन गुर्देज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की औलाद अम्जाद में से सैय्यिद हुसैन अली वकीले जावरा अलैहिर्रहमह का ज़िक्र गुज़र चुका है कि आप आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा के मुरीदो ख़लीफा थे और आप के साहबज़ादे जनाब मौलवी सैय्यिद अहमद अली क़ादिरी चिश्ती रज़वी हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द के मुरीदो ख़लीफा थे और इस वक़्त सैय्यिद अहमद अली रज़वी साहब के साहबज़ादगान सैय्यिद असद

अली रज़वी, सैय्यिद फुरक़ान अली रज़वी, सैय्यिद इरफान अली रज़वी और सैय्यिद आसिफ अली रज़वी भी हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द के मुरीद और उन में से बाज़ भाई ख़लीफा भी हैं।

दीगर उलमा व मशाइख़े अहले सुन्नत की तरह हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द को भी सैय्यिदी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू से बेपनाह अक़ीदतो महब्बत थी उर्से मुबारक के ऐय्याम के अलावा साल के मुख़्तलिफ मवाक़ेअ पर आप अजमेर शरीफ हाज़िर होकर आस्तानए ग़रीब नवाज़ पर अपनी अक़ीदतो महब्बत की नज़्र पेश करना आप के माअमूलात में था।

एक मुहतात अन्दाज़े के मुताबिक़ हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द क़ुद्दि स सिर्रुहू के मुरीदीन की ताअदाद लगभग दो करोड़ है जिन में उलमा, फुज़ला, शुअरा, उदबा, मशाइख़, औलिया, मुदब्बिरीन, मुफक्किरीन, क़ाइदीन, दानिश्वर, प्रोफेसर और सहाफी साहिबान शामिल हैं, आप के खुलफा की ही उतनी ताअदाद है जितनी बड़े बड़े पीर साहिबान के मुरीदों की होगी।

आप का विसाल तक़रीबन 92 बरस की उम्र में 13 मुहर्रमुलहराम 1402 हि० को शब में एक बजकर चालीस मिनट पर हुआ जनाज़े में तक़रीबन 25 लाख अफराद ने शिरकत की आप का नूरानी जसदे अतहर वालिदे बुज़ुर्गवार के पहलू में बरेली शरीफ की मुक़द्दस धरती पर रज़वी गुंबद के साए में सुपुर्दे ख़ाक किया गया आप का मज़ारे मुबारक मरजए ख़लाइक़ है। हर साल 23, 24, 25 सफरुलमुज़फ्फर को वालिदे माजिद आअलाहज़रत के उर्स के साथ आप का भी उर्से मुबारक होता है जिस में लाखों की ताअदाद में उलमा, मशाइख़, मुरीदीन, मोअतक़िदीन और खुलफाए किराम शिरकत करते हैं।

हुज़ूर अमीने शरीअत रहमतुल्लाहि तआला अलैह

हुज़ूर अमीने शरीअत हज़रत अल्लामा अलहाज अश्शाह मुफ्ती मुहम्मद रिफाक़त हुसैन साहब साबिक़ मुफ्तिये आअज़म कानपुर क़ुद्दि स सिर्रुहू की विलादत माहे रबीउल अव्वल 1326 हि० के पहले पंजशंबा को भवानीपुर ज़िला मुज़फ्फरपुर बिहार में हुई। आप के आबा व अज्दाद में सिलसिलए चिश्तिया के कई नामी गिरामी बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। आप के मुरिशे आअला मख़्दूम जलालुद्दीन चिश्ती मशहदे मुक़द्दस से हाजीपुर तशरीफ लाए और जरुहा में मुक़ीम

हुए। हज़रत मख़्दूम को हज़रत उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू से 603 हि0 में इरादतो ख़िलाफ़तो इजाज़त का शरफ हासिल हुआ। उन के अख़्लाफ जठीली, जरूहा, बिहार शरीफ, आबगला वग़ैरह मक़ामात पर आबाद हुए उन्हीं में से एक मीर शाह जलालुद्दीन बअहदे शाहजहानी भवानीपुर आकर आबाद हुए जो हज़रत अमीने शरअत के जद्दे आअला हैं।

आप ने इब्तेदाई ताअलीम अपने नाना हाजी शाह वारिस अली मरहूम से पाई फिर मदरसा अज़ीज़िया बिहार शरीफ, मदरसा हनफीया जौनपुर वग़ैरह में ज़माने के जैय्यिद उलमाए किराम के ज़ेरे दर्स रहे। 1346 हि0 में दारुलख़ैर दरगाहे मुअल्ला अजमेरे मुक़द्दस के दारुल उलूम मुईनिया उस्मानिया में सद्रुश्शरीअह हज़रत मौलाना हकीम मुहम्मद अमजद अली साहब आअज़मी रहमतुल्लाहि तआला अलैह व दीगर असातज़ए किराम से इल्मो फन की तशनगी बुझाई। नतीजे के तौर पर अपने वक़्त के अज़ीमो जलील आलिमे दीन और मुनाज़िर हुए।

तहसीले इल्म से फराग़त के बाद आप बरेली शरीफ तशरीफ लाए जहाँ शाहज़ादए आअला हज़रत हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अल्लामा अलहाज अश्शाह मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ाँ साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने रज़वी दारुल इफ्ता का सद्र मुफ्ती मुक़र्रर किया साथ ही मदरसा मन्ज़रे इस्लाम में तदरीस की ज़िम्मेदारी भी सुपुर्द की। हज़रत अमीने शरीअत ने नियाज़मन्दाना तरीक़े पर हुज़ूर हुज्जतुल इस्लाम से तफ्सीरे बैज़ावी के कुछ अस्बाक़ पढ़कर शरफे तलम्मुज़ हासिल किया नीज़ हुज़ूर हुज्जतुल इस्लाम ने सिलसिलए क़ादिरिया बरकातिया रज़विया व दीगर सलासिलो औरादो वज़ाइफ की इजाज़तो ख़िलाफत से नवाज़ा और इरशाद फरमाया „वह वक़्त क़रीब आने वाला है जब यह (अमीने शरीअत) बड़े मरतबे पर फाइज़ किए जाएंगे।„

आप को इब्तेदा में शैख़ुल मशाइख़ हज़रत अल्लामा शाह सैय्यिद अली हुसैन अशरफी मियाँ कुद्दि स सिर्रुहू किछौछवी से दौरे तालिबे इल्मी में ही सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के आस्तानए पाक पर बैअतो ख़िलाफत का शरफ हासिल था। तमाम सलासिल में इजाज़तो ख़िलाफत होने के बावुजूद हज़रत अमीने शरीअत को ग़लबा और लगाव सिलसिलए क़ादिरिया से ज़ियादा था और हुज़ूर आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फाज़िले बरेलवी, उन के

शहज़ादगान हुज़ूर हुज्जतुल इस्लाम व हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द अलैहिमुर्रहमह से बड़ी गहरी अक़ीदतो वाबस्तगी थी जो ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हात तक फुज़ूँतर रही। हज़रत अमीने शरीअत हुज़ूर हुज्जतुल इस्लाम के हुक्म से दारुल उलूम मुहम्मदिया जाइस में सद्रुल मुदर्रिसीन के उहदे पर फाइज़ हुए उस के बाद कानपुर तशरीफ लाकर यहाँ की मशहूर और क़दीम दीनी दर्सगाह अलजामेअतुल अरबिय्या अहसनुल मदारिस क़दीम की निशाअते सानिया फरमाई और तक़रीबन 35–40 साल तक इस इदारे की ऐसी ख़िदमात अन्जाम दीं कि पूरा मुल्क आप को इसी इदारे और इसी शहर के हवाले से जानने लगा। आप ज़िन्दगी की आख़िरी साँस तक कानपुर और कानपुर के इदारे अहसनुल मदारिस क़दीम से वाबस्ता रहे और इसी इदारे में बैठ कर पूरी जमाअते अहले सुन्नत की बिलउमूम और कानपुर के मुसलमानों की बिलख़ुसूस रहबरी व रहनुमाई का फरीज़ा अन्जाम देते रहे। आप अपने मआसिर उलमा में इम्तेयाज़ी शान के मालिक थे आप का हल्क़ए इरादत भी बहुत वसीअ था तक़रीबन तीन लाख अफराद आप के दामन से वाबस्ता हुए और ऐसे ही क़रीब दो दरजन ख़ुश नसीबों को इजाज़तो ख़िलाफत से भी सरफराज़ फरमाया।

आप को सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से अक़ीदतो इरादत किस क़दर थी इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जासकता है कि हर साल उर्से पाक के मौक़े पर अजमेरे मुक़द्दस हाज़िरी ज़रूर होती थी और फिर क्यूँ न हो कि आप के आबा व अज्दाद भी इसी सिलसिले की कड़ियों से जुड़े हुए थे।

आप की अलालत का सिलसिला कानपुर ही से शुरूअ हुआ और देहली के किसी अस्पताल में ज़ेरे इलाज थे कि 3 रबीउल आख़िर 1403 हि0 को दो बजकर पचपन मिनट पर वफ़ात पाई मज़ारे पाक इस्लामाबाद (भवानीपुर) ज़िला मुज़फ्फरपुर बिहार में मरजए ख़लाइक़ है और हर साल तारीख़े विसाल पर अज़ीमुश्शान पैमाने पर उर्से पाक होता है।

हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद बुरहानुलहक़ साहब रहमतुल्लाहि अलैह

बुरहानुल मिल्लत हज़रत अल्लामा मुफ्ती शाह मुहम्मद अब्दुल

बाक़ी मुहम्मद बुरहानुलहक़ साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैह 21 रबीउल अव्वल 1310 हि0 को जबलपुर (म. प्र.) में पैदा हुए। आप मशहूर आलिमे दीन और बुज़ुर्ग हज़रत ईदुल इस्लाम अल्लामा शाह अब्दुस्सलाम क़ादरी रज़वी जबलपुरी ख़लीफा व तिलमीज़े आअला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी के ख़लफे अरशदो शागिर्दो ख़लीफा व जानशीन थे। आप का अस्ल नाम „अब्दुल बाक़ी,, था बुरहानुल हक़ आअला हज़रत का दिया हुआ बाबरकत ख़िताब है। हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद बुरहानुल हक़ साहब ने दर्सियात की तक्मील आपने वालिदे माजिद साहब से फरमाई मज़ीद हुसूले फुयूज़ो बरकात केलिए आअला हज़रत की ख़िदमत में बरेली शरीफ पहुँचे और यहाँ अर्से तक आअला हज़रत की निगरानी व सरपरस्ती में फतावा नवीसी की ख़िदमत अन्जाम दी। यूँ तो बैअतो ख़िलाफत भी वालिदे माजिद से ही हासिल थी मगर आअला हज़रत ने भी इजाज़तो ख़िलाफत से सरफ़राज़ फरमाया और आप को अपना रूहानी बेटा कहा। आअला हज़रत आप को बहुत अज़ीज़ रखते थे।

मुफ्तिये आअज़म मध्य प्रदेश की हैसियत से वहाँ के सुन्नी मुसलमानों के मरकज़े अक़ीदत थे इल्मी व दीनी मसाइल के हल केलिए लोग आप ही से रुजूअ करते थे। कसीर ताअदाद में लोग आप के दस्ते हक़परस्त पर बैअत थे आप ने मुतअद्दिद मुरीदीन को इजाज़तो ख़िलाफत से भी सरफराज़ फरमाया था। आप के दो साहबज़ादे हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद महमूद मियाँ साहब क़ादिरी और हज़रत अल्लाम मुहम्मद हामिद मियाँ साहब क़ादिरी आप की जानशीनी और नियाबत के फराइज़ अन्जाम दे रहे हैं।

आप को दिगर उलमा व मशाइख़े अहले सुन्नत की तरह सुल्तानलुल हिन्द सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू से बेपनाह अक़ीदतो महब्बत थी और अक्सरो बेशतर उर्से पाक के मौक़े पर अजमेर शरीफ पहुँ कर आस्तानए पाक पर हाज़िरी दिया करते थे आप ने सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की एक मन्कबत के ज़रीआ इज़्हारे अक़ीदत फरमाया है जिस का मतलअ और मक़्तअ हाज़िरे ख़िदमत है।

आक़ा के करम के सदक़े में ख़्वाजा का रौज़ा देख लिया
ख़्वाजा की ग़रीब नवाज़ी का दरबार में नक़्शा देख लिया
हाज़िर भी हुए चादर थामी बांसे भी लिए ताअज़ीम भी की

ख़्वाजा की अता बुरहाँ पे, करम था ग़ौसो रज़ा का देख लिया

26 रबीउल अव्वल 1405 हि0 को आप का विसाल हुआ। रानी की ताल बड़ी ईदगाह जबलपुर (म. प्र.) में आप का मज़ार मरजए ख़वासो अवाम है।

ख़तीबे मश्रिक़ अल्लामा मुशताक़ अहमद निज़ामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह

ख़तीबे मश्रिक़ पासबाने मिल्लत हज़रत अल्लामा मुशताक़ अहमद साहब निज़ामी ज़िला इलाहाबाद के क़स्बा फूलपुर के मुज़ाफ़ात में वाक़ेअ एक गाँव सराय ग़नी में 1922 ई0 में पैदा हुए। आप के वालिदे माजिद मलिकज़ादा अलहाज मुहर्रम अली साहब एक स्कूल में मुअल्लिम थे और आरिफे हक़ आशिक़े रसूल हज़रत सैय्यिद शाह ज़ुहूर हुस्साम मानिकपुरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से शरफे बैअत रखते थे। अल्लामा निज़ामी साहब ने इब्तेदाई ताअलीम अपने वालिदे माजिद के ज़ेरे निगरानी पाई उस के बाद आप के वालिदे माजिद ने अपने पीरो मुर्शिद के मशवरे या हुक्म के मुताबिक़ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के आस्तानए अक़दस पर अपने फ़ीरोज़बख़्त फरज़न्द को हाज़िर कराके वहाँ से इस्तिन्दाद के साथ वापसी पर 1936 ई0 में इलाहाबाद की मशहूर क़दीम दर्सगाह मदरसा सुबहानिया में हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत अल्लामा अलहाजुश्शाह मुहम्मद हबीबुर्रहमान साहब की सुपुर्दगी में देदिया। जहाँ हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत के अलावा हज़रत मौलाना अब्दुर्रब साहब मुरादाबादी, हज़रत मौलाना सैय्यिद अब्दुल कुद्दूस साहब भदरकी, हज़रत मौलाना हकीम मुहम्मद अहसन साहब बिहारी, हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब और हज़रत मौलाना मुहम्मद सिद्दीक़ साहब बिजनौरी रहमतुल्लहि तआला अलैहिम ने आप को उलूमो फुनून की दौलते बेबहा अता फरमाई। इन सब के बावुजूद आप की ज़ियादातर ताअलीम शैख़ुल माअक़ूलात शम्सुल उलमा हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद निज़ामुद्दीन साहब हबीबी इलाहाबादी अलैहिर्रहमह की मरहूने मिन्नत है।

दर्से निज़ामी की तक्मील के बाद आप मदरसा मिस्बाहुल उलूम इलाहाबाद, जामेआ हबीबिया इलाहाबाद (जो हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत का क़ाइम करदा है) में तदरीसी ख़िदमात अन्जाम दीं फिर

बनारस की मशहूर दर्सगाह जामेआ फारूक़िया में सद्रुल मुदर्रिसीन की हैसियत से ख़िदमत अन्जाम दी। फिर इलाहाबाद ही में वहाँ की क़दीम दर्सगाह मदरसा सुबहानिया में तक़रीबन तीन साल आप ने दर्सो तदरीस का फरीज़ा अन्जाम दिया।

हज़रत अल्लामा निज़ामी साहब ने मस्नदे दर्सो तदरीस पर उलूमो फुनून का दरिया बहाने के साथ साथ ख़िताबत, सहाफत, तस्नीफो तालीफ, मुनाज़रा और तन्ज़ीमी सरगरमियों के ज़रीआ भी दीनों मिल्लत और सुन्नतो शरीअत की तरवीजो इशाअत के अज़ीम और नुमायाँ कारनामे अन्जाम दिए।

उन की ख़िताबत के सिलसिले में बड़े बड़े अहले इल्मो दानिश का तअस्सुर तो यह है कि अल्लामा निज़ामी अपने अन्दाज़े ख़िताबत के खुद ही मूजिद और खुद ही ख़ातिम हैं। न उन से पहले ऐसा कोई ख़तीब था और न उन के बाद अब तक कोई दूसरा उन की तरह पैदा हुआ।

माहनामा पास्बान इलाहाबाद, हफ्तरोज़ा ताजदार और तक़रीबन दो दरजन तस्नीफात उन की तहाफती, इल्मी और अदबी इन्फेरादियत के शवाहिद हैं। यूँ ही आल अन्डिया सुन्नी तबलीग़ी जमाअत, आल अन्डिया सुन्नी जम्ईय्यतुल उलमा, आल इन्डिया तबलीग़े सीरत, आल इन्डिया मुस्लिम मुत्तहिदा महाज़, आल करनाटक तन्ज़ीमे अज़मते मुस्तफा, इदारए शरईय्या बम्बई और पटना जैसी मुतहर्रिक और फअआल तन्ज़ीमें आप की क़ौमी व मिल्ली सरगरमियों की गवाह हैं। आप उन में से बाज़ के बानी और बाज़ के अहम सुतून की हैसियत रखते थे। मुल्क भर में आप ने बहुत से दीनी मदारिस क़ाइम किए जिन में सब से ज़ियादा नुमायाँ और मशहूर आप का क़ाइम करदा दारुल उलूम ग़रीब नवाज़ इलाहाबाद है जिस की इल्मी व दीनी ख़िदमात पूरे मुल्क में रौशन हैं आप को शहज़ादए आअला हज़रत ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ्तिये आअज़मे हिन्द अल्लामा अलहाजुश्शाह मुहम्मद मुस्तफा रज़ा ख़ाँ क़ादिरी बरकाती नूरी से बैअतो ख़िलाफत का शरफ हासिल था गुजरात, राजस्थान, करनाटक, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के अलाक़ों में काफी ताअदाद में आप के मुरीदीनो मुतवस्सिलीन हैं।

आप को सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू से बहुत ज़ियादा अक़ीदतो महब्बत थी और यह आप के ख़ान्दान, असातज़ा

और मुर्शिदाने गिरामी की ताअलीमो तरबियत के फुयूज़ो बरकात का नतीजा था। वालिदे माजिद ने बुज़ुर्गों की बिलख़ुसूस सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की अक़ीदत घुट्टी में पिला दी थी जैसा कि गुज़र चुका है कि ताअलीम के आग़ाज़ से क़ब्ल आप को अजमेरे मुक़द्दस लेजाकर ख़्वाजा के क़दमों में डाल दिया। यही वजह है कि ज़िन्दगी भर आप हज़रते ख़्वाजा के गुन गाते रहे। अपने गाँव सराय ग़नी में एक मदरसा „गुलशने अजमेर„ के नाम से क़ाइम किया और दूसरा इलाहाबाद में „दारुल उलूम ग़रीब नवाज़„ के नाम से आज भी शानो शिकोह के साथ जारी व सारी है। आप ने हज़रत ख़्वाजा की एक सवानेहे हयात भी इख़्तेसार व जामेईय्यत के साथ तरतीब दी जिस का नाम „हिन्द के राजा„ है इस के अलावा साल में मुतअद्दिद बार अजमेरे मुक़द्दस की हाज़िरी आप के माअमूलात में थी।

तक़रीबन तीन चार माह की अलालत के बाद 8 रबीउल आख़िर 1411 हि0 (1990 ई0) बरोज़े दो शंबए मुबारका ग्यारह बजकर चालीस मिनट पर हज़रत अल्लामा निज़ामी साहब ने दारे फानी से दारे बक़ा की तरफ रिहलत फरमाई। मज़ारे मुबारक दारु ल उलूम ग़रीब नवाज़ इलाहाबाद में फैज़ेबख़्शे आम है। हर साल दारु ल उलूम का जल्सए दस्तारबन्दी और आप का उर्स दोनों एक साथ मुन्अक़िद होते हैं।

हज़रत अल्लामा मुहम्मद महबूब साहब

अशरफी रहमतुल्लाहि अलैह

साबिक़ मुफ्तिये आअज़मे कानपूर महबूबुल उलमा हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद महबूब साहब अशरफी की विलादत मार्च 1917 ई0 मुताबिक़ 1335 हि0 को मुहल्ला नवादा क़स्बा मुबारकपुर ज़िला आअज़म गढ़ में हुई आप के वालिदे माजिद जनाब अब्दुल्लाह साहब और जद्दे अम्जद जनाब मुहम्मद फरीद साहब हैं यह दोनों बुज़ुर्ग मुहल्ला नवादा के शरीफ और बाइज़्ज़त अफराद में शुमार किए जाते थे। आप का नामे नामी मुहम्मद महबूब लक़ब महबूबुल उलमा और ख़िताब मुफ्तिये आअज़मे कानपुर था। नाज़रा क़ुरआन पाक व इब्तेदाई उर्दू वग़ैरह की ताअलीम मुहल्ला नवादा ही के हाफिज़ अब्दुल गफ्फार साहब से हासिल की, बाद में क़स्बे

की जामेअ मस्जिद और क़दीम मदरसा के अलावा दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ, मदरसा इस्लामिया अरबिय्या मेरठ और दारुल उलूम अशरफिया मुबारकपुर में उस ज़माने के नामवर उलमा से शरफे तलम्मुज़ हासिल किया और दारुल उलूम अशरफिया मुबारकपुर के फारिग़ होने वाले तलबा की पहली जमाअत में शामिल होकर 1937 में आप ने फराग़त हासिल की। आप के असातज़ा में हज़रत मौलाना शम्सुल हक़ साहब, हुज्जतुल इस्लाम हज़रत मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ साहब, हाफिज़े मिल्लत हज़रत अल्लामा हाफिज़ अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिस मुरादाबादी, मुहद्दिसे पाकिस्तान हज़रत अल्लामा सरदार अहमद साहब गुरदासपुरी, हज़रत मौलाना मुहम्मद सुलैमान साहब भागलपुरी और हज़रत अल्लामा ग़ुलाम यज़दानी साहब आअज़मी रहमतुल्लाहि अलैहिम के अस्माए गिरामी ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

फराग़त के बाद जगदल सूबा बंगाल, जामेआ फारूक़िया बनारस और बहरुल उलूम मऊ में आप ने तदरीसी ख़िदमात अन्जाम दीं 1940 ई० में मदरसा अहसनुल मदारिस क़दीम कानपुर में मस्नदे तदरीस को ज़ीनत बख़्शी और 37 साल तक यहाँ क़ेयाम फरमाकर दीनी व इल्मी ख़िदमात अन्जाम देते रहे उसी दौरान अहसनुल मदारिस के दो हिस्से हो गए जो क़दीम और जदीद के नाम से जाने जाते हैं आप अहसनुल मआरिस जदीद से मुन्सलिक रहे फिर हालात की नासाज़गारी के सबब कानपुर को ख़ैरबाद कहकर मदरसा फैज़ुल उलूम मुहम्मदाबाद (आअज़म गढ़), मदरसा ज़ियाउल उलूम ख़ैराबाद ज़िला आअज़म गढ़ फिर दारुल उलूम अहले सुन्नत जबलपुर में तशनगाने उलूम को सैराब करते रहे 1983 ई० के शुरूअ में अन्जुमन मुईनुल इस्लाम दारुल उलूम अहले सुन्नत बसती तशरीफ लेगए और वहाँ तदरीसी ख़िदमात अन्जाम देते रहे। अमीने शरीअत मुफ्तिये आअज़मे कानपुर हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद रिफाक़त हुसैन साहब के विसाल के बादकानपुर के बाशुऊर लोगों ने ख़ला महसूस किया और हज़रत मुफ्ती मुहम्मद महबूब साहब अशरफी से गुज़ारिश की कि कानपुर में एक बड़ी शख़्सियत की अहम ज़रूरत है लिहाज़ा आप तशरीफ लेचलें और मुफ्तिये आअज़म कानपुर की ज़िम्मेदारियाँ संभाल लें चूँकि हज़रत एक मुद्दते दराज़ तक कानपुर में क़ेयाम फरमा चुके थे यहाँ के लोगों से एक ख़ास उन्सियत भी थी इस लिए मुख़्लिसीन

की दावत पर आप दोबारा कानपुर तशरीफ लेआए और मुफ्तिये आअज़मे कानपुर के मन्सब पर फाइज़ रहकर दीनी, मिल्ली और इल्मी ख़िदमात की अन्जाम देही में मसरूफ हो गए। 1987 ई० में शहरे कानपुर ही में आप ने अपने साहबज़ादे हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अहमद साहब अशरफी के क़ाइम करदा दारुल उलूम ग़ौसिया अशरफिया में शैख़ुल हदीस की हैसियत से मस्नदे तदरीस व इफ्ता संभाल ली 1992 ई० तक ख़ुश उस्लूबी के साथ अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाते रहे, मुख़्तलिफ दीनी इल्मी इदारों में दर्स तदरीस के दौरान मुल्क के मुख़्तलिफ अलाक़ों के बेशुमार उलमा ने आप के सामने ज़ानुए तलम्मुज़ तह करके इल्मी इस्तेफादा व इक्तेसाब किया। आप को बैअतो इरादत का शरफ ख़ान्वादए अशरफिया किछौछा मुक़द्दसा के एक हक़ीक़त शनास, नुक्तारस, आलिमे अस्रारो रुमूज़, शैख़े कामिल हज़रत अल्लामा सैय्यिद मुहम्मद मियाँ मुहद्दिसे आअज़मे हिन्द रहमतुल्लाहि तआला अलैह से हासिल था। चूँकि सिलसिलए अशरफिया दर अस्ल सिलसिलए चिश्तिया ही है इस लिए बतौरे ख़ुसूसी आप को सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू से गहरा लगाव और इश्क़ था इन्तेहाई अक़ीदतो महब्बत के साथ आस्तानए पाक पर हाज़िरी केलिए अजमेर शरीफ का सफर फरमाते थे ऐय्यामे उर्स के अलावा भी आप हाज़िरे आस्ताना होकर अपनी अक़ीदतों का ख़राज पेश करते थे।

आप ने मुल्क के मुतअद्दिद मक़ामात पर तदरीसी फराइज़ अन्जाम दिए मगर कानपुर में ज़िन्दगी का ज़ियादातर हिस्सा गुज़रने की वजह से बहुत सी यादगारें आप से वाबस्ता हैं जामेआ अहसनुल मदारिस क़दीम, दारुल उलूम अशरफिया अहसनुल मदारिस जदीद और दारुल उलूम ग़ौसिया अशरफिया की दर्सगाहें और वहाँ के दरो दीवार आप की इल्मी गीराई व गहराई औरदीनी बसीरत के गवाह हैं नीज़ इस शहर की मुख़्तलिफ क़ौमी व मिल्ली तन्ज़ीमों की सरबराही के ज़रीआ भी अवामो ख़वास में आप की ख़िदमात के नुक़ूश रौशन हैं। सुन्नी जम्ईय्यतुल उलमा उत्तर प्रदेश की सदारत और आप के अहदे सदारत में अज़ीमुश्शान आल इन्डिया सुन्नी जम्ईय्यतुल उलमा कान्फ्रन्स (1963 ई०) का इन्अेक़ाद जिस की बेमिसाल कामयाबी आज भी लोगों के अज़हान में महफ़ूज़ है।

27 मार्च 1993 ई० मुताबिक़ 3 शव्वाल 1413 हि० को आप का

विसाल हुआ और मुहल्ला नवादा क़स्बा मुबारकपुर ज़िला आअज़म गढ़ में आप की अबदी आरामगाह बनी जहाँ से लोग इस्तेसाबे फ़ुयूज़ो बरकात करते हैं।

हज़रत अल्लामा हसन मियाँ साहब रहमतुल्लाहि अलैह

मुर्शिदे आअज़मे हिन्द सैय्यिदुल उरफा अहसनुल उलमा हज़रत अल्लामा सैय्यिद शाह मुस्तफा हैदर हसन मियाँ साहब क़ादिरी बरकाती सज्जादा नशीन ख़ान्क़ाहे आलिया क़ादिरिया बरकातिया मारहरा शरीफ ज़िला एटा (उ. प्र.)की विलादते बासआदत 13 फरवरी 1927 ई० को महल सराए ज़नाना सरकारे कलाँ मारहरा मुतहहरा में हुई। आप का नसबी तअल्लुक़ मुजाहिदे इस्लाम हज़रत सैय्यिद मुहम्मद सुग़रा रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मुक़द्दस ख़ान्दान से था जिन्हों ने 614 हि० में उत्तर प्रदेश के क़स्बा श्रीनगर को फतह किया और उस का नाम बिल्गिराम रखा उस वक़्त के बादशाहे हिन्द सुल्तान शम्सुद्दीन अलतमश ने मीर सैय्यिद मुहम्मद सुग़रा को हाकिमे बिल्गिराम बनाया। आप क़ुतबुल अक़्ताब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मुरीदो ख़लीफा और गुलशने सादाते ज़ैदिया के शगुफ्ता व महकबार फूल थे। हज़रत अल्लामा सैय्यिद शाह हसन मियाँ साहब क़ुद्दि स सिर्रुहू के वालिदे माजिद हज़रत सैय्यिद शाह आले इबा क़ादिरी वलद सैय्यिद शाह हुसैन हैदर रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम (नवासए हक़ीक़ी ख़ातमुल अकाबिर हज़रत सैय्यिद शाह आले रसूल क़ुद्दि स सिर्रुहू) और वालिदए माजिदा सैय्यिदा इकराम फातिमा शहर बानो बिन्ते हज़रत सैय्यिद शाह अबुलक़ासिम इस्माईल हसन शाह जी मियाँ क़ुद्दि स सिर्रुहू जो (हुज़ूर साहिबुल बरकात के घर के रौशन चराग़ थे)। मुस्तफा हैदर नाम और हसन मियाँ उर्फियत थी। नाना ने अपने चहीते नवासे को चौदह माह की उम्र में बैअत किया और जुम्ला सलासिले क़ादिरिया, चिश्तिया, नक़्शबन्दिया और सुहरवर्दिया की इजाज़तो ख़िलाफत से सरफराज़ फरमाकर जुम्ला औराद, आअमाल, अशग़ाल, अज़्कार व मुसाफहाजात वग़ैरह की इजाज़त अता फरमाने के बाद इरशाद फरमाया कि „यह मेरा सज्जादा नशीन है।„

आप के मामूँ ताजुल उलमा हज़रत अल्लामा सैय्यिद शाह औलादे रसूल मुहम्मद मियाँ क़ादिरी अलैहिर्रहमह के यहाँ एक साहबज़ादे की विलादत हुई जो नौउम्री में इन्तेक़ाल करगए उस

वाक़ेअे से सैय्यिदी ताजुल उलमा और उन की अहलियए मुहतरमा सैय्यिदा मन्ज़ूर फातिमा साहिबा जो बरेली शरीफ की रहने वाली थीं और हज़रत मख़्दूम जहानियाँ जहाँगश्त रहमतुल्लाहि तआला अलैह की औलाद में बुख़ारी सैय्यिद थीं बहुत मग़मूम रहते थे। हज़रत सैय्यिद इस्माईल हसन क़ुद्दि स सिर्रुहू ने अपने लाडले नवासे को अपनी चहीती बहू की गोद में डाल कर इरशाद फरमाया कि „बहू! हसन अब तुम्हारा बेटा है हम ने तुम्हें देदिया।„

मुहतरम ख़ुसर और वलिये कामिल के इरशाद को फरमाँबरदार बेटे और बहू ने सर आँखों पर रखा.और अपने सुल्बी बेटे की तरह परवरिश शुरूअ कर दी। क़ुरआन की ताअलीम का आग़ाज़ वालिदए माजिदा ने कराया और छह पारे हिफ्ज़ कराए उन के बाद क़स्बे के मशहुर हाफिज़ सलीमुद्दीन क़ुरैशी मरहूम ने पढ़ाया और हिफ्ज़ की तक्मील हाफिज़ अब्दुर्रहमान उर्फ हाफिज़ कल्लू साहब मरहूम ने कराई।

उर्दू फारसी की ताअलीम का आग़ाज़ मुमानी साहिबा सैय्यिदा मन्ज़ूर फातिमा ने कराया इब्तेदाई फारसी की किताबें पढ़ाने के बाद आअला ताअलीम केलिए ख़ाले मुहतरम हुज़ूर ताजुल उलमा क़ुद्दि स सिर्रुहू ने दर्से निज़ामी का आग़ाज़ कराया। हज़रत मौलाना ग़ुलाम जीलानी आअज़मी, सैय्यिदुल उलमा हज़रत अल्लामा सैय्यिद शाह आले मुस्तफा सैय्यिद मियाँ, शेरे बेशए अहले सुन्नत हज़रत मौलाना हशमत अली ख़ाँ क़ादिरी बरकाती और हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद ख़लील ख़ाँ बरकाती क़ुद्दिसत अस्रारुहुम ने दर्से निज़ामी की तक्मील कराई शुरूअ के असातज़ा में मुन्शी सईदुद्दीन साहब बरकाती का नाम नुमायाँ है अंग्रेज़ी के अस्बाक़ मास्टर मुहम्मद समीअ ख़ाँ साहब बरकाती ने पढ़ाए। हज़रत मुर्शिदे आअज़म अपने उन असातज़ए किराम का तज़्किरा बड़े अदब से करते थे। 1944 ई० के उर्से क़ासिमी में मामूँ हज़त ताजुल उलमा ने ख़िर्क़ा पहनाया, अपने साथ हवेली सज्जादगी से दरगाहे मुक़द्दसा लेगए वहाँ जानशीनी का एअलान फरमाया और महज़रे जानशीनी तहरीर करके दिया इस के साथ ही जुम्ला सलासिल में मुजाज़ो माज़ून फरमाकर तहरीरी ख़िलाफतनामा अता फरमाया।

24 जुमादल उख़्रा 1375 हि० (6 फरवरी 1956 ई०) को हुज़ूर ताजुल उलमा ने विसाल फरमाया चहल्लुम शरीफ के दिन 17 मार्च 1956,ई को उलमा व मशाइख़ और अहबाबे अहले सुन्नत की मौजूदगी में मुर्शिदे आअज़म हुज़ूर अहसनुल उलमा अल्लामा

सैय्यिद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन मियाँ क़ादिरी सज्जादा नशीने मस्नदे ग़ौसिया दरगाहे बरकातिया मारहरा मुतहहरा क़रार दिए गए और तक़रीबन चालीस बरस तक आप ने मस्नदे सज्जादगी को ज़ीनत बख़्शी।

हज़रत मुर्शिदे आअज़म क़ुद्दि स सिर्रुहू की दीनी ख़िदमात का एहाता करना मुश्किल है दामे, दिरमे, क़दमे, सुख़ने उन्हों ने इस्लामो सुन्नियत और मस्लके आअला हज़रत की ख़िदमत की लाखों बन्दगाने ख़ुदा उन के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत हुए। आप के ज़रीआ सिलसिलए आलियए क़ादिरिया का बेमिसाल फ़रोग़ हुआ (माख़ूज़ अज़ „सवानेही ख़ाका„ अज़ क़लम हज़रत अलहाज सैय्यिद शाह डॉक्टर मुहम्मद अमीन मियाँ क़दिरी बरकाती ख़लफ़े अक्बर व सज्जादा नशीने ख़ानक़ाहे बरकातिया मारहरा मुतहहरा मशमूलए किताब „तरीक़ए अहसन„ मुरत्तबा डॉक्टर सैय्यिद जमालुद्दीन अहमद अस्लम)

हुज़ूर मुर्शिदे आअज़मे हिन्द का सिलसिलए चिश्तिया और सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू से आबाई तअल्लुक़ था जैसा कि मज़कूर हुआ। आप के जद्दे अमजद हज़रत सैय्यिद मुहम्मद सुग़रा क़ुद्दि स सिर्रुहू हज़रत क़ुतबुल अक़्ताब ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मुरीदो ख़लीफ़ा थे नीज़ आप के अजदाद में से हज़रत मीर सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलगिरामी क़ुद्दि स सिर्रुहू हज़रत मख़्दूम सफ़ी चिश्ती सफ़ीपुरीके मुरीद और आप के एक ख़लीफ़ा के ख़लीफ़ा थे। और आप के जद हज़रत मीर अब्दुल जलील और मीर उवैस तक सिलसिलए चिश्तियाही का ग़लबा रहा जब हज़रत साहिबुल बरकात सैय्यिद शाह बरकतुल्लाह (बानिये सिलसिलए बरकातिया) क़ुद्दि स सिर्रुहू हज़रत मीर सैय्यिद फ़ज़्लुल्लाह काल्पवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से सिलसिलए क़ादिरिया में मुरीदो मजाज़ हुए तो सिलसिलए क़ादिरिया की तरफ़ रग़बत ज़ियादा होगई। इस के बवुजूद अजमेर शरीफ़ और सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू से अक़ीदतो महब्बत में कोई क़मी वाक़ेअ नहीं हुई बारगाहे ग़रीब नवाज़ में अक़ीदतमन्दाना हाज़िरी के अलावा अपनी इज्तेमाई व ख़ुसूसी मज्लिसों में हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का तज़्किरा बड़ी अक़ीदत के साथ फ़रमाया करते थे। चुनाँचे हज़रत सैय्यिद शाह मुहम्मद अशरफ़ मियाँ साहब क़ादिरी बरकाती (शहज़ादए हुज़ूर मुर्शिदे आअज़मे हिन्द) अपनी किताब

„यादे हसन„ में अपने वालिदे गिरामी की चन्द आदाते मुबारका का ज़िक्र करते हुए आदत नम्बर 43 में तहरीर फ़रमाते हैं। :

„सहाबए किराम में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु और औलियाए किराम में हुज़ूर ग़ौसे पाक, हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती और हुज़ूर साहिबुल बरकात रदियल्लाहु तआला अन्हुम का ज़िक्र सब से ज़ियादा फ़रमाते।„ (यादे हसन स0145)

इसी तअल्लुक़े ख़ास के सबब उर्से क़ासिमी में अक्सरो बेशतर दरगाहे मुअल्ला अजमेर शरीफ़ के शहज़ादगान, ख़ुद्दाम और सज्जादा नशीनों में से कोई न कोई मारहरा शरीफ़ ज़रूर आता है। चुनाँचे हज़रत अमीने मिल्लत की रस्मे सज्जादगी की तफ़्सील बयान करते हुए हज़रत सैय्यिद मुहम्मद अशरफ़ मियाँ साहब ने „यादे हसन„ में यूँ तहरीर फ़रमाया है। :

„अजमेर शरीफ़ से आए हुए मुअज़्ज़ज़ मेहमान साहबज़ादा सैय्यिद मुग़ीस मियाँ साहब ने अम्मामा शरीफ़ जो आस्तानए ग़रीब नवाज़ से अपने साथ लाए थे हज़रत अमीने मिल्लत के सर पर बाँधा। हज़रत हुसैन मियाँ साहब क़िबला (हज़रत मुर्शिदे आअज़मे हिन्द के बेरादरे ख़ुर्द) ने फ़रमाया कि हाँ अब काम मुकम्मल होगया हिन्दुल वली की मुहर लग गई।„ (यादे हसन स0 294)

हज़रत मुर्शिदे आअज़मे हिन्द क़ुद्दि स सिर्रुहू के चार लाइक़ो फाइक़ वारिस शऊरो आगही, हामिले फ़िक्रो फ़न, माहिरे दीनियातो अस्रियात और मुहाफ़िज़े बाक़ियाते सालेहात अमीने मिल्लत हज़रत अलहाजुश्शाह डॉक्टर सैय्यिद मुहम्मद अमीन मियाँ साहब क़िबला क़ादिरी बरकाती ख़लफ़े अक्बर व जानशीन (रीडर शोअबए उर्दू अलीगढ मुस्लिम यूनिवरसिटी अलीगढ़) अशरफ़े मिल्लत हज़रत अलहाजुश्शाह सैय्यिद मुहम्मद अशरफ़ क़ादिरी बरकाती (इन्कम टैक्स कमिश्नर) हज़रत सैय्यिद शाह मुहम्मद अफ़्ज़ल क़ादिरी बरकाती (साबिक़ रजिस्ट्रार अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवरसिटी अलीगढ़) और रफ़ीक़े मिल्लत हज़रत अलहाजुश्शाह सैय्यिद नजीब हैदर क़ादिरी बरकाती नूरी नाइब सज्जादा नशीन ख़ान्क़ाहे क़ादरिया बरकातिया मारहरा मुतहहरा, जिन के इख़लास, जिद्दो जहद और दिलचस्पियों के सबब उस अज़ीम ख़ानवादे और ख़ानक़ाह के तमाम मुआमलातो माअमूलात हसबे साबिक़ जारी व सारी हैं बल्कि रोज़अफ़्ज़ूँ फ़रोग़, वुसअत और तरक़्क़ी की शाहराह पर बेतकान रवाँ दवाँ हैं।

इल्मो फ़ज़्ल, ज़ुहदो तक़्वा, रुशदो हिदायत और शरीअतो तरीक़त का यह आफ़ताबे जहाँताब 11 सितम्बर 1995 ई० शबे सेहशंबा मुताबिक़ 15 रबीउल आख़िर 1416 हि० को ग़ुरूब होगया और 13 सितम्बर 1995 ई० को शाम तक़रीबन सवा छह बजे मारहरा मुतहहरा में अजदादे किराम व मुर्शिदाने उज़्ज़ाम के क़ुर्ब में उन का जसदे अतहर सुपुर्दे ख़ाक किया गया। हर साल 14–15 रबीउल आख़िर को आप के सालाना फ़ातहे की तक़रीबात बड़े एहतेमाम से मुन्अक़द होती हैं उस मौक़े पर भी हज़ारों की ताअदाद में हाज़िरे आस्ताना होकर मुरीदीनो मोअतक़िदीन इक्तेसाबे फ़ुयूज़ो बरकात करते हैं।

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद रजब अली रहमतुल्लाहि अलैह

बुलबुले हिन्द हज़रत अल्लामा अलहाज अश्शाह मुफ़्ती मुहम्मद रजब अली साहब क़ादिरी रज़वी मुफ़्तिये आअज़मे नानपारा की विलादत नानपारा ज़िला बहराइच में 26 रजबुल मुरज्जब 1343 हि० को हुई इब्तेदाई ताअलीम नानपारा के मकतब में हासिल करने के बाद कानपुर और लखनऊ में भी ताअलीम हासिल की उस के बाद मरकज़े इल्मो अदब दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ में हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अल्लामा मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ाँ साहब, मुफ़्तिये आअज़मे हिन्द हज़रत अल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ साहब अलैहिमर्रहमह और बहुत से अकाबिर उलमाए किराम से हुसूले फ़ैज़ के साथ अपने मुश्फ़िक़ असातज़ए किराम से मुख़्तलिफ़ फ़ुनून की किताबें पढ़ीं जिन में ख़लीफ़ए आअला हज़रत अल्लमा अश्शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिस बिजनौरी साबिक़ शैख़ुल हदीस दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ के आप बहुत ही चहीते और अरशद तलामज़ा में से थे और हज़रत ही से आप ने बैअतो ख़िलाफ़त का शरफ़ भी हासिल किया बाद में हुज़ूर मुफ़्तिये आअज़मे हिन्द अलैहिर्रहमह ने भी आप को तमाम सलासिल की इजाज़तो ख़िलाफ़त अता फ़रमाई। आप ने अव्वलन अन्जुमने हनफ़ीया नानपारा में तदरीसी फ़राइज़ अन्जाम दिए उस के बाद बम्बई, बीसलपुर और कानपुर में इमामतो ख़िताबत के फ़राइज़ अन्जाम दिए फिर नानपारा ही में 1958 में ,,मदरसा अज़ीज़ुल उलूम,, के नाम से एक दर्सगाह क़ाइम फ़रमाई जहाँ से दीनो सुन्नियत की ख़ूब ख़ूब ख़िदमात अन्जाम दी गईं। आप ने वाज़ो

तक़रीर के मैदान में दीनो सुन्नियत और मस्लके आअला हज़रत की तरवीजो इशाअत का फ़रीज़ा अन्जाम दिया। आप की बहुत सी तस्नीफ़ात भी आप की दीनी व इल्मी यादगार हैं। मुल्क के मुख़्तलिफ़ अलाक़ों में आप के लाखों मुरीदीन हैं। नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सच्ची महब्बत के साथ औलियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन से भी क़ल्बी लगाव था तमाम बुज़ुर्गाने दीन के आस्तानों पर हाज़िरी देना बाइसे सआदत समझते थे। चन्द औलियाए किराम के आअरासमें बिलइल्तेज़ाम हर साल शरीक होना आप के माअमूलात में था बिलख़ुसूस ख़्वाजए ख़्वाजगाँ हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और हज़रत सैय्यिद सालार मस्ऊदे ग़ाज़ी बहराइची रहमतुल्लाहि तआला अलैहिमा के उर्सों में तो कभी नाग़ा ही नहीं होता था और ख़ानक़ाहे मुहम्मदिया कालपी शरीफ़ और हज़रत जमालुल औलिया कोड़ा जहानाबाद के उर्सों में जो आज लाखों का मजमा होता है यह आप ही की अक़ीदतो महब्बत और मुख़्लिसाना कोशिशों का नतीजा है।

3 ज़िलहिज्जा 1418 हि० को कानपुर के दिल के एक अस्पताल में आप का विसाल हुआ मज़ारे मुबारक मदरसा अज़ीज़ुल उलूम नानपारा में मरजए ख़लाइक़ है। तारीख़े विसाल पर हर साल बड़े पैमाने पर उर्स भी होता है।

अल्लामा अरशदुल क़ादिरी रहमतुल्लाहि अलैह

मज़हबे अहले सुन्नत और मस्लके आअला हज़रत के आलमी मुबल्लिग़ सैय्याहे आलम रईसुल क़लम फ़ातेहे जमशेदपुर हज़रत अल्लामा अलहाज अरशदुल क़ादिरी ज़िला बलिया के सैय्यिदपुरा गाँव में 5 मार्च 1925 ई० को एक इल्मी व मज़हबी घराने में पैदा हुए। इब्तेदाई ताअलीम अपने वालिदे माजिद हज़रत मौलाना अब्दुल्लतीफ़ साहब रशीदी से हासिल की। फिर आप के भाई हज़रत मौलाना ग़ुलाम आसी साहब हसनी अबुलउलाई ने आप को मुल्क की मशहूर दर्सगाह अलजामेअतुल अशरफ़िया मुबारकपुर में दाख़िल करके जलालतुल इल्म उस्ताज़ुल उलमा हाफ़िज़े मिल्लत हज़रत अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिस मुरादाबादी की आग़ोशे तरबियत में देदिया जहाँ से इल्मो फ़न के हुसूल के साथ साथ फ़िक्रो तदब्बुर और शऊरो आगही से मुज़ैय्यनो मुरस्सअ होकर अपनी इल्मी व फ़िक्री सलाहियतों का पूरी दुन्या से लोहा मनवाया। तहसीले उलूम की तक्मील के बाद मदरसा इस्लामिया

शम्सुल उलूम नागपुर में और फिर अपने क़ाइम किए हुए इदारे „मदरसा फ़ैज़ुल उलूम„ जमशेदपुर में तदरीसी ख़िदमात अन्जाम दीं। उस के बाद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मिशन और मस्लके आअला हज़रत के फरोग़ो इशाअत केलिए मुल्को बैरूने मुल्क दौरे शुरूअ किए। उस दरमियान आप ने हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ शहरों और क़स्बात समेत मुतअद्दिद मुल्कों में बड़े बड़े इज्लास और कान्फ्रन्सों में शिरकत करने के साथ साथ बेशुमार दीनी, सक़ाफ़ती, तन्ज़ीमी, ताअलीमी और तबलीग़ी इदारे क़ाइम फरमाए और नई मसाजिद ताअमीर कराई। बदमज़हबों और गुस्ताख़ाने अंबिया व औलिया का रद आप का ख़ास मौज़ूअ था इस सिलसिले में आप ने बहुत से मुनाज़रे किए और मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर तक़रीबन तीन दरजन किताबे भी तस्नीफ़ फरमाईं जिन में आप की किताब „ज़ल्ज़ला„ बहुत मशहूरो मक़्बूल हुई।

बैअत का शरफ आप को ख़लीफए आअला हज़रत सद्रुश्शरीअह हज़रत अल्लामा हकीम मुहम्मद अमजद अली साहब आअज़मी से हासिल था और क़ुतबे मदीना हज़रत अल्लामा ज़ियाउद्दीन अहमद महाजिरे मदनी ख़लीफए आअला हज़रत और सरकारे पटना हज़रत सैय्यिद शाह फ़िदा हुसैन रहमतुल्लाहि तआला अलैहिमा ने आप को इजाज़तो ख़िलाफत से भी सरफराज़ फरमाया था लेकिन इजज़ो इन्केसार के सबब आप ने बैअतो इरशाद की तरफ तवज्जुह नहीं फरमाई।

इश्क़े रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और महब्बतो अक़ीदते औलियाए किराम तो आप के जिस्म की रग रग में ख़ून के साथ रवाँ दवाँ थी। आप के दादा हज़रत मौलाना अज़ीमुल्लाह साहब मदरसा हनफ़ीया जौनपुर से दर्सियात की तक्मील फरमाई थी और उन को हज़रत हुज्जतुल इस्लाम मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ बरेलवी, शैख़ुल मशाइख़ हज़रत मौलाना सैय्यिद शाह अली हुसैन अशरफ़ी किछौछवी और हज़रत मौलाना फाख़िर साहब इलाहाबादी अलैहिमुर्रहमह से मुख़्तलिफ सलासिल में इजाज़तो ख़िलाफत हासिल थी। इसी तरह आप के वालिदे माजिद हज़रत मौलाना अब्दुल्लतीफ साहब ने भी जौनपुर के उसी इदारे से दर्सियात की तक्मील फरमाई थी और ख़ानक़ाहे रशीदिया जौनपुर के ज़ेबे सज्जादा इमामुलआरिफ़ीन हज़रत अल्लामा सैय्यिद शाह अब्दुल अलीम आसी ग़ाज़ीपुरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत थे और सरकारे ग़ौसे पाक के इश्क़ो

अक़ीदत में बेख़ुदो सरशार थे और आप के बड़े भाई हज़रत अल्लामा ग़ुलाम आसी साहब हसनी अबुलउलाई भी ज़ाहिरी व बातिनी उलूम के संगम थे और सिलसिलए क़ादिरिया चिश्तिया अबुल उलाइया के मशहूर शैख़े तरीक़त थे। आप के बेशुमार मुरीदीनो ख़ुलफा हैं।

आप का अस्ली नाम ग़ुलाम रशीद (क़लमी नाम अरशदुल क़ादिरी) और आप के भाई का नाम ग़ुलाम आसी था जो बुज़ुर्गों से अक़ीदत का बैय्यिन सुबूत है। इस तरह बुज़ुर्गों से क़लबी लगाव आप का ख़ानदानी वरसा था। सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से आप को हद दर्जा इश्क़ था और मौक़ा ब मौक़ा हाज़िरे आस्ताना होकर अपने इश्क़ो अक़ीदत का इज़्हार फरमाया करते थे जो आप की तहरीरों से भी ज़ाहिर है। अपने एक सफरनामए कशमीर में अल्लामा ख़ुद रक़मतराज़ हैं।:

> „5 रजबुल मुरज्जब की सुब्ह को हम ख़्वाजए हिन्द की राजधानी में दाख़िल हुए और अपने नसीबे की अरजुमन्दी पर शुक्रे इलाही बजा लाए। सारा अजमेर हज़रत ख़्वाजा के उश्शाक़ व ज़ाइरीन से भरा पड़ा था। अहले इस्लाम का यह उमंडता हुआ सैलाब देख कर एक मर्दे क़लन्दर ने कहा:
>
> „यह लाखों मुसलमान जो ख़्वाजा की रूहानी सतवतो इक़्तेदार का जीता जागता यक़ीन लेकर यहाँ आए हैं अगर उन के मुतअल्लिक़ देवबन्द के मज़हबी इजारादारों की यह बात सहीह मान ली जाए कि यह मुश्रिक और बुतपरस्त हैं तो फिर बताया जाए कि हिन्दुसतान में मुसलमान कहाँ हैं।?„
>
> (जामे नूर „रईसुल क़लम नम्बर स0192)

आप को मज़हबो मस्लक की तरवीजो इशाअत और क़ौमी व मिल्ली रहनुमाई की पादाश में मुतअद्दिद बार क़ैदो बन्द की सऊबतें भी बरदाश्त करना पड़ी हैं। आप ने देहली के मशहूर आल इन्डिया इंस्टीटयूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ (AIIMS) में 29 अप्रील 2002 ई0 को शाम चार बजकर पैंतीस मिनट पर वफात पाई और जमशेदपुर झारखंड में आप अपने क़ाइम करदा इदारे „मदरसा फ़ैज़ुल उलूम„ में आसूदए ख़ाक हुए।

नोट : सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू की बारगाह में ग़ुलामाना हाज़िरी देने वाले चन्द मशाइख़ व उलमाए किराम के तज़्किरे इख़्तेसार के साथ इस लिए किए गए कि इस से अन्दाज़ा लगाया जासके कि यहाँ के उलमा व मशाइख़ को सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से किस क़दर अक़ीदतो महब्बत है जबकि मज़्कूरा

उलमा व मशाइख़ में ज़ियादातर सिलसिलए क़ादिरिया से तअल्लुक़ रखने वाले हैं इस से साफ़ वाज़ेह है कि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से अक़ीदत रखने वाले सिर्फ़ चिश्ती हज़रात ही नहीं हैं बल्कि जितने भी ख़ुश अक़ीदा सुन्नी उलमा व मशाइख़ और अवामुन्नास हैं सब को सरकारे ख़्वाजा से अक़ीदतो महब्बत है और यह बतौरे मिसालो नमूना चन्द अस्माए गिरामी हैं। मेरा यह दाअवा है कि मुल्क में जितने उलमा व मशाइख़ और पीराने तरीक़त गुज़रे हैं या मौजूद हैं अगर बद अक़ीदा नहीं हैं तो सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से ज़रूर महब्बत होती है और अगर कोई मजबूरी हाइल न हो तो बारगाहे ख़्वाजा में हाज़िर होकर अपनी ग़ुलामी का सुबूत ज़रूर पेश करते हैं।

अब मुल्क की कुछ साहिबे इक़्तेदार, अहले सियासत और हामिले दौलतो सरवत शख़्सियतों का तज़्किरा किया जारहा है। उन्हों ने भी हमेशा बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में हाज़िर होकर अपनी अक़ीदतमन्दी और ग़ुलामी का सुबूत दिया है।

सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी

जैसा कि गुज़श्ता सफ़्हात में बित्तफ़्सील बयान किया जाचुका है कि सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी पृथ्वीराज को शिकस्त का मज़ा चखाने के बाद अजमेर हाज़िर हुए और सरकारे ख़्वाजा के दस्ते हक़परस्त पर बैअत भी की। (आतिशकदए आज़र स0 364)

सुल्तान शम्सुद्दीन अलतमश

यह बादशाह एक मुत्तक़ी और परहेज़गार था सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से बहुत अक़ीदत रखता था। सरकारे ख़्वाजा की ख़िदमत में हाज़िर होकर ताअलीमे माअरिफ़त हासिल की। मज़ीद तफ़्सीलात गुज़र चुकी हैं।

सुल्तान महमूद ख़िलजी

कहते हैं कि एक दिन एक तहरीर सुल्तान महमूद ख़िलजी की नज़र से गुज़री जिस में लिखा था कि „मुल्के हिन्दुस्तान में इस्लाम की इब्तेदा अजमेर से हुई जहाँ मुर्शिदुत्ताइफ़ा हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन सन्जरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का मज़ारे पाक है। अब चूँकि वह शहर कुफ़्फ़ार के क़ब्ज़े में है इस लिए वहाँ इस्लाम या शआइरे इस्लाम का कोई असर बाक़ी नहीं

है।..

सुल्तान तहरीर पढ़ने के बाद हज़रत ख़्वाजा की रूहे मुबारक से इस्तिम्दाद करते हुए अजमेर पहुँच गए वहाँ राजा की फ़ौज से जंग हुई क़िले का सरदार गजाधर मअ राजपूतों के क़िले से बाहर निकला। दोनों तरफ़ से चार दिन जंग जारी रही पाँचवें दिन गजाधर मारा गया और महमूद को फ़तह हासिल हुई। सुल्तान महमूद ने अल्लाह का शुक्र अदा किया और हज़रत ख़्वाजा के आस्ताने पर हाज़िर हुए और मज़ार का तवाफ़ करके एक मस्जिद (मस्जिद सन्दलख़ाना) ताअमीर कराई और ख़्वाजा नेअमतुल्लाह को सैफ़ ख़ाँ का ख़िताब देकर अजमेर की हुकूमत सौंप दी और मज़ारे अक़्दस के ख़ुद्दाम को इन्आमो इकराम देकर मंडलगढ़ की जानिब रवाना हुआ।

सुल्तान ज़फ़र ख़ाँ

सुल्तान फ़ीरोज़ शाह की वफ़ात के बाद उस का फ़रज़न्द सुल्तान मुहम्मद शाह तख़्तनशीं हुआ। गुजरात के हालात के पेशे नज़र बादशाह ने गुजरात की हुकूमत अपने एक नामी अमीरे आअज़म हुमायूँ ज़फ़र ख़ाँ बिन वजीहुल मुल्क को अता की। मंडलगढ़ (माँडल) के मुसलमानों पर राजपूतों के हमले की ख़बर पाकर ज़फ़र ख़ाँ उधर मुतवज्जेह हुआ उस नवाह का राजा क़िले में बन्द होकर बैठा था मगर ताऊन फैल जाने से राजा ने मजबूर होकर ज़फ़र ख़ाँ की ख़िदमत में इजज़ो नियाज़ केलिए भेजा बादशाह ने उसे ताईदे ग़ैबी समझकर उस की अर्ज़दाश्त को शरफ़े क़ुबूल से नवाज़ा और उस की पेशकश क़ुबूल करके सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के आस्तानए गिरामी की ज़ियारत केलिए अजमेर रवाना हुआ और सुल्तानुल हिन्द की रूहे पुरफ़ुतूह से ग़ैरमुस्लिमों पर फ़त्हो नुस्रत केलिए मदद चाही। उस के बाद भीलवाड़ा की तरफ़ रवाना होगया। उस सफ़र से वापसी पर ज़फ़र ख़ाँ ने अपने नाम का ख़ुतबा व सिक्का जारी करके अपने को मुज़फ़्फ़र शाह के नाम से मशहूर किया और सल्तनते गुजरात का बानी हुआ।

शहज़ादा बहादुर ख़ाँ

सुल्तान मुज़फ़्फ़र बिन सुल्तान बेगरा गुजरातीबिन सुलतान मुहम्मद शाह 916 हि0 में तख़्तनशीने गुजरात हुआ। उस के दो

लड़के थे शहज़ादा सिकन्दर और शहज़ादा बहादुर ख़ाँ। शहज़ादा बहादुर ख़ाँ बाप से नाराज़ होकर चित्तौड़ गढ़ होता हुआ 931 हि० ख़्वाजए ख़्वाजगान सुल्तानुल हिन्द के मज़ारे पुर अनवार की ज़ियारत केलिए अजमेर शरीफ रवाना हुआ आस्तानए ग़रीब नवाज से फैज़याब होकर शहज़ादा बहादुर ख़ाँ मेवात चला गया आख़िरकार 932 हि० में गुजरात का बादशाह हुआ और 933 हि० तक हुकूमत की हुमायूँ ने 933 हि० में उस पर ग़लबा पाकर गुजरात पर क़ब्ज़ा कर लिया।

शेरशाह सूरी

शेरशाह सूरी राजा बल्देव हाकिमे मारवाड़ को शिकस्त देने के बाद दरगाहे सरकारे ख़्वाजा मुईनुद्दीन में ज़ियारत केलिए हाज़िर हुआ और गुरबा व फुक़रा पर काफी रक़म तक़्सीम करने के बाद आदाबे आस्ताना के तहत जुम्ला मरासिम अदा किए जिस में तवाफ भी शामिल था। हाज़िरी के बाद वह तारागढ़ की पहाड़ी पर गया जहाँ उस वक़्त पानी की बहुत कमी थी जिस के सबब लोग परीशानी में मुब्तला थे उस ने चन्द मेअमआर मुक़र्रर किए कि चश्मए हाफ़िज़ जमाल से लेकर क़िले पर पानी पहुँचाएं और उस का नाम „शेरचश्मा„ रखा। सहसराम (बिहार) में शेर शाह सुरी का तारीख़ी मक़्बरा है।

सुल्तान जलालुद्दीन अक्बर

शहंशाहं अक्बर ने मुतअद्दिद बार सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू की बारगाह में गुलामाना हाज़िरी दी है। उन में से बाज़ की तफ्सील हसबे ज़ैल है।

„मुग़ल बादशाह जलालुदीन मुहम्मद अक्बर दारुलख़िलाफह आगरा से फतेहपुर सीकरी की तरफ शिकार खेलने केलिए जारहा था जब मौज़ा मन्डिया के क़रीब पहुँचा तो सरकारे ख़्वाजा के मनाक़िब उस के सामने गाए गए सुल्तानुल हिन्द के ज़ुहदो वरअ, कमालातो करामात और रूहानी तसर्रुफात का तज़्किरा पहले भी उस की मजिलस में हो चुका था इस लिए उस के दिल में सरकारे ख़्वाजा के रौज़े की ज़ियारत का शौक पैदा हुआ और ऐने शिकारगाह में उस ने अजमेरे मुअल्ला जाने का क़स्द कर लिया। चुनाँचे 8 जुमादल ऊला 969 हि० बरोज़े चहारशंबा अपने हमराहियों के साथ अजमेर

रवाना हुआ। अजमेर पहुँचकर उस ने रौज़ए ग़रीब नवाज़ की ज़ियारत की उस के बाद आगरा रवाना हुआ।„ (इक़्बालनामए अक्बरी व तारीख़े फिरिश्ता जिल्दे दोम)

„975 हि० में अक्बर ने „क़िलए चित्तौड़ गढ़„ फतह करने का इरादा किया और यह मन्नत मानी कि अगर क़िला फतह होगया तो मैं हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग के आस्ताने की ज़ियारत केलिए पैदल अजमेर जाऊँगा। चुनाँचे फतहयाबी के बाद 29 शाअबान 975 हि० को वह पैदल अजमेर केलिए रवाना हुआ और 17 रमज़ानुल मुबारक 975 हि० को अजमेरे मुक़द्दस पहुँचकर रौज़ए पाक की ज़ियारत की और दस दिन क़ेयाम करने के बाद आगरा रवाना हुआ।„ (इक़्बालनामए अक्बरी व अक्बरनामा)

976 हि० में क़िलए नथम्बोर फतह करने के बाद अक्बर ने फिर अजमेर शरीफ हाज़री दी और सरकारे ग़रीब नवाज़ के आस्ताने की ज़ियारत के बाद आगरा पहुँचकर हज़रत शाह सलीम चिश्ती रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ख़िदमत में फतेहपुर सीकरी हाज़िर हुआ उस से पहले अक्बर के यहाँ चन्द लड़के पैदा होकर मर चुके थे चुनाँचे हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती ने ज़िन्दा लड़के की पैदाइश की पेशगोई फरमाई। चुनाँचे उसी ज़माने में जब बेगम हामेला हुई तो अक्बर ने यह मन्नत मानी कि अगर मेरे लड़का हुआ तो हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग के आस्ताने पर पैदल हाज़िरी दूँगा। 17 रबीउल अव्वल 977 हि० बरोज़े चहारशंबा आरिफ बिल्लाह हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मकान पर फतेहपुर सीकरी में जहाँगीर पैदा हुआ। उस के बाद अक्बर 12 शाअबान 977 हि० बरोज़े जुमा आगरा से अजमेरे मुक़द्दस केलिए पैदल रवाना हुआ वहाँ हाज़िरी दी और चन्द रोज़ क़ेयाम करके आस्ताने के मुजावरों को बेशक़ीमत तहाइफ पेश किए।„ (फिरिश्ता चहारम व इक़्बालनामए अक्बरी व अक्बरनामा)

3 मुहर्रमुलहराम 978 हि० को अक्बर के यहाँ दूसरा बेटा पैदा हुआ अक्बर ने उस का नाम मुहम्मद मुराद रखा उस साल भी बादशाह ने अजमेर शरीफ का सफर किया और ख़्वाजए बुज़ुर्ग के रौज़े का तवाफ किया। यकुम सफरुल मुज़फ्फर 979 हि० में अक्बर हिसारे फीरोज़ा का तमाशा देखने गया वहाँ की वापसी पर अजमेर शरीफ हाज़िर हुआ और हज़रत सुल्तानुल हिन्द के रौज़े की ज़ियारत से मुशर्रफ होकर आगरा पहुँचा।

2 सफर 980 हि० को अक्बर शिकार खेलता हुआ अजमेर रवाना हुआ और 15 रबीउल अव्वल शरीफ बरोज़े सेहशंबा

मज़ारे मुकद्दस की ज़ियारत से बहरायर हुआ।

3 जुमादल उखरा 981 हि0 बरोज़े चहारशंबा अक्बर अजमेर पहुँचा और सुल्तानुल हिन्द की दरगाह मे हाज़िर होकर शराइते तवाफो लवाज़िमे इस्तिम्दाद बजा लाया और तक़रीबन दो लाख नक्दो जिंस मुजावरों व दीगर मुस्तहिक़्क़ीन में तक़्सीम किया।

अवाइले रमज़ानुल मुबारक 982 हि0 में अक्बर अजमेर शरीफ हाज़िर होकर लवाज़िमे ज़ियारत व शराइते तवाफ बजा लाया। 983 हि0 में अक्बर फिर अजमेरे मुकद्दस हाज़िर हुआ और सुल्तानुल हिन्द के आस्ताने की ज़ियारत से मुस्तफीज़ हुआ। 7 ज़ीक़ाअदा 984 हि0 में अक्बर फतेहपुर सीकरी से रौज़ए ग़रीब नवाज़ की ज़ियारतो तवाफ के इरादे से अजमेर रवाना हुआ। 4 ज़िलहिज्जा बरोज़े सेहशंबा अजमेर से तीन मील के फासले पर क़याम किया फिर वहाँ से पैदल रवाना होकर आस्तानए आलिया पर पहुँचा और दस हज़ार रुप्ये खुद्दाम और मुजावारों को इनायत किए। उसी साल अक्बर फिर अजमेर शरीफ गया और शिकार खेलता हुआ दकन की सरहद तक पहुँच गया वहाँ से फतेहपुर सीकरी का रुख़ किया उस के बाद 985 हि0 में अक्बर फिर अजमेर शरीफ गए और हसबे आदत एक कोस से पैदल होकर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के आस्ताने पर हाज़िर होकर फैज़याब हुए फिर देहली केलिए रवाना हुए। 16 रजबुल मुरज्जब 987 हि0 को अक्बर एक बार फिर अजमेर केलिए रवाना हुए जब अजमेर पाँच कोस रह गया तो वहाँ से हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग के रौज़े की ज़ियारत केलिए पैदल रवाना हुआ। उस वुरूदे अजमेर के बाद चौदह साल तक वह अजमेर नहीं गया मगर तब्क़ाते अक्बरी के मुताबिक़ अक्बर 988 हि0 में अजमेर के मज़ार का तवाफ़ करके हज़रत बाबा फरीद गंजे शकर के मज़ार की ज़ियारत के लिए पाकपटन पंजाब रवाना हुआ।,,

शहबाज़ ख़ाँ

आप का अस्ली नाम शहराला था और उम्दतुल मुल्क निज़ामुद्दीन शहबाज़ ख़ाँ ख़िताब था लाहौर के रहने वाले थे। आप का सिलसिलए नसब 26 वास्तों से हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा तक पहुँचता है। आप के अजदाद में हाजी जमालुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह अरब से हिन्दुस्तान आकर हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करीया मुल्तानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मुरीद हुए। 985 हि0 में अक्बर ने आप की और मिर्ज़ा ख़ान व क़ासिम की सरकरदगी में उदयपुर की तरफ फौज

रवाना की थी उस ने कोभलबीर को फतह किया फिर 986 हि0 में उदयपुर फतह किया और 988 हि0 में अक्बर ने अजमेर के सरकशों को ज़ेर करने केलिए आप को अजमेर भेजा 1008 हि0 में आप का अजमेर ही में इन्तेकाल हुआ। चुँकि आप को हज़रत ख़्वाजा से गहरी अक़ीदत थी इस लिए आप ने हज़रत ख़्वाजा की दरगाह में दफ्न करने की वसिय्यत की थी मगर खुद्दामे रौज़ा राज़ी न हुए इस लिए नाचार आप को बाहर ही दफ्न किया गया। रात के वक़्त हज़रते ख़्वाजा ने मुन्तज़िमीने दरगाह को ख़्वाब में ताकीद फरमाई कि ,,शहबाज़ ख़ाँ हमारा दोस्त है उस को शिमाल रूया गुंबद में जगह दो।,, सुब्ह को बमिन्नतो समाजत उन की नाअश क़ब्र से निकाल कर उसी मक़ाम पर दफ्न की गई जहाँ केलिए इरशाद फरमाया गया था। (अलमशाहीर)

जिस वक़्त जहाँगीर ने आस्तानए ग़रीब नवाज़ पर हाज़िरी दी थी तो मिर्ज़ा मुहम्मद अली बेग भी हाज़िरे दरबार हुए उन को शहबाज़ ख़ाँ से बड़ी महब्बत थी। शहबाज़ ख़ाँ की क़ब्र को देखकर मिर्ज़ा मुहम्मद अली बेग क़ब्र से लिपट गए और कहने लगे ,,यह हमारा क़दीमी दोस्त है,, और उसी वक़्त वह भी जाँ बहक़ तस्लीम होगए और वहीं दफ्न हुए।

सुल्तान नूरुद्दीन जहाँगीर

शहंशाहे जहाँगीर अपनी तख़्तनशीनी के आठवें साल याअनी 1022 हि0 में अजमेर केलिए रवाना हुए। जब ख़्वाजए बुज़ुर्ग का गुंबद शरीफ नज़र आने लगा तो वहाँ से पैदल होगया और फुक़रा व गुरबा को सदक़ात तक़्सीम करता हुआ अजमेरे मुक़द्दस में दाख़िल हुआ और इन्तेहाई एहतेरामो अक़ीदत के साथ मज़ारे अक़दस की ज़ियारत का शरफ हासिल किया। वह जगह उस को इतनी पसन्द आई कि तीन साल वह वहीं मुक़ीम रहकर कारोबारे हुकूमत चलाता रहा। उस दरमियान बराबर वह आस्तानए अक़दस पर हाज़िरी देता रहा। (तुज़्के जहाँगीरी)

,,तुज़्के जहाँगीरी,, में एक जगह खुद शहंशाहे जहाँगीर ने लिखा है कि :

> ,,बज़मानए अलालत मेरे दिल में आया कि जिस तरह मैं क़ल्बी और बातिनी तौर पर हुज़ूर ख़्वाजए बुज़ुर्ग का मोअतक़िद और हल्क़ाबगोश हूँ और मैं यह भी जानता हूँ कि मेरा वुजूद उन्हीं के तुफैल है उसी तरह ज़ाहिरी तौर पर भी

कानों में दुरे ग़ुलामी पहनकर हज़रत ख़्वाजा का हल्क़ाबगोश बन जाऊँ।

चुनाँचे माहे रजब में मैं ने कानों में सूराख़ करके मरवारीदे आबदार का एक एक दाना दोनों कानों में पहन लिया साथ ही अहले दरबार ने भी ख़ज़ानए शाही से दुर और लाअल हासिल करके अपने अपने कानों में पहने। रफ्ता रफ्ता यह रस्म आम होगई।

दूसरी जगह लिखते हैं कि :

„हज़रत ख़्वाजए बुज़ुर्ग के उर्स पाक के मौक़े पर शबे यकशंबा रौज़ए मुनव्वरा में हाज़िर हुआ और आधी रात तक वहाँ रहा फुक़रा व ख़ुद्दाम को मैं ने अपने हाथों से ज़र तक़्सीम किया उस मौक़े पर कुल छह हज़ार रूप्ये नक़्द एक सौ शोब कुर्ता और मरवारीद, मरजान व कहरबा की सत्तर तस्बीहात तक़्सीम कीं।„

सुल्तान शहाबुद्दीन शाहजहाँ

शहंशाहे हिन्द शाहजहाँ ने अपने इक्कीस साला दौरे हुकूमत में पाँच बार अजमेरे मुक़द्दस पहुँचकर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की बारगाह में हाज़िरी देने का शरफ हासिल किया है। पहली बार अपनी तख़्तनशीनी के साल हाज़िरे बारगाह हुआ और दरगाह के मुजावरों को अपने अतीय्यात से ख़ुश किया।

फिर 7 रजब 1046 हि0 में वारिदे अजमेर होकर क़स्बे फैज़ किया। पहले अनासागर के किनारे क़ेयाम किया फिर वहाँ से पैदल चलकर आस्तानए पाक पर हाज़िर हुआ। उस मौक़े पर मुब्लिग़ दस हज़ार रूप्ये वहाँ के ख़ुद्दामे आलीमक़ाम को दिए। ज़ियारत का शरफ हासिल करके जामेअ मस्जिद आया।

तीसरी हाज़री 1049 हि0 में हुई इस मौक़े पर शहज़ादी जहाँआरा बेगम आगरा से हमराह आई थीं।

चौथी बार 1053 हि0 में फिर रौनक़ अफ्रोज़े अजमेर हुआ। दौलतबाग़ में क़ेयाम किया वहाँ से पैदल चलकर आस्ताने फैज़निशान पर हाज़िर हुआ। मज़ारे अक़दस की ज़ियारत करने के बाद मुब्लिग़ दस हज़ार रूप्ये मुजावर, ख़ुद्दाम और दूसरे ज़रूरतमन्दों को तक़्सीम किए उस मौक़े पर भी शहज़ादी जहाँआरा बेगम साथ आई थी।„ (किताबुत्तहक़ीक़ वहवाला मिर्आतुल अस्रार व मिर्आतुल आलम)

पाँचवीं मरतवा की हाज़िरी का ज़िक्र „तारीख़े राजपरसस्ती„ में

„सैरुलमुतअख़्ख़िरीन„ और मिर्आतुल आलम के हवाले से किया गया है :

„1064 हि0 में शाहजहाँ ख़्वाजए बुज़ुर्ग के मज़ारे अक़दस पर हाज़िरी देने केलिए अजमेर गया हुआ था वहीं माअलूम हुआ कि चित्तौड़ के क़िले की मरम्मत हो रही है। चूँकि यह बात उस क़रारदाद के ख़िलाफ थी जो जहाँगीर और करण सिंह वलद राणा अमर सिंह के दरमियान तय पाई थी कि राणा अमर सिंह या उस का कोई जानशीन चित्तौड़ के क़िले की दुरुस्ती व मरम्मत नही करेगा। उस के बाद शाहजहाँ ने हुज्जतुल मुल्क साअदुल्लाह ख़ाँ वज़ीर को तीस हज़ार सवार के साथ चित्तौड़ के क़िले को मिस्मार करने केलिए रवाना किया।„

शहज़ादी जहाँआरा बेगम

शाहजहाँ की एक शहज़ादी हूरुन्निसा ने भी अहदे जहाँगीरी में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की बारगाह में हाज़िर होकर अपनी अक़ीदतमन्दी और ग़ुलामी का सुबूत पेश किया है। लेकिन शहज़ादी जहाँआरा बेगम की हाज़िरी इन्तेहाई रूहपरवर व कैफ आवर है इस लिए उन की हाज़िरी की तफ्सील ज़ैल में बयान की जाती है।

शहज़ादी जहाँआरा बेगम ने दो मरतबा अपने वालिदे माजिद शाहजहाँ बादशाह के साथ अजमेर जाकर रौज़ए ग़रीब नवाज़ पर हाज़िरी दी है। उस हाज़िरी की तफ्सील उस ने ख़ुद अपनी किताब „मूनिसुल अरवाह„ में तहरीर की है जिस का ख़ुलासा यहाँ दर्ज किया जारहा है। :

„फक़ीर जहाँआरा बेगम जब अपनी ख़ुश क़िस्मती से अपने वालिद के साथ बतारीख़ 13 शाअबान 1049 हि0 आगरा से रवाना होकर 7 रमज़ान 1049 हि0 जुमा के दिन अजमेर पहुँची और साहिले अना सागर की इमारतों में क़ेयाम किया।„

उस हाज़िरी के ज़िम्न में शहज़ादिये मौसूफा यह भी लिखती हैं कि :

„बादशाह शाहजहाँ को एक ज़माने तक हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग की सियादत तस्लीम नहीं थी वह मशकूक थे मगर अजमेर शरीफ में क़ेयाम के दौरान एक दिन हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग से मुतअल्लिक़ अबुलफज़्ल की एक तहरीर पढ़ी जिस से

यह शुब्हा रफ़ा होगया और बादशाह ने जहाँआरा की बात मान ली।,,

उस के बाद शहज़ादिये मौसूफ़ा ने 1053 हि0 में अपने वालिद के साथ अजमेर शरीफ़ जाकर रौज़ए सरकारे ग़रीब नवाज़ पर हाज़िरी दी। उस हाज़िरी के मुतअल्लिक़ जहाँआरा का वह बयान दर्ज किया जारहा है जो निहायत ही रूहपरवर और कैफ़ आवर है जो मौसूफ़ा की किताब „मूनिसुल अरवाह,, से नक़्ल किया जारहा है मुलाहज़ा कीजिए।

„मैं बतारीख़ 18 शाअबान वालिदे बुज़ुर्गवार के हमराह आगरा से अजमेर रवाना हुई और 7 रमज़ानुल मुबारक 1053 हि0 को वहाँ पहुँची। उस दौरान मेरा यह माअमूल रहा कि हर मन्ज़िल पर दो रक्अत नमाज़े नफ़्ल अदा करने के बाद सूरए यासीन और सूरए फ़ातिहा निहायत इख़लास और अक़ीदत मन्दी से पढ़कर उस का सवाब हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग की रूहे पुरफ़ुतूह को नज़्र करती रही। कुछ दिनों तक अनासागर की इमारत में क़ेयाम रहा। दौराने क़ेयाम बपासे अदबो ताअज़ीम कभी पलंग पर नहीं सोई और न रौज़ए मुनव्वरा की जानिब पुश्त और पाँव किए पूरा पूरा दिन दरख़्तों के साए में गुज़ार देती थी। हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग की बरकत और फ़ैज़ के असर से इतमीनाने क़ल्ब के साथ साथ ज़ौक़ पैदा होगया। एक शब मैं ने महफ़िले मौलूद मुन्अक़िद की ख़ूब चराग़ाँ किया और जो कुछ किया वह कम था। रौज़ए ख़्वाजा बुज़ुर्ग की ज़ीनतो ख़िदमत केलिए जो कुछ मिला और मिलेगा सब ख़र्च कर दूँगी उस में कमी नहीं करूँगी। अल्लाह तआला के सद हज़ार शुक्रो एहसान कि 14 रमज़ान बरोज़े जुमेरात सरकारे ख़्वाजा के मरक़दे अनवर की ज़ियारत नसीब हुई एक पहर दिन रह गया था कि हाज़िरे बारगाहे सआदतपनाह हुई। गुंबद शरीफ़ में हाज़िर होकर सात मरतबा मज़ारे पाक का तवाफ़ किया बादे अज़ाँ अपनी पल्कों से झाड़ू दी मज़ारे पाक की ख़ाको ख़ुश्बू को सुर्मए चश्म बनाया उस के सबब दिल पर जो ज़ौक़ो शौक़ और कैफ़ो सुरूर का आलम तारी था वह तहरीर में नहीं आसकती। कस्रते शौक़ से मैं सरासीमा होगई कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ और क्या करूँ। अलक़िस्सा मैं ने क़ब्र शरीफ़ पर इत्र अपने हाथों से मला और चादरे गुल जो मैं अपने सर पर रख कर लाई थी मज़ार शरीफ़ पर पेश की। बादे अज़ाँ संगे मरमर की मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़ी। यह मस्जिद दो लाख चालीस हज़ार रूपये सर्फ़ करके वालिदे बुज़ुर्गवार ने ताअमीर कराई थी फिर गुंबदे मुबारक में बैठ कर

सूरए यासीन व सूरए फ़ातिहा पढ़कर हज़रत की रूहे पुरफ़ुतूह को ईसाले सवाब किया और मग़्रिब तक वहाँ हाज़िर रही और ख़्वाजए बुज़ुर्ग के यहाँ शमा रौशन करके आबे झालरा से रोज़ा इफ़्तार किया अजब शाम थी जो सुब्ह से बेहतर थी अगरचे उस मुतबर्रक मक़ाम और मख़्ज़ने फ़ुयूज़ से घर आने को जी नहीं चाहता था मगर मजबूर थी :

रिश्तए दर गरदनम अफ़गन्दा दोस्त
मी बुरद हर जा कि ख़ातिर ख़्वाहे ओस्त

अगर ख़ुदमुख़्तार होती तो हमेशा केलिए उसी गोशए आफ़ियत में पड़ रहती नाचार रोती हुई उस दरगाह से रुख़्सत होकर घर आई तमाम रात बेक़रारी में कटी सुब्ह को जुमा के दिन वालिदे बुज़ुर्गवार के साथ आगरा रवाना होगई। (अहसनुस्सियर)

सुल्तान मुहियुद्दीन औरंग ज़ेब

शहंशाह औरंग ज़ेब आलमगीर पहली बार उस वक़्त अजमेर हाज़िर हुए जब दाराशिकोह ने क़िलए तारागढ़ पर मोर्चाबन्दी करके आलमगीर के लशकर के मुक़ाबिल आया। 03 जुमादल उख़्रा 1060 हि0 को आलमगीर हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग के आस्तानए पाक पर हाज़िर हुए, मज़ारे अक़दस का तवाफ़ किया और पाँच हज़ार रूप्ये आस्ताने के मुजावरों को इनायत किए।

फिर बतारीख़ 18 मुहर्रमुल हराम 1090 हि0 में हाज़िरे आस्ताना हुए और मज़ारे अक़दस की ज़ियारत का शरफ़ हासिल किया उस के बाद 29 शाअबान 1090 हि0 को आलमगीर ने हज़रत ख़्वाजा के मज़ार पर हाज़िरी दी और महलाते जहाँगीरी के जानिब से मुब्लिग़ पाँच हज़ार रूप्ये नज़्र किए उस के बाद दौलतख़ानए आली वाक़ेअ अनासागर की जानिब क़दमरंजा फ़रमाया। अख़िरी बार उदयपुर से वापसी के मौक़े पर यकुम रबीउल अव्वल 1091 हि0 में फिर वारिदे अजमेर होकर आस्तानए सरकारे ख़्वाजा से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया।

लॉर्ड कर्ज़न वायसराए हिन्दुस्तान

हिन्दुस्तान के वायसराय लॉर्ड कर्ज़न ने भी 1902 ई0 में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के आस्ताने पर हाज़िर हुआ। वहाँ हर मज़हबो क़ौम की हाज़िरी आस्तानए ग़रीब नवाज़ की हर क़ौम के

लोगों में मक़्बुलियत और आप के शाहाना रोबो दाब को देख कर लॉर्ड कर्ज़न ने एक राय क़ाइम की जिस का इज़्हार उस ने अपनी तहरीर में किया है। वह लिखते हैं कि „मैं ने हिन्दुस्तान में एक क़ब्र को शहंशाही करते देखा है।„

शाहे अफ़्ग़ानिस्तान अमीर हबीबुल्लाह

अफ़्ग़ानिस्तान के बादशाह ने 1907 ई0 में हज़रत ख़्वाजा के आस्तानए पाक पर हाज़िरी का शरफ़ हासिल किया। आप दरगाह शरीफ़ में चीफ़ कमिश्नर और दीगर बरतानवी हुक्काम के साथ पहुँचे। मुतवल्ली, दीवान और ख़ुद्दाम साहिबान ने आप का इस्तिक़्बाल कियामगर आप किसी से मुतवज्जेह नहीं हुए। पहले सीधे क़ुब्बा शरीफ़ में हाज़िर हुए। दरवाज़े बन्द कर दिए गए सब को अन्दर आने से रोक दिया गया। आप तन्हा तक़रीबन डेढ़ घंटे गुंबद शरीफ़ में हाज़िर रहे बादे अज़ाँ बाहर आकर मुतवल्ली साहब और दीवान साहब वग़ैरह से मसाफ़हा और कलाम किया।

नवाब हामिद अली ख़ाँ वालिए रामपुर

जावरा जाते हुए आप ने अजमेर के स्टेशन पर अपनी स्पेशल ट्रेन रुकवाई और दरबारे ग़रीब नवाज़ में हाज़िरी दी। आप के पहुँचने से क़ब्ल क़ुब्बा शरीफ़ का दरवाज़ा बन्द हो चुका था। आप बेगमी दालान में दरवाज़े के सामने बहुत देर तक सर झुकाए रोते रहे उस वक़्त बेगमी दालान में लोगों को आने से रोक दिया गया था आप यहाँ तक़रीबन एक घंटे तक रहे। नवाब ख़्वाजा मुहम्मद ख़ाँ साहब जागीरदार धोलपुर आप के साथ थे आप ने चाहा कि क़ुब्बा शरीफ़ के अन्दर हाज़िरी दूँ मगर दरगाह के ज़िम्मेदारों ने मुऐय्यना वक़्त के अलावा दरवाज़ा खोलने से माअज़िरत कर ली।

मीर उस्मान अली ख़ाँ निज़ामे हैदराबाद

16 अक्तुबर 1912 ई0 में आप ने आस्तानए ग़रीब नवाज़ पर हाज़िरी की सआदत हासिल की और वहाँ ग़ुरबा व मसाकीन को खाना खिलवाया। यह लंगरे आम था। हज़ारहा हज़ार रूप्ये तक़्सीम किए और एक अज़ीमुश्शान सदर दरवाज़ा ताअमीर करने का हुक्म दिया।

दूसरी बार आप 3 नवम्बर 1913 ई0 में हाज़िरे दरबार हुए उस वक़्त सदर दरवाज़ा (उस्मानी गेट) ज़ेरे ताअमीर था। जामेअ

मस्जिद और गुंबद शरीफ़ के अन्दरूनी हिस्से की आप ने मरम्मत कराई संगे मरमर की अगरदानी और मरमरीं चरादान ताअमीर कराया। दोनों झालरों को एक कर दिया मज़ार शरीफ़ के पाईं जानिब चाँदी की तख़्ती पर सोने के हुरूफ़ से लिखा हुआ ज़ैल का शेर आप ही का नज़्र करदा है।

गर बुज़ुर्गम वख़ातिरे पाके तु बाक नेस्त
ख़ाशाक वीं कि बर सरे दरिया गुज़र कुनद

गुंबद शरीफ़ के अन्दर हर एक शमाअदान में एक एक मोमबत्ती आप ही की तरफ़ से रौशन होती थी रोज़ाना एक वक़्त दलिया का लंगर और ऐय्यामे उर्स में दो देगें भी आप की तरफ़ से पकाई जाती थीं। आस्ताने पर क़ाइम दीनी ताअलीमी इदारा „दारुल उलूम मुईनिया उस्मानिया„ के इख़्राजात भी आप ही अदा करते थे। अब यह तमाम सिलसिले 1947 ई0 से बन्द हैं।

महाराजा गोबिंद सिंह वालिये रियासते दतिया

आप अंग्रेज़ों के इक़्तेदार के ज़माने में अपने ओहदे से माअज़ूल होजाने की हालत में बरेली और अफ्रीक़ा में रहने के बाद अजमेर में रखे गए उस ज़माने में आप बहुत ग़मगीन और मुतफ़क्किर रहते थे बिलआख़िर एक दिन सैय्यिद माअसूम अली साहब, नवाब हाजी मुहम्मद ख़ाँ साहब जागीरदार धोलपुर और नवाबज़ादा हाजी अकरम अली ख़ाँ साहब के साथ आस्तानए ग़रीब नवाज़ पर हाज़िर हुए, इत्र में बसी हुई फूलों की चादर जो अपने सर पर रख कर लाए थे मज़ार शरीफ़ पर पेश की, अपनी बहाली की दुआ की और सरकारे ग़रीब नवाज़ की फ़ैज़ बख़्शियों से कामयाबो बामुराद हुए।

महाराजा सरकिशन

सद्रे आअज़म दौलते आसिफ़ीया हैदराबाद

23 दिसम्बर 1924 ई को मआ अहलो अयाल दरबारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में अक़ीदतो महब्बत के साथ हाज़िर हुए और वहाँ मुर्छल झलने की ख़िदमत बजा लाए।

महाराजा सरकिशन प्रसाद उर्दू के शाइर भी थे शाद तख़ल्लुस था चुनाँचे हाज़िरिये दरबारे ख़्वाजा के तअस्सुरात अपने अश्आर के ज़रीआ ज़ाहिर किए हैं जो ज़ैल में दर्ज किए जारहे हैं।

क़त्आत

झुकते हैं शाहों के सर ख़्वाजा की वो सरकार है
हैं मलक दरबाँ वो शाहे चिश्त का दरबार है
शाद क्या परवाह हो बाले हुमा की तुझ को अब
ख़्वाजए अजमेर का तू मूर्छल बरदार है

मूर्छल झलने की ख़िदमत मिल गई
शाद को दुन्या की इज़्ज़त मिल गई
बारगाहे ख़्वाजए अजमेर से
लो कलीदे गंजे क़िस्मत मिल गई

हिन्द के सुल्तान तुम को मुस्तफा का वास्ता
पंजतन का वास्ता आले इबा का वास्ता
शाद इस दर का है साइल दीजिए दिल की मुराद
या मुईनदीन अजमेरी ख़ुदा का वास्ता

आँजहानी पंडित जवाहर लाल नुहरू

आज़ाद हिन्दुस्तान के पहले वज़ीरे आअज़म पंडित जवाहर लाल नुहरू दरबारे ख़्वाजा में पहली बार मुल्क की आज़ादी से पहले 1945 ई0 में हाज़िर हुए गुलाम हुसैन उर्फ तूती क़व्वाल से दरगाहे मुअल्ला में क़व्वाली सुनी। और दूसरी बार फसादाते अजमेर के ज़माने में 1947 ई0 में हाज़िरे आस्ताना हुए। उस मौक़े पर पंडित जी ने तक़रीर की और दरगाह की हिफाज़त का भी इन्तेज़ाम किया।

मोहनदास क्रमचन्द गाँधी

आप हिन्दुस्तान की आज़ादी के अलम्बरदार थे। आल इनडिया ख़िलाफत कान्फ्रंस के मौक़े पर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के आस्ताने पर अक़ीदत मन्दाना हाज़िरी दी और मज़ारे अक़्दस पर फूलों की चादर पेश की।

मौलाना मुहम्मद अली जौहर

क़ाइदे मिल्लत मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने गोलमेज़

कान्फ्रंस में शिरकत केलिए लंदन जाने से पहले अजमेर जाकर हिन्दुस्तान के रूहानी ताजदार, अहले मुल्क के सच्चे ग़मगुसार सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू के दरबारे आली में हाज़िरी का शरफ हासिल किया। बादे नमाज़े इशा बेगमी दालान में क़व्वाली सुनी फिर रुख़्सत हुए। लंदन में आप ने अपने क़ौल पर अमल करते हुए मुल्क की ख़ातिर जान देदी। आप का मज़ार बैतुल मुक़द्दस में है।

जोश मलीहाबादी

हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के मशहूर, मोअतबर और मुस्तनद शाइर शब्बीर हसन ख़ाँ जोश मलीहाबादी 1921 ई0 में वारिदे अजमेर हुए किसी ने आप से कहा कि „दरबारे ख़्वाजा में चल के हाज़िरी दीजिए।„ जवाब दिया कि „मैं तो उस वक़्त तक न जाऊँगा जब तक मेज़बान तशरीफ न लाएंगे।„ बिलआख़िर शब के वक़्त ख़्वाब में एक बुज़ुर्ग को देखा पूछा „आप कौन हैं।„? फरमाया „हम मेज़बान हैं।„

मौलाना हस्रत मूहानी

आप हिन्दुस्तान के पुख़्ता ख़याल, मुख़्लिस और बावक़ार सियासी रहनुमा थे। यूँ तो आप शाइर की हैसियत से ज़ियादा मशहूर थे और उर्दू अदब में आप को रईसुल मुतग़ज़्ज़िलीन के लक़ब से याद किया जाता है। आप का दीवान भी मन्ज़रे आम पर आकर मशहूरो मक़्बूल हो चुका है। आप कभी कभी सरकारे ग़रीब नवाज़ के दरबार में हाज़िरी दिया करते थे। ऐय्यामे उर्स में आप महफिलख़ाने में मुन्अक़िद होने वाली मजिलसे समाअ में भी शरीक होते थे।

दीगर

मज़कूरए बाला साहिबान के अलावा दौरे गुज़श्ता में शहज़ादा दारा शिकोह क़ादरी, सुल्तान ग़यासुद्दीन इब्ने सुल्तान महमूद ख़िलजी अलमाअरूफ ब सुल्ताने माँडा, शहज़ादा शुजाअ, शहज़ादा फर्रुख़ सियर वग़ैरह भी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के अक़ीदतमन्दों और ख़िदमतगुज़ारों में शुमार किए जाते हैं और मुल्क की आज़ादी से पहले और बाद के तमाम रहनुमायाने मुल्को क़ौम बिला तफरीक़े मज़हबो मिललत हाज़िरे बारगाहे ख़्वाजा हुए हैं।

जिस का सिलसिला आज तक जारी व सारी है कि हर साल उसे के मौक़े पर मरकज़ी हुकूमत की तरफ से एक चादर आस्तानए ख़्वाजा पर पेश की जाती है और सद्रे जुमहूरिया, वज़ीरे आअज़म व दीगर वुज़रा व सियासी लीडरान भी हसबे मौक़ा हाज़िरे बारगाह होकर अपनी अक़ीदतो महब्बत का इज़्हार करते हैं।

मुक़द्दस ताअलीमात

सुल्तानुल हिन्द, ख़्वाजए ख़्वाजगान सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी क़ुद्दि स सिर्रुहू ने अपने अख़्लाक़ो अत्वार, हुस्ने किरदार और इल्मी व रूहानी तस्नीफ़ात के अलावा अपने मुरीदों और मोअतक़िदों के साथ नशिसतों में शीरीनिये गुफ़्तार और इल्मी दीनी जवाहिर रेज़ों के ज़रीआ जो तबलीग़े दीन व तरवीजे सुन्नत के तअल्लुक़ से कारहाए नुमायाँ अन्जाम दिए हैं वह तारीख़ के सफ़्हात पर चाँद, सूरज और सितारे बन कर आज भी अहले ईमान के दिलों को रौशनी व ताबनाकी अता कर रहे हैं। आप की ऐसी ही चन्द तबलीग़ी नशिस्तों की गुफ़्तुगू और कलिमाते ख़ैर जिन्हें आम तौर पर „मलफ़ूज़ात„ के नाम से जाना जाता है। आप के अज़ीज़तरीन मुरीदो ख़लीफ़ा हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने इकट्ठा करके „दलीलुल आरिफ़ीन„ नामी किताब में महफ़ूज़ कर दिया है। जिस के मुतालए से पता चलता है कि सरकारे ख़्वाजा ने अपना तबलीग़ी व इस्लाही मिशन किस ख़ुश उस्लूबी के साथ पूरा किया है। आप के मुक़द्दस लबों और क़लम की नोक पर हमेशा क़ुरआन, हदीस और अक़्वालो किरदारे औलियाए किराम का ही ज़िक्र होता और मसाइले शरईय्या से लोगों को आगाह फ़रमाते रहते। उस के अलावा फ़ुज़ूल बातों का आप के यहाँ कोई गुज़र न था। आप के उन मलफ़ूज़ात के मुतालआ से आज भी दर्से इस्लाह

लिया जा सकता है। ज़ैल में उन मल्फ़ूज़ात के कुछ इक़्तेबासात उर्दू ज़बान में पेश किए जारहे हैं कि अस्ल किताब तो फ़ारसी ज़बान में है।

पहली मज्लिस

मुरत्तिबे किताबे „दलीलुल आरिफ़ीन„ हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि „पाँचवें माह 514 हि० को इमाम अबुल्लैस समरक़न्दी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की मस्जिद वाक़ेअ बग़दाद शरीफ़ में हुज़ूर सैय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की क़दमबोसी का शरफ़ इस दुर्वेशे नहीफ़ को हासिल हुआ और फ़क़ीर को शरफ़े बैअत से मुशर्रफ़ फ़रमाया और चहारतरकी कुलाह मेरे सर पर रखा। (फ़ल्हम्दुलिल्लाहि अला ज़ालिक)

उस दिन उस मज्लिस में शैख़ शहाबुद्दीन मुहम्मद सुहरवर्दी, शैख़ दाऊद किरमानी, शैख़ बुरहान मुहम्मद चिश्ती और शैख़ ताजुद्दीन मुहम्मद सफ़ाहानी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम) मौजूद थे और नमाज़ से मुतअल्लिक़ गुफ़्तुगू हो रही थी।

नमाज़ क़ुर्बे ख़ुदावन्दी का ज़रीआ

आप ने फ़रमाया कि सिर्फ़ नमाज़ ही ऐसी इबादत है जिस के ज़रीआ लोग बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त से क़रीब हो सकते हैं इस लिए कि नमाज़ मोमिन की मेअराज है जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है „अस्सलातु मेअराजुल मोमिन„ हर मक़ाम में नमाज़ ही से नूर हासिल होता है और नमाज़ ही बन्दे को ख़ुदा से मिलाती है। नमाज़ एक राज़ है जो बन्दा अपने ख़ालिक़ो मालिक से कहता है। वही क़ुर्बे इलाही पा सकता है जो इस राज़ को राज़ रखने के लाइक़ हो और यह राज़ भी नमाज़ के सिवा किसी और तरीक़े से हासिल नहीं किया जासकता। हदीस शरीफ़ में आया है कि „अलमुसल्लियो युनाजी रब्बहू„ याअनी नमाज़ अदा करने वाला अपने रब से राज़ बयान करता है।

पीर की ख़िदमतो इताअत की बरकतें

बाद अज़ाँ मुझ से मुख़ातब होकर फ़रमाया कि „जब मैं शैख़ुल

इस्लाम सुल्तानुल मशाइख़ हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी नव्वरल्लाहु मरक़रहू का मुरीद हुआ तो मुसलसल आठ बरस तक उन की ख़िदमत में लगा रहा एक लम्हे को भी आराम नहीं किया न दिन देखा न रात। हज़रत कहीं सफर पर जाते तो भी मैं हमराह होता और आप का बिस्तर और दीगर सामान सर पर उठा कर चलता और आप का हर हुक्म बसद शौक़ बजा लाता। हज़रत ने मेरी ख़िदमतो इताअत से खुश होकर मुझे वह नेअमतें अता फरमाईं जो हदे बयान से बाहर हैं ग़रज़: हर कि ख़िदमत कर्द ऊ मख़्दूम शुद

मुरीद को चाहिए कि मुर्शिद के अहकाम की पूरी पूरी ताअमील करे। जिन आअमालो वज़ाइफ की उसे ताअलीम दी जाए उन को हिर्ज़े जाँ बनाले तभी वह मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुँच सकेगा। क्यूँकि पीरे कामिल मुरीद को जो तल्क़ीन करता है वह मुरीद के फायदे ही केलिए होती है। मेरे भाई शैख़ शहाबुद्दीन मुहम्मद सुहरवर्दी भी इसी तरीक़े पर अमलपैरा हुए और दस बरस तक अपने मुर्शिद की ख़िदमत में दिन रात लगे रहे सफर में उन का सामान अपने सर पर उठाए फिरते और फिर सफरे हज से वापसी पर इसी ख़िदमत की बदौलत मरतबए कमाल तक पहुँचे और दीगर नेअमतों से बहरावर हुए।

दो फिरिश्तों का नुज़ूल

इमाम ख़्वाजा अबुल्लैस समरक़न्दी रहमतुल्लाहि तआला अलैह जो फिक़्ह में इमामे वक़्त थे अपनी तफ्सीर की किताब „तंबीह„ में लिखते हैं कि „हर रोज़ दो फिरिश्ते आस्मान से ज़मीन पर उतरते हैं एक काअबे की छत पर खड़ा होकर पुकारता है :

„ऐ जिनो और इन्सानो! सुन लो कि जो शख़्स अल्लाह तआला की तरफ से आइद करदा फराइज़ से ग़फ्लत बरतता है वह उस की हिमायतो पनाह से महरूम होजाता है।„

और दूसरा फिरिश्ता रसूले कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रौज़ए अतहर की छत पर (याअनी मस्जिदे नबवी की छत पर) खड़ा होकर पुकारता है कि :

„ऐ लोगो! सुन लो कि जो शख़्स रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नतें अदा न करे उस को आप की शफाअत नसीब न होगी।„

उंग्लियों का ख़िलाल

एक रोज़ मैं मस्जिदे कीकरी में औलियाए बग़दाद के पास मौजूद था वहाँ वुज़ू करते वक़्त उँगलियों में ख़िलाल करने का ज़िक्र आया। फरमाया कि वुज़ू करते वक़्त उँगलियों का ख़िलाल करना सुन्नत है। इस लिए कि हदीसे पाक में आया है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सहाबए किराम रदियल्लाहु तआला अनहुम को उँगलियों में ख़िलाल करने की तरग़ीब देते थे कि इस तरह अल्लाह तआला तुम्हारी उँगलियों को शफाअत से महरूम नहीं करेगा।

फिर फरमाया कि :

„मैं और ख़्वाजए अजल्ल शीराज़ी एक जगह बैठे थे कि मग़्रिब की नमाज़ का वक़्त आगया। ख़्वाजए अजल्ल शीराज़ी ने ताज़ा वुज़ू किया लेकिन उंग्लियों में ख़िलाल करना भूल गए यकायक ग़ैब से आवाज़ आई „ऐ ख़्वाजए अजल्ल! तुम तो हमारे महबूब मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की दोस्ती का दाअवा करते हो और उन की सुन्नत को तर्क करते हो।„ ख़्वाजए अजल्ल ने यह आवाज़ सुनकर क़सम खा ली कि इन्शाअल्लाह मरते दम तक मैं रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की कोई सुन्नत तर्क नहीं करूँगा।„

चुनाँचे ख़्वाजए अजल्ल फराइज़ के अलावा सुन्नतों की पाबन्दी का ख़ास इल्तेज़ाम फरमाते थे और फिर जब भी इन्हें एकबार का सहव याद आजाता तो परीशान होजाते। एक दिन उसी हालत में आप ने मुझ से फरमाया कि „जिस रोज़ उंग्लियों का ख़िलाल करना।„ मुझ से फौत हुआ मुझे यही ख़याल सताता है कि क़ेयामत के दिन मैं अपने आक़ा व मौला को क्या मुंह दिखाऊँगा।

आअज़ाए वुज़ू का तीन बार धोना

फिर इरशाद फरमाया कि किताब „सलाते मस्ऊदी„ में हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अनहु से मर्वी यह हदीस दर्ज है कि नबिय्ये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि „वुज़ू में हर अज़्व का तीन बार धोना मेरी और अगले पैग़म्बरों की सुन्नत है इस ताअदाद से ज़ियादा करना सितम है।„

एक बार हज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल इब्ने अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह वुज़ू के वक़्त तीन बार हाथ धोना भूल गए और दोबार ही धोकर वुज़ू से फ़ारिग़ हो गए और नमाज़ भी अदा कर ली। रात को ख़्वाब में रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ियारत हुई। आप फ़रमा रहे थे „फ़ुज़ैल! हैरत की बात है कि तुम ने नाक़िस वुज़ू किया।„

हज़रत ख़्वाजा फ़ुज़ैल लरज़ते काँपते ख़्वाब से बेदार हुएफ़ौरन ताज़ा वुज़ू किया और नमाज़ अदा की. नीज़ अपने सहव के कफ़्फ़ारे में एक बरस तक पाँच सौ रक्अत रोज़ाना अदा करते थे।

बावुज़ू सोने के फ़वाइद

आप ने फ़रमाया कि „जो शख़्स रात को बावुज़ू सोता है तो फ़िरिश्तों को हुक्म होता है कि जब तक वह बेदार न हो उस के सरहाने खड़े होकर उस के हक़ में दुआ करते रहें कि „ऐ परवरदिगार! अपने इस बन्दे पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा कि यह नेकी और तहारत के साथ सोया है।„

फिर उसी महफ़िल में इरशाद फ़रमाया कि „अल्लाह का कोई नेक बन्दा अगर बावुज़ू सो जाए तो फ़िरिश्ते उस की रूह को अर्श के नीचे लेजाते हैं जहाँ उसे बारगाहे इलाही से ख़िल्अते फ़ाख़िरा अता होता है और फ़िरिश्ते उसे वापस लेआते हैं। और जो शख़्स बेतहारत सोता है उस की रूह को आस्मान से ही वापस भेज दिया जाता है।„

दाएं और बाएं हाथ के काम

फिर एक हदीसे पाक बयान फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि „हुज़ूर नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है „अलयमीनु लिल्वज्हि वल्यसारु लिल्मिक़्अदि„ याअनी दाहिना हाथ मुंह धोने और खाना खाने केलिए है और बायाँ हाथ इस्तिन्जा करने केलिए है।

मस्जिद में बैल

फिर ज़बाने फ़ैज़तर्जुमान से इरशाद फ़रमाया कि „आदमी जब मस्जिद में दाख़िल हो तो पहले अपना दाहिना पाँव मस्जिद के अन्दर रखे और मस्जिद से बाहर निकलते वक़्त बायाँ पाँव पहले बाहर निकाले यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की

सुन्नत है। एक मरतबा हज़रत ख़्वाजा सुफ़्यान सौरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह मस्जिद में आए और भूल कर पहले बायाँ पाँव मस्जिद में रख दिया उसी वक़्त ग़ैब से आवाज़ आई „सौर„ (याअनी बैल) ख़ानए ख़ुदा में इस तरह बेअदबी से घुस आता है। उसी रोज़ से लोग आप को सुफ़्यान सौरी कहने लगे।

आरिफ़ बिल्लाह

फिर आरिफ़ों से मुतअल्लिक़ गुफ़्तुगू शुरूअ हुई आप ने फ़रमाया कि „आरिफ़ उस शख़्स को कहते हैं जो तमाम जहान को जानता हो और अपनी अक़्ल से किसी चीज़ के लाखों माअना बयान कर सकता हो, महब्बत की तमाम बारीकियों का जवाब देसकता हो, हरवक़्त वह बहरे महब्बत में डूबता और उभरता रहे ताकि अस्रारे इलाही व अनवारे ख़ुदावन्दी के मोती निकाल कर दीदावर जौहरियों को पेश करता रहे ऐसा शख़्स बेशक आरिफ़ बिल्लाह है।„

फिर फ़रमाया „आरिफ़ वह है जो हर वक़्त इश्क़े इलाही में मस्त रहे उठते बैठते सोते जागते हर वक़्त अपने परवरदिगार का ज़िक्र करता रहे लम्हा भर भी उस की याद से ग़ाफ़िल न हो हर लम्हा ख़ालिक़ो मालिक के हिजाबे अज़मत के गिर्द तवाफ़ करता रहे।„

नमाज़े फ़ज्र के बाद मुसल्ले पर बैठा रहना

फिर फ़रमाया कि „अहले इश्क़ो माअरिफ़त फ़ज्र की नमाज़ अदा करके आफ़ताब तुलूअ होने तक अपनी जाएनमाज़ पर ही बैठ कर ज़िक्रे हक़ करता रहे ताकि उसे ख़ुदा की बारगाह में क़ुर्बो मक़्बूलियत हासिल हो और अनवारे इलाही की तजल्ली उन पर लम्हा लम्हा बरसती रहे। ऐसे शख़्स केलिए एक फ़िरिश्ते को हुक्म होता है कि वह जब तक मुसल्ले पर से न उठे उस के पास खड़ा रहकर उस के हक़ में ख़ुदा से मग़्फ़िरत की दुआ करता रहे।„

इब्लीसे लईन को मायूसी

मज़ीद इरशाद फ़रमाया कि „हज़रत ख़्वाजा जुनैद बग़दादी क़ुद्दि स सिर्रुहू ने अपनी किताब„उम्दा„ में तहरीर फ़रमाया है कि एक रोज़ रसूले कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इब्लीसे लईन को बहुत मायूस और ग़मगीन देखा तो आप ने उस

से इस का सबब दर्याफ्त फरमायातो कहने लगा कि मेरी मायूसीऔर रंजो ग़म का सबब आप की उम्मत के चार आअमाल हैं। :

(1) पहला यह कि जो लोग अज़ान सुनकर उस का जवाब देने में मशगूल हो जाते हैं अल्लाह तआला उन के गुनाह बख़्श देता है।

(2) दूसरा यह कि जो लोग राहे हक़ में नाअरए तक्बीर लगाकर मैदाने जिहाद में कूद पड़ते हैं तो अल्लाह तआला उन ग़ाज़ियों को बल्कि उन के घोड़ों तक को बख़्श देता है।

(3)तीसरा यह कि जो लोग रिज़्क़े हलाल पर क़नाअत करते हैं उसी से खुद खाते हैं औरों को भी खिलाते हैं तो अल्लाह तआला उन के गुनाह मआफ कर देता है।

(4)चौथा यह कि जो अशख़ास नमाज़े फज्र अदा करने के बाद अपनी जाए नमाज़ पर बैठ कर ज़िक्रे इलाही में मशगूल रहते हैं और सूरज निकलने पर नमाज़े इशराक़ पढ़ कर अपनी जगह से हटते हैं तो अल्लाह तआला उन्हें और उन के रिश्तेदारों को बख़्श देता है।

हिकायत

उस के बाद इरशाद फरमाया कि „मैं ने „फिक़्हे अक्बर„ में लिखा देखा है कि इमामुल मुत्तक़ीन इमामे आअज़म हज़रत अबू हनीफा कूफी (रहमतुल्लाहि तआला अलैह) रिवायत नक़्ल फरमाते हैं कि एक कफनचोर चालीस बरस तक मुर्दों के कफन चुराता रहा जब वह मरा तो लोगों ने उसे ख़्वाब में जन्नत में टहलते देखा। उस से पूछा कि तेरी इस खुशबख़्ती का क्या सबब है!? उस ने जवाब दिया कि हक़ तआला को मेरा एक अमल पसन्द आगया वह यह कि फज्र की नमाज़ के बाद मैं अपनी जाएनमाज़ पर बैठ कर अल्लाह तआला से अपने गुनाहों से मआफी माँगता रहता फिर सूरज निकलने पर नमाज़े इशराक़ अदा करता और अपने काम में मशगूल होजाता। अल्लाह तआला चूँकि „अन्दक पज़ीर व बिस्यार बख़्श„ है इस लिए उस ने अपने बेपायाँ लुत्फो करम से मेरे मज़्कूरा अमल की बदौलत मेरे गुनाह बख़्श कर मुझे इस मरतबे पर पहुँचा दिया।

आरिफ की मन्ज़िल

उसी मौक़े पर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू ने आरिफाने इलाही से मुतअल्लिक़ इरशाद फरमाया कि „आरिफ एक क़दम में अर्श से गुज़र कर हिजाबे अज़मत से होते हुए हिजाबे किब्रिया तक पहुँच जाते हैं और दूसरे ही क़दम वहाँ से वापस आजाते हैं फिर ख़्वाजा साहब ने आबदीदा होकर फरमाया कि आरिफ का सब से कम्तर दर्जा यह है लेकिन मर्दाने कामिल का दर्जा अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है कि वह कहाँ तक पहुँचते हैं और कब वापस आते हैं।„

दूसरी मज्लिस

गुस्ले जिनाबत

हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह बयान करते हैं कि जुमेरात के दिन सैय्यिदुना सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की क़दमबोसी की दौलत नसीब हुई। उस वक़्त जिनाबत (वह नापाकी जिस से गुस्ल वाजिब होता है) से मुतअल्लिक़ गुफ्तुगू होरही थी मौलाना बहाउद्दीन बुख़ारी और मौलाना शहाबुद्दीन मुहम्मद बग़दादी (क़ुद्दि स सिर्रुहुमा) हाज़िरे ख़िदमत थे (हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने) ज़बाने मुबारक से फरमाया कि „इन्सान के हर बाल के नीचे जिनाबत है लिहाज़ा गुस्ले जिनाबत तब ही मुकम्मल हो सकता है जब बदन के हर बाल की जड़ में पानी पहुँच जाए अगर एक बाल भी खुश्क रह गया तो क़ेयामत के दिन वह बाल उस से झगड़ेगा।

जुनुबी का मुंह और पसीना पाक है

फिर फरमाया „फतावा ज़हीरिया„ में लिखा हुआ है कि आदमी का मुंह पाक रहता है चुनाँचे जुनुबी (जो शख़्स हालते जिनाबत में हो) जिस बरतन से पानी पिए वह नापाक नहीं होता। इसी तरह जुनुबी मर्द या हाइज़ा औरत का मुंह नापाक नहीं होता।„

फिर फरमाया „एक मरतबा रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से एक सहाबी ने सुवाल किया „या रसूलल्लाह!

अगर किसी शख़्स को नापाकी की हालत में (बवज्हे गरमी) पसीना आजाए और उस से उस के कपड़े तर होजाएं तो क्या वह कपड़े नापाक हो जाएंगे।?„

हुज़ूर ने इरशाद फरमाया „नहीं।„.........सरकारे ख़्वाजा ने आगे इरशाद फरमाया कि इन्सान का थूक भी पाक है अगर किसी के बदन या कपड़े को लग जाए तो वह नापाक नहीं होता।„

हलाल ग़ुस्ल का अज्र

उस के बाद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू ने फरमाया कि „मैं ने अपने पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू से सुना है कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से दुन्या में आए और पहली बार ग़ुस्ले जिनाबत की हाजत हुई तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने हाज़िरे ख़िदमत होकर अर्ज़ की कि उठ कर ग़ुस्ल कीजिए। जब आप ने ग़ुस्ल फरमाया तो बहुत फरहतो सुरूर का एहसास हुआ फिर आप ने जिब्रईले अमीन से पूछा कि इस ग़ुस्ल का कुछ अज्र भी है।?

जवाब मिला कि इस ग़ुस्ल के एवज़ आप के जिस्म के हर बाल केलिए आप को एक साल की इबादत का सवाब मिलेगा। और आप के बदन से गिरने वाले पानी के हर क़त्रे से एक फिरिश्ता पैदा फरमाएगा जो रोज़े क़ेयामत तक इबादते इलाही बजा लाता रहेगा और उन तमाम इबादतों का सवाब आप को अता किया जाएगा। इसी तरह इस ग़ुस्ल का सवाब आप की औलाद केलिए भी है बशर्ते कि वह मोमिन हों और उन का ग़ुस्ल हलाल सोहबत के बाद हो।

हराम ग़ुस्ल का वबाल

जब सरकारे ख़्वाजा ने यह बात की तो आबदीदा होगए और फरमाया कि जो शख़्स सोहबते हराम (ज़िना) के बाद ग़ुस्ल करेगा तो उस के बदन के हर बाल के बदले एक साल के गुनाह उस के नामए आअमाल में लिखे जाएंगे और उस के बदन से टपकने वाले पानी के हर क़त्रे से अल्लाह तआला एक शैतान पैदा फरमाएगा और जो बदियाँ उस शैतान से सरज़द होंगी वह उस शख़्स के नामए आअमाल में लिखे जाएंगे।

राहे शरीअत पर चलने वालों की इब्तेदा व इन्तेहा

फिर फरमाया कि जो शख़्स शरीअत के अहकाम की पूरी पाबन्दी करता है वह तरीक़त की मन्ज़िल पर पहुँच जाता है और अगर वह तरीक़त के तमाम शराइत भी पूरी करलेता है तो माअरिफत की मन्ज़िल में पहुँच जाता है अगर माअरिफत की राह पर साबितक़दमी से चलता है तो मरतबए हक़ीक़त तक पहुँच जाता है फिर उस की हर आरज़ू पूरी होजाती है।

नमाज़ एक अमानत है

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अचानक अपना मौज़ूअे सुख़न नमाज़ की तरफ फेर दिया और फरमाया कि नमाज़ एक अमानत है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के सुपुर्द फरमाई है। तो बन्दों पर वाजिब है कि अमानत में किसी क़िस्म की ख़ेयानत न करें।

फिर इरशाद फरमाया कि इन्सान जब नमाज़ अदा करे तो ताअदीले अरकान में कमी न करे याअनी रुकूअ, सुजूद और हर रुक्न कमा हक़्क़ुहू बजा लाए और सहीह तरीक़े से नमाज़ अदा करे।

हुक़ूक़े नमाज़ की अदाइगी

फिर सरकारे ख़्वाजा ने इरशाद फरमाया कि किताब „सलाते मस्ऊदी„ में लिखा है कि „जो शख़्स नमाज़ का पूरी तरह हक़ अदा करता है (याअनी वक़्त की पाबन्दी के साथ ख़ुशूअ, ख़ुज़ूअ और सहीह तरीक़े से नमाज़ अदा करता है) तो फिरिश्ते उस की नमाज़ को आस्मान की बलन्दियों पर लेजाते हैं। उस नमाज़ से एक ख़ास क़िस्म का नूर पैदा होता है, उस केलिए अफ्लाक के सौ दरवाज़े खोल दिए जाते हैं फिर वहाँ से उस नमाज़ को अर्श के क़रीब लेजाते हैं वहाँ वह बारगाहे एज़दी में सज्दारेज़ होती है और अपने अदा करने वाले के हक़ में दुआए बख़्शिश करती है। उस के बरअक्स जो शख़्स नमाज़ बेतवज्जुही से अदा करता है उस की नमाज़ उस के मुंह पर मार दी जाती है और कहा जाता है कि तू

ने सब कुछ ज़ाएअ कर दिया।„

उस के बाद आप ने एक हदीस बयान फरमाई कि „सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक शख़्स को इस तरह नमाज़ पढ़ते हुए देखा कि रुकूओ सुजूद सहीह तरीक़े से नहीं अदा कर रहा था जब वह नमाज़ से फारिग़ हुआ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने पूछा „ऐ शख़्स! तू कब से इस तरह से नमाज़ पढ़ रहा है!?„

उस ने जवाब दिया „या रसूलल्लाह शुरूअ से (याअनी जब से नमाज़ शुरूअ की है इसी तरह नमाज़ पढ़ता हूँ)।„

रहमते दोआलम की आँखें पुरनम होगईं और आप ने इरशाद फरमाया „अफ्सोस। तू ने आज तक कुछ नहीं किया और अगर तू इसी हालत में मर जाए तो मेरी सुन्नत पर नहीं मरेगा।„

उस के बाद सरकारे ख़्वाजा ने फरमाया कि „मैं ने ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से सुना है कि क़ेयामत के दिन जो मुसलमान नमाज़ की ज़िम्मेदारी से छूट गया वही बारगाहे इलाही में सुर्ख़रू होगा वरना जहन्नम का एंधन बनेगा।„

हिकायत

फिर सरकारे ख़्वाजा ने एक हिकायत बयान फरमाई कि एक मरतबा मैं शाम के क़रीब एक शहर में मुक़ीम था उस शहर से बाहर एक ग़ार था जिस में एक बुज़ुर्ग शैख़ औहद मुहम्मद अब्दुलवाहिद ग़ज़्नवी रहते थे उन के जिस्म की लाग़री का यह आलम था कि बदन की एक एक हड्डी शुमार की जासकती थी याअनी सिर्फ़ चमड़ा था गोश्त का नामो निशान नहीं था मैं मुलाक़ात की ग़रज़ से उन के पास गया तो देखा कि जाए नमाज़ पर बैठे हैं और दो शेर उन के सामने खड़े हैं। मैं शेरों के ख़ौफ से ठिठक कर बाहर ही खड़ा रह गया। शैख़ ग़ज़्नवी की नज़र जब मुझ पर पड़ी तो फरमाया „अन्दर आजाओ डरो मत।„ मैं ग़ार के अन्दर दाख़िल हुआ और शैख़ को सलाम करके अदब से बैठ गया। आप ने फरमाया „अगर तुम किसी को नुक़सान या अज़िय्यत पहुँचाने का इरादा न करो तो तुम्हें भी कोई चीज़ तक्लीफ या नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। जो शख़्स ख़ुदा से डरता है उस से हर चीज़ डरती है शेर क्या चीज़ है। फिर मुझ से फरमाया „कहाँ से आए हो।„ मैं ने कहा बग़दाद से, फरमाया तुम्हारा आना मुबारक हो। दुर्वेशों की ख़िदमत किया करो तुम्हें उस का अच्छा फल

मिलेगा। और मेरी सुनो, मैं कई साल से तर्के दुन्या करके इस ग़ार में गोशागीर हूँ और तीस साल से एक चीज़ के ख़ौफ से हमेशा रोता रहता हूँ।„

मैं ने पूछा „वह क्या चीज़ है!?„

शैख़े ग़ज़्नवी ने फरमाया „वह नमाज़ है। हर वक़्त मुझे यही ख़ौफ दामनगीर रहता है कि नमाज़ की कोई शर्त फौत न होजाए क्यूँकि उस के-नतीजे में सारी इताअते इलाही मेरे मुंह पर मार दी जासकती है। ऐ दुर्वेश! अगर तुम ने नमाज़ का पूरा हक़ अदा कर लिया तो वाक़ई बड़ा काम कर लिया वरना यह समझ लो कि सारी उम्र तुम ने ग़फ्लत में ज़ाएअ कर दी। ख़ुदा के नज़दीक तर्के नमाज़ से बढ़कर कोई गुनाह नहीं और तारिके नमाज़ से बढ़कर ख़ुदा का कोई दुश्मन नहीं। दोज़ख़ का पेट वही लोग भरेंगे जो नमाज़ पूरे शराइत के साथ अदा नहीं करते और वक़्त बेवक़्त नमाज़ पढ़ते हैं। मुझे तुम जो हड्डियों का ढाँचा देख रहे हो इस का सबब यही है कि मैं हर वक़्त इस बात से ख़ौफज़दा रहता हूँ कि मैं नमाज़ का हक़ अदा कर पाया हूँ या नहीं।

उस के बाद शैख़े ग़ज़्नवी ने मुझे एक सेब अता फरमाते हुए नमाज़ का हक़ अदा करने की मज़ीद ताकीद फरमाई।

दीन का सुतून

यह हिकायत बयान फरमाते हुए सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की आँखें पुरनम होगईं और फिर आप ने फरमाया „दोस्तो! नमाज़ दीन का सुतून है और अरकाने नमाज़, नमाज़ के सुतून हैं। सुतून खड़ा रहे तो घर सलामत रहता है और अगर सुतून गिर पड़े तो घर भी मुन्हदिम हो जाता है। चूँकि नमाज़ दीन का सुतून है इस लिए जिस शख़्स की नमाज़ के फराइज़, सुनन और वाजिबात में ख़लल पड़ा गोया उस के दीन में फर्क़ पड़ा।

क़ेयामत के दिन हिसाब के पचास मक़ामात

सैय्यिदी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू ने इस सिलसिलए बयान में आगे इरशाद फरमाया कि „सलाते मस्ऊदी„ की शरह „वास्ता„ में इमाम ज़ाहिद रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तहरीर फरमाया है कि „अल्लाह तआला ने नमाज़ से ज़ियादा किसी और इबादत की ताकीद नहीं फरमाई और सैय्यिदुना इमाम

जाअफर सादिक रदियल्लाहु तआला अन्हु का इरशादे गिरामी है कि „कुरआने हकीम में अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को जाबजा नसीहतें फरमाई हैं और उन के लिए हर जगह मुन्फरिद पैरायए बयान इख़्तियार किया है लेकिन अक्सरो बेशतर नमाज़ की ताकीद भी साथ में मौजूद है और हज़रत सैय्यिदुना माअरूफ कर्ख़ी कुद्दि स सिर्रुहू की तफ्सीर के मुताबिक़ कयामत के दिन बन्दों का हिसाब पचास मक़ामात पर होगा और पचास मुख़्तलिफ चीज़ों से मुतअल्लिक़ हिसाब होगा जो बन्दा जिस मन्ज़िल पर फेल होगा वहीं से दोज़ख़ की तरफ भेज दिया जाएगा और तमाम मक़ामात पर पास होजाने वालाबन्दा ही जन्नत का मुस्तहक़ होगा। उन में पहली मन्ज़िल में ईमान से मुतअल्लिक़ सुवाल होगा अगर उस का सहीह जवाब देदिया तो दूसरी मन्ज़िल पर नमाज़ और उस के अरकानो हुकूक़ के बारे में सुवाल किया जाएगा अगर बन्दा उस में भी पूरा उतर गया तो तीसरी मन्ज़िल पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नतों पर अमल के बारे में पुछा जाएगा अगर बन्दा अदाए सुनन के हिसाब से ओहदा बरआ होगया तो सुब्हानल्लाह वरना मोअक्किलों के साथ हुज़ूर आक़ाए कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रूबरू पेश किया जाएगा और कहा जाएगा कि यह शख़्स आप की उम्मत से है लेकिन इस ने आप की सुन्नतों के अदा करने में कोताही बरती है।„

उस के बाद सरकारे ख़्वाजा ने इरशाद फरमाया कि „अफ्सोस उस शख़्स पर जो कयामत के दिन रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सामने शर्मिन्दा होगा फिर ऐसे शख़्स का ठिकाना कहाँ होगा।„

तीसरी मज्लिस

सरकारे ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि „बुध के दिन सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की क़दमबोसी का शरफ हासिल हुआ उस मज्लिस में मेरे अलावा मौलाना बहाउद्दीन बुख़ारी, ख़्वाजा औहदुद्दीन किरमानी और

समरकन्द के छह दुर्वेश भी हाज़िरे ख़िदमत थे गुफ्तुगू का आग़ाज़ औक़ाते नमाज़ की पाबन्दी के मौज़ूअ पर हुआ।

नमाज़ की अदाइगी में ताख़ीर पर अफ्सोस

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से सुवाल किया गया कि „ऐसे शख़्स से मुतअल्लिक़ क्या हुक्म है जो जान बुझ कर फर्ज़ नमाज़ की अदाइगी में इतनी ताख़ीर करदे कि वक़्त गुज़र जाए और फिर क़ज़ा अदा करे।„?

आप ने इरशाद फरमाया „वह कैसा मुसलमान है जो नमाज़ वक़्त पर नहीं अदा करता ऐसे लोगों के मुसलमान होने पर सद हज़ार अफ्सोस जो अल्लहा तआला की बन्दगी में कोताही करें।„

फिर फरमाया कि „मेरा गुज़र एक ऐसे शहर से हुआ जहाँ नमाज़ का वक़्त आने से पहले ही लोग नमाज़ केलिए मुस्तइद होकर खड़े होजाते। मैं ने उन से इस का सबब पूछा तो बताया कि „हमारी आरज़ू होती है कि नमाज़ का वक़्त आते ही फौरन अदा करलें अगर हमारी सुस्ती से नमाज़ का वक़्त निकल गया तो कयामत के दिन अपने आक़ा व मौला रसूले दोआलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सामने शर्मसार होंगे क्यूँकि हुज़ूर का इरशादे गिरामी है „अज्जिलू बित्तौबति क़ब्लल मौति व अज्जिलू बिस्सलाति क़ब्लल फौति„ याअनी मौत के आने से पहले तौबा करने में जल्दी करो और वक़्त गुज़र जाने से पहले नमाज़ केलिए जल्दी करो।

फिर इरशाद फरमाया कि „मैं ने किताब वासिआ„ में देखा है नीज़ अपने उस्ताज़े गिरामी मौलाना हुस्साम मुहम्मद बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की यह हदीसे मुबारक सुनी है „मिन अक्बरिल कबाइरि युज्मउ बैनस्सलातैन„ याअनी कबीरा गुनाहों में बड़ा गुनाह यह है कि (नमाज़ का वक़्त गुज़र जाने पर) दो नमाज़ें मिलाकर पढ़ी जाएं।„

नमाज़ केलिए मस्नून औक़ात

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फरमाया कि „मैं ने पीरो मुर्शिद हज़रत सैय्यिदुना उस्माने हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू से बरिवायते हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु यह हदीसे पाक सुनी है। आप ने फरमाया है कि „मैं तुम्हें मुनाफिक़ीन की

नमाज़ का हाल बताऊँ कि कैसी होती है।?„

सहाबए किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया „हाँ या रसूलल्लाह! हमारे माँ बाप आप पर कुरबान ज़रूर बताइये।„

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि „जो शख़्स अस्र की नमाज़ में (जान बुझ कर) इतनी ताख़ीर करे कि सूरज की रौशनी धीमी पड़ जाए तो वह शख़्स गुनहगार है।„

सहाबा ने अर्ज़ किया „या रसूलल्लाह इस का वक़्त भी मुएंय्यन फरमा दीजिए।

हुज़ूर ने फरमाया „नमाज़े अस्र का वक़्त उसी वक़्त तक है जब तक सूरज खूब रौशन रहे और उस का रंग ज़र्द न होजाए। यह हुक्म गर्मी और सर्दी दोनों मौसमों केलिए है।

उस के बाद सरकारे ख़्वाजा ने फरमाया कि „मैं ने फ़िक़्ह की किताब „हिदाया„ में शैखुल इस्लाम हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के हाथ की तहरीर करदा यह हदीसे पाक देखी है „अस्फिरू बिल्फज्रि लिअन्नहू आअज़मु बिलअज्रि„ याअनी सुब्ह की नमाज़ सफ़ेदी में अदा करो इस लिए कि उस में बहुत ज़ियादा अज्र है।„

ज़ुहर की नमाज़ में सुन्नत यह है कि मौसमे सर्मा में जिस वक़्त साए ढलें उसी वक़्त अदा कर ली जाए और मौसमे गर्मा में दोपहर के बाद जब हवा में ख़ुन्की पैदा होजाए उस वक़्त पढ़े हुज़ूर ने इरशाद फरमाया है कि „मौसमे गर्मा में नमाज़े ज़ुहर ठंडे वक़्त में पढ़ा करो क्यूँकि गर्मी की शिद्दत जहन्नम की साँस है।„

हिकायत

उस के बाद सरकारे ख़्वाजा ने यह हिकायत बयान फरमाई कि „एक बार हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से सुब्ह की नमाज़ क़ज़ा होगई तो उस के ग़म में आप इतना रोए और इतनी आहो ज़ारी की कि बयान से बाहर है। ग़ैब से आवाज़ आई „ऐ बायज़ीद! तू इस क़दर आहो ज़ारी क्यूँ कर रहा है अगर सुब्ह की एक नमाज़ फौत होगई तो हम ने तेरे नामए आअमाल में हज़ार नमाज़ों का सवाब लिख दिया है।„

जिस की नमाज़ नहीं उस का ईमान नहीं

फिर इरशाद फरमाया कि „मैं ने „तफ्सीरे महबूबे कुरैशी„ में पढ़ा है कि जो शख़्स नमाज़े पंजगाना हमेशा वक़्त पर अदा करेगा तो क़ेयामत के दिन उस की नमाज़ें उस की रहनुमाई करेंगी और जो शख़्स नमाज़ नहीं पढ़ता वह बेईमान है क्यूँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया है „ला ईमा न लिमल्ला सला त लहू„ याअनी जिस की नमाज़ नहीं उस का ईमान नहीं।„

और मैं ने मुर्शिदी हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुदि स सिर्रुहू से सुना है कि „तफ्सीरे इमाम ज़ाहिद„ में आयते मुबारका „फवैलुल्लिल मुसल्लीनल्लज़ी न हुम अन सलातिहिम साहून„ (याअनी वैल है उन नमाज़ियों केलिए जो अपनी नमाज़ में सुस्ती करते हैं) की तफ्सीर में लिखा है कि „वैल„ जहन्नम का एक कुआँ (या दोज़ख़ का एक जंगल) है जिस में हवलनाक अज़ाब रखा गया है। ये नमाज़ में सुस्ती करने वालों केलिए मख़्सूस है।

फिर फरमाया कि „एक मरतबा ख़लीफ़ए दोम हज़रत उमर फारूके आअज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु से मग़रिब की नमाज़ अदा करने में ताख़ीर होगई कि आस्मान पर सितारे नज़र आने लगे। आप सख़्त पशीमान और ग़मनाक हुए और उसी वक़्त उस ताख़ीर के कफ्फारे में एक गुलाम आज़ाद कर दिया। क्यूँकि हुक्मे शरअ यह है कि सूरज डूबते ही फौरन ही मग़रिब की नमाज़ पढ़ ली जाए उस के बरख़िलाफ ताख़ीर करना सख़्त गुनाह का बाइस है।

सदक़े के फवाइद

उस के बाद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने सदक़े के मौज़ूअ पर गुफ्तुगू शुरूअ करदी। आप ने फरमाया „जो शख़्स किसी भूके को खाना खिलाएगा अल्लाह तआला क़ेयामत के दिन उस शख़्स और दोज़ख़ के दरमियान सात पर्दे हाइल करदेगा। जिन में से हर पर्दे की मोटाई पाँच सौ बरस की राह के बराबर होगी।

झूटी क़सम खाने का वबाल

फिर कुछ देर के बाद झूटी क़सम से मुतअल्लिक़ गुफ्तुगू

शुरूअ हुई आप ने फ़रमाया „जो शख़्स झूटी क़सम खाता है उस के घर से बरकत उठ जाती है और झूटी क़सम खाकर वह अपना घरबार तबाहो बरबाद कर लेता है।„

हिकायत

फिर बग़दाद की जामेअ मस्जिद में मौलाना अमादुद्दीन बुख़ारी से सुनी हुई एक हिकायत बयान फ़रमाई कि „एक मरतबा अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलहिस्सलाम को बताया कि ऐ मूसा! मैं ने सातवाँ दोज़ख़ „हाविया„ बनाया है यह सब से ज़ियादा ख़ौफ़नाक और उस की आग निहायत सियाह और तेज़ है उस में साँप बिच्छू भी बकस्रत हैं वह गंधक के पत्थरों से रोज़ाना तपाया जाता है अगर उस गंधक का एक क़त्रा भी दुन्या में आकर पड़ जाए तो तमाम पानी ख़ुश्क होजाए, सब पहाड़ जल जाएं और उस की गर्मी से ज़मीन फट जाए ऐ मूसा! ऐसा अज़ाब दो शख़्सों केलिए तैयार किया गया है एक वह जो नमाज़ नहीं अदा करता और दूसरे वह जो झूटी क़सम खाता है।„

हिकायत

फिर फ़रमाया कि „अहले हक़ तो सच्ची क़सम खाने से भी डरते हैं और इसी ज़िम्न में एक हिकायत बयान फ़रमाई कि „एक मरतबा ख़्वाजा मुहम्मद अस्लम तूसी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने जो एक पाक बातिन बुज़ुर्ग थे हालते सुक्र में सच्ची क़सम खाली। जब हालते सुक्र दूर हुई और होश में आए तो लोगों से पुछा कि क्या आज मैं ने क़सम खा ली है।? लोगों ने इस्बात में जवाब दिया। आप ने फ़रमाया „आज मेरा नफ़्स मुझ पर ऐसा ग़ालिब आगया कि मैं ने सच्ची क़सम खा ली इस का मतलब यह है कि कल मैं और भी क़स्में खा सकता हूँ क्यूँकि मेरा नफ़्स इस का आदी होगया। मैं आज के बाद हमेशा ख़ामोश रहूँगा और किसी से कोई कलाम नहीं करूँगा।

इस वाक़ेअे के बाद ख़्वाजा मुहम्मद अस्लम तूसी चालीस बरस तक ज़िन्दा रहे लेकिन उन्हों ने किसी शख़्स से मुत्लक़ कोई बात नहीं की। यह सब कुछ उन्हों ने एक सच्ची क़सम खाने के कफ़्फ़ारे में किया।„

चौथी मज्लिस

दोशंबए मुबारका को सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की क़दमबोसी का शरफ़ हासिल हुआ उस मज्लिस में ख़्वाजा काकी के अलावा शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी, शैख़ सैफ़ुद्दीन बाख़िरज़ी और ख़्वाजए अजल्ल शीराज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम भी मौजूद थे। महब्बत में सदाक़त के मौज़ूअ पर गुफ़्तुगू शुरूअ हुई।

मुहिब्बे सादिक़

महब्बत में सादिक़ वह है जो दोस्त की तरफ़ से पहुँचने वाले ख़ुशी व ग़म और राहतो मुसीबत दोनों ख़न्दा पेशानी से क़ुबूल करले ख़्वाह दोस्त की तरफ़ से उस पर मसाइब के पहाड़ टूट पड़ें वह ज़बान से उफ़ तक न कहे और ख़ुशी से यह तक्लीफ़ें बर्दाश्त करले।

शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया कि „महब्बत में सादिक़ वह शख़्स है कि उस के सर पर हज़ारों तल्वारें मारी जाएं मगर आलमे शौक़ो इश्तियाक़ में उसे ख़बर तक न हो।„

फिर ख़्वाजए अजल्ल शीराज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया कि "मौला की दोस्ती में वह शख़्स सादिक़ होता है कि अगर उस के जिस्म का रेज़ा रेज़ा करदिया जाए या आग में जलाकर ख़ाकिस्तर करदिया जाए तब भी दम न मारे।"

उस के बाद हज़रत शैख़ सैफ़ुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने इरशाद फ़रमाया कि "महब्बत में सादिक़ वह शख़्स होता है कि जिसे हमेशा चोट लगे मगर मुशाहदए दोस्त में उस चोट को भूल जाए और उस पर कोई असर न हो।"

शैख़ुल इस्लाम हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती क़ुद्दि स सिर्रुहू ने फ़रमाया कि "यह बात हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी में पाई जाती है। इस लिए कि मैं ने "अस्रारुल औलिया" में पढ़ा है कि

महब्बते सादिक़ पर मुकालमा

एक मरतबा हज़रत राबेआ बस्री, हज़रत ख़्वाजा हसन बस्री, हज़रत मालिक बिन दीनार और हज़रत ख़्वाजा शफ़ीक़ बलख़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम बस्रा में एक मज्लिस में महवे गुफ्तुगू थे और मौज़ूअ इश्क़ो महब्बत था।

हज़रत ख़्वाजा हसन बस्री ने फ़रमाया "मौला की दोस्ती में वह शख़्स सादिक़ है जो रंजो ग़म और दर्दो मुसीबत पर ख़ुशी से सब्र करे।"

हज़रत राबेआ बस्री ने फ़रमाया "ख़्वाजा! इस से तो ख़ुदी की बू आती है।"

फिर हज़रत मालिक बिन दीनार ने फ़रमाया कि "मौला की दोस्ती में सादिक़ वह है जो दोस्त की तरफ़ से हर बला व मुसीबत पर उसी की रज़ाजोई करे और उस पर भी राज़ी रहे।"

हज़रत राबेआ बस्री ने फ़रमाया "आशिक़े सादिक़ को इस से भी बेहतर होना चाहिए।"

उस के बाद हज़रत ख़्वाजा शफ़ीक़ बलख़ी ने फ़रमाया कि "मौला की दोस्ती में सादिक़ वह है कि अगर उस का ज़र्रा ज़र्रा कर दिया जाए तो भी उफ़ न करे।"

हज़रत राबेआ बस्री ने फ़रमाया "मेरे नज़दीक इश्क़े सादिक़ यह है कि आशिक़ को चाहिए जिस क़दर रंजो अलम पहुँचें वह मुशाहदए हक़ में सब भूल जाए मगर उस से कभी ग़ाफ़िल न हो।"

फिर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाया कि "हम भी इस बात का इक़रार करते हैं" और शैख़ सईदुद्दीन ने फ़रमाया कि "सिदक़े महब्बत इसी का नाम है।"

क़ब्रस्तान में क़हक़हा

फिर हंसी और क़हक़हा से मुतअल्लिक़ गुफ्तुगू शुरूअ होगई सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इरशाद फ़रमाया कि "खिलखिला कर हंसना गुनाह है अहले सुलूक तो मुस्कुराने से भी परहेज़ करते हैं और क़ब्रस्तान में तो बिलकुल ही मना है क्यूँकि वह मक़ामे इब्रत है। हदीसे पाक में आया है कि "जब कोई शख़्स क़ब्रस्तान से गुज़रता है तो मुर्दे कहते हैं कि ऐ अल्लाह के बन्दे अगर तुझे क़ब्र

के अन्दर का हाल मालूम होजाए तो तू सर्द होजाए और तेरा गोश्त पोस्त ख़ौफ़ो दहशत के मारे पानी होकर बह जाए फिर आप ने दर्जे ज़ैल हिकायात बयान फ़रमाईं :

हिकायत

एक मरतबा मैं और शैख़ औहदुद्दीन किरमानी दौराने सफ़र किरमान पहुँचे वहाँ हमारी मुलाक़ात एक ज़ईफ़ुल उम्र बुज़ुर्ग से हुई वह महज़ हड्डियों का एक ढाँचा थे और सिर्फ़ साँस की आमदो शुद से उन की ज़िन्दगी का पता चलता था वह हर वक़्त ज़िक्रे इलाही में मशगूल रहते थे और किसी से बात चीत भी बहुत कम करते थे अल्लाह तआला ने उन्हें कुव्वते कश्फ़ अता फ़रमाई थी हमारे हाज़िर होने पर फ़रमाया :

"ऐ दुर्वेशो! तुम मुझ से मेरी हालत के बारे में पूछना चाहते हो तो सुनो। एक दिन यह आजिज़ एक दोस्त के साथ क़ब्रस्तान गया हम वहाँ एक क़ब्र के सरहाने बैठ कर बातें करने लगे। अपने दोस्त की एक बात पर मुझे बे इख़्तियार हंसी आगई। यकायक उसी क़ब्र से आवाज़ आई "ऐ ग़ाफ़िल! एक दिन फ़िरिश्तए अजल तुझे भी दबोच लेगा और तू हशरातुल अर्द की ख़ुराक बन जाएगा भला तुझको हंसी से क्या काम।?"

यह आजिज़ उसी वक़्त अपने दोस्त से रुख़्सत हुआ और इस जगह आकर बैठ गया आज चालीस बरस होने को आए हैं सिवाए रोने और ज़िक्रे इलाही के मेरा कुछ काम नहीं है। उस वाक़ेअे के बाद शर्म के मारे चालीस साल से मैं ने आस्मान की तरफ़ निगाह नहीं उठाई और हर वक़्त इस ख़ौफ़ से मैं घुलता रहता हूँ कि क़ेयामत के दिन ख़ुदा को क्या मुंह दिखाऊँगा।"

हिकायत

एक मरतबा बग़दाद में दरिया के किनारे एक झोंपड़ी में एक बुज़ुर्ग रहते थे मैं ने वहाँ पहुँच कर सलाम किया उन्हों ने इशारे से जवाब देकर बैठने का इशारा किया। कुछ देर के बाद मुख़ातब हुए और कहा "ऐ दुर्वेश! मैं ने तक़रीबन पचास साल से यह गोशए तन्हाई अपना रखा है। तुम्हारी तरह मैं ने भी बहुत सफ़र किए हैं। एक सफ़र में मैं ने एक दुन्यादार बुज़ुर्ग को देखा जो ख़ल्क़े ख़ुदा

को सताते थे मैं ने अनदेखी करते हुए नज़र अन्दाज़ कर दिया और वहाँ से चला आया। ग़ैब से आवाज़ आई ऐ दुर्वेश! अगर उस ज़ालिम को अल्लाह से डराकर उसे उस ज़ुल्म से बाज़ रखने की कोशिश करता तो शायद उस की इस्लाह हो जाती और वह उस गुनाह से बच जाता मगर तू ने इस ख़याल से कुछ न कहा कि वह तुझ पर मेहरबानी करता था और कुछ कह देने पर शायद वह ऐसा न करता इस लिए तूने अपनी ज़ाती मस्लिहत केलिए उसे गुनाह में मुब्तला छोड़ दिया।

जब से मैं ने यह ग़ैबी आवाज़ सुनी है मारे शर्म के कई साल से इस कुटिया से बाहर नहीं निकला हूँ मुझे यह अंदेशा है कि अगर क़ेयामत में मुझ से इस मुआमले में सुवाल हुआ तो मैं क्या जवाब दूँगा।"

उस के बाद जब शाम का वक़्त हुआ तो दो रोटियाँ और पानी का एक कूज़ा और प्याला उतरा मैं और उस फक़ीर ने एक साथ इफ्तार किया। जब मैं वहाँ से रवाना हुआ तो उन्हों ने मुसल्ले के नीचे से दो सेब निकाल कर मुझे दिए मैं आदाब बजा लाकर वापस चला आया।

हिकायत

हज़रत ख़्वाजा फतह मूसली रहमतुल्लाहि तआला अलैह एक साहिबे तरीक़त बुज़ुर्ग थे आठ साल तक ख़ौफे आख़िरत से इस क़दर रोए कि रुख़्सारों का गोश्त गल गया। उन की वफात के बाद लोगों ने उन को ख़्वाब में देखा तो उन का हाल पूछा। ख़्वाजा फतह मूसली ने बताया कि जब मुझे बारगाहे इलाही में पेश किया गया तो मुझ से पूछा गया "ऐ फतह! तू इस क़दर क्यूँ रोया तुझे हमारे ग़फ्फार होने में शक था।?"

मैं ने जवाब दिया "मौलाए करीम! तेरे ग़फ्फार होने पर मेरा ईमान था लेकिन मैं रोज़े हिसाब की दहशत, दमे नज़अ की सख़्ती और क़ब्र की तंगी व तारीकी के ख़ौफ से सेया करता था।"

रहमते इलाही जोश में आगई और हुक्म हुआ जा तुझे हम ने उस ख़ौफ से नजात दी और बख़्श दिया।

हिकायत

हज़रत ख़्वाजा अता सलमी रहमतुल्लाहि तआला अलैह एक

ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग थे वह चालीस बरस तक रोते रहे उस दौरान आस्मान की तरफ कभी निगाह भी नहीं उठाई लोगों ने उन से इस का सबब दरयाफ्त किया तो फरमाया "कुछ अपने गुनाहों की शर्म है और कुछ इस वजह से कि कई मज्लिसों में मैं हंसी ठट्ठा करता रहा हूँ आस्मान की तरफ निगाह करने की अपने आप में हिम्मत नहीं पाता हूँ और मेरा रोना रोज़े हश्र और क़ब्र की दहशत की वजह से है।

हिकायत

मैं अपने पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू के हमराह सफ़र के दौरान एक मरतबा सीविस्तान पहुँचा वहाँ एक दुर्वेश हज़रत सद्रुद्दीन मुहम्मद अहमद सीविस्तानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ज़ियारत से मुशर्रफ होकर उन की ख़िदमत में चन्द रोज़ रहा। वह एक साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे। तमाम दुनया से अलग थलग एक सौमआ में तन्हा यादे इलाही में मशग़ूल रहते थे जो शख़्स उन की ख़िदमत में हाज़िर होता आलमे ग़ैब से कोई न कोई चीज़ उसे लाकर देते और फरमाते इस आजिज़ को दुआए ख़ैर से याद रखना कि क़ब्र तक अपना ईमान सलामत लेजाए।" जब उन के सामने मौत और क़ब्र का ज़िक्र किया जाता तो उन के जिस्म पर लर्ज़ा तारी होजाता और वह बेइख़्तियार रोना शुरूअ करदेते उन की गिर्या व ज़ारी मुसलसल सात सात दिनों तक जारी रहजी हत्ता कि आँखों से ख़ून बहने लगता। उन का रोना देखकर मुझे भी रोना आता था। जब उस हालत से होश में आते तो फरमाते "अज़ीज़ो! जिसे आलमे नज़अ, फिरिश्तए मौत और रोज़े क़ेयामत याद हो वह भला हंसने, सोने और किसी दूसरे काम से कैसे रग़बत रख सकता है। ऐ अज़ीज़ो! तुम्हें क़ब्र में सोए हुए लोगों का ज़र्रा बराबर हाल मालूम होजाए तो खड़े खड़े इस तरह पिघल जाओ जिस तरह नमक पानी में पिघल जाता है।

हिकायत

हज़रत सद्रुद्दीन मुहम्मद अहमद सीविस्तानी ने भी एक हिकायत यूँ बयान फरमाई कि एक दफआ में बस्रा में एक ख़ुदारसीदा बुज़ुर्ग के हमराह वहाँ के क़ब्रस्तान में गया वहाँ हम

एक क़ब्र के सरहाने बैठ गए। उस क़ब्र के मुर्दे पर अज़ाब होरहा था। उन बुज़ुर्ग ने अपनी कुव्वते कश्फ से जूँ ही उस अज़ाब की कैफ़ियत देखी फौरन गिर पड़े और उन की रूह आनन फानन क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई और चन्द लम्हों में उन का जिस्म पानी होकर बह गया। वह दिन और आज का दिन मैं अज़ाबे क़ब्र के ख़ौफ से रो रहा हूँ।

ऐ अज़ीज़! दुन्या में मशगूल रहने की बजाए अपने ख़ालिके हक़ीक़ी के ज़िक्र में मशगूल रहो और सामाने आख़िरत की फ़िक्र करो। यह फरमाकर दो खुजूरें मुझे इनायत फरमाईं और फिर रोने धोने में मस्रूफ होगए।

हज़रत सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने मज़कूरा बाला हिकायात बयान फरमाकर हाय हाय का नाअरा मारा और बे इख़्तियार निहायत दर्द भरे अन्दाज़ में रोने लगे। फिर फ़रमाया ऐ दुर्वेश! क़सम है मुझे उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुद्रत में मेरी जान है कि जिस दिन से शैख़ सद्रुद्दीन मुहम्मद अहमद सीविस्तानी की कैफियत देखी है हर वक़्त ख़ौफे आख़िरत और क़ब्र की हैबत से घुलता रहता हूँ क्यूँकि कुछ ज़ादे राह अपने पास नहीं पाता जिस से दिल को क़रार हो।

क़ब्रस्तान में खाने पीने वाला मलऊन है

फिर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फरमाया कि "क़ब्रस्तान में (मजबूरी के सिवा) खाना पीना बहुत बड़ा गुनाह है और खाने पीने वाला ख़ौफे ख़ुदा से आरी। इमाम यहया ज़िन्दौसी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के रौज़े में यह हदीसे पाक मैं ने लिखी हुई देखी है "मन अ क ल फिल मक़ाबिरि तआमन औ शराबन फहु व मलऊनुन व मुनाफिक़ुन" याअनी जिस शख़्स ने क़ब्रस्तान में खाना खाया या पानी पिया वह मलऊन और मुनाफ़िक़ है।

हिकायत

फिर यह हिकायत बयान फरमाई कि एक मरतबा हज़रत ख़्वाजा हसान बस्री रहमतुल्लाहि तआला अलैह का गुज़र एक क़ब्रस्तान से हुआ वहाँ कुछ लोग खाने पीने में मशगूल थे ख़्वाजा हसन बस्री ने उन से मुख़ातब होकर फरमाया :"दोस्तो! तुम मुनाफिक़ हो या मुसलमान कि इस तरह क़ब्रस्तान में बेमहाबा खा पी रहे हो।"

उन लोगों को ख़्वाजा की यह बात बुरी लगी और उन को ईज़ा पहुँचाना चाहा हज़रत ख़्वाजा हसन ने फरमाया "दोस्तो! जो कुछ मैं ने कहा है रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के उस इरशादे गिरामी के मुताबिक़ कहा है कि क़ब्रस्तान में खाने पीने वाला मुनाफिक़ होता है यह इब्रत की जगह है यहाँ तुम से बेहतर लोग पैवन्दे ज़मीन हैं और उन का गोश्त पोस्त हशरातुल अर्द की ख़ूराक बन गया है यहाँ तुम्हारा जी खाने पीने को कैसे चाहता है।"

ख़्वाजा बस्री के इरशादात सुन कर वह लोग बहुत नादिम हुए और अपनी ग़लती और गुस्ताख़ी के लिए मआफी के तलबगार हुए।

हिकायत

फिर सरकारे ख़्वाजा ने यह हिकायत बयान फरमाई "रियाहीन" के हवाले से आप ने फरमाया कि एक दफ्आ रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ऐसी जगह से गुज़रे जहाँ कुछ लोग हंसी मज़ाक़ और खेल कूद कर रहे थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को देखते ही वह लोग अदबो ताअज़ीम केलिए खड़े होगए।

सरकारे रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन से मुख़ातब होकर इरशाद फरमाया "भाइयो! तुम मौत, अज़ाब, पुलसिरात और आख़िरत से बेख़बर माअलूम होते हो जो ग़ाफिलों की तरह हंसी मज़ाक़ और खेल कूद में मस्त हो।" हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इरशादे मुबारक ने उन लोगों के दिलों की मैल धो डाली फिर वह अल्लाह की तरफ ऐसे माइल हुए कि फिर उन लोगों को कभी किसी ने हंसते नहीं देखा।

मुसलमानों पर ज़ुल्म नहीं करना चाहिए

किसी मुसलमान को बिला वजह सताना और उन पर ज़ुल्म करना अहले सुलूक के नज़दीक सब से बड़ा गुनाह है। अल्लह तआला फरमाता है "अल्लज़ी न यूज़ू नल मूमिनी न बिग़ैरि मक्तसबू फक़देहतमलू बुहतानौंव्व इस्मम्मुबीना" ऐसा करना अल्लाह व रसूल की नाराज़गी का सबब है। फिर आप ने यह हिकायत बयान फरमाई कि एक दफ्आ एक बादशाह ने ज़ुल्म पर कमर बाँध ली और बिला वजह बन्दगाने ख़ुदा को हलाक करना और सताना

शुरूअ कर दिया लोग उस के जौरो सितम से सख़्त परीशान और नालाँ थे। यकायक अल्लाह तआला की ग़ैरत जोश में आई और वह ज़ालिम बादशाह आशोबे रोज़गार की वजह से ताजो तख़्त से महरूम हो गया यहाँतक कि लोगों ने उसे इस हालत में देखा कि बग़दाद की मस्जिद कीकरी के दरवाज़े पर निहायत ख़स्ता और परीशानहाल खड़ा था। एक शख़्स ने उसे पहचान कर इस हालत में पहुँचने का सबब पूछा। उस बद नसीब ने निहायत नदामत के साथ कहा "भाई! मैं बिला वजह लोगों को सताया करता था अल्लाह तआला ने मुझे उसी ज़ुल्मो जौर की सज़ा दी है जो तुम मुझे इस हाल में देख रहे हो।"

ज़िक्रे इलाही का असर दिल पर

फ़रमाया कि सुलूक का चौथा मरतबा यह है कि जब अल्लाह तअला का नाम या कलाम सुने तो उस का दिल नर्म हो और हैबते इलाही से उस का ईमानो एअतेक़ाद मज़्बुत हो याअनी कलामुल्लाह की तिलावत ईमान में ज़ियादती और इस्तेहकाम का बाइस होनी चाहिए। और अगर ऐसे औक़ात में भी हंसी मज़ाक़ और लहवो लइब में मशग़ूल रहे तो यह गुनाहे कबीरा है जैसा कि ख़ुद अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने इरशाद फ़रमाया है "इन्नमल मूमिनूनल्लज़ी न इज़ा ज़ुकरुल्ला ह वजिलत क़ुलूबुहुम व इज़ा तुलियत अलैहिम आयातुहू ज़ादतहुम ईमानौंव्व अला रब्बिहिम यतवक्कलून" याअनी मोमिने कामिल वह है कि जिस के आगे अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उन के क़ुलूब जगमगा उठें और जब उन के सामने कलामे इलाही की आयात पढ़ी जाएं तो उन के ईमान में इज़ाफ़ा हो जाए और वह अपने रब पर ही तवक्कुल करें।"

इमाम ज़ाहिद ने इस इरशादे इलाही की तफ़्सीर इस तरह की है कि जो लोग ख़ुदा का ज़िक्र सुन कर अपना ईमान मोहकम करलें वही मोमिन हैं और जो लोग कलामे इलाही पढ़ते या सुनते वक़्त बेतवज्जुही करते हैं वह मुनाफ़िक़ हैं।

मुनाफ़िक़ों का तीसरा गरोह

आगे इरशाद फ़रमाया कि एक मरतबा रसूले अकरम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कुछ लोगों को देखा कि ज़िक्रे ख़ुदा भी कर रहे हैं और हंसी मज़ाक़ खेल कूद भी। याअनी ज़िक्रे ख़ुदा से उन के दिल नर्म नहीं हो रहे थे। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन के क़रीब खड़े होकर इरशाद फ़रमाया "यह मुनाफ़िक़ों का तीसरा गरोह है जिन का दिल अल्लाह के ज़िक्र से भी कोई असर क़ुबूल नहीं करता और नर्म नहीं होता।

हिकायत

एक मरतबा हज़रत इब्राहीम ख़वास रहमतुल्लाहि तआला अलैह किसी जगह से गुज़र रहे थे कि उन्हों ने कुछ लोगों को ज़िक्रे ख़ुदा करते सुना। हज़रत ख़्वाजा इब्राहीम ख़वास औलियाए किबार में से थे और अल्लाह ने उन्हें क़ल्बे गुदाज़ अता फ़रमाया था। ज़िक्रे ख़ुदा सुन कर वज्द में आगए और फ़र्ते ज़ौक़ो शौक़ में रक़्स करने लगे। तन बदन का कुछ होश न रहा। सात दिन और रात उन पर यही कैफ़ियत तारी रही जब होश आता अल्लाह का नाम लेते और फिर तड़पने फड़कने लगते। सातवें रोज़ जब होश में आए तो वुज़ू किया और दो रक्अत नमाज़ अदा करने केलिए खड़े होगए जब सर सज्दे में रखा और सुब्हा न रब्बियल आअला कहा तो रूह क़फ़से इन्सुरी से परवाज़ कर गई सज्दे से सर उठाने की मुहलत ही न मिली। यह हिकायत बयान फ़रमाते हुए सरकारे ख़्वाजा की आँखें अश्क आलूद होगईं और आप ने यह शेर पढ़े। :

आशिक़ बहवाए दोस्त बेहोश बुवद
वज़ यादे मुहिब्बे ख़्वेश मदहोश बुवद
फ़रदा कि बहश्र ख़ल्क़ हैराँ बाशन्द
नामे तू दुरूने सीना व गोश बुवद

हिकायत

उस के बाद फ़रमाया कि एक दफ़आ यह आजिज़ कुछ साहिबे हाल दुर्वेशों के हमराह हज़रत ख़्वाजा यूसुफ़ चिश्ती रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ख़ानक़ाह में मौजूद था वहाँ मज्लिसे समाअ

मुन्अक़िद हुई तो क़व्वालों ने यही शेर पढ़े उन्हें सुनकर आजिज़ और वह दुर्वेश ऐसे मुतअस्सिर हुए कि कुछ होश न रहा। सात रात दिन हम सब तड़पते फड़कते रहे। क़व्वाल कुछ और पढ़ना चाहते थे मगर हम उन से बार बार उन्हीं अश्आर की तक्रार करवाते उसी हालत में दुर्वेश हमारी मज्लिस से अचानक ग़ाइब हो गए और उन का ख़िर्क़ा वहीं पड़ा रहा अल्लाह ही को उन के हाल की ख़बर है।

यह हिकायत बयान फरमाकर सरकारे ख़्वाजा तिलावते कुरआने पाक में मशगूल हो गए और हाज़िरीने मज्लिस रुख़्सत हो गए।

पाँचवीं मज्लिस

हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि इस मज्लिस में इस हक़ीर के अलावा हज़रत शैख़ जलालुद्दीन, हज़रत शैख़ अली संजरी, हज़रत शैख़ मुहम्मद औहद चिश्ती रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम और कुछ दूसरे बुज़ुर्ग भी मौजूद थे।

पाँच चीज़ों का देखना इबादत

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रुहू ने गुफ्तुगू का आग़ाज़ करते हुए फरमाया कि अहले सुलूक के नज़दीक पाँच चीज़ों की तरफ देखना इबादत है। (1)औलाद को माँ बाप का मुंह देखना (2) कुरआने पाक देखना (3) उलमा की तरफ देखना (4) ख़ानए काअबा की तरफ देखना (5) अपने मुर्शिद को देखना।

वालिदैन का चेहरा देखना

औलाद को अपने माँ बाप का चेहरा देखना इबादत है हदीसे पाक में आया है कि जो औलाद ख़ुलूस और महब्बत के साथ अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ुशनूदी केलिए अपने माँ बाप की ज़ियारत करती है उसे एक हज्जे मक़्बूल का सवाब मिलता है और जो फरज़न्द अपने वालिदैन के पाँव चूमता है तो हक़ तआला उस के नामए आअमाल में हज़ार साल की इबादत का सवाब लिख

देता है और उसे बख़्श देता है।

हिकायत

फिर सरकारे ख़्वाजा ने यह हिकायत बयान फरमाई कि एक शख़्स बुरे कामों की वजह से बहुत बदनाम था उस के इन्तेक़ाल के बाद लोगों ने ख़्वाब में उसे जन्नत में हाजियों के गरोह में टहलते हुए देखा और उस से पूछा कि तुझे यह मरतबा क्यूँकर मिल गया हालाँकि दुन्या में तू हमेशा बुरे कामों में मशगूल रहा। जवाब दिया "बेशक मैं बहुत बदकार था लेकिन अपनी बूढ़ी माँ का मैं बहुत एहतेराम करता था। जब मैं घर से निकलता उस के क़दमों पर सर रख देता उस वक़्त मेरी माँ मुझे बहुत दुआएं देतीं कि अल्लहा तआला तुझे बख़्शे और तुझे हज का सवाब अता फरमाए। रब्बे करीम ने मेरी माँ की दुआ कुबूल करली मेरे गुनाह बख़्श दिए और मुझे जन्नत में हाजियों के गरोह में जगह दी।

हिकायत

इसी सिलसिलए बयान में सरकारे ख़्वाजा ने एक दूसरी हिकायत बयान फरमाई कि एक मरतबाहज़रत ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह से लोगों ने पुछा कि आप को हकाइको मआरिफ का अज़ीम ख़ज़ाना किस तरह मयस्सर हुआ। आप ने जवाब में इरशाद फरमाया कि बचपन में मैं कुरआने करीम की ताअलीम हासिल करने मस्जिद जाता था। एक दिन जब मेरे उस्ताज़ ने आयत "व बिलवालिदैनि इहसाना" (याअनी माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करना चाहिए) के माअना बयान किए तो मुझ पर बहुत असर हुआ। घर पहुँच कर मैं ने अपनी वालिदए मुहतरमा के क़दमों पर सर रख दिया और उन से अर्ज़ की कि मेरे हक़ में दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे आप की कमा हक़्क़ुहू ख़िदमत करने की तौफीक़ दे। उन्हों ने रहम खाकर दोगाना अदा करने के बाद मेरे हाथ पकड़ कर क़िब्लारू होकर निहायत ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ के साथ मेरे हक़ में दुआ की उसी दुआ की बदौलत मुझे यह सआदत मयस्सर हुई।

इसी तरह एक दफ्आ सख़्त सर्दी के मौसम में आधी रात के वक़्त मेरी वालिदा ने पानी तलब किया मैं फौरन पानी का प्याला भर कर उन के पास गया तो उन की आँख लग गई थी मैं ने

जगाना मुनासिब नही समझा और पानी का प्याला हाथ में लिए उन के सरहाने खड़ा रहा। रात के आख़िरी हिस्से में जब वह बेदार हुई तो मुझे इस हाल में खड़ा देखकर हैरान रह गई। यख़बस्ता पानी की वजह से मेरा हाथ भी प्याले से चिपक गया था जब उन्हों ने प्याला मेरे हाथ से लिया तो बेइख़्तियार मुझे गोद में ले लिया, प्यार किया और कहा ऐ जाने मादर! तूने मेरे लिए बड़ी तकलीफ उठाई यह कहकर मेरे हक़ में दुआ की कि अल्लाह तआला तुझे बलन्द मरतबा अता करे, अपना मुक़र्रब बनाए और बख़्श दे। अल्लाह तआला ने मेरी वालिदए मुहतरमा की दुआ क़ुबूल फरमाई और मुझे अपनी बेहदो हिसाब रहमतों से नवाज़ा।

क़ुरआने पाक की तरफ देखना

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू ने इरशाद फरमाया कि "शर्हे औलिया" में है कि जो शख़्स क़ुरआने पाक की तरफ देखता है या देखकर पढ़ता है उसे दुहरा सवाब अता किया जाता है। एक क़ुरआन शरीफ पढ़ने का, दूसरा क़ुरआने पाक देखने का और हर हर्फ के बदले दस नेकियाँ अता की जाती हैं और दस बदियाँ उस के नामए आअमाल से मिटा दी जाती हैं।

उस मौक़े पर हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने पूछा "हुज़ूर! क़ुरआने करीम सफर में हमराह लेजाना जाइज़ है या नहीं।?"

आप ने फरमाया "इब्तेदाए इस्लाम में सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम क़ुरआने पाक सफर में साथ नहीं लेजाते थे कि कहीं काफिरों के हाथ न लग जाए और उस की बेअदबी न हो। मगर बाद में जब इस्लाम फैल गया तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम क़ुरआने करीम सफर में साथ लेजाने में कोई हरज नहीं समझते थे।

हिकायत

फिर आप ने यह हिकायत बयान फरमाई कि सुल्तान महमूद ग़ज़नवी क़ुरआने पाक का बहुत एहतेराम करता था। उन के इन्तेक़ाल के बाद किसी ने उन को ख़्वाब में देखकर पूछा कि अल्लाह तआला ने आप के साथ क्या सुलूक किया। तो जवाब दिया कि एक दफ्आ मैं किसी के घर मेहमान था रात को जिस

कमरे में मुझे आराम करना था वहाँ एक ताक़ में क़ुरआने पाक रखा हुआ था मैं ने दिल में सोचा कि यहाँ क़ुरआन शरीफ है मैं किस तरह सोऊँगा फिर ख़याल आया कि क़ुरआने पाक किसी और कमरे में रख दिया जाए मगर फिर सोचा कि अपने आराम की ख़ातिर मैं क्यूँ इसे बाहर करूँ मैं क़ुरआने करीम के एहतेराम में सारी रात बैठा रहा एक पल भी न सोया। अल्लाह तआला को मेरा यह अमल पसन्द आगया और क़ुरआने करीम के एहतेराम के सदक़े में उस ने मुझे बख़्श दिया।

क़ुरआने पाक देखने से बीनाई बढ़ती है

फिर आप ने इरशाद फरमाया कि जो शख़्स क़ुरआने पाक देखता है अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से उस की आँखों की रौशनी बढ़ती है और उस की आँखें कभी नहीं दुखतीं। इस सिलसिले में मज़ीद फरमाया कि एक दफ्आ एक बुज़ुर्ग क़ुरआने करीम की तिलावत कर रहे थे एक नाबीना उन की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आँखों की बसारत केलिए उन से दुआ की दर्ख़्वास्त की। उन बुज़ुर्ग ने क़िब्लारू होकर फातिहा पढ़ी और क़ुरआन शरीफ उठाकर उस शख़्स की आँखों से लगाया जिस की बरकत से उस की आँखें उसी वक़्त रौशन होगईं।

हिकायत

सरकारे ख़्वाजा ने फरमाया कि मैं ने "जामेउल हिकायात" में पढ़ा है कि एक फासिक़ नौजवान के इन्तेक़ाल के बाद लोगों ने ख़्वाब में उसे जन्नत में देखा। उस से पूछा गया कि तेरी मग़्फिरत का क्या सबब है।? उस ने कहा बेशक मैं बहुत बदकार था लेकिन क़ुरआने करीम का ग़ायत दर्जा एहतेराम करता था। जहाँ कहीं क़ुरआन मजीद देखता एहतेराम से खड़ा होजाता। अल्लाह तआला ने मुझे एहतेरामे क़ुरआन की बदौलत बख़्श दिया और यह मरतबा इनायत फरमाया बेशक वह ग़फूरो रहीम है।

उलमाए किराम की ज़ियारत करना

आप ने इरशाद रमाया कि जो शख़्स किसी आलिमे दीन की तरफ महब्बत से देखता है तो अल्लाह तआला एक फिरिश्ता पैदा फरमाता है जो क़ेयामत तक उस केलिए बख़्शिश की दुआएं

माँगता रहता है।

उस के बाद फरमाया कि उलमा की तरफ देखना और उन का एहतेराम करना भी एक इबादत है। जिस शख़्स के दिल में उलमा व मशाइख़ की महब्बत होती है उसे एक हज़ार साल की इबादत का सवाब मिलता है। अगर उसी हालत में फौत होजाए तो अल्लाह तआला उसे जन्नत में उलमा का दर्जा अता फरमाता है जिस का नाम इल्लिय्यीन है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने भी उलमा से महब्बत और उन की ख़िदमत का बड़ा सवाब बयान फरमाया है। "फतावए ज़हीरिया" में है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया है कि जो शख़्स उलमा के पास आमदो रफ्त रखे और (कम से कम) सात दिन उन की ख़िदमत करे तो अल्लाह तआला उस के सारे गुनाह बख़्श देता है और सात हज़ार साल की नेकियाँ उस के नामए आअमाल में लिख देता है।

हिकायत

फिर यह हिकायत बयान फरमाई कि पहले ज़माने में एक शख़्स उलमा व मशाइख़ से बहुत हसद और नरफरत करता था और उन्हें देख कर मुंह दूसरी तरफ फेर लेता थ। मरने के बाद उसे क़ब्र में उतारा गया तो उस का मुंह क़िब्ला से फिर कर दूसरी तरफ होगया लोगों ने हर चन्द उस का मुंह क़िबला की तरफ फेरने की कोशिश की लेकिन हरबार उस का मुंह दूसरी तरफ फिर जाता था। अचानक ग़ैब से आवाज़ आई "मुसलमानो! इस का मुंह हरगिज़ क़िबला की सम्त न होगा क्यूँकि यह शख़्स अपनी ज़िन्दगी में उलमा व मशाइख़ को देख कर उन की तरफ से अपना मुंह फेर लेता था जो शख़्स उलमा व मशाइख़ से मुंह मोड़ता है हम उस से अपनी रहमत और बख़्शिश फेर लेते हैं वह रँदए दरगाह होजाता है और वह क़ेयामत के दिन रीछ की शक्ल में उठाया जाएगा।

ख़ानए काअबा को देखना

सरकारे ख़्वाजा ने हदीसे पाक की रौशनी में इरशाद फरमाया कि ख़ानए क़ाअबा की तरफ देखना भी इबादत है। रसूले अकरम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खुद इस का सवाब बयान फरमाया है। फरमाते हैं कि जो शख़्स दिली खुलूस और एहतेराम के साथ ख़ानए काअबा की ज़ियारत करेगा वह इबादत में दाख़िल होगा। उस की उस ज़ियारत के एवज़ एक हज़ार साल की इबादत और हज्जे मक़बूल का सवाब उस के नामए आअमाल में लिखा जाएगा और उसे औलिया के ज़ुमरे में शुमार किया जाएगा।

पीरो मुर्शिद की ज़ियारत

फिर सरकारे ख़्वाजा ने फरमाया कि पीरो मुर्शिद की ज़ियारत करना और उन की ख़िदमत बजा लाना भी एक बहुत बड़ी इबादत है। मैं ने "माअरिफतुल मुरीदीन" में पढ़ा है कि हज़रत ख़्वाजा शैख़ उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि जो शख़्स अपने पीर की ख़िदमत दिलो जान से करता है अल्लाह तआला उसे बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल करेगा और उस को मोतियों के हज़ार महल अता करेगा, हज़ार साल की इबादत का सवाब उसे अता करेगा और हज़ार हूरें उस की ख़िदमत पर मामूर की जाएंगी।

फिर आप ने हाज़िरीने मज्लिस को तलक़ीन फरमाई कि पीर के इरशादात को निहायत ध्यान से सुनना चाहिए और उन पर अमल करना चाहिए नमाज़, रोज़ा और औरादो वज़ाइफ जो वह बताए उन की पाबन्दी करना लाज़िम है और पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में मुतवातिर हाज़िर होने की कोशिश करनी चाहिए।

हिकयात

फिर सिलसिलए बयान की मनासबत से यह हिकायत बयान फरमाई कि एक ज़ाहिद सौ बरस तक खुदा की इबादत करते रहे। दिन को रोज़ा रखते और रात को नवाफिल पढ़ते और हर आने जाने वाले को इबादते इलाही बजा लाने की तलक़ीन व ताकीद फरमाते। उन के विसाल के बाद ख़्वाब में लोगों ने उन को जन्नत में देख कर उन का हाल पूछा। उन्हों ने जवाब दिया कि मेरी रात दिन की इबादत जन्नत में दाख़िले का बाइस नहीं हुई बल्कि अल्लाह तआला ने मुझे अपने पीर की ख़िदमत की बदौलत बख़्शा

फ़ाइदा

इतना बयान करके सरकारे ख़्वाजा रोने लगे और फ़रमाया कि क़ेयामत के दिन औलिया, सिद्दीक़ीन और मशाइख़े तरीक़त को क़ब्रों से उठाया जाएगा तो उन के कंधों पर कम्लियाँ पड़ी होंगी हर कम्ली के साथ हज़ारों रेशे लटकते होंगे। उन बुज़ुर्गों के मुरीद और अक़ीदतमन्दान उन रेशों को पकड़ कर लटक जाएंगे और उन के साथ पुलसिरात उबूर करके बहिश्त में दाख़िल हो जाएंगे। उस के बाद सरकारे ख़्वाजा तिलावते कलामे पाक में मशग़ूल होगए और मज्लिस बरख़ास्त होगई।

छटी मज्लिस

जुमेरात के दिन क़दमबोसी की दौलत नसीब हुई उस मज्लिस में ख़्वाजा क़ुतुब के अलावा हज़रत शैख़ मुहम्मद अस्फहानी, हज़रत शैख़ बुरहानुद्दीन चिश्ती अलैहिमर्रहमह और कुछ दीगर दुर्वेश हाज़िर थे। बग़दाद की जामेअ मस्जिद में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अल्लाह तआला की क़ुदरते कामिला के बारे में गुफ़्तुगू शुरूअ की।

क़ुदरते ख़ुदावन्दी के अजाइब

फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से कूछ चीज़ें ऐसी पैदा की हैं कि अगर इन्सान उन की हक़ीक़त पर ग़ौर करे तो उस की अक़्ल जवाब देजाए और वह दीवाना होजाए। मैं ने हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू से सुना है कि अल्लाह तआला ने इस जहान के अलावा वीसियों जहान और पैदा किए हैं जो हमारी नज़रों से ओझल हैं उन जहानों में बेशुमार फ़िरिश्ते हर वक़्त कलिमए तैय्यिबा ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की तस्बीह पढ़ते रहते हैं।

असहाबे कहफ को दाअवते ईमान

उस के बाद फ़रमाया कि एक मरतबा रसूले अकरम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में असहाबे कहफ को देखने की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई। जवाब आया कि तू दुन्या में उन्हें नहीं देख सकेगा अलबत्ता आख़िरत में दिखा दूँगा हाँ अगर उन्हें अपने दीन में लाना चाहता है तो मैं ला दूँगा।

फिर फ़रमाया कि अपने अहबाब को एक गुदड़ी पर बिठाओ। चुनाँचे ऐसा ही किया और वह गुदड़ी अहबाब को लेकर असहाबे कहफ के ग़ार के दरवाज़े पर पहुँची। अहबाब ने असहाबे कहफ को सलाम किया। अल्लाह तआला ने उन्हें ज़िन्दा किया उन्हों ने सलाम का जवाब दिया फिर अहबाब ने उन के सामने दीने इस्लाम पेश किया जो उन्हों ने क़ुबूल कर लिया। याअनी अल्लाह तआला ने असहाबे कहफ को भी उम्मते मुहम्मदी में से होने का शरफ अता फ़रमाया।

तीस साल से ग़ाइब लड़का वापस आ गया

फिर सरकारे ख़्वाजा ने फ़रमाया कि कौन सी चीज़ है जो अल्लाह तआला की क़ुदरत में नही। मर्द को चाहिए कि उस के अहकाम बजा लाने में कमी न करे जो कुछ चाहेगा मिल जाएगा। एक मरतबा मैं अपने शैख़ ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ख़िदमत में हाज़िर था वहाँ कुछ और दुर्वेश भी बैठे थे कि एक नहीफो नज़ार बूढ़ा शख़्स अपने हाथ में असा लिए हुए आया और सलाम किया। शैख़ उस्मान हारवनी ने ख़न्दा पेशानी से उठ कर उसे अपने पास जगह दी। उस ने रोते हुए अर्ज़ की कि मेरा फरज़न्द तीस साल से ग़ाइब है उस की जुदाई में मैं दिन रात घुल रहा हूँन उस के मरने की ख़बर है और न जीने की। लिल्लाह दुआ फ़रमाइए कि मेरा फरज़न्दे गुमगश्ता मुझे मिल जाए। शैख़ साहब ने मुराक़बा किया फिर सर उठाकर हाज़िरीन से फ़रमाया दुआ करो कि इन का लड़का सहीह सलामत घर आजाए। दुआ ख़त्म करने के बाद फ़रमाया "ऐ ज़ईफ! जाओ तुम्हारा गुमशुदा फरज़नद तुम्हें मिल जाएगा उसे लेकर फिर हमारे पास आना।"

ज़इफ आदाब बजा लाकर वापस होगया। रास्ते में मुबारकबाद मिली कि तुम्हारा लड़का आगया है। वह ख़ुशी ख़ुशी घर पहुँचा तो देखा कि उस का वह फरज़न्द घर में बैठा है। बूढ़े की कमज़ोर

आँखें लड़के को देख कर फ़र्ते मसर्रत से रौशन होगईं और वह बेख़ुद होगया। उलटे पाँव लड़के को लेकर वह ख़्वाजा साहब की ख़िदमत में वापस आया और ख़्वाजा साहब की क़दमबोसी की और अपने लड़के से भी क़दमबोसी कराई। हज़रत ने लड़के से पूछा कि "तुम कहाँ थे और घर कैसे वापस आए।?"

लड़के ने कहा मैं समन्दर के बीच देवों की क़ैद में था कि एक दुर्वेश ने जो आप का हमशक्ल था आकर मेरी ज़ंजीरें काट डालीं और मेरी गरदन मज़बूत पकड़ कर कहा कि मेरे पाँव पर पाँव रख और आँखें बन्द कर मैं ने हुक्म की ताअमील की। फिर फरमाया कि आँखें खोल। जब मैं ने आँखें खोलीं तो अपने आप को अपने घर के दरवाज़े पर पाया। यह कहकर कुछ और कहना चाहा तो ख़्वाजा साहब ने रोक दिया। उस बूढ़े ने ख़्वाजा साहब के क़दमों पर सर रख दिया। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फरमाया "देखो! मर्दाने ख़ुदा इतनी क़ुदरत रखने के बावुजूद आपने आप को पोशीदा रखते हैं।

अंधेरे और उजाले का फ़िरिश्ता

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अजाइबे क़ुदरत का ज़िक्र फरमाते हुए फरमाया कि हज़रत क्आब अहबार रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह तआला ने एक ऐसा फ़िरिश्ता पैदा फरमाया है जिस की बुज़ुर्गी और हैबत को अल्लाह तआला ही जानता है उस का नाम हाबील है। उस फ़िरिश्ते ने दोनों हाथ फैला रखे हैं एक मश्रिक़ में और दूसरा मग़्रिब में और कलिमए तैय्यिब की तस्बीह पढ़ता रहता है मश्रिक़ वाले हाथ से वह रौशनी देता है और मग़्रिब वाले हाथ से अंधेरा। अगर रौशनी को हाथ से छोड़ दे तो सारा जहाँ तारीक होजाए और कभी दिन न आए। एक तख़्ती लटकी हुई है जिस पर सियाहो सफेद लकीरें खिंची हुई हैं उन्हें कभी ज़ियादा करता है कभी कम। जब ज़ियादा करता है तो रौशनी होजाती है और जब कम करता है तो तारीकी छा जाती है इसी वजह से कभी दिन बड़े होजाते हैं और कभी रातें।

हवा और पानी का फ़िरिश्ता

उस के बाद उसी मौक़े पर फरमाया कि अल्लाह तआला ने

एक और फ़िरिश्ता इस क़दर हैबत वाला बनाया है कि उस का एक हाथ आस्मान में है और दूसरा ज़मीन में। आस्मान वाले हाथ से हवा पर क़ाबू रखता है और ज़मीन वाले हाथ से पानी पर। अगर पानी को हाथ से छोड़ दे तो सारा जहाँ ग़र्क़ होजाए और अगर हवा को छोड़ दे तो तूफ़ाने बाद से तमाम आलम तहो बाला होजाए।

कोहे क़ाफ का फ़िरिश्ता

फिर इसी सिलसिलए बयान में फरमाया कि अल्लाह तआला ने कोहे क़ाफ पैदा फरमाया जो इतना बड़ा है कि पूरी दुन्या के गिर्द फैला हुआ है और दुन्या व माफ़ीहा उस के अन्दर है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक आयत की तफ्सीर में बयान फरमाया है कि अल्लाह तआला ने एक फ़िरिश्ता पैदा फरमाया है जो उस पहाड़ पर बैठा हुआ है। ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह उस की तस्बीह है उस का नाम क़रताईल है और वह उस पहाड़ का मुअक्किल है कभी वह हाथ बन्द करता है कभी खोलता है ज़मीन की रगे अल्लाह तआला ने उस के हाथ में दे रखी हैं जब अल्लाह तआला ज़मीन को तंग करना चाहता है तो फ़िरिश्ते को रगे खींचने का हुक्म देता है जिस से तमाम चश्मे ख़ुश्क होजाते हैं और शादाबियाँ ख़त्म होजाती हैं, पेढ़ पौदे उगना बन्द होजाते हैं। और जब फराख़साली करना चाहता है तो रगे ढीली करने का हुक्म देता है और जब ख़िलक़त को डराना चाहता है रगो को हिलाने का हुक्म देता है जिस से ज़लज़ला आजाता है और ज़मीन तहस नहस होजाती है।

कोहे क़ाफ और उस के पीछे

इसी बयान के तसलसुल में इरशाद फरमाया कि मैं ने शैख़ुल इस्लाम हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी और शैख़ सैफुद्दीन बाख़िर्ज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैहिमा की ज़बानी सुना है कि "अस्रारुल आरिफ़ीन" में लिखा हुआ है कि अल्लाह तआला ने उस पहाड़ को दुन्या से कई गुना बड़ा बनाया है चुनाँचे उस पहाड़ के पीछे चयालीस जहान और आबाद हैं। हर जहान में उस के चार सौ हिस्से हैं हर एक हिस्सा इस दुन्या से चार गुना है। उस पहाड़ के पीछे कोई तारीकी नहीं उजाला ही उजाला है और न ही वहाँ रात

होती है वहाँ की ज़मीन सोने की है और वहाँ के रहने वाले फ़िरिश्ते हैं न शैतान, न बहिश्त न दोज़ख़। जिस रोज़ से अल्लाह तआला ने उन्हें पैदा किया है सारे फ़िरिश्ते कलिमए तैय्यिबा ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का विर्द कर रहे हैं उन चवालीस जहानों के पीछे हिजाब हैं और उन के पीछे फिर हिजाब हैं जिन की बड़ाई और कस्रत अल्लाह तआला ही को माअलूम है।

गाय के सर पर पहाड़

फिर फरमाया कि वह पहाड़ एक गाय के सर पर रखा है जिस की लम्बाई तीस हज़ार साल की राह के बराबर है। गाय खड़ी हुई अल्लाह तआला की हम्दो सना कर रही है उस का सर मश्रिक़ में और दुम मग़्रिब में है।

हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने क़सम खाई कि जिस रोज़ मैं ने यह हिकायत शैख़ मौदूद चिश्ती से सुनी तो आप ने मुराक़बा किया वह और एक दुर्वेश जो हाज़िरे ख़िदमत थे दोनों ग़ाइब होगए थोड़ी देर के बाद फिर हाज़िर होगए उस दुर्वेश ने क़सम खाकर कहा कि मैं और मौदूद चिश्ती दोनों उस पहाड़ के पास से होकर आ रहे हैं। और चवालीस जहान जो ख़्वाजा साहब ने बयान किए है वाक़ई उन में ज़र्रा बराबर फ़र्क़ नहीं। ठीक उसी तरह हैं जैसा कि आप ने बयान फरमाया। इस मुकाशफ़े का सबब यह था कि मुझे खुद शक हुआ और आप ने कश्फ़ से मेरा शक भाँप लिया था।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फरमाया कि दुर्वेश में इतनी कुव्वते बातिनी तो होनी ही चाहिए कि अगर सुनने वाला हिकायते औलिया में शक करे तो उसे मुशाहदा करादें और करामत की कुव्वत से उसे क़ाइल करलें।

ख़ानए काअबा दिखा दिया

बतौरे तहदीसे नेअमत सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने खुद अपना एक वाक़ेआ बयान फरमाया कि एक दफ़आ मैं सफ़र करते हुए समरक़न्द पहुँचा हज़रत इमाम अबुल्लैस समरक़न्दी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मकान के क़रीब एक बुज़ुर्ग एक

मस्जिद ताअमीर करवा रहे थे। एक दानिशमन्द खड़ा कह रहा था कि मेहराब इस तरफ रखो क्यूँकि काअबा इसी तरफ है। मैं ने कहा कि उस तरफ नहीं इसी तरफ है जिस रुख़ की मस्जिद ताअमीर हो रही है। वह अपनी बात पर अड़ा रहा और किसी तरह मेरी बात तसलीम ही नहीं कर रहा था। मैं ने उस की गरदन पकड़कर कहा कि देखो काअबा किस तरफ है जिधर तुम कह रहे हो उधर या जिधर मैं कह रहा हूँ उधर। वह बयक आवाज़ चिल्ला उठा कि आप सहीह कह रहे थे। क्यूँकि उस ने अपनी आँखों से ख़ानए काअबा देख लिया था।

सातवीं मज्लिस

बुध के दिन मुलाक़ात का शरफ हासिल हुआ। उस मज्लिस में ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के अलावा कुछ हुज्जाज भी सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत में हाज़िर थे। गुफ्तुगू सूरए फातिहा के फज़ाइलो बरकात से मुतअल्लिक़ शुरूअ हुई।

सूरए फातिहा के फज़ाइल

आप ने इरशाद फरमाया कि मैं ने एक जगह पढ़ा है कि हाजत पूरी करने केलिए सूरए फातिहा कस्रत से पढ़नी चाहिए हदीस शरीफ में है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलहि वसल्लम ने फरमाया है कि जिसे कोई मुश्किल दरपेश हो वह हसबे ज़ैल तरीक़े पर सूरए फातिहा पढ़े। बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीमिल हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन याअनी अर्रहीम की मीम को अलहम्दु के लाम से मिला कर पढ़े और आख़िर में हर बार तीन मरतबा आमीन कहे। अल्लाह तआला उस की हर मुश्किल को हल फरमादेगा।

उस के बाद इरशाद फरमाया कि एक मरतबा रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सहाबए किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम के दरमियान जल्वा फरमा थे आप ने सहाबए किराम को बताया कि एक दिन जिबरईले अमीन अलैहिस्सलाम मेरे पास आए और कहा या रसूलल्लाह! खुदावन्दे करीम फरमाता है

के मैं ने एक सूरह आप पर ऐसी नाज़िल की है कि अगर वह तौरैत में होती तो बनी इस्राईल में से कोई यहूदी न होता, अगर ज़बूर में होती तो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की उम्मत में से कोई मुग़न्नी (गाने वाला) न बनता और अगर इंजील में होती तो ईसा (अलैहिस्सलाम) की उम्मत में से कोई शख़्स ईसाई न होता। यह सूरह कुरआने मजीद में इस लिए नाज़िल की गई है कि इस की बरकत से तुम्हारी उम्मत क़ेयामत के दिन खुदाए तआला के सामने सुर्ख़रू हो। इस सूरह की अज़मत और खुसूसियत यह है कि अगर तमाम रूए ज़मीन के दरियाओं का पानी रौशनाई बन जाए और रूए ज़मीन के तमाम दरख़्तों के क़लम बना दिए जाएं तो भी इस सूरह के फ़ज़ाइलो बरकात नहीं लिखे जासकते। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने पुछा "वह कौन सी सूरह है।" अर्ज़ की वह सूरए फातिहा है।

फिर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फरमाया कि सूरए फातिहा तमाम अमराज़ की दवा है जो शख़्स किसी लाइलाज मरज़ में मुब्तला हो तो सुन्नत और फर्ज़ नमाज़ों के दरमियान इक्तालीस मरतबा सूरए फातिहा पढ़कर उस पर दम कर दिया जाए तो अल्लाह तआला उसे भी शिफा अता फरमादेगा। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया है "अलफातिहतु शिफाउम मिन कुल्लि दाइन" याअनी सूरए फातिहा हर मरज़ की दवा और शिफा है।

हिकायत

एक मरतबा बग़दाद का मशहूर ख़लीफा हारूनुर्रशीद किसी लाइलाज बीमारी में मुब्तला होगया। बुहतेरे इलाज के बावुजूद उसे शिफा नहीं मिल रही थी उसी परीशानी और तक्लीफ में दो साल गुज़र गए। बिल आख़िर अपने एक वज़ीर को हज़रत फुज़ैल इब्ने अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ख़िदमत में भेज कर कहलाया कि मैं इस मूज़ी बीमारी से तंग आगया हूँ कोई इलाज कारगर नहीं हो रहा है आप दुआ फरमादें कि अल्लाह तआला मुझे इस मरज़ से शिफा अता फरमाए। हज़रत ख़्वाजा फुज़ैल बिन अयाज़ को ख़लीफा के हाल पर रहम आगया और आप चलकर

खुद ख़लीफा के पास तशरीफ लाए और अपना दस्ते मुबारक उस के जिस्म पर रख कर इक्तालीस मरतबा सूरए फातिहा पढ़ी और उस के चेहरे पर दम कर दिया। उसी वक़्त ख़लीफाको आराम मिल गया और पूरी तरह सेहतमन्द होगया।

बद एअतेक़ादी का नतीजा

उस के बाद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फरमाया कि बद एअतेक़ादी और बेयक़ीनी से हर हाल में परहेज़ करना चाहिए हर काम में इख़लास और अक़ीदे की दुरुस्तगी ज़रूरी है। एक मरतबा हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम ने एक मरीज़ पर सूरए फातिहा पढ़कर दम किया तो उसे शिफा होगई। उस का एक जानने वाला उस की अयादत केलिए आया और उसे सेहतमन्द देख कर पूछा कि तुम इतनी जल्दी कैसे शिफायाब होगए। उस शख़्स ने जवाब दिया कि हज़रत अली मुश्किल कुशा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने सूरए फातिहा पढ़कर मुझ पर दम किया तो अल्लाह तआला ने फौरन मुझे शिफा अता फरमादी उस की अयादत केलिए आने वाले को यक़ीन न आया और उस के दिल में बदअक़ीदगी पैदा होगई। अल्लाह की क़ुदरत से उसे फौरन वही बीमारी लाहिक़ होगई जो उस के दोस्त को थी चुनाँचे वह अपनी बदअक़ीदगी की वजह से उसी बीमारी में मर गया।

क़ुरआन पर और अल्लाह तआला की अता पर हर मुसलमान को यक़ीनो एअतेमाद रखना चाहिए वह तो क़ुरआन और सूरए फातिहा की बात है अल्लाह तआला ने बाज़ हज़रात की ज़बान और हाथों में वह तासीर अता फरमाई है। कि वह बग़ैर कुछ पढ़े दम करदें या सिर्फ अपना हाथ फेर दें तब भी बीमारियों से नजात मिल जाती है।

सूरए फातिहा के सात नाम

उस के बाद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने क़ुरआने पाक की और सूरतों का तो एक एक ही नाम रखा है मगर सूरए फातिहा के सात नाम रखे हैं जो दर्जे ज़ैल हैं।

(1)फातिहतुल किताब(2)सब्उल मसानी(3)उम्मुल किताब(4)उम्मुल

क़ुरआन(5)सूरए मग़्फ़िरत(6)सूरए रहमत(7)और सूरतुस्सानिया या सूरतुल कंज़।

सात हुरूफ़ से ख़ाली

इस सूरह में दर्जे ज़ैल सात हुरूफ़ नहीं आए हैं सा, जीम, ज़ा(ज़े), शीन, ज़ा(ज़ो), फा, और ख़ा। उस की वजह यह है कि :

1–सा "सुबूर" का पहला हर्फ़ है जिस के माअना हलाकत के हैं। याअनी इस सूरत का पढ़ने वाला सुबूर (हलाकत) से महफ़ूज़ रहेगा।

2–जीम "जहन्नम" का पहला हर्फ़ है। इस सूरह का पढ़ने वाला जहन्नम और उस के अज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा।

3–ज़ा (ज़े) "ज़क़्क़ूम" का पहला हर्फ़ है। याअनी इस सूरह की तिलावत करने वाला ज़क़्क़ूम (थोहर जो जहन्नमियों की ख़ूराक होगी) से दूर रहेगा।

4–शीन "शक़ावत" का पहला हर्फ़ है। इस सूरह का पढ़ने वाला शक़ावत (बदबख़्ती) से पाक रहेगा।

5–ज़ा (ज़ो) "ज़ुल्मत" का पहला हर्फ़ है। इस सूरह का पढ़ने वाला ज़ुल्मत में नहीं पड़ेगा।

6–फा "फ़िराक़" का पहला हर्फ़ है। इस सूरह की तिलावत करने वाला फ़िराक़ (जुदाई) की मुसीबत से महफ़ूज़ रहेगा।

7–ख़ा "ख़ौफ़" का पहला हर्फ़ है। इस सूरह का विर्द करने वाला किसी तरह के ख़ौफ़ में मुब्तला नहीं होगा।

सात आयतों की हिक्मत

इमाम नासिर रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि इस सूरह में सात आयतें हैं और इन्सान के जिस्म में बड़े आअज़ा भी सात अदद और दोज़ख़ के तब्क़ात भी सात हैं लिहाज़ा इस सूरह की बकस्रत तिलावत करने वाले के सातों आअज़ा जहन्नम के सातों तब्क़ात के अज़ाब से महफ़ूज़ रहेंगे।

फिर फरमाया कि मशाइख़े किबार और अहले सुलूक तहरीर फरमाते हैं कि इस सूरह में एक सौ चौबीस हुरूफ़ हैं और अंबिया की ताअदाद एक लाख चौबीस हज़ार। गोया हर हर्फ़ के बदले एक हज़ार पैग़म्बरों का सवाब इस के पढ़ने वाले के नामए

आअमाल में लिखा जाएगा।

हुरूफ़ की ताअदाद के रुमूज़

फिर फरमाया कि "अल हम्दु" में पाँच हुरूफ़ हैं और अल्लाह तआला ने दिन रात में पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ फरमाई हैं तो जो बन्दा इन पाँच हुरूफ़ को पढ़ता है उस की बरकत से पाँच नमाज़ों में अगर कोई कमी रह जाती है तो अल्लाह तआला मुआफ फरमा देता है।यूँ ही "लिल्लाह" में तीन हुरूफ़ हैं तीन को पाँच में मिला दें तो आठ होते हैं इस के पढ़ने वाले केलिए बहिश्त के आठों दरवाज़े खोल दिए जाते हैं कि जिस दरवाज़े से चाहे उस में दाख़िल होजाए। और "रब्बिल आलमीन" में दस हुरूफ़ हैं उन में आठ मिला दें तो अठारह होते हैं। अल्लाह तआला ने अठारह हज़ार आलम पैदा किए हैं इन की तिलावत करने वाला अठारह हज़ार आलमों का सवाब पाता है। "अर्रहमान" में छह हुरूफ़ हैं मुन्दरजा बाला अठारह में छह मिलाने से चौबीस होते हैं। रात दिन के चौबीस घंटे होते हैं। इन हरफ़ों की तिलावत करने वाला गुनाहों से इस तरह पाक होजाता है जैसे अभी अभी शिकमे मादर से पैदा हुआ हो। "अर्रहीम" के छह हुरूफ़ हैं चौबीस में छह मिलाएं तो तीस होते हैं। पुलसिरात की मसाफ़त तीस हज़ार बरस की है। और इन हुरूफ़ का पढ़ने वाला पुलसिरात बर्क़ रफ़्तारी से तय करले जाएगा। "मालिकि यौमिद्दीन" में बारह हुरूफ़ हैं। तीस में बारह मिलाने से बयालीस बनते हैं और साल के बारह महीने और हर माह के तीस दिन होते हैं इस के पढ़ने से बारह महीनों के गुनाह मआफ होजाते हैं। इय्या क नअ्बुदु" में आठ हुरूफ़ हैं अगर बयालीस में आठ जमा किये जाएं तो पचास हो जाएंगे। क़ेयामत का दिन पचास हज़ार बरस का होगा। इन हुरूफ़ की तिलावत करने वाले के साथ क़ेयामत के दिन सिद्दीक़ों सा मुआमला किया जाएगा। "व इय्या क नस्तईन" में ग्यारह हुरूफ़ हैं। ग्यारह को पचास में मिलाएं तो इक्सठ होते हैं। जो शख़्स इन को पढ़ेगा तो ज़मीन और आस्मान के इक्सठ दरियाओं के क़त्रों जितना सवाब मिलेगा और इसी क़दर क़तरात के बराबर उस के नामए अअ्माल से गुनाह धुल जाएंगे। "इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम" में उन्नीस हुरूफ़ हैं। उन्नीस और इक्सठ अस्सी होते हैं और शराब पीने वाले की सज़ा अस्सी दुर्रे मुक़र्रर है लिहाज़ा इन हुरूफ़ का पढ़ने वाला

इस सज़ा से महफ़ूज़ रहेगा कि अल्लाह तआला उसे हर हाल में शराब नोशी से बचाएगा। "सिरातल्लज़ी न अन्अम् त अलैहिम ग़ैरिल मग़्दूबि अलैहिम व लद्दाल्लीन" में चवालीस हुरूफ़ हैं अस्सी और चवालीस मिल कर एक सौ चौबीस होते हैं और अल्लाह तआला ने दुन्या में कमो बेश एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर भेजे हैं। पस इन हुरूफ़ की तिलावत करने वाला एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बरों का सवाब पाएगा और अल्लाह तआला उसे बख़्श देगा।

दरिया पार कर गए

उस के बाद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इरशाद फ़रमाया कि एक दफ़आ मैं अपने पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा शैख़ उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू के हमराह सफ़र कर रहा था। रास्ते में एक दरिया मिला जहाँ उस वक़्त कोई कशती न थी और हमें दरिया के उस पार जाना था। मैं सोच रहा था कि आगे का सफ़र किस तरह तय होगा कि हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी ने मुझे हुक्म दिया कि अपनी आँखें बन्द करो। मैं ने हुक्म की ताअमील की। थोड़ी देर बाद फ़रमाया कि आँखें खोल दो। मैं ने अपनी आँखें खोलीं तो अपने आप को मुर्शिद के हमराह दरिया के पार खड़ा पाया। मैं ने तअज्जुबख़ेज़ अन्दाज़ में हज़रत से दरयाफ़्त किया कि "हुज़ूर! हम दरिया के इस पार कैसे आगए।?"

आप ने फ़रमाया "हम ने पाँच बार सूरए अलहम्द शरीफ़ पढ़कर दरिया में क़दम रख दिया अल्लाह तआला ने उस की बरकत से हमें बग़ैर कशती के दरिया के इस पार ला खड़ा किया।"

पस जो शख़्स (पूरे शराइतो आदाब के साथ) सूरए फ़ातिहा सिद्क़ दिल से पढ़े और उस की हाजत पूरी न हो तो क़ेयामत के दिन वह मेरा दामन पकड़े।"

इतना फ़रमाने के बाद आप इबादतो वज़ाइफ़ में मशग़ूल होगए और हाज़िरीने मज्लिस अपने अपने मक़ामात को रवाना होगए।

आठवीं मज्लिस

उस मज्लिस में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अपने ख़ुसूसी औरादो वज़ाइफ़ अपने अज़ीज़तरीन मुरीदो ख़लीफ़ा हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह को ताअलीम फ़रमाए।

नमाज़े क़ज़ाए हाजात

इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स सूरए "वन्नाज़िआत" की तिलावत करेगा अल्लाह तआला उसे क़ब्र में तन्हाई के अज़ाब से बचाएगा। उस के बाद क़ज़ाए हाजात की नमाज़ मुन्दरजए ज़ैल तरीक़े पर पढ़ने की ताकीद फ़रमाई। फ़रमाया कि "मग़रिब की नमाज़ के फ़ौरन बाद दो रक्अत नमाज़े हिफ़्ज़े ईमान इस तरह अदा करे कि पहली रक्अत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास तीन मरतबा और सूरतुल फ़लक़ एक मरतबा पढ़े और नमाज़ पूरी करने के बाद सर सजदे में रख कर "या हैय्यु या क़ैय्यूमु सब्बितनी अलल ईमान" पढ़े फिर नमाज़े अव्वाबीन अदा करे जो तीन सलाम से छह रक्अतें पढ़ी जाती हैं वह इस तरह पढ़े कि पहली रक्अत में सूरए फ़ातिहा के बाद "इज़ा ज़ुल्ज़िलतिल अर्दु" दूसरी रक्अत में "अलहाकुमुत्तकासुरु" तीसरी रक्अत में सूरए वाक़ेआ। इसी तरह फिर तीन रक्अतों में पढ़े। फिर इशा तक तस्बीहो तहलील में मशग़ूल रहे। इशा की नमाज़ से पहले यह दुआ पढ़े। "अल्लाहुम्मा अइन्नी अला ज़िक्रि क व शुक्रि क व हुस्निन इबादाति क" फिर इशा की चार रक्अत इस तरह अदा करे कि पहली रक्अत में सूरए फ़ातिहा के बाद तीन मरतबा आयतुल कुर्सी और बाक़ी तीन रक्अतों में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास, सूरए फ़लक़ और सूरए नास (याअनी तीनों सूरतें) पढ़े इनशा अल्लाहु तआला तमाम हाजतें पूरी हेंगी। फिर चार रक्अत नमाज़ "सलातुस्सआदह" अदा करे हर रक्अत में सूरए फ़ातिहा के बाद तीन मरतबा "इन्ना अंज़ल्ना" और पन्दरह मरतबा सूरए इख़्लास पढ़े। फिर नमाज़ से फ़ारिग़ होकर सर सजदे में रखे और तीन मरतबा यह कहे "या हैय्यु या क़ैय्यूमु सब्बितना अलल ईमान" फिर जब बैठे तो यह दुआ

पढ़े "अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलु क बरकतन फ़िलउमुरि व सेहहतन फ़िल मईशति व वुस्अतन फ़िर्रिज़्क़ व ज़ियादतन फ़िल इल्मि व सब्तिना अलल ईमान"।

उस के बाद रात के तीन हिस्से करके पहले हिस्से में नमाज़ अदा करे दूसरे में तहज्जुद फिर थोड़ी देर सो जाए फिर उठकर ताज़ा वुज़ू करे और सुब्हे काज़िब तक तस्बीहो तहलील में मशग़ूल रहे।

फिर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अपने अज़ीज़तरीन मुरीदो ख़लीफ़ा को इजाज़त मरहमत फ़रमाते हुए ताकीद फ़रमाई कि "जो औराद हमारे ख़्वाजगान से मन्क़ूल हैं हम उन्हें पढ़ा करते हैं तुम भी पढ़ा करो।"

नोट :— यह औराद पूरे दिन और रात पर हावी हैं जिन्हें वही शख़्स अपना माअमूल बना सकता हैजो दुन्यावी मुआमलात से क़त्ऐ तअल्लुक़ करले और अपने आप को सिर्फ़ इबादतो रियाज़त केलिए वक़्फ़ करदे। दूसरे इन तवील औरादो वज़ाइफ़ के पढ़ने की अमली तर्बियत, तलक़ीन और इजाज़त किसी मुर्शिदे कामिल और मर्दे हक़आगाह से ही हासिल हो सकती है और किसी कामिल रहनुमा की इजाज़तो रहनुमाई के बग़ैर महज़ किताबों से आअमाले तरीक़त का फ़ाइदा कमा हक़्क़ुहू नहीं उठाया जासकता बल्कि अक्सरो बेशतर नुक़्सानात का अंदेशा ज़ियादा होता है इस लिए इन औरादो वज़ाइफ़ और आअमाल का यहाँ ज़िक्र क़ारेईन केलिए फ़ाइदा मन्द नहीं "दलीलुल आरिफ़ीन" में पूरी तफ़्सील मौजूद है अहले ज़ौक़ो शौक़ उस का मुतालआ करके फ़ैज़याब हो सकते हैं।

नवीं मजिलस

इस मज्लिस में हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के अलावा हज़रत शैख़ औहदुद्दीन किरमानी, हज़रत शैख़ वाहिद बुर्हान ग़ज़नवी, ख़्वाजा सुलैमान अब्दुर्रहमान और चन्द दीगर दुर्वेश भी हाज़िरे ख़िदमत थे।

मनाज़िले सुलूक

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू ने गुफ़्तुगू का आग़ाज़ करते हुए फ़रमाया कि बाज़ बुज़ुर्गों के क़ौल के मुताबिक़ राहे सुलूक पर चलने वालों केलिए सौ दरजात का तय करना ज़रूरी है। उन में सत्तर दर्जे कश्फ़ो करामात के हैं। इस राह पर चलने वालों को चाहिए कि जब तक सत्तर दर्जे तय न करलें कश्फ़ो करामात के इज़्हार से बचें बल्कि बेहतर तो यह है कि मुकम्मल सौ दरजात तय करलेने के बाद ही कश्फ़ो करामात का इज़्हार करें। अगर ऐसा करना मुम्किन न हो तो सत्तर दर्जे तय करने के बाद सिर्फ़ ज़रूरत के वक़्त ही कश्फ़ या करामत ज़ाहिर करें और यही अहले ज़र्फ़ होने का सुबूत है।

हिकायत

एक मरतबा हज़रत ख़्वाजा जुनैद बग़दादी क़ुद्दि स सिर्रुहू से पूछा गया कि आप दीदार क्यूँ नहीं चाहते अगर चाहें तो अल्लाह तआला ज़रूर आप की ख़्वाहिश पूरी करदेगा। आप ने फ़रमाया "मैं वह चीज़ नही माँगता जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने माँगी और अता न हुई लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बेमाँगे मिल गई। पस बन्दे को ख़्वाहिश से क्या वास्ता अगर वह उस के लाइक़ होगा तो ख़ुद बख़ुद हिजाब उठ जाएंगे और दीदार हो जाएगा फिर हमें ख़्वाहिश करने की क्या ज़रूरत है।"

मन्ज़िले इश्क़

फिर इश्क़ से मुतअल्लिक़ गुफ़्तुगू शुरूअ हुई और फ़रमाया कि आशिक़ का दिल महब्बत का आतिशकदा होता है जो चीज़ उस में जाती है वह उसे जलाकर नाचीज़ कर देता है क्यूँकि इश्क़ की आग से बढ़कर दुन्या की कोई आग तेज़ नहीं होती।

हिकायत

उसी बयान से मुत्तसिल फ़रमाया कि एक मरतबा हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी क़ुद्दि स सिर्रुहू मकाने क़ुर्ब में पहुँचे तो ग़ैब से आवाज़ आई कि ऐ बायज़ीद! आज तेरी दरख़्वास्त और हमारी बख़्शिश का दिन है जो चाहे माँग ले हम देंगे। ख़्वाजा

साहब ने सर बसुजूद होकर अर्ज़ किया कि बन्दे को ख़्वाहिश से क्या वास्ता जो कुछ बादशाहे मुतलक़ से अता होजाए बन्दा उसी पर राज़ी है।

अवाज़ आई ऐ बायज़ीद! हम ने तुझे आख़िरत दी।

अर्ज़ की इलाही! अगर तेरी यही मरज़ी है तो यही सही मगर यह तो दोस्तों केलिए क़ैद ख़ाना है।

फिर आवाज़ आई ऐ बायज़ीद! बहिश्त, दोज़ख़, अर्श, कुर्सी और जो हमारी मिल्कियत है सब कुछ हम ने तुझे (तेरे तसर्रुफ़ में) दिया।

अर्ज़ की मौला! जो तेरी मरज़ी।

आवाज़ आई फिर तेरा क्या मतलब है।

अर्ज़ की परवरदिगार तुझे ख़ुद माअलूम है।

आवाज़ आई ऐ बायज़ीद! क्या तू हमें तलब करता है अगर मैं तेरी तलब करूँ तो तू क्या करेगा। यह आवाज़ सुनते ही अर्ज़ की मुझे तेरी क़सम अगर तू मुझे तलब करे तो क़ेयामत के दिन दोज़ख़ के पास खड़े होकर एक ही आह में उस आग को नाबूद कर दूँ क्यूँकि महब्बत की आग के मुक़ाबले में दोज़ख़ की आग कुछ हक़ीक़त नहीं रखती।

आवाज़ आई ऐ बायज़ीद! जो कुछ तू चाहता है वह तुझे मिल गया।

हिकायत

फिर उसी मौक़े की मुनासबत से यह हिकायत बयान फ़रमाई कि एक मरतबा हज़रत राबेआ बस्रीया रदियल्लाहु तआला अन्हाइश्क़ के शौक़ो इश्तियाक़ में डूब कर "अल हरीक़ अल हरीक़" की सदा बलन्द कर रही थीं अहले बस्रा यह फ़रयाद सुन कर अपने घरों से बाहर निकल आए और आग बुझाने की तरकीब सोचने लगे उन में से एक शख़्स वासिले इलाही था उस ने कहा कैसे बेवक़ूफ़ लोग हैं जो राबेआ की आग बुझाने की सोच रहे हैं उस के सीने में तो इश्क़े इलाही की आग भड़क रही है जिसे विसाले दोस्त के सिवा कोई नहीं बुझा सकता।

इश्क़ का दर्जए कमाल

एक मरतबा किसी ने हज़रत मन्सूर हल्लाज से पूछा कि दोस्त के इश्क़ में कमालियत किस चीज़ का नाम है।?

आप ने जवाब दिया कि दोस्त जो चाहे करे आशिक़ को हर हाल में बरिज़ा व ख़ुशी तस्लीम कर लेना चाहिए चाहे आशिक़ का सर ही क्यूँ न काटना चाहे। दुख, सुख, बुरा, भला जो कुछ भी हो उसे दोस्त की तरफ़ से समझकर बख़ुशी क़ुबूल करे, कमरे हिम्मत बाँधे और अहकामे इलाही की ताअमील करता रहे, मुशाहदए हक़ में ऐसा डूबा हुआ रहे कि किसी चीज़ की सुध बुध न रहे और यही आशिक़ केलिए इश्क़ का दर्जए कमाल है। फिर हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने आबदीदा होकर यह शेर पढ़ा।:

खूबरूयाँ चु पर्दा मी गीरन्द
आशिक़ाँ पेशे शाँ चुनीं मीरन्द

हिकायत

उस के बाद फ़रमाया कि मैं ने एक आशिक़ को बग़दाद के एक क़स्बे में देखा उस पर हज़ार कोड़े बरसाए गए मगर उसे कुछ भी पता न चला किसी वासिले हक़ ने उस से पूछा कि क्या बात है तू ने उफ़ तक नहीं की। उस ने जवाब दिया कि मेरा माअशूक़ मेरे सामने था और मैं मुशाहदए हक़ में मुस्तग़रक़ था जब दोस्त सामने हो तो अपने तन बदन का होश किसे रहता है उस वक़्त अगर जिस्म की बोटी बोटी करदे तो भी कोई तक्लीफ़ होना तो दरकिनार ज़र्रा बराबर एहसास तक नहीं होगा।

हिकायत

हज़रत इमाम ग़िज़ाली रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि एक मरतबा बग़दाद के बाज़ार में किसी ऐय्यार के हाथ पाँव काटे गए मगर वह किसी तक्लीफ़ का इज़्हार करने की बजाए हंस रहा था। किसी ने उस से पूछा कि इस शदीद तक्लीफ़देह मौक़े पर तेरा हंसना कुछ अजीब सा लगता है आख़िर इस का सबब क्या है। उस ने कहा कि मेरा महबूब मेरी आँखों के सामने था मैं उस के दीदार में ऐसा महव होगया कि मुझे अपने हाथ पाँव काटे जाने की तक्लीफ़ का कुछ एहसास ही नहीं हुआ।

करामात का मुज़ाहरा

फ़िर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अपने पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू की एक मज्लिस का ज़िक्र फ़रमाया जिस में हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के अलावा हज़रत

शैख़ औहदुद्दीन किरमानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहिमा और दो दीगर दुर्वेश भी मौजूद थे। आपस में यह तय पाया कि जितने लोग इस मज्लिस में हैं यके बाद दीगरे हर एक दुर्वेश अपनी कोई करामत दिखाए। सब से पहले हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी ने मुसल्ले के नीचे हाथ डाल कर मुट्ठी भर अशरफ़ियाँ निकालीं और सामने मौजूद एक दुर्वेश को देकर फरमाया कि जाओ दुर्वेशों केलिए हल्वा लेआओ।

हज़रत शैख़ औहदुद्दीन किरमानी ने यह देख कर पास पड़ी हुई एक लकड़ी पर हाथ मारा तो हुक्मे इलाही से वह लकड़ी सोना बन गई।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ फरमाते हैं कि पीछे रह गया मैं। मैं अपने पीरो मुर्शिद के एहतेराम में कुछ करने से माअज़ूर था। फिर मुर्शिदे करीम ने मेरी तरफ मुख़ातब होकर फरमाया कि तुम क्यूँ नहीं कुछ करते। वहाँ एक भूका दुर्वेश था जो शर्म के मारे किसी से कुछ माँग नहीं पारहा था। मैं ने अपनी गुदड़ी में से जौ कीं चार रोटियाँ निकाल कर उसे देदीं। उस दुर्वेश और ख़्वाजा मुहम्मद आरिफ़ ने यह देख कर फरमाया कि दुर्वेश में अगर इतनी भी कुव्वत न हो तो उसे दुर्वेश नहीं कहा जासकता।

जन्नत या ख़ालिके जन्नत

फरमाया कि क़ेयामत के दिन बारी तआला अपने फ़ज़्लो करम से अपनी बारगाह के मुक़र्रब लोगों को मुख़ातब करके फरमाएगा कि तुम सब जन्नत में दाख़िल हो जाओ। तो आशिक़ाने इलाही अर्ज़ करेंगे कि इलाही हमारा मक़सदे अस्ली और मतलूबे हक़ीक़ी तो तेरी ही ज़ात है तुझे पालिया तो सब कुछ मिल गया, जन्नत तो उन्हें अता हो जिन्हों ने उस की चाह में तुझे खुदा जाना और तेरी इबादत की। फिर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इस की मज़ीद वज़ाहत इस तरह फरमाई कि जो लोग अपनी मरज़ी अल्लाह तआला के सुपुर्द कर चुके हैं उन्हें बहिश्त और उस की नेअमतों से क्या तअल्लुक़ उन का मतलूबे हक़ीक़ी तो रब्बे ग़फ्फार ही होता है।

दसवीं मज्लिस

इस मज्लिस में हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी के अलावा और भी बहुत से दुर्वेश हाज़िर थे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने सिलसिलए गुफ्तुगू का आग़ाज़ करते हुए फरमाया। :

सुहबत की तासीर

आप ने फरमाया कि "अस्सुहबतु तुअस्सरु" याअनी फरमाने रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम है कि सुहबत का असर ज़रूर होता है। अगर कोई बुरा शख़्स नेकों की सुहबत इख़्तियार करे तो उस के नेक हो जाने की उम्मीद है और अगर कोई नेक शख़्स बुरों की सुहबत में बैठने लगे तो वह भी बुरा हो जाएगा। क्यूँकि जिस को भी कुछ हासिल हुआ है वह सुहबत से ही मिला है और जो नेअमत मिली वह नेक लोगों ही के ज़रीआ मयस्सर आई। फिर फरमाया कि अहले सुलूक के नज़दीक नेक लोगों की सुहबत नेक काम से बेहतर है और बुरों की सुहबत बुरे काम से बुरी।

हिकायत

फिर फरमाया कि ख़लीफ़ए दोम हज़रत सैय्यिदुना उमर फारूके अअ्ज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफत में इराक़ का बादशाह एक जंग में गिरफ्तार होकर आया। आप ने फ़रमाया कि अगर तू मुसलमान होजाए तो इराक़ की बादशाहत फिर तुझे सोंप दी जाएगी। उस ने इन्कार कर दिया। फिर फरमाया "इम्म अन्तल इस्लाम इम्म अन्नस्सैफ" याअनी इस्लाम कुबूल करो या क़त्ल होने केलिए तैयार हो जाओ। उस ने फिर भी इस्लाम कुबूल करने से इन्कार कर दिया। फरमाया तल्वार लाओ। वह बादशाह निहायत अक़्लमन्द था। आप से मुख़ातिब होकर उस ने कहा "मैं प्यासा हूँ मुझे पानी पिला दो। हुक्म हुआ कि शीशे के बरतन में इसे पानी पिलाया जाए। उस ने कहा मैं उस बरतन में नहीं पियूँगा। फरमाया चूँकि यह बादशाह है इस लिए इस केलिए

सोने या चाँदी के बरतन लाओ। उस ने कहा मैं मिट्टी के बरतन में पियूँगा। जब पानी मंगवाकर उसे दिया गया तो उस ने कहा कि मुझ से अह्द करो कि मैं जब तक यह पानी न पी लूँमुझे क़त्ल न करोगे। आप ने फ़रमाया अच्छा मैं ने वाअदा किया कि जब तक तू यह पानी नहीं पी लेगा मैं तुझे क़त्ल न करूँगा। बादशाह ने फ़ौरन कूज़ा ज़मीन पर देमारा। कूज़ा टूट गया और पानी ज़मीन में जज़्ब होगया। फिर कहा आप ने मुझ से वाअदा किया है कि जब तक मैं यह पानी न पी लूँगा क़त्ल न किया जाऊँगा। आप उस की दानाई से हैरतज़दा रह गए और फ़रमाया जाओ तुझे मआफ किया। फिर उसे एक सालेह और ज़ाहिद शख़्स के सुपुर्द कर दिया। जब वह उस सालेह शख़्स की सुहबत में कुछ दिनों रहा तो उस की अच्छी सुहबत ने उस में असर करना शुरूअ कर दिया। जिस का नतीजा यह हुआ कि उस ने अमीरुल मूमिनीन की तरफ़ खुद पैग़ाम भेजा कि मैं इस्लाम क़ुबूल करना चाहता हूँ। उस के इस्लाम क़ुबूल करने के बाद हज़रत फ़ारूक़े अअ्ज़म ने ने फ़रमाया कि अब हम तुझे इराक़ की हुकूमत देते हैं। मगर उस ने जवाब दिया "मुझे मुल्क और सल्तनत नहीं चाहिए बल्कि इराक़ का कोई वीरान गाँव मुझे देदिया जाए जहाँ मैं गुज़र बसर कर सकूँ। आप ने मंज़ूर फ़रमाकर अपने आदमियों को इराक़ भेजा, काफी तलाशो जुसतुजू के बाद भी कोई वीरान गाँव नज़र न आया। जब बादशाह को बताया गया तो उस ने कहा कि मेरा यही मक़सद था कि मैं ने मुल्के इराक़ ऐसी हालत में मुसलमानों के हवाले किया है कि उस में कोई गाँव वीरान और ग़ैरआबाद नहीं है। अब आप के ज़ेरे इक़्तेदार है तो कोशिश कीजिए कि उस से ज़ियादा तरक़्क़ी करे और कोई गाँव वीरान न हो जाए। अगर ऐसा हुआ तो उस का जवाब क़ेयामत के दिन अल्लाह तआला को देना होगा। फिर आबदीदा होकर फ़रमाया कि वह बादशाह किस क़दर अक़्लमन्द और दाना था।

आरिफ़ बिल्लाह

फिर फ़रमाया कि आरिफ़े हक़ ऐसे भी होते हैं कि अल्लाह तआला से कुछ नहीं लेते फिर फ़रमाया जिस आरिफ़ में तक़्वा है

वह गदागरी करके महज़ हराम खाता है। फिर फ़रमाया कि हज़रत ख़्वाजा जुनैद बग़दादी से पूछा गया कि महब्बत का सम्रा क्या है।? आप ने फ़रमाया कि महब्बत का सम्रा यह है कि हक़ तआला से इस क़दर सुरूरो इश्तेयाक़ ज़ाहिर करे जितनाउसे अपने से रवा रखे लेकिन जिसे अल्लाह तआला ख़ुद दोस्त रखता है बहिश्त में उस के लेक़ा का मुन्तज़िर होता है।

हिकायत

फ़रमाया "मैं ने अपने उस्ताज़े मुकर्रम हज़रत मौलाना शरफ़ुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह के हाथों की लिखी हुई एक किताब में पढ़ा है कि एक मरतबा हज़रत ख़्वाजा अबूबक्र शिबली रहमतुल्लाहि तआला अलैह से पूछा गया कि इतनी इबादतो रियाज़त और तक़्वा व तहारत के बाद भी आप इस क़दर क्यूँ डरते हैं।?"

फ़रमाया "दो चीज़ों के सबब, अव्वल तो यह कि वह कहीं यह न कह दे कि तू मेरे लाइक़ नहीं और अपने पास से दूर न करदे। दूसरे यह कि अगर मौत के वक़्त ईमान सलामत लेगया तो समझूँगा कि मैं ने कोई काम किया वरना समझूँगा कि सारे आअ्माल और ताअत को ज़ाएअ कर दिया।

हज़रत अबूबक्र शिबली रहमतुललाहि तआला अलैह

बाद अज़ाँ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इरशाद फ़रमाया कि एक मरतबा हज़रत ख़्वाजा अबूबक्र शिबली रहमतुल्लाहि तआला अलैह से किसी ने सुवाल किया कि बदबख़्ती की क्या अलामत है।?

आप ने जवाब में इरशाद फ़रमाया कि बदबख़्ती यह है कि नाफ़रमानी करने के बाद क़ुबूलियत की उम्मीद रखे।

फिर पूछा कि आरिफ़ों में अस्ल बात कौन सी होती है।?

फ़रमाया "हमेशा ख़ामोश रहना और रंजो ग़म में मुब्तला रहना कि उसी से आरिफ़ों की फ़ज़ीलत ज़ाहिर होती है।

फिर फ़रमाया कि दुन्या में सब से अज़ीज़तरीन तीन चीज़ें होती हैं। अव्वल आलिम जो अपने इल्म से बात कहे। दूसरा ग़ैर तामेअ शख़्स जिस को कोई लालच न हो और तीसरा वह आरिफ़ जो हमेशा दोस्त की ताअरीफ़ करे।

हिकायत

फिर फ़रमाया कि एक मरतबा हज़रत दाऊद ताई रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी आँखें बन्द किए हुए अपने हुजरे से बाहर तशरीफ लाए एक दुर्वेश जो वहाँ मौजूद था उस ने उस का सबब पूछा तो आप ने जवाब दिया कि पैंतालीस साल से मैं ने आपनी आँखें बन्द कर रखी हैं ताकि अल्लाह तआला के सिवा किसी और को न देखूँ इस लिए कि महब्बत और दोस्ती का तक़ाज़ा यह नहीं है कि मैं दोस्ती करूँ अल्लाह तआला से और देखूँ ग़ैर की तरफ।

हिकायत

एक मरतबा सफर के दौरान मैं बुख़ारा पहुँचा। मैं ने वहाँ एक नाबीना आशिक़ को देखा जो तन मन से यादे इलाही में मशग़ूल था। मैं ने पूछा कि आप कब से नाबीना हैं।? फरमाया कि जब मेरा काम कमालियत को पहुँच गया और वहदानियत और अज़मतो जलाले ख़ुदावन्दी पर निगाह पड़ने लगी तो एक रोज़ मेरी निगाह एक ग़ैर पर जा पढ़ी। ग़ैब से आवाज़ आई "ऐ मुद्दई! दाअवा तो हम से महब्बत का करता है और निगाह ग़ैर की तरफ उठाता है।" उस आवाज़ को सुन कर मैं सख़्त नादिमो शर्मिन्दा हुआ। मैं ने बारगाहे इलाही में दुआ की कि जो आँखें दोस्त के सिवा किसी ग़ैर को देखें वह अंधी हो जाएं। अभी दुआ ख़त्म भी नहीं हुई थी कि मेरी बीनाई जाती रही। बस उस दिन से इतमीनाने क़ल्ब के साथ मैं यादे इलाही में मशग़ूल हूँ। बज़ाहिर नाबीना हूँ मगर बातिनी आँखों से उस के जल्वों का मुशाहदा कर रहा हूँ।

दुर्वेशी की ताअरीफ

उस के बाद दुर्वेशी से मुतअल्लिक़ गुफ्तुगू शुरूअ हुई फरमाया कि ख़िदमत में आने वाले किसी भी शख़्स को महरूम न फिराना दुर्वेशी है अगर भूका है तो खाना खिलाए, नंगा है तो नफीस कपड़ा पहनाए। बहर हाल उस की जो ज़रूरत हो पूरी करनी चाहिए और उस का हाल पूछ कर दिलजोई ज़रूर करनी चाहिए।

हिकायत

एक मरतबा हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी के हमराह चन्द दुर्वेश सफर कर रहे थे। हम ने हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करीया मुलतानी को निहायत बुज़ुर्ग मर्द पाया आप की ख़ानक़ाह में एक दस्तूर था कि कोई भी आने वाला ख़ाली न जाता अगर नंगा होता तो नफ़ीस कपड़े उसे दिए जाते, देने के फ़ौरन बाद उतने ही और वैसे ही और आजाते। अलग़रज़ चन्द रोज़ आप की ख़िदमत में गुज़ारे। 'आप की पहली नसीहत यह थी कि जो कुछ मिले उसे राहे ख़ुदा में ख़र्च कर देना चाहिए एक पैसा भी अपने पास नहीं रखना चाहिए ताकि अल्लाह तआला की दोस्ती हासिल हो।

हिकायत

मुत्तसिलन यह दूसरी हिकायत भी बयान फरमाई कि एक दुर्वेश निहायत फक़ीर था लेकिन उस की आदत यह थी कि अगर कोई चीज़ बतौरे तुहफा आजाती तो फौरन उसे फक़ीरों में तक़्सीम कर देता और ख़ुद घर में गुज़ारा करता। चुनाँचे दो मर्दे दुर्वेश साहिबाने विलायत उस के पास आए और उस से पानी माँगा। दुर्वेश अन्दर से जौ की दो रोटियाँ और पानी का कूज़ा लेकर आया चूँकि वह लोग भूके थे इस लिए रोटियाँ भी खाईं और पानी भी पिया और एक दूसरे की तरफ देख कर कहने लगे कि दुर्वेश ने तो अपना काम कर दिया अब हमें भी अपना काम कर देना चाहिए। एक ने कहा इसे दुन्या देनी चाहिए दूसरे ने कहा कि यह दुन्या के सबब गुमराही में न पड़ जाए। जवाब दिया कि दुर्वेश बाँटने वाले होते हैं वह दुआ करके चले गए। फिर दुर्वेश ऐसा कामिले हाल हुआ कि हर रोज़ उस के बावरची ख़ाने में हज़ार मन तआम मौजूद होता जो ख़ल्क़े ख़ुदा को खिलाया जाता।

हासिले इश्क़े इलाही

फरमाया कि एक मरतबा हज़रत ख़्वाजा जुनैद बग़दादी क़ुद्दिस सिर्रुहू से किसी ने पूछा कि इस्तेलाहे शरीअत में महब्बत किसे कहते हैं और उस का हासिल क्या है।? आप ने जवाब दिया कि इश्क़े इलाही का हासिल यह है कि अल्लाह तआला अपने मुहिब्ब

के दिल में अपने दीदार का ज़ौक़ पैदा करदेता है और उसे सरदारी अता करता है उस से कोई ऐसा फ़ेल सरज़द नहीं होता जिस के सबब हक़ से दूरी होजए क्यूँकि जिस ने हक़ को राज़ी कर लिया हक़ उस का दोस्त है और जन्नत उस के दीदार की मुश्ताक़।

फिर फ़रमाया हज़रत ख़्वाजा अबू सईद अबुलख़ैर रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते थे कि जब अल्लाह तआला किसी बन्दे को अपना दोस्त बनाता है तो उस को अपनी महब्बत अता करदेता है और वह बन्दा अपने आप को उस की रज़ा केलिए हमातन वक़्फ़ कर देता है बिलआख़िर हक़ तआला उस को अपनी तरफ़ खींच लेता है ताकि वह फ़ना फ़िल्लाह होजाए।

ग्यारहवीं मज्लिस

बुध के दिन पाबोसी की दौलत हासिल हुई। उस मज्लिस में शैख़ औहदुद्दीन किरमानी, मौलाना बहाउद्दीन साहिबे तफ़्सीर और चन्द दुर्वेश हाज़िरे ख़िदमत थे। बात आरिफ़ों के तवक्कुल के बारे में शुरूअ हुई।

आरिफ़ का तवक्कुल

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाया कि आरिफ़ों का तवक्कुल यह है कि ख़ुदा के सिवा और किसी पर क़तअन कोई भरोसा न हो और न किसी चीज़ की तरफ़ उम्मीद और तवज्जुह की निगाह करें। फिर फ़रमाया "मुतवक्किल हक़ीक़त में वह है जो ख़िल्क़त की मदद करे और तक्लीफ़ की हिकायतो शिकायत न करे।"

एक दफ़आ हज़रत ख़्वाजा जुनैद बग़दादी से पूछा गया कि "आरिफ़ का तवक्कुल क्या है?"

आप ने फ़रमाया कि आरिफ़ का तवक्कुल यह है कि उस का दिल दर्जे ज़ैल तीन चीज़ों पर भरोसा करना छोड़ दें। इल्म, अमल और ख़ल्वत।

एक और बुज़ुर्ग से पूछा गया कि आरिफ़ की क्या पहचान है। तो उन्हों ने जवाब दया "आरिफ़ वह है जो सिवाए ज़ाते इलाही के किसी से महब्बत न करे। इसी तरह एक दूसरे बुज़ुर्ग से मैं ने सुना है कि आरिफ़ केलिए ज़रूरी है कि वह मौत को दोस्त रखे। बेक़रारी की हालत में ज़िक्रे इलाही से राहत हासिल करे और दोस्त की आमद के वक़्त मुज़्तरिब होजाए।

हज़रत इब्राहीमे ख़लील का तवक्कुल

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इस मौक़े पर यह हिकायत बयान फ़रमाई कि एक मरतबा हज़रत जिब्रईले अमीन अलैहिस्सलाम ने हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम से पूछा कि मैं आप की कोई हाजत पूरी कर सकता हूँ तो हुक्म फ़रमाइए। हज़रत ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया "नहीं, तुम से हाजत रवाई केलिए नहीं कहूँगा, अल्लाह तआला ज़ाहिरो बातिन का जानने वाला है जब वह सब कुछ जानता है तो फिर मैं किसी और से क्यूँ मदद मांगूँ।"

सोने चाँदी की क़द्रो क़ीमत

फ़रमाया जब सैय्यिदुना अबुलबशर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर इताब हुआ तो उस ग़म में काइनात की तमाम अश्या ने रोकर इज़्हारे हमदर्दी किया मगर सोना और चाँदी नहीं रोए। हक़ तआला ने पूछा तुम क्यूँ नहीं रोए?

जवाब दिया "जिस पर तेरा इताब हुआ उस केलिए क्या रोएं।"

बारी तआला की तरफ़ से इरशाद हुआ कि अपनी जलालत की क़सम तुम्हारी वक़्अतो क़ीमत औलादे आदम में बढ़ा दूँगा और ताक़ेयामत तुम्हारी क़द्र होगी।

औसाफ़े इलाही से मुत्तसिफ़

फिर फ़रमाया कि "अस्रारुल औलिया" में मैं ने पढ़ा है कि हक़ तआला जब महबूबों को अपने अनवार से ज़िन्दा फ़रमाएगा तो उन्हें वह रूयत नसीब होगी जो सरकारे रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हुई थी चूँकि हक़तआला जिस्मो जान, मकानो जेहत और ज़बानो दहन से पाक है इस वास्ते रसूले अकरम सलल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हक़ तआला के औसाफ़ से मुत्तसिफ़ हुए। फिर फ़रमाया "तौबतुन्नुसूह"

में तीन बातें हैं।
अव्वलः— कम खाना, रोज़े केलिए।
दोमः— कम सोना ताअत केलिए।
सोमः— कम बोलना दुआ केलिए।

पहले से ख़ौफ, दूसरे और तीसरे से महब्बत पैदा होती है। पस ख़ौफ के ज़िम्न में गुनाह का तर्क है ताकि जहन्नम की आग से नजात हासिल हो और रजा के ज़िम्न में ताअत है ताकि बहिश्त में मक़ाम और अबदी ज़िन्दगी हासिल कर सके। और महब्बत के ज़िम्न में फ़िक्रों का इज्तेहाद करना है ताकि रज़ाए हक़ हासिल हो। फरमाया महब्बत में आरिफ वह है जो ज़िक्र के सिवा किसी को दोस्त न रखे।

महब्बते इलाही

फरमाया मैं ने हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहू से सुना है कि अहले महब्बत दोस्त के सिवा किसी और की महब्बत अपने दिल में बसने नहीं देते। जिस ने ग़ैर की तरफ देखा वह रंजो ग़म और वहशत में मुब्तला हुआ। जो दोस्त का तलबगार नहीं वह हेच दर हेच है।

मुद्दइयाने इश्क़

फरमाया क़ेयामत के दिन आशिक़ाने सादिक़ को बुलाया जाएगा। अगर उस वक़्त किसी आशिक़ ने महब्बत का दाअवा कर दिया तो गोया उस के अन्दर साबित क़दमी न रही उस को शर्मिन्दगी होगी (क्यूँ कि आशिक़ाने सादिक़ महब्बत का दाअवा करने की मजाल नहीं रखते) उस वक़्त एक आवाज़ आएगी कि महबबत का दाअवा करने वाले आशिक़ाने सादिक़ नहीं हैं उन को हमारे आशिक़ों से अलाहदा करदो।

नोटः—

जब सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ बयान फरमा चुके तो आबदीदा होकर फरमाया कि अब मैं वहाँ का सफर कर रहा हूँ जहाँ मेरा मदफन होगा। याअनी अजमेर केलिए रवाना हो रहा हूँ। उन दिनों अजमेर हिन्दुओं से भरा हुआ था और मुसलमान वहाँ न के बराबर थे जब सरकारे ख़्वाजा के मुबारक क़दम वहाँ पहुँचे तो

इस क़दर इस्लाम फैला जिस की कोई हद नहीं। फल्हम्दुलिल्लाहि अला ज़ालिक।

बारहवीं मज्लिस

जुमेअ्रात के रोज़ क़दम बोसी का शरफ हासिल हुआ और यह आख़िरी मज्लिस थी जो सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अजमेर की जामेअ मस्जिद में मुन्अक़िद की। उस में बहुत से दुर्वेश, मुरीदान, अक़ीदतकेश और अज़ीज़ाने अहले वज़्अ हाज़िर थे। बात मलकुल मौत के बारे में शुरूअ हुई।

मौत की हक़ीक़त

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इरशाद फरमाया कि मलकुल मौत के बग़ैर दुन्या की क़ीमत जौ भर भी नहीं। पुछा क्यूँ।? फरमाया इस लिए कि हदीसे पाक में है "अलमौतु जस्रुन यूसिलुल हबी ब इलल हबीब" मौत एक पुल है जो दोस्त को दोस्त तक पहुँचा देता है।

दिल की तक़्लीफ़ का मक़सद

फिर फरमाया कि दोस्त वह है जो दिल से याद करे क्यूँकि दिल हक़ीक़ी दोस्त से दोस्ती केलिए ही पैदा किए गए हैं ख़ास कर इस लिए कि अर्श के गिर्द तवाफ करें जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया है "ऐ मेरे बन्दे! जब मेरा ज़िक्र तुझ पर ग़ालिब आजाएगा तो मैं तेरा आशिक़ हो जाऊँगा याअनी मुहिब्ब (मतलब यह कि जो अल्लाह तआला से महब्बत करता है अल्लाह तआला उस से महब्बत करता है)।

ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी को ख़िलाफत

फिर हज़रत ख़्वाजा ने आबदीदा होकर फरमाया कि हमें उस जगह लाया गया है जहाँ हमारा मदफन होगा। हम चन्द ही दिनों में इस जहान से सफर कर जाएंगे। इस मज्लिस में हज़रत शैख़

अली संजरी भी हाज़िर थे उन्हें हुक्म हुआ मिसाल लिखो और शैख़ कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी को दो ताकि वह देहली जाएं साथ ही हम उन्हें ख़िलाफत देते हैं और उन का मक़ाम भी मुतऐयन करते हैं।

हज़रत कुतुब साहब की देहली रवाँगी

मिसाल मुकम्मल होने के बाद मुझे दी मैं अदब बजा लाया हुक्म हुआ क़रीब आओ मैं गया तो दस्तार और कुलाह मेरे सर पर रखी और हज़रत शैख़ उस्मान हारवनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का असाए मुबारक दिया। ज़िरह पहनाई, क़ुरआन शरीफ और मुसल्ला भी इनायत फरमाया और इरशाद फरमाया कि यह पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से हमारे ख़्वाजगाने चिश्त को बतौरे अमानत मिली है हम ने तुम्हारे सुपुर्द किया। जिस तरह उन्हों ने हम तक पहुँचाई है हम ने तुम तक पहुँचा दिया और तुम इसे आगे पहुँचा देना। नीज़ इस का हक़ अदा करना ताकि क़ेयामत के दिन हम अपने ख़्वाजगान के रूबरू शर्मिन्दा न हों। मैं आदाब बजा लाया और सरकारे ख़्वाजा ने दुगाना अदा करके मुझे रुख़्सत किया और फरमाया "जा! मैं ने तुझे ख़ुदा को सौंपा और तुम्हारी मन्ज़िल तक इज़्ज़त से पहुँचाया।

चन्द नसीहतें

उस के बाद फरमाया कि चार चीज़ें निहायत नफ़ीस हैं।

अव्वलः–वह दुर्वेशी जो तवंगरी माअलूम हो।

दोमः–भूकों को पेट भर खाना खिलाना।

सोमः–हालते ग़म में मस्रूरो मुतमइन दिखाई देना।

चहारमः–दुश्मन की दुश्मनी के जवाब में दोस्ती का मुज़ाहरा करना।

उसी मौक़े पर फ़रमाया कि अहले महब्बत का मरतबा यह है कि अगर उन से पूछा जाए कि रात की नमाज़ अदा की तो कहते हैं कि इतनी फ़राग़त कहाँ हम तो मलकुल मौत के इर्द गिर्द घूमते हैं जहाँ वह जाता है वहीं उसे पकड़ते हैं।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ बयान फरमा ही रहे थे कि मेरे दिल में ख़याल पैदा हुआ कि अब क़दम बोसी करके रवांगी की इजाज़त तलब कर लूँ। हज़रत ने अपनी रौशन ज़मीरी से मेरे दिल

की बात भाँप ली। फरमाया आगे आओ मैं ने आगे बढ़कर अपना सर हज़रत के क़दमों पर रख दिया। हज़रत ने फातिहा पढ़कर फरमाया कि ग़म न करो और हिम्मत पस्त न करो। फिर आदाब बजा लाकर रवाना हो गया। जब मैं देहली पहुँचा तो शहर के तमाम अवामो ख़वास, सूफ़िया और अइम्मा मेरे पास आए और आदाब बजा लाए।

सरकारे ख़्वाजा के विसाल की ख़बर

हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी अलैहिर्रहमह फरमाते हैं कि देहली आए हुए मुझे चालीस दिन गुज़रे थे कि किसी ने इत्तेलाअ दी कि अजमेर से मेरी रवांगी के बीस दिनों बाअद सरकारे ख़्वाजा इस जहाने फानी से आलमे बक़ा की तरफ कुच कर गए और वासिल बहक़ हो गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलहि राजेऊन। उसी शब मुसल्ले पर लेटा हुआ था कि नींद आगई मैं ने सरकारे ख़्वाजा को अर्श पर देखा मैं ने सर क़दमों पर रख दिया और आप का हाल दर्याफ्त किया इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे बख़्श दिया, अपने सायए रहमत में जगह अता फरमाई और फिरिश्तों के दरमियान मेरी क़ेयामगाह मुक़र्रर फरमाई है मैं यहीं रहता हूँ। फल्हम्दुलिल्लाहि अला ज़ालिक

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के जामेअ

इरशादात

अहले इल्मो दानिश और अवामो ख़वास सब जानते हैं कि बुज़ुर्गों के अक़्वाल मुख़्तसर जुमलों पर मुश्तमल होते हैं मगर वह उम्र भर के तजरबातो मुशाहदात का खुलासा और निचोड़ होते हैं और बिलख़ुसूस औलियाअल्लाह के इरशादात तो उन की मुख़्तलिफ मनाज़िले तरीक़त का पता देते हैं। ज़ैल में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के वह इरशादात दर्ज किए जारहे हैं जो आप ने मुख़्तलिफ औक़ात में अपने मुरीदीन और मोअतक़िदीन की सलाहों फलाह केलिए इरशाद फरमाए हैं और बिला शुबह उस वक़्त की तरह आज भी बे कमो कास्त उतने ही मुफ़ीद हैं।

1–इश्क़ की राह ऐसी है कि जो इस राह पर पड़ जाता है उस का नामो निशान तक नहीं मिलता।

2–अहले इरफान ज़िक्रे इलाही के सिवा अपनी ज़बान से कोई बात निकालते ही नहीं।

3–आरिफ का अदना कमाल यह है कि वह मुल्को माल से बेज़ार होजाए।

4–दोस्त की दोस्ती में अगर दोनों जहाँ भी वख़्श दिए जाएं तो भी कम है।

5–दोस्त के अस्रार ख़ूबसूरत हैं और ख़ूबसूरत आशिक़ के दिल में ही घर करते हैं।

6–जब अल्लाह तआला किसी को अपनी रज़ा देदे तो वह बहिश्त को क्या करे।

7–राहे सुलूक में बहुत से मर्द आजिज़ और आजिज़ मर्द होगए हैं।

8–गुनाह इतना नुक़सान नहीं पहुँचाता जितना मुसलमान भाई

को ज़लीलो ख़्वार करना।

9–आरिफों में सादिक़ वह है जिस की मिलकियत में कुछ न हो न वह किसी की मिल्क हो।

10–आरिफों की ख़स्लत महब्बत में इख़्लास है।

11–आरिफ वह है जो राहे ख़ुदा में ख़ुदा के सिवा किसी और को न देखे।

12–अहले महब्बत वह लोग हैं जो सिर्फ हक़ तआला की बात सुनते हैं।

13–ऐ ग़ाफ़िल! उस सफर का तोशा तैयार कर जो तुझे दरपेश है याअनी सफरे आख़िरत का।

14–जिस को ख़ुदा दोस्त रखता है उस पर मुसीबतें नाज़िल करता है।

15–आरिफ आफताब सिफत होते हैं कि उन से तमाम आलम मुनव्वर होता है।

16–आरिफ का कमतर दर्जा यह है कि सिफाते हक़ उस में पाई जाएं।

17–ख़ुद परस्ती और नफ्स परस्ती बुत परस्ती है जब तक ख़ुद परस्ती न छोड़ेगा ख़ुदा परस्ती हासिल न होगी।

18–जब तक मुर्शिद की तरबियत हासिल न होगी मन्ज़िल पर नहीं पहुँचेगा।

19–दुन्या फानी है और कारहाए दुन्या लायाअनी।

20–आरिफ का कमाल यह है कि अपने आप को राहे ख़ुदा में जला दे।

21–क़ेयामत के दिन अगर बहिश्त में कोई चीज़ पहुँचाएगी तो वह ज़ुहद है न कि (सिर्फ) इल्मो अमल।

22–जिस ने ख़ुदा को पहचान लिया अगर वह ख़ल्क़ से दूर न भागे तो समझ लो उस में कोई नेअमत नहीं।

23–आशिक़ वह है जो दोनों जहाँ से दिल उठाले।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के गिराँक़द्र

इल्मी मक्तूबात

किसी भी साहिबे इल्मो माअरिफत केलिए आम बन्दगाने ख़ुदा को राहे रास्त पर लाना और माअरिफते इलाही के तलबगारों को मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँचाना उन की ज़िन्दगी का अहमतरीन मक़सद होता है। इस लिए उन्हें जो भी मुनासिब तरीक़ा माअलूम होता है वो उसे अपनाने में कोई पसो पेश नहीं करते। आम तौर पर हिदायतो इरशाद और रहबरी व रहनुमाई केलिए अपनी फेअली व अमली ताअलीम के साथ साथ तक़रीरी व तहरीरी तरीक़ए ताअलीमो तरबियत अपनाया गया है जिस केलिए इरशादात, मलफ़ूज़ात और तसनीफात के अलावा मक्तूबात का भी सहारा लिया गया है। चुनाँचे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने भी मज़कूरा तमाम ज़राएअ इख़्तियार फरमाए हैं। तारीख़ की मुस्तनद किताबों में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के चन्द मक्तूबात भी मिलते हैं जो आप ने बिलख़ुसूस अपने अज़ीज़तरीन मुरीदो ख़लीफा हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के नाम तहरीर फरमाए हैं मगर वो ताक़ेयामत मुसाफिराने राहे हक़ केलिए मीनारए नूर की हैसियत रखते हैं।

"अस्रारुल वासिलीन" के हवाले से ज़ैल में चन्द मक्तूबात नक़्ल किए जाते हैं जो क़ारेइन केलिए यक़ीनन मुफीद साबित होंगे।

मक्तूबे अव्वल

वाक़िफे हक़ाइक़ो मआरिफ, आशिक़े रब्बुल आलमीन बिरादरम ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन को माअलूम हो कि लोगों में आक़िल तरीन वो फुक़रा हैं जिन्हों ने दुर्वेशी और नामुरादी इख़्तियार कर ली है क्यूँकि इस राह में मुराद ही नामुरादी है और नामुरादी ही मुराद है। इस के बरख़िलाफ अहले ग़फलत ने सेहत को ज़हमत और ज़हमत को सेहत समझ रखा है पस अक़्लमन्द वही है जो दुन्यावी

मफ़ाद तर्क करके फ़क्रो नामुरादी इख़्तियार करे और अपनी मुराद छोड़ कर नामुरादी से मुवाफ़क़त करे।

नामुरादी ता न गरदी बामुरादी कय रसी

पस मर्द को उस परवरदिगार से दिल लगाना चाहिए जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। अगर ख़ुदाए तआला आँख अता फरमाए तो हर जगह उस के अलावा कुछ न देखे और दोनों जहाँ में जिधर देखे वही नज़र आए। क्यूँकि हर ज़र्रए ख़ाक जहाँनुमा है अगर देखा जाए, बजुज़ शौक़े मवासलते ज़ाहिरी और क्या लिखूँ।

मक्तूबे दोम

मेरे दिली मुहिब्ब! मेरे क़ल्बी दोस्त बिरादरम ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन देहलवी अल्लाह तआला आप को दोनों जहाँ की सआदतें अता फरमाए।

बन्दए मिस्कीन मुईनुद्दीन सलामे मस्नूना के बाद अस्रारे इलाही के चन्द निकात लिखता है। ये अपने मुरीदीने सादिक़ और तालिबाने हक़ को समझा देना ताकि वो ग़लती में न पड़ें।

अज़ीज़े मन! जिस ने अल्लाह तआला को पहचान लिया वो कभी सुवाल या ख़्वाहिश या आरज़ू नहीं करता। जिस ने नहीं पहचाना वो उन की बात को नहीं समझ सकता। दूसरे ये कि हिर्सो हवा को तर्क करना चाहिए जिस ने हिर्सो हवा को तर्क किया उस ने मक़सूद हासिल कर लिया। चुनाँचे ऐसे शख़्स के लिए इरशादे बारी तआला है "व नहन्नफ स अनिल हवा फइन्नल जन न त हियल मअ्वा" जिस ने अपनी ख़्वाहिशाते नफ्सानी को रोका उस का ठिकाना बहिश्त है।

जिस दिल को अल्लाह तआला ने अपनी तरफ से फेर दिया है उसे कस्रते शहवात के कफन में लपेट कर ज़मीने नदामत में दफ्न कर दिया जाए।

एक रोज़ हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद बुस्तामी अलैहिर्रहमह ने फरमाया कि "एक शब मैं ने अल्लाह तआला को ख़्वाब में देखा। मुझ से पुछा बायज़ीद क्या चाहते हो।?

मैं ने अर्ज़ किया जो तू चाहता है। ख़िताब हुआ अच्छा जिस तरह तू मेरा है उसी तरह मैं तेरा हूँ।

हर कि गरदन नहंद रज़ा ऊ रा
मर मुरा हक़ निगाहबाँ बाशद

जो तसव्वुफ की हक़ीक़त से वाक़िफ होना चाहता है वो अपने

ऊपर आसाइश का दरवाज़ा बन्द करले फिर ज़ानुए महब्बत के बल बैठ जाए अगर ये काम कर लिया तो समझो वो अहले तसव्वुफ हो गया। तालिबे हक़ को जानो दिल से इस अम्र की ताअमील करनी चाहिए इन शाअल्लाहु तआला वस्वसए शैतान से नजात पाएगा और दोनों जहान की मुरादें हासिल करेगा।

एक रोज़ मेरे शैख़ ने फरमाया "मुईनुद्दीन! क्या तुझे माअलूम है कि साहिबे हुजूर किसे कहते हैं। साहिबे हुजूर वो है जो हर वक़्त मक़ामे उबूदियत में हो और हरएक वाक़ेआ को अल्लाह तआला की तरफ से समझे और उसी पर राज़ी रहे बल्कि उसे रहमत ही ख़याल करे और तमाम इबादतों का मक़सद भी यही है जिसे ये हासिल हो वो पूरी दुन्या का बादशाह है बल्कि तमाम बादशाह उस के मुहताज हैं।

एक रोज़ मेरे शैख़ ने मुझे मुख़ातब करके फरमाया कि बाज़ दुर्वेश कहते हैं कि जब तालिब कमाल हासिल कर लेता है तो उसे घबराहट नहीं रहती ये ग़लत है। दूसरे जो ये कहते हैं कि इबादत करना भी उस केलिए ज़रूरी नहीं होता ये भी ग़लत है क्यूँकि हुजूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हमेशा इबादत, बन्दगी और उबूदियत में सर बसुजूद रहे बावुजूद कमाले बन्दगी के। आख़िर ये फरमाया करते थे "मा अबद्ना हक़्क़ा इबादतिका" हम ने तेरी ऐसी इबादत नहीं की जैसा कि हक़ था याअनी कमा हक़्क़ुहू तेरी इबादत नहीं कर सकते। और निहायत आजिज़ी से विर्दे ज़बान था अश्हदु अल्ला इला ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू" मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के सिवा और कोई माअबूद नहीं और ये कि मुहम्मद उस का बन्दा और भेजा हुआ है।

यक़ीन जानो कि जब आरिफ कमालियत का दर्जा हासिल करलेता है तो उस वक़्त कमाल दर्जे की रियाज़त याअनी नमाज़ निहायत सिद्क़े दिल से अदा करता है उसी से हुजूरी व आगाही ज़ियादा हासिल होती है बल्कि ख़ुसूसी मेअराज यही नमाज़ है जब कोई शख़्स ये माअलूम करके सिद्क़े दिल से काम लेता है तो उसे इतनी प्यास महसूस होती है गोया उस ने आग के कई प्याले पी रखे हों जूँ जूँ ऐसे प्याले पिएगा प्यास का ग़लबा बढ़ता रहेगा इस लिए कि जमाले लामुतनाही की इन्तेहा नहीं उस वक़्त उस का सुकून बेक़रारी और बेआरामी में बदल जाता है और ये कैफियत उस वक़्त तक क़ाइम रहती है जब तक लिक़ाए इलाही

से मुशर्रफ न हो जाए। वस्सलाम

मक्तूबे सोम

दर्दमन्द तालिबे शौक़, दीदारे इलाही के आरज़ूमन्द, दुर्वेशे जफाकश मेरे भाई ख़्वाजा कुतबुद्दीन अल्लाह तआला दोनों जहान में आप को सआदत नसीब करे।

सलामे मस्नूना के बाद ग़रज़े तहरीर ये कि एक रोज़ हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़ की ख़िदमत में ये ख़ाकसार, ख़्वाजा नजमुद्दीन सुग़रा और ख़्वाजा मुहम्मद तारिक हाज़िर थे कि इतने में एक शख़्स ने हाज़िरे ख़िदमत होकर ख़्वाजा साहब से पूछा कि "किसी शख़्स को क़ुर्बे इलाही हासिल होगया है कि नहीं ये कैसे माअलूम हो सकता है।?"

ख़्वाजा साहब ने फरमाया "नेक अमलों की तौफीक़ बड़ी अच्छी शनाख़्त है यक़ीन जानो कि जिस शख़्स को नेक कामों की तौफीक़ मिल गई उस केलिए क़ुर्बे ख़ुदावन्दी का दरवाज़ा खुल गया है"..........फिर आबदीदा होकर फरमाया कि" एक शख़्स के पास एक लौंडी थी जो आधी रात में उठकर वुज़ू करके दो रक्अत नमाज़ पढ़ती और शुक्रे हक़ बजा लाती और हाथ उठाकर दुआ करती कि परवरदिगार मैं तेरा क़ुर्ब हासिल कर चुकी हूँ मुझे अपने से अब दूर न रखना।"

उस लौंडी के आक़ा ने ये माजरा देख और सुन कर उस से पूछा कि तुम्हें कैसे माअलूम हुआ कि तुम्हें क़ुर्बे इलाही हासिल है। उस ने कहा मुझे यूँ माअलूम है कि उस ने मुझे आधी रात के वक़्त जाग कर दो रक्अत नमाज़ पढ़ने की तौफीक़ दे रखी है इस लिए मैं जानती हूँ कि मुझे क़ुर्ब हासिल है।

आक़ा ने कहा "लौंडी जा मैं ने तुझे आज़ाद किया।"

पस इन्सान को दिन रात इबादते इलाही में मशग़ूल रहना चाहिए ताकि उस का नाम नेक लोगों के दफ्तर में दर्ज हो जाए और नफ्सो शैतान की क़ैद से बच जाए।

मक्तूबे चहारम

"अल्लाहुस्समद" के अस्रार से वाकिफ "लम यलिद व लम यूलद" के अनवार के माहिर मेरे भाई कुतबुद्दीन! अल्लाह तआला आप के मदारिज को ज़ियादा करे। फक़ीरे पुरतक़्सीर मुईनुद्दीन संजरी की तरफ से मसर्रतो इंबेसात आमेज़ और उंसो महब्बत

अंग्रेज़ सलाम पहुँचे। मक़सूद ये है कि ता दमे तहरीर सेहते ज़ाहिरी के सबब मशकूर हूँ अल्लाह तआला आप को सवाबे दारैन अता फरमाए। भाई! मेरे शैख़ ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहू फ़रमाते हैं कि "सिवाए अहले माअरिफत के किसी और को इश्क़ के रुमूज़ से वाक़िफ नहीं करना चाहिए। जब ख़्वाजा शैख़ साअदी ने आँजनाब से पूछा कि अहले माअरिफत को क्यूँकर पहचान सकते हैं। तो फरमाया कि अहले माअरिफत की अलामत तर्क है जिस में तर्क है यक़ीनन वो अहले माअरिफत है और उसे खुदाशनासी का दर्जा हासिल है। और जिस में तर्क नहीं उस में माअरिफते हक़ की बू भी नहीं। ये अच्छी तरह यक़ीन करलो कि कलिमए शहादत और नफियो इस्बात हक़ तआला की माअरिफत है। मालो मरतबा बड़े भारी बुत हैं उन्हों ने बहुत से लोगों को सीधी राह से गुमराह किया और कर रहे हैं, ये माअबूदे ख़लाइक़ बन रहे हैं बहुत से लोग जाहो माल की परस्तिश करते हैं पस जिस ने मालो जाह की महब्बत को दिल से निकाल दिया उस ने गोया पूरी नफी कर दी और जिसे हक़ तआला की माअरिफत हासिल होगई उस ने पूरा पूरा इस्बात कर लिया और ये बात ला इला ह इल्लल्लाह कहने और उस पर अमल करने से हासिल होती है। पस जिस ने कलिमए शहादत नहीं पढ़ा उसे ख़ुदा शनासी हासिल नहीं। वस्सलाम

मक्तूबे पंजुम

वासिलों के बर्गुज़ीदा, रब्बुल आलमीन के आशिक़ मेरे भाई ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन देहलवी! माअबूदे हक़ीक़ी की पनाह में रहकर शादकाम रहो। एक रोज़ ये दुआगो हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक शख़्स ने आकर अर्ज़ किया "मैं ने मुख़्तलिफ उलूम हासिल किए, बहुत इबादतो रियाज़त की मगर मक़सद हासिल नहीं हुआ।"

ख़्वाजा उस्मान ने फरमाया "तुम्हें सिर्फ एक बात पर अमल करना चाहिए आलिम भी होजाओगे और ज़ाहिद भी। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नै फरमाया है "तर्कुदुन्या रअसु कुल्लि इबादतिन व हुब्बुदुन्या रअसु कुल्लि ख़तीअतिन" दुन्या को तर्क कर देना तमाम इबादतों की जड़ और दुन्या की महब्बत तमाम ख़ताओं की जड़ है। अगर तुम इस हदीस पर अमल करलोगे तो तुम्हें फिर किसी और इल्म की ज़रूरत न रहेगी। याअनी "अल्इल्मु

नुक्ततुन" गो इल्म एक नुक्ता है उस का हासिल करना आसान है मगर उस पर अमल करना मुश्किल। यक़ीन जानो तर्क उस वक़्त तक हासिल नहीं हो सकता जब तक महब्बत बदर्जए कमाल न हो और महब्बत उस वक़्त पैदा होती है जब अल्लाह तआला हिदायत करे और हक़ तआला की हिदायत के बग़ैर मक़सूद हासिल नहीं होसकता "मन हदल्लाहु फहुवल मुहतद" जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे वही हिदायत पा सकता है।

पस इन्सान को लाज़िम है कि तक़ाज़ाए इलाही को मद्दे नज़र रखते हुए अपना क़ीमती और अज़ीज़ वक़्त दुन्यावी ख़्वाहिशात की तक्मील में ज़ाएअ न करे बल्कि वक़्त को ग़नीमत समझकर फ़क़्रो फाक़ा में ज़िन्दगी गुज़ारे, इज्ज़ो इन्केसारी से पेश आए, अपने गुनाहों पर एहसासे नदामत के मारे सर न उठाए। हर हालत में तज़र्रोओ ज़ारी से पेश आए क्यूँकि बन्दगी और इबादत में सब से अच्छा काम खाकसारी व इन्केसारी है।

हज़रत हातिमे असम रहमतुल्लाहि तआला अलैहि हज़रत ख़्वाजा शफीक़ बलख़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के शागिर्दो मुरीद थे एक रोज़ शैख़ ने पूछा "कितने अर्से से तुम मेरी महबबतो ख़िदमत में मस्रूफ हो और मेरी बातें सुन रहे हो।?"

अर्ज़ किया तीस साल से। पूछा "फिर इस अर्से में तुम्हें क्या हासिल हुआ और तुम ने क्या फाइदा उठाया।"

अर्ज़ किया "आठ फाइदे उठाए। पूछा वो क्या हैं क्या पहले ये फाइदे हासिल न थे। अर्ज़ किया नहीं फिर कहा सच तो ये है कि उन से ज़ियादा की अब मुझे ज़रूरत ही नहीं। फरमाया इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन" हातिम मैं ने सारी उम्र तेरे काम में सर्फ कर दी मैं भी नहीं चाहता कि तू इस से ज़ियादा हासिल करे। अर्ज़ ~~किया~~ मेरे लिए इतना ही इल्म काफी है क्यूँकि उन्हीं आठ फवाइद में दोनों जहाँ की नजात पोशीदा है। फरमाया अच्छा उन्हें बयान करो। अर्ज़ किया। :

पहला फाइदा ये है कि जब मैं ने ख़िलक़त को ग़ौर से देखा तो माअलूम हुआ कि हर शख़्स ने किसी न किसी को अपना महबूबो माअशूक़ क़रार दे रखा है। वो महबूबो माअशूक़ इस क़िस्म के हैं कि बाज़ मरज़े मौत तक उन के साथ रहते हैं, बाज़ मरने तक, बाज़ लबे गोर तक उस के बाद कोई भी साथ नहीं रहता कोई ऐसा नहीं कि इन्सान के साथ क़ब्र में जाकर उस का

ग़मख़्वार और उस की क़ब्र का चराग़ होसके। ये देख कर मैं ने अपने दिल में सोचा कि महबूब वही अच्छा है जो इन्सान के साथ क़ब्र में जाए और वहाँ उस की वहशतो परीशानी को दूर करदे, क़ेयामत की मन्ज़िलें तय करादे। मुझे माअलूम हुआ कि इन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ महबूब सिर्फ़ अअ्माले सालेह हैं पस मैं ने उन्हें अपना महबूब बनाया और उन्हें अपने लिए हुज्जत किया ताकि क़ब्र में भी मेरी ग़मख़्वारी करें और हर एक मन्ज़िल पर मेरे साथ रहें और मुझे किसी मन्ज़िल पर तन्हा व बेसहारा न छोड़ें। ख़्वाजा शफ़ीक़ बलख़ी ने फ़रमाया हातिम! तुम ने बहुत अच्छा किया।

दूसरा फ़ाइदा ये है कि जब मैं ने लोगों को ग़ौर से देखा तो माअलूम हुआ कि सब के सब हिर्सो हवा के पैरो और नफ़्स के ग़ुलाम हैं फिर मैं ने इस आयत पर ग़ौर किया "व अम्मा मन ख़ा फ मक़ा म रब्बिही व नँहन्नफ स अनिल हवा फइन्नल जन न त हियल मअ्वा" जिस ने अल्लाह तआला से डर कर नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोका उस का ठिकाना जन्नत है तो यक़ीन हो गया कि क़ुरआन शरीफ़ सच्चा है इस लिए मैं नफ़्स की मुख़ालफ़त पर कमरबस्ता होगया और उसे मुजाहदे की भट्टी में रख दिया उस की एक आरज़ू भी पूरी न की सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादतो इताअत से मुझे आराम हासिल होता रहा। ख़्वाजा शफ़ीक़ बलख़ी ने फ़रमाया "अल्लाह तआला तुझे इस में बरकत दे तू ने ख़ूब किया और अच्छा किया।"

तीसरा फ़ाइदा ये है कि जब मैं ने लोगों के हालात का बग़ौर मुशाहदा किया तो देखा कि हर शख़्स दुन्या केलिए कोशिश करता है, रंजो मुसीबत बर्दाश्त करता है तब कहीं दुन्यावी हुक्काम से कुछ हासिल कर सकता है और उस पर बड़ा ख़ुश व ख़ुर्रम रहता है बाद अज़ाँ मैं ने इस आयत पर ग़ौर किया "मा इन्दकुम यन्फ़ुदु व मा इन्दल्लाहि बाक़" जो कुछ तुम्हारे पास है वो ख़त्म हो जाएगा और जो कुछ अल्लाह के यहाँ है वही बाक़ी रहेगा। तो जो कुछ मैं ने जमा किया था सब राहे ख़ुदा में सर्फ़ कर दिया और अपने आप को अल्लाह तआला के सुपुर्द कर दिया ताकि बारगाहे इलाही में बाक़ी रहे और आख़िरत में मेरा तोशा और वद्रका बने। ख़्वाजा शफ़ीक़ बलख़ी ने फ़रमाया "अल्लाह तआला तुझे बरकत दे तू ने बहुत अच्छा किया।"

चौथा फ़ाइदा ये कि मुझे ग़ौरो ख़ौज़ करने के बाद माअलूम हुआ कि बहुत से लोग क़ौमों की कस्रत को इन्सान की बुज़ुर्गी, इज़्ज़त और शराफ़त समझकर वो उस पर फ़ख़्र करते हैं और बाज़ लोग माल और औलाद को इज़्ज़तो अज़मत का अहम सबब मान कर उन को सरमायए इफ़्तेख़ार समझ बैठे हैं। फिर मैं ने आयते क़ुरआनी "इन न अक र म कुम इन्दल्लाहि अत्क़ाकुम" तुम में से अल्लाह तआला के नज़दीक वही सब से ज़ियादा मुअज़्ज़ज़ समझा जाएगा जो सब से ज़ियादा मुत्तक़ी होगा। तो माअलूम हुआ किं यही बेहतर और हक़ है और आम लोगों का ख़याल सरासर ग़लत है। इस लिए मैं ने तक़्वा इख़्तियार किया ताकि बारगाहे इलाही का मुकर्रम बन जाऊँ। ख़्वाजा शफ़ीक़ अलैहिर्रहमह ने फ़रमाया "तू ने बहूत अच्छा किया।"

पाँचवाँ फ़ाइदा ये कि मैं ने देखा कि लोग एक दूसरे को हसद की वजह से बुराई से याद करते हैं और मालो मरतबा और इल्म में एक दूसरे से हसद करते हैं तो मैं ने क़ुरआन की आयत "व क़स्समना मई श त हुम फिल हयातिद्दुन्या" हम ने उन में दुन्यावी ज़िन्दगी केलिए रोज़ी वग़ैरह तक़्सीम की। इस से मैं ने यह समझा कि जब रोज़े अज़ल से उन के हिस्से में ये चीज़ आचुकी है और किसी का इस में इख़्तियार नहीं तो फिर हसद बे फ़ाइदा है तब से मैं ने हसद करना छोड़ दिया और हर एक से सुल्ह इख़्तियार की। ख़्वाजा शफ़ीक़ बलख़ी अलैहिर्रहमह ने फ़रमाया "तू ने बहुत अच्छा किया"

छटा फ़ाइदा ये कि जब मैं ने देखा कि बाज़ लोग आपस में दुशमनी रखते हैं और माअमूली बुन्यादों पर एक दूसरे से पुरख़ाश रखते हैं फिर मैं ने "इन्नश्शैता न लकुमा अदुव्वुम्मुबीन" (बेशक शैतान तुम्हारा खुला हुआ दुशमन है) पर तवज्जुह दी तो मैं ने समझा कि वाक़ई हमारा दुशमने असली तो शैतान है। अब मैं शैतान की पैरवी करता हूँ न फ़रमाँ बर्दारी बल्कि अल्लाह तआला के अहकाम बजा लाता हूँ, उसी की बन्दगी करता हूँ और यही ठीक है चुनाँचे ख़ुद अल्लाह तआला ने फ़रमाया है "अलम अअ्हद इलैकुम या बनी आ द म अन तअ्बुदश्शैता न अन्नहू लकुम अदुव्वुम्मुबीन व अनिअ्बुदूनी हाज़ा सिरातुम्मुस्तक़ीम" ऐ बनी आदम! क्या मैं ने तुम से अहद नही लिया कि तुम शैतान की पैरवी व

परस्तिश न करना क्यूँकि वह तुम्हारा खुला दुशमन है अगर तुम मेरी परस्तिश करो तो यही सीधा रास्ता है। इस लिए मैं ने शैतान से दुशमनी और अल्लाह तआला से दोस्ती करली। ख़्वाजा शफ़ीक़ बलख़ी ने फरमाया "बहुत ख़ूब किया"

सातवाँ फाइदा ये है कि मैं ने देखा कि हर शख़्स अपनी रोज़ी और मआश केलिए रात दिन कोशिश करता है यहाँतक कि हरामो मुश्तबह रोज़ी हासिल करने से भी दरेग़ नहीं करता। इस सिलसिले में इज़्ज़तो ज़िल्लत का भी ख़याल नहीं करता जब्कि कुरआने पाक में अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी है कि "व मा मिन दाब्बतिन फिल अर्दि इल्ला अलल्लहि रिज़्क़ुहा" (रूए ज़मीन पर कोई ऐसा जानदार नहीं जिस का रिज़्क़ अल्लाह तआला के ज़िम्मे न हो) तो मैं समझ गया कि उस का फरमान हक़ है मैं भी एक जानदार मख़लूक़ हूँ तब से मैं ने रोज़ी की फिक्र छोड़ कर अल्लाह तआला की इबादतो इताअत में मशग़ूल होगया क्यूँकि मुझे यक़ीन है कि मेरी रोज़ी वो मुझे ज़रूर पहुँचाएगा कि वो इस बात का ज़ामिन है। ख़्वाजा शफ़ीक़ बलख़ी ने फरमाया "तू ने बहुत अच्छा किया अब आठवाँ फाइदा बयान कर"

आठवाँ फाइदा ये है कि मैं ने महसूस किया है कि हर शख़्स को किसी न किसी चीज़ पर भरोसा है बाज़ को सोने चाँदी पर और बाज़ को मुल्को माल पर। फिर मैं ने इस आयत पर ग़ौर किया "व मैंय्यतवक्कलो अलल्लहि फहु व हसबुह" जो शख़्स अल्लाह तआला पर भरोसा करता है तो अल्लाह तआला ही उस केलिए काफी है फिर उस वक़्त से मैं ने सारे सहारे छोड़ कर सिर्फ अल्लहा तआला पर तवक्कुल कर लिया। बसअब वही मेरे लिए काफी है और मेरा उम्दा वकील भी।

ख़्वाजा शफ़ीक़ बलख़ी अलैहिर्रहमह ने फरमाया "हातिम! अल्लाह तआला तुम्हें इन बातों की तौफ़ीक़ दे मैं ने तौरैत, इंजील, ज़बूर और कुरआन का गहराई से मुतालआ किया तो इन चारों किताबों से यही आठ फवाइद हासिल हुए जो इन पर अमल करे तो गोया वो इन चारों किताबों पर आमिल है। इस हिकायत से तुझे मालूम होगया कि ज़ियादा से ज़ियादा इल्म की नहीं अमल की ज़रूरत है। वस्सलाम

मक्तूबे शशुम

मख़्ज़ने अस्रारे यज़्दानी, मअदने फ़ुयूज़े सुब्हानी मेरे भाई ख़्वाजा कुतबुद्दीन अल्लाह तआला आप को सलामत रखे।

एक रोज़ मेरे शैख़ ने नफियो इस्बात के हुक्म से मुतअल्लिक़ क्या ख़ूब फरमाया कि नफी अपने आप को न देखना और इस्बात अल्लाह तआला जल्ल जलालुहू को देखना है क्यूँकि कोई ख़ुदबीं ख़ुदा बीं नहीं हो सकता पस नफी की नफी करने वाला होना चाहिए वरना नफी का कुछ फाइदा नहीं अगर ये तसव्वुर करलें कि हस्ती सिर्फ अल्लाह तआला की हस्ती है तो मतलब हासिल होजाता है।

वाज़ेह हो कि कलिमए शहादत, नमाज़ और रोज़ा वग़ैरह की ज़ाहिरी व बातिनी दोनों सूरतें हैं उन के बातिन को छोड़ कर सिर्फ ज़ाहिरी सूरतों पर क़नाअत कर लेना फुज़ूल है। वो शख़्स बड़ा ही अहमक़ है जो उन की हक़ीक़तों तक नहीं पहुँचता फिर फरमाया कि ज़ाते बारी तआला हमेशा से है और हमेशा रहेगी। सालिक इब्तेदा में नाबीना होता है जब हक़ की तरफ से उसे बीनाई हासिल हो जाती है तब उसे देखता और सुनता है अपने आप को फरामोश कर देता है जब ऐसी सूरत होजाए तो वासिल भी हमेशा केलिए ज़िन्दा होजाता है। वस्सलाम

मक्तूबे हफ्तुम

आरिफे मआरिफ, हक़आगाह, आशिक़ुल्लाह भाई ख़्वाजा कुतबुद्दीन औशी अल्लह तआला आप के फक़्र को ज़ियादा करे दुआगो की तरफ से महब्बत भरे सलाम के बाद मक्शूफ़ राए माअरिफत पैरा हो।

अज़ीज़े मन! अपने मुरीदों को ज़रूर बतादेना कि फक़ीरे मुर्शिदे कामिल से क्या मुराद है, उस की क्या अलामत है और उसे कैसे पहचाना जासकता है।

मशाइख़े तरीक़त क़ुद्दिसत अस्रारुहुम ने फरमाया है "अल्फक़्रु मा ला यहताजु इला कुल्लि शैअ" फक़ीर उस शख़्स को कहते हैं जो तमाम ज़रूरियात से फारिग़ हो और उस के बाक़ी रहने वाले जमाल के सिवा और किसी चीज़ का तालिब न हो क्यूँकि तमाम मौजूदात उस के बाक़ी रहने वाले जमाल का आईना और मज़्हर हैं

इस वास्ते वो उन सब में अपना मक़्सूद देखता है।

बाज़ बुज़ुर्गों ने इस की तशरीह यूँ फरमाई है कि "कामिल फक़ीर उसे कहते हैं कि जिस के दिल से हक़ तआला के सिवा सब कुछ दूर हो और हक़ तआला के सिवा उस का कोई मतलूबो मक़्सूद न हो जब मासिवल्लाह दिल से दूर होजए तो मक़्सद हासिल होजाता है।

पस तालिब को हमेशा मतलूबो मक़्सूद केलिए कोशाँ रहनास चाहिए। फिर ये माअलूम करलेना चाहिए कि मतलूबो मक़्सूद क्या है तो जान लो कि मक़्सूद यही दर्द व सोज़ है ख़्वाह हक़ीक़ी हो या मजाज़ी। यहाँ सोज़े मजाज़ी से इब्तेदाई अहकामे शरीअत मुराद हैं। वस्सलाम।

मक्तूबे हश्तुम

मुहिब्बे मन हमराज़े अहले यक़ीं बिरादराम ख़्वाजा कुतबुद्दीन देहलवी रब्बुल आलमीन हर काम में तुम्हारी रहनुमाई फरमाए। अज़ फक़ीर मुईनुद्दीन "मन अरफल्ला ह ला यक़ूलुल्लाह व मैंय्यक़ूलुल्लाह मा अरफल्लाह" याअनी जिसे हक़ तआला की माअरिफत हासिल होजाती है वो अललाह अल्लाह नहीं कहता फिरता और जो कहता फिरता है उसे अभी माअरिफत ही मयस्सर नहीं। बमिस्दाक़ि "मन अ र फ रब्बहू फक़द कल ल लिसा नहू व क़ त अ अम्रहू" याअनी जिस को अपने रब की माअरिफत हासिल होगई वो गूंगा और लंगड़ा होगया आरिफे कामिल की हालत मक़ामे याद से भी गुज़र जाती है क्यूँकि याद भी एक क़िस्म की दुई है और दुई आरिफों के नज़दीक नक़्स है इरशादे खुदावन्दी है व हु व मअकुम ऐनमा कुन्तुम याअनी तुम जहाँ भी हो खुदा तुम्हारे साथ है।

आरिफ सहीह माअनों में शहंशाह होता है उसे खुदाए क़ादिरो क़ैय्यूम के सिवा किसी से उम्मीद होती है और न ख़ौफ। ऐसे ही लोगों केलिए इरशादे बारी तआला है "अला इन न औलिा अल्लाहि ला खाफुन अलैहिम व ला हुम यहज़नून" याअनी औलिया अल्लाह को न किसी का ख़ौफ होता है और न कोई ग़म। अल्लाह तआला बन्दे के दिल में है और दिल कालिबे इन्सान में। मगर दिल दो क़िस्म का है एक मजाज़ी दूसरा हक़ीक़ी।

हक़ीक़ी दिल वो है जो न दाहिनी जानिब है न बाएं जानिब, न ऊपर की तरफ है न नीचे की तरफ, न दूर है न नज़दीक खुलासा ये कि उस हक़ीक़ी दिल की पहचान आसान नहीं सिर्फ मुक़र्रबाने खुदा उसे जानते और पहचानते हैं। मोमिने कामिल का दिल दर हक़ीक़त अर्शे इलाही होता है "क़ल्बुल मोमिने अर्शुल्लहि तआला"

क़ुर्बो हुज़ूरी बग़ैर सुहबते मुर्शिदे कामिल हासिल नहीं हो सकती, आरिफे कामिल और तालिबे सादिक़ सुवालो जवाब नहीं किया करते बल्कि ख़ामोश और बाअदब रहते हैं। मोमिन के दिल में हर वक़्त ज़िक्रे ख़फी मौजूद रहता है इस लिए कि उस हयाते जाविदानी हासिल होजाती है मगर आम मुसलमानों का दिल ज़िक्रे ख़फी से ग़ाफिल होता है इस लिए वो मुर्दा होते हैं।

कलिमा की हक़ीक़त

लोग ला इला ह इल्लल्लाह कहते तो हैं मगर उन्हें माअलूम नहीं कि नीस्त और हस्त से क्या मुराद है, नफी किस की हो और इस्बात किस का हो, कलिमा के माअना ये हैं कि ज़ाते वहदहू ला शरीक के सिवा दुन्या में कोई मौजूद नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) मज़्हरे खुदा हैं। पस तालिब को चाहिए कि ख़याले ग़ैर न आने दे और ज़ाते मुत्लक़ को हर जगह मौजूद समझे। चुनाँचे इरशादे बारी तआला है "फ ऐनमा तुवल्लू फसम म वज्हुल्लाह" जिधर देखो उधर ही ज़ुहूरे एज़दी है।

नमाज़ की हक़ीक़त

नमाज़ दो क़िस्म की होती है एक नमाज़ उलमा, फुक़हा और ज़ाहिदों की होती है जो सिर्फ क़ौलो फेअ्ल तक महदूद होती है जिस से विसाले इलाही मयस्सर नहीं होता उस की रसाई सिर्फ आलमे मलकूते नफ्सानी तक है। दूसरी नमाज़ अंबिया, औलिया और खुलफा की है जो हुज़ूरिए क़ल्ब से अदा की जाती है। उस का सम्रा विसाले इलाही है और उस की रसाई आलमे जबरूते रहमानी तक है चुनाँचे हदीस में आया है अल अंबियाउ वल औलियाउ युसल्लू न फी क़ुलूबिहिम व ऐनमा" अंबिया और औलिया हमेशा हुज़ूरिए क़ल्ब से नमाज़ अदा करते हैं।

अंबिया व औलिया हमेशा ज़िक्रे ख़फी में रहते हैं जैसा कि इरशादे नबवी है ज़िक्रुल्लिसानि तअल्लुक़ुहू व ज़िक्रुल क़ल्बि

वस्वसुहू ज़िक्रुर्रुहि मुशाहिदुहू व ज़िक्रुल ख़फ़िय्यि व ऐनमा" याअनी ज़बानी ज़िक्र तअल्लुका है, दिली ज़िक्र एक किस्म का वस्वसा, रूही ज़िक्र मुशाहदए इलाही का मौजिब है और ज़िक्रे ख़फ़ी हमेशा हुआ करता है ज़िक्रे ख़फ़ी और नमाज़े हक़ीक़ी तर्के वुजूद है।

रोज़े की हक़ीक़त

हक़ीक़ी रोज़े की ताअरीफ ये है कि इन्सान अपने दिल को तमाम दीनी व दुन्यावी ख़्वाहिशात से मुबर्रा रखे याअनी जन्नत और दुन्यावी जाहो माल की ख़्वाहिशों से अलग थलग रहे। ग़ैरुल्लाह का ख़याल करना और बहिश्त की हवस वग़ैरह हक़ीक़ी रोज़े को तोड़ने वाली चीज़ें हैं। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि "रग़िबतु अम्मा दूनल्लाह" याअनी अल्लाह तआला के सिवा मैं ने किसी की ख़्वाहिश नहीं की। दूसरे मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया "असूमु बिरूयतिही व अफ्तरु बिरूयतिही" याअनी हक़ीक़ी रोज़े की इब्तेदा भी दीदारे इलाही से है और इन्तेहा भी दीदारे इलाही पर ही होगी। याअनी रोज़े की इब्तेदा माअरिफ़ते हक़ तआला है और इफ्तार याअनी इन्तेहा क़ेयामत में दीदारे इलाही है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीसे पाक के मुताबिक़ रोज़ादार केलिए दो ख़ुशियाँ हैं एक इफ्तार के वक़्त दूसरी दीदारे इलाही के वक़्त। अवाम के रोज़े में पहले रोज़ा है और आख़िर में इफ्तार लेकिन हक़ीक़ी रोज़े में पहले इफ्तार है आख़िर में रोज़ा। रोज़ए हक़ीक़ी केलिए इफ्तार की शर्त नहीं लेकिन इफ्तार केलिए रोज़ा शर्त है।

तमाम लोग जो रोज़ा रखते हैं उस में खाने पीने वग़ैरह से इज्तेनाब करते हैं मगर यह हक़ीक़ी रोज़ा नहीं बल्कि मजाज़ी है इस रोज़े में ग़ैरुल्लाह का तर्क नहीं होता और ख़तराते नफ़्सानी व इनसानी हाइल रहते हैं ऐसे रोज़े से ये फाइदा हासिल होता है कि इनसान ग़रीबों और नादारों की भूक प्यास की तकलीफ का एहसास करके उन की इमदाद कर सके।

हदीस शरीफ में आया है "इन न औलियाई तह त क़बाई ला यअ्रिफ़ुहुम ग़ैरी" याअनी मेरे औलिया मेरी क़बाए रहमत के साए में हैं उन के मरतबे को मैं ही जानता हूँ और कोई नहीं जानता।

सालिकाने ग़ैर मजज़ूब बजुज़ सुहबते मुर्शिदे कामिल माअरिफ़ते इलाही हासिल नहीं कर सकते न बग़ैर इसलाहे बातिन

उन की आलमे जबरूत तक रसाई हो सकती है वो आलमे नासूतो मलकूत ही में भटकते रहते हैं ये लोग शहवत परस्त और शुहरत पसन्द होते हैं।

जो उलमा, फ़ुक़हा और सालिकीन ग़ैर मजज़ूब होते हैं और किसी मुर्शिद के फ़ैज़े सुहबत से मुस्तफ़ीज़ नहीं होते वो जज़्बे अस्रारे इलाही से बे बहरा होते हैं गो वो जुब्बओ दस्तार और जामए सूफ़िया में मलबूस होते हैं लेकिन बबातिन वो हिर्सो हवा और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी में गिरफ्तार होते हैं उस जामए फ़क़ीरी से उन का मक़सद ख़ुदा परस्ती नहीं होता बल्कि वो सरासर तालिबे जाहो माल होते हैं उन के कलिमा, रोज़ा और नमाज़ की कोई हक़ीक़त नहीं

जो शख़्स सालिकों के ज़ुमरे में दाख़िल होजाए उस पर लाज़िम है कि अपनी हसती और ख़ुदी को मिटादे। जो लोग अपनी ख़ुदी को नहीं मिटाते वो ख़्वाह सूफ़ियाना लिबास में ही मलबूस क्यूँ न हों वो मन्ज़िले इरफ़ान में क़दम नहीं रख सकते।

ज़कात की हक़ीक़त

अज़ रूए शरअ् दो सौ दीनार में से पाँच दीनार ज़कात के अदा करना फ़र्ज़ है मगर अहले तरीक़त के नज़दीक दो सौ में से पाँच रखना और बक़िया सब ज़कात में देदेना लाज़िम हैं। ज़कात आज़ाद पर फ़र्ज़ है ग़ुलाम पर नहीं। जब तक बन्दा नफ़्स की बन्दगी से नजात न पाले उस वक़्त तक आज़ादों के ज़ुमरे में शामिल नहीं। और जब तक आज़ाद न हो ज़कात फ़र्ज़ नहीं। बन्दए नफ़्स को सब से पहले नफ़्स की बन्दगी से आज़ादी हासिल करनी चाहिए ताकि वो हक़ीक़ी ज़कात अदा करने के क़ाबिल होजाए।। ज़कात आक़िल बालिग़ पर फ़र्ज़ है, दीवाना और नाबालिग़ पर फ़र्ज़ नहीं। पस जो शख़्स ग़फ़लत और नफ़सानियत में मुबतला हो आरिफ़ों के नज़दीक वो आक़िलो बालिग़ नहीं। पस ज़रूरी है कि पहले उस से नजात हासिल करे ताकि हक़ीक़ी ज़कात अदा करने के क़ाबिल होजाए।

गंजे हक़ीक़ी सिर्रे रुबूबियत है आरिफ़ों के दिल उस के ख़ज़ाने होते हैं उन आरिफ़ों पर लाज़िम है कि वो गंजीनए हक़ीक़ी में से अस्रारे इलाही की ज़कात गुमराहों और नादानों को अता करें।

हज की हक़ीक़त

इनसान का दिल ख़ानए काअ्बा है जैसा कि इरशादे नबवी है "क़ल्बुल इनसानि बैतुर्रहमान" याअनी इनसान का दिल ख़ुदा का घर है बल्कि दूसरी जगह इरशाद है "क़ल्बुलमूमिनी न अर्शुल्लाह" याअनी मूमिनों का दिल अर्शे इलाही है।

इनसान का वुजूद एक चहारदीवारी की तरह है अगर उस में से शक्को शुबह और ग़ैरुल्लाह का परदा दूर कर दिया जाए तो दिल के सहन में ज़ाते हक़ तआला का जलवा नज़र आएगा यही हक़ीक़ी हज्जे काअबा है।

हक़ीक़ी हज से मक़सद ये है कि इनसान अपनी ख़ुदी को उस तरह मिटादे कि ज़ाहिरो बातिन एक साथ पाको पांकीज़ा हो जाएं और दिल सिफ़ाते इलाही से मुत्तसिफ़ हो जाए।

फ़ना इश्क़ से हासिल है जो शख़्स अल्लाह तआला का आशिक़ हो जाए वो फ़ना फ़िल्लाह हो जाता है और जो फ़ना फ़िल्लाह हो जाता है वो ज़ाते हक़ का मज़हर हो जाता है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है "व फ़ी अन्फ़ुसिकुम अ फ़ ला तुब्सिरून" याअनी ऐ लोगो! मैं तुम्हारे अंदर हूँ तुम मुझे क्यूँ नहीं देखते। चूँकि ख़ुदाए तआला दिल में रहता है इस लिए दिल अर्शे इलाही और बैतुल्लाह है। ख़ाक के पुतले में वही बोलने वाला, सुनने वाला और देखने वाला है वही रहनुमा और वही राहगीर है।

पैग़म्बरों की मिसाल अतिब्बा जैसी है जो तरह तरह के मरीज़ों को मरज़ के मुताबिक़ दवा देते हैं उसी तरह पैग़म्बर भी रूहानी इस्तेअ्दाद और बातिनी अमराज़ के मुताबिक़ दवा देते हैं,माअरिफ़त अता फ़रमाते हैं ताकि मरीज़ रूहानी शिफ़ाए कुल्ली हासिल करके आरिफ़े ख़ुदा हो जाए।

अवाम के गरोह में पहला आलिम का गरोह है। ये लोग अरबाबे ज़ाहिर कहलाते हैं और राहे शरीअत पर चलते हैं। इश्क़े इलाही की चार सीढ़ियों में से पहली सीढ़ी पर ये गामज़न होते हैं अगर उसी हालत में ये मर जाएं तो ज़ाहिर परस्ती में मरेंगे।

दूसरा गरोह ख़वासुल अवाम का है। ये गरोह रूहानियत की तरफ़ मुतवज्जेह तो होता है लेकिन चूँकि इस गरोह के लोग रुमूज़े बातिनी से नाबलद होते हैं इस लिए कभी दुन्या के तालिब होते हैं और कभी दीन के । उन की बातिनी आँखें पूरे तौर पर नूरे

बातिनी से मुनव्वर नहीं होतीं इस गरोह को अहले तरीक़त कहते हैं।

तीसरा गरोह ख़वास का है ये अहले हक़ीक़त कहलाते हैं।

चौथा गरोह अख़स्सुल ख़वास का है उन्हें अहले माअरिफ़त कहते हैं असरारे इलाही की नेअ्मते उज़्मा ना अहल अवामुन्नास को नहीं दी जाती।

तमाम अश्या मज़हरे सिफ़ाते इलाही हैं अलबत्ता ज़ुहूर की सिफ़ात मुख़्तलिफ़ हैं जैसा कि मतलब एक होता है मगर मुख़्तलिफ़ अलफ़ाज़ और जुमलों से ज़ाहिर किया जाता है उसी तरह ज़ात सिर्फ़ एक ही है लेकिन उस के मज़हर मुख़्तलिफ़ हैं चुनाँचे इरशादे ख़ुदावन्दी है "इन्नल्ला ह अला कुल्लि शैइम्मुहीत याअनी अल्लाह तआला हर चीज़ पर मुहीत है। लेकिन इनसान को तमाम मख़लूक़ात पर शरफ़ो बुज़ुर्गी हासिल है "इन्नल्ला ह ख़ ल क़ आ द म अला सूरतिही" याअनी अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को अपनी सूरत पर पैदा किया है और "फ़द्दलना बअ्दकुम अला बअ्द" के मुताबिक़ उन में भी आपस में फ़र्क़ मरातिब और इम्तेयाज़ो इन्फ़ेराद क़ाइम रखा है।

अजमेरुल कुद्स में दरगाहे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की

तारीख़ी इमारतें और आसारे मुबारका

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कुद्दि स सिर्रूहू का आस्तानए मुबारक शहरे अजमेर के जुनूब मग़रिबी गोशे में वाक़ेअ् है जो बिला तफ़रीक़े मज़हबो मिल्लत ज़ियारतगाहे ख़वासो अवाम है। दरगाह शरीफ के शेमाल में दरगाह बाज़ार, जुनूब में झालरा, मशरिक़ में त्रिपोलिया दरवाज़ा व अंदरकोट और मग़रिब में गली लंगरख़ाना व मुहल्ला ख़ादिमान है। दरगाह शरीफ के इक्कीस दरवाज़े हैं जो शहर के मुख़्तलिफ हिस्सों को दरगाह से मिलाते हैं। बाज़ बड़े दरवाज़ों के किवाड़ों में खिड़कियाँ भी हैं जिन में से बाज़ फाटक के किवाड़ बन्द होने के बाद भी आमदो रफ्त केलिए खुली रहती हैं। दरगाह शरीफ की वसीअ् इमारात तीन अहातों पर मुश्तमल हैं। **अहातए अव्वल** में नक़्क़ारख़ाना, उस्मानी दरवाज़ा, शाहजहानी दरवाज़ा, बलन्द दरवाज़ा और अक्बरी मस्जिद वग़ैरह हैं। **अहातए दोम** में समाअ्ख़ाना, वसीअ् सहन, देगहाए कलाँ व ख़ुर्द, महफिलख़ाना, हौज़े शाही, लंगरख़ाना और हुजरे वग़ैरह हैं। **अहातए सोम** में रौज़ए मुनव्वरा, मस्जिद संदल ख़ाना, बेगमी दालान, बहिश्ती दरवाज़ा, चिल्ला बाबा फरीद, औलिया मस्जिद, जामेअ् मस्जिद शाहजहानी, कर्नाटकी दालान, कुबूर और हुजरे वग़ैरह हैं। झालरा और अहातए चारयारी का भी उसी अहाते से इलहाक़ है।

रौज़ए मुनव्वरा

ख़्वाजा हुसैन नागौरी ने बरसों सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मज़ारे अक़्दस की मुजावरत की है ये शैख़ हमीदुद्दीन नागौरी की औलाद में से हैं उन के ज़माने में सरकारे ख़्वाजा का मज़ारे अक़्दस ख़ाम था और मज़ार शरीफ पर इमारत न थी।

सुल्तान ग़यासुद्दीन ख़्वाजा हुसैन नागौरी को अज़ राहे अक़ीदत बुलाया करता था मगर आप शाहाना सुहबत से गुरेज़ करते थे लेकिन सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मूए मुबारक की ज़ियारत करने केलिए आप सुल्तान के पास तशरीफ लेगए। सुल्तान ने तहाइफ पेश किए मगर आप ने क़ुबूल न किए। लेकिन आप के साहबज़ादे के दिल में लेने का ख़याल पैदा हुआ। आप ने अपने साहबज़ादे से फरमाया कि "अगर ये लेते हो तो तुम पर लाज़िम है कि इस माल से सरकारे ख़्वाजए अजमेरी और अपने जद सूफी हमीदुद्दीन नागौरी के मज़ाराते मुतबर्रक ताअमीर कराओ।" चुनाँचे उस रक़म से हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग के कच्चे मज़ार पर गुंबद व इमाराते रौज़ा ताअमीर कराई गई।

गुंबद शरीफ का अन्दरूनी हिस्सा संगे बस्ता का है उस में चूने से रेख़बन्दी की गई है बालाई हिस्सा ईंटों से तैय्यार किया गया है लदाव की डाट पर चूने का सन्दला है उस पर घुटाई का काम है गुंबद पंचवांस में है मगर पंचवांस में भी कोई दूसरा गुंबद उस डोल का हिन्दुस्तान में मौजूद नहीं है। उस सफेद गुंबद पर सुनहरी ताजदार कलस आवेज़ाँ है इस लिए हज़रत ख़्वाजा को धोली गुंबद और सुनहरी कलस वाला ख़्वाजा भी कहते हैं। ये कलस नवाब हैदर लअी ख़ाँ बिरादर कल्बे अली ख़ाँ वालिए रामपुर ने नस्ब कराया था। कहा जाता है कि पहले आलम नाम के एक बंजारे ने गुंबद शरीफ पर सवा मन सोने का कलस चढ़ाया था। गुंबद शरीफ की दीवारों पर सुनहरी कलियाँ हैं। गुंबद के अन्दरूनी हिस्से में सुनहरी लाजवर्दी काम है। ये नवाब मुशताक़ अली ख़ाँ वालिए रामपुर ने कराया था छत में काशानी मख़मल की ज़र्रीं छतगीरी लगी हुई है उस में तलाई ज़ंजीरों में सुनहरी गोटे लटक रहे हैं उस में लगा हुआ सोना शाहजहाँ के ज़माने का बेहतरीन सोना बताया जाता है।

तलाई नक़्शो निगार, दर और क़ुब्बा शरीफ की दीवारें ख़्वाजा हुसैन नागौरी की अक़ीदत का नतीजा हैं। मज़ार शरीफ पर सीप के काम का छपरखट संदली बना हुआ था मगर कलकत्ता के मुतमव्विल सौदागर सेठ हाजी मुहम्मद साहब ने ज़रे कसीर ख़र्च करके गंगा जमनी तलाई नुक़रई पत्तर चढ़वाया है उस के चारों गोशों पर चार बुर्जियाँ मअ कलस हैं। मुसहरी में रंगीन मख़मल की

छतगीरी लगी रहती है उस पर संगे तलाई, फीरोज़ा, अब्री, यश्हब और लहसुनिया वग़ैरह की पिच्चीकारी है, मज़ारे अक़दस के ताअ्वीज़ में याकूते रुम्मानी जड़ा हुआ है मज़ारे पुर अनवार हमेशा ज़रबफ्तो कमख़्वाब वग़ैरह के क़ीमती क़ब्रपोशों से ढका रहता है क़ब्रपोश पर फूलों की सेज और बकस्रत फूल रहते हैं, छपरखट के बीच में सुनहरी कटहरानस्ब था ये शहंशाह जहाँगीर ने बनवाकर नज़्र किया था, जहाँगीर ने उस के मुतअल्लिक़ "तुज़्के जहाँगीरी" में लिखा है कि "बाज़ मुरादें बर आने पर 1025 हि0 में मैं ने मुहज्जरे तलाई जालीदार मरक़दे ख़्वाजा बुज़ुर्ग पर नज़्र किया। आज से चार सौ साल पंहले ये मुहज्जर एक लाख दस हज़ार रूप्ये की लागत से तैय्यार हुआ था।" मगर अब वो कटहरा मौजूद नही है बल्कि उस की जगह पर दूसरा नुक़रई मुहज्जर मौजूद है उस की मरम्मत राजा जय सिंह सवाई दुबाई जयपुर ने शैख़ मुहम्मद हयात और हाजी मंजूर अली ख़ाँ मुतवल्लिए आस्ताना के एहतेमाम से कराई थी उस का वज़न बयालीस हज़ार नौ सौ इक्सठ तोला तीन माशा है। ये मौजूदा कटहरा शहज़ादी जहाँआरा बेगम बिन्ते शाहजहाँ के बनवाए हुए हैं।

अन्दरूने गुंबद शरीफ ज़रदोज़ी के शामयाने हैं उन में से एक नवाब कल्बे अली ख़ाँ वालिए रामपुर और दूसरा नवाब इब्राहीम वालिए रियासते टोंक का नज़्र करदा है। मज़ार शरीफ की पच्छिम जानिब मेहराब के अंदर ज़मानए क़दीम का खुशख़त क़लमी कलामे मजीद सफेद नुक़रई संदूक़ में नुक़रई चौकी के ऊपर क़दे आदम बलन्दी पर रखा हुआ है ज़ाइरीन उस का बोसा देते हैं। उर्स शरीफ के ऐय्याम में ये यहाँ से उठा लिया जाता है, उस का चाँदी का संदूक़ और चौकी निज़ामे हैदराबाद की नज़्र करदा हैं, क़ुरआने मजीद के ऊपर काअबा शरीफ का सियाह मख़मली पर्दा लटका हुआ है उस पर आयाते क़ुरआनी आबे ज़र से लिखी हुई हैं।

मस्जिदे संदल ख़ाना

ये मस्जिद चार नामों से जानी जाती है।

बाज़ क़ौल के मुताबिक़ दरगाह शरीफ में सिलसिलए ताअमीरात की इब्तेदा इसी मस्जिद से हुई है बक़िया इमा (1)मस्जिदे महमूदी (2)मस्जिदे जहाँगीरी (3) मस्जिदे संदल ख़ाना (4)फूलख़ाने की मस्जिद।

इस मस्जिद की ताअमीर 859 हि0 में सुल्तान महमूद ख़िलजी फरमाँरवाए मालवा ने अजमेर फतह करने के बाद सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के सरहाने कराई थी इस वजह से इसे मस्जिदे महमूदी कहते हैं।

बाज़ क़ौल के मुताबिक़ दरगाह शरीफ में सिलसिलए ताअमीरात की इब्तिदा इसी मस्जिद से हुई है। बक़िया इमारतें इस के बाद माअरज़े वुजूद में आई हैं।

इस मस्जिद का दूसरा नाम मस्जिदे जहाँगीरी है। रॉय बहादुर मिस्टर हरविलास शारदा ने अपनी किताब "तारीख़े अजमेर" में ये रिवायत नक़्ल की है कि 1610 ई0 मुताबिक़ 910 हि0 में शहंशाहं जहाँगीर ने ये मस्जिद बनवाइ थी। वाक़ेआ ये है कि मस्जिदे महमूदी अहदे जहाँगीरी तक अपने हाल पर बरक़रार रही उसी ज़माने में हज़रत मुजद्दिदे अल्फे सानी शैख़ अहमद सरहिन्दी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपने वुरूदे अजमेर के मौक़े पर इसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ी थी। किताब "जवाहिरे मुजद्दिदिया" में लिखा है कि उस मस्जिद की एक दीवार निहायत ख़स्ता होकर टेढ़ी होगई थी लोगों को अंदेशा होगया था कि कहीं ढय न जाए। आप ने (हज़रत मुजद्दिद साहब ने) फरमाया कि मुतमइन रहो अभी नहीं गिरेगी। जब आप (मुजद्दिद साहब) अजमेर शरीफ से वापस हुए तो आप के शहर से बाहर होते ही गिर गई।

इस रिवायत के मुताबिक़ मुम्किन है कि उस इन्हेदाम के बाद जहाँगीर के हुक्म से उस मस्जिद की दुरुस्ती या अज़ सरे नौ ताअमीर अमल में आई हो या उस अहद के किसी अमीर ने उस की तजदीद कराई हो इस वजह से उस को मस्जिदे जहाँगीरी के नाम से भी याद किया जाता है।

इस मस्जिद को संदलख़ाना इस लिए कहा जाता है कि सरकारे ख़्वाजा के उर्से पाक के ऐय्याम में याअनी यकुम रजब से नवीं रजब तक हर साल उस में संदल साई होती है जो मज़ार शरीफ पर नज़्र किया जाता है।

इसे मस्जिदे फूलख़ाना भी कहा जाता है वो इस लिए कि रोज़ाना सुब्ह को पाँच बजे और दिन को चार बजे मज़ार शरीफ के फूल उतारे जाते हैं और उसी मस्जिद की ग़रबी दीवार की एक कमान में रखे जाते हैं जो उसी ग़रज़ केलिए ज़रूरत के मुताबिक़

बनवाई गई है फिर ये जमा शुदा फूल मलोसर के एक कुएं में डाल दिए जाते हैं। मस्जिद के मौजूदा नक़्शो निगार1320 हि0 मुताबिक़ 1904 ई0 में नवाब इसहाक़ ख़ाँ जहाँगीराबादी ने बनवाए हैं।

और किताब "ग़रीब नवाज़" के मुसन्निफ के मुताबिक़ पहले उस के तीन दर थे। जहाँगीर बादशाह ने अपनी ताअमीर में बढ़ाकर चार दर करा दिए उस के बाद औरंगज़ेब आलमगीर ने अपने अहदे हुकूमत में उस की मरम्मत की ख़िदमत अंजाम दी इस लिए उस मस्जिद को (सुल्तान महमूद ख़िलजी समेत) तीन बादशाहों के नाम से मन्सूब किया जाता है।

जामेअ् मस्जिद शाहजहानी

ये मस्जिद रौज़ए मुनव्वरा के मग़रिब में वाक़ेअ है जब शाहजहाँ बअहदे शहज़ादगी उदयपुर फतह करके अजमेर शरीफ ज़ियारत केलिए हाज़िर हुआ तो उस ने एक वसीअ मस्जिद बवनाने का इरादा किया था। चुनाँचे जब तख़्तनशीं हुआ तो उस मस्जिद की ताअमीर का हुक्म सादिर किया उस वक़्त इस की ताअमीर में दो लाख चालीस हज़ार रूप्ये सर्फ हुए थे। साहिबे "अहसनुस्सियर" ने बहवालए "मिर्आतुल अस्रार" लिखा है कि "ये मस्जिद चौदह साल में ताअमीर हुई" मौसूफ ने अपना ख़याल ज़ाहिर किया है कि ताअमीर शुरूअ होने के बाद कुछ अर्सा तक कारे ताअमीर मअ्रज़े इल्तेवा में रहा। मस्जिद का तूल 97 गज़ और अर्ज़ 27 गज़ शरई है उस में आने जाने केलिए पाँच दरवाज़े हैं।

मस्जिद नफीस संगे मरमर की बनी हुई है अंदरूने वस्ती मेहराब में सुनहरी हुरूफ में कलिमए तैय्यबा लिखा हुआ है 1261 हि0 में जब तबर्रुकाते नबवी देहली से लाकर यहाँ रखे गए उस वक़्त कलिमा और उस मेहराब से आबे खुनक रिसने लगा था लोगों ने उसे तबर्रुकन लिया बाज़ लोग उसे अश्के अपशानी से ताअबीर करते हैं। बैरूनी मेहराबों पर अल्लाह तआला के 99 नाम तहरीर हैं।

जब उस मस्जिद में नमाज़े जुम्आ होती है तो चार तोपें दाग़ी जाती हैं, एक सुन्नत की अदाइगी के वक़्त, दूसरी ख़ुतबे के वक़्त, तीसरी इक़ामत के वक़्त और चौथी सलाम के बाद।

हौज़े जामेअ मस्जिद

जामेअ मस्जिद से मुत्तसिल एक खुशनुमा हौज़ है जो हमेशा पानी से भरा रहता है नमाज़ी उस में से वुज़ू करते हैं।उस हौज़ के पानी पर साइबान नहीं है अलबत्ता उस के चारों किनारों पर नमाज़ियों के वुज़ू करने की जगह पर साइबान है। उस हौज़ के क़रीब भिश्ती भरी मश्कें लिए मौजूद रहते हैं ज़ाइरीन उन्हें पैसे देकर हौज़ में पानी डलवाते हैं।

औलिया मस्जिद

पहले ये क़लन्दरी मस्जिद कहलाती थी सूबए बिहार के एक अक़ीदतमन्द सेठ मुहम्मद बख़्श साहब ने बाद में उस पर तीन दर की मरमरीं बेश क़ीमत इमारत तैय्यार कराने की सआदत हासिल की। बक़ौले "अहसनुस्सियर" चूँकि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ उस मक़ाम पर नमाज़ें अदा फरमाते थे इस लिए अक़ीदत मन्द ज़ाइरीन उस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने को ज़ियादा अहम्मियत देते थे।

अक्बरी मस्जिद

शाहजहानी दरवाज़े से ज़रा आगे बढ़कर अकबरी मस्जिद की सीढ़ियों से मुत्तसिल एक सेहदरी में यूनानी शिफाख़ाना है उसी से मुत्तसिल एक बलन्द ज़ीने पर अकबरी मस्जिद का बलन्दो बाला दरवाज़ा है उस मस्जिद की ताअमीर का हुक्म अकबर बादशाह ने उस वक़्त दिया था जब वो जहाँगीर की विलादत के छह माह बाद इज़्हारे तशक्कुर व नियाज़ केलिए शाअबान 977 हि0 में हाज़िरे दरबारे ख़्वाजा हुए थे। ये मस्जिद संगे सुर्ख़ से ताअमीर की गई है मेहराबों पर संगे मरमर की पिच्चीकारी है मस्जिद का रक़्बा मअ मुतअल्लका इमारत 140 मुरब्बअ् फिट है। मेहराबे मस्जिद 56 फिट बलन्द है गुंबद के गोशों पर मरमरीं मीनार हैं सहने मस्जिद में एक हश्तपहल हौज़ था जो अब मिट्टी से पुर कर दिया गया है

तक़रीबन डेढ़ दो सौ साल क़ब्ल उस में एक कुआं भी था 1320 हि० में मस्जिद की मुतअल्लक़ा इमारात की मरम्मत कराने की सआदत नवाब ग़फ़ूर अली ख़ाँ साहब दानापुरी ने हासिल की। आज कल दारुल उलूम मुईनिया उस्मानिया के प्राइमरी दरजात औक़ाते दर्स में यहाँ लगाए जाते हैं और बच्चे ताअलीम हासिल करते हैं।

बलन्द दरवाज़ा

ये दरवाज़ा संगे सुर्ख़ से ताअमीर हुआ है अब चूने की सफ़ेदी में उस का अस्ल रंग रूपोश होगया है उस की बलन्दी 85 फिट है उस का फ़र्श संगे मरमर और संगे मूसा का है मेहराब में तीन गोले तलाई ज़ंजीरों में आवेज़ाँ हैं बुर्जियों पर ढाई फिट लमबे सुनहरी कलस हैं दरवाज़े में शेमाल रूया तीन तीन दर्जे की दो छत्रियाँ हैं अक़ब में दोनों जानिब दो सादा छत्रियाँ हैं ऊपर चढ़ने केलिए दोतरफा ज़ीने हैं चूँकि दरगाह शरीफ की तमाम इमारतों में ये सब से बलन्द है इस लिए इस को बलन्द दरवाज़ा कहते हैं। उर्स के ऐय्याम में इस के नीचे पुलिस का क़ेयाम रहता है दरवाज़े के सह्न में मौलाना शमसुद्दीन अलमाअरूफ ब सैय्यिद अहमद ख़लीफए सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का मज़ार है "गाइड टू दरगाह ख़्वाजा साहब" के मुताबिक़ ये दरवाज़ा 859 हि० में सुल्तान महमूद ख़िलजी ने ताअमीर कराया था और बक़ौले "मुईनुल औलिया" सुल्तान महमूद ख़िलजी ने ये दरवाज़ा उस वक़्त बनवाया था जब उस ने गजाधर पर फ़तह हासिल करके अजमेर पर क़बज़ा किया था मगर "इक़्तेबासुल अनवार" के मुसन्निफ ने उसे मुलूके मालवा में से किसी का बनवाया हुआ लिखा है और हरबिलास शारदा ने अपनी किताब "अजमेर हिस्टोरिकल एण्ड डिस्क्रेटिव" में लिखा है कि "अगरचे उस दरवाज़े के सने ताअमीर के मुतअल्लिक़ कुछ इल्म नहीं ताहम यह कहा जा सकता है कि उस की ताअमीर सुल्तान ग़यासुद्दीन के अहदे हुकूमत (1469 ई० ता 1500 ई०) में हुई।

उस्मानी दरवाज़ा

बैरूनी ज़ाइरीन उमूमन उसी दरवाज़े से दाख़िल होते हैं ख़ुद्दामे दरगाह उन की रहनुमाई केलिए यहाँ मौजूद रहते हैं उस

दरवाज़े से मुत्तसिल फूल, शीरीनी वग़ैरह की दुकानें हैं ताकि ज़ाइरीन हसबे ख़्वाहिश नज़्रे अक़ीदत पेश कर सकें।

दरगाह शरीफ का ये फलकबोस शेमालरूया दरवाज़ा दरगाह बाज़ार की जानिब वाक़ेअ है। मीरउस्मान अली ख़ाँ साबिक़ वालिए दकन ने 1330 हि० में अजमेर शरीफ हाज़िर होकर ये शाहाना दरवाज़ा ताअमीर कराने की सआदत हासिल की। तक़रीबन तीन साल तक ताअमीर का सिलसिला जारी रहा और तक़रीबन पचास हज़ार रूप्ये उस की ताअमीर में सर्फ हुए। उसे निज़ाम गेट के नाम से भी याद किया जाता है।

नक़्क़ार ख़ानए उस्मानी

दरगाह शरीफ के उसी दरवाज़ए उस्मानी के ऊपर नक़्क़ार ख़ानए उस्मानी भी है जिस पर एक निहायत पुरतकल्लुफ और नफीस बारहदरी में नौबत ख़ाना है यहाँ पंज वक़्ता नौबत मअ शहनाई बजाई जाती है और हर घंटे पर घड़ियाल भी बजता है।

दरवाज़े से दाख़िल होते हुए दाहिनी तरफ एक छोटे से कमरे में आज कल एक एलोपेथिक शिफाख़ाना है। उस्मानी दरवाज़ा और शाहजहानी दरवाज़ा के दरमियान वसीअ सहन है उस सहन के चारों तरफ हुजरे हैं।

नक़्क़ार ख़ानए शाहजहानी

उस्मानी दरवाज़े से गुज़र कर थोड़ा सहन तय करने के बाद एक दरवाज़ा और आता है उस के ऊपर भी नक़्क़ार ख़ाना है इस लिए उस को नक़्क़ार ख़ाना कहते हैं शाहजहाँ बादशाह ने 1047 हि० में बतौरे नज़्रे अक़ीदत ये दरवाज़ा ताअमीर कराया था। इस लिए उस को शाहजहानी दरवाज़ा भी कहते हैं मेहराबे दरवाज़ा की पेशानी पर बख़त्ते जली सुनहरी हरफों में कलिमा शरीफ लिखा हुआ है इस लिए उस ~~को~~ कलिमा दरवाज़ा भी कहा जाता है। दरवाज़े पर आबे ज़र से ये शेर लिखा हुआ है।:

बअहदे शाहजहाँ बादशाहे दीं परवर
ज़िदूदे ज़ुल्तमते कुफ़्र आफ़्ताबे दीं यक्सर

अकबर बादशाह ने रमज़ान 983 हि० में बंगाल फतह करने के बाद दो दाऊदी नक़्क़ारे दरगाह शरीफ में पेश किए जो उसी दरवाज़े पर रखे हुए हैं और एक बड़ा नक़्क़ारा किलए चित्तौड़ में था। कोसों तक उस की आवाज़ पहुँचती थी जब चित्तौड़ का

राजा सवार होता था या क़िले में दाख़िल होता था उस वक़्त ये बजता था कि दूर तक ख़बर पहुँच जाए नक़्क़ारए मज़कूर को अकबर ने वहाँ से उठवाकर अजमेर के दरवाज़े पर रखवा दिया था उस के अलावा और भी नक़्क़ारे यहाँ मौजूद हैं।

ये पूरी इमारत संगे सुर्ख़ की है लेकिन अब चूने की सफ़ेदी चढ़ने से उस का अस्ली रंग छुप गया है उस दरवाज़े के केवाड़ लकड़ी के हैं। तीस चालीस बरस क़ब्ल उन केवाड़ों पर बमबई के एक अक़ीदत मन्द ताजिर ने चाँदी के पत्तर चढ़वा दिए थे उस दरवाज़े पर भी रोज़ाना पाँच वक़्त नौबत बजती है।

समाअ ख़ाना

पहले यहाँ वसीअ सहन था ऐय्यामे उर्स में यहाँ शामयाने इसतादा करके महाफ़िले समाअ मुन्अक़िद की जाती थीं बाद अज़ाँ मीर हफ़ीज़ अली साहब साबिक़ मुतवल्ली दरगाह शरीफ़ ने छह हज़ार रूप्ये की लागत से यहाँ एक दालान बनवाने की सआदत हासिल की बादहू उस दालान के सामने दलबादली शामयाने इस्तादा करके उर्स शरीफ़ की महाफ़िले समाअ मुन्अक़िद होने लगीं। मौजूदा शानदार और वसीअ समाअख़ाना नवाब बशीरुद्दौला सर आस्माँजाह मदारुलमहाम दौलते आसिफ़िया अमीरे पाइगाह ने अपने फ़रज़न्द मुईनुद्दौला की विलादत पर ताअमीर कराया। मौसूफ़ ने अपने यहाँ फ़रज़न्द होने की दरबारे ग़रीब नवाज़ में दुआ माँगी थी दुआ क़ुबूल हुई और ख़ुदा ने उन्हें अस्सी साल की उम्र में बेटा दिया। मुराद पूरी होने पर बतौरे इज़्हारे तशक्कुर अस्सी हज़ार रूप्ये के सर्फ़े से ये रफ़ीउश्शान महफ़िल ख़ाना ताअमीर कराया। उस की ताअमीर 1306 हि0 से शुरूअ होकर 1309 हि0 में मुकम्मल हुई उस में क़ीमती झाड़ फ़ानूस आवेज़ाँ हैं आज कल उन में बजाए मोमबत्ती के बर्क़ी क़ुमक़ुमे रौशन होते हैं यहाँ दारुल उलूम मुईनिया उस्मानिया क़ाइम था जो अपने ज़माने की मशहूरो मेअयारी दीनी, इल्मी दर्सगाह थी मगर 1947 ई0 के इन्क़ेलाबात के बाद से ये बन्द होगया अब यहाँ मौजूदा सरकारी नेसाबे ताअलीम के मुताबिक़ ताअलीम होती है।

ख़ानक़ाह

ये इमारत समाअख़ाना के ग़र्ब में वाक़ेअ है महफ़िलख़ाना की मग़रिबी दीवार में एक दरवाज़ा है उस के ज़रीआ महफ़िलख़ाने से

यहाँ पहुँचना होता है इस मक़ाम पर सरकारे ख़्वाजा ग़रीबनवाज़ को बादे विसाल ग़ुस्ल दिया गया था। इस की ताअमीर के मुतअल्लिक़ "अकबरनामा जिल्दे दोम" में अबुलफ़ज़्ल ने लिखा है

"इमाराते आली बिना अज़ मस्जिदो ख़ानक़ाह दराँ हवाशी लुम्अ अन्दाख़्ता"

याअनी अकबर ने एक मसजिद और उस से मुत्तसिल एक ख़ानक़ाह ताअमीर कराई।

ख़ानक़ाह में रजब की पाँच तारीख़ सेहपहर के वक़्त दीवान साहब की मौजूदगी में सालाना महफ़िल होती है। कहा जाता है कि यहाँ हज़रत ख़्वाजा के अहले ख़ाना रहते थे।

हौज़े शाही

समाअख़ना के सामने गोशए जुनूब मशरिक़ में एक हौज़ है जो आम तौर पर ख़ुश्क रहता है मगर ऐय्यामे उर्स में भरा रहता है उस हौज़ की छत्री मलिका मैरी (जॉर्ज पंजुम की अहलिया) की तरफ़ से ताअमीर हुई थी 1911 ई0 में मलिका मैरी ने दरबारे ताजपोशी से वापसी पर दरगाहे ग़रीब नवाज़ में हाज़िरी दी थी और पाँच सौ रूप्ये अपनी तरफ़ से दरगाह में अपनी यादगार क़ाइम करने केलिए नज़्र किए थे उस रक़म में दरगाह के ख़ज़ाने से कुछ और रक़म मिलाकर इस हौज़ पर सायबान ताअमीर करा दिया था।

सहन चराग़

बलन्द दरवाज़े से गुज़र कर एक वसीअ सहन आता है उस में बलन्द दरवाज़े के सामने एक गुंबदनुमा हश्तपहल ख़ूबसूरत छत्री है उस में मुतअद्दिद चराग़ों का हामिल एक चराग़दान है इस लिए ये सहन चराग़ कहलाता है। मशहूर है कि ये चराग़दान अकबर बादशाह ने पेश किया था।

लंगरख़ाना

सहनचराग़ के मशरिक़ में टीन के सायबान के नीचे लंगरख़ाने का फाटक है उस फाटक से गुज़र कर एक मुख़्तसर सहन और दालान है दालान में लोहे का एक बहुत बड़ा कढ़ाव एक बड़े चूल्हे पर रखा है उस में रोज़ाना जौ का दलिया पकता है और ग़ुरबा को तक़्सीम किया जाता है। ये लंगरख़ाना अकबर बादशाह ने ग़ुरबा और मसाकीन की आसाइश केलिए ताअमीर

कराया था। लंगरख़ाने के इख़राजात केलिए जागीर भी है। निज़ामे हैदराबाद दकन की तरफ से भी एक वक़्त का दलिया चन्द साल क़ब्ल तक पकता था मगर अब वहाँ से इस सर्फ़े की रक़म नहीं आती।

बड़ी देग

बलन्द दरवाज़े से आगे बढ़कर दो बड़ी देगें ज़ीनादार बलन्द चूल्हों पर नस्ब हैं शर्क़ी देग छोटी और ग़र्बी बड़ी है। बड़ी देग जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर शहंशाहे हिन्द ने 976 हि० में चित्तौड़ गढ़ की फतह की ख़ुशी में नज़्र की थी उस देग का मुहीत साढ़े तेरह गज़ है उस में सौ मन चावल बख़ूबी पक सकते हैं।

छोटी देग

शहंशाहे हिन्द सुल्तान नूरुद्दीन जहाँगीर ने ये देग आगरा में तैय्यार कराई। अजमेर शरीफ हाज़िरे आस्ताना होकर उस में खाना पकवाया और पाँच हज़ार फुक़रा व मसाकीन को अपने सामने खिलवाया। बक़ौल कर्नल ब्राइन ये देग 28 मन चावल पकने केकलए काफी है मगर साहिबे "अहसनुस्सियर" कहते हैं कि उस में अस्सी मन चावल पकते हैं उस का मुहीत साढ़े सात गज़ है और क़तर दो गज़ 26 इंच।

देगों की मरम्मत

कस्रते इस्तेअमाल और मुरूरे ऐय्याम के सबब दोनों देगें पुरानी हो गई थीं मुल्ला मदारी मदारुलमहाम रियासते ग्वाल्यार ने सेठ अक्खे चन्द के एहतेमाम से दोनों देगों की ज़रूरी मरम्मत कराई। एक मुद्दत के बाद फिर देगें मरम्मत तलब होगई थीं चुनाँचे 1307 हि० में इसहाक़ वज़ीरे हैदराबाद दकन ने बड़ी देग की मरम्मत कराई और नवाब दिलदोज़ नवाज़ जंग अमीरे हैदराबाद दकन ने छोटी देग अज़ सरे नौ बनवाई।

जन्नती दरवाज़ा

इस दरवाज़े को मक्की दरवाज़ा भी कहते हैं इस के किवाड़ों पर चाँदी का पत्तर चढ़ा हुआ है। रिवायत है कि जो इस दरवाज़े

से सात मरतबा गुज़र जाए वो जन्नती है। ये दरवाज़ा ईदैन, हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी क़ुद्दि स सिर्रुहूमा के उर्स के मौक़े पर और यौमे आशूरा को खुलता है और लोग जौक़ दर जौक़ उस में से गुज़रते हैं।

बेगमी दालान

गुंबद शरीफ के शर्क़ी दरवाज़े के आगे ये दालान जहाँआरा बिन्ते शाहजहाँ ने 1053 हि० में ताअमीर कराया था। उस की छत और सुतून संगे मरमर के है और फर्श संगे अफ्शाँ अब्री व तलाई का है 1888 ई० में उस की दीवारों और थामों पर नवाब मुशताक़ अली ख़ाँ वालिए रामपुर ने सुनहरी काम कराया और छत में बम्बई के एक मुसलमान सौदागर ने नक़्शोनिगार बनवाए मगर अब काम माँद हो गया है। दालान की छत में बिल्लौरीं झाड़ फानूस आवेज़ाँ हैं। छत के ऊपर की जानिब सुनहरी कलियाँ हैं कहा जाता है कि ये मुख़्तलिफ अशख़ास की नज़्र करदा हैं। 1940 ई० में छत की एक लाइन चटख़ गई थी उस के टूट क़र गिर जाने का अंदेशा था 1943 ई० में नवाब गुलाम किब्रिया रईसे जल्पाइगुड़ी (बंगाल) ने वो पूरी लाइन बदलवादी।

अहदे जहाँगीरी की तस्वीर देखने से पता चलता है कि उस ज़माने में बेगमी दालान की जगह पर लकड़ी का कटहरा था दालान के सामने दूर तक संगे मरमर के फर्श का एक वसीअ सहन है और उस के गिर्द संगीन कटहरा लगा हुआ है उस सहन में बेगमी दालान के सामने आज भी एक बड़ा शामयाना तना रहता है यहाँ एक ख़िन्नी का पुराना दरख़्त है कहा जाता है कि ये दरख़्त मख़्दूम जहानियाँ जहाँगश्त ने अजमेर शरीफ हाज़िरी के दौरान लगाया था मशहूर है कि साँप के डसे हुए को अगर उस की छाल पीस कर पिलादें तो ज़हर उतर जाता है। उस दरख़्त के मुतअल्लिक़ अवाम में बहुत सी ग़ैर मुस्तनद व ग़ैर मुअतबर बातें भी मशहूर हैं जिन्हें साहिबे "अहसनुस्सियर" ने अपनी किताब में नक़्ल की हैं।

तोशाख़ाने

बेगमी दालान से गुंबद शरीफ में दाख़िल होते हुए पहले एक ख़ूबसूरत और शानदार दरवाज़ा आता है उस दरवाज़े से गुज़र कर

दाएं और बाएं दो हुजरे हैं उन में रौज़ए मुनव्वरा की ज़रूरियात की चीज़ें रखी रहती हैं। शेमाली तोशाख़ानो में रोज़ाना के इस्तेअमाल की चादरें, अगरदानी, चौबें और दीगर मुतअल्लक़ा सामान रहता है और जुनूबी तोशाख़ाने में क़ीमती सामान रहता है। शाहजहाँ बादशाह का फरमान भी उसी नें मुक़फ्फ़ल रहता है उस में सात क़ुफ्ल लगे रहते हैं उन सातों की चाबियाँ सात ख़ुद्दाम साहिबान के पास रहती हैं। साहिबे "अहसनुस्सियर" का बयान है कि उन दोनों हुजरों में ख़्वाजा फख़रुद्दीन गुर्देज़ी ख़ादिमे ख़ास सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और उन की अहलिया के मज़ारात हैं मगर बक़ौले "मुईनुल औलिया" उन हुजरों में बित्तहक़ीक़ हज़रत ख़्वाजा की दोनों अज़वाज के मज़ारात हैं और बरिवायाते ज़बानी ख़्वाजा फख़रुद्दीन गुर्देज़ी का मज़ार तरपोलिया दरवाज़े से मुत्तसिल एक तकिया में था जो कुछ मुद्दत पहले मुनहदिम होगया और वहाँ इमारात ताअमीर होगई हैं।

हुजरए बीबी हाफिज़ जमाल

रौज़ए मुनव्वरा की जुनूबी दीवार में पाईं रुख़ तीन दरवाजे हैं इधर उधर के दरवाज़े बाज़ ख़ास हालात और मौक़े पर खोले जाते हैं दरमियानी दरवाज़ा दिन भर खुला रहता है उस दरवाज़े के आगे संगे मरमर के सुतूनों पर छत्री बनी हुई है छत्री के मुत्तसिल रौज़ए मुनव्वरा की जुनूबी दीवार से मुलहक़ हुजरे में सरकारे ख़्वाजा की साहबज़ादी हज़रत बीबी हाफिज़ जमाल आसूदए ख़ाक हैं। ग़ालिबन ये हुजरा हज़रत ख़्वाजा के रौज़े के साथ ताअमीर हुआ बीबी के संगे मज़ार के ताअवीज़ में संगे अब्री, तलाई, लहसुनिया और फीरोज़ा वग़ैरह से पिच्चीकारी की गई है। मज़ार के बेशबहा क़ब्रपोश पर फूल रहते हैं उस मज़ार से मुत्तसिल दो छोटी छोटी क़ब्रें और हैं ये दोनों बीबी साहिबा के साहबज़ादों के मज़ारात हैं जिन का इन्तेक़ाल सिग़्रसिनी में हो गया था।

हुजरए हूरुन्निसा

ये हुजरा रौज़ा शरीफ के ग़र्ब में वाक़ेअ है। साहिबे "अहसनुस सियर" ने बहवालए "तुज़्के जहाँगीरी" व "शाहजहाँनामा" लिखा है कि बरोज़े चहारशंबा 29 जुमादल ऊला 1025 हि० को हूरुन्निसा

बिन्ते शाहजहाँ ने वफात पाई और रौज़ा शरीफ की दीवार से मुलहक़ दफ्न की गई। जहाँगीर इस पोती को बहुत अज़ीज़ रखता था।

ये छोटा सा मक़्बरा भी संगे मरमर का बना हुआ है उस के केवाड़ भी संगे मरमर के थे अवाम उस के अन्दर पैसे कौड़ियाँ फेंका करते थे उस से लौह के टूटने का अंदेशा था बईं वजह उस का दरवाज़ा तेग़ा कर दिया गया कहा जाता है कि ताअवीज़े क़ब्र पर एक बेशबहा अक़ीक़े यमनी की तख़्ती आवेज़ाँ है।

इहातए नूर

कुब्बए मुबारक के जुनूब मग़रिब में संगे मरमर का ये ख़ुशनुमा इहाता है उस के कुछ हिस्से पर छत भी है उस इहाते से सहन मे आने केलिए दो दरवाज़े हैं एक कुब्बा शरीफ के जुनूब में है ये पाईं दरवाज़ा कहलाता है दूसरा मुतज़क्किरा जन्नती दरवाज़ा है उन दरवाज़ों पर सुनहरी कलियाँ हैं उस इहाते में लोग बैठ कर क़ुरआने पाक की तिलावत किया करते हैं।

चारयारी

शाहजहानी मस्जिद की जुनूबी दीवार से मुलहक़ हौज़ के मुत्तसिल इहातए चारयारी में जाने का एक छोटा सा दरवाज़ा है। उस इहाते में एक वसीअ क़ब्रस्तान है उस में जलीलुल क़द्र बुज़ुर्गाने दीन, फुक़रा, दुर्वेश, उलमा और हज़रत ख़्वाजा के अक़ीदतमन्दान आराम फरमा हैं मौलाना शमसुद्दीन, मौलाना मुहम्मद हुसैन इलाहाबादी, हाफिज़ शब्बीर अली बेग और मौलवी मुईनुद्दीन के अलावा दरगाह शरीफ के ख़ुद्दाम व दीगर हज़रात के मज़ारात उसी इहाते में हैं। साहिबे "अहसनुस्सियर" का बयान है कि उस इहाते में उन चार बुज़ुर्गों के भी मक़्बरे हैं जो सरकारे ग़रीब नवाज़ के साथ हिन्दुस्तान तशरीफ लाए थे।

1260 हि० में ख़लीफा सैय्यिद मुहम्मद हनीफ साहब और इस्माईल साहब ख़ुद्दामे दरगाह के सिंधी मुवक्किल ने सिंधी साहिबान की आसाइश केलिए पाँच हज़ार रूप्ये के सर्फे से उस में एक दालान ताअमीर कराया है।

इहातए चमेली

इहातए सहनचराग़ की जुनूबी दीवार में इहातए दरगाह शरीफ़ में जाने केलिए दो दरवाज़े हैं एक की दोनों तरफ़ छत्रियाँ हैं दूसरा समाअ्ख़ाने की दीवार से मिला हुआ है उस दरवाज़े से इहातए दरगाह में दाख़िल होने के बाद दाहिनी जानिब सोलह खंबा में जाने का रास्ता है और बाऐं जानिब मुख़्तसर इहातए चमेली है जो संगीन जालियों में घिरा हुआ है उस में अन्दर जाने केलिए एक छोटी सी खिड़की है। इहाते के अन्दर चन्द मुक़द्दस मज़ारात हैं। हाल के बाज़ तज़्किरा नवीसों ने लिखा है कि ये मज़ारात ख़्वाजए बुज़ुर्ग की अज़्वाज के हैं ये चमेली वाली बीवी के नाम से मशहूर हैं मगर साहिबे "अहसनुस्सियर" के मुताबिक़ मस्जिद संदलख़ाने की शेमाली दीवार से मुत्तसिल (इहातए चमेली में) हज़रत रफ़ीउद्दीन बायज़ीद ख़ुर्द का मज़ार है और उन की क़ब्र के क़रीब उन की वालिदा और उन की बीवी के मज़ारात हैं। उन मज़ारात पर चमेली की बेल छाई रहती है उस इहाते की जालियों और चमेली की शाख़ों में जाबजा अंगूठियाँ और रंग बिरंग के डोरे बंधे रहते हैं ये ज़ियादातर वो मस्तूरात बाँधती हैं जो औलाद की ख़्वाहिशमन्द होती हैं चमेली की बेलों में लोग भिश्तियों से पानी डलवाते हैं और एक छोटे से खुले हुए ताक़ में हाथ डाल कर उस में से तबर्रुकन पानी लेकर पीते हैं।

अरकाटी दालान

शाही घाट से मुत्तसिल रौज़ए मुनव्वरा के पाईं जानिब अरकाटी या कर्नाटकी दालान है। उस में रौज़ए मुनव्वरा की जानिब तीन दर हैं ये संगे सफ़ेद की एक ख़ूबसूरत इमारत है। ये दालान नवाब वालाजाह रईसे कर्नाटक अलमुख़ातब ब अमीरुलहिन्द ने बअहदे शाह आलम ताअमीर कराया था।

इबादतख़ानए मस्तूरात

रौज़ए मुनव्वरा के पाईं दरवाज़े की दोनों जानिब कर्नाटकी दालान के सामने संगे मरमर के दो छोटे इहाते हैं जो पर्दा नशीन ख़्वातीन की इबादत केलिए मख़सूस थे। मगर अब उस में मज़ारात हैं। बक़ौले साहिबे "सैरुल औलिया" उन में से जो मज़ार

बीबी हाफ़िज़ जामाल के पाइंती में हैं उन में ख़्वाजा मुईनुद्दीन ख़ुर्द और ख़्वाजा क़ेयामुद्दीन बाबरियाल के मज़ारात हैं मगर साहिबे "अहसनुस्सियर" ने उन मज़ारात में शैख़ बुध मुख़ातब ब सैय्यिदुल मुल्क के मज़ार का इज़ाफ़ा किया है और उन हज़रात को नबीरगाने सरकारे ख़्वाजा में शुमार किया है।

इहातए कोचक संगे सफ़ेद

मस्जिद संदलख़ाना के सहन से पहले दरमियानी सहन के बिलमुक़ाबिल मश्रिक़ की तरफ़ संगे सफ़ेद का एक छोटा सा इहाता है उस में शैख़ ताजुद्दीन बायज़ीद बुज़ुर्ग, उन के अक़रबा और अज़्वाज के मज़ारात हैं मगर हाल के बाज़ तज़्किरा निगारों ने उन मज़ारात को यादगार मुहम्मद और उन की ज़ौजा के मज़ारात बताते हैं।

निज़ाम सक़्क़ा की क़ब्र

बेगमी दालान और खिड़की दरवाज़ा के दरमियान एक हमीदिया दालान है उसी के क़रीब निज़ाम सक़्क़ा की क़ब्र है, संगे मरमर के चबूतरे के गिर्द जालीदार कटहरा है और ताअवीज़े मज़ार पर गुल बूटे, बेल पत्ते कन्दा हैं उन में उम्दा क़िस्म की पिच्चीकारी है।

शाहाने मुग़लिया के ज़माने में उस मज़ार पर ज़र्री शामियाना नुक़रई इस्तादों पर खिंचा रहता था जब औरंगजेब आलमगीर हाज़िरे आस्ताना हुए तो उन्हें उस क़ब्र पर ख़्वाजा के मज़ार का धोका हुआ लोगों ने अर्ज़ किया कि ये क़ब्र तो निज़ाम सक़्क़ा की है। ये सुन कर आलमगीर ने कहा "शमा पेशे आफ़ताब परतौ नदारद" उन्हों ने उस क़ब्र के सारे सामाने आराइशो ज़ेबाइश हटवा दिए और बाज़ लोगों का क़ौल है कि निज़ाम सक़्क़ा की क़ब्र आगरा में है।

झालरा

दरगाह शरीफ़ के जुनूब में एक गहरा चश्मा झालरा के नाम से मशहूर है ये कभी ख़ुश्क नहीं होता दरगाह और शहर के बाज़ मुहल्ले के लोग उस से पानी लेते हैं दरगाह से एक वसीअ् ज़ीना

उस में जाने का है भिश्ती उस ज़ीने से पानी भर कर लाते हैं दूसरा ज़ीना उस में सोलह खंबा की तरफ से भी है तीसरा ज़ीना मक़्बरे के क़रीब से है।

झालरा की मज़बूत चहारदीवारी शाहजहाँ बादशाह की बनवाई हुई है पहले बारिश के ज़माने में नाला गढ़ बेठली उस तरफ से बहता था और यही नाला आगे बढ़कर अब वो नदी कहलाता है जब अकबर बादशाह ने अजमेर की शहरपनाह बनवाई तो उस नाले को दरगाह बाज़ार की तरफ काट दिया और उस का बन्द बंधवा दिया। शाह कुली ख़ाँ सूबादारे अजमेर ने दूसरी जानिब बन्द के दहाने पर अपना मक़्बरा अपनी हयात में ताअमीर कराया इस तदबीर से ख़ल्क़ को आसाइश होगई हज़ारों आदमी उस के पानी से सैराब होते हैं ये बहुत ज़ियादा गहरा है, ज़ाइरीन उस का पानी तबर्रुक समझकर इस्तेअमाल करते हैं।

शाही घाट

लबे झालरा, अरकाटी दालान और हौज़ के दरमियानी सहन का नाम शाही घाट या साया घाट है उस सहन में संगे मरमर की छत्री में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के साहबज़ादे ख़्वाजा अबू सईद का मज़ार है। ये छत्री सैय्यिद रहमत अली साहब ख़ादिमे दरगाह के एक मुवक्किल ने ताअमीर कराई थी बक़ौले "सैरुल औलिया" उस छत्री के पाईं में एक दूसरी मरमरीं छत्री के अन्दर हज़रत ख़्वाजा के बिरादरे निस्बती आराम फरमा हैं मगर बक़ौले साहिबे "अहसनुस्सियर" ये मज़ार सरकारे ख़्वाजा के ख़लफे असग़र हज़रत ख़्वाजा अबू सालेह(ख़्वाजा हुसामुद्दीन) का है।

मक़्बरा शाह कुली ख़ाँ

ये मक़्बरा झालरा के मश्रिक़ में है संगे मरमर की शेमालरूया इमारत तीन दर की है छत लदाव की है उस में चन्द क़ब्रें हैं उन के ताअवीज़ संगे अब्री व तलाई के हैं। ग़ालिबन उन्हीं में अकबर मन्सबदार शहबाज़ ख़ाँ का मज़ार है यहाँ मुहर्रम की सात तारीख़ को ताअज़िया रखा जाता है इसी लिए उसे इमामबाड़ा भी कहते हैं।

ढाई दिन का झोंपड़ा

जामेअे अलतमश या ढाई दिन का झोंपड़ा। ईशवरी प्रसाद की किताब तारीख़े हिन्द में उस इमारत को गौतमबुध के ज़माने में (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से पाँच सौ साल पहले) की लिखा है। ढाई दिन के झोंपड़े की सारी इमारत क़िबला रुख़ बनी हुई है जो मस्जिद का रुख़ है न कि मन्दिरों का। अहमदाबाद की जामेअ मस्जिद की इमारत भी उसी वज़अ की है। ढाई दिन के झोंपड़े में मुख़्तलिफ क़िस्म के पत्थर के बुत पड़े हैं। हरविलास शारदा मुसन्निफे किताब "अजमेर" के बक़ौल अजीत ने दिन के वक़्त अजमेर पहुँचकर मुसलमानों को वहाँ से निकाल दिया और क़बज़ा कर लिया मस्जिदों को मन्दिरों में बदल दिया चुनाँचे ये मस्जिद (जामेअे अल्तमश) भी मस्ज़िद से मन्दिर बना दी गई और उस के अन्दर मूर्तियों वाले सुतून नस्ब कर दिए गए। दौलत राव सिंधिया ने अपने दौरे हुकूमत 1809 ई० में उस मस्जिद के दरवाज़े पर कन्दा कराके एक एअलान नस्ब कराया। उस में हिन्दू और मुसलमान दोनों को क़सम देकर लिखा गया कि इस इमारत को नुक़सान न पहुँचाएं ये कतबा अब तक नस्ब है। जामेअे अल्तमश बहुत बड़ी मस्जिद है जिस के दरवाज़ों और मेहराबों पर अल्तमश के दौर की इमारात (मस्जिदे क़ुव्वतुल इसलाम और क़ुतुब मीनार देहली) की तरह जाबजा आयाते क़ुरआनी कन्दा हैं और इमारत का नमूना भी हूबहू वैसा ही है अगर बुतों और मूर्तियों के सुतून निकाल दिए जाएं तो मस्जिद सुल्तान अल्तमश के ज़माने की ताअमीर शुदा माअलूम होती है। ये मस्जिद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मज़ारे मुबारक से कुछ फासले पर वाक़ेअ है।

क़िलए तारागढ़

आस्तानए सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू से कुछ ही फासले पर एक बलन्द पहाड़ी पर क़िलए तारागढ़ वाक़ेअ है। वहीं हज़रत सैय्यिद हुसैन मशहदी ख़ुनिंग सवार का मज़ारे मुबारक है गुज़श्ता सफहात में हज़रत सैय्यिद हुसैन मशहदी का तज़्किरा मुख़्तलिफ उन्वानात के तहत आचुका है इस लिए यहाँ मज़ीद तफसील की ज़रूरत नहीं। उस दरगाह के मुतअल्लिक़ अबुलफज़्ल "अकबरनामा जिल्दे सानी" में लिखते हैं। :

"दूसरे दिन अजमेर का क़िला देखने गए ये क़िला

पहाड़ पर वाक़ेअ है उस की बलन्द चोटी पर सैय्यिद हुसैन मशहदी ख़ुनिग सवार के मज़ार की ज़ियारत से मुशर्रफ हुए बक़ौले अवाम ये इमाम ज़ैनुलआबिदीन की औलाद में से हैं लोग यहाँ से तबर्रुक लेते हैं तहक़ीक़ ये है कि सैय्यिद साहब मौसूफ शहाबुद्दीन ग़ौरी के मुलाज़िमीन में से थे और हिन्दुस्तान फतह करने के वक़्त (588 या 589 हि0 में) तशरीफ लाए थे (शहाबुद्दीन ग़ौरी ने) उन्हें अजमेर की शक़ादारी पर मुक़र्रर करदिया और यहीं उन का इन्तेक़ाल हुआ अवाम में ये वली मशहूर हुए और उन का मज़ार अहले आलम का मताफ होगया।"

1024 हि0 में सैय्यिद हुसैन ख़ुनिग सवार के मज़ारे ख़ाम पर एअतेबार ख़ाँ ने (जो अहदे अकबरी में मन्सबे दो हज़ारी और अहदे जहाँगीरी में शश हज़ारी पर फाइज़ था और मुमताज़ ख़ाँ के लक़ब से मुलक़्क़ब था) ये इमारात ताअमीर कराई गुंबद का ज़र्री कलस है।

आप का मज़ार ताश बादले से ढका रहता है मज़ार शरीफ के सरहाने मोतियों का सेहरा पड़ा रहता है यहाँ चाँदी का छत्र है सुनहरी फरेम में कटहरे के अन्दर आईने जड़े हुए और फूलों के लहरे पड़े हुए हैं मज़ार के मग़्रिब में कमाँची राव सिंधिया ने संगे मरमर के सात दालान अज़ राहे अक़ीदत बनवाए हैं।

क़िलए दोम में ख़ुनिग(घोड़े) की क़ब्र है ग़रबी क़ितअ में मस्जिद है जिस का तूल तक़रीबन 24 गज़ और अर्ज़ छह गज़ है। क़िलअए सोम में भी बड़े बड़े दालान हैं मग़्रिब में एक मस्जिदे क़दीम और पानी का हौज़ है शेमाल में जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह के ज़माने का बलन्द दरवाज़ा मअ नक़्क़ारख़ाना है जो तक़रीबन 64 फिट बलन्द और 17 फिट चौड़ा है। उसे इस्माईल ख़ाँ सूबेदार अजमेर ने 976 हि0 में संगे सुर्ख़ से बनवाया था दरवाज़े में संगे मरमर का फर्श है बलन्द दरवाज़े के नीचे मुतअद्दिद दालान और एक मस्जिद भी है सहन में शुहदा के मज़ारात बने हुए हैं शेमाली दरवाज़े के पास दो आहनी देगें हैं एक देग नूरुद्दीन जहाँगीर बादशाह ने बनवाई है और दूसरी मुल्ला मदारी ने।

गंजे शुहदा

हज़रत सैय्यिद हुसैन मशहदी की दरगाह के जुनूब में एक

वसीअ पुख़्ता एहाते में गंजे शुहदा है यहाँ बहुत से शहीदों के मज़ारात हैं। 1062 हि0 में वज़ीरे कलाँ (जहाँगीर बादशाह के एक वज़ीर) ने उन मज़ारों के गिर्द चहारदीवारी बनवाई है मशहूर है कि तमाम कोशिशों के बावुजूद आज तक उन मज़ारात का सहीह शुमार कोई न कर सका। यहीं एक संगे मरमर के मक़्बरे में सरकारे ख़्वाजा के ख़ुसर सैय्यिद वजीहुद्दीन अलमाअरूफ ब सैय्यिद हुसैन आसूदए ख़ाक हैं।

सोलह खम्बा

सोलह खम्बा में हज़रत शैख़ अलाउद्दीन बिरादरे अमज़ाद हज़रत ख़्वाजा हुसैन अजमेरी नबीरा व साहिबे सज्जादा सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का मज़ार है उन की हयात में ये मक़ाम दीवान ख़ाना कहलाता था बादे वफात यही उन का मदफन हुआ ये इमारत संगे मरमर की है चूँकि उस के सोलह खम्बे हैं इस लिए ये इस नाम से मशहूर है इस का तूलो अर्ज़ 20+40 फिट है। शैख़ अलाउद्दीन को शाहजहाँ के अह्द में मज़हबी वक़ार हासिल था उन का विसाल बउम्र 75 साल 1011 हि0 में हुआ।

चिल्ला बाबा फरीद गंजे शकर

इस मक़ाम पर हज़रत बाबा फरीद गंजे शकर अलैहिर्रहमह ने चिल्लाकशी की थी। संदली मस्जिद के अक़ब में इस का दरवाज़ा है दरवाज़े से मक़ामे चिल्ला तक ज़मीनदोज़ ज़ीने का रास्ता है। कहा जाता है कि पहले हज़रत ख़्वाजा के ख़ाम मज़ार का यही रास्ता था मगर अब मुद्दते दराज़ से अस्ली मज़ारे अक़दस तक पहुँचने का रास्ता बन्द कर दिया गया है चिल्ले का दरवाज़ा हमेशा मुक़फ्फल रहता है मगर माहे मुहर्रम की पाँच तारीख़ को हर साल खुलता है उस दिन लोग जौक़ दर जौक़ इस की ज़ियारत से मुशर्रफ होते हैं।

अहमद बख़्तियार और सज्जादगान के मज़ारात

शाहजहानी मस्जिद की शेमाली दीवार की तरफ बाहर जाते हुए एक हुजरे में मग़्रिबी दरवाज़े से मुत्तसिल हज़रत अहमद बख़्तियार का मज़ार है उस दरवाज़े से गुज़र कर एक बड़ा

क़ब्रस्तान है जिस में सज्जादगाने दरगाह और उन के ख़ानदान के लोगों के मज़ारात हैं यहाँ फ़ुक़रा पड़े रहते हैं।

मक़बरा ख़्वाजा हुसैन अजमेरी

शाहजहानी मस्जिद के अक़ब में एक कुब्बे के अन्दर ख़्वाजा हुसैन अजमेरी और उन के ख़ानदान के लोग आसूदए ख़ाक हैं। ये कुब्बा सरकारे ग़रीब नवाज़ के कुब्बे की साख़्त का है इस की ताअमीर बअहदे शाहजहानी 1047 हि0 में हुई।

एक बालिश्त की छत्री

ये छत्री सोलह खम्बे के मुत्तसिल दरवाज़े के सरदल पर है दर अस्ल ये ख़्वाजा हुसैन अजमेरी के एहाते का दरवाज़ा है इस की वुस्अत एक बालिश्त है।

तारीख़ी छत्री

लंगर ख़ाने के सहन में पुराने ज़माने की एक तारीख़ी छत्री है। मशहूर है कि ये उस वाक़ेअे की यादगार है कि जब अकबर बादशाह फ़क़ीर बन कर इस मक़ाम पर लंगर लेने आया था और उस का प्याला टूट गया था तो उस की यादगार में ये छत्री बनाई थी मगर अब इस तारीख़ी यादगार को ख़त्म करके इस जगह एक हुजरा बना दिया गया है।

बिजली घर

लंगर ख़ाने के सहन में दीवार से मुल्हक़ एक शर्क़रूया दालान है उस में मुहर्रम शरीफ के मौक़े पर मुलाज़िमीने दरगाह अपनी तरफ से ताअज़िया रखते हैं उस दालान के शेमाल में एक मुख़्तसर एहाते के अन्दर बिजली घर की इमारत है यहाँ दरगाह की रौशनी केलिए बर्क़ी इंजन हैं। ये बर्क़ी इंजन बम्बई के मशहूर सेठ आन्रेबल सर करीम भाई इब्राहीम की इरादत का नतीजा हैं सेठ साहब ने बतवस्सुले मर्दान अली साहब मरहूम ख़ादिमे दरगाह बएहतेमाम मिस्टर आर एम मार्शल इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग कम्पनी बम्बई बमाहे फरवरी 1920 ई0 में बर्क़ी रौशनी का एहतेमाम किया गया था।

अमीरे ताग़ान व अमीरे तरग़ान

बाज़ लोग उन्हें अमीरे नक़ी और अमीरे तक़ी भी कहते हैं आम लोग ताका तूकी कहते हैं। ये दोनों मज़ारात चश्मए नूर की ग़र्बी सत्हे कोह पर वाक़ेअ हैं उन के गिर्द पुख़्ता चहार दीवारी है। यहाँ दो दालान और एक गहरा हौज़ भी बना हुआ है चंबेली के दरख़्त कस्रत से मज़ारों पर छाए हुए हैं यहाँ भी गंजे शुहदा है।

मज़कूरा बाला यादगारों के अलावा अजमेर शरीफ में और भी बहुत से मज़ारात और यादगारें हैं जिन में से बाज़ तक़रीबन पाँच साल पहले शिकस्ता और बाज़ बेनिशान होचुके हैं।

कुछ यादगार चिल्ले

चिल्ला हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

अनासागर से मुत्तसिल सदाबहार पहाड़ी पर ये चिल्ला वाक़ेअ है। अजमेर में तशरीफ आवरी के बाद सब से पहले हज़रत सुल्तानुल हिन्द ने इसी पहाड़ी के एक ग़ार में क़ेयाम फरमाया था यहाँ बतौरे यादगार पत्थर के दो तख़्त भी बना दिए गए हैं 1037 हि0 में महाबत ख़ाँ सूबेदारे अजमेर के शक़ादार दौलत ख़ाँ ने चिल्ले के सामने पत्थर की एक चहारदीवारी बनवा दी। उसी एहाते के शेमाली सहन में हज़रत सैय्यिद मलिक मुहम्मद आलम अलमाअरूफ ब गुदड़ी शाह बाबा का मक़बरा संगे मरमर की बारहदरी में है उस सहन में संगे मरमर और संगे मूसा का फ़र्श है मज़ार के सरहाने एक तीन दरवाज़ों का कमरा और एक बग़ली कोठरी है बाएं जानिब पाँच दर का वसीअ दालान है चिल्ले के बिलकुल मुत्तसिल माअसूम बाबा का मज़ार है सामने एक तीन दर की मस्जिद है मस्जिद के किनारों में एअतेकाफ केलिए हुजरे हैं उस एहाते के बाहर शर्क़ी ग़र्ब में दो सेहदरियाँ मअ बग़ली हुजरों के हैं शर्क़ी सेहदरी के आगे टीन का सायबान है जुनूबी एहाते में

हज़रत अब्दुर्रहीम शाह अलमाअरूफ़ ब क़ाज़ी गुदड़ी शाह का मज़ार एक हुजरे में है ताअवीज़े मज़ार संगे मरमर का है हुजरे में संगे मरमर और संगे मूसा का फ़र्श है आप के मज़ार के मश्रिक़ में सैय्यिद अहमद अली शाह बनारसी का मज़ार एक टीन के सायबान में है पाएंती की जानिब बुख़ारी शाह का मज़ार है।

चिल्ला सालारे ग़ाज़ी

उसी सदाबहार पहाड़ी की चोटी पर संगे सुर्ख़ के गुंबद के अन्दर एक मज़ार है। उस एहाते में और भी बहुत से मज़ारात हैं। हज़रत कौसर अली शाह, अंगारा शाह, कल्लू बादशाह मजज़ूब और दीगर अहले दिल हज़रात के भी यहाँ मज़ारात हैं।

महमूद ग़ज़नवी ने बादे फ़त्ह सैय्यिद सालार साहू को यहाँ का सूबेदार बना दिया था। मशहूर है कि इस मक़ाम पर आप के साहबज़ादे सैय्यिद सालार मस्ऊदे ग़ाज़ी (जिन का मज़ार बहराइच शरीफ़ में है) की विलादत हुई थी इस लिए ये जगह चिल्ला सालार ग़ाज़ी के नाम से मशहूरो मुतआरफ़ हो गई।

चिल्ला ख़्वाजा बख़्तियार काकी

सदाबहार पहाड़ी के मश्रिक़ी हिस्से में हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का चिल्ला है। यहाँ मौसूफ़ इबादते इलाही में मसरूफ़ रहा करते थे। चिल्ले के बाएं सहन में एक तीन दर की पुख़्ता मस्जिद है। हज़रत मौलाना फ़ख़्रुद्दीन देहलवी के मुरीद हज़रत मौलाना शमसुद्दीन ने 1190 हि० में ये मस्जिद ताअमीर कराई थी।

चिल्ले के नीचे सहने दोम में एक आलीशान पुख़्ता एहाता बना हुआ है उस में मुहम्मद शाह ख़ाँ की क़ब्र है मौसूफ़ नवाब अमीर ख़ाँ वालिए टोंक के रफ़ीक़ों में थे। एहाते के गर्ब में एक मस्जिद पाँच दर की और एक हुजरा महमूद ख़ाँ नाइबे मुहम्मद शाह ख़ाँ ने 1339 हि० में ताअमीर कराया। उस सहन से मश्रिक़ की जानिब बहुत सी सीढ़ियाँ हैं उन के दोनों तरफ़ सेहदरियाँ और हुजरे हैं सीढ़ियों के बाद सहने सोम में मुतअद्दिद हुजरे और एक मस्जिद थी सेठ भागचन्द की कोठी की दीवार गिर जाने से मस्जिद और हुजरे मुन्हदिम हो गए। अलबत्ता उस वसीअ सहन में एक और

वसीअ मस्जिद है।

चिल्ला शादी देव

सदाबहार पहाड़ी पर चिल्ला सालारे ग़ाज़ी के नीचे ग़रीब नवाज़ के चिल्ले से तक़रीबन एक फ़रलाँग के फ़ासले पर ये मक़ाम वाक़ेअ है। यहाँ शादी देव इबादतो रियाज़त केलिए गोशा नशीं हो गए थे। ये वही शादी देव हैं जो बक़ौले साहिबे "सैरुल अक़्ताब" सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हाथों मुसलमान हुए थे जिन का ज़िक्र गुज़श्ता सफ़हात में आचुका है यहाँ एक गुंबद के अन्दर एक पत्थर का चक्र तरशा हुआ रखा है उस से मुत्तसिल एक दालान और एक हौज़ है।

बड़े पीर साहब का चिल्ला

दरगाहे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के जुनूब में पहाड़ी पर एक मक़ाम है जो बड़े पीर साहब के चिल्ले के नाम से मशहूर है यहाँ सोंडे शाह दुर्वेश मदफ़ून हैं। मशहूर है कि सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ बग़दाद शरीफ़ से सरकारे ग़ौसे पाक के यहाँ की एक ईंट लाए थे और वसय्यित की थी कि बादे वफ़ात इसे मेरे सीने पर रख देना। चूँकि वो ईंट उसी मक़ाम पर रखी गई थी इस वजह से ये बड़े पीर साहब के चिल्ले के नाम से मशहूर होगई।

यहाँ जमशेद ख़ाँ ने दालान दर दालान ताअमीर कराया। असग़र अली साहब मुतवल्ली ने पुख़्ता सहन और गुंबद बनवाया एक हौज़ और एक दालान मज़ीद ताअमीर हुआ। हाजी वज़ीर अली ख़ादिमे दरगाहे ख़्वाजा साहब ने दरगाह के रुख़ पर एक बारहदरी ताअमीर कराई उन के अलावा मसाजिद वग़ैरह भी हैं। रबीउल आख़िर की 9 तारीख़ से 11 तारीख़ तक यहाँ ग़ौसे पाक की फ़ातेहा के मरासिम अदा होते हैं जिस के मसारिफ़ केलिए जागीरें वक़्फ़ हैं।

चिल्ला मदार साहब

कोकला पहाड़ी की चोटी पर मदार साहब का चिल्ला है यहाँ हज़रत शैख़ बदीउद्दीन कुतबुलमदार मकन पुरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने चिल्ला किया था। मक़ामे चिल्ला पर पुख़्ता गुंबद बना

हुआ है उस के सामने एक हौज़ है हौज़ के सामने आप के एक मुरीद की छत्री है। जुमादल ऊला की अठारहवीं तारीख़ को यहाँ हज़रत मदार साहब की सालाना फ़ातेहा के मरासिम अदा होते हैं लोग यहाँ नज़्रें चढ़ाते और मन्नतें मानते हैं।

चिल्ला अब्दुललाह बयाबानी

अजमेरे मुक़द्दस के गोशए जुनूबो मग़्रिब में मौजूदा शहर से तक़रीबन सात मील के फासले पर अब्दुल्लाह बयाबानी या अजयपाल जोगी के चिल्ले के खंडरात हैं। ये वही अब्दुल्लाह बयाबानी हैं जो हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हाथों मुसलमान हुए और बक़ौले साहिबे "गुलज़ारे अब्रार" जंगलों और बयाबानों में रहा करते हैं और भटके हुए मुसाफिरों की रहनुमाई करते हैं जिन का तज़्किरा गुज़शता सफ्हात में तफसील से गुज़र चुका है।

चिल्ला नातवाँ शाह

दरगाहे सरकारे ग़रीब नवाज़ के गोशए जुनूबो मश्रिक़ में फसीले शहर के अनदर ये मक़ाम है। हज़रत नातमा शाह अलमाअरूफ़ ब नातवाँ शाह सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हमअस्र बुज़ुर्ग हैं। अहदे अकबरी तक हब्से दम किए हुए उस मक़ाम पर मौजूद थे, शहरपनाह की दीवार केलिए जब बुन्याद खोदी गई तो आप को उस मक़ाम पर बैठे हुए देखा। आप से कहा गया कि यहाँ शहरपनाह की दीवार बनेगी यहाँ से तशरीफ लेजाएं तो आप ने फरमाया कि "फक़ीर जहाँ बैठ गया बैठ गया" आख़िर मजबूर होकर यहाँ से शहर की फसील टेढ़ी करके निकाली गई और आप के मज़ार को मुसक़्क़फ कर दिया गया। मज़ार के आगे बजानिबे मश्रिक़ एक पुख़्ता चौक बना हुआ है उस में आप के मुरीदीन मदफून हैं यहाँ एक दालान और दो हुजरे भी हैं। ये जगह नातवाँ शाह का तकिया और सद्र चौक से भी जानी जाती है।

चिल्ला बीबी हाफिज़ जमाल

ये चिल्ला चश्मए नूर के किनारे पहाड़ के ग़ार में है उस में एक दरवाज़ा आवेज़ाँ है मशहूर है कि यहाँ सरकारे ख़्वाजा ग़रीब

नवाज़ की साहबज़ादी हज़रत बीबी हाफिज़ जमाल ने चिल्ला किया था।

चिल्ला बाबा फरीदुद्दीन गंजे शकर

इस चिल्ले का ज़िक्र इमाराते दरगाह के उनवान के तहत गुज़श्ता सफ्हात में गुज़र चुका है।

उस्मानी चिल्ला

झालरा पर मुहियुल औक़ात मुईनी गुदड़ी शाही अंजुमन (रजिस्टर्ड) के दफतर के एक हुजरे में सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारवनी कुद्दि स सिर्रुहुमा के रौज़ए अक़दस का एक पत्थर और दीगर तबर्रुकात मक्कए मुअज़्ज़मा से लाकर यहाँ रखे गए हैं इस लिए इस जगह को उस्मानी चिल्ले के नाम से याद किया जाता है।

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के आस्तानए पाक पर हाज़िरी

बिदअत या सआदत

आज एक तबक़ा बड़ी शिद्दत के साथ कह रहा है कि मज़ाराते औलिया पर जाना और उन के वसीले से दुआएं माँगना शिर्को बिदअत है। इस क़िस्म की बातें बिला शुबह इलहादो बेदीनी हैं। अंबियाए किराम और औलियाए इज़ाम के मज़ारों से तवस्सुलो इस्तेआनत का सुबूतो अमल अहदे रिसालत से आज तक मुसलसल और मुतवारिस चला आरहा है। तस्कीने ख़ातिर केलिए चन्द शवाहिद पेशे ख़िदमत हैं।

हज़रत इमामे ग़िज़ाली अलैहिर्रहमह "एहयाउ उलूमिद्दीन" में फरमाते हैं। :

"व यद्ख़ुलु फी जुम्लतिही ज़ियारतु क़ुबूरिल अंबियाइ

अलैहिमुस्सलामु व ज़ियारतु क़ुबूरिस्सहाबति वत्ताबेई न व साइरिल उलमाइ वल औलियाइ व कुल्लि मैंय्यतबर्रकु बिमुशाहिदतिही यतबर्रकु फी हयातिही बिज़ियारतिही बाअ्‌ द वफ़ातिही व यजूज़ु शद्दुर्रिहालि लिहाज़ल ग़रज़"

सफर की दूसरी क़िस्म में अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम, सहाबा, ताबेईन और दीगर उलमा व औलिया के मज़ारात की ज़ियारत भी दाख़िल है ज़िन्दगी में जिस की ज़ियारत से बरेकत हासिल की जासकती है विसाल के बाद भी उस की ज़ियारत से बरकत हासिल की जासकती है। और इस मक़सद केलिए बिलइरादा सफर जाइज़ है।

इमामे इब्नुलहाज "अलमदख़ल" में अंबिया और औलिया की क़ब्रों से तवस्सुलो इस्तेआनत के जवाज़ की तफ़्सीली बहस रक़म फरमाकर इमाम अब्दुल्लाह इब्ने नुअमान रहमतुल्लाहि तआला अलैह का इरशाद नक़्ल फरमाते हैं।:

"तहक़ क़ क़ लिज़्विल बसाइरि वल एअतेबारि अन न ज़िया र त क़ुबूरिस्सालिही न महबुबतुल लि. अ ज लित्तबर्रुकि मअल एअतेबारि फइन न बरकतस्सालिही न जारियतुम बाअ द ममातिहिम कमा कानत फी हयातिहिम वद्दुआ अ इन द क़ुबूरिस्सालिही न वत्तशफ्फ़ुअ़ु बिहिम मअ्‌मूलुम बिही उलमाउनल मुहक़्क़िक़ी न मिन अइम्मतिद्दन।"

अर्बाबे बसीरतो एअतेबार के नज़दीक साबित है कि औलियाए किराम के मज़ारात की ज़ियारत करना और उन से बरकत हासिल करना महबूब है क्यूँकि औलियाए किराम की बरकत उन की ज़ाहिरी ज़िन्दगी की तरह बादे विसाल भी जारी है। औलियाए किराम की क़ब्रों के पास दुआ करना और उन को वसीला बनाना हमारे उलमाए मुहक़्क़ीन और अइम्मए दीन का मअ्‌मूल है।

हज़रत सुल्तानुल हिन्द सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ क़ुद्दि स सिर्रुहू का मज़ारे पुर अनवार फुयूज़ो बरकात का सरचश्मा और रुश्दो हिदायत का मरकज़ बना हुआ है। अर्बाबे तरीक़त, उलमाए अहले सुन्नत, सलातीने मम्लुकत और ग़ुरबाए मिल्लत हर अहद में यहाँ की हाज़िरी को सर्मायए इफ्तेख़ार तसव्वुर करते रहे हैं। किसी दौर के उलमाए हक़ ने इस मर्क़दे अनवर की हाज़िरी को नाजाइज़ नहीं लिखा लेकिन जब अंग्रेज़ साम्राज ने क़ौमे मुस्लिम

के दरमियान इख़्तिलाफो इन्तेशार का बीज बोया तो कुछ नामनिहाद मौलवियों ने अपने अंग्रेज़ आक़ाओं की शह पर इसे नाजाइज़ो हराम लिखा और कहा हालाँकि अहले हक़ पर मख़फी नहीं कि ये नज़रिया इस्लाम के बुनयादी अक़ाइद के मुख़ालिफ और इस्लाम में बिदअते सैय्यिआ की तुख़्मरेज़ी है।

डॉक्टर निसार अहमद फारूक़ी प्रोफेसर जामेआ मिल्लिया देहली लिखते हैं। :

"हज़रत ख़्वाजा अजमेरी जिन्हें अवाम अक़ीदतो मुहब्बत से "ग़रीब नवाज़" और "सुल्तानुल हिन्द" कहते हैं आख़िर उम्र में अजमेर शरीफ तशरीफ लाए थे और आप जिस हुजरे में रहते थे उसी में दफन किए गए, उस वक़्त से आज तक ये मुतबर्रक मक़ाम लाखों अक़ीदत मन्दों का क़िबला बना हुआ है ऐय्यामे उर्स के अलावा भी हर साल लाखों ज़ाइरीन यहाँ आस्ताँ बोसी केलिए आते हैं।" (माहनामा ज़ियाए वजीह रामपुर जनवरी, फरवरी 1993 ई0)

इस दरबार में अमीरो ग़रीब और शाहो गदा सभी हाज़िर होते हैं और मक़ामे हैरतो इस्तेअजाब ये है कि जो मज़ाराते औलिया पर हाज़िरी को शिर्को बिदअत और वसीलए औलिया को नाजाइज़ और हराम कहते हैं बिगड़े हालात में उन्हें भी वहाँ गिरया व ज़ारी करते देखा गया है लेकिन बाज़ बदअक़ीदा लोग वहाँ सिर्फ तमाशा गीर की हैसियत से जाते हैं और अक़ीदत मन्दों के ख़िलाफ तंज़ो तशनीअ के जुम्ले कसते हैं।

इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिसे बरेलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह इसी क़िस्म का एक वाक़ेआ बयान फरमाते हैं। :

"भागलपुर से एक साहब हर साल अजमेर शरीफ हाज़िर हुआ करते थे उस की एक वहाबी रईस से मुलाक़ात थी उस ने कहा मियाँ! हर साल कहाँ जाते हो। बेकार इतना रूप्या सर्फ करते हो। उन्हों ने कहा चलो इंसाफ की आँख से देखो फिर तुम को इख़्तियार है।

ख़ैर एक साल वो साथ आया देखा कि एक फक़ीर सोटा लिए रौज़ा शरीफ का तवाफ कर रहा है और ये सदा लगा रहा है "ख़्वाजा पाँच रूप्या लूँगा, एक घंटे के अन्दर लूँगा और एक ही शख़्स से लूँगा।"

जब उस वहाबी को ख़याल आया कि अब बहुत वक़्त गुज़र गया एक घंटा हो गया होगा और अब तक किसी ने कुछ न दिया तो जेब से उस ने पाँच रूप्ये निकाल कर उन

के हाथ पर रखे और कहा लो मियाँ तुम ख़्वाजा से माँग रहे हो भला ख़्वाजा क्या देंगे लो हम देते हैं।

फ़क़ीर ने वो रूप्ये तो जेब में रखे और चक्कर लगाकर ज़ोर से कहा "ख़्वाजा तारे बलिहारी जाऊँ दिलवाए भी तो कैसे ख़बीस मुन्किर से।"(अलमलफ़ूज़ मतबूआ मेरठ सफ़्हा 47)

मौला तआला मुसलमानों को मुन्किरीने अज़मते अंबिया व औलिया की फितना सामानियों से महफ़ूज़ रखे और सुल्तानुल हिन्द सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ताअलीमात और फ़ुयूज़ो बरकात से बहरावर फरमाए आमीन।

ले ख़ाके दरे ख़्वाजा आँखों से लगा बेकल
बीनाई बताती है अक्सीर निराली है

☆☆☆☆☆☆☆
☆☆☆☆☆
☆☆☆

तबर्रुकाते सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

मुनाजात बदरगाहे रब्बुल आलमीन

अज़ सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजए ख़्वाजगान सरकारे ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती अजमेरी रदियल्लाहु तआला अन्हु

चु मन पुर जुर्मो इस्यानम तुई ग़फ्फार या अल्लाह
ख़ुदावन्दा! मैं सरापा माअसियत हूँ जुर्मो इस्याँ से आलूदा हूँ
चु मन बा ऐबो नुक़्सानम तुई सत्तार या अल्लाह
ऐ मेरे रब ! मुझ में ऐबो नुक़्सान हैं तू ही छुपाने वाला है
बख़्वाबे मस्तियो ग़फ्लत ज़े सर ता पा गुनहगारम
मैं मस्तियो ग़फ्लत की नींद में सरशार सरापा गुनहगार हूँ
ब ज़िक्रो ताअते खुद कुन मुरा बेदार या अल्लाह
ऐ माअबूद ! अपने ज़िक्रो बन्दगी से मुझे बेदार कर
चुनीं किज़ फेअ्ले ज़िश्ते मन ख़लाइक़ जुम्ला बेज़ारन्द
ऐ ख़ुदा ! बुरे कामों की वजह से सारी मख़लूक़ मुझ से बेज़ार है
तु बा मा बाश ख़ुशनूदो मशौ बेज़ार या अल्लाह
ऐ मालिक ! तू मुझ से राज़ी रह और मुझ से बेज़ार न हो
चुनाँ कुन अज़ करम बर मन बिनाए तू बमुस्तहकम
ऐ माअबूद! बराहे करम मेरी तौबा की बुन्याद इस तरह मुस्तहकम करदे
कि रानम बर ज़बाँ हर लेहज़ा इस्तिग़्फार या अल्लाह
कि मैं हर लम्हा तुझ से इस्तिग़्फार ही करता रहूँ

चुनाँ कुन अज़ करम दर दिल बहक़्क़े अहमदे मुर्सल
ऐ मेरे मालिक! वक़्ते नज़्अ अपने नबी के सदक़े में मेरे दिल में
अज़ाबे मर्ग चूँ गरदद मुरा दुशवार या अल्लाह
इस तरह अब्रे करम की बारिश कर कि जाँकनी आसान होजाए
न याबद दर वुजूदे मन ज़े नेकी हेच किरदारे
ऐ परवरदिगार ! मेरे पास कोई नेक अमल नहीं है
ब बख़्शा बर मने आसीये बदकिरदार या अल्लाह
अज़ राहे करम मुझ ख़ताकार को बख़्श दे
रवद हर लेहज़ा दर ताअत दिले मन जानिबे दीगर
खुदा वन्दा! हालते इबादत में हर लम्हा मेरा दिल दूसरी तरफ चला जाता है
चुनीं वस्वासे शैतानी ज़े मन बरदार या अल्लाह
ऐ खुदा ! उन शैतानी वस्वसों को मुझ से दूर फरमा दे
चु गोरे तींरातर वहशत नुमायद बर मने मुज्रिम
जब क़ब्र की तारीकी से मुझ ख़ताकार के दिल में वहशत पैदा हो
बशम्ऐ मग़्फ़िरत गरदाँ पुरज़ अनवार या अललाहरख
ऐ मेरे रब! तू मेरी क़ब्र को शम्ऐ मग़्फिरत की रौशनी से मुनव्वर करदे
मुईनुद्दीने आसी रा कि मी नालद बसद ज़ारी
मुईनुद्दीन तेरा ख़ताकार बन्दा है इस की आँखों से आँसू जारी हैं
गुनाहम बख़्श ईमाँ रा सलामत दार या अल्लाह
ऐ माअबूद! मेरे गुनाहों को मुआफ फरमा और ईमान को सलामत रख

सरकारे ख़्वाजा की मुनाजात का उर्दू तर्जमा

सरापा जुर्मो इस्याँ में तु है ग़फ्फार या अल्लाह
सरासर ऐबो नुक़्साँ में तु है सत्तार या अल्लाह
मैं सर ता पा गुनाहों से हूँ मस्ती और ग़फ्लत में
तु कर दे ज़िक्रो ताअत से मुझे बेदार या अल्लाह
बुरे कामों से मेरे हो गई बेज़ार सब दुन्या
तु राज़ी रह मेरे मालिक न हो बेज़ार या अल्लह
मेरी तौबा की बुन्यादों को मुस्तहकम बना दे तू
कि मैं करता रहूँ हर लेहज़ा इस्तिग़फार या अल्लाह
तु कर ऐसा करम मुझ पर बहक़्क़े अहमदे मुर्सल
कि मौला जाँकनी मुझ पर न हो दुशवार या अल्लाह
न हो मौला इबादत में मेरा दिल दूसरी जानिब
तु हर वस्वासे शैतानी से करदे पार या अल्लाह
मुझे हो क़ब्र की तारीकियों से जिस घड़ी वहशत
तु शम्ऐ मग़्फिरत से करदे पुर अनवार या अल्लाह
मुईनुद्दीने आसी अर्ज़ करता है ये रो रो कर
सलामत रख मेरा ईमाँ तु है ग़फ्फार या अल्ला
तसद्दुक़ आयए ला तक़्नतू का ,हो करम मौला
मेरे इस दर्दे दिल का है तु ही ग़मख़्वार या अल्लाह
(दर्द काकोरवी)

सरकारे ग़ौसे आअज़म की बारगाह में

सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का नज़रानए अक़ीदत

या ग़ौसे मुअज़्ज़म नूरे हुदा
ऐ अजमत वाले ग़ौस, ऐ हिदायत की रौशनी

मुख़्तारे नबी मुख़्तारे ख़ुदा
नबी के पसन्दीदा और ख़ुदा के भी पसन्दीदा

सुल्ताने दोआलम कुतबे उला
दोनों आलम के बादशाह बलन्द मरतबा कुतब

हैराँ ज़े जलालत अर्दो समा
आप की बुज़ुर्गी से ज़मीनो आसमान हैरत ज़दा हैं

गर दाद मसीह ब मुर्दा रवाँ
अगर हज़रत ईसा ने मुर्दा इनसान को रूह बख़्शी है

दादी तु ब दीने मुहम्मद जाँ
तो आप ने दीने मुहम्मद को जान अता की है

हमा ख़ल्क़ मुहियुद्दीं गोया
तमाम मख़लूक़ आप को मुहियुद्दीन कहती है

बर हुस्नो जमालत गश्ता फ़िदा
आप के हुस्नो जमाल पर फ़िदा हो गई है

○

गोयम ज़े कमाले तु चे ग़ौसुस्सक़लैना
ऐ जिन्नो इन्सान के ग़ौस मैं आप का कमाल क्या बयान करूँ

महबूबे ख़ुदा इब्ने हसन आले हुसैना
आप तो ख़ुदा के महबूब इमामे हसनो हुसैन की औलाद हैं

सर दर क़दमत जुम्ला नहादन्द व गुफ़्तन्द
तमाम औलियाए किराम ने आप के क़दमों पर सर रख कर अर्ज़ किया है

तल्लाहि लक़द आसरकल्लाहु अलैना
कि ख़ुदा की क़सम आप को अल्लाह तआला ने हम सब पर फ़ौक़ियत अता की है

(शर्हे हदाइक़े बख़्शिश स0 117)

○

अक़ीदतों के महकते फूल

मनक़बत

अज़ नतीजए फ़िक्र :—सैय्यिदुल उलमा हज़रत अल्लामा
सैय्यिद शाह आले मुस्तफ़ा सैय्यिद मियाँ
क़ादरी बरकाती रहमतुल्लाहि तआला अलैह
साबिक़ सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे क़ादरिया बरकातिया
मारहरा मुतहहरा ज़िला एटा

तेरे पाए का कोई हम ने न पाया ख़्वाजा
तू ज़मीं वालों पे अललाह का साया ख़्वाजा

मक्रे शैताँ से मुरीदों को बचा लेते हो
इस लिए पीर तुम्हें अपना बनाया ख़्वाजा

लेचलेंगे जो फ़िरिश्ते मुझे दोज़ख़ की तरफ़
मैं पुकारूँगा ज़रा ठहरो वो आया ख़्वाजा

मेरी कश्ती अभी साहिल से लगी जाती है
इक ज़रा तुम ने अगर हाथ लगाया ख़्वाजा

बरबते इश्क़ पे मिज़्राबे अमल से तुम ने
नग़मा तौहीद का क्या ख़ूब सुनाया ख़्वाजा

सैय्यिदे ख़स्ता को उम्मीदे हुज़ूरी कब थी
सदक़े जाऊँ तेरे क्या ख़ूब बुलाया ख़्वाजा

मनक़बत

अज़ नतीजए फ़िक्र :—बुलबुले हिन्द हज़रत अल्लामा मुफ़्ती
मुहम्मद रजब अली साहब क़ादरी रज़वी
मुफ़्तिये आअज़मे नानपारा रहमतुल्लाहि तआला अलैह

ख़्वाजए मुक़्तदर ग़रीब नवाज़
दीन के ताजवर ग़रीब नवाज़
हो नज़र आप की तो बन जाए
बे हुनर बा हुनर ग़रीब नवाज़
हाल बिगड़ा बने मेरा ख़्वाजा
ऐसी कर दो नज़र ग़रीब नवाज़
फ़ैज़े जलवा से दिल मुनव्वर हो
दिल में हो जलवागर ग़रीब नवाज़
रुख़ दिखा दीजिए तो हो जाए
शबे ग़म की सहर ग़रीब नवाज़
इक इशारे में दूर कर दीजे
मेरा दर्दे जिगर ग़रीब नवाज़
इन तबीबों ने दे दिया है जवाब
आप ही लें ख़बर ग़रीब नवाज़
आप के आस्ताँ पे हाज़िर हूँ
जाऊँ आख़िर किधर ग़रीब नवाज़
मैं ख़ताओं पे अपनी नादिम हूँ
आगे ये सर ये दर ग़रीब नवाज़
बहरे उस्मान ख़्वाजए हारूँ
बर रजब यक नज़र ग़रीब नवाज़

मनक़बत

अज़ नतीजए फ़िक्र :—साहिरुलबयान हज़रत अल्लामा

अब्दुर्रहीम साहब क़ादरी रज़वी

मुरीदो ख़लीफ़ा शहज़ादए आअला हज़रत ताजदारे अहले सुन्नत मुजद्दिदे मेअते हाज़िरा हज़रत अल्लामा अलहाजुश्शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ साहब मुफ़्तिये आअज़मे हिन्द
कुद्दि स सिर्रुहुलअज़ीज़ बरेली शरीफ़

ग़रीबों के हाजतरवा मेरे ख़्वाजा
अमीरों के मुश्किलकुशा मेरे ख़्वाजा
तुझे दे रहा हूँ सदा मेरे ख़्वाजा
फंसा हूँ भंवर में बचा मेरे ख़्वाजा
सुना है ज़माने की भरते हो झोली
करो कुछ मुझे भी अता मेरे ख़्वाजा
सरापा महब्बत मुजस्सम इनायत
हैं सुल्ताने जूदो सख़ा मेरे ख़्वाजा
हुसैनो हसन की हो आँखों के तारे
मेरे मुस्तफ़ा की अता मेरे ख़्वाजा
रहेगी तुम्हारी हुकूमत रहेगी
बफ़ैज़े रसूले ख़ुदा मेरे ख़्वाजा
जिधर देखिए उन का चर्चा है पैहम
बहरसू हैं जलवानुमा मेरे ख़्वाजा
हुजूमे मरीज़ाने इस्याँ है दर पर
मिले इन सभी को शिफ़ा मेरे ख़्वाजा
शबो रोज़ चलती है अजमेर में भी
मदीने की जैसी हवा मेरे ख़्वाजा
न छोड़ूँगा हरगिज़ तेरा आस्ताना
मैं जाऊँ कहाँ ये बता मेरे ख़्वाजा
ख़ुलूसो महब्बत का नज़राना लेकर
नज़र दर पे हाज़िर हुआ मेरे ख़्वाजा

बारगाहे सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ में

इस्तेग़ासा

बे सहारों के सहारा, बेचारों के चारा, बेकसों, लाचारों और मजबूरों के मुईनो मददगार, ख़्वाजए ख़्वाजगान, शहंशाहे हिन्दुस्तान, मुर्शिदे कामिलाँ, मरकज़े आरिफ़ाँ, साहिबे इज़्ज़ो शाँ, क़िबलए आशिक़ाँ, ग़मगुसारे ज़माँ, सुल्तानुल हिन्द, अताए रसूल, सरकारे ग़रीब नवाज़! तमन्नाओं के हाथ आप के दरबारे गुहरबार की तरफ़ फैले हुए हैं, अश्कबार आँखें दास्ताने ग़म सुना रही हैं, दिल बेताब धड़कनों के साथ अफ़सानए दर्द कह रहा है, सदक़ा रसूले हिजाज़ी पैग़म्बरे उम्मी का, सदक़ा मरकज़े विलायत हज़रत मुर्तज़ा अली का, सदक़ा फ़ातिमए ज़हरा की रिदाए अक़्दस का, सदक़ा हुसैने आअज़म शहीदे करबला का, सदक़ा ख़्वाजा ग़यासुद्दीन हसन की सख़ावत का, सदक़ा बीबी उम्मुलवरअ माहे नूर के ज़ुहदो वरअ का, ऐ हिन्द के राजा सरकारे ख़्वाजा! ज़मीन की वुसअतों में शुहरा है कि आप बेकसों, मजबूरों लाचारों और ग़रीबों की मदद करते हैं, गिरते हुओं को संभालते हैं, बेक़रार दिलों की फ़रयाद सुनते हैं, सरकार! मेरी भी फ़रयाद सुनिये! मुसलसल ग़मों की चोट से शिकस्ता दिल आप को आवाज़ दे रहा है, जिगरसोज़ नाले आप की निगाहे इल्तेफ़ात के मुल्तजी हैं, शाने करम की भीक दरकार है जिस ने अजमेर को अजमेरे मुअल्ला और दारुलख़ैर बना दिया है, ऐ सुल्तानुल हिन्द, ऐ अताए रसूल, ऐ ग़रीब नवाज़ अपने भिकारी का दामन भर दीजिए, सुना है कि आप की अता व सख़ा के सामने साइलों को तंगिए दामाँ की शिकायत हो जाती है, हम अक़ीदतमन्द ग़ुलामों पर भी नज़रे करम कीजिए और अपनी अताओं की बारिश करके मालामाल फ़रमा दीजिए, ऐ दुख दर्द के मारों को देख कर बेचैनो बेक़रार होजाने वाले ग़रीब नवाज़, ऐ रब्बुलआलमीन के प्यारे, ऐ रहमतुल्लिलआलमीन के दुलारे, ऐ

फातिमा ज़हरा की आँखों के तारे, ऐ हसने मुजतबा के माहपारे, ऐ सैय्यिदुना ख़्वाजा उस्मान के चहीते लाडले, थरथराते हुए हाथों और गर्म गर्म आँसुओं का भरम रख लीजिए, तक्मीले तमन्ना का कुछ इन्तेज़ाम कर दीजिए अपनी करामतों की अब शान दिखा दीजिए, हमारे चमने इंबेसात से ख़िज़ाँ के असरात को यकलख़्त मिटाकर फिर से इसे हरा भरा कर दीजिए। ऐ हिन्द के राजा सरकारे ख़्वाजा आप की ज़ाते गिरामी ग़रीबों, मजबूरों और नातवानों केलिए उम्मीदों का मस्कन और ग़म के मारों केलिए चारागर है, सुनहरी कलश वाले ख़्वाजा रौज़ए अक़दस की बारौनक़ फज़ाओं का सदक़ा, दिले महजूर को तवानाई बख़्शने वाले सरकार हम शिकस्त ख़ुर्दा हैं, ग़मज़दा है, दरमाँदा हैं, परीशान हैं, सितमरसीदा हैं, दिलफगार हैं बेरहम ज़माना ने हमें पामाल कर दिया है, हमारी ख़ुशियों का चमन उजाड़ दिया है, हमारा सुख चैन छीन लिया है, हम ग़रीबों की दर्द अंगेज़ फरयाद सुन लीजिए, सुना है कि उम्मते मरहूमा के आप सच्चे मूनिस और ग़मख़्वार है, दर्दमन्दों के चारासाज़ हैं इसी लिए तो सारी दुन्या आप को ग़रीब नवाज़ के नाम से याद करती है, दिलकश और ज़ियाबख़्श नूरानी गुंबद में आराम फरमाने वाले ग़रीब नवाज़! ग़मनसीब आँखों के सैले रवाँ की लाज रख लीजिए हमारी फरयाद सुन लीजिए आप के सिवा हम किस से कहें आप के दामने महब्बतो अक़ीदत से मुन्सलिक व वाबस्ता हैं, आस्तानए करम छोड़कर हम कहाँ जाएं अपने अक़ीदतमन्द ग़ुलामों का दुख दूर करके कामयाबी और शादमानी की मन्ज़िलों से हमेकिनार फरमादीजिए मौजूदा उलझनों और तकालीफ, आने वाले मसाइबो आलाम, आफातो बलिय्यात, अमराज़े रूहानी व जिस्मानी, जुम्ला परीशानी और ज़ुल्मो सितम से बचाकर अपने सायए हिफ्ज़ो अमान में जगह इनायत फरमा दीजिए!

हिन्दुस्तान में इस्लाम का जो मिशन लेकर आप तशरीफ लाए थे और जिस ख़ुलूस, मेहनत और लगन के साथ आप ने इस कुफ्रिस्तान में इस्लाम की तौसीओ इशाअत फरमाई थी आज उस पर ख़तरात के बादल मंडला रहे हैं अल्लाहो रसूल की शानो अज़मत को घटाने की नापाक कोशिश करने वाले सीधे सादे और भोले भाले मुसलमानों को अपने दामे फरेब में लेकर उन्हें गुमराह

करने की साज़िशों में मसरूफ हैं। ऐ नाइबुन्नबी फिलहिन्द! आप से इल्तेजा है कि हिन्दुस्तान में इस्लामो सुन्नियत की बक़ा व इस्तेहकाम और इस के फरोग़ो इरतेक़ा के अस्बाब को मज़बूत और कारआमद बनाने वालों की मुख़्लिसाना कोशिशों को कामयाब फरमा दीजिए और इस को नुक़सान पहुँचाने वालों को ख़ाइबो ख़ासिर फरमा दीजिए!

हमें यक़ीने कामिल है कि हमारी फरयाद आप की बारगाहे फलकवक़ार में राएगाँ न जाएगी, आप हमारी फरयाद ज़रूर सुनेंगे, आप आले रसूल हैं अपने जद्दे करीम की सुन्नत पर आप का अमल रहा है, भीगी भीगी पलकों का भरम रख लीजिए और हमारी भरपूर मदद फरमाकर कशमकशे हयात को काफूर बना दीजिए और सुकूँबख़्श ज़िन्दगी के अस्बाब मुहैय्या फरमा दीजिए!

ऐ मेरे ख़्वाजा आप का हिन्दुस्तान सलामत रहे, हिन्दुस्तानी सलामत रहें, हिन्दुस्तान पर आप की दाइमी हुकूमत सलामत रहे, आप का वक़ार सलामत रहे, आप की आन बान शान सलामत रहे, आप का आस्ताना सलामत रहे, आस्ताने की शौकत सलामत रहे, आप के बलन्द दरवाज़े की रिफअत सलामत रहे, आप के दिलनवाज़ गुंबद की अज़मत सलामत रहे, आप की फैज़बख़्श चौखट पर अक़ीदतकेश ग़ुलामों और भिकारियों का मेला सलामत रहे, आप से निस्बतो मोहब्बत रखने वाले, चाहने मानने वाले हम सब आप के ग़ुलाम सलामत रहें।

कहें न तुम से तो किस से कहें ग़रीब नवाज़
करम की भीक अता हो हमें ग़रीब नवाज़

मआख़ज़ो मराजेअ

नम्बर शुमार	अस्माए कुतुब	अस्माए मुसन्निफ़
1	कंजुल ईमान	आला हज़रत बरेलवी
2	सैरुल आरिफ़ीन	मौलाना जमाली मुलतानी
3	सैरुल औलिया	मौलाना सैय्यिद मुबारक अलवी
4	गंजे अस्रार	ख़्वाजा ग़रीब नवाज़
5	अनीसुल अरवाह	ख़्वाजा ग़रीब नवाज़
6	आईने अक्बरी	अल्लामा अबुल फ़ज़्ल
7	बज़्मे सूफ़िया	मिस्बाहुद्दीन
8	मिफ़ताहुत्तवारीख़	सर टॉम्सन विल्यम बेल
9	अक्बरनामा अव्वल दोम	अल्लामा अबुल फ़ज़्ल
10	तुज़्के जहाँगीरी	नुरुद्दीन जहाँगीर
11	अस्रारुल औलिया	ख़्वाजा बदरुद्दीन इसहाक़
12	फ़वाइदुस्सालिकीन	बाबा फ़रीद गंजे शकर
13	अख़्बारुल अख़्यार	अल्लामा अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी
14	तज़्किरतुल किराम	
15	ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया	ग़ुलाम सरवर लाहौरी
16	तब्क़ाते नासिरी	क़ाज़ी मिनहाजुद्दीन सिराज
17	तारीख़े फ़ुतूहुस्सलातीन मन्ज़ूम	
18	तारीख़े फ़िरिश्ता	मुहम्मद क़ासिम फ़िरिश्ता
19	हयाते साअदी	अलताफ़ हुसैन हाली
20	तज़्किरए उलमाए हिन्द	मौलाना रहमान अली
21	सब्ऐ सनाबिल	मीर अब्दुल वाहिद बिलगिरामी
22	ख़ैरुलमजालिस	नसीरुद्दीन चराग़े देहली
23	फ़वाइदुल फ़वाद	अमीर हसन अला संजरी
24	मुईनुल औलिया	क़ाज़ी इमामुद्दीन हसन
25	यासीन डाइजेस्ट (कानपुर सुलतानुल हिन्द नम्बर)	मुस्तफ़ा ख़लिद सिद्दीक़ी
26	लुम्आते ख़्वाजा	मुईनुद्दीन क़ादरी व शम्स बरेलवी
27	औरादे चिश्तिया	
28	सफ़ीनतुल औलिया	शहज़ादा दारा शिकोह क़ादरी
29	मिर्आतुल अस्रार	अब्दुर्रहमान इब्ने अब्दुर्रसूल
30	बज़्मे औलिया	सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान
31	माहनामा ज़ियाए वजीह	(रामपुर जनवरी, फ़रवरी 1993)
32	सैरुस्सालिकीन	
33	आतशकदए आज़र	लुत्फ़ अली बेग आज़र ईरानी
34	परी मुग़ल परसियन इन इन्डिया	प्रोफ़ेसर अब्दुल मुग़नी
35	ज़ियाउल मक्तूब	मौलाना ज़ियाउद्दीन ख़ाँ
36	अल मलफ़ूज़	मुफ़्तिये आअज़मे हिन्द बरेलवी
37	गुलज़ारे अब्रार	मौलाना ग़ौसी शत्तारी
38	मूनिसुल अरवाह	शहज़ादी जहाँआरा बेगम
39	मौलदे अताए रसूल	अल्लामा अहमद अली
40	तारीख़े सलफ़	मौलाना अब्दुल बारी अजमेरी
41	आईनए तसव्वुफ़	
42	मुस्तफ़ा से आले मुस्तफ़ा तक	अल्लामा हसनैन मियाँ बरकाती
43	अहसनुस्सियर	मुहम्मद अक्बर अजमेरी
44	किताबुत्तहक़ीक़	
45	मिर्आतुल आलम	बख़्तियावर ख़ाँ
46	अजमेर	हर बिलास शार्दा
47	अत्तारीख़ुल कामिल	
48	गाइड टू द दरगाहे ख़्वाजा साहब	मौलाना अब्दुल बारी अजमेरी
49	अजमेर हिस्टारिकल एन्ड डिस्क्रेटो	हरबिलास शार्दा
50	तारीख़े ख़िलाफ़ते बनू अब्बास	
51	मुन्तख़बुत्तवारीख़	मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी
52	ग़रीब नवाज़	बशीर अहमद लाहौरी
53	फ़ुतूहूस्सलातीन	
54	तारीख़े हिन्द	ईशवरी प्रशाद
55	इहयाए उलूमिद्दीन	हज़रत इमामे ग़ज़ाली
56	ख़्वाजए ख़्वाजगाँ	
57	अल मदख़ल	हज़रत इमाम इब्नुल हाज
58	सुरूरुस्सुदूर	
59	तारीख़े सिंध	
60	सदहा रंग नई देहली	फ़रवरी 1987 ई०
61	अस्रारुल वासिलीन	
62	इक़्तेबासुल अनवार	शैख़ मुहम्मद अकरम
63	मसालिकुस्सालिकीन	मिर्ज़ा अब्दुस्सत्तार बेग
64	दलीलुल आरिफ़ीन	ख़्वाजा बख़्तियार काकी

65 मआसिरुल किराम — मीर ग़ुलाम अली आज़ाद
66 अनीसुल इशबाह तर्जमा — मूनिसुल अरवाह
67 मुईनुल अरवाह — ख़ादिम हुसैन ज़ुबैरी
68 हश्त बहिश्त
69 दरबारे चिश्त — सैय्यिद हुसैन अली रज़वी
70 तारीख़े मशाइख़े चिश्त — प्राफेसर ख़लीक़ अहमद
71 माहनामा क़ारी देहली (फ़रवरी 1985 ई0) — क़ारी मुहम्मद मियाँ मज़हरी
72 माहनामा फ़ैज़ुर्रसूल (मई 1980 ई0) — अल्लामा नसीम बस्तवी
73 ताजदारे अजमेर — हाजी अनवर अली देहलवी
74 ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती — अहमद मुस्तफ़ा सिद्दीक़ी
75 इस्तेक़ामत डाइजेस्ट कानपुर (ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ नम्बर) — ज़हीरुद्दीन क़ादरी बरकाती
76 सबरंग डाइजेस्ट देहली — (ग़रीब नवाज़ नम्बर 1975)
77 सैरुल अक़ताब — अल्लादिया चिश्ती
78 ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती — अबू सलमान शाहजहाँपुरी
79 माहनामा अशरफ़िया मुबारकपुर (सुलतानुल हिन्द नम्बर नवम्बर दिसम्बर 1998) — मैलाना मुबारक़ हुसैन
80 माहनामा जामे नूर दिल्ली (रईसुल क़लम नम्बर) — ख़ुश्तर नूरानी अलीग
81 मौलाना हशमत अली लखनवी — डॉक्टर ग़ुलाम यहया अंजुम
82 पन्द्रह रोज़ा नवाए हबीब (कलकत्ता मुजाहिदे मिल्लत नम्बर) — मुद्दस्सिर हुसैन हबीबी
83 माहनामा अल हबीब पक्सरावाँ (ग़रीब नवाज़ नम्बर मार्च अप्रैल 2003) — अताउल मुस्तफ़ा हबीबी
84 ख़ुतबाते निज़ामी — अल्लामा मुश्ताक़ निज़ामी
85 ख़तीबे मशरिक़ — मौलाना नासिर अन्जुम
86 अल्लामा अरशद की कहानी — रज़ा एकेडमी मुम्बई
87 मलफ़ूज़ाते हाफ़िज़े मिल्लत — मौलाना अख़्तर हुसैन फ़ैज़ी
88 ज़मीमए मुफ़्तिये आअज़मे हिन्द — डॉक्टर अब्दुननईम अज़ीज़ी
89 मुफ़्तिये आअज़म मुदब्बिरे आअज़म — मौलाना सुलतान रज़ा
90 सेहमाही अमजदिया (घोसी जनवरी, मार्च 2005) — फ़ैज़ानुल मुस्तफ़ा अमजदी
91 तरीक़ए अहसन — डा0 सैय्यिद जमालुद्दीन असलम
92 सीरते ग़ौसे आअज़म — अल्लामा अब्दुर्रहीम क़ादरी

क़तअए तारीख़े इशाअत
„सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़„

अज़ः हज़रत अल्लामा अलहाज क़ारी मुहम्मद क़ासिम साहब
हबीबी बरकाती जनरल सिक्रेटरी नात एकेडमी
व ख़तीबो इमाम जामा मस्जिद शफ़ीआबाद चमद गंज कानपुर

चराग़े अम्नो अमाँ सीरते ग़रीब नवाज़
महब्बतों का निशाँ सीरते ग़रीब नवाज़
सुराग़े साले इशाअत के वास्ते क़ासिम
नज़र नज़र में है „याँ सीरते ग़रीब नवाज़„
2007ई0

मदहे मुसन्निफ़े „सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़„
साहिरुलबयान हज़रत अल्लामा अब्दुर्रहीम साहब क़ादरी

अहले दिल अहले यक़ीं हैं हज़रते अब्दुर्रहीम
इश्क़े ख़्वाजा के अमीं हैं हज़रते अब्दुर्रहीम
नूरे इरफ़ाँनूरे इश्क़े मुस्तफ़ा के फ़ैज़ से
किस क़दर रौशन जबीं हैं हज़रते अब्दुर्रहीम
इस क़दर अजमेर रौशन है तसव्वुर में कि बस
ऐसा लगता है वहीं हैं हज़रते अब्दुर्रहीम
हर गदाए कूए सन्जर कह रहा है झूम कर
हाँ यहीं बेशक यहीं हैं हज़रते अब्दुर्रहीम
क़ादरी है रुह चिश्ती है लिबासे फ़िक्रो फ़न
और नबी के जानशीं हैं हज़रते अब्दुर्रहीम
सीरते सरकारे ख़्वाजा क्यूँ न लिखते दोस्तो
हामिले ख़ुल्क़े हसीं हैं हज़रते अब्दुर्रहीम
मुअ़तरिफ़ है ग़ुन्चए इदराक भी क़ासिम यहाँ
नक्हते गुल्ज़ारे दीं हैं हज़रते अब्दुर्रहीम

दर मद्हे साहिरुलबयान हज़रत अल्लमा अब्दुर्रहीम साहब क़ादरी
मुसन्निफ़े „सीरते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़„

अज़: ळज़रत अल्लामा अलहाज क़ारी मुहम्मद क़ासिम साहब
हबीबी बरकाती जन्रल सिक्रेटरी नात एकेडमी
व ख़ तीबो इमाम जामा मस्जिद शफाआबाद चमद गंज कानपुर

हस्रते जाँ का, सुकूँ का, अम्नो राहत का चराग़
„सीरते ख़्वाजा„ मसावातो उख़ुव्वत का चराग़
दश्ते ज़ुल्मतनाक में हाथों की ज़ीनत बन गया
ख़्वाजए हिन्दूस्ताँ की पाक सीरत का चराग़
हर अदा सरकारे ख़्वाजा की किताबी शक्ल में
ताके जाँ के वास्ते है इल्मो हिक्मत का चराग़
आलिमो सूफ़ी मुक़र्रिर मुफ़्ती व शाइर अदीब
हज़रते अब्दुर्रहीम अहले अक़ीदत का चराग़
इक फ़िदाए क़ादिरीयत की है काविश बिलयक़ीं
अहले ईमाँ केलिये ख़्वाजा की सीरत का चराग़
अब किसी दिल में न जल पाएंगे नफ़रत के दिये
कर दिया रौशन नज़र(1) ने वो महब्बत का चराग़
ये भी क़िरतासो क़लम का फ़ैज़ देखेंगे सभी
होगा फिर भारत में ताबिन्दा हिदायत का चराग़
ख़्वाजए अजमेर की सीरत है क़ासिम जल्वाबार
मेरी रग रग में मुनव्वर है बसीरत का चराग़

1– नज़र हज़रत साहिरुलबयान का तख़ल्लुस है।

لا اله الا الله محمد رسول الله

محمد · حامد · احمد · محمود

الصلوٰة والسلام علیک یا رسول الله

محمد صلی الله علیه وسلم

قاسم · عاقب · فاتح · خاتم

حاشر · ماحی · داعی · سراج

رشید · منیر · بشیر · نذیر

هاد · مهد · رسول · نبی · طٰه · یٰس · مزمل

مدثر · شفیع · خلیل · کلیم · حبیب · مصطفٰی · مرتضٰی

مجتبٰی · مختار · ناصر · منصور · قائم · حافظ · شهید

عادل · حکیم · نور · حجة · برهان · ابطحی · مؤمن

مطیع · صادق · مصدق · ناطق · مذکر · واعظ · امین

عربی · هاشمی · تهامی · صاحب · مکی · مدنی · مضری

امی · عزیز · حجازی · نزاری · قریشی · حریص · رؤف

یتیم · غنی · جواد · فتاح · عالم · طیب · طاهر

مطهر · خطیب · فصیح · رحیم · سید · متقی · امام

بار · شاف · متوسط · سابق · مقتصد · مهدی · حق

مبین · اول · آخر · ظاهر · باطن · رحمة · محلل

محرم · آمر · ناه · شکور · قریب · منیب · مبلغ

لا اله الا الله محمد رسول الله

رسول الله

محمد

حامد

احمد

رضوی کتاب گھر دہلی

ISBN 01-89201-33-9
9780189201337

Rs. 200/-

RAZAVI KITAB GHAR
423, Matia Mahal Jama Masjid Delhi-6
Contact:. 9350505879,011-23264524
e-mail. ID - razavikitabghar@gmail.com